

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक—पद्मश्री जिनविजय मुनि, पुरातत्त्वाचार्य

[सम्मान्य सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

W-57033

ग्रन्थाङ्क ५७

कविया करणोदानजी चारण कृत

सूरजप्रकाश

भाग २



प्रकाशक

राजस्थान राज्य संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक-पद्मश्री जिनविजय मुनि, पुरातत्त्वाचार्य

[सम्मान्य सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क ५७

कविया करणीदानजी चारण कृत

सूरजप्रकाश

भाग २

प्रकाशक

राजस्थान राज्य संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

जोधपुर (राजस्थान)

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध
विविध बाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावलि

प्रधान सम्पादक

पद्मश्री जिनविजय मुनि, पुरातत्त्वाचार्य

सम्मान्य संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
ऑनरेरि मेम्बर ऑफ जर्मन ओरिएण्टल सोसाइटी, जर्मनी;
निवृत्त सम्मान्य नियामक (ऑनरेरि डायरेक्टर),
भारतीय विद्याभवन, बम्बई; प्रधान सम्पादक,
सिंधी जैन ग्रन्थमाला

ग्रन्थाङ्क ५७

कविया करणीदानजी चारण कृत

सूरजप्रकाश

भाग २

प्रकाशक

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर (राजस्थान)

कविया करणीदानजी चारण कृत

सूरजप्रकास

भाग २

सम्पादक

श्री सीताराम लालस

बृहत् राजस्थानी शब्दकोशके कर्ता

प्रकाशनकर्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०१८
प्रथमावृत्ति १०००

भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८३

ख्रिस्ताब्द १९६२
मूल्य ६.५०

मुद्रक— श्री हरिप्रसाद पारीक, साधना प्रेस, जोधपुर

सञ्चालकीय वक्तव्य

कविया करणीदानजी कृत सूरजप्रकासके प्रथम भागका प्रकाशन राजस्थान पुरातन ग्रन्थमालामें गत वर्ष हो चुका है। अब इस ग्रन्थका द्वितीय भाग भी उक्त ग्रन्थमालाके ग्रन्थाङ्क ५७के रूपमें उत्सुक पाठकोंको प्रस्तुत किया जा रहा है।

इस भागमें जोधपुरके महाराजा गजसिंह, जसवन्तसिंह, अजीतसिंह और अभयसिंहके शासनकालका वर्णन है, जिससे अनेक नवीन ऐतिहासिक तथ्योंका सङ्केत मिलता है। इसी भागमें महाराजा अभयसिंह और सरबुलंदखाँके बीच हुए अहमदाबाद-युद्धके कारण भी बताए गए हैं। चारणकुलोत्पन्न महाकवि करणीदानजी कविया महाराजा अभयसिंहके प्रमुख दरबारी कवि थे, अतएव प्रस्तुत ग्रन्थमें वर्णित तथ्य अधिकांशमें विश्वसनीय कहे जा सकते हैं। करणीदानजी अपने युगके विशेष प्रतिभासम्पन्न, अनुभवी और विद्वान् कवि थे, जिनका परिचय पाठकोंको प्रस्तुत काव्यसे स्वतः ही प्राप्त हो जायगा।

सूरजप्रकासका सम्पादन, वृहत् राजस्थानी शब्द-कोशके कर्ता व राजस्थानके विशिष्ट विद्वान् श्री सीतारामजी लाळसने निर्दिष्ट प्रणालीके अनुसार परिश्रमपूर्वक किया है, तदर्थ वे धन्यवादके पात्र हैं।

महाराजा अभयसिंह और सरबुलंदखाँके बीच हुए अहमदाबाद-युद्धका ओजस्वी वर्णन और ग्रन्थ-सम्बन्धी विशेष ज्ञातव्य आदि विस्तृत रूपमें यथाशक्य शीघ्र ही ग्रन्थके तृतीय भागमें प्रकाशित किये जावेंगे।

राजस्थानी भाषाके प्रस्तुत ग्रन्थका प्रकाशन भारत सरकारके वैज्ञानिक और सांस्कृतिक मन्त्रालयके आर्थिक सहयोगसे आधुनिक भारतीय भाषा-विकास-योजनाके अन्तर्गत किया जा रहा है, तदर्थ हम भारत सरकारके प्रति आभारी हैं।

ता० १४-३-६२
सर्वोदय साधना आश्रम,
चन्देरिया, गिर्ताड़, मेवाड़

मुनि जिनविजय
सम्मान्य सञ्चालक
राजस्थान प्राच्य-विद्या-प्रतिष्ठान
जोधपुर

विषय - सूची

भूमिका—प्रन्थ-सार

चौथी प्रकरण

पृष्ठ संख्या

१	अथ महाराजा गजसिंघरी वरणण	...	१
२	महाराजा स्त्रीगजसिंहजीरी दान-वरणण	...	८

पांचमौ प्रकरण

१	राव अमरसिंघजीरी वरणण	...	११
२	महाराजा जसवंतसिंघरी वरणण	...	१४
३	उजेणी-जुध-वरणण	...	२०
४	महाराजा स्त्रीजसवंतसिंघजीरी दान-वरणण	...	२३

छठौ प्रकरण

१	महाराजा अजीतसिंघजीरी जनम	...	२४
२	दिली जुध-वरणण	...	२६
३	महाराजकुमार महाराजा स्त्रीअभिसिंघजीरी जनमपत्री	...	४१
४	महाराजकुमाररा सामुद्रिक चिह्नांरी वरणण	...	४५
५	महाराजा अजीतसिंघरी स्वागतरी वरणण	...	५३
६	सवाई राजा जयसिंहसू बादसाहरी आबेर छीनणी अर महाराजा अजीतसिंहरी मदद करणी	...	५५
७	महाराणा अमरसिंह दुतीयसू बोनां राजाआंरी मिळण सारू उदपुर जाणौ	...	५७
८	महाराजांरी जोधपुर पर अमल करणी	...	५९
९	महाराजा अजीतसिंहरी सवाई राजा जयसिंहरी मदद करणी	...	५९
१०	महाराजा अजीतसिंहरी सांभरपुररें वास्तें तयारी करणी, जोधारांरी वरणण	...	६१
११	बादसाह बहादुरसाहरी महाराजा अजीतसिंहसू कुपित होणी अर महाराजांरी दिलीरी सलतनतमें उथल-पुथल करणी	...	६९
१२	महाराजा अजीतसिंहरी दूजा राजावांरें साथ जोधपुर आगमन	...	८८
१३	बादसाहरी मुदफरखाननं महाराजा अजीतसिंह पर अजमेर छोडावण सारू दळ बळ सहित भेजणी	...	९७
१४	महाराजा अजीतसिंहजीरी महाराजकुमार अभयसिंहजीनूं मुदफरसू मुकाबलौ करण सारू तयार कर सामौ भेजणी	...	९७
१५	महाराजकुमारनूं जोसमें करणी	...	९९
१६	महाराजकुमार अभयसिंहजीरी तयारीरी वरणण	...	१००
१७	मुदफरखानरी भाग जाणौ	...	१०२
१८	महाराजकुमाररी सैरमें आग लगाणी तथा माल लूटणी	...	१०२
१९	बादसाहरी भयभीत होणी	...	१०८
२०	साहज्यांपुर लूटणी	...	१०९
२१	महाराजा अजीतसिंहजीसू महाराजकुमार अभयसिंहजीरी मिळणी	...	१११

सातमौ प्रकरण

१	दिलीमें महाराजा अभयसिंहरे राजतिलकरो वरणण	...	१२६
२	महाराजा अभयसिंहरी जोधपुर दिस आगमन	...	१३४
३	महाराजा अभयसिंहजीरे स्वागतरो वरणण	...	१३५
४	महाराजा अभयसिंहरे लवाजमारो वरणण	...	१३५
५	लवाजमारा हाथियांरो वरणण	...	१३५
६	लवाजमारा घोड़ांरो वरणण	...	१३६
७	ऊंटारो वरणण	...	१३७
८	बाघारो वरणण	...	१३६
९	दरसनारथी प्रजारें समूहरो वरणण	...	१४०
१०	महाराजा अभयसिंहजीरो वधावो	...	१४०
११	बाजाररो वरणण	...	१४१
१२	प्रजारा महाराजारा दरसन करणा	...	१४३
१३	आभूषणारो वरणण	...	१४४
१४	महाराजा अभयसिंहजीरे दरबाररो वरणण	...	१४७
१५	अंतहपुररो वरणण	...	१४८
१६	जोधपुरमें महाराजा अभयसिंहजीरो राज्याभिसेक	...	१४९
१७	महाराजारो अंतहपुरमें पधारणो	...	१४९
१८	अथ संगीत नित भेद वरणण	...	१५२
१९	प्रातकालीन नगररो वरणण	...	१५४
२०	स्त्री वरणण	...	१६०
२१	घोड़ांरो वरणण	...	१६७
२२	हाथियांरो वरणण	...	१६६
२३	प्रथम बगोचारी वरणण	...	१७०
२४	तळावारो वरणण	...	१७५
२५	महाराजा अभयसिंहजीरो वरणण	...	१७७
२६	अथ खटभाखा वरणण	...	१८६
२७	अथ प्रथम भाखा संस्कृत वरणण	...	१८६
२८	इति खट भाखा लक्षण	...	१८६
२९	अथ नाग भाखा	...	१८६
३०	नाग भाखा टिप्पणं	...	१८६
३१	अथ भाखा अपभ्रंस	...	१८७
३२	अथ अपभ्रंस टिप्पणं	...	१८७
३३	अथ मगध देसी भाखा	...	१८७
३४	अथ मगध देस भाखा टिप्पणं	...	१८७
३५	अथ सुरसेनी	...	१८८
३६	अथ प्राकृत भाखा वरणण	...	१८८
३७	अथ वजभाखा वरणण	...	१८८
३८	अथ मूरधर भाखा	...	१८९
३९	उत्तरकी भाखा पंजाबी	...	२०१
४०	अथ वक्खणकी भाखा	...	२०२
४१	अथ सोरठकी भाखा	...	२०२
४२	अथ सिंधी भाखा	...	२०३

४३	पहलवानांरो वरणण	२०५
४४	हाथियांरो लड़ाईरो वरणण	...	२०६
४५	सिकाररो वरणण	...	२०८
४६	सिघांरो सिकार	...	२०९
४७	सिघां अर भैंसांरो लड़ाई	...	२१०
४८	सूरांरो सिकाररो वरणण	...	२११
४९	खरगोस हिरणादिरो सिकाररो वरणण	...	२१२
५०	मांस तथा भुजाईरो वरणण	...	२१४
५१	मेफलरो वरणण	२१५
५२	भोजनांरो वरणण	...	२१६
५३	मांसांरो वरणण	...	२१७
५४	महाराजांरो नागौर पर हमलो करणरो तयारी	...	२२१
५५	नागौर पर हल्लो	२२३
५६	जंसलमेररा विवाहरो वरणण	...	२२६
५७	महाराजांरो दिल्लो प्रस्थांन	...	२३०
५८	हमीदखारो गुजरात में आजाद होणो	...	२३७
५९	पातिसाहरो सर बुलंदनं गुजरातरो सूबादार वणाणो	...	२३८
६०	सर बुलंदरो अहमदाबाद पर अमल करणो	...	२३९
६१	सर बुलंदखारो अहमदाबाद पर सुतंतर बादसाह वणाणो	...	२३९
६२	महाराजा अभैसींघजीरो प्रभावरो वरणण	...	२४०
६३	महाराजा अभैसींघजीरो दिलीमें सूररो सिकार करणो तथा बादसाह- सूं आंमखासमें नाराज होणो अर पातसाहजीरो अभैसींघजीनूं मनावणो	...	२४०
६४	बादसाह मुहम्मदसाह खनं गुजरातसूं खबर आवणो	...	२४१
६५	सर बुलंदसूं जुघ करण सारू बादसाह मुहम्मदसाहरो बीड़ी फेरणो	...	२४२
६६	कवित पानका वणाव	...	२४५
६७	महाराजा अभैसींघजीरो दरबारमें सर बुलंदसूं जुघ करण सारू पानरो बीड़ी उठाणो	...	२४६
६८	बादसाह मुहम्मदसाहरो महाराजा अभैसींघजीनूं जोस बेराणो	२४७
६९	बादसाह मुहम्मदसाहरो ओरसूं महाराजा अभैसींघजीनूं जुधारथ सहायता सारू घन अर अस्त्र सस्त्र बेणो	...	२४८
७०	महाराजा अभयसिंहजीरो डेरं आणो अर जुधरी खबर चारों ओर फैलणो	...	२४८
७१	महाराजांरो दिलीसूं विदा होय जयपुर आवणो	...	२४९
७२	जयपुरमें महाराजा अभैसींघजीरो स्वागतरो तयारी वरणण दोनो राजावांरो मिळणो	...	२५०
७३	दोनो राजावांरो जयनिवास बागमें पधारणो	...	२५१
७४	दोनूं राजावांरो अषणा सुभटारें साथ भोजन करणो	...	२५२
७५	महाराजा अभैसींघजी अर जैसींघजीरो आपसरी सलाह	...	२५३
७६	ऊंटोरो वरणण	...	२५४
७७	महाराजा अभैसींघजी अर बखतसींघजीरो माहोमाह मिळणो	...	२५५
७८	महाराजा अभैसींघजीरो जोधपुर दिस आगमन	...	२५५

७६	महाराजा अभैसीधजीरो अहमदाबादरै जुध सारु आपरा सांमंतांनू
	फुरमाण भेजणौ	...	२६०
८०	ठाम ठामसूं मारवाडारा सांमंतांरो जोधपुरमें एकठौ होवणौ	२६१
८१	फौजरो सांमान ले जाणै वाळा ऊंटारो वरणण	...	२६२
८२	ऊंटानै बैठा कर सांमान उतारणौ अर तंबू ताणणा	...	२६४
८३	डेरारो वरणण	...	२६५
८४	जुधरा सांमानरो वरणण	...	२६६
८५	तोपारो पूजा अर तोपारो वरणण	...	२६६
८६	हाथियारो वरणण	...	२६७
८७	महावतारो वरणण	...	२६८
८८	घोड़ारो वरणण	...	२७३
८९	बाहणारा नाम	...	२७५
९०	महाराजा अभैसीधजीरो वरणण	...	२७५
९१	महाराजा अभैसिहका सिरौही पर आक्रमण	...	२७७
९२	सर बुलदखानं महाराजरो पत्र लिखणौ	...	२७९
९३	महाराजा अभयसिंहनं सरदारारं साथ वडौ दरबार करणौ और सरदारारो जोसपूरण उत्तर देणौ	...	२८२
९४	महाराजा अभयसिंहजीरो बखतसिंहजीनूं बुलाणौ	...	३०५
९५	बखतसिंहजीरो वरणण	३०६
९६	महाराजा अभैसीधजीरो वरणण	...	३३५
९७	महाराजा अभैसीधजीरो जोस	...	३३६
९८	महाराजा अभैसीधजीरो सेनामें भासण तथा सूरवीरारो धरम समभावणौ	...	३३८
९९	जोधारो तैयारीरो वरणण	...	३४६
१००	सेर बिलंदरो तैयारी	...	३५०
१०१	महाराजा अभैसिधजीरो सर बुलंदरै प्रत संदेस	...	३५६
१०२	सर बुलंदरो जबाब	३५६
१०३	महाराजा अभैसिधरो बखान	...	३५७
१०४	महाराजा अभैसिधजीरो सेनारो वरणण	...	३६०
१०५	सेनारो घण-घटामूं रूपक बांधणी	३६१
१०६	फेर दूसरो रूपक	३६२

परिशिष्ट

१.	नामानुक्रमणिका	...	१
२.	संगीत एवं नृत्य सम्बन्धी शब्द तथा भिन्न-भिन्न प्रकारके वाद्योंकी नामानुक्रमणिका	...	२३
३.	विशेष प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों की नामानुक्रमणिका	...	२८
४.	वस्त्र तथा वस्त्रों सम्बन्धी शब्दों की नामानुक्रमणिका	...	३०
५.	आभूषणों की नामानुक्रमणिका	...	३१
६.	छंदानुक्रमणिका	...	३२
७.	कलाओंकी नामावली	...	६०

ग्रन्थ-सारांश



चतुर्थ प्रकरण

महाराजा गजसिंह—

महाराजकुमार गजसिंहको जोधपुरमें यह संदेश प्राप्त हुआ कि उनके पिता सवाई राजा सूरसिंह दक्षिणमें रोग-ग्रसित हो गये हैं तो वे जोधपुरकी शासन-व्यवस्थाका भार अपने विश्वासपात्र मंत्रियोंको सौंप कर तुरन्त ही दक्षिणकी ओर रवाना हो गये। उनके वहां पहुँचनेके पूर्व ही सवाई राजा सूरसिंहका देहावसान हो गया था।

इस घटनाके पश्चात् बादशाहकी आज्ञासे दक्षिणमें ही बुरहानपुरमें महाराज-कुमार गजसिंहके राज्याभिषेकका दस्तूर खानखानाके पुत्र दौराबखाने किया। इस अवसर पर दौराबखाने इनकी कमरमें तलवार बांधी और बादशाहकी ओर से भेजे हुए उपहार भेंट किये। बादशाहकी ओर से इस प्रकार सम्मानित होने पर दक्षिणमें बादशाहके सभी विपक्षी महाराजा गजसिंहके शौर्य और पराक्रमसे आतंकित हो गये।

राज्याभिषेकके कुछ ही दिन पश्चात् महाराजा गजसिंहने दक्षिणमें महकर नामक स्थान पर अमरचंपूकी बहुत बड़ी सेनाका मुकाबिला किया। भयंकर युद्ध हुआ। महाराजा गजसिंहने बड़ी वीरता दिखाई, अमरचंपू पराजित हो गया। महाराजाने बादशाही राज्यका खूब विस्तार किया। दक्षिणके खिड़की-गढ़, गोलकुंडा, आसेर, सितारा आदिको विजय कर बादशाही राज्यमें मिला दिया। बादशाह इन पर बहुत प्रसन्न हुआ और इन्हें 'दलथंभण'(न)की उपाधिसे विभूषित किया। इसके अतिरिक्त कई छोटे बड़े प्रान्त दे कर इनके राज्यकी वृद्धि की। इसके पश्चात् महाराजा गजसिंह कुछ समयके लिये अपने राज्य मारवाड़में लौट आये।

तत्पश्चात् शाहजादा खुर्रम किसी घरेलू घटनाके कारण अपने भावी भाग्यके विषयमें संदेह करने लगा। उसे यह भय हो गया कि बादशाह जहांगीर नूरजहांके हाथकी कठपुतली है और वह परवेजको ही जहांगीरके बाद बादशाहके रूपमें दिल्ली के सिंहासन पर आरूढ़ करना चाहती है। इसके अतिरिक्त महाराजा गजसिंहकी असीम शक्तिके कारण दक्षिणमें भी

बादशाही आतंक पूर्ण रूपसे फैला हुआ है। अतः वह अपने भाग्य-निर्माणके हेतु कोई उपाय सोचने लगा।

खुर्रमने अपनी कार्य-सिद्धिके लिए दक्षिणमें बहुत बड़ी सेना तैयार की। उसने बादशाहको सिंहासनसे च्युत करनेकी ठान ली और स्वयमेव बादशाह बननेकी प्रबल आकांक्षाके साथ दक्षिणसे दिल्लीकी ओर कूच किया।

कुछ समय पश्चात् मेवाड़का भीम शिशोदिया भी जो अपने समयका महान् शक्तिशाली वीर था, खुर्रमकी सहायताके लिये अपनी २५ हजार सेना सहित आ मिला।

जब बादशाह जहांगीरको खुर्रमके इस कुकृत्यका पता चला तो वह बहुत दुखी हुआ। उसने अपने मानकी रक्षार्थ और इस विषम संकटको टालनेके लिए राजपूत राजाओंको बुलाया। इस अवसर पर महाराजा गजसिंह भी अपनी सेना ले कर दिल्ली पहुँचे। बादशाहने आये हुए समस्त राजपूत राजाओंको शाहजादे परवेजके साथ एक बहुत बड़ी सेना दे कर खुर्रमका सामना करने भेजा। इस समय आमेरके मिर्जा राजा जयसिंहके पास बहुत बड़ी सेना थी अतः बादशाहने उन्हींको सेनापतिका पद सौंपा। वीरवर महाराजा गजसिंहको यह बात कुछ कटु लगी, अतः वे अपनी सेनाको शाही फौजके दाहिनी ओर लेजा कर दूर से ही युद्धका परिणाम देखने लगे।

खुर्रमकी सेनाके अग्रणी भीम शिशोदियाने अपने योद्धाओं सहित शाहजादे परवेज और सेनापति मिर्जा राजा जयसिंहकी सेना पर बड़ी तेजीसे आक्रमण किया। इसका आक्रमण इतना भयंकर हुआ कि वह चालीस हजारकी शाही फौजको विदीर्ण करता हुआ शाहजादे परवेज तक पहुँच गया। मिर्जा राजा जयसिंहकी सेनामें भगदड़ पड़ गई। शाही फौजको इस प्रकार भागते देख कर भीम शिशोदियाको बड़ा गर्व हुआ और उसने दूर खड़े महाराजा गजसिंहको ललकार कर उन पर आक्रमण कर दिया। वीरशिरोमणि महाराजा गजसिंहने, जिनके पास केवल तीन हजार राजपूत थे, भीम शिशोदियाका डट कर मुकाबिला किया। भयंकर युद्ध हुआ। भीम शिशोदिया वीर गतिको प्राप्त हुआ और शाहजादे खुर्रमकी विजय पराजयमें परिणत हो गई और वह युद्ध-स्थलसे भाग गया।

बादशाहने महाराजा गजसिंहका बहुत सम्मान किया। उनके राज्यकी वृद्धि की। उपयुक्त घटना वि० सं० १६८१ की है। इसके पश्चात् भी महाराजा गजसिंहने चौदह वर्ष तक राज्य करते हुए बादशाहकी बहुत सेवाएँ कीं।

जैसे वीर शिरोमणि थे वैसे ही दानवीर भी थे । उन्होंने अपने राज्यमें कई कवियोंको बड़ी-बड़ी जागीरें देकर सम्मानित किया ।

चम प्रकरण

राव अमरसिंह—

ये महाराजा गजसिंहके ज्येष्ठ पुत्र थे । बादशाहने इनकी वीरता पर प्रसन्न होकर इन्हें नागौर राज्यके साथ रावकी उपाधिसे सम्मानित किया ।

एक समयकी घटना है—बादशाह शाहजहाँका दरबार लगा हुआ था । सामन्तगण और अमीर बारी-बारीसे मुजरा करने और भेंट नज़र करनेके लिए अन्दर जा रहे थे । बादशाहका साला सलावतखां सामंतों व अमीरोंको अन्दर लेजा कर बादशाहके सामने परिचय करवाता था ।

ठीक इसी समय राव अमरसिंह भी वहां पहुँचे और सलावतखाँको मुजरा करनेके लिये कहा । इस पर सलावतखाँने इन्हें 'जरा ठहरो' कह कर रोका और स्वयं अन्दर चला गया । कुछ समय प्रतीक्षा करनेके पश्चात् अमरसिंह स्वयं ही बिना किसी हिचकिचाहटके भीतर चले गये और बादशाहको मुजरा करने लगे । सलावतखाँको यह बुरा लगा और वह उन्हें गँवार कहनेके हेतु मुँहसे केवल "गँ" अक्षर का ही उच्चारण कर पाया था कि स्वाभिमानी राठौड़ अमरसिंहने उसके हृदयकी बात जान कर उसके मुँहसे पूरा 'गँवार' शब्द निकलनेके पहले ही अपनी कटार उसके शरीरमें भोंक दी जिससे उसके प्राण पखेरू उड़ गये । बादशाह सिंहासन छोड़ कर अंतःपुरमें भाग गया । उस वीर बाँकुरे राठौड़की क्रोधाग्नि चरम सीमा तक पहुँच चुकी थी । उस समय जो भी उसके सामने आया उसे तलवारके घाट उतार दिया । इस प्रकार रावजी शाही दरबारके पाँच उच्चाधिकारियोंका, जो पंचहजारी कहलाते थे, काम तमाम करके बाहर निकले । पीछेसे अर्जुन गौड़ने, जो उन्हींका आदमी होनेका दम भरता था, बादशाहको खुश करनेके लिए इनकी पीठमें करारा वार कर दिया । वीरवर अमरसिंहने मरते-मरते ही वापिस वार किया जिससे अर्जुन गौड़का कान कट गया और ऐसे वीरका धोखेसे प्राण लेने वाला वह कुल-कलंकी सदाके लिए बूचा हो गया ।

राव अमरसिंहके स्वामि-भक्त सामंत वीर राठौड़ बलू चांपावत और भाऊ कृपावत तथा उनके कुछ साथियोंने बादशाहके अनेकों आदमियोंको आगरेके

किलेमें मार कर रावजीका बदला लिया और रावजीकी रानियीको सती होनेमें सहायता देते हुए वीरवर बलूजी भी वीरगति को प्राप्त हुए ।

महाराजा जसवंतसिंह (प्रथम) —

महाराजा गजसिंहके पश्चात् जोधपुरके राज्य-सिंहासन पर महाराजा जसवंतसिंह आसीन हुए । जसवंतसिंह अपने समयके राजाओंमें सर्वश्रेष्ठ नीतिज्ञ थे । इन्होंने कई ग्रन्थोंकी रचना की और हिन्दू धर्मकी रक्षा की ।

उस समय वृद्ध बादशाह शाहजहां भयंकर रोगसे पीड़ित हो गया था । उसके पुत्र दिल्लीके सिंहासनको प्राप्त करनेके लिए भिन्न-भिन्न प्रकारसे षडयंत्र रचने लग गये थे । बादशाह औरंगजेबने दक्षिणसे एक बहुत बड़ी सेनाके साथ राज्य पानेकी प्रबल आकांक्षासे कूच कर दिया । उस समय बादशाहके चारों ओर विपत्ति के बादल मँडरा रहे थे । इस विषम संकटको टालनेके लिये बादशाहको केवल राजपूत राजा दिखाई दे रहे थे, अतः उसने समस्त राजपूत राजाओंको बुलाया । सभी राजपूत नरेश अपनी सेनाओं सहित दिल्ली पहुँचे ।

आये हुए राजपूत राजाओंमें आमेर-नरेश जयसिंह शाहजादे गूजाको रोकने बंगालकी ओर बढ़े और जोधपुरके महाराजा जसवंतसिंह शाहजादे औरंगजेबका दमन करने दक्षिणकी ओर शाही फौजके साथ बढ़े और उज्जैन पहुँच गये जहां दोनों दलोंका कड़ा मुकाबला हुआ । औरंगजेबने शाहजादे मुरादको प्रलोभन देकर अपनी ओर मिला लिया जिससे उसकी शक्ति दुगुनी हो गई थी ।

महाराजा जसवंतसिंह तनिक भी नहीं घबराये और अपने घोड़े महबूब पर सवार होकर विशाल यवन दल पर दूट पड़े । उन्होंने भयंकर मारकाटके साथ यवनोंका संहार किया और अपने घोड़े सहित पूर्ण रूपसे क्षत-विक्षत हुए । इस समय उनके कुछ सरदारों और रतलामके राजा राठीड़ रतनसिंहने युद्धका भार अपने ऊपर लेकर इन्हें मारवाड़ लौट जानेके लिए बाध्य कर दिया । औरंगजेब विजयी हुआ और कई योद्धाओंके साथ रतनसिंह वीर-गतिको प्राप्त हुआ ।

औरंगजेब दिल्ली पहुँचा और बादशाह बन गया । कुछ समय पश्चात् उसने महाराजा जसवंतसिंहको बुलाया और उनका बहुत आदर-सत्कार किया । यद्यपि उसके हृदयमें महाराजाके प्रति पूर्ण रूपसे कपट था, फिर भी उसने उनको प्रसन्न करनेके निमित्त कीमती उपहार भेंट किये ।

महाराजा जसवंतसिंहजी कवियों और विद्वानोंका बहुत आदर करते थे। उन्होंने अपने राज्यमें कई कवियोंको जागीरें देकर सम्मानित किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने कई युद्ध किये और अंतमें काबुलमें इतका देहावसान हो गया।

षष्ठम प्रकरण

महाराजा अजीतसिंह—

महाराजा जसवंतसिंहके काबुलमें देहावसानके समय उनकी दो रानियां गर्भवती थीं, जिनसे क्रमशः दो पुत्र अजीतसिंह और दलथभण लाहौरमें उत्पन्न हुए। जन्मसे कुछ समय पश्चात् दलथभणका देहान्त हो गया। महाराजा जसवंतसिंहके विश्वासपात्र राठौड़ सामंत बादशाहकी आज्ञानुसार राजकुमार और रानियों सहित दिल्ली पहुँचे। औरंगजेब पहलेसे ही मारवाड़ पर अधिकार करनेके लिए अपनी फौज भेज चुका था। उसने राठौड़ोंको दिल्लीमें बहुत लालच दिए और राजकुमारको अपने हवाले करनेका हुक्म दे दिया। स्वामिभक्त राठौड़ औरंगजेबके किसी लालचमें नहीं आए और राजकुमारको गुप्त रूपसे मारवाड़ भेज दिया। जब वे चारों ओरसे मुगल सेनासे घिर गये तो उन्होंने महाराजा जसवंतसिंहकी रानियोंकी इज्जत बचाने हेतु उन्हें तलवारके घाट उतार कर यमुनामें बहा दिया और स्वयं विशाल यवन दलको संहार करते हुए वीरगतिको प्राप्त हुए जिनमें रुघौ भाटी, सूरजमल साँड़, (चारण), चन्द्रभाण, अचलसिंह, रणछोड़दास आदि मुख्य थे। वीर राठौड़ दुर्गादासके साथ कुछ सरदार अपनी तलवारका जौहर दिखाते हुए मारवाड़ आ गये।

बादशाह राठौड़ोंके इस व्यवहारसे बहुत कुपित हुआ और उसने नागौरके राव इन्द्रसिंहसे, जो राठौड़ अमरसिंहका पौत्र था, कहा कि मेरी आज्ञाका पालन करे तो जोधपुर तुम्हको दे दिया जाय। इन्द्रसिंह इसके लिए राजी हो गया और बादशाहने जोधपुरका पट्टा लिख कर दे दिया। वह एक बहुत बड़ी सेनाके साथ जोधपुर आया। सभी राठौड़ोंने एक होकर उसका मुकाबिला किया। भयंकर युद्ध हुआ जिसमें इन्द्रसिंह पराजित होकर भाग गया।

मारवाड़ पर अधिकार करनेके निमित्त मुगल दलने बार-बार आक्रमण किया। राठौड़ डट कर उनका मुकाबिला करते थे किन्तु अन्तमें जोधपुर पर शाही अधिकार हो गया। इस समय मारवाड़में बहुतसे राठौड़ोंने यवनोंका प्रतिकार करनेके लिए विद्रोह करना शुरू कर दिया। वे पृथक-पृथक दलों में विभक्त होकर

चारों ओर मारकाट और लूट-खसोट करने लगे । वे अवसर मिलते ही मुगलोंकी चौकियों पर दूट पड़ते और ध्वस्त कर देते । यही नहीं, मुगलोंकी रसद लूट लेते थे और उन्हें हर प्रकारसे तंग करने लगे । उन्होंने ऐसी विकट परिस्थिति उत्पन्न कर दी कि मुगलोंको हर समय चौकन्ना रहना पड़ता था ।

महाराजा अजीतसिंहका गुप्त रूपसे लालन-पालन होता रहा और जब कुछ योग्य हुए तो राठौड़ोंने उन्हें अपना अग्रणी बनाया । इनका बल दिन-प्रतिदिन बढ़ता जाता था और इन्होंने मारबाड़में यत्र-तत्र मुगलोंको दबा कर उनसे कर वसूल करना शुरू कर दिया ।

उस समय जोधपुरका सूबेदार गुजाअतखां था । वह लश्करिखाँको जोधपुरका प्रबन्ध सौंप कर गुजरात गया । इधर महाराजा अजीतसिंहजी अपने दलबल सहित आडावलाकी ओर गये । लश्करिखाने महाराजाका पीछा किया और कुरमालकी घाटीमें युद्ध किया किन्तु परास्त होकर भाग गया ।

इस समय उदयपुरके महाराणा जयसिंह और उनके पुत्र अमरसिंहमें गृह-कलह हो गया । महाराणाने उस संकटको टालनेके उद्देश्यसे अपने छोटे भाई गजसिंहकी पुत्रीका विवाह महाराजा अजीतसिंहसे कर दिया ।

महाराजाने होटलूके चौहान चतुरसिंहकी कन्यासे भी विवाह किया था जिसके गर्भसे जालोरमें संवत् १७५६ मार्गशीर्ष वदि १४को शोभनयोग, शकुनिकरण, मिथुनलग्न और विशाखा नक्षत्रमें महाराजकुमार अमरसिंहका जन्म हुआ ।

महाराजा अजीतसिंहने अपनी शक्तिसे मुगलोंके नाकमें दम कर रखा था । उन्होंने दक्षिणमें औरंगजेबकी मृत्युका समाचार सुनते ही अपनी सेना लेकर जोधपुर पर आक्रमण कर दिया । जाफरकुलीने पहले तो महाराजाका सामना किया किन्तु प्रबल राठौड़वाहिनीको देख कर वह किला छोड़ कर भाग गया । यवन इतने भयभीत हुए कि वे अपनी जान बचानेके लिए दाढ़ी मुंडवा कर हाथमें माला-लेकर सीतारामका उच्चारण करते हुए जोधपुरसे भागे । कई राठौड़ों द्वारा कैद कर लिये गये । महाराजाने अपने पैतृक राज्यमें प्रवेश किया । राजधानी, जो यवनोंसे दलित हो गई थी, गंगाजल आदि छिड़क कर शुद्ध की गई । मंदिरोंके स्थान पर मस्जिदें बन गई थीं और इनमें मुल्लोंकी बागें गूजती थीं, उनके स्थान पर वापिस मंदिर बन गये और शंखों व घंटोंकी ध्वनि गूजने लगी । बड़े ठाट-बाटसे महाराजा अजीतसिंह राजसिंहासन पर आसीन हुए ।

श्रीरगजेबके मरते ही शाहजादोंमें तत्काले लिए तनातनी हुई और शाहजादा मुहम्मद मुअज्जम बहादुरशाहके नामसे भारतका बादशाह बन गया। उसने आमेर नरेश जयसिंहसे राज्य छीन कर उसके छोटे भाई विजयसिंहको दे दिया क्योंकि विजयसिंह उसके पक्षका था। जब बादशाह बहादुरशाहको मालूम हुआ कि अजीतसिंहने जोधपुर पर अधिकार कर लिया है तो वह यवन-दलके साथ अजमेरकी ओर रवाना हुआ। इस समय राज्यच्युत आमेर नरेश जयसिंह भी उसके साथ था। महाराज अजीतसिंह और बादशाहमें मेड़तेमें संधि हो गई जिसमें बादशाहने महाराजा और उनके पुत्रोंका बहुत सत्कार किया, उन्हें उपहार भेंट किये और उपाधियोंसे सम्मानित किया।

बादशाह जल्दी ही मारवाड़में शान्ति स्थापित कर के दक्षिणकी अशान्तिको दबानेके लिए चल पड़ा। उस समय राजा जयसिंह, महाराजा अजीतसिंह, दुर्गादास आदि उनके साथ थे। यद्यपि बाहशाह ऊपरसे तो महाराजा अजीतसिंह पर खुश नज़र आता था तथापि उसने जोधपुरका प्रबन्ध करनेके बहाने काजमखाँ और मेहराबखाँको भेज कर जोधपुर पर चुपचाप अपना अधिकार कर लिया। जब इसकी सूचना महाराजा अजीतसिंहको मिली तो वे बहुत क्रुद्ध हुए किन्तु परिस्थितिवश उन्हें चुप रहना पड़ा। जयसिंह और दुर्गादासके साथ महाराजाने चुपचाप बादशाहका साथ छोड़ दिया और तीनों उदयपुर जाकर महाराणा अमरसिंहसे मिले। वहाँ पर उनका बहुत सत्कार हुआ।

वहाँसे लौट कर महाराणा और अजीतसिंहने अपने योद्धाओं सहित जोधपुर पर आक्रमण कर दिया। फौजदार मेहराबखाँ किला छोड़ कर भाग गया और जोधपुर पर पुनः महाराजाका अधिकार हो गया। महाराजा अपने उत्साहसे आगे बढ़ते गये। वे साँभर और डीडवानाको विजय कर के आमेरकी ओर बढ़े। वहाँके फौजदार सैयद हुसैनखाँको परास्त किया। महाराजा अजीतसिंहने जयसिंहको, जो उनके साथ था, पुनः आमेरका राजा बना दिया। साँभरके बराबर दो भाग कर के आधा आमेरकी ओर तथा आधा मारवाड़ राज्यमें मिला दिया और स्वयं अपनी राजधानी जोधपुर लौट आये।

कुछ समय बाद साँभरमें पुनः शाही फौजोंका जमाव होने पर जोधपुर और आमेरकी फौज ने आक्रमण कर दिया। यह युद्ध बड़ा भयंकर हुआ। इसमें जोधपुरका भीम कूपावत मारा गया। अंतमें राजपूतोंकी विजय-दुन्दुभि बजी और महाराजा अजीतसिंहजी जोधपुर लौट आये।

राजपूतोंकी इस विजयकी खबर जब बादशाह बहादुरशाहने सुनी तो वह

बहुत कुपित हुआ और बबराया भी । वह रात-दिन राजपूतों की बढ़ती हुई शक्तिके कारण चिंतित रहने लगा । अंतमें उसने महाराजा अजीतसिंहसे संधि कर ली और जोधपुर तथा जयपुर नरेशोंके अधिकारको मान लिया ।

बादशाह बहादुरशाहके मरनेके पश्चात् उसका पुत्र मुइजुद्दीन जहाँदारशाह अपने भाइयोंको मार कर दिल्लीके तख्त पर आसीन हुआ । इसके कुछ ही दिन बाद सैयदबन्धुओंकी सहायता से फर्रुखसियार मुइजुद्दीन जहाँदारशाहको कैद कर के स्वयं बादशाह बन बैठा । उसने दोनों सैयदबन्धुओंको महत्वपूर्ण पद दिए और उन्हें उपाधियोंसे सम्मानित किया ।

जब फर्रुखसियार बादशाह बना तो नागौरके राव इन्द्रसिंहका पुत्र म्होकमसिंह दिल्ली जाकर महाराजा अजीतसिंहजीके विरुद्ध बादशाहको बहकाने लगा । महाराजा अजीतसिंह वीर होनेके साथ राजनीतिज्ञ भी थे । उन्होंने भाटी अमरसिंहके साथ कुछ सरदारों को दिल्ली भेज कर धोखेसे म्होकमसिंहको मरवा डाला ।

इस घटना से बादशाह बहुत क्रोधित हुआ । उसने सैयदहुसैनअलीको एक बहुत बड़ी सेना देकर मारवाड़ की ओर भेजा । विशाल यवन दल और राजपूतोंमें भेड़तामें संधि हो गई और महाराजकुमार अभयसिंहका हुसैनअलीके साथ दिल्ली जाना तय हुआ । राजकुमार अभयसिंहके वहाँ पहुँचने पर बादशाहने उसका बहुत आदर-सत्कार किया । उन्हें सुनहरी तलवार, जड़ाऊ खंजर, घोड़े आदि भेंट किये तथा पंचहजारी मंसब दिया । महाराजकुमार अभयसिंह ठाट-बाटके साथ जोधपुर लौटे । महाराजा अजीतसिंह राजकुमारसे मिल कर और उनके सकुशल लौट आनेके कारण बहुत हर्षित हुए ।

महाराजा अजीतसिंह अपने मनमें मुगलोंसे कभी प्रसन्न नहीं हुए । वे मुगल सल्तनतको ढाह ही देना चाहते थे । उधर सैयद बन्धुओं और बादशाह फर्रुखसियार में परस्पर वैमनस्य हो गया । इन्हीं दिनों महाराजा अजीतसिंह भी अपने सरदारों सहित दिल्ली पहुँचे । जब महाराजा दिल्लीमें प्रवेश कर रहे थे उस समय उन्होंने अपनी शैशवावस्थामें होने वाले दिल्ली युद्धमें लड़ने वाले उन वीरोंके समाधि-स्थान देखे जो इनकी रक्षार्थ औरंगजेबसे लड़ कर दिल्लीमें ही वीर-गतिको प्राप्त हो गये थे । इन्हें अपनी जन्मदात्री माँका भी स्मरण हुआ जिनकी समाधि भी इसी स्थान पर बनी हुई थी । इनके हृदयमें निद्रित प्रतिशोधकी भावना प्रबल वेगसे भड़क उठी और मन ही मन ठान लिया कि मुगल वंशका ध्वंस कर दूंगा । किन्तु इसे उन्होंने प्रकट नहीं होने दिया ।

दिल्ली में महाराजाका सैयद भाइयों और बादशाह फर्रुखसियरने अलग-अलग स्वागत किया। दोनोंमें से हर एक शक्तिशाली महाराजा अजीतसिंहको अपनी ओर मिलाना चाहते थे। महाराजाका मन बादशाहसे उचट गया था अतः उन्होंने सैयद बन्धुओंका पक्ष लिया, किन्तु इस शर्तके साथ कि इस बादशाहके हटनेके बाद हिन्दुओं पर से जजिया कर हट जाना चाहिए, हिन्दू तीर्थों पर से कर हट जाना चाहिए, मंदिरोंके बनने और उनमें होने वाली नियमित पूजामें किसी प्रकारको बाधा नहीं पड़नी चाहिए और गौ-वध बन्द हो जाना चाहिए, आदि। ये सब शर्तें सैयद बन्धुओंसे करवाई।

इधर सैयद बन्धुओंको यह विश्वास था कि आमेर-नरेश जयसिंह बादशाहको हमारे विरुद्ध बहकाता है, अतः उन्होंने और महाराजा अजीतसिंहने बादशाह फर्रुखसियर पर दबाव डाल कर जयसिंहको आमेर भिजवा दिया।

बादशाह फर्रुखसियर सैयदोंको मरवानेका षडयंत्र कर रहा था, अतः उन्होंने अपने बन्धु सैयद हुसैनअलीको दक्षिणसे अपनी रक्षा और मददके लिए बुला लिया। वह एक विशाल दलके साथ दिल्ली पहुँचा। अब बादशाह पिटारीका सांप बन गया और बहुत भयभीत रहने लगा। सैयदोंने बादशाह फर्रुखसियरको पकड़ कर कैद कर लिया और मार डाला। बादशाहके महलका सारा माल लूट लिया गया और उसे सैयद बन्धुओं तथा महाराजा अजीतसिंहने परस्पर बांट लिया।

उस समय महाराजा अजीतसिंह और सैयद बन्धुओंकी ही दिल्लीमें चलती थी। सैयद बन्धु महाराजाका गुण गाते थे। उन्होंने रफीउद्दरजातको बादशाह बनाया किन्तु कुछ ही समय बाद वह बीमार हो गया तब उसके बड़े भाई रफीउद्दौलाको दिल्लीके तख्त पर बैठा कर बादशाह बनाया। यह बादशाह भी अधिक दिन तक जिन्दा नहीं रहा और महाराजा अजीतसिंहजीकी मंत्रणासे मुहम्मदशाहको बादशाह बनाया गया।

इन्हीं दिनों आगरामें ईरानी मुगलोंने आमेर नरेश जयसिंह आदिसे प्रेरित हो कर उपद्रव कर दिया और उन्होंने अपनी ओरसे निकोसियरको आगरेके तख्त पर बैठा कर बादशाह घोषित कर दिया। सैयद बन्धुओंने हुसैनअलीको आगरेकी ओर रवाना किया और कुछ दिन बाद स्वयं भी महाराजा अजीतसिंहजीको लेकर आगरेकी तरफ प्रयाण किया। सैयदोंने आगरे पर आक्रमण कर के बादशाह निकोसियरको पकड़ कर कैद कर लिया।

सैयद बन्धु आमेर नरेश जयसिंह पर बहुत कुपित थे, अतः उन्होंने आमेर पर आक्रमण कर के जयसिंहको दण्ड देनेका निश्चय किया। जयसिंहने पहलेसे ही

भयभीत होकर महाराजा अजीतसिंहको पत्र लिख कर प्रार्थना की कि अब मेरी लज्जा आपके हाथमें है, आप ही मुझे बचा सकते हैं। इस पर महाराजा अजीतसिंहने सैयद बंधुओंको समझा-बुझा कर आमेरकी ओर जानेसे रोका, यद्यपि सैयद बंधु मनमें जयसिंहसे बहुत जलते थे, किंतु महाराजा अजीतसिंहके सामने उनकी कुछ चल नहीं सकी और सब दिल्ली लौट आये।

कुछ समय पश्चात् महाराजा अजीतसिंहने बादशाहसे विदा मांगी। बादशाहने कई बहुमूल्य वस्तुएं महाराजाको भेंट कीं और बड़े सम्मानके साथ विदा किए। महाराजा अजीतसिंह शोपुरके राजा इन्द्रसिंह, बूंदीके हाडा बुधसिंह, रामपुरके राव, शिशोदिया अखैमल और पतैमल आदिको साथ लेकर रवाना हुए। मार्गमें आमेर नरेश जयसिंहको भी साथमें ले लिया और सबके सब मनोहरपुर होते हुए जोधपुर आ गये। जोधपुरमें अतिथियों सहित महाराजा अजीतसिंहका शानदार स्वागत हुआ। सभी अतिथियोंको जोधपुरमें ठहराया और उनका खूब आदर-सत्कार किया। महाराजा अजीतसिंहके दरबारमें सभी अतिथि उपस्थित हुए और सबने महाराजाको मुजरा कर के नजरें कीं। इस अवसर पर महाराजाने अपनी पुत्रीका विवाह आमेर-नरेश जयसिंहके साथ बड़े ठाट-बाटसे कर दिया।

कुछ समय पश्चात् महाराजा अजीतसिंहजीको यह खबर मिली कि बादशाह मुहम्मदशाहने सैयद बन्धुओंमें से हुसैनअलीको मरवा डाला और दूसरे भाई अबदुल्लाको कैद कर लिया। इससे महाराजा बहुत क्रोधित हुए। उन्होंने तुरन्त अपनी सेना लेकर अजमेर पर धावा बोल दिया और वहां के तारागढ़ पर राठौड़ोकी पताका फहरने लगे। जिस अजमेरमें कुरानके पाठ होते थे, गौ-हत्या होती थी वह सब बन्द होकर मंदिरोंसे घंटा-रव और शंखनाद सुनाई देने लगा। इस समय महाराजा अजीतसिंहजी एक बादशाह की तरह शाही शान-शौकतसे अजमेर में रहने लगे। इन्हीं दिनों महाराजाने सांभर, डोडवाना आदि पर अपनी सेनाएँ भेज कर वहांके शाही फौजदारको भगा दिया और अपना अधिकार कर लिया।

बादशाह मुहम्मदशाहने महाराजा अजीतसिंहका दमन करनेके लिये मुजफ्फर-खाँको तीस हजारकी विशाल सेना देकर भेजा। मुजफ्फरखाँने मनोहरपुरमें आकर पड़ाव किया। इधर महाराजा अजीतसिंहने एक बड़ा दस्बार किया और महाराज-कुमार अभयसिंहको मुजफ्फरखाँका मुकाबला करनेके लिए भेजनेका निश्चय किया। महाराजकुमार अभयसिंहने इस अवसर पर बड़ा उत्साह दिखाया और अपनी सेनाके साथ रघनाथ भंडारीको लेकर रवाना हुए। राठौड़वाहिनीको

अपनी ओर बढ़ती हुई सुन कर मुजफ्फरखाँ बिना मुकाबला किये ही अपनी सेना-सहित भाग गया।

महाराजकुमार अभयसिंहने नारनौल तथा दिल्ली व आगराके आसपासके प्रदेशको लूटना शुरू कर दिया और शाहजहाँपुर तक पहुँच गये। यहाँका फौजदार भी इनके आगे नहीं टिक सका और उन्होंने शाहजहाँपुरको लूट कर भस्मीभूत कर दिया। महाराजकुमार अभयसिंहका आतंक चारों ओर फैल गया और दिल्लीमें खलबली मच गई। इस समय महाराजकुमारका 'धौकळसिंह' नाम पड़ा। अभयसिंहजी विभिन्न प्रकारकी लूटकी वस्तुओंके साथ विपुल धन-राशि लेकर वापिस लौटे। महाराजा अजीतसिंह पुत्रके इस रणकौशल और प्रतापको देख कर बहुत प्रसन्न हुए और उनका स्वागत किया। अब उनको यह विश्वास हो गया कि मेरे बाद मेरा पुत्र भी राठौड़ोंकी शानको रखनेमें समर्थ होगा।

उधर बादशाहने घबरा कर एक दरबार किया और उसमें सब राजाओं-नवाबोंकी सम्मति लेकर महाराजा अजीतसिंहके पास नाहरखाँको अपना संदेश लेकर भेजा। नाहरखाँ महाराजाके पास पहुँचा किन्तु उसके अनुचित व्यवहारके कारण वह मारा गया।

जब बादशाहने यह खबर सुनी तो वह बहुत घबराया और एक बड़ी सेना देकर शरफुद्दौला इरादतमंदखाँको और हैदरकुलीको भेजा। इस विशाल दलके साथ आमेर नरेश जयसिंह, मुहम्मदखाँ बंगस आदि भी अपनी-अपनी सेनाएँ लेकर महाराजाके विरुद्ध आये। इस प्रकार शाही दलको आता देख महाराजा अजीतसिंहने नीमाज ठाकुर ऊदावत वीर अमरसिंहको अजमेरके किलेकी रक्षाका भार सौंप कर स्वयं मारवाड़ जोधपुरकी रक्षार्थ आ गये। शाही दलने अजमेरके किलेको घेर लिया। इस अवसर पर नीमाज ठाकुर ऊदावत अमरसिंहने बड़ी वीरता दिखाई। कुछ दिन युद्ध होनेके पश्चात् आमेर नरेश जयसिंहने संधि करवा दी और अजमेर पर बादशाहका अधिकार हो गया। इस संधिमें महाराजकुमार अभयसिंहका बादशाहके दरबारमें दिल्ली जाना तय हुआ।

बादशाह मुहम्मदशाहने महाराजकुमार अभयसिंहके दिल्ली पहुँचने पर उनका बहुत आदर-सत्कार किया और उन्हें कई बहुमूल्य उपहार भेंट किये। दिल्लीमें रहते हुए इन्हीं दिनों एक समय महाराजकुमार अभयसिंह बादशाह मुहम्मदशाहके दरबारमें गये और निर्भय होकर आगे बढ़ने लगे। जब वे बादशाहके बिल्कुल निकट पहुँचे तो वहाँके एक अमीरने उन्हें रोक दिया। महाराजकुमारने तुरन्त ही अत्यन्त क्रोधित होकर कटार निकाल लिया। बादशाह

मुहम्मदशाह जो सिंहासन पर बैठा यह सब कुछ देख रहा था, तुरन्त उठा और आगे बढ़ कर अपने गलेका मोतियोंका हार महाराजकुमारको पहना कर बड़ी कठिनाईसे इनके क्रोधको शांत किया। अगर बादशाह उस समय ऐसा नहीं करता तो संभवतया वही घटना घटती जो बादशाह शाहजहाँके दरबारमें राठौड़ अमर-सिंह द्वारा हुई थी।

महाराजकुमार अभयसिंह उन दिनों दिल्लीमें बड़े ठाट-बाट से रह रहे थे और महाराजा अजीतसिंहजी जोधपुरमें सुखपूर्वक थे। उन्हीं दिनों एकाएक महाराजाका देहावसान हो गया। [यहाँ पर कर्नल टॉडके अनुसार बादशाह मुहम्मदशाहने ही महाराजकुमार अभयसिंहको दिल्लीमें महाराजा अजीतसिंहके विरुद्ध बहकाया और एक जाली पत्र महाराजकुमार अभयसिंहके हस्ताक्षरका उनके छोटे भाई बख्तसिंह के नाम भिजवा दिया, जिसमें मारवाड़के हितके लिये वृद्ध महाराजाको मारनेका लिखा था। उसीके अनुसार राजकुमार बख्तसिंहने महाराजा अजीतसिंहको मार डाला। हो सकता है कविवर करणीदान राठौड़ वंश पर लगने वाले इस कलंकको छिपानेके लिए 'सूरजप्रकाश' में इस बातके लिए मौन रह गये हों।]

सप्तम प्रकरण

महाराजा अभयसिंह—

स्वाभिमानी महाराजा अजीतसिंहके स्वर्गवासके पश्चात् बादशाह मुहम्मद-शाहने महाराजकुमार अभयसिंहका दिल्लीमें अपने हाथसे राज्याभिषेक किया। इस अवसर पर बादशाहने महाराजा अभयसिंहके कमरमें तलवार बांधी, राज-मुकुट पहनाया और हीरे मोती आदि भेंट किये। कई बहुमूल्य वस्तुएँ उपहारमें दे कर बादशाहने नागौरकी शासन-सनद मारवाड़के नवीन महाराजा अभयसिंहको दे दी। इस प्रकार महाराजा बादशाह द्वारा सम्मानित होकर अपने देश मारवाड़ लौटे।

महाराजाके मारवाड़में प्रवेश करते ही प्रजाने बड़ी भक्तिसे नवीन महाराजाका स्वागत किया। ज्यों-ज्यों महाराजा अभयसिंह राजधानीकी ओर बढ़ते गये त्यों-त्यों प्रत्येक स्थानकी कुलवधुओंने शिर पर जलसे भरे कलश रख कर तथा गीत गा कर महाराजाका सम्मान किया। महाराजाने भी राजधानी लौट कर सामंतोंको उपहार दिये तथा कवियोंको पुरस्कार देकर सम्मानित किया।

सदियोंसे चली आ रही प्रथाके अनुसार महाराजा अभयसिंहका जोधपुरमें ठाट-बाटसे राज्याभिषेक हुआ। तत्पश्चात् महाराजा अभयसिंहने नागौर पर

आक्रमण करनेके लिये अपनी सेना तैयार की। चिर-प्रचलित प्रथाके अनुसार ज्वालामुखी तोपोंको शक्तिका रूप मान कर बकरोँ आदिकी बलि दी गई। तेल-सिन्दूरसे उनकी पूजा की गई। युद्धकी सारी सामग्री तैयार की। महाराजा अभयसिंह अपने छोटे भाई बखतसिंहके साथ पूर्ण रूपसे सुसज्जित होकर नागौरकी ओर बढ़े। नागौरका राव इन्द्रसिंह महाराजाकी शक्तिके सामने झुक गया। नागौर पर महाराजाका अधिकार हो गया। महाराजाने अपने छोटे भाई बखतसिंहको नागौरका राजा बनाया और उन्हें 'राजाधिराज' की उपाधि दी। इन्हीं दिनों महाराजाके छोटे भाई आनन्दसिंह और रायसिंहने उपद्रव कर के मेड़ता पर चढ़ाई कर दी। शेरसिंह मेड़तियाने मेड़ताकी रक्षा की। महाराजा भी नागौरकी ओरसे निवृत्त होकर अपने भाई बखतसिंहके साथ मेड़ता पहुँच गये। यहाँ पर आसपासके राजाओंने महाराजाके पास नजरें भेजीं और इन्हीं दिनों महाराजाने जैसलमेरकी राजकुमारीसे विवाह भी किया और जोधपुर लौट आये।

कुछ समय पश्चात् बादशाहका आज्ञा-पत्र मिलनेके कारण महाराजा अभयसिंह अपने सामंतों सहित दिल्ली जानेके लिये रवाना हुए। जब वे दिल्ली पहुँचे तो बादशाहने उनका बहुत आदर-सत्कार किया। उसने अपने दरबारमें महाराजाको बैठा हुए सारे उमरावों व अमीरोंसे उच्च स्थान पर आसीन किया और इनकी बहुत प्रशंसा की।

बादशाहने गुजरातके उपद्रवको दबानेके लिए सरबुलन्दखाँको भेजा था। सरबुलन्दखाँने विद्रोहियोंसे मिल कर गुजरात पर अधिकार कर के अपनेको वहाँका अधीश्वर घोषित कर दिया। सरबुलन्दके इस प्रकार स्वतंत्र होनेकी खबर जब बादशाहके पास पहुँची तो वह बहुत घबराया।

बादशाहने शक्तिशाली सरबुलन्दका दमन करनेके लिए अपने विशाल दरबारमें सोनेके पात्रमें बीड़ा (ताम्बूल) रख कर घुमाया। मुगल साम्राज्यके शक्तिशाली वीरों तथा अमीरोंसे दरबार खचाखच भरा था किन्तु किसीकी भी सरबुलन्दके विरुद्ध बीड़ा उठानेकी हिम्मत नहीं हुई। बादशाहको निराश व दुखी देख कर महाबली महाराजा अभयसिंहने बीड़ा उठा कर सरबुलन्दको बादशाहके कदमोंमें झुकानेकी प्रतिज्ञा की। बादशाहने अजमेरके साथ गुजरात सूबेकी शासन-सनद महाराजा अभयसिंहको दे दी। इस अवसर पर बादशाहने प्रसन्न होकर महाराजाको मुकुट, सिरपेच, कीमती खंजर, कटार, तलवार आदि देकर सम्मानित किया। इसके अतिरिक्त मय बारूदके विभिन्न आकारकी तोपें, अस्त्र-शस्त्र, बंदूकें तथा कुछ सेनाके साथ इकतीस लाख रुपया खर्चका देकर विदा किया।

वहाँसे महाराजा सेना सहित जयपुर आये । ग्रामेर नरेश जयसिंहने इनका बहुत आदर-सत्कार किया और अपने यहाँ ठहराया । वहाँसे महाराजा मेड़ते पहुँचे और अपने छोटे भाई बखतसिंहसे मिल कर उनके साथ जोधपुर लौट आये ।

राजधानी लौटने पर महाराजाने सरबुलन्द पर चढ़ाई करनेके लिये अपने राज्यके सारे सामन्तोंको परवाने भेज कर सेना सहित इकट्ठा किया । महाराजाने एक विशाल दल तैयार किया । पूर्ण रूपसे अस्त्र-शस्त्रोंसे सुसज्जित हुए । तोपोंको शक्तिका रूप मान कर उनकी पूजा की । महाराजाने इस प्रकार तैयार होकर अपने छोटे भाई बखतसिंहके साथ सरबुलन्दके विरुद्ध प्रयाण किया और जालोर आये । वहाँसे रोहेड़ा और पौसाळियाके जागीरदारोंको परास्त किया । महाराजाने सिरोहीके रावको दण्ड देनेके लिए आक्रमण कर दिया । महाराजाकी असीम शक्तिके सामने सिरोहीके रावको झुकना पड़ा और उसने अपने भाईकी कन्याका विवाह कर के महाराजासे संधि कर ली । महाराजा अभयसिंह वहाँसे रवाना होकर पालनपुर पहुँचे । यहाँका शासक फौजदार करीमदादखाँ महाराजासे मिल गया ।

महाराजाने सरबुलन्दको एक पत्र लिखा जिसमें उसको अहमदाबाद छोड़ कर बादशाहके सामने झुकनेके लिए लिखा किन्तु सरबुलन्दने स्पष्ट इन्कार कर दिया ।

महाराजाने अपने दलबल सहित रवाना होकर सरस्वती नदीके किनारे सिद्धपुरमें डेरा किया । उधर सरबुलन्द महाराजासे लोहा लेनेके लिए पूर्ण रूपसे तैयारी कर चुका था । उसने अपने अधीनस्थ सभी मुसलमानोंको सेना-सहित इकट्ठा कर महाराजाके विरुद्ध मोर्चा बांध लिया ।

इस समय महाराजाने एक दरबार किया जिसमें उनकी सेनाके सभी सुभट इकट्ठे हुए । इस अवसर पर राठौड़ वंशकी भिन्न-भिन्न शाखाओंके—चांपावत, कूपावत, ऊदावत, करणावत, करमसिंहोत, मेड़तिया, जोधा, ऊहड़, रूपावत, भारमलोत आदि तथा सभी वंशोंके राजपूत जैसे भाटी, चौहान, शिशोदिया, सोनगरा, शेखावत, मांगलिया आदिके अग्रणी वीरोंने तथा चारण कवियों, राज-गुरु पुरोहितों तथा ओसवाल मुत्सद्दियों आदिने सभामें बड़ी जोशीली आवाजसे यह प्रदर्शित किया कि हम सरबुलन्द पर विजय करनेके लिये वीर-गतिको प्राप्त होनेमें बिल्कुल नहीं हिचकिचायेंगे ।

महाराजा अभयसिंहने सभामें बड़ा जोशिला भाषण दिया । उन्होंने अपनी सेनाके वीरोंको बताया कि एक दिन मरना तो सभीको है ही फिर क्यों नहीं हम रण-भूमिमें वीर गतिको प्राप्त होवें जो कि सन्यासियों व महात्माओंकी तपस्यासे भी बढ़कर है ।

सभी वीर अपनी-अपनी सेना को तैयार कर के आगेका कार्यक्रम बनानेमें जुट गये । महाराजाकी सेनामें अश्वारोही सेना बड़ी प्रबल थी । उसमें दक्षिणके भीमरथळी नामक स्थानकी अश्व श्रेणी सबसे अग्रणी थी । इसके अतिरिक्त मारवाड़के धाट, राड़धरा और काठियावाड़के अश्व प्रमुख थे । इस प्रकार राठौड़वाहिनी एक भयावनी घटाके समान तैयार होकर सरबुलन्दके विरुद्ध चल पड़ी ।

उधर सरबुलन्दने इस भयंकर दलका मुकाबिला करनेके लिये पूर्ण रूपसे तैयारी करनेमें कोई कसर नहीं रखी । उसने नगरमें जानेके प्रत्येक मार्ग पर अपनी सेनाके साथ तोपें तैयार करदीं जिन्हें यूरोपियन चलाते थे । उसकी सेवामें बंदूकधारी यूरोपियन सैनिक भी थे ।

[ग्रंथ-सार देने के साथ ही मैं यहां राजस्थान प्राच्य-विद्या-प्रतिष्ठान, जोधपुरके सम्मान्य संचालक, पद्मश्री जिन विजयजी मुनि, पुरातत्त्वाचार्यके प्रति आभार प्रदर्शित किये बिना भी नहीं रह सकता कि जिन्होंने राजस्थानीके इस प्राचीन ग्रंथका सम्पादन करनेके लिए मुझे सत्प्रेरणा दी । ग्रंथ-संपादनमें श्री गोपालनारायणजी बहुरा, एम. ए., उप-संचालक, राजस्थान प्राच्य-विद्या-प्रतिष्ठान, जोधपुरने समय-समय पर मार्ग-निर्देशन कर और ग्रंथ-सम्पादन हेतु सहायक ग्रंथोंके अध्ययनमें सहयोग देकर जो सौजन्य प्रकट किया उसके लिए मैं पूर्ण कृतज्ञ हूँ । श्री पुरुषोत्तमजी मेनारिया, एम. ए., साहित्यरत्नने भी ग्रंथके प्रूफ संशोधनमें अपना पूर्ण सहयोग दिया है, इसके लिए वे धन्यवादके पात्र हैं ।]

जोधपुर;

—सीताराम लाल

वसंत पंचमी, वि० सं० २०१६

सहायक ग्रंथों की सूची



लेटर मुगल्स— इविन

उदयपुर राज्य का इतिहास— डॉ० गौरीशंकर हीराचंद ओझा कृत भाग १, २

औरंगजेबनामा— मुन्शी देवीप्रसाद

जोधपुर राज्य का इतिहास— डॉ० गौरीशंकर हीराचंद ओझा कृत भाग १, २

जोधपुर राज्य की रथात— (हस्तलिखित) हमारे संग्रह से

तवारीखे पालनपुर— सैयद गुलाबमियाँ कृत

दयालदास की रथात— सिढायच दयालदास कृत, भाग २—डॉ० दशरथ शर्मा द्वारा संपादित,

अनूप संस्कृत लायब्रेरी, बीकानेर द्वारा प्रकाशित

नैणसी मुहणोत की रथात— काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित, खंड १, २

नैणसी मुहणोत की रथात— राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

ढाँड राजस्थान— हिंदी अनुवादक पं० बलदेवप्रसाद मिश्र, भाग १, २

पालनपुर राज्य नो इतिहास— (गुजराती) भाग १, नवाब सरताले मुहमंदखाँ कृत

मारवाड़ का इतिहास— पं० विश्वेश्वरनाथ रेऊ, प्रथम भाग

मारवाड़ का संक्षिप्त इतिहास— पं० रामकरण आसोपा

राजरूपक— वीरभाणू रतनू कृत

राजबिलास— मान कवि कृत (नागरी प्रचारिणी सभा, काशी का संस्करण)

वंशभास्कर— कविराजा सूरजमल मीसरा

वीर विनोद— महामहोपाध्याय कविराजा श्यामलदास कृत, भाग २

हिस्ट्री ऑव औरंगजेब— यदुनाथ सरकार



कविया करणीदांन विजैरांमोतरौ कह्यौ

सूरजप्रकास

भाग २

अथ महाराजा गजराजकीरौ वरणण

उठै 'गजण' आवियौ^१, अभंग दळ लियां^२ अथाहां ।
राव^३ दुवां जिम रखित^४, पेस न कियौ^५ पतिसाहां* ।
रीत सनातन धरम, क्रिया ध्रम करे अणंकळ^६ ।
राज तिलक सिर^७ धारि, तखत^८ बैठौ^९ अतुलीबळ^{१०} ।
ऐराक गयंद सिरपाव असि, दिल्लीनाथ^{११} जंवहर दिया^{१२} ।
तदि बधे^{१३} क्रीत^{१४} 'गजबंध'^{१५} तणी, दक्षिणी^{१६} थाट दहल्लिया^{१७} ॥ १
तपत^{१८} भळाहळ अतुळ, पिंड भळाहळ पौरिस^{१९} ।
अति प्रकास ऊजळौ, जगत उज्जास^{२०} बंधे^{२१} जस ।

१ ख. ग. आवीयो । २ ख. ग. लीयां । ३ ख. राज । ४ ख. ग. रखत । ५ ग. कीया ।

*ख. प्रतिमें निम्न पद्यांश छूट गया है—

“पेस न कीया पतिसाहां, रीत सनातन धरम ।”

६ ख. अणकळ । ग. अणकळ । ७ ख. सिरि । ८ ग. तषति । ९ ख. बैठो ।
१० ख. अतुलीवल । ११ ख. ग. दिलीनाथ । १२ ख. ग. दीया । १३ ख. बधे ।
१४ ख. ग. क्रीति । १५ ख. गजबंध । १६ ख. दक्षिणी । १७ ख. ग. दहल्लीया ।
१८ ख. ग. तप । १९ ख. ग. पौरिस । २० ख. ग. उजास । २१ ख. ग. बधे ।

१. रखित - रक्षित, धन-दोलत । अणंकळ - वीर । ऐराक - घोड़ा । जंवहर - जवाहरात ।
दहल्लिया - भयभीत हुए । थाट - दल, सेना ।

२. तपत - तप्त, तपस्या, तेज, कांति । भळाहळ - देदीप्यमान । पिंड - शरीर । पौरिस -
पौरुष, शक्ति, सामर्थ्य ।

करण सहंस सम करग, तिमर^१ कुरियंद^२ भगौ तिण ।
 दवै^३ तास तप देखि, अवर छत्रपति ताराइण^४ ।
 प्रगटियौ^५ उदैगिरि जोधपुर, कमळ^६ सुकवि प्रफुलित करे ।
 गह धार^७ पाट वणियौ^८ 'गजण', सूरज^९ सूरजसिंघरै ॥ २

खळ भग्गा देखतां, चोर छळ जोर निसाचर ।
 सुध्रम दांन सिनांन^{१०}, ब्रह्म जप वधे^{११} स्त्रियावर^{१२} ।
 पूजा^{१३} देव प्रसाद, वधै^{१४} भालरि^{१५} घंट बाजा^{१६} ।
 सुभ मारग मिळ^{१७} सयण, सकळ सुख वधे सकाजा ।
 किलमांण चंद्रवंसी कमळ, देखि तास सकुचै^{१८} डरै^{१९} ।
 गहधार^{२०} पाट वधियौ^{२१} 'गजण', सूरज^{२२} सूरजसिंघरै^{२३} ॥ ३

उण अवसर मभि 'अमर', अधक^{२४} धर दुंद उठायौ ।
 मिलि^{२५} असपत्ति खुरभ^{२६}, अधिक दळ बळ^{२७} मभि^{२८} आयौ ।
 हरवळ 'गजबंध'^{२९} हुवौ^{३०}, 'अमर' लड़ियौ^{३१} उण वारां^{३२} ।
 खेड़ेचां दिखणियां^{३३}, रीठ वागौ खग धारां ।

१ ख. विमर । २ ख. ग. कुरीयंद । ३ ख. दवे । ग. दवे । ४ ख. ग. तारायण ।
 ५ ख. ग. प्रगटियौ । ६ ख. कम । ७ ख. ग. धारि । ८ ख. ग. वणीयो । ९ ख.
 सूरज । ग. सूरिभ । १० ख. ग. सन्नांन । ११ ख. वेंधे । १२ ख. ग. श्रीयावर ।
 १३ ग. पूजो । १४ ख. ग. वधे । १५ ख. ग. भालर । १६ ग. बाजा । १७ ख.
 ग. मिलि । १८ ख. सकुचे । १९ ख. डरे । २० ख. महधारि । ग. गहधारि ।
 २१ ख. ग. वणीयो । २२ ख. ग. सूरजि । २३ ख. सूरजसंघ । २४ ख. ग. अधिक ।
 २५ ख. ग. मेलहे । २६ ख. ग. घुरम । २७ ख. बळ । २८ ख. ग. मभि । २९ ख.
 गजबंध । ३० ख. हुवौ । ३१ ख. ग. लड़ियो । ३२ ग. वारां । ३३ ख. ग. दिखणीयां ।

२. करण सहंस - सूर्य । करग - हाथ । तिमर - तिमिर, अन्धेरा । कुरियंद - दारिद्र्य,
 कंगाली, निर्धनता । छत्रपति - राजा । ताराइण - तारागण, उडुगण, गह, गर्व ।
 पाट - राज्यसिंहासन । गजण - गजसिंह ।

३. सुध्रम - सुधर्म, उत्तम कर्म, पुण्य कर्तव्य । स्त्रियावर - सीतावर, श्रीरामचन्द्र ।
 किलमांण - यवन ।

४. अमर - मलिकअंबर चंपू नामक व्यक्ति जो जातिका हब्बी था और ब्रह्मदत्तनगरका
 प्रधान मन्त्री था । असपत्ति - बादशाह । गजबंध - महाराजा गजसिंह । रीठ -
 प्रहार । वागौ - वजा, हुआ ।

असि गयंद तबल^१ नेजा लियां^२, खड़े 'अमर' भड़ रिण^३ खळे ।
 भागा^४ हजार बावन^५ भिड़े^६, उभै हजारां आगळे ॥ ४
 खड़की गढ़ धोखळे^७, गोळकूंडी^८ गाहट्टे ।
 खत्रि^९ लियौ^{१०} खेलणौ^{११}, भाड़ि खळ दळ खग भट्टे ।
 तोड़िचंदी^{१२} तोड़ियौ^{१३}, निहंग चढियौ^{१४} पड़ि^{१५} नाळौ ।
 गढ़ विकराळौ 'गजण', रूक बळि^{१६} लियौ^{१७} रनाळौ^{१८} ।
 आसेर सतारौ^{१९} ऊभड़े^{२०}, धोम कोम अहि धूजियौ^{२१} ।
 दळथंभ नांम असपति^{२२} दियौ^{२३}, पटां वधारां पूजियौ^{२४} ॥ ५
 दखिण घरा रस दियौ^{२५}, असह नह करै इरादौ ।
 दिली लियण^{२६} जिण दीह, जोम भरियौ^{२७} साहिजादौ ।
 देखि चहन^{२८} दळथंभ, सीख मांगे^{२९} तै सायत^{३०} ।
 दीध सीख दळ लियण^{३१}, असप गज करे^{३२} इनायत^{३३} ।

१ ख. तबल । २ ख. ग. लीया । ३ ख. ग. पड़ि । ४ ख. नागा । ५ ख. बांवन ।
 ग. वावन । ६ ख. ग. सुभड़ । ७ ख. धोयले । ग. धोयलै । ८ ख. गोळकुंडो । ग.
 गोळकुंडी । ९ ख. ग. षत्रो । १० ख. ग. लीयौ । ११ ख. ग. खेल्हणौ । १२ ख.
 तोड़िचंजी । ग. तोड़िचंजी । १३ ग. तोडीयौ । १४ ख. ग. चढीयां । १५ ख. ग. पड़ ।
 १६ ख. वळ । ग. बळ । १७ ख. ग. लीयौ । १८ ग. रजाळौ । १९ ख. ग. सतारा ।
 २० ख. ग. ऊभड़े । २१ ख. ग. धूजीयौ । २२ ग. असिपति । २३ ख. ग. दीयौ ।
 २४ ख. ग. पूजीयौ । २५ ख. ग. दीयै । २६ ख. ग. लीयण । २७ ख. ग. भरियौ ।
 २८ ख. ग. चहन । २९ ख. मंगे । ग. मंगे । ३० ख. ग. सायति । ३१ ग. लीयण ।
 ३२ ख. करै । ३३ ख. ग. इनायति ।

४. तबल—एक प्रकारका शस्त्र विशेष । खळे—विचलित हो कर, अधीर हो कर ।
 आगळे—अगाड़ी ।

५. धोखळे—युद्धमें । गाहट्टे—ध्वंश कर, पराजित कर । भाड़ि—प्रहार कर, संहार कर ।
 खग भट्टे—तलवारोंके प्रहारोंसे । निहंग—आसमान । विकराळौ—भयंकर, जबरदस्त ।
 गजण—महाराज गजसिंह । रूक—तलवार । आसेर—गढ़, किला । ऊभड़े—नाश
 हो गया । धोम—उल्लास, गर्मी । कोम—कूर्म, कच्छप । अहि—शेषनाग । दळथंभ—
 सेनाको मुकाबलेसे रोकने वाला, महाराजा गजसिंह की उपाधि विशेष ।

६. रस—रुचि, आकर्षण । असह—शत्रु । इरादौ—विचार । दीह—दिन, दिवस ।
 जोम—उमंग, जोश । चहन—चिन्ह, निशान । असप—अस्व, घोड़ा ।

हुय विंदा सभे दळ हालियौ^१, साभण^२ कज^३ सुरतांणरौ ।
जोधांण^४ अयौ^५ जोधांणपति, जगे भाग जोधांणरौ ॥ ६

इतै खुरम आवियौ^६, साह परि^७ सभि दळ सब्बळ ।
घर साहां धौपटै, खलक मंडि^८ पड़े^९ खळब्भळ^{१०} ।
तांम^{११} साह तेड़ियौ^{१२}, 'गजण' जीपण गजभारां ।
अवस^{१३} को^{१४} (इ) ऊवरां^{१५}, तेड़ि लीधा तिण वारां ।
करि 'गजण' थाट खटतोस कुळ, आराबा^{१६} गज धज अगां ।
हालियौ^{१७} साह संकट^{१८} हरण, खुरम साह भांजण खगां ॥ ७

विखम तबल^{१९} वाजतां, गयंद गाजतां गरूरां ।
असि धमसतां अनेक, सगह बहसतां सूरां ।
सेलां बीज^{२०} सिळाव, मरद मारवां^{२१} गहम्मह^{२२} ।
इम आयौ 'गजसाह', दिल्ली^{२३} पतिसाह दरगह^{२४} ।
मिळ^{२५} साह कुरव^{२६} बगसे महत, तेग बंधे^{२७} स्त्री हथि तठै ।
पतिसाह 'गजण' मसलति परठि, जुध आरंभ कीधौ जठै ॥ ८

१ ख. ग. हालीयो । २ ख. ग. सजण । ३ ख. ग. काज । ४ ग. जोधांणि । ५ ख. आयौ । ६ ख. ग. आवीयो । ७ ख. ग. पर । ८ ख. ग. सभि । ९ ग. पड़े । १० ख. षळब्भळ । ग. षळसळ । ११ ख. ग. ताम । १२ ख. ग. तेडीयो । १३ ख. ग. अवर । १४ ख. सकी । ग. सकौ । १५ ख. ऊंवरा । १६ आरावा । १७ ख. आलीयो । ग. हालीयो । १८ ख. ग. संकट । १९ ख. तवल । २० ख. बीज । २१ ख. ग. मारवां । २२ ख. गहम्मद । ग. गहम्मह । २३ ख. ग. दिली । २४ ख. ग. दरगह । २५ ख. ग. मिलि । २६ ख. ग. कुरव । २७ ख. वधे ।

६. साभण - दण्डित करनेको, सजा देनेको, संहार करनेको ।

७. धौपटै - उपद्रव करते हैं, लूटते हैं । खलक - खलक, संसार । खळब्भळ - खलबली, घबराहट । तेड़ियो - बुलाया । जीपण - जीतनेको । गजभारां - हाथियोंका समूह, हाथियोंकी सेना । थाट - सेना । आराबा - तोप । धज - घोड़ा । अगां - अगाडी ।

८. गरूरां - गंभीर । असि - अश्व, घोड़ा । धमसतां - जोसपूर्ण चलने पर । सगह - गर्व । सिळाव - बिजलीकी चमक । मारवां - राठोड़ों । गहम्मह - समूह, भीड़ । गजसाह - महाराजा गजसिंह । दरगाह - दरबार । महत - महान । परठि - रच कर ।

धोम^१ नयण सिधुरां^२, जंगी हौदां पाखर जड़ि^३ ।
 तांम हुवा^४ तइयार^५, भीड़^६ सिलहां ससत्रां भड़ि^७ ।
 परठि जीण पाखरां, तुरंग सभिया^८ अतुलीबळ^९ ।
 भार आरावां^{१०} भरे^{११}, मोहर^{१२} खड़किया^{१३} अमंगळ ।
 चढ़ि गयंद तुरां होतां चमर, धख दिल्ली सुख कजि धरे ।
 मिसलां अमीर बंट^{१४} जुध मंडै^{१५}, साह खुरम पतिसाहर ॥ ९

तांम साह तजबीज^{१६}, एम^{१७} चित मभि अघारै^{१८} ।
 नयर जोध अंब^{१९} नयर, वडा दो^{२०} भूप विचारै ।
 जादा दळ 'जैसाह', देखि हरवळ करि दीधौ ।
 दळां मौहरि^{२१} 'दाहिणै, कमंध खित^{२२} निज दळ कीधौ ।
 डहकियो^{२३} साह देखे^{२४} डंमर^{२५}, घणूं भेद^{२६} न लहै घणा ।
 त्रण लाख दुसह भांजै तिसा, त्रण हजार 'गजबंध'^{२७} तणा ॥ १०

१ ग. धोम । २ ग. सीधुरां । ३ ग. जड । ४ ख. ग. हुंआ । ५ ख. ग. तईयार ।
 ६ ख. तोडि । ७ ख. ग. भड । ८ ख. ग. सभिया । ९ ख. अतुलीबळ । १० ख.
 आरावां । ११ ख. ग. भरै । १२ ख. ग. मोहरि । १३ ख. ग. षडकीया । १४ ख.
 ग. बंटि । १५ ख. मिले । ग. मंडे । १६ ख. तजबीज । १७ ग. एम । १८ ख.
 आघारे । ग. आघारें । १९ ख. अंब । २० ख. ग. दोय । २१ ख. मौहरि । ग. मौहौरि ।
 २२ ख. षिज । ग. षीज । २३ ख. डहकीयो । २४ ग. देखे । २५ ख. ग. डमर ।
 २६ ग. भोदि । २७ ख. गजबंध ।

९. धोम - अग्नि, आग, लाल । सिधुरां - हाथियों । हौदां - अम्मारी । भीड़ - कस कर,
 बाँध कर । सिलहां - कवचों । आरावां - तोपें रखनेकी गाड़ी । मोहर - अगाड़ी ।
 खड़किया - बजाये । अमंगळ - अमांगलिक वाद्य । तुरां - घोड़ों । धख - प्रबल इच्छा ।
 कजि - लिये । मिसलां - पंक्तियों ।

१०. अघारै - धारण करता है, विचार करता है । नयर जोध - जोधपुर नगर । अंब नयर -
 ग्रामेर नगर जो जयपुर राज्यकी प्राचीन राजधानी था । जैसाह - मिर्जा राजा जयसिंह ।
 हरवळ - हरावल, सेनाका अग्र भाग । मौहरि - अगाड़ी । डहकियो - भौचक्का हुआ,
 स्तंभित हुआ । डंमर - वैभव, ऐश्वर्य ।

उठै^१ भीम हरवलां^२, हुवौ^३ खूमांण हठाळौ ।
 अवर^४ खांन ऊबरां^५, चढ़े लसकर^६ कळिचाळौ ।
 तोप^७ दगे^८ तिण वार, अवर^९ आरबा^{१०} अपारां ।
 ओळां^{११} जिम पड़ि असण, धोम^{१२} गोळां धोमारां ।
 उडि कोहक^{१३} बांण^{१४} सिर धड़ उडै, गज^{१५} भिड़ज्ज^{१६} भड़ पड़ि गरा ।
 खुरमरा थाट आया खड़े, भिड़ज उपाड़े 'भीमरा' ॥ ११
 जाडां थंडां जियार, लोह आडां भड़^{१७} लागा ।
 जेण वार 'जैसाह', भिड़े हरवळ दळ भागा ।
 जु मसै^{१८} दळ जंहगीर^{१९}, अवर नह को आलंबण^{२०} ।
 उण वेळा औरिया^{२१}, थाट दारण दळथंभण ।
 रोकिया^{२२} खुरम 'भीमांण'रा^{२३}, दळ दहुंवै फाटां दळां ।
 घण जरद घाट सेलां घमक, वाजि भाट घण बीजळां^{२४} ॥ १२

१ ख. ग. उठी । २ ख. ग. हरवलां । ३ ख. ग. हुवौ । ४ ग. अवर । ५ ख. ऊबरा ।
 ६ ग. लसकरि । ७ ग. तोप । ८ ग. दगे । ९ ग. अवर । १० ख. आरवां । ग.
 आरबा । ११ ख. ग. बोला । १२ ग. धोम । १३ ख. ग. कहौक । १४ ख. बांण ।
 १५ ख. गज्ज । ग. गज्ज । १६ ख. ग. भिड़ज्ज । १७ ख. भल । ग. भड़ । १८ ख.
 ग. जुमसे । १९ ख. ग. जाहंगीर । २० ख. आलंबण । २१ ख. ग. ओरीया ।
 २२ ख. रोकिया । ग. रीकोया । २३ ख. ग. भीमेण । २४ ख. ग. बीजळां ।

११. भीम—महाराणा अमरसिंहका पुत्र भीम सीसोदिया जो महाराणा करणसिंहकी सेनाका
 सेनापति था । खूमांण—सीसोदिया वंशका राजपुत । हठाळौ—अपनी बात
 हड़तापूर्वक रहने वाला । ऊबरां—अमीर, सरदार । कळिचाळौ—योद्धा, वीर ।
 असण—तोपका गोला, तीर, बाण । धोम गोळां—आगके गोले । धोमारां—(?) ।
 कोहक बांण—एक प्रकारकी तोप, अग्निबाण । भिड़ज्ज—घोड़ा । गरा—समूहों ।
 थाट—सेना, दल । खड़े—चला कर । भिड़ज—घोड़ा ।

१२. जाडां थंडां—घनी सेनाओं । जियार—जिस समय । लोह आडां भड़ लागा—बहुतसे
 योद्धाओं पर शस्त्र-प्रहार हुआ । जैसाह—मिर्जा राजा जयसिंह । मसै—मुड़ना,
 खिसना । आलंबण—अवलंब, सहारा । औरिया—भोंक दिये । दारण—भयंकर,
 जबरदस्त । दळथंभण—सेनाको रोकने वाला, महाराजा गजसिंहकी उपाधि विशेष ।
 भीमांणरा—भीमसिंह सीसोदियाके । दहुंवै—दोनों ओरके । घण—बहुत । जरद—
 कवच । घाट—शरीर । घमक—प्रहार, वार । वाजि—बजी, ध्वनित हुई । भाट—
 प्रहार । बीजळां—तलवारों ।

मेवाड़ां मारवां^१, वहै साबळ^२ बीजूजळ ।
 ताणि वाग रवि तांम, दुगम देखंत दमंगळ ।
 पिंड फूटै रत^३ पडै, पियै^४ चौसठि^५ भरै^६ पत्तर ।
 सिर तूटां^७ सूरिमां, सभै संकर गळि चौसर^८ ।
 रिख हसै वरै वर अछरा^९, कमंध लोह स्त्रीहथ करै^{१०} ।
 जमददां खंजर पिंजरां जडै, कळह 'भीम' 'गजबंध'^{११} करै ॥ १३
 बथां^{१२} भरै गळबाह^{१३}, हथां^{१४} जमदाढ भळाहळ^{१५} ।
 जडै घटां जरदाळ, भिडै नीकळै भळाहळ ।
 बकै^{१६} छकै^{१७} विकराळ^{१८}, धुकै^{१९} ऊचकै^{२०} पडै धर^{२१} ।
 निहंग हंस नीभकै, अगन भभकै धर अंबर^{२२} ।
 पाड़ियौ^{२३} 'भीम' खागां पछटि, गयौ खुरम लसि कुरंग गति ।
 गहतंत एम^{२४} जीतौ^{२५} 'गजण', पुरब^{२६} धर जोधाणपति ॥ १४

१ ख. ग. मारवां । २ ख. साबळ । ३ ख. रति । ४ ख. पीयै । ५ ख. चौसठि ।
 ६ ख. ग. भरि । ७ ख. ग. तूटै । ८ ग. चौसरि । ९ ख. ग. अपछरां । १० ख.
 ग. स्त्रीहथि । ११ ख. गजबंध । १२ ख. बथां । १३ ख. गळबांह । १४ ख. ग. हथा ।
 १५ ख. हलाहल । १६ ख. बकै । ग. वके । १७ ख. छवै । १८ ख. ग. विकराळ ।
 १९ ग. धुकै । २० ख. उचकै । २१ ख. ग. धरै । २२ ख. अंबर । २३ ख. ग.
 पाड़ीयो । २४ ख. ऐम । २५ ख. जीतो । २६ ख. पुरब ।

१३. मेवाड़ां - सीसोदियों । मारवां - राठौड़ां । बीजूजळ - तलवार । रवि - सूर्य ।
 दुगम - दुर्गम, कठिन, भयंकर । दमंगळ - युद्ध । रत - रक्त, खून । चौसठि -
 चौसठ योगिनियोंका समूह । पत्तर - खप्पर । सभै - धारण करते हैं । चौसर - हार,
 माला (यहाँ मंडमाला अर्थ हैं) । रिख - नारद ऋषि । वरै - वरण करती है । पिंजरां -
 शरीरोंमें । जडै - प्रहार करता है । भीम - भीमसिंह सीसोदिया । गजबंध -
 महाराज गजसिंह ।

१४. बथां - बाहुपाश । गळबाह - कंठालिगन । भळाहळ - चमकती हुई । घटां - शरीरों ।
 जरदाळ - कवचधारी । भिडै - टक्कर खाती या खाता है । भळाहळ - चमकदार,
 दमकती हुई । धुकै - क्रोधमें जलते हैं । ऊचकै - उचकते हैं । निहंग - आकाश ।
 हंस - सूर्य, प्राण । नीभकै - उत्कंठित । अगन - अग्नि । भभकै - प्रज्वलित होती
 है । धर - पृथ्वी । अंबर - आकाश । लसि - शोभा देता हुआ । कुरंग - हरिण ।
 गहतंत - मस्त, जोशपूर्ण । जीतौ - विजयी हुआ ।

इम नौबत^१ बजाइ^२, दुभल जीतियौ^३ दमंगल^४
 पटा वधारा समपि, साह पूजे भुज सबल^५ ।
 कदे सिलह नह करी^६, विडंग ऐरि^७ बहू^८ वारां ।
 बौह^९ वारां^{१०} 'गजबंध', भिड़े^{११} जीतौ^{१२} गजभारां ।
 तिण वार तेज 'गजबंध' तणौ^{१३}, दहुं राहां सिर दीपियौ^{१४} ।
 स्त्रीहथां खाग वाहै^{१५} इसा, जुध करि बावन^{१६} जीपियौ^{१७} * ॥ १५

महाराजा श्री गजसिंघजीरौ दानवरण^{१८}

असि सिरपाव अनेक, कड़ा मोती गज कंकण^{१९} ।
 थाट दरब^{२०} थेलियां^{२१}, घणा जंवहर भूषण घण ।
 जमददु खग जंवहार, अधिक रीभे^{२२} जसदावै ।
 दिया^{२३} जीत दळथंभ, इता गिणतां नह आवै ।
 पलटियौ^{२४} नहीं ग्रहियां पलौ, सत हरचंद विरदां^{२५} सधे^{२६} ।
 दातारपणै^{२७} 'गजबंध'^{२८} दुभल, वीकम क्रन^{२९} हूतां वधे^{३०} ॥ १६

१ ख. ग. तववति । २ ख. वजाय । ग. बजाय । ३ ख. ग. जीतीयौ । ४ ख. ग. दुमंगल । ५ ख. सबल । ग. सबल । ६ ख. ग. किवी । ७ ख. ग. बोरे । ८ ख. ग. वहु । ९ ख. बौहां । ग. बहौ । १० ख. ग. वारां । ११ ख. भीडे । ग. भिड़े । १२ ख. जीतो । १३ ख. गजबंध । १४ ख. दीपीयौ । ग. दापीयौ । १५ ग. वाहे । १६ ग. बावन । १७ ग. जीपीयौ । * यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है । १८ ख. वर्ननं । ग. वर्नन । १९ ख. ग. कंकण । २० ख. ग. दरब । २१ ख. ग. थेलियां । २२ ख. रीभे । २३ ख. ग. दीया । २४ ख. ग. पलटियौ । २५ ख. ग. विरदां । २६ ख. सधे । २७ ख. दातार तणै । २८ ख. गजबंध । २९ ग. कन । ३० ख. ग. वधे ।

१५. दुभल - वीर, योद्धा । दमंगल - युद्ध । वधारा - पूर्वजोंकी जागीर या राज्य भूमिके अतिरिक्त प्राप्त की जाने वाली नई भूमि, राज्य या ग्राम । विडंग - घोड़ा । ऐरि - युद्ध-भूमिमें भोंक कर । गजबंधतणौ - महाराजा गजसिंहजीका । राहां - सम्प्रदायों । सिर - ऊपर । दीपियौ - चमका, शोभित हुआ ।

१६. थाट - ढेर, राशि, समूह । दरब - द्रव्य । जंवहर - जवाहरात । पलौ - अंचल, वस्त्र, छोर । सत हरचंद - सत्यवादी हरिश्चन्द्र । बिरदां - विरुद्धों । सधे - प्राप्त किये । गजबंध - महाराज गजसिंह । दुभल - वीर, योद्धा । वीकम - वीर विक्रमादित्य । क्रनहूता - दानवीर राजा कर्णसे । वधे - बड़ा, विशेष हुआ ।

दूहा- गांम आठ बारह^१ गयंद, पनरह^२ लाख^३ पसाव ।

गुण पातां रीभे 'गजण', दीधा दिल दरियाव ॥ १७

कवित्त- लाख प्रथम दनि लहै^४, आदि 'राजसी' अखावत ।

लख दूजौ^५ दनि^६ लहै^७, पात 'राजसी' पतावत ।

दुरस 'किसन' लख दोइ, लहै आढां जस लाइक^८ ।

गाडण^९ 'केसव' गुणे, ब्रवे पंचम लख वाइक^{१०} ।

लख छठौ 'खेम' धधवाइ लहि, रांण जगत^{११} सेवा रहण ।

धधवाइ लाख सपतम धरे, स्यामदास माधवसुतण ॥ १८

अस्टम लख उणवार^{१२}, लहै^{१३} खेतल^{१४} कवि^{१५} लाळस ।

सुकवि हेम सांमौर, जेण लख नमौ काज जस ।

दसम लाख कलियाण, राव महडू जाडावत ।

सिंढाइच^{१६} हरदास, एक^{१७} दस लख बांणावत^{१८} ।

१ ख. ग. बारह । २ ग. पनर । ३ ख. लाखे । ४ ख. हले । ५ ख. दूजो ६ ग. दति । ७ ख. हले । ८ ख. ग. लायक । ९ ग. गाडण । १० ख. ग. वायक । ११ ख ग. जगड । १२ ग. तिणवार । १३ ख. लहे । १४ ग. वेजळ । १५ ग. कवि । १६ ख. संढायच । ग. संढायच । १७ ग. ऐक । १८ ख. बांणावत ।

१७. गुण - काव्य, कविता, यश । पातां - पात्रों, कवियों । गजण - महाराजा गजसिंह ।

१८. दनि - दानमें । लाख - लाखपसाव । राजसी - राजसिंह नामक अखावत बारहठको जालीवाड़ा नामक ग्राम लाखपसावमें दिया था । राजसी - राजसिंह नामक पातावत शाखाका बारहठ । दुरस - महाकवि दुरसा आढ़ा, या श्रेष्ठ । किसन - दुरसा आढ़ाका पुत्र किसना आढ़ा जिसको पांचेटिया ग्राम दिया गया था । 'रघुवरजसप्रकाश'के कर्त्ता अपर किसनाजी इनसे छठी पीढ़ीमें हुये थे । केसव - केसोदास गाडणको सोमडावास नामक ग्राम लाखपसावमें दिया गया । ब्रवे - दिया गया । वाइक - वाक्य, शब्द । खेम - खेमराज धधवाड़ियाको राजगियावास नामक ग्राम लाखपसावमें दिया गया । धधवाड़ - चारणांमें धधवाड़िया नामक गोत्रका व्यक्ति । माधोदास धधवाड़ियाके सुपुत्र श्यामदास धधवाड़ियाको सातवाँ लाखपसाव दिया गया ।

१९. अस्टम लख - आठवाँ लाखपसाव । खेतल - खेतसिंह नामक लाळस गोत्रका कवि जिसको जोधपुर तहसीलका भाटेळाई नामक ग्राम लाखपसावमें दिया गया । हेम - हेम कवि जो सांभोरे गोत्रका चारण कवि था । इसको महाराज गजसिंहने अपना कविराजा बनाया था । इसने 'गुण भाखा चरित्र' नामक महाराजा गजसिंहके राज्य-कालमें एक ग्रंथ बनाया था जो हमारे संग्रहमें है । दसम - बांणावत - प्रसिद्ध कवि जाडा महडूका पुत्र कल्याणदास । बाणाके पुत्र हरिदास सिंढायचको ग्यारहवाँ लाखपसाव दिया गया ।

बारमौ लाख माधव बगसि, संधायच हर^१ सुखनू^२ ।
 तेरमौ लाख दीधौ तदिन^३, पोह^४ कविया^५ पंच मुखनू^६ ॥ १६
 दोहा—सुकवि 'मान' 'गोकळ' सुकवि, रूपग सुणि बहु^७ रीध ।
 'गजै'^८ होय सुरतर^९ गहर^{१०}, दोय भाटां लख दीध ॥ २०
 बहु^{११} राजस सुखदांन बहु^{१२}, बहु^{१३} जुध फते^{१४} निबाह^{१५} ।
 सो^{१६} जग ऊपरि^{१७} क्रीत सभि, सुगि^{१८} गौ^{१९} पह^{२०} 'गजसाह' ॥ २१
 पुत्र दोय 'गजपति'रै, सूर दतार सधीर ।
 वडौ 'अमर' लहुडौ^{२१} 'जसौ', वडे^{२२} नखत^{२३} नरवीर ॥ २२
 पांण तपोबळ^{२४} बयळपति^{२५}, 'जसै'^{२६} लहे^{२७} जोधांण ।
 पाट विराजै छत्रपती^{२८}, मारू अमली^{२९} मांण ॥ २३
 असि सिरपाव गयंद अथ^{३०}, जे जंवहार^{३१} अदाब^{३२} ।
 पातिसाह^{३३} भुज पूजिया^{३४}, कहि महाराज^{३५} किताब^{३६} ॥ २४

१ ख. जस । ग. तस । २ ख. ग. सुष्पनू । ३ ग. तदिन । ४ ख. ग. पहाँ । ५ ख. कवीयां । ६ ख. ग. सुष्पनू । ७ ख. पो । ग. पहाँ । ८ ख. ग. गजण । ९ ग. सुर-
 नर । १० ख. गजर । ११ ख. बहौ । ग. बहौ । १२ ख. बहौ । ग. बौहौ । १३ ख.
 बहौ । ग. बहौ । १४ ख. फते । १५ ख. ग. निबाह । १६ ख. ग. सौहौ । १७ ख.
 ऊपर । ग. उपर । १८ ख. श्रुति । १९ ख. गौहौ । २० ग. पौह । २१ ग. लहुडौ ।
 २२ ख. वडे । २३ ख. ग. वषति । २४ ख. तपोवल । २५ ख. यणपित । ग. वयणपित ।
 २६ ख. जसे । २७ ग. लहे । २८ ख. ग. छत्रपति । २९ ख. अमती । ग. अवली ।
 ३० क. अब । ख. अथि । ३१ ख. अजवार । ग. जुवहार । ३२ ख. ग. अदाब ३३ ख.
 पातसाह । ३४ ख. ग. पूजीया । ३५ ख. ग. माहाराज । ३६ ख. किताब ।

१६. कविया पंच मुखनू — कविया गोत्रके पंचायणदास कविको ।

२०. रूपग — काव्य, रूपक । रीध — प्रसन्न हो कर । गजै — महाराजा गजसिंह । सुरतर —
 सुरतरु, कल्पवृक्ष । गहर — गंभीर ।

२१. राजस — राज्य । क्रीत — कीर्ति, यश । सुगि — स्वर्गमें । पह — राजा । गजसाह —
 गजसिंह ।

२२. अमर — राव अमरसिंह । लहुडौ — छोटा ।

२३. पांण — प्राण, शक्ति, बल । बयळपति — बयळ = सूर्य + पति — सूर्यवंशका पति । जसै —
 जसवंतसिंह । पाट — राज्यसिंहासन । मारू — राठौड़ । अमली मांण — अपने अधिकार
 व ऐश्वर्यका उपभोग करने वाला ।

२४. असि — घोड़ा । अथ — अर्थ, धन, द्रव्य । जंवहार — जवाहरात । अदाब — मान,
 प्रतिष्ठा । किताब — (खिताब, उपाधि ?)

गज अस^१ ब्रवि^२ नागौर गढ़, दे बहु^३ कुरब^४ दिलेस ।
ताव हुंतासण देखि तन, राव कहै^५ 'अमरेस' ॥ २५

इति चतुर्थ प्रकरण ।

★

राव अमरसिंहजीरी वरणण

कवित्त-समे^६ तेण सुरतांण, अंब^७ दीवांण वणायौ ।
जठै राव जोमहूं^८, 'अमर' मदभर जिम आयौ
ऊभौ लोपि अमीर, जवन बह^९ हफतहजारी ।
मीर वुजक^{१०} इतमांम^{११}, कियौ तदि जड़े कटारी^{१२} ।
तदि गयौ साह तजि छत्र तखत, इम दहुं राह उचारियौ^{१३} ।
असपती सलाबति^{१४} मभि 'अमर', मीर सलाबत^{१५} मारियौ^{१६} ॥ १
उभै मिसल अंबखास^{१७}, पड़े^{१८} धड़हड़ अणपारां ।
राव जांणि नरसिंघ, हले करि दयंतविहारां ।
तख जमदढ़ नीभरै^{१९}, रुधर^{२०} मुख चख रातंबर^{२१} ।
काळरूप विकराळ, 'अमर' छिवतौ^{२२} भुज अंबर^{२३} ।

१ ख. ग. असि । २ ख. ग. ब्रवि । ३ ग. वही । ४ ख. ग. कुरव । ५ ख. ग. कहे ।
६ ख. समे । ग. समै । ७ ख. आव । ग. आंब । ८ क. जौमहूं । ९ ख. ग. धवौ ।
१० ख. तुजिक । ग. तुभिक । ११ ख. ग. अतिमांम । १२ ग. कटारि । १३ ख.
ऊचारीयौ । ग. उचारीयौ । १४ ख. सलावति । १५ ख. सलावति । ग. सलाबति ।
१६ ख. ग. मारीयौ । १७ ख. ग. अमषास । १८ ख. ग. पड़े । १९ ख. नाभरै ।
२० ख. ग. रुधिर । २१ ख. मातंबर । ग. रातंबर । २२ ख. छिवतौ । ग. छिवतौ ।
२३ ख. अंबर ।

२५. ब्रवि - देकर, प्रदान कर । दिलेस - दिल्लीश, बादशाह । ताय - जोश, क्रोध ।
हुंतासण - अग्नि, आग । अमरेस - नागौराधिपति राव अमरसिंह ।

१. सुरतांण - मुल्तान, बादशाह । अंब दीवांण - आम दरबार । जोमहूं - जोशसे । अमर -
राव अमरसिंह । मदभर - हाथी, गज । मीर वुजक - अभियान या जलूस आदि की
व्यवस्था करने वाला कर्मचारी । असपती सलाबति - बादशाहसे रक्षित । मीर
सलाबत - वल्शी सलाबतखां ।

२. अंबखास - आम खास । धड़हड़ - गिरनेसे उत्पन्न ध्वनि विशेष । राव - राव अमरसिंह ।
नरसिंघ - नृसिंहावतार । दयंत - दैत्य, असुर, मुसलमान । विहारां - संहार, ध्वंस ।
नीभरै - भर रहा है । रुधर - रुधिर रक्त, खून । रातंबर - लाल । अंबर -
आकाश ।

मल्हपियौ^१ रूप अध्रियांमणै^२, बहसंतौ^३ बंवाड़तौ^४ ।
उरड़तौ सुजड़ जड़तौ असुर, पांचहजारी पाड़तौ ॥ २

पांच^५ हजारी पांच, घड़ां जड़ि हणे जमंधर ।
मुख^६ सांम्हा^७ 'अमररै', न को आवै नर - नाहर ।
ग्रहि^८ छळ अरजण^९ गौड़^{१०}, परठि मनवार^{११} अपारां ।
नजर टाळि नाराज, वहे^{१२} घट हुवौ^{१३} विहारां ।
वड़ियै सरीर जमदढ़ वधे^{१४}, 'अजौ' कुसळ^{१५} नह ऊबरै^{१६} ।
जीवहूं लाज मोटी जिका, कान^{१७} काट^{१८} अळगौ करै^{१९} ॥ ३

'अमर' लोथि आविया^{२०}, वीर दारण^{२१} विकराळा ।
पाड़ि खळां जुधि पड़े^{२२}, काळभाळा किरमाळा^{२३} ।
दियण^{२४} दाग^{२५} दारणां, 'अमर' आणें उण वारां ।
रचि आई रांणियां^{२६}, सती करि करि सिणगारां ।

१ ख. ग. मल्हपियौ । २ ख. ग. अध्रियांमणै । ३ ख. ग. बहसंतौ । ४ ख. बांवाड़तां ।
ग. बांवाड़तौ । ५ ख. पंच । ६ ख. मुखि । ७ ख. सामा । ८ ख. ग. ग्रह । ९ ख.
ग. अरिजण । १० ख. ग. गवड़ । ११ ख. मनह्वार । ग. मनह्वारि । १२ क. वहे ।
१३ ख. ग. हुवो । १४ ग. वहे । १५ ख. कुसलि । १६ ख. ऊबरे । १७ ख. कानि ।
१८ ख. ग. काटि । १९ ख. ग. करे । २० ख. ग. आवीयां । २१ ग. दारण ।
२२ ग. पड़े । २३ ख. ग. करिमाळा । २४ ख. ग. दीयण । २५ ग. दाग । २६ ख.
ग. रांणीयां ।

२. मल्हपियौ - छलांग भरी, कूदा । अध्रियांमणी - भयंकर । बहसंतौ - विध्वंस करता हुआ ।
बंवाड़तौ - जोशपूर्ण आवाज करता हुआ । उरड़तौ - बलात् बढ़ता हुआ । सुजड़ -
कटार । जड़तौ - प्रहार करता हुआ ।

३. घड़ां - शरीरों । जड़ि - प्रहार कर । सांम्हा - सम्मुख, सामने । अमररै - राव अमर-
सिंहके । परठि - प्रतिष्ठा कर के । नाराज - तलवार । वहे - चला कर । विहारां -
विदीर्ण । वड़ियै - कट गये । अजौ - अर्जुन गोड़ । मोटी - महान, महत्वपूर्ण ।

४. लोथि - शव । दारण - दारुण, जबरदस्त । काळभाळा - वीर, योद्धा । किरमाळा -
खड़्गधारी । दियण दाग - अन्त्येष्टि क्रिया करनेको ।

कमधज्ज^१ 'बलू'^२ सतियां^३ कनै^४, कथ अमरहूं कहाविया^५ ।
सुरताणहूंत घमसाण सभि, अम्हां^६ सताबी^७ आविया^८ ॥ ४

सतियां^९ 'आम'^{१०} सहेत, दाग वेदोगति दीधा ।
केसरियां^{११} कमधजां, करे^{१२} अत^{१३} उच्छव^{१४} कीधा ।
वड चांपावत^{१५} 'बलू'^{१६}, कमध 'भाऊ' कूपावत ।
अवर^{१७} भींच उमराव^{१८}, रोस भरिया^{१९} बहु रावत ।
सभि^{२०} तुरां साज जकड़ेससत्र, 'बलू'^{२१} मौड़ सिरबांधीयो^{२२} ।
'अमर'रै वैर^{२३} असपतिहूं, कमधां जुध आरंभ कियो^{२४} ॥ ५

आया छिबता^{२५} उरस^{२६}, तेज खड़िया^{२७} तोखारां^{२८} ।
जड़ता सेलां जवन, रीठ देता खगधारां ।
सात फौज साहरी, विखम करि धार विहारां ।
भट वहता भेलता^{२९}, मिळै दरगाह मंभारां ।

१ ग. कमधज्ज । ख. कमधज । २ ख. बलू । ३ ख. ग. सतीयां । ४ ख. ग. कनां ।
५ ख. ग. कहावीया । ६ ख. ग. अम्हे । ७ ख. सताबी । ८ ख. ग. आवीया ।
९ ख. ग. सतीयां । १० ख. ग. अमर । ११ ख. ग. केसरियां । १२ ग. करे ।
१३ ख. ग. मृत । १४ ख. उच्छव । ग. उत्छव । १५ ग. चांपावत । १६ ख. बलू ।
१७ ग. अमर । १८ ख. ग. अमररा । १ ख. ग. भरिया । २० ख. सजि । २१ ख.
बलू । २२ ख. बांधीयो । ग. बांधीयो । २३ ग. वैरि । २४ ख. ग. कीयो । २५ ख.
ग. छिबता । २६ ख. ग. उरसि । २७ ख. ग. जड़ियां । २८ ग. तोखारां । २९ ख.
ग. भेलता ।

४. बलू - राठौड़ बलू चांपावत । कनै - साथ । कथ - संदेश । अमरहूं - राव अमर-
सिंहसे । घमसाण - युद्ध । अम्हां - हम । सताबी - शीघ्र ।

५. आम - राव अमरसिंह । दाग - अन्त्येष्टि संस्कार, दाह-संस्कार । वेदोगति - वेदोक्त
विधानसे । वड - बड़ा, महान । चांपावत - राठौड़ वंशकी उपशाखा । कूपावत -
राठौड़ वंशकी उपशाखा । अवर - अपर, अन्य । भींच - योद्धा । रोस - जोश, उमंग ।
भरिया - पूर्ण, भरे हुए । रावत - (राजपुत्र) योद्धा, वीर । सभि तुरां साज - घोड़ों
पर जीन कस कर । जकड़े ससत्र - शस्त्रोंसे सज्जित हो कर । अमररै - राव अमर-
सिंह राठौड़के ।

६. छिबता - स्पर्श करते हुए । उरस - आसमान । तोखारां - घोड़ों । जड़ता - प्रहार
करते हुए । रीठ - प्रहार । दरगाह - दरबार ।

सत्र लोटपोट उडि दोट सिर, धजर चोट खग धोहड़ा ।
 नवकोट छ खंड वागा निडर, लालकोट^१ मभि लोहड़ा ॥ ६
 दळ पाड़े^२ बह^३ रवद, पड़े^४ भिल लोह अपारां ।
 करे^५ अचड़ कमधजां, वरे^६ अपछर तिण वारां ।
 चढ़ विमाण^७ चलविया^८, सकौ कमधज सिरदारे ।
 सूर लोक सत लोक, जाइ 'अमरेस' जुहारे ।
 जावे^९ न नांम रवि चंद^{१०} जितै, गोम तितै^{११} सिर^{१२} नागरै ।
 उडि गया^{१३} थंभ तरवारियां^{१४}, औजूं साखी^{१५} आगरै ॥ ७
 दूहौ^{१६}— 'अमर' प्रवाड़ा एण^{१७} विध, कहिया^{१८} सुकवि सकाज ।
 इण आगळि वरणन^{१९} अथग, राज तेज जसराज ॥ ८

महाराजा जसवंतसिंघरौ वरणन

कवित्त— राजतेज 'जसराज', सहस नव पति^{२०} संह^{२१} संकर^{२२} ।
 राजनीत धमरीत^{२३}, वरण चत्र सुखी धरमवर ।
 राजथंभ मंत्रियां^{२४}, राज रच्छिक^{२५} उमरावां ।
 राजद्वार^{२६} बहु^{२७} कुरव^{२८}, राज जसधर कविरावां ।

१ ख. लालकोटि । २ क. पाड़े । ३ ख. ग. वौही । ४ क. पड़े । ५ क. करे ।
 ६ क. वरे । ७ ख. वमाण । ८ ख. चलवीया । ग. चालीया । ९ ख. जाए । ग. जाऐ ।
 १० ख. ग. ससि । ११ ख. ग. जितै । १२ ख. ग. सिरि । १३ ख. उडिया । १४ ख.
 ग. तरवारीयां । १५ ग. सांघी । १६ ख. दोहा । ग. दौहा । १७ ग. ऐण । १८ ख.
 ग. कहिया । १९ ग. वरन । २० ग. पच्छि । २१ क. संह । २२ ख. ग. संकर ।
 २३ ख. ग. धमरीति । २४ ख. ग. मंत्रीयां । २५ ख. ग. रच्छिक । २६ ख. ग. राज-
 द्वारि । २७ ख. वही । ग. बहौ । २८ ख. कुरव ।

६. लोटपोट—कुलांचें खाते हुए । दोट—प्रहार । धजर—भाला । धोहड़ा—जखमों,
 राठीड़ों । लालकोट—लाल किला । लोहड़ा—अस्त्र-शस्त्रों ।

७. रवद—यवन, मुसलमान । अचड़—महत्त्वपूर्ण कार्य, श्रेष्ठताका कार्य । सकौ—सब ।
 सूर लोक—वह कल्पित लोक जहाँ पर वीर-गति प्राप्त योद्धागण पहुँचते हैं । सत लोक—
 वह कल्पित लोक जहाँ पर वे वीर पुरुष पहुँचते हैं जिनकी अधीनियता उनके साथ सती
 होती है । अमरेस—राव अमरसिंह । जुहारे—अभिवादन किया । गोम—पृथ्वी ।
 नागरै—शेषनागके । औजूं—अभी तक ।

८. प्रवाड़ा—वीरताके कार्य, युद्ध, शाका । आगळि—अगाड़ी ।

९. सहस नव पति सह—मारवाड़का अधिपति । सहसंकर—सूर्य । वरण चत्र—चारों
 वर्ण । राजथंभ—राज्यके स्तंभरूप । रच्छिक—रक्षक । राज जसधर—महाराजा
 जसवंतसिंहसे प्राप्त यश वाले । कविरावां—कविराजाओं ।

दुजराज राजप्रोहित दिपत, सरव^१ राज सुख साजरौ ।
 पतिव्रता राज मिंदरां^२ पवित्र, राज एम^३ 'जसराज'रौ ॥ ९
 *बाजराज^४ नृत^५ बेव^६, करै नटराजतणी कळ ।
 गजां राज घण गरज^७, गाज सरराज मदगळ^{८*} ।
 रूप भूप रतिराज, प्राण^९ अगराज^{१०} प्रकासण ।
 कौरवराज^{११} धन करण, विमळ सुरराज विलासण ।
 अरिराज थरक^{१२} मानै अमत^{१३}, तप ग्रहराज तराजरौ ।
 इण राज जोड़ नह राज अनि, राज एम^{१४} जसराजरौ ॥ १०
 नाभ राज इक निमळ^{१५}, प्रफुलि गिरराज वंसपर ।
 रहै जठै तन राज, रमै रसराज रूपधर ।
 पंडव राज प्रधान, मूरछन राज ब्रह्मंड^{१६} ।
 जीति^{१७} राज तन जिता, चक्र सिवराज खंड चंड ।
 रतिराज पुत्र जैराजरै, किकर राज सुरपति कियौ^{१८} ।
 'जसराज' ग्यांन दुजराज जग^{१९}, जिकौ^{२०} राजपति जीपियौ^{२१} ॥ ११

१ ख. सरव । २ ख. ग. मंदिरां । ३ ग. ऐम ।

*ये दो पंक्तियाँ ग. प्रतिमें नहीं हैं ।

४ ख. बाजराज । ५ क. नृप । ६ ख. वेव । ७ ख. गाज । ८ ख. मदगल ९ ग.
 प्राण । १० ख. मृगराज । ग. नृपगराज । ११ ख. ग. कोषराज । १२ ख. ग. थरकि ।
 १३ ख. ग. अमल । १४ ग. ऐम । १५ ख. ग. नृमल । १६ ख. ग. ब्रह्मंड । १७ ख.
 ग. जीति । १८ ख. ग. कीयौ । १९ ख. ग. जगि । २० ख. जीको । ग. जिको ।
 २१ ख. ग. जीपीयौ ।

९. दुजराज — द्विजराज, ब्राह्मण । राजमिंदरां — राजमहलोंमें ।

१०. बाजराज — घोड़ा । बेव — दो दो । कळ — प्रकार, तरह । सरराज — समुद्र । मदगळ —
 हाथी । रतिराज — कामदेव । प्राण — शक्ति । अगराज — सिंह । विमळ — पवित्र ।
 सुरराज — इन्द्र । करण — धनका दान देनेमें कर्णके समान । विलासण — उपभोग करने
 वाला । थरक — भय, डर । अमत — अमित, अपार । ग्रहराज — सूर्य । तराजरौ —
 समानका । जोड़ — बराबर । अनि — अन्य । जसराज — राजा जसवंतसिंह ।

११. इस पद्यमें महाराजा जसवंतसिंहके गूढ़ वेदान्त एवं योग सम्बन्धी ज्ञानकी ओर संकेत है ।

छंद बेताळ

ग्यांन ब्रह्म 'जसराज' गुण, पुन^१ उग्र तप करि पाविया^२ ।
 सार 'जसवंत' आदि 'सुतिवर'^३, विविध^४ ग्रंथ वणाविया^५ ।
 ब्रह्म^६ सिव सनिकादि^७ मुनिवर, ध्यांन नित^८ प्रत^९ चित धरै ।
 त्रगुण^{१०} पर उर^{११} वसै^{१२} निज तत, राज मभि जसराज^{१३}रै ॥ १२

कवित्त-ग्यांनी सीखै ग्यांन, कवी सीखै कविताई ।
 सीखै खत्री संग्राम, सस्त्र विद्या^{१४} सरसाई ।
 मत सीखै मंत्रवी, राग सीखै रसचारी ।
 सीखै धम कुळ^{१५} सकळ, रीत सीखै छत्रधारी ।
 सीखंत वेद पंडित^{१६} सकळ, दाता दान^{१७} विध^{१८} दसदसौ ।
 सब^{१९} जाण उतम^{२०} विद्या^{२१} प्रसध^{२२}, जगतगुरू राजा 'जसौ' ॥ १३
 करै राज इम कमध^{२३}, 'जसौ' छत्रपति जोधाणै ।
 इतै^{२४} दिल्ली^{२५} ऊठियौ^{२६}, खेध धौकळ^{२७} खुरसाणै ।
 साहज्यहां^{२८} तिण समै^{२९}, जुगत^{३०} त्रिय^{३१} वसि^{३२} चित जादा ।
 मिळि 'अवरंग' 'मुरादि', दखिण^{३३} मुरडै^{३४} साहिजादा ।

१ ख. पुण्य । ग. पुन्य । २ ख. ग. पावीया । ३ ख. वर । ४ ख. ग. विवधा ।
 ५ ख. ग. वणावीया । ६ ख. ब्रह्म । ग. ब्रह्म । ७ ख. ग. सनिकादि । ८ ख. ग. निति ।
 ९ ख. ग. प्रति । १० ख. ग. त्रिगुण । ११ ख. ग. वर । १२ ख. वसे । ग. वसे ।
 १३ ख. ग. विदीया । १४ ख. ग. प्रज । १५ ख. ग. पंडित । १६ ख. ग. दन ।
 १७ ख. ग. विधि । १८ ख. श्रव । १९ ख. ग. उतिम । २० ख. ग. विदीया ।
 २१ क. प्रसद । ग. प्रसिध । २२ ग. कमध । २३ ख. यतै । ग. यतै । २४ ख. ग.
 दिल्ली । २५ ख. ऊठियो । ग. उठियो । २६ ख. ग. धौषळ । २७ ख. ग. साहजिहां ।
 २८ ख. समै । ग. समै । २९ ख. जुगति । ३० ख. ग. त्रिय । ३१ ख. ग. वसि ।
 ३२ ख. दक्षिण । ३३ ग. मुरडै ।

१२. ग्यांन ब्रह्म - ब्रह्मज्ञान, तत्त्वज्ञान । जसराज - महाराजा जसवंतसिंह । पुन - पुण्य ।
 तत - तत्त्व ।

१३. मत - बुद्धि, मति । मंत्रवी - मंत्री । रसचारी - रसज्ञ । दसदसौ - दसों दिशाओंमें ।
 जगतगुरू - महान, जगद्गुरु । राजा जसौ - राजा जसवंतसिंह ।

१४. जसौ - राजा जसवंतसिंह । खेध - द्वेष, कलह । धौकळ - युद्ध, उत्पात । खुरसाणै -
 बादशाहत, बादशाह । साहज्यहां - बादशाह शाहजहाँ । त्रिय - स्त्री । अवरंग - औरंग-
 जेब । मुरडै - कोप कर । साहिजादा - शाहजादा ।

पूरब्ब^१ धरा^२ 'सूजै' पलटि^३, पिता हुकम सुजि लोपिया^४ ।
साहज्यां^५ अतै 'द्वारा' सुकर, कळहण दारुण^६ कोपिया^७ ॥ १४

तांम 'जसौ' तेड़ियौ^८, अधिक दळ बळ^९ सभि आयौ^{१०} ।
सुपह मिले^{११} साहसां^{१२}, सभे हित कुरव^{१३} सवायौ ।
जिण वेळां 'जैसाह', हुतौ^{१४} कूरम पह^{१५} हाजर ।
साहिजादै^{१६} पतिसाह, बिहू^{१७} देखिया^{१८} बराबर^{१९} ।
तजबीज^{२०} साह कीधौ तठै, अवर सकौ^{२१} याहूं^{२२} वरै^{२३} ।
कीजिये^{२४} विदा मांडण^{२५} कळह, अै साहिजादां^{२६} ऊपरै ॥ १५

साह तांम समसेर, जड़त^{२७} जंवहरां जमंधर ।
मुलक वधारै समपि, हेम तौड़ा^{२८} गज हैमर ।
'सूजा' दिस^{२९} 'जैसाह', विदा कीधौ जिण वारे ।
दो^{३०} साहजादां^{३१} दिसी^{३२}, एक^{३३} 'जसराज' अधारे ।

१ ख. पूरव । ग. पूरव्व । २ ख. घरा । ३ ख. पटलि । ४ ख. ग. लोपीया । ५ ख. ग. साहिजां । ६ ख. वार । ग. दारण । ७ ख. ग. कोपीया । ८ ख. ग. तेड़ीयौ । ९ ख. बळ । १० ख. ग. आयौ । ११ ख. मिल । १२ ख. ग. साहसूं । १३ ख. कुरव । १४ ख. हुंतौ । ग. हूतौ । १५ ख. ग. पोहौ । १६ ख. ग. सहजादै । १७ ख. बिहूं । ग. बिहू । १८ ख. देखीया । ग. देखीया । १९ ख. ग. बराबर । २० ख. ग. तजबीज । २१ ख. ग. सकौ । २२ ख. याहूं । २३ ख. ग. उरै । २४ ख. ग. कीजीयै । २५ ख. मंडल । ग. मंडण । २६ ख. साहजादां । २७ ख. ग. जड़ित । २८ ख. ग. तोरा । २९ ख. दिसै । ग. दिसि । ३० ख. ग. वारै । ३१ ख. ग. दोय । ३२ ग. साहिजादो । ३३ ख. ग. दिसी । ३४ ग. ऐक ।

१४. सूजै—शाहजादा सुजा । लोपिया—उल्लंघन किया । साहज्यां—शाहजहाँ । द्वारा—शाहजादा दाराशिकोह । कळहण—युद्ध ।

१५. तेड़ियौ—बुलाया । सुपह—राजा । जैसाह—मिर्जा राजा जयसिंह । पह—राजा । मांडण—रचनेको ।

१६. समसेर—तलवार । जंवहरां—जवाहरात । हेम—सोना, स्वर्ण । तौड़ा—आभूषण-विशेष । हैमर—घोड़ा । दिसी—तरफ । जसराज—महाराजा जसवंतसिंह । अधारे—आधार रूप रहा ।

आराब^१ साथ^२ बह^३ सुर असुर, फवे^४ गजां धज फरहरां ।
आगराहंत चढ़ियौ^५ 'जसौ', कीधां विकटां^६ लसकरां^७ ॥ १६

सम सरिता^८ घण सुजळ, वहै घण पंथ बहीरां ।
पयदळ गयदळ पमंग, गज्ज^९ ब्रंबाल^{१०} गहीरां ।
धर धूजै अहि धुकै^{११}, कोम कसकै कंध कंमर^{१२} ।
चूर अनड तर चकै, रजां ढंके रातंबर^{१३} ।
जमरांण इसा दळ सभि 'जसौ', दुगम रूप दरसावियौ^{१४} ।
दिन केक मांहि खड़िया^{१५} दुभळ, एम^{१६} उजेणी आवियौ^{१७} ॥ १७

रचि 'अवरंग' 'मुरादि', गजां चढ़िया^{१८} गह धारे ।
इण दळहूं चवगुणै^{१९}, विखम दळ बळ^{२०} विसतारे^{२१} ।
उभै तरफि^{२२} आरबा^{२३}, मंडे^{२४} दळ उभै मद्गळ^{२५} ।
उभै तरफि बंधि^{२६} अणी, दमंग भाला दावानळ ।

१ ख. आराब । २ ख. ग. साथि । ३ ख. ग. बहौ । ४ ख. फवे । ५ ख. ग. चढ़ीयो । ६ ख. ग. विकटा । ७ ख. ग. लहसकरा । ८ ख. ग. सलिता । ९ ख. ग. गाज । १० ख. ब्रंबाल । ११ ख. धुजै । ग. धूकै । १२ ख. ग. कम्मर । १३ ख. रातंबर । १४ ख. ग. दरसावियो । १५ ख. ग. खड़ियां । १६ ख. ग. ऐम । १७ ख. ग. आवियो । १८ ख. ग. चढ़ीया । १९ ख. ग. चवगुणै । २० ख. वल । २१ ख. ग. विस-तारै । २२ ख. ग. तरफ । २३ ख. आरबा । २४ ख. ग. मंडे । २५ ख. ग. मदगल । २६ ख. बंदि । ग. बंदि ।

१६. आराब - तोप । सुर - हिन्दू । असुर - मुसलमान । कीधां - किए हुए । विकटां - जबरदस्त, भयंकर । लसकरां - सेनाएँ ।

१७. सरिता - नदी । पयदळ - पदाति, पैदल । गयदळ - हाथियोंकी सेना, गजदल । पमंग - घोड़ा । गज्ज - गजित किये । ब्रंबाल - नगाड़ा । गहीरां - गंभीर । अहि - शेषनाग । धुकै - जलता है । कोम - कूर्म, कच्छपावतार । चूर - ध्वंस कर । ढंके - आच्छादित कर । रातंबर - सूर्य । जमरांण - यमराज । सभि - सज्जित कर के । जसौ - महाराजा जसवंतसिंह । दुगम - भयंकर, भयावह । दरसावियो - दिखाई दिया । खड़ियां - चलाने पर, चलाते हुए ।

१८. गह - गर्व । चवगुणै - चोगुने । आरबा - तोपें । मद्गळ - हाथी । अणी - अनीक, सेना । दमंग - अग्निकण । दावानळ - दावानि ।

आरोह पखर धर उडंडां, सिलह सस्त्र^१ धर ऊससै^२ ।

तेज में^३ दुरंग सभि तेवडै^४, जंग 'मुरादि'^५ 'अवरंग' 'जसै' ॥ १८

एक^६ साथ^७ आरबा, दुगम बिहुवै^८ दळ^९ दगै^{१०} ।

अगन^{११} सोर ऊछळै^{१२}, लाय धर अंबर^{१३} लगै^{१४} ।

रोदकार^{१५} अरडाव, पडै^{१६} गोळा अणपारां ।

ह्वै^{१७} असि गज भड़ होम, धोम मिळि घटा अंधारां ।

घण बाण^{१८} कोहक^{१९} बाणां^{२०} गहक^{२१}, दुगम धोर सिधव डकां ।

कमधजां खाग ऊनंग करे, बाग^{२२} ऊपाड़ी^{२३} बेढकां ॥ १९

नाळ घमस^{२४} वजि^{२५} निहंग, धरा जहराळ कमळ^{२६} धुकि ।

सास नास वजि हमस, सरां सलितास नीर सुकि ।

भिड़िया^{२७} मूछ^{२८} भुंहार, धजर कढ़ियां^{२९} धजफाड़ां ।

साबळ^{३०} भुज साहियां^{३१}, रूप भळ भूत मुराड़ां ।

१ ख. सस्त्र । २ ख. ऊससै । ३ ख. ग में । ४ ख. ग. तेवडे । ५ ख. मुराब ।
६ ग. ऐक । ७ ख. ग. साथि । ८ ख. ग. इहुवै । ९ ख. ग. वळ । १० ख. ग.
दगो । ११ ख. ग. अगनि । १२ ख. वूछले । ग. उछळे । १३ ख. अंबर । १४ ख.
लगै । ग. लगो । १५ ख. ग. रोदकार । १६ ख. ग. उडे । १७ ग. ह्वै । १८ ख.
ग. बाण । १९ ख. कहौक । ग. कोहक । २० ख. वाणा । २१ ख. ग. सघण ।
२२ ख. ग. बाग । २३ ग. उपाड़ी । २४ ख. घमसि । २५ ग. वज । २६ ख. ग.
कमव । २७ ख. ग. भिड़ीया । २८ ख. मूछ । ग. मुंछ । २९ ग. वढ़ीयां । ३० ख.
साबल । ३१ ख. ग. साहीयां ।

१८. पखर - घोड़ेका कवच । उडंडां - घोड़ों । तेवडै - तिगुना ।

१९. दुगम - दुर्गम, भयंकर । बिहुवै - दोनों । लाय - आग, अग्नि । अंबर - आकाश ।
रोदकार - रुद्ररूप, भयंकर । अरडाव - ध्वनि विशेष । अणपारां - असीम, अपार ।
धोम - अग्नि, आग । घण बाण - तोप विशेष । कोहक बाणा - अग्निबाण, तोप विशेष ।
गहक - ध्वनि । सिधवी - वीर रस का राग । डकां - नगाड़ेके डंडों । ऊनंग - नग्न,
नंगी । बेढकां - वीरों ।

२०. नाळ - तोप । घमस - ध्वनि विशेष । निहंग - आकाश । जहराळ - शेषनाग ।
कमळ - मस्तक, शिर । नास - नाक । हमस - घोड़ा । सरां - तालाबों, सागरों,
तीरों । सलितास - नदी । भिड़िया - स्पर्श किये । भुंहार - भौंहों । धजर - भाला
विशेष । साबळ - भाला विशेष । साहियां - धारण किये हुए । भळ - अग्नि, आग ।
भूत - प्रेत । मुराड़ां - (?)

आवियौ^१ रूप अध्रियामणै^२, खुरासांण ऊखेलियौ^३ ।
महबूब^४ थंडां जाडां मही, भूप 'जसै' तदि भेलियौ^५ ॥ २०

उज्जेणी जुधवरणण

बहै^६ धमक साबळां^७, बहै भाटक वीजूजळ ।
ढहै गयंद खळ ढहै, प्रेत भख^८ लहै^९ ग्रीध पळ ।
पडै भिड़ज पखरैत, पडै जरदैत अपारां ।
मंडै^{१०} मुगळ मारवां^{११}, इसौ धमचक इणवारां^{१२} ।
रक्खग^{१३} भडै दड़डै रगत, गहि सगत्त^{१४} पत्र गड़गड़ै^{१५} ।
लड़थडै पडै के धड़ लड़ै, एम^{१६} असुर सुर आयडै ॥ २१
सेल^{१७} जडै स्त्रीहथां, 'जसौ' पाडै जरदैतां ।
बगल^{१८} भरै महबूब^{१९}, पमंग पाडै पखरैतां ।
जुध^{२०} खग वाहै 'जसौ', घणा मुगळां^{२१} खळ घावै ।
मसत गजां महबूब, धमक^{२२} उर टक्कर^{२३} धावै^{२४} ।

१ ख. ग. आवीया । २ ख. ग. अध्रियामणै । ३ ख. ग. ऊखेलीयौ । ४ ख. महबूब ।
५ ख. ग. भेलीयौ । ६ ख. ग. बहै । ७ ख. साबळां ८ ख. भषण । ९ ख. है ।
१० ख. ग. मंडे । ११ ख. ग. मारवां । १२ ख. ग. उणवारां । १३ ख. ग. रेष्पग ।
१४ ख. ग. सकति ।

*यह पंक्ति ख. तथा ग. प्रतियोंमें इस प्रकार है—

रेष्पग भडै दड़डै रगत, गहि पत्र सकति गड़गड़ै ।

१५ ग. एम । १६ ग. सेल । १७ ख. बगल । १८ ख. महबूब । १९ ग. जुधि ।
२० ख. ग. मूगल । २१ ग. धमक । २२ ख. ग. टकर । २३ ख. ग. धकावै ।

२०. अध्रियामणै—भयंकर, भयावह । महबूब—प्यारे, प्रिय । थंडां—सेनाएँ । जाडां—
घनी । मही—में । भूप जसै—महाराजा जसवंतसिंह ।
२१. धमक—प्रहार, वार । बहै—होता है । भाटक—प्रहार । वीजूजळ—तलवार । ढहै—
गिरते हैं । पळ—मांस । भिड़ज—घोड़ा । पखरैत—कवचधारी घोड़ा । जरदैत—
कवचधारी योद्धा । मारवां—राठौड़ों । धमचक—युद्ध । रक्खग—रक्षक । भडै—
वीर गति प्राप्त होते हैं । दड़डै—द्रव पदार्थका ध्वनि करते हुए गिरना । रगत—रक्त,
खून । सगत्त—शक्ति, रणचंडी । गड़गड़ै—गर्जना करती है । लड़थडै—लड़खड़ाते हैं ।
धड़—कबंध । असुर—मुसलमान । सुर—हिंदू । आयडै—युद्ध करते हैं ।
२२. जडै—प्रहार करता है । स्त्रीहथां—अपने हाथोंसे । जसौ—महाराजा जसवंतसिंह ।
बगल भरै महबूब—प्रेमी आपसमें आलिंगन करते हैं; प्रेमपूर्वक परस्पर मिलते हैं ।
पमंग—घोड़ा । घावै—संहार करता है, मारता है । महबूब—(?) । धमक—
उछल कर ।

इम करी^१ उरड़ असवारि^२ असि, घण निबाव^३ खल^४ घाविया^५ ।
 तिण वार कमंध 'सूरज'तणा^६, सूरज हाथ सराहिया^७ ॥ २२
 दस हजार रवदाळ^८, पड़े^९ गज भिड़ज अपारां ।
 अंग असि अर आपरै, वहै रत लीह^{१०} विहारां^{११} ।
 गूड^{१२} हडा गहलोत^{१३}, त्रुटे^{१४} सिव चखत तरासै ।
 रूक भटां राठौड़, सूर पड़िया^{१५} सतरासै ।
 वचियौ^{१६} न एक^{१७} लख दळ विचै, जवन धकै चड़ि जेणसूं ।
 'अवरंग' 'मुरादि'^{१८} वचिया^{१९} उभै, आव न तूटी एणसूं^{२०} ॥ २३
 गाहट^{२१} हरवल गोळ, चोळ चंदवल करि चुख चुख^{२२} ।
 निजर^{२३} चोळ धज नहर, मसत चख चोळ चोळ^{२४} मुख ।
 चोळ सिलह थंड^{२५} चोळ, चोळ^{२६} हाथळ वीजूजळ ।
 सफरा चोळ सरूप, जदिन रत चोळ वहै^{२७} जळ ।

१ ख. ग. करै । २ ख. ग. असवार । ३ ख. निबाव । ४ ख. खग । ग. खगि ।
 ५ ख. ग. घावोया । ६ ख. ग. सूरजतणा । ७ ख. ग. सराहीया । ८ ग. रवदाळा ।
 ९ क. पड़े । १० ख. ग. लोह । ११ ख. ग. विहारां । १२ ख. ग. गोड । १३ ख.
 ग. गहलोत । १४ ख. तुटे । ग. तुटै । १५ ख. ग. पड़िया । १६ ख. ग. वचोयो ।
 १७ ग. एक । १८ ख. मुराद । ग. मुराद । १९ ख. ग. वचोया । २० ग. ऐणसूं ।
 २१ ग. गाहटि । २२ ग. चुष चुष । २३ ख. ग. निजड़ । २४ ख. भोळ । २५ ख.
 ग. पिंड । २६ ग. चौळ । २७ ख. वहै ।

२२. उरड़ - युद्ध, आक्रमण, टक्कर । असि - घोड़ा । घाविया - संहार किये, मार डाले ।
 सूरजतणा - सवाई राजा सूरसिंहके वंशज । सूरज - सूर्य, भानु । हाथ सराहिया -
 युद्ध-भूमिमें सूर्यने हाथोंसे शस्त्र-प्रहार करनेकी प्रशंसा की ।

२३. रवदाळ - मुसलमान । भिड़ज - घोड़ा । असि - तलवार । रत - रक्त, खून । लीह -
 रेखा । विहारां - विदीर्ण होने पर, फटने पर । गूड - गोड़ वंशके राजपूत । हडा -
 चौहान वंशकी हाडा शाखाके राजपूत । तरासै - (?) । रूक - तलवार । भटां -
 प्रहारों । आव - आयु, उम्र । तूटी - समाप्त हुई ।

२४. गाहट - नाश कर, ध्वंस कर । हरवल - सेनाका अग्र भाग । गोळ - सेना । चोळ -
 लाल, धावोंसे पूर्ण । चंदवल - सेनाके पीछेका भाग । चुख चुख - खंड-खंड । निजर -
 आंख, नेत्र । धज - भाला । नहर - (दिन, दिवस ?) [नोट - अरबीमें दिनको नहार
 कहते हैं]

सिलह - अस्त्र-शस्त्र । थंड - सेना, समूह । हाथळ - हाथ, एक शस्त्र विशेष । वीजूजळ -
 तलवार । सफरा - उज्जैनकी सिप्रा नदी । रत - रात, रात्रि ।

महबूब^१ चोळ लोहां महा, चोळ आप कळि चाळयौ^२ ।
 जुध^३ चोळ होय आयौ 'जसौ', एम^४ वाघ भूखाळयौ^५ ॥ २४
 'अवरंग' असपति हुवौ, विखम चंड नयर विचाळै ।
 खेलू मालू खोसि^६, लिया^७ तदि 'जसै'^८ लंकाळै ।
 तांम^९ चूक तेवड़े, साह मसलति साधारी^{१०} ।
 उठै 'जसौ' आवियौ^{११}, करग^{१२} धारियां^{१३} कटारी^{१४} ।
 अवरंगजेब^{१५} इम जांणियौ^{१६}, कमंध हणे^{१७} छळबळ कियां^{१८} ।
 करिमाळ चूक में^{१९} कूफ^{२०} करि, माळधरी गळ मोतियां^{२१} ॥ २५
 तांम प्रीत^{२२} भयतणी, ब्रवै^{२३} बह^{२४} साह बधारा^{२५} ।
 तोग महीमुरतबा^{२६}, उत्तंग गज तुरंग अपारा ।

१ ख. महबूब । २ ख. चालुयौ । ग. चाळीयौ । ३ ग. जुधि । ४ ग. ऐम । ५ ख. भूषालुयौ । ग. भूषांलीयौ । ६ ख. खोस । ग. खोस । ७ ख. ग. लीया । ८ ख. जसौ । ९ ख. ग. ताम । १० ख. सधारी । ११ ख. ग. आवीयौ । १२ ग. करगि । १३ ग. धारियां । *निम्न अंश ख. प्रतिमें नहीं है—

करग धारियां कटारी, अवरंगजेब इम जांणियौ ।

१४ ग. अवरंगजेबि । १५ ग. जांणीयौ । १६ ख. ग. हणै । १७ ख. ग. कीयां । १८ ख. ग. में । १९ ख. ग. कूफ । २० ख. ग. मोतियां । २१ ग. प्रीति । २२ ख. ग. ब्रवै । २३ ख. बहौ । ग. बहौ । २४ ग. बधारा । २५ ख. ग. मुरतबा ।

२४. लोहां—रास्त्र-प्रहारों । कळि चाळयौ—(योद्धा ?) । भूखाळयौ—भूखा, बुभूक्षित ।
 २५. चंड नयर—चंडी नगर, दिल्ली । विचाळै—में । जसै—महाराज जसवंतसिंह ।
 लंकाळै—वीर, योद्धा । चूक—छल, षड्यंत्र । तेवड़े—विचार कर । साह—बादशाह ।
 मसलति—गुप्त मंत्रणा । साधारी—(सलाह की ?) । करग—हाथ । करिमाळ—
 तलवार । कूफ—ईरानका एक नगर ।
 वि.वि.—ईरानके एक नगरका नाम कुफ है । इस नगरके निवासी बड़े क्रूर, निर्दय
 और बेईमान होते हैं, क्योंकि कुफियोंने हजरत इमामहुसैनको बड़े-बड़े वचन दे कर
 बुलाया था और फिर उन्हें अकेला ही छोड़ कर कत्ल होने दिया, अतः कवि महोदयने
 भी यह कूफ शब्द औरंगजेबके लिए प्रयोग किया है ।

२६. ब्रवै—देता है । बह—बहुत । बधारा—राज्य या जागीरमें वृद्धि । तोग—मुगल
 बादशाहोंके समयका ध्वज विशेष जो उच्च मनसबदारों या पदाधिकारियोंको विशेष
 सम्मानके रूपमें प्रदान किया जाता था । इस पर सुरागायके पंखोंके बालोंके गुच्छे लगे
 रहते थे । महीमुरतबा—मछली आदिके आकारके वह निशानात जो बादशाह या
 राजाकी सवारीके आगे हाथियों पर चला करते थे । उत्तंग—उत्तंग, ऊँचा । तुरंग—घोड़ा ।

सुजड़ खंजर समसेर, कनक जंवहर^१ घण किम्मति^२ ।
 साह ब्रवै^३ सिरपाव, ब्रवै ब्रब मुहम विलायति ।
 सुत 'गजण' जदी दल बल सभे, आयौ जोम उमंडरौ^४ ।
 पति त्रिखंड डंड लीधौ पछटि, खंड पांणि खट खंडरौ ॥ २६

महाराजा^५ श्रीजसवंतसिंघजीरौ दानवरण^६

दूहौ^७—चत्र गज सांसण दूण चत्र^८, दस चत्र लख दन दीध ।
 ब्रवि रीभां अणपार^९ विण^{१०}, कमध 'जसै' जस कीध^{११} ॥ २७
 कवित्त—बारहट^{१२} नरहर बगसि^{१३}, एक^{१४} लख प्रथम उजागर ।
 कवि आढ़ा 'किसन'नू, ब्रवे^{१५} लख दुवौ^{१६} क्रीत^{१७} वर ।
 अभंग 'खेम' धधवाड़, दोय लख हत्थे^{१८} दीधा ।
 'हरी'^{१९} संदायच हेक, लोख ब्रवि बह^{२०} जस लीघा ।

१ ख. ग. जवहर । २ ख. ग. किम्मति । ३ ख. ग. ब्रवे ।

*ख. तथा ग. प्रतियोंमें यह पंक्ति निम्न प्रकार है—

सुत गजण सबल दल बल सभे ।

४ ख. माहाराजा । ५ ख. वनन । ६ ख. दोहा । ग. दौहा । ७ ख. गज । ८ ख. ग.
 पार । ९ ख. ग. विणि । १० ख. धीर । ११ ख. बारट । ग. बारहट । १२ ख.
 बगसि । ग. बगसि । १३ ग. ऐक । १४ ख. ग. ब्रवे । १५ ख. दुओ । ग. दुओ ।
 १६ ख. ग. क्रीतिवर । १७ ख. ग. हत । १८ ख. हरि । १९ ख. वही । ग. बही ।

२६. सुजड़—कटार । समसेर—तलवार । कनक—सोना, स्वर्ण । जंवहर—जवाहरात ।
 घण किम्मति—बहुमूल्य । मुहम—मुहिम, सेना, फौज । गजण—महाराजा गजसिंह ।
 जोम—जोश । उमंडरौ—उमड़ कर । 'पति त्रिखंड...खट खंडरौ'—जब गजसिंघका
 पुत्र दल-बल सहित आया तो ऐसा मालूम होता था कि मानों तीनों खण्डोंका पति हाथमें
 खाण्डा लेकर छहों खण्डोंसे दण्ड वसूल कर के लाया है ।

२७. चत्र—चार । सांसण—राजा द्वारा दान में दी गई भूमि या ग्राम, शासन । दूण—
 दूना, दुगुना । दन—दान । दीध—दिये । ब्रवि—दी, दे कर । जसै—महाराजा
 जसवंतसिंह । कीध—किया ।

२८. नरहर—अवतार-चरित्र ग्रंथके रचयिता महाकवि नरहरदास बारहट । लख—लाख ।
 उजागर—अपने नाम या वंशको प्रसिद्ध करने वाला । आढ़ा किसन—प्रसिद्ध महाकवि
 दुरसा आढ़ा का पुत्र । ब्रवे—दिया, दे कर । दुवौ—दूसरा । क्रीत वर—कीर्तिको प्राप्त
 करने वाला, यशस्वी । अभंग—वीर । खेम धधवाड़—धधवाड़िया गोत्रका खेमराज
 चारण कवि । हरी संदायच—हरिदास संदायच गोत्रका चारण कवि । हेक—एक ।

लहि हेक लाख महडू, 'बलू'^१ लख^२ त्रण^३ सांदू 'नाथ' लहि^४ ।
 आढ़ा 'महेस' हूं रीभ^५ अति, पांच लाख दीधा सुपह ॥ २८
 हद्दा^६—इम दत खग बहु करि अचड, सुख करि राजा समाज* ।
 परम हंस मिळियौ^७ पवित्र, राजहंस 'जसरस'^८ ॥ २९

इति पंचम प्रकरण ।

★

महाराजा अजीतसिंघजीरौ जनम

कवित्त— तिण दिन जसवंततणा, निडर^९ बह^{१०} भड़ नर नाहर ।
 साथ रखत ले सकळ, दिली आविया^{११} बहादर^{१२} ।
 उदरि हुतौ^{१३} उणवार, 'अजौ'^{१४} सोबन^{१५} कुख^{१६} जदवि^{१७} ।
 जेण समै^{१८} जनमियौ^{१९}, रैण नवसहंसतणौ^{२०} रवि ।
 छक वधे कमध सयणां उछव, तदि मुख प्रफुलति^{२१} कमळतिम^{२२} ।
 जनमतां 'अजौ' अवरंग जळै^{२३}, जनम किसनरै कंस जिम ॥ १

१ ख. बलू । २ ख. लषि । ३ ख. ग. त्रिण । ४ ख. लह । ग. लहै । ५ ख. ग. रीभि ।
 ६ ख. दोहा । ग. दोहा ।

*यह पंक्ति ख. तथा ग. प्रतियोंमें निम्न प्रकार है—

इम षग दन वही करि अचड ।

७ ख. मिलीयो । ८ ग. जरजा । ९ ख. निजर । १० ख. ग. वही । ११ ख. ग.
 आवीयां । १२ ख. ग. बहादर । १३ ख. हुंतो । ग. हुंतो । १४ ग. अजो । १५ ग.
 सौवन । १६ ख. कुष । ग. कुषि । १७ ख. जदवि । ग. जादवि । १८ ख. समै ।
 ग. समै । १९ ख. ग. जनमीयो । २० ख. ग. नवसहसणीत । २१ ख. ग. प्रफुलित ।

२२ ख. तथा ग. प्रतियोंमें यह पंक्ति निम्न प्रकार है—

'छक वधे सयणां कमधो उछव ।'

२२ ख. ग. जले ।

२८. त्रण— तीन । सांदूनाथ — नाथा सांदू । आढ़ा महेस — प्रसिद्ध कवि आढ़ा दुरसाका पोत्र
 तथा आढ़ा किसनाका पुत्र महेसादास आढ़ा । सुपह — राजा, नृप ।

२९. अचड — महान कार्य, बड़ा कार्य । परम हंस मिळियौ — मोक्षको प्राप्त हुआ । जसरस —
 महाराजा जसवंतसिंह ।

१. रखत — रक्षित, धनदौलत । उदरि — गर्भमें । अजौ — महाराजा अजीतसिंह । सोबन —
 सुन्दर वर्णवाला । कुख — कुक्षि, गर्भ । जदवि — यादववंशकी पुत्री महाराणी यादवी ।
 रैण — भूमि, पृथ्वी । नवसहंसतणौ — मारवाड़का । रवि — सूर्य । छक — कान्ति, दीप्ति,
 खूब । सयणां — सज्जनों ।

‘जसै’^१ दिया^२ जवनरै, उवर^३ मभि दाह अकारा ।
 वे चितारि^४ ‘अवरंग’^५, जोध तेड़िया^६ ‘जसारा’ ।
 कमधांहूता^७ कहै, उभै देहमें^८ ‘जसावत’ ।
 मुनसफ^९ खावौ मुलक, उतन जावौ^{१०} सब^{११} रावत ।
 इम सुणि जबाब^{१२} ‘अवरंगहूँ’, रावत ‘जसवंत’रा रटै ।
 नह^{१३} दियां साह खावंद^{१४} नरिंद, सीस दियां^{१५} खावंद सटै ॥ २
 आयौ^{१६} लालच उतनुं^{१७}, सुतौ पह^{१८} बखत^{१९} सिधारै^{२०} ।
 दइव^{२१} उतन करिदियौ^{२२}, अवर कुण^{२३} सकै उतारै^{२४} ।
 रखौ सेवतां^{२५} रखां, अवर^{२६} मुहमां^{२७} करि जाणौ ।
 रखौ नहीं तौ रखां, उतन खग बळ^{२८} आपाणौ ।
 कथ एम^{२९} सिरै^{३०} दीवाण कहि, चख धिखे^{३१} मुरड़े^{३२} चालिया^{३३} ।
 ऐ वचन साह ‘अवरंग’ उर^{३४}, सेलतणी विध^{३५} सालिया^{३६} ॥ ३

१ ख. ग. दीया । २ ख. उवा । ३ ख. ग. बे-चितगरि । ४ ख. ग. अवरंगि । ५ ख. ग. तेडीया । ६ ख. कमधांहूतां । ग. कमधांहूता । ७ ख. ग. देहमें । ८ ग. मुनसप । ९ ग. जाओ । १० ख. सब । ११ ख. जबाब । १२ ग. नहं । १३ ख. ग. खावंद । १४ ख. ग. दीयां । १५ ख. ग. आपौ । १६ ख. ग. उतन । १७ ख. ग. पोहो । १८ ख. वषत । ग. वषति । १९ क. सधारे । २० ख. ग. दई । २१ ख. ग. दीयो । २२ ग. कण । २३ क. उतारे । २४ ख. सेवतौ । ग. सेवती । २५ ग. जबर । २६ ख. महिमा । ग. मुहमां । २७ ख. ग. वलि । २८ ग. ऐम । २९ ख. ग. सरै । ३० ग. धिधि । ३१ क. मुरडे । ३२ ख. ग. चालीया । ३३ ख. ग. उवरि । ३४ ख. ग. विधि । ३५ ख. ग. सालीया ।

२. जसै — महाराजा जसवंतसिंह । उवर — हृदय, उर । अकारा — भयंकर । तेड़िया — बुलाये । जसारा — महाराजा जसवंतसिंहके । उभै देहमें जसावत — महाराजा जसवंतसिंहके दोनों राजकुमार, अजीतसिंह और दलथभन । मुनसफ — मनसब, पद, अधिकार । उतन — जन्मभूमि, वतन । रावत — थोड़ा । साह — बादशाह । नरिंद — राजा नरेन्द्र । सटै — एवजमें ।

३. सु — वह । पह — राजा, प्रथम । सिधारे — चले गये, चला गया । दइव — देव, ईश्वर । जबर — जबरदस्त । मुहमां — युद्धों, मुहिम । सिरै दीवाण — आम दीवान, आम दरबार । चख — नेत्र, चक्षु । चख धिखे मुरड़े चालिया — क्रोधमें प्रज्वलित हो कर चले । सेलतणी विध — भालेकी तरह । सालिया — शल्य रूप हुये ।

दिलीजुधवरण

‘अवरंग’हं करि आंठि^१, अडर^२ डेरां^३ भड़ आया ।
 जोध साथ करि जतन, पहुव^४ मुरधर पुंहुचाया^५ ।
 करि सिनांन^६ वँदन^७ करि^८, ध्यांन चित धरे चक्रधर ।
 सिलह कसे कसि सस्त्र, पमंग साखति^९ सभि पक्खर^{१०} ।
 ऊससै^{११} करे^{१२} दूणा अमल, बोम^{१३} छिवं^{१४} उर^{१५} वर^{१६} उरै^{१७} ।
 इम कहे राड़^{१८} मांडां इसी, अचड़ प्रथी^{१९} सिर ऊबरै^{२०} ॥ ४

कवित्त दोहौ^{२१}

छक^{२२} बोलै^{२३} रिणछोड, सूर जोधौ ‘गोयंद’ सुत ।
 भड़ बोलै^{२४} चंद्रभाण, दूठ जोधौ द्वारावत ।
 भाटी सुरतांणोत^{२५}, ‘रुघौ’ बोलै^{२६} बिरदाळी^{२७} ।
 आगै पड़ि ऊपड़ै^{२८}, भिड़ै^{२९} उज्जेण^{३०} भुजाळी ।
 ऊदावत बोलिया^{३१}, अडर भारमल दलावत ।
 निडर बोल^{३२} रुघनाथ^{३३}, सूर दारण सूजावत ।

१ ख. ग. आंठ । २ ख. अरड । ३ ख. हेरां । ४ ख. ग. पहुव । ५ ख. ग. पुंहुचाया ।
 ६ ख. ग. सनांन । ७ ख. ग. दन । ८ ख. ग. करे । ९ ख. ग. साकति । १० ख.
 व. पक्खर । ११ ख. ऊससै । १२ ग. करै । १३ ख. ग. बोम । १४ ख. ग. छिवं ।
 १५ ख. ग. इम । १६ ख. ग. वर । १७ ख. ग. वरै । १८ ख. ग. राड़ि । १९ ख.
 व. प्रिथी । २० ख. ऊबरै । ग. ऊबरै । २१ ख. दोहौ । २२ ग. छकि । २३ ख.
 बोले । ग. बोलै । २४ ख. बोले । ग. बोले । २५ ख. सुरतांणोत । ग. सुरतनीत ।
 २६ ख. बोले । २७ ख. ग. बिरदाली । २८ ख. ग. ऊपडे । २९ ख. ग. भिडे ।
 ३० ख. उज्जेण । ग. उज्जेण । ३१ ख. बोलीया । ग. बोलीया । ३२ ख. बोली ।
 ३३ ख. ग. रुघुनाथ ।

४. आंठि—शत्रुता, वैर । अडर—निर्भय । जोध—योद्धा । जतन—रक्षा । पहुव—
 राजा । चक्रधर—विष्णु । पमंग—घोड़ा । साखति—जीन । पक्खर—घोड़िका
 कवच । अमल—अफीम । बोम—व्योम, आकाश । राड़—युद्ध । मांडां—रचेंगे, करेंगे ।
 ऊबरै—रक्षित रहे, शेष रहे ।

५. छक—जोशमें आ कर । दूठ—जबरदस्त । बिरदाळी—विरुद्धकारी, यशस्वी । भुजाळी—
 शक्तिशाली, समर्थ ।

स्याम छळ^१ करां जुध साहसां^२, धार समंद भूलण धसां ।
 किरमरां^३ विहंड^४ असुरां कटक, वरां रंभ सुरपुर बसां ॥ ५
 सुणि इम कहियौ^५ सुकवि, सूर नाथावत 'सूजै' ।
 राजा भुज रावतां, पटां^६ इण^७ दिन कजि पूजै ।
 इसड़ौ इज^८ बोलियौ^९, कूंत जिम हुतौ^{१०} करारौ ।
 धणी कांम खगधार, मरण अवसांण 'समारौ' ।
 ऐ पाय वसां सगि^{११} एकठा^{१२}, इण विध^{१३} सांदू आखियौ^{१४} ।
 पित मूक 'जसै'^{१५} त्रण लख समपि, राजा हित करि^{१६} राखियौ^{१७} ॥ ६
 जिकौ^{१८} कळं ऊजळौ^{१९}, जंग करि लूण 'जसारौ' ।
 आज कळं ऊजळौ, प्रगट वड कुरब^{२०} पितारौ ।
 मौहरि^{२१} गोठि वीमाह, मौहर^{२२} दरवार^{२३} मभारां ।
 रहां मौहरि^{२४} रावतां, सदा जिम वहुतां सारां ।

१ ख. ग. छलि । २ ख. ग. साहसूं । ३ ख. ग. किरमरां । ४ ख. ग. विहंडि ।
 ५ ख. ग. कहियौ । ६ ख. ग. पटा । ७ क. इस । ८ ख. ग. ईज । ९ ख. बोलीया ।
 ग. बोलीया । १० ख. हुंतौ । ग. हुंतौ । ११ ख. ग. अग । १२ ग. ऐकठा । १३ ख.
 ग. विधि । १४ ख. ग. आखियौ । १५ क. लसै । १६ ख. कर । १७ ख. ग.
 राखीयौ । १८ ख. जिको । १९ ग. उजळौ । २० ख. ग. कुरब । २१ ख. मोहोर ।
 ग. मोहोरि । २२ ख. मोहोर । ग. मोहोरि । २३ ख. ग. दरवारि । २४ ख. मोहोर ।
 ग. मोह रि ।

५. स्याम - स्वामी । छळ - लिये । साहसां - बादशाहसे । धार समंद - तलवारोंके समुद्रमें, युद्धमें । भूलण धसां - स्नान करनेको प्रवेश करे । किरमरां - तलवारों । विहंड - नाश कर । असुरां - मुसलमानों । कटक - सेना, दल । वरां - वरण करें । रंभ - अप्सरा । सुरपुर - स्वर्ग । बसां - निवास करें ।
६. सुकवि - चारण । सूर - वीर । नाथावत सूजौ - नाथा सांदू चारणका पुत्र सूरजमल । रावतां - योद्धाओं । कजि - लिए । सगि - स्वर्ग । एकठा - एक साथ । सांदू - चारण कुलका एक गोत्र, सूरजमल सांदू (चारण) । आखियौ - कहा । जसै - महाराजा जसवंतसिंह । त्रण - तीन । लख - लाखपसाव । समपि - समर्पण किया, समर्पण कर के ।
७. जिको - वह, जो । जसारौ - महाराजा जसवंतसिंहका । मौहरि - अग्र, अगाड़ी । गोठि - मित्र-मंडलीका वह सामूहिक भोजन जो किसी सुअवसर या मुन्दर मौसमके समय किया जाय अथवा किसी बड़े व्यक्तिके सम्मानमें किया जाय । वीमाह - विवाह । मौहर - अग्र, अगाड़ी । मभारां - में, मध्यमें । रहां मौहरि रावतां, सदा जिम वहुतां सारां - तलवारोंके भयंकर प्रवाहमें भी सदैव ही मेरा वंश (चारण) योद्धाओंके अगाड़ी युद्ध करता और प्रोत्साहन देता रहता है ।

बीजळां मौहरि^१ खळ दळ विहंडि, वप विहंडाय परी वरां ।
 स्रग^२ करै^३ वास अंजस सरब^४, कुळ सौ बीस कवेसरां ॥ ७
 सुणि अनि^५ भड कथ सुकवि, कांम^६ आवण नीमण कर ।
 आसावत उण वार, दुगम^७ बोलियो^८ बहादर^९ ।
 दांत चडै दळ रवद, जितौ^{१०} विहंडूं बीजूजळ^{११} ।
 इसड़ा करूं^{१२} अनेक, दिलीपतिहंत दमंगळ ।
 बह^{१३} करूं दिली धोकळ^{१४} वडा, अंग वळि^{१५} अकळ^{१६} उरैवरै^{१७} ।
 उर मांहि अघट क्रोधा^{१८} अगनि, जाळूं 'अवरंग'^{१९} जेब^{२०} उरै ॥ ८
 करतां इम मचकूर, अडर 'अवरंग' दळ आया ।
 राजलोक भूपरा, सज्जि^{२१} खग^{२२} सुरग^{२३} वसाया ।
 साबळ^{२४} पकड़े सूर, तुरां चढिया^{२५} जम तेहा ।
 पड़तौ आभ प्रचंड, अडर भालै^{२६} भुज एहा^{२७} ।

१ ख. महौरि । ग. महौरि । २ ग. अगि । ३ ख. ग. करां । ४ ख. सरब ।
 ५ ग. अन । ६ ग. कांमि । ७ ख. ग. दुगम । ८ ख. बोलीयो । ग. बोलीयो । ९ ख.
 बाहादर । ग. बाहादर । १० ख. जितो । ग. जितो । ११ ग. बीजूजळ । १२ ख. ग.
 करूं । १३ ख. ग. वही । १४ ख. धौकल । ग. धौकळ । १५ ख. ग. वल । १६ ख.
 ग. अकलि । १७ ख. उरै वरै । ग. उरै वरै । १८ ग. क्रोधा । १९ ग. अवरंग ।
 २० ख. जेवरै । २१ ख. ग. साभि । २२ ख. षभि । ग. षभि । २३ ग. सुरगि ।
 २४ ख. ग. साबल । २५ ख. ग. चढीया । २६ ख. जालै । २७ ग. ऐहा ।

७. बीजळां — तलवारों । विहंडि — नाश कर, ध्वंस कर । वप — वपु, शरीर । विहंडाय —
 संहार करवा कर । परी — अप्सरा । वरां — वरणा करूं । स्रग — स्वर्ग । अंजस सरब —
 सबको गर्वोन्मत्त कर-कर के मेरे कुलके एक सौ बीस गोत्रके कवेसरींको (कवीश्वरों,
 चारणों) गर्वयुक्त करूं ।
८. नीमण — (?) । आसावत — आशकर्णका पुत्र । दुगम — दुर्गम, जबरदस्त । रवद —
 मुसलमान । विहंडूं — नाश करूं, संहार करूं । बीजूजळ — तलवार । दमंगळ — युद्ध ।
 धोकळ — युद्ध, उत्पात । अकळ — जबरदस्त । उरैवरै — उर, हृदय, साहस तलवार ।
 अघट — अपार, असीम ।
९. मचकूर — सलाह, विचार, मजकूर । राजलोक — महाराणियाँ, राजाके जनाने । सज्जि —
 प्रहार कर । सुरग — स्वर्ग, देवलोक । साबळ — एक प्रकारका भाला । सूर — वीर ।
 तुरां — घोड़ों । जम — यमराज । तेहा — तैसे । आभ — आसमान । भालै — धामते हैं,
 धारण करते हैं ।

चमराळ फिरै^१ दळवळ^२ चिहूँ^३, दगै^४ तोप गोळा दमंग^५ ।
 तिण वार भडां मुरधरतणा, परम^६ कहे ओरै^७ पमंग ॥ ९
 समर हुवा^८ सैफळा, जोध 'अवरंग' 'जसारां' ।
 धड़ चवधारां धमकि^९, रीठ वागा^{१०} खगधारां ।
 छौळ रुधिर ऊछलै^{११}, कमळ ऊछलै कराळां ।
 पत्र भर^{१२} चंडी^{१३} पियै^{१४}, मंडै^{१५} संकर रंडमाळा ।
 जजरंग घाट तूटै जरद, भाट^{१६} पडै भड़ औभडां ।
 दळ खोद बडै हूंकळ^{१७} दिली, धोकळ^{१८} कीधौ धूहडां ॥ १०
 सिरै भडां नवसहंस, जो(ध) रैणायल^{१९} जूटै ।
 वाहै खग वैरियां^{२०}, विखम धड़ कळस विछूटै ।
 तूटै भारा व्रजड़^{२१}, अंग ऊपरा अपारा ।
 रत छूटै अणपार, धडां फूटै चवधारा ।

१ ख. फिरे । २ ख. दळवळ । ३ ख. ग. चहूँ । ४ ख. दगे । ५ ख. दमक ।
 ६ ख. पमर । ७ ख. ग. वारे । ८ ख. ग. हुआ । ९ ख. ग. धमक । १० ग. वागां ।
 ११ ख. ग. उछलै । १२ ख. ग. भरि भरि । १३ ख. चंड । १४ ख. ग. पीअे ।
 १५ ख. मंडे । १६ ग. भाडै । १७ ग. हूंकळि । १८ ग. धोकळ । १९ ख. रैणा-
 यर । ग. रैणायर । २० ख. ग. वैरीयां । २१ ख. ग. व्रजड़ ।

९. चमराळ - यवन, मुसलमान । चिहूँ - चारों ओर । दमंग - अग्निकरण । परम - ईश्वर, परमात्मा । ओरै - युद्धमें भौंकते हैं । पमंग - घोड़ा ।

१०. समर - युद्ध । सैफळा - अस्त्र-शस्त्रोंसहित । अवरंग - औरंगजेब बादशाह । जसारां - महाराजा जसवंतसिंहजीके । चवधारां - चारों ओर पानी धारका भाला विशेष । धमकि - प्रहार कर के । रीठ - प्रहार या प्रहारकी ध्वनि । वागा - बजे, ध्वनित हुए । छौळ - धारा, प्रवाह । कमळ - शिर, मस्तक । पत्र - खप्पर । जजरंग - जवरदस्त, मजबूत । घाट - बनावट । जरद - कवच । भाट - प्रहार, भड़, निरन्तर होने वाली वर्षाके समान । औभडां - भयंकर । खोद - यवन, मुसलमान, बादशाह । हूंकळ - कोलाहल । धोकळ - युद्ध । कीधौ - किया । धूहडां - राठौड़ों ।

११. नवसहंस - राठौड़, मारवाड़ । जो(ध) - जोधा शाखाका राठौड़ । रैणायल - रण-छोड़दास जोधा । जूटै - भिड़ते हैं । कळस - मस्तक । विछूटै - दूर होने हैं । भारा - समूह । व्रजड़ - तलवार । अपारा - असीम । रत - रक्त, खून । अणपार - अपार, असीम । चवधारा - भाला विशेष ।

लोहड़ां धाप^१ इण विध^२ लड़े^३, सूर पड़े^४ हंस नीसरै^५ ।
 रंभ वरै^६ सुरग^७ वसियौ^८ 'रयण', अचड़ प्रिथी सिर^९ ऊबरै^{१०} ॥ ११
 खांडां^{११} भट^{१२} छः खंड, दळां विहंडे द्वारावत^{१३} ।
 आय^{१४} आय बह^{१५} असुर, घाट साबळ^{१६} खग घावत^{१७} ।
 लीधौ पांणी लूण, महीपतिरौ घण मोही^{१८} ।
 जिम पिंड कीधौ जोध, लूण पांणी जिम लोही^{१९} ।
 इम लड़े खेत^{२०} पड़ियौ^{२१} 'अचळ', पह^{२२} छळ^{२३} जस व्रद पावियौ^{२४} ।
 चंद्रभाण अछर^{२५} वरि रथ चढ़े, अमरापुर मभि आवियौ^{२६} ॥ १२
 भाटी 'रुघौ'^{२७} भुजाळ, खाग^{२८} भाटी कळि खाटी ।
 आवियाटी^{२९} घड़ असुर, धकै चाढ़े असि घाटी ।
 अंग वरंग^{३०} ऊछळै^{३१}, किलम^{३२} विहरंग खग^{३३} कमळ^{३४} ।
 सुरंग रंग^{३५} सांपड़े^{३६}, जांणि सिधमल्ल^{३७} गंग जळ ।

१ ख. ग. धापि । २ ख. ग. विधि । ३ ख. ग. लड़े । ४ ख. ग. पड़े । ५ ग. नीसरे ।
 ६ क. वरै । ७ ख. सरगि । ग. सुरगि । ८ ग. वसियो । ९ ख. ग. सिरि । १० ख.
 ऊबरै । ग. ऊबरै । ११ ख. ग. खंडा । १२ ख. ग. भाट । १३ ख. ग. द्वारावत ।
 १४ ख. आय । १५ ख. वही । ग. वही । १६ ख. सावल । १७ ख. घावत ।
 १८ ख. मोहा । ग. मोहां । १९ ख. ग. लोहां । २० ग. खेति । २१ ख. ग. पड़ीयो ।
 २२ ख. ग. पौहौ । २३ ख. ग. छलि । २४ ख. ग. पावीयो । २५ ग. अपछर ।
 २६ ख. ग. आवियो । २७ ख. रुघै । ग. रुघे । २८ ग. खाग । २९ ग. आवियाटी ।
 ३० ख. वरंग । ३१ ख. ऊछळै । ३२ ख. विम । ३३ ख. खंगि । ग. खगि । ३४ ख.
 प. कमल । ३५ ख. रंग । ३६ ख. सापड़े । ग. सापड़े । ३७ ख. ग. मलंग ।

११. लोहड़ां - अस्त्र-शस्त्रों । धाप - तुप्त हो कर । हंस - प्राण । नीसरै - निकलता है ।
 रंभ - अप्सरा । वरै - वरण कर के । रयण - रणछोड़दास जोधा । अचड़ - कीर्ति ।
 १२. खांडां - तलवारों । भट - प्रहार । विहंडे - नाश कर, ध्वंस कर । द्वारावत - मानका
 पुत्र द्वारा । असुर - यवन । घाट - शस्त्रका पैना भाग । घावत - प्रहार करते हुए ।
 पह - राजा । छळ - युद्ध, लिये । व्रद - विरुद्ध, कीर्ति । पावियो - प्राप्त किया ।
 १३. रुघौ - रुघनाथसिंह । भुजाळ - शक्तिशाली । आवियाटी - तलवार । घड़ - शरीर ।
 धकै - अगाड़ी । असि घाटी - घाटदेशोत्पन्न घोड़ा । वरंग - खंड, टुकड़ा । किलम -
 मुसलमान । विहरंग - नाश करता हुआ । कमळ - शिर, मस्तक । सुरंग - लाल ।
 सांपड़े - स्नान कर । जांणि - मानों । सिधमल्ल - महादेव ।

‘सुरतांण’ सुतन पड़ियै^१ समर, मनि प्रबवातां^२ मुर वसी ।
 उर वसी जिसी खाटे अचड़, सुरग^३ गौ वरे उरवसी ॥ १३
 उदैभांण अरिहरां, वाहि खग करे विहारां ।
 अरिहर घण आछटै, धोम^४ भेलै खगधारां ।
 उडै बूथ^५ पळ अंग, जूथ ढाहै जवनांणां ।
 एम^६ पड़े^७ अणबीह^८, पाड़ि बहौ^९ मुगळ पठांणां ।
 इळ अंबर^{१०} तितै^{११} खाटी अचड़^{१२}, वर^{१३} रंभ सुजस वधारियौ^{१४} ।
 रवि मंडळ लोप^{१५} घाटी रसण, इम भाटी सग^{१६} आवियौ^{१७} ॥ १४
 वाहि सेल खग वाहि^{१८}, करै ‘भाऊ’ कळिचाळौ^{१९} ।
 ऊदावत अणबीह^{२०}, किलम गज हणै^{२१} लंकाळौ ।
 साबळ^{२२} दंतूसळां, घाट फवियौ^{२३} दीपक घट ।
 कमळ पंख जिम कमळ, भेल^{२४} घण^{२५} हुवौ^{२६} खगां भट ।

१ ख. ग. पड़ीयो । २ ख. प्रववात । ग. प्रववात । ३ ख. ग. श्रुगि । ४ ग. धोम ।
 ५ ख. ग. बूथ । ६ ख. एम । ७ क. पड़े । ८ ख. ग. अणबीह । ९ ख. बहौ ।
 १० ख. अंबर । ११ ख. जितै । १२ ख. अचल । १३ ख. ग. वरि । १४ ख. ग.
 वधावीयो । १५ ख. लौपि । ग. लोपि । १६ ख. ग. श्रुगि । १७ ख. ग. आवीयो ।
 १८ ग. वाह । १९ ख. कळचाळौ । २० ख. ग. अणबीह । २१ ग. हणै । २२ ख.
 सावल । २३ ख. फवीयो । ग. फवीयो । २४ ग. भेलि । २५ ग. पण । २६ ख.
 हुआ ।

१३. सुतन — पुत्र । पड़ियौ समर — युद्धमें वीरगति प्राप्त की । मनि — मनमें । प्रब — पर्व,
 उत्सव । मुर — तीन । उर वसी — जैसे हृदयमें निवास किये हुए थी । जिसी — जैसे ही ।
 खाटे — प्राप्त कर । अचड़ — कीर्ति । गौ — गया । वरे — वरण कर के । उरवसी —
 उर्वशी नामक अप्सरा, अप्सरा ।

१४. अरिहरां — शत्रुओं । विहारां — संहार, ध्वंस, विदीर्ण । आछटै — प्रहार करते हैं । धोम —
 क्रोधाग्नि । बूथ — मांसके गुथे या खंड । पळ — मांस । जूथ — समूह । ढाहै — मारता है ।
 जवनांणां — यवन, मुसलमान । अणबीह — वीर, योद्धा । वर — वरण कर के ।
 वधारियौ — बधायी ।

१५. कळि चाळौ — युद्ध । किलम — मुसलमान । लंकाळौ — वीर, योद्धा । दंतूसळां —
 हाथियोंके बारह दांत । घाट — शरीर । साबळ.....घट — भालों और हाथियोंके दांतोंके
 प्रहारसे योद्धाका शरीर ‘घुड़लों’के समान मुशोभित हुआ । (देखो भाग १, पृ. २५२)

तदि पडै^१ खेत दळपत^२ सुतण, वरि रंभ बाणक^३ विंदरै^४ ।
 नरिंदरै^५ काम^६ आयौ^७ नरिंद, आयौ सुरपुर इंदरै^८ * ॥ १५
 करे^९ बरंग^{१०} दळ^{११} किलम, रुघौ^{१२} सूजावत^{१३} रुकां ।
 वढे घाट रत वहै, वाहि^{१४} भळ जेम^{१५} भभूकां ।
 भड़ भिड़ज्ज^{१६} गजभार, धार विहरे^{१७} पाड़े^{१८} धड़^{१९} ।
 ढहियां^{२०} सिर पौढ़ियौ^{२१}, बौळ^{२२} भक बौळ बहादर^{२३} ।
 ऊदल^{२४} कुलोध^{२५} परणे^{२६} अछर, जयत^{२७} खीम विरदां जगे ।
 चढ़ि रथां हले होतां चमर, अयौ^{२८} अमरपुर ऊमगे^{२९} ॥ १६
 सांदू चारण 'सूर', मोहर^{३०} रावतां महाबळ^{३१} ।
 दो हुंडै खळ दळ दुगम, बिखम^{३२} भाटक वीजूजळ ।

१ ख. ग. पडै । २ ख. ग. दळपति । ३ ख. बाणक । ग. बाणिक । ४ ख. ग. व्यंदरै ।
 ५ ग. नरचंदरै । ६ ग. कामि । ७ ख. आयो । ८ ग. यंदरै ।

* यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है ।

९ ख. ग. करै । १० ख. ग. वरंग । ११ ग. दळि । १२ ग. रुघो । १३ ग. सूजावत ।
 १४ ख. ग. माहि । १५ ग. जेम । १६ ख. ग. भिड़ज । १७ क. विहरे । ग. विहेरे ।
 १८ क. पाड़े । १९ ख. ग. धर । २० ख. ग. ढहियां । २१ ख. ग. पौढ़ीयौ । २२ ख.
 ग. बोल । २३ ख. बाहादर । ग. बहादर । २४ ख. कलो । ग. कलोध । २५ ग.
 परणि । २६ ख. जयति । २७ ख. अयो । २८ ग. ऊमगे । २९ ख. मोहोर । ग.
 मोहौरि । ३० ख. महावल । ३१ ख. ग. बिखम ।

१६. बरंग—खंड, टुकड़ा । किलम—मुसलमान । रुघौ सूजावत रुकां—तलवारोंसे सूरज-
 मलका पुत्र रघुनाथसिंह शत्रु-दलको खंड-खंड करता हुआ वीरगति प्राप्त हुआ । वढे—
 कट कर । रत—रक्त, खून । भभूकां—(?) । भड़—योद्धा । भिड़ज्ज—घोड़ा ।
 गजभार—हाथियोंका समूह । धार—तलवार । विहरे—विदीर्ण कर, संहार कर ।
 ढहियां—कटने पर, गिरने पर । बौळ—लाल, रक्तपूर्ण । भक बौळ—(भिगो कर लाल
 किया हुआ ?) ऊदल कुलोध—उदयसिंहके वंशका । परणे—वरण कर के । अछर—
 अप्सरा । ऊमगे—उत्कंठित हो कर ।

१७. सांदू—चारणोंका एक गोत्र । सूर—सूरजमल वीर । मोहर—अगाड़ी । रावतां—
 योद्धाओं । खळ दळ—शत्रु दल । दुगम—दुर्गम जबरदस्त । भाटक—प्रहार । वीजू-
 जळ—तलवार ।

अंग चुख चुख आवधां, तूट^१ पड़ियौ^२ तिणवारां ।
 वरि रंभ चढे विमाण^३, वणे सुरवप जिणवारां^४ ।
 पित कुरब^५ लूण भूपाळरौ, करि ऊजळ^६ जुध जस करगि ।
 मगरूर भेदि सूरजमंडळ^७, सूरजमल पहुंचतौ सरगि ॥ १७

खांप^८ खांपरा^९ खत्री, अवर बहु^{१०} सूर अकारा ।
 करि करि तंडळ किलम, धणी छळि तीरथि धारां^{११} ।
 इम करि करि बहु^{१२} अचड़, मोह परहर^{१३} वप माया ।
 दिब^{१४} धरि धरि सुर देह, अछर वर^{१५} खुगि आया ।
 जुध^{१६} दुरंगदंत^{१७} चढ़िया^{१८} जिता, खित पाड़े मुगळां^{१९} खळां ।
 दळ साह डोहि आयौ दुभल, वेढ़क रंगियां^{२०} वीजळां ॥ १८
 'अजौ' बाळ^{२१} अवसता, लेख^{२२} दइवै^{२३} गढ़ लीधौ ।
 धर^{२४} छळ^{२५} भड़ धूहड़ां, कटक तड़ तड़ मिळ^{२६} कीधौ ।

१ ख. ग. तूटि । २ ख. ग. पडीयौ । ३ ख. ग. विमाणि । ४ ग. जिणवरां । ५ ख. कुरव । ६ ख. वज्जल । ग. ऊजळ । ७ ग. सूरजमंडळ । ८ ख. पांष पाष । ९ ख. खांपरां । १० ख. ग. वहाँ । ११ ख. ग. धारा । १२ ख. ग. वही । १३ ग. परहरि । १४ ख. ग. दिव्य । १५ ख. ग. वरि वरि । १६ ख. ग. जुधि । १७ ख. ग. दांति । १८ ख. ग. चढ़ीया । १९ ख. ग. मूल । २० ख. ग. रंगियां । २१ ख. बाल । २२ ख. ग. लेखि । २३ ख. ग. दूवै । २४ ख. धरि । २५ ख. ग. छलि । २६ ख. ग. मिळि ।

१७. चुख चुख — खंड-खंड, टुक-टुक । आवधां — आयुधों, अस्त्र-शस्त्रों । तूट — कट कर । पड़ियौ — बीर गति प्राप्त हुआ । विमाण — वायुयान । लूण — नमक । भूपाळरौ — राजा जसवंतसिंहका । मगरूर — बीर, जोशीला । पहुंचतौ — पहुँच गया । सरगि — स्वर्गमें ।

१८. खांप — शाखा या गोत्र । अकारा — जबरदस्त । तंडळ — नाश, ध्वंस । छळि — युद्ध, लिये । अचड़ — महत्वपूर्ण कार्य । परहर — छोड़ कर । वप — शरीर । दिब — दिव्य । अछर — अप्सरा । खुगि — स्वर्गमें । डोहि — विलोड़ित कर के । वेढ़क — जबरदस्त, योद्धा । वीजळां — तलवारों ।

१९. अजौ — महाराजा अजीतसिंह । बाळ अवसता — बाल्यावस्था । लेख — प्रारब्ध । धर — पृथ्वी, राज्य । छळ — लिये । धूहड़ां — राज धूहड़के वंशजों, राठौड़ों । कटक — कीधौ — शाखा-शाखाके बीरोंने मिल कर सेना तैयार की ।

चांपा कूपा अचळ, अभंग दूदा ऊदावत^१ ।
 जोधा जैता जोध, अडर करनावत^२ रावत ।
 हठि^३ चढे क्रोध^४ क्रीमसीहूरा, करण धरा ब्रद क्रीतरा ।
 ऊससै^५ लङ्गण इंद्रसिंघहूं, जाजुळ^६ भड़ 'अगजीत'रा ॥ १९

'ईदा'रा उणवार, अमल थांणा उट्टाए^७ ।
 ऊ बांटे^८ इळ तणा, खाग वळि हास लखाए^९ ।
 'अमरावत' खीजियौ^{१०}, एम^{११} घर देख^{१२} उखेळा ।
 सभि दळ वळ^{१३} इंद्रसिंघ^{१४}, विढण आयौ जिण वेळा ।
 ऊगतां भांण 'अगजीत'रा, वेढक^{१५} भड़ अरिघड़ बना^{१६} ।
 सांमुहा अया भारथ सभण, एक^{१७} उतनरा^{१८} ऊपना ॥ २०

१ ख. ग. दूदावत । २ ग. करणावत । ३ ग. हठ । ४ ख. ग. क्रोध । ५ ख. ऊससे ।
 ग. ऊससैं । ६ ग. जाजुलि । ७ ख. ऊठावे । ग. उठावै । ८ ख. बांटे । ९ ग.
 लखाए । १० ख. ग. खीजियौ । ११ ग. ऐम । १२ ख. ग. देखि । १३ ख. वळ ।
 १४ ग. इंद्रसिंघ । १५ ख. ग. वेढकि । १६ ख. ग. बना । १७ ग. ऐक । १८ ख.
 रततरा ।

१९. चांपा - वीर चांपा राठोड़के वंशज चांपावत । कूपा - राव कूपाके वंशज कूपावत ।
 अभंग - वीर । दूदा - राव दूदाके वंशज मेड़तिया राठोड़ । ऊदावत - राव उदयसिंहके
 वंशज राठोड़ । जोधा - राव जोधाके वंशज राठोड़ । जैता - जैतावत शाखाके राठोड़ ।
 जोध - योद्धा । करनावत - करणके वंशज राठोड़, करणोत । हठि - हठसे ।
 क्रीमसीहूरा - क्रीमसीके वंशज राठोड़, क्रीमसीहोत राठोड़ । ऊससै - जोशमें आते हैं ।
 इंद्रसिंघहूं - नागौराधिपति राव अमरसिंहके पुत्र रामसिंहके पुत्रसे । इसको बादशाह
 औरंगजेबने खासा खिलअत, जड़ाऊ साजकी तलवार, सोनेके साजका घोड़ा, हाथी,
 नक्कारा और निशान दे कर जोधपुरका राजा बना दिया था । जाजुळ - जाववत्यमान,
 तेजस्वी । भड़ - योद्धा । अगजीतरा - महाराजा अजीतसिंहके ।

२०. ईदा - राव इंद्रसिंह । अमल - अधिकार । अमरावत - राव अमरसिंहका वंशज,
 राव इंद्रसिंह । खीजियौ - क्रुद्ध हुआ । उखेळा - युद्ध, उत्पात । विढण - युद्ध करनेको ।
 ऊगतां - उदय होता हुआ । अगजीतरा - महाराजा अजीतसिंहके । वेढक - युद्ध करने
 वाला । अरिघड़ - शत्रु-दल । बना - दुलहा । सांमुहा - सम्मुख, सामने । भारथ
 सभण - युद्ध करनेको । उतनरा - जन्मभूमिके । ऊपना - उत्पन्न ।

विखम तबल^१ वाजिया^२, डंका सिधव^३ दहुंवै दळ ।
 साकति पमंगां^४ सभे, भिले पाखर भाळाहळ ।
 सिलह पूर करि सूर, सस्त्र कसि पकड़े साबळ^५ ।
 पाव^६ रकेवां^७ परठि, बहसि^८ चढ़िया^९ अतुळीबळ^{१०} ।
 हौकबा^{११} राग सिधू^{१२} हुवा, दगे तोप भळ दाख्वां^{१३} ।
 अम्हसम्हा रीठ गोळां उडै, मारू धर कजि मारवां^{१४} ॥ २१

गोळी तीर व्रजागि, आगि भड पडै^{१५} अंगारां ।
 उण वेळा औरिया^{१६}, जंगम जोधार 'अजारां' ।
 घड भड(नि) जोड़ा^{१७} धमक, घडा भूलाळ बडड^{१८} घट^{१९} ।
 रिख हडहड रत बडड^{२०}, रूक औभड भट रुंभट ।
 आवियौ हुतौ आंटी लियण^{२१}, 'अमर' 'जसा' आगौररौ^{२२} ।
 अमराव^{२३} जोधपुरां अगै, नठौ^{२४} राव नागौररौ^{२५} ॥ २२

१ ख. त । २ ग. वाजीया । ३ ख. ग. सीधव । ४ ख. पमांगां । ५ ख. साबल ।
 ६ ख. पाष । ७ ख. ग. रकेवां । ८ ख. ग. बहसि । ९ ख. ग. चढ़िया । १० ख. ग.
 अतुळीबल । ११ ख. ग. हौकपा । १२ ख. सीधव । १३ ग. दारवां । १४ ख. ग.
 मारुवां । १५ ग. पडै । १६ ख. ओटीया । ग. ओरीया । १७ ख. ग. निजडा ।
 १८ ख. ग. घडड । १९ ख. घड । २० ख. ग. बडड । २१ ख. ग. लीयण । २२ ख.
 ग. आगौररै । २३ ख. ग. उमराव । २४ ख. ग. नठै । २५ ख. नागौररौ ।

२१. तबल - बड़ा ढोल । डंका - नगाड़ा बजानेका डंडा । सिधव - वीर रसका राग ।
 दहुंवै - दोनों ओर । साकति - जीन । सभे - सज्जित कर । भिले - चमके, दमक-
 युक्त हुये । पाखर - घोड़ेका कवच । भाळाहळ - देदीप्यमान, चमकदार । परठि - प्रतिष्ठा
 कर के । बहसि - जोशमें आ कर । अतुळीबळ - शक्तिशाली । हौकबा - हर्ष, खुशी,
 उत्सव । राग सिधू - वीर रसका राग । दाख्वां - बारूद । अम्हसम्हा - आमने-
 सामने । रीठ - प्रहार । मारू धर - मारवाड़ । कजि - लिये । मारवां - राठोड़ों ।

२२. औरिया - भोंक दिये । जंगम - घोड़ा । अजारां - महाराजा अजीतसिंहके । घड -
 सेना । भूलाळ - समूह । बडड - ध्वनि विशेष । रिख - नारद ऋषि । हडहड -
 अट्टहासपूर्वक हँसना । रत - रक्त, खून । औभड - भयंकर । रुंभट - लड़ाई । आंटी -
 शत्रुता । अमर - राव अमरसिंह । जसा - महाराजा जसवंतसिंह । नठौ - भग गया ।
 राव नागौररौ - नागौरका राव इन्द्रसिंह ।

भड़ जीता भाराथ, एण^१ विध^२ 'अजमल'^३ वाळा ।
 सुणि कथ 'अवरंग' साह, जळे ऊठे^४ उर^५ ज्वाळा ।
 विदा किया^६ तिण^७ वार, धूत दळ असुर मुरद्धर^८ ।
 'अवरंग' भड़ आविया^९, भूत गिड़कंध भयंकर ।
 जड़ि ठांम ठांम थांणा जबर^{१०}, बैठा^{११} मुगळ महाबली^{१२} ।
 आसुरां^{१३} सुरां प्रजळी^{१४} अगनि^{१५}, छोह धोह^{१६} भळ ऊछळी^{१७} ॥ २३
 विखम विखौ जिण वार, धोम धिखि^{१८} हुवौ^{१९} मुरद्धर^{२०} ।
 दौड़ण^{२१} लागा दुभल, वडा तरवार बहादर^{२२} ।
 खग भाटां खेसिया^{२३}, मारि थाटां^{२४} मुगळांणा ।
 जमी अमल नह जमै, खपे थाका खुरसांणा ।
 'अवरंग' भीच पाडे^{२५} इता, खग भाटां दीघा खळै ।
 असि नीठ नीठ धावै इळा, घोर^{२६} सथांनां आगळै ॥ २४
 'सोनिग' 'दुरंग' सकाज, हणै मुगळांण हजारां ।
 अँ 'अवरंग' आगळै, पडै नित दिली पुकारां ।

१ क. एण । २ ख. ग. विधि । ३ ग. अजमेल । ४ क. उठे । ५ ख. ग. उरि ।
 ६ ख. ग. कीया । ७ ख. ग. जिण । ८ ख. ग. मुरधर । ९ ख. ग. आवीया । १० ख.
 ग. जबर । ११ ख. वेठा । १२ ख. महावली । १३ ख. असुरां । १४ ग. प्रजल ।
 १५ ग. अगनी । १६ ग. धोह । १७ ख. ग. वृछळी । १८ ख. ग. धिषि । १९ ख.
 ग. हुवौ । २० ग. मुरधर । २१ ख. ग. दौड़ण । २२ ख. बहादर । ग. बाहादर ।
 २३ ख. ग. खेसीया । २४ ख. भाटां । ग. थांणां । २५ क. पाडे । २६ ख. गोर ।

२३. अजमल वाळा - महाराजा अजीतसिंहके । धूत - धूर्त, शैतान । असुर - मुसलमान ।
 भूत - उन्मत्त, प्रेत रूप । गिड़कंध - जबरदस्त । आसुरां - यवनों, मुसलमानोंके । प्रजळी -
 प्रज्वलित हुई । छोह - क्रोध, क्षोभ । धोह - द्वेष, शत्रुता । भळ - आगकी लपट ।

२४. विखौ - संकटका समय । धोम - आग । धिखि - प्रज्वलित हो कर । खेसिया - लूटे ।
 थाटां - सेनाओं, समूहों । मुगळांणा - मुसलमानोंके । खपे - कोशिश कर के ।
 खुरसांणा - मुसलमानों, बादशाहों । अवरंग - औरंगजेब । भीच - योद्धा । खळै -
 नाश, ध्वंस । घोर - कन्निरस्तान, कन्न । सथांनां - स्थानों । आगळै - आगड़ी ।

२५. सोनिग - चांपावत शाखाका राठोड़ वीर सोनिंग । दुरंग - प्रसिद्ध राठोड़ वीर दुरगा-
 दास ।

असपति निसदिन अकस, रहै भेजै अमरावां^१ ।
 कमधज विहंडै किलम, घणा आवै सुजि घावां^२ ।
 'अवरंग' हियै^३ क्रोधाअगनि, दाह अघट जुध करि दियौ^४ ।
 दुरगेसहुंता मसलति दिली, कहियौ^५ जिम तिमहिज^६ कियौ^७ ॥ २५

प्रगट खांप खांपरा, एम^८ दौड़ै वड रावत ।
 ठौड़^९ ठौड़ राठीड़, घणा^{१०} मुगळां^{११} खग^{१२} घावत ।
 पचि थाकौ पतिसाह, किलम विहंडाय कराळा ।
 क्रोध^{१३} जतन कीजतां, ठहे नह कमध हठाळा ।
 जूटा कंठीर छूटा जिसा, तूटा दळ असपति तरै ।
 अवरंगजेब^{१४} अगजीत नूं, जाळंधर दीधौ जरै ॥ २६

तेज पुंज 'अगजीत', जोम^{१५} भरियौ^{१६} महाराजा^{१७} ।
 ब्रह्मक तूर करि तबल^{१८}, सूर दळ सजे सकाजा ।
 'अवरंग'तणौ अमीर, घोर^{१९} मंडियौ^{२०} गोळां^{२१} घण ।
 सायक घण साबळां^{२२}, रुक भाटां कीधौ रण ।

१ ख. ग. उमरावां । २ ख. घावौं । ३ ग. हीयै । ४ ख. दीयो । ५ ख. ग. कहियौ ।
 ६ ख. तिमहीज । ७ ख. ग. कीयो । ८ ग. ऐम । ९ ग. ठौर ठौर । १० ख. घणौं ।
 ११ ख. मूगलां । १२ ख. ग. घगि । १३ ख. ग. कोड़ि । १४ ख. अवरंगजेब । ग.
 अवरंजेबि । १५ ग. जोमि । १६ ख. ग. भरीयो । १७ ख. ग. माहाराजा ।
 १८ ख. तवल । १९ ख. ग. घेरि । २० ख. ग. मंडीयो । २१ ग. गोळा । २२ ख.
 ग. साबळां ।

२५. असपति — बादशाह । अकस — दुःख, डाह, द्वेष । विहंडै — संहार करते हैं, ध्वंस करते हैं ।
 दाह — जलन । अघट — निरन्तर । दुरगेसहुंता — राठीड़ बीर दुरगादासे ।

२६. खांप — शाखा । पचि — यत्न कर के, पूर्ण कोशिश कर के, । विहंडाय — संहार करवा
 कर । हठाळा — अपने हठ पर दृढ़ रहने वाला । जूटा — भिड़ गये, युद्ध किया ।
 कंठीर — सिंह । तूटा — नाश हुआ । तरै — तब । अगजीत — महाराजा अजीतसिंह ।
 जाळंधर — जालोर नगर ।

२७. पुंज — समूह । जोम — जोश, उमंग । भरियौ — भरा हुआ । ब्रह्मक — नगाड़ेकी आवाज ।
 तूर — वाद्य विशेष । तबल — वाद्य विशेष । घोर — भयंकर ध्वनि । सायक — तीर,
 बाण । साबळां — भालों विशेष । रुक — तलवार ।

लसियौ^१ निबाब^२ कटिया^३ किलम, गह^४ नूप^५ धरि गजगाहरौ ।
लसकरी खान लूटे^६ लियौ^७, सोबौ^८ औरंगसाहरौ^९ ॥ २७

इम वासर ऊगतां, डाक वागी दसदेसां ।
जुध जीता 'अगजीत', सुणे जवनेस नरेसां ।
हिंदसथान^{१०} हरखियौ^{११}, ताम^{१२} दहले तुरकाणौ^{१३} ।
जगत सरब^{१४} जाणियौ^{१५}, जोध लेसी जोधाणौ ।
'गजबंध'^{१६} दुवै^{१७} धरियौ^{१८} गुमर, राज धरम कुळरीतरौ ।
तिण दीह घटे 'अवरंग' तप, तप वधियौ^{१९} 'अगजीत'रौ ॥ २८

वड वड कुळ वरियांम^{२०}, साख पैतीस^{२१} सकाजां ।
सुता दियण^{२२} वासतै, रजित^{२३} स्त्रीफळ सभि राजां ।
'अजण' भेट आणियौ^{२४}, कमध पह^{२५} लिया^{२६} उछव^{२७} करि ।
विद^{२८} इंद वणि वरे, सकति रूपा बहु^{२९} सुंदरि ।

१ ख. ग. लसियौ । २ ख. नबाब । ग. नबाब । ३ ख. ग. कटिया । ४ ग. गृह ।
५ ख. ग. नूप । ६ ग. लूटे । ७ ख. ग. लीयौ । ८ ख. ग. सोबौ । ९ ख. ग.
अवरंगसाहरौ । १० ख. ग. हिंदुसथान । ११ ख. ग. हरखियौ । १२ ख. ग. ताम ।
१३ ख. ग. तुरकाणौ । १४ ख. सरब । १५ ख. ग. जाणियौ । १६ ख. गजबंध ।
१७ ख. ग. विये । १८ ख. ग. धरियौ । १९ ख. ग. वधियौ । २० ग. वरियांम ।
२१ ख. ग. पैतीस । २२ ख. ग. दीयण । २३ ख. ग. रजित । २४ ख. आणीयां ।
ग. आणीया । २५ ख. ग. पोहौ । २६ ख. ग. लीया । २७ ख. ग. उछव । २८ ख.
ग. वीद । २९ ख. ग. बहु । ग. बहु ।

२७. लसियौ - पराजित हो कर भाग गया । कटिया किलम - मुसलमान मारे गये । गज-
गाहरौ - युद्धका । सोबौ - प्रान्त, सूबा । औरंगसाहरौ - बादशाह औरंगजेबका ।

२८. वासर - दिन । ऊगतां - उदय होने पर । डाक - डंका । अगजीत - महाराजा अजीत-
सिंह । जवनेस - बादशाह । हरखियौ - हर्षित हुआ । बहले - भयभीत हुए । तुरकाणौ -
बादशाहत । जोध - वीर । गजबंध - महाराजा गजसिंह । दुवै - द्वितीय, दूसरे ।
गुमर - गर्व, जोश । दीह - दिन । अवरंग - बादशाह औरंगजेब । तप - तेज,
तपस्या ।

२९. वरियांम - श्रेष्ठ । सुता - कन्या, लड़की । वासतै - लिये । रजित - चांदी या सोनेका ।
स्त्रीफळ - नारियल । अजण - महाराजा अजीतसिंह । आणियौ - लाया । पह - राजा ।
विद - दुलहा ।

रंगराग अमर^१ केसर^२ अतर, उच्छवि^३ छक^४ आणंद अति ।
 अनपुरां आदि उदियापुरां^५, परणे कमधज छत्रपती^६ ॥ २६
 'रांण' राज तिण वार, जुगति^७ धर वेध लगे जदि ।
 'अमर' कुमार^८ मुरड़ियौ^९, तंत ऊथपे दियौ^{१०} तदि ।
 जदि आयौ जैसिंध, सरण कमधां तदि^{११} सब्बल^{१२} ।
 'रांण' मदति^{१३} महाराज^{१४}, दीध 'अगजीत' सबल^{१५} दळ ।
 तदि 'रांण' 'जसौ' चाढै तखति, कंवर^{१६} नमे बांधै^{१७} करां ।
 'जसराज'तणै कीधौ 'अजै', आंक एह^{१८} उदियापुरां ॥ ३०

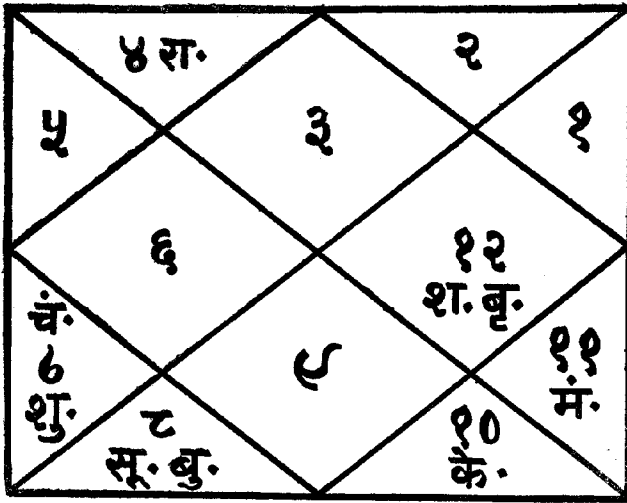
१ ख. डंबर । ग. डंबर । २ ख. ग. केसरि । ३ ख. उच्छव । ग. उत्खव । ४ ख. छकि ।
 ५ ख. उदयापुरां । ग. उदीयापुरां । ६ ख. ग. छत्रपति । ७ ग. जुगत । ८ ग. कुंवर ।
 ९ ख. ग. मुरडीयो । १० ख. ग. दीयो । ११ ख. ग. तकि । १२ ख. ग. सब्बल ।
 १३ ख. सछति । १४ ख. ग. महाराज । १५ ख. सबल । १६ ख. ग. कुंवर ।
 १७ ख. बांधे । ग. बांधे । १८ ग. ऐह ।

२६. अमर — अंबर ।

३०. रांण—महाराणा जयसिंह उदयपुर । जुगति—युक्ति । वेध—युद्ध, उपद्रव । अमर
 कुमार—महाराजकुमार अमरसिंह । वि.वि.—वि. सं. १७४८ (ई.स. १६६१)में महा-
 रानाके जेष्ठ कुमार अमरसिंहने अपने पितासे राज्य छीननेका षडयंत्र रचा । जब इसकी
 खबर महाराना जयसिंहको मिली तब वे तत्काल ही उदयपुर छोड़ कर कुंभलगढ़ होते
 हुए घाणेराम चले गये और वहांके तत्कालीन ठाकुर गोपीनाथ मेड़तियाकी सलाहके
 अनुसार महाराजा अजीतसिंहके पास आदमी भेज कर उनसे सहायताकी प्रार्थना की ।
 इस पर महाराजा अजीतसिंहने चांवावल भगवानदास, वीर करणोत दुरगादास आदि
 प्रमुख व्यक्तियोंके साथ बड़ी भारी सेना देकर महारानाकी सहायतार्थ घाणेराम भेजे ।
 इन्होंने वहां पहुँच कर सीसोदियोंसे मिल कर पिता-पुत्रमें परस्पर संधि करा दी । संधि
 हो जाने पर महाराना साहब उदयपुर चले गये और महाराजकुमार राजसमंद तालाब
 पर रहने लगे । —देखो महामहोपाध्याय कविराजा श्यामलदास कृत वीर विनोद
 भाग २, पृ० ६७३ से ६७६ तक ।

मुरड़ियौ—कुपित हुआ । तंत—सार, तत्व । ऊथपे दियो—उलटा कर दिया,
 बदल दिया । रांण—महाराना जयसिंह । मदति—सहायता । अगजीत—महाराजा
 अजीतसिंह । रांण जसौ—महाराना जयसिंह । बांधै करां—करबद्ध हो कर । जस-
 राजतणै—महाराज जसवंतसिंहके पुत्र । अजै—महाराजा अजीतसिंह । आंक—अहसान,
 उपकार ।

महाराजा 'अजमाल', करै^१ राजस अधकारे^२ ।
 प्रिय चहुवाण^३ पतिव्रता, धरम थित^४ गरभ सधारे ।
 महि वीता दसमास, जांम नूप^५ कुंवर जनम्मे^६ ।
 वधाउवां जिण वार^७, 'अजै' बहु^८ दरब उधमे^{९*} ।
 घण धमण^{१०} जेम^{११} नवबति^{१२} घुरै^{१३}, त्रिय प्रफुलति^{१४} गावै तठै ।
 चत्रलख सुजाण जोतसि^{१५} चतुर, जनमपत्री वरती जठै ॥ ३१



महाराजकुमार श्री अर्भसिंघजीरी जनमपत्री

१ क. करे । २ ख. ग. अधकारे । ३ ख. ग. चह्वाणि । ४ ख. ग. थिति ।
 ५ ख. ग. नूप । ६ ख. ग. जन्ममे । ७ ग. तिण वार । ८ ग. बहु । ९ ग. उधमे ।

*ख प्रतिमें यह पंक्ति अपूर्ण है ।

१० ख. ग. धमण । ११ ख. ग. मंगळ । १२ ख. ग. नवबति । १३ ख. घुरे । ग.
 घुरे । १४ ख. ग. प्रफुलित । १५ ख. ग. जोतसि ।

३१. अजमाल - महाराजा अजीतसिंह । प्रिय चहुवाण पतिव्रता - होठलूके अधिपति चौहान
 चतुरसिंहकी पुत्री जिसका विवाह महाराजा श्री अजीतसिंहके साथ वि. सं. १७५७में
 हुआ था । इसीके गर्भसे महाराजकुमार अर्भसिंहजीका जन्म वि. सं. १७५६ मार्गशीर्ष
 वदि १४ को हुआ । जांम - रात्रि । वधाउवां - मांगलिक खबर देने वाले । अजै - महा-
 राजा अजीतसिंह । उधमे - दान-पुरस्कारादिमें खर्च किया । घण - बहुत, मेघ, घन ।
 धमण - (?) । नवबति - नोबत । घुरै - बजती है । त्रिय - स्त्रियों ।

महाराजकुमार^१ महाराजा श्री अर्भसिधजीरी जनमपत्री ।

छंद पद्धरी

स्त्रीगणपति सरसति प्रणम^२ साधि^३ * ।
 इम लिखे पत्र स्त्रीपति अराधि ।
 बाखाण^४ सतरसै समत^५ वीर ।
 सुजि वरस गुणसठे तप सधीर ॥ ३२
 सोळसै^६ साक चववीस^७ तास ।
 मधि हिमरित^८ वर अघण मास ।
 सनि^९ चतुरदसी वद^{१०} पख सकाज ।
 सिध जोग प्रगट उच्छब^{११} समाज^{१२} ॥ ३३
 तदि निसा च्यार^{१३} घटिका वितीस^{१४} * ।
 ऊपरा वळे पळ सताईस^{१५} ।
 वणि नखित्र^{१६} विसाखा जेणि वार^{१७} ।
 'अभमाल' जनम लीधौ उदार ॥ ३४

१ ख. ग. माहाराजा । २ ख. ग. प्रणमि । ३ ग. साध ।

*ख. प्रतिमें यह पंक्ति 'स्त्री गणपति' से प्रारम्भ नहीं हुई है, केवल 'पति सरसति' से ही प्रारम्भ हुई है ।

४ ख. ग. बाखाणि । ५ ख. संमति । ग. समंति । ६ ख. सोलसै । ग. सोलासै । ७ ख. चौवीस । ८ ख. ग. रिति हिमंत । ९ ग. सति । १० ख. ग. वदि । ११ ग. उत्खब ।

*यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है ।

१२ ग. च्यारि । १३ ग. ववितीस ।

*यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है ।

१४ ग. सताइस । १५ ग. नखत्र । १६ ग. तेणि वार ।

३२. स्त्रीपति - विष्णु । अराधि - आराधना कर के । बाखाण...सधीर - वि. सं. १७५६ ।

३३. सोळसै...तास - शक सं. १६२४ । हिमरित - हेमन्त ऋतु । अघण मास - मार्गशीर्ष मास । सनि - शनिश्चरवार । वद पख - कृष्ण पक्ष । सिध जोग - सिद्ध योग ।

३४. वितीस - व्यतीत हुई । विसाखा - अश्विनी आदि सताईस नक्षत्रोंमें से सोलहवां नक्षत्र जो मित्र गणके अंतर्गत है । अभमाल - महाराजकुमार अभयसिंह ।

वृश्चिक^१ सक्रांत दिन खट वितीस^२ ।
 ससि सुक्र रासि^३ तुल वर सधीस ।
 राजै तदि मंगळ कुंभ रासि ।
 कहि^४ मीन वृहस्पति^५ बळ^६ प्रकासि^७ ॥ ३५
 रचि मीन रासि सनि करक राह ।
 अरु मकर रासि केतह^८ अथाह ।
 कहि वृश्चिक^९ भांण बुध बुध^{१०} प्रकास ।
 तन लगन^{११} मिथुन सुभ अनत तास ॥ ३६
 चित सुद्धि रासि ग्रह^{१२} इम चवेस ।
 कहि^{१३} ग्रह प्रताप वरणन^{१४} कवेस ।
 रवि छठै भुवन^{१५} खळ हणै रूक^{१६} ।
 *आराण^{१७} फतै पावै अचूक ॥ ३७
 तप वधै भांण उद्योत^{१८} तेम ।
 अन^{१९} भूप दवै^{२०} खद्योत^{२१} एम^{२२} * ।

१ ख. वृश्चिक । ग. विश्विक । २ ख. ग. वितीत । ३ ग. राशि । ४ ख. ग. कहै ।
 ५ ख. ग. वृहस्पति । ६ ख. ग. बळ । ७ ग. प्रकास । ८ ख. केतक । ९ ख. ग.
 वृश्चिक । १० ग. बुधि । ११ ग. लगन । १२ ख. ग. यम । १३ ग. करि । १४ ख.
 वरण । ग. वरणण । १५ ख. ग. भुवनि ।

*ग्रह पंक्ति 'ख' प्रतिमें अपूर्ण है ।

*ये पंक्तियां 'ख' प्रतिमें नहीं हैं ।

१६ ग. आराणि ।

१७ ग. उद्योत । १८ ग. अनि । १९ ग. दवै । २० ग. विद्योत । २१ ग. एम

३५. वृश्चिक सक्रांत - वृश्चिक संक्रान्ति । दिन खट वितीस - वृश्चिक संक्रांतिके छः अंश व्यतीत हो चुके थे । ससि.....धीस - चंद्रमा और शुक्र तुला राशिमें थे । राजै...मीन...कुंभ रासि - इस समय मंगल ग्रह कुंभराशिमें था । कहि...प्रकासि - वृहस्पति राशिमें था ।

३६. रचि.....राह - जन्मकुंडलीमें मीनका शनि और कर्क राशिका राहु है । अरु मकर...केतह - मकर राशिमें केतु ग्रह है । कहि.....बुध प्रकास - वृश्चिक राशिमें सूर्य और बुध ग्रह हैं जो बुद्धिका प्रकाश करते हैं । तन.....तास - तनु भावमें शुभ मिथुन लग्न है । लगन = पूर्व क्षितिजमें उदय होने वाली राशि, लग्न ।

३७. चवेस - कहे जाते हैं । कवेस = कवीश - महाकवि । रवि.....अचूक - छठवें स्थानमें सूर्य रहनेसे शत्रुओंको नष्ट करता है, युद्धमें विजय होगी और अन्य राजा उसके सामने खद्योतके (नक्षत्र अथवा जुयनू) समान रहेंगे ।

पांचमें भवन ससि सुक्र पेखि* ।
 दाखै कवि जातक - भरण देखि ॥ ३८
 ऊजळ कुमार^१ उपजै^२ उदार ।
 प्रगटै बुधि^३ राजस विध^४ अपार ।
 इळ राजनीत^५ जाणै अनेक ।
 वर मंत्र - सकति कविता विवेक ॥ ३९
 गुरजणांहंत अति विनय ग्यान ।
 धारंत सुपह हित गुणनिधान ।
 विध^६ राह करकरौ फळ वखाणि ।
 जोतिखी ग्रंथरौ पंथ जाणि ॥ ४०
 अति कोक - कला - भोगी अपार ।
 दातार सूर अति चित उदार ।
 बळिवंत^७ हुवै आजानबाह^८ ।
 असि गयंद हुवै दळ बळ^९ अथाह ॥ ४१
 तेजमें^{१०} रूप बहु^{११} पुत्र ताच ।
 सोभा अपार गुण एह^{१२} साच ।

*यह पंक्ति ख. प्रतिमें अपूर्ण है ।

१ ख. ऊबार । ग. ऊवार । २ ख. ऊपजै । ३ ख. बुधि । ४ ख. ग. विधि । ५ ख. ग. नीति । ६ ग. विधि । ७ ख. ग. बळिवंत । ८ ख. ग. आजानबाह । ९ ख. ग. बळ । १० ख. ग. तेजमें । ११ ख. ग. बहु । १२ ग. ऐह ।

३८. पांचमें देखि - पंचम भवनमें चंद्र शुक्र देख कर ज्योतिषके ग्रंथ जातकाभरणके अनुसार कवि महोदय कलित बतलाते हुए लिखते हैं - 'महाराजकुमार अभयसिंह उज्ज्वल और उदार चित्त, बुद्धिमान, राजनीतिज्ञ, मंत्रशक्तिमें श्रेष्ठ, कविता और ज्ञानमें प्रवीण होगा ।'

४०. गुरजणांहंत... गुण निधान - गुरुजनोंका आज्ञाकारी, विनयशील तथा गुणोंका खजाना होगा । विध राह वखाणि - ज्योतिष ग्रंथोंके ज्ञानके आधार पर राहु और कर्कका कलित ज्ञान कह रहा है ।

४१. अति अथाह - कामशास्त्रमें प्रवीण और विषयभोगमें लिप्त रहने वाला होगा । साथ ही बड़ा दातार, वीर और उदारचित्त भी होगा । आजानुबाहु महाराजकुमार बड़ा-बलशाली होगा, और इसकी सेनामें अपार हाथी, घोड़े होंगे ।

ब्रह्मपति^१ भवन दसमै^२ वखांणि ।
 जिण हीज भवन रविनंद जांणि ॥ ४२
 द^३ ग्रहां जोड़ि फळ किसूं दाखि ।
 सुजि कहूं जातिकाभरण साखि ।
 त्वै महासूर^४ बहु^५ देस होय^६ ।
 दस दिसा सुजस दन खाग दोय^७ ॥ ४३
 जाणंत कळा बहतरि^८ सुजांण ।
 प्रिय^९ जूथ मोह अतिसै प्रमांण ।
 सनि^{१०} गरुके^{१०} इंद्र एकणि^{११} सथांनि^{१२} ।
 इण जोड़ि^{१३} हुवै नहिं^{१४} नृपति^{१५} आंनि^{१६} ॥ ४४
 बलि^{१७} जुदौ जुदौ गुण कहि बताय^{१८} ।
 गुरतणौ जिकौ गुण प्रथम^{१९} गाय ।
 आवै दिलेसरौ^{२०} धन अपार ।
 केवांण^{२१} पांण^{२२} दहुंवै प्रकार ॥ ४५

१ ख. ब्रह्मपती । ग. ब्रह्मपती । २ ख. ग. दस । ३ ग. माहासूर । ४ ख. बोहो ।
 ग. बोहो । ५ ख. कोय । ६ ख. होय । ७ ख. बहौतरि । ग. बहौतरि । ८ ख. ग.
 प्रीय । ९ ख. अति । १० ख. ग. गरुके । ११ ग. ऐकणि । १२ ख. ग. सथांन ।
 १३ ख. ग. जोड़ । १४ ख. नह । ग. नहं । १५ ख. ग. नृपति । १६ ख. आंण । ग.
 आंन । १७ ख. ग. बलि । १८ ख. ग. बताय । १९ ग. प्रथमि । २० ख.
 दिलेसरो । २१ ग. केवांण । २२ ख. ग. पाणि ।

४२, ४३. ब्रह्मपति.....जांणि — बृहस्पति दसवें स्थान पर है और उसी स्थान पर रविनंद
 (शनि) भी है । दोनों ग्रहोंकी युतिका फल जातिकाभरण ग्रन्थानुसार कहता हूँ । महाराज-
 कुमार महासूरवीर होंगे और दस ही दिशाओंमें इनके दानकी और खड्गकी प्रशंसा
 अद्वितीय रहेगी ।

४४. सुजांण — चतुर । जूथ = यूथ — समूह । सनि...आनि — शनिश्चर और गुरु (बृहस्पति)
 दसवें स्थानमें युतिका फल कहता हूँ । इसके समान कोई दूसरा राजा नहीं होगा ।

४५. बलि — फिर, पुनः । जुदौ — पृथक् । गुरतणौ — बृहस्पतिका । दिलेस — बादशाह ।
 केवांण — कृपाण, तलवार । पांण — शक्ति, से । दहुंवै — दोनों ।

अति वधै क्रीत^१ दीरघ^२ आव^३ ।
 मुजि^४ हुवै जोग^५ दारण^६ सभाव^७ ।
 उच्छाह^८ सदा राखै अनंत ।
 कामणि जिम भुगतै^९ भूमिकंत ॥ ४६
 सुग्रही अनै^{१०} के इंद्र सार ।
 इण रीत ब्रह्मपति^{११} गुण उदार^{१२} ।
 अब^{१३} कहूं सनीसर गुण अनेक ।
 अनेक तणौ तत वचन एक^{१४} ॥ ४७
 नृप^{१५} जोग असी^{१६} चत्र अडिग नेम ।
 जगि करत राज चक्रवरत^{१७} जेम ।



महाराजकुमाररा सामुद्रिक चिन्हांरी वरणण

सठिक^{१८} त्रकूण कर चह न सम्म^{१९} ।
 पै उरध^{२०} - रेख जळहळ पदम्^{२१} ॥ ४८

१ ख. ग. क्रीति । २ ख. ग. दीरघ । ३ ख. आव । ४ ख. सजि । ५ ख. ग. जोग । ६ ग. दारण । ७ ग. भाव । ८ ख. उच्छाह । ग. उत्साह । ९ ख. भोगतै । १० ग. अनै । ११ ख. ग. ब्रह्मपति । १२ ख. ग. अपार । १३ ख. ग. अब । १४ ग. एक । १५ ख. ग. नृप । १६ ग. असी । १७ ख. ग. चक्रवर्ति । १८ ख. ग. सठि । १९ ग. नसम्म । २० ख. ऊरध । २१ ख. ग. पदम ।

४६. क्रीत - कीर्ति । दीरघ - दीर्घ । आव - आयु । दारण = दारुण - उग्र । सभाव - स्वभाव । उच्छाह - उत्साह, जोश । कामणि - कामिनी, स्त्री । भूमिकंत - राजा ।

४७. सनीसर - सनिश्चर । तत वचन - तत्त्व वचन, सार शब्द ।

४८. सठिक - शरीरमें विशिष्ट अंगोंमें होने वाला सामुद्रिक चिन्ह जो  स्वस्तिकके आकारका होता है । यह सामुद्रिक शास्त्रानुसार बहुत शुभ माना जाता है । त्रकूण - सामुद्रिक  त्रिकोणाकार चिन्ह विशेष जो पैरमें तथा मतान्तरसे हाथकी हथेलीमें भी होता है । पै - पैर, चरण । उरध रेख - वह चरणमें होने वाली रेखा जो अंगूठे और अंगूठेके समीपवर्ती उंगुलीके बीचसे निकल कर सीधे और लम्बे आकारमें एंडीके मध्य भाग तक गई हुई हो, ऊर्ध्वरेखा । जळहळ - देदीप्यमान । पदम - सामुद्रिक विद्याके अनुसार पैरमें होने वाला विशेष आकारका चिन्ह जो भाग्यसूचक माना जाता है, पद्म ।

कहि हस्त - चिह्न बाणिंक^१ प्रकार ।
 सति साम^२ दुरग विध^३ वचन सार ।
 मणिबंध^४ तीन मणि जब प्रमाणि^५ ।
 मछ कच्छ^६ कुंभ गज रथ मंडाणि^७ ॥ ४६
 असि खड्ग सकति तोरण उदार ।
 अंकुसां संख चक्र सुभ अपार ।
 परचंड दंड हर गदा पाणि^८ ।
 बिहुवै^९ अकार^{१०} वणि धनक बाणि^{११} ॥ ५०

१ ख. ग. बाणिंक । २ ख. ग. साम । ३ ख. ग. विधि । ४ ख. मणिबंध । ५ ख. ग. प्रमाण । ६ ख. कछ । ग. कच्छ । ७ ख. ग. मंडाणि । ८ ख. ग. पाणि । ९ ख. ग. बिहुवै । १० ग. आकार । ११ ख. वणि । ग. बाणि ।

४६. चिह्न - चिह्न । सति - (?) । साम - (?) । दुरग - एक प्रकारका हथेलीमें होने वाला सामुद्रिक चिह्न । मणिबंध - कलाई । मणि - (?) । जब - यवके आकारका वह सामुद्रिक चिह्न जो मणिबंधके उभरे हुए भाग पर होता है । मछ - मत्स्यके आकारका हाथमें होने वाला एक प्रकारका सामुद्रिक चिह्न जो शुभ माना जाता है । कच्छ - कच्छपके आकारका हथेलीमें होने वाला सामुद्रिक चिह्न । कुंभ - कलशके आकारका हथेलीमें होने वाला सामुद्रिक चिह्न विशेष । गज - हस्तिके आकारका हाथकी हथेलीके उभरे भाग पर होने वाला सामुद्रिक चिह्न । रथ - कनिष्ठिका उँगुलीके मूलके पास होने वाला सामुद्रिक चिह्न विशेष ।

५०. असि - अश्वके (घोड़े) आकारका हथेलीके उभरे भाग पर होने वाला शुभ सामुद्रिक चिह्न विशेष । खड्ग - मध्यमा उँगुलीके मूल स्थानसे कुछ अगाड़ी हाथकी हथेलीमें होने वाला खड्गाकार सामुद्रिक चिह्न । सकति - शक्ति नामक शस्त्रके आकारका हथेलीमें होने वाला सामुद्रिक चिह्न विशेष । तोरण - वंदनवारके आकारका हथेलीमें होने वाला सामुद्रिक चिह्न विशेष । अंकुस - अंकुशके आकारका हथेलीमें होने वाला सामुद्रिक चिह्न । संख - हाथकी उँगुलीके ऊपरके पोरमें होने वाला संखके आकारका सामुद्रिक चिह्न विशेष । मतान्तरसे पैरके तलवोंमें होने वाला सामुद्रिक चिह्न विशेष । चक्र - हाथकी मध्यमा उँगुलीके मूल स्थानका समीपवर्ती चक्रके आकारका सामुद्रिक चिह्न विशेष मतान्तरसे हाथकी उँगुलीके पोर पर होने वाला चक्रके आकारका चिह्न विशेष । परचंड - प्रचंड, प्रबल । दंड - हथेलीके मणिबंधकी ओरके उभरे हुए भाग पर होने वाला दण्डाकार सामुद्रिक चिह्न विशेष । हर गदा - हरि गदा, विष्णुकी गदाके आकारका हथेलीमें होने वाला सामुद्रिक चिह्न । पाणि - हाथ । बिहुवै - दोनों । अकार - आकार । धनक - हथेलीमें होने वाला धनुषाकार सामुद्रिक चिह्न विशेष । बाणि - तीरके आकारका हथेलीमें होने वाला सामुद्रिक चिह्न ।

धज चमर छत्र कर रेख धन्न ।
 चक्रवतीतणा साचा^१ चहन्न^२ ।
 उजळंग आरकत छिब^३ अनंग ।
 ऊगता भाण सारीख अंग ॥ ५१
 तपवंत हुवै^४ 'अजमल' सुतन्न ।
 धनि वेळा महुरत^५ वार धन्न ।
 ।
 ॥ ५२

कवित्त—मँगळ धमळ^६ उदमाद, वजे वाजंत्र जिण वेळा ।
 ग्रहि ग्रहि उडि गुड्डियां^७, मिळे सज्जण घण मेळा^८ ।
 विमळ कतूहळ वधे, हुवौ^९ उच्छव^{१०} हिंदुवाणै ।
 'अवरंग' चित औदके^{११}, तेज घटियौ^{१२} तुरकाणै ।
 कमधजां वंस मभि सहंस किर^{१३}, निडर भूप अनुमानमौ ।
 'अजमाल' ग्रेह जनमे 'अभौ', पह^{१४} अवतार पचीसमौ ॥ ५३

१ ख. ग. सारा । २ ख. चहन्न । ३ ख. ग. छवि । ४ ख. हुवो । ग. हुवौ । ५ ग. महुर । ६ ख. धम । ७ ग. गुड्डियां । *यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है ।
 ८ ख. ग. हुवो । ९ ख. उच्छव । ग. उत्छव । १० ग. औदकं । ११ ख. ग. घटियौ ।
 १२ ख. ग. किर । १३ ख. पोहो । ग. पोह ।

५१. धज — ध्वजाके आकारका कनिष्ठवा उंगुलीके मूलके पास होने वाला सामुद्रिक चिन्ह विशेष जो शुभ माना जाता है । चमर — चँवरके आकारका हथेलीमें होने वाला सामुद्रिक चिन्ह विशेष । छत्र — हथेलीमें होने वाला छत्रके आकारका सामुद्रिक चिन्ह विशेष । धन्न — (?) । चक्रवती — चक्रवर्ती, राजा । चहन्न — चिन्ह, लक्षण । उजळंग — उज्ज्वलाङ्ग । आरकत — स्वर्ण, सोना । छिब — शोभा, कांति, मूर्ति । अनंग — कामदेव । ऊगता भाण — सूर्यादिकाल सूर्यका । सारीख — सदृश, समान ।
५२. तपवंत — तपस्यावान । सुतन्न — पुत्र । धनि — धन्य-धन्य । वेळा — समय । महुरत — मुहूर्त । धन्न — धन्य-धन्य ।
५३. मँगळ धमळ — मांगलिक गायन या गीत । उदमाद — हर्ष, प्रसन्नता । वाजंत्र — वाद्य-यंत्र । ग्रहि.....गुड्डियां — घर-घरमें ध्वजाएँ फहराई या गुलाल उड़ी । कतूहळ — कौतूहल । उच्छव — उत्सव, हर्ष । हिंदुवाणै — हिन्दुस्तानमें, हिन्दुओंमें । अवरंग — औरंगजेब बादशाह । औदके — भयभीत होता है । तुरकाणै — यवनोंमें । सहंस किर — सहस्रकिरण, सूर्य । अजमाल — महाराजा अजीतसिंह । ग्रेह — घरमें, वंशमें । अभौ — महाराजकुमार अभयसिंह । पह — वीर, योद्धा ।

दुहौ^१—जनमे रांम अजौधिया^२, तिम वरणी तिण वार ।

‘अभा’ जनम^३ बणियौ^४ इसौ, जाळंधर जिण वार ॥ ५४

गाथा—सुत राघव कवसळळ^५, किसन मात जनमे देवकी^६ ।

इम जनमे ‘अभमल्ल’^७, राजकुंवर^८ सुव्रण कुख^९ रांणी ॥ ५५

कवित्त—पह^{१०} कुमार^{१०} पय पांन, ‘अभौ’ खांचे मुख^{११} अंचळ ।

सीत पांन जिम साह, होय^{१२} तप खंच^{१३} भळाहळ^{१४} ।

पह^{१५} कुवार^{१६} पालणै, पौढ़ि भूलाळै प्रमळ^{१७} ।

तनि^{१८} भोला सुरतांण, दिली भोला^{१९} खाए^{२०} दळ ।

पह^{२१} कुंवर^{२२} हसै तदि तदि^{२३} प्रसन, काळ हसै अवरंग कमळ^{२४} ।

जक पाय कुंवर पौढ़ै जरै, दिली अजक खुरसांण दळ^{२५} ॥ ५६

वधै राज सुख विहद, वधै हित संपत^{२६} वधायक ।

अवर वधै दिन इती, वधै पल पल वरदायक ।

१ ख. दूहा । २ ख. अजोधिया । ग. अजोधिया । ३ ख. ग. जनमि । ४ ख. वणीयो । ग. वरणीयो । ५ ख. कौसल्ल । ग. कवसल्ल । ६ ग. देवकी । ७ ख. ग. राजकुंवरि । ८ ग. कुषि । ९ ख. ग. पौहो । १० ख. ग. कुंमार । ११ ख. ग. मुखि । १२ ख. ग. हुये । १३ ख. ग. पंचे । १४ ख. हलाहल । १५ ख. ग. पौहो । १६ ख. ग. कुंमार । १७ ख. ग. प्रम्मल । १८ ख. ग. तन । १९ ख. भोणा । २० ख. ग. पाये । २१ ख. ग. पौहो । २२ ख. कुंवरि । २३ ग. नदि । २४ ग. कमळि । २५ ख. ग. दळि । २६ ख. ग. संपति ।

५४. अभा—महाराजकुमार अभयसिंह । बणियौ—वना । जाळंधर—जालोर नगर ।

५५. कवसळळ—कौशल्या । अभमल्ल—महाराजकुमार अभयसिंह । सुव्रण—सुवर्ण चौहान-वंशकी सोनगरा शाखा । कुख—कुक्षि, गर्भ ।

५६. पह—राजा । पय पांन—दूध पीना । अभौ—महाराजकुमार अभयसिंह । अंचळ—स्नान । भळाहळ—अग्नि, आग । पालणै—भूलामें । पौढ़ि—सो कर । भूलाळै—पालनामें भूला दिया जाता है । प्रमळ—(?) । भोला—वायु-प्रवाह, वायुका भौका । सुरतांण—बादशाह । दिली.....दळ—अस्थिर होना, व्याकुल होना, मुर्झना । पह कुंवर—राजकुमार । तदि तदि—तब-तब । काळ—मौत । अवरंग—बादशाह श्रीरंगजेब । कमळ—शिर । जक—चैन, आराम । जरै—जब । अजक—वेचैन, घबराहट । खुरसांण—बादशाह ।

५७. संपत—स्नेह, धनदीलत । वधायक—बढ़ाने वाला । वरदायक—यशस्वी, विरुद्धघारी ।

कवि सुभङ्गां वधि कुरव^१, जोम^२ वधियौ^३ जोधाणै ।
 वपि 'अवरंग'^४ दुख वधे^५, सोच^६ वधियौ^७ खुरसाणै* ।
 हिंदवां^८ धरम मुरधर हरख, सुजस वधे^९ सरसाविया^{१०} ।
 तन वेस 'अभै' 'अगजीत'तण, वधतां इता वधाविया^{११} ॥ ५७

वधे दुजां स्तुत^{१२} वांणि, वधे कवि वांणि^{१३} सुजस विध^{१४} ।
 वधे अस्ट^{१५} सिध^{१६} विमळ, नरिंद घरि वधे नवै निध^{१७} ।
 अकल^{१८} वधे^{१९} मंत्रियां^{२०}, धरा सति^{२१} वधे सांमध्रम^{२२} ।
 सरस वधे अरिन^{२३} साख, पांण भइ वधे पराक्रम^{२४} ।
 सत सील वधे^{२५} बहु^{२६} राज सुख, ग्यान वधे प्रभु गाविया^{२७} ।
 तन वेस 'अभै' 'अगजीत'तण, वधतां इता वधाविया^{२८} ॥ ५८
 तेज पुंज नूप सुतण, हुवौ जस^{२९} वेस^{३०} भळाहळ ।
 साईनां^{३१} साथियां^{३२}, मिळे खेले^{३३} मभि मंडळ ।

१ ख. कुरव । २ ग. जोम । ३ ख. ग. वधियो । ४ ग. अवरंगि । ५ ग. वधे ।
 ६ ग. सौच । ७ ग. वधियो ।

*यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है ।

८ ख. हींदवा । ९ ग. वधे । १० ख. ग. सरसावियो । ११ ख. ग. वधावियो ।
 १२ ख. ग. श्रुति । १३ ख. ग. वांण । १४ ख. ग. विधि । १५ ख. ग. अष्ट । १६ ख.
 ग. सिधि । १७ ख. ग. निधि । १८ ग. अकलि । १९ ग. वधे । २० ख. ग.
 मंत्रियों । २१ ख. सत । ग. रात । २२ ग. संसार । २३ ख. ग. अन । २४ ग.
 प्राक्रम । २५ ग. वधे । २६ ख. वहो । ग. बहो । २७ ख. गावियो । ग. गावियो ।
 २८ ख. ग. वधावियो । २९ ख. ग. सति । ३० ग. वेसि । ३१ ख. ग. सांमिना ।
 ३२ ख. ग. साथियों । ३३ ख. ग. खेलै ।

५७. सुभङ्गां - सुभटों, योद्धाओं । जोम - जोश । वधियौ - बड़ा । वपि - वपु, शरीर ।
 तन - शरीर । वेस - आयु, वयस् । अभै - महाराजकुमार अभयसिंह । अगजीत-
 तण - अजीतसिंहके तनय, या पुत्र । वधाविया - बढ़ाये ।

५८. दुजां - द्विजों, ब्राह्मणों । स्तुत - श्रुति, वेद । अस्ट सिध - आठ प्रकारकी सिद्धिमें ।
 नरिंद - राजा । घरि - भवनमें । नवै निध - नौ निधियों । सति - सत्य । सांमध्रम -
 स्वामी-धर्म । पांण - बल, हाथ ।

५९. पुंज - समूह । सुतण - पुत्र । जस वेस - यश और आयु । भळाहळ - देदीप्यमान ।
 साईनां - समवयस्क । मंडळ - मंडली, समूह ।

हुवै बाळ^१ हेकसा^२, विखम गढ़ कोट वणावै ।
 आप साह ऊपरा, 'अभौ' दळ बळ^३ सभि आवै ।
 सभियास कोट गढ़ साहरा, धूम लूटि धन ऊधमै ।
 ऊगतौ भांण बाळक^४ 'अभौ', राय आंगण^५ इण^६ विध रमै ॥ ५६

सभि बाळक^७ सिरपोस, नांम कित्ताब^८ निवाबां^९ ।
 साह बाळ^{१०} दळ सबळ^{११}, सभे भेजंत^{१२} सताबां ।
 सभि दळ साजि^{१३} संग्राम, आप सांमुहा^{१४} चलावै ।
 असि गठ^{१५} चढ़^{१६} औरवै^{१७}, भिड़े निब्बाब^{१८} भजावै ।
 लहि फतै भड़ां निजरां लियै^{१९}, सभि नौवति^{२०} नंद^{२१} तिण^{२२} समै ।
 ऊगतौ भांण बाळक 'अभौ', राय आंगण^{२३} इण विध^{२४} रमै ॥ ६०

सुजि बाळक^{२५} पतिसाह, माफ करि खून मनावै ।
 अंबखास^{२६} सभि^{२७} अडर, उरसि^{२८} छिबतौ^{२९} भुज आवै ।
 अनराजा^{३०} र^{३१} अमीर, उभै लोपै जां ऊपर ।
 'ऊभौ' रहै इनांम^{३२}, धरै निज करग जमंधर ।

१ ख. बाळ । २ ख. ग. हिकसाह । ३ ख. ग. वळ । ४ ख. बाळक । ५ ख. ग. अंगण । ६ ख. ग. विधि । ७ ख. बाळक । ८ ग. कित्ताब । ९ ख. नवाबां । ग. नवाबां । १० ख. बाळ । ११ ख. सबळ । १२ ख. भंजंत । १३ ख. ग. साज । १४ ख. सुमुहा । १५ ख. कठि । १६ ख. ग. सभि । १७ ख. ग. औरवै । १८ ख. निब्बाब । ग. नवाबा । १९ ख. ग. लीयै । २० ख. नौवति । २१ ख. ग. नंद । २२ ग. जिण । २३ ख. ग. अंगण । २४ ख. ग. विधि । २५ ख. बाळक । २६ ख. अंबखास । ग. अंबखास । २७ ख. ग. सभि । २८ ख. ग. उरसि । २९ ग. छिबतौ । ३० ख. अनिराजा । ३१ ग. र । ३२ ख. ग. अनाम ।

५६. हेकसा—एक बादशाह, एकसे, समान, एकव्रित । अभौ—अभयसिंह । सभियास—सज्जित किये । धूम—धूमधामसे, जोर-शोरसे (?) । ऊगतौ भांण—सूर्योदयके समान । राय आंगण—राजाके प्रांगणमें । रमै—क्रीड़ा करता है, खेलता है ।

६०. सिरपोस—शिरस्त्राण । सताबां—शीघ्र । संग्राम—युद्ध । सांमुहा—सम्मुख, सामने । औरवै—भौंकता है । भिड़े—टक्कर ले कर, भिड़ कर । भजावै—पराजित करता है ।

६१. खून—अपराध, गुनाह । मनावै—खुश करता है । अंबखास—आमखास । उरसि—आकाशमें । छिबतौ—स्पर्श करता हुआ । करग—हाथ । जमंधर—कटार विशेष ।

दिल्लेस खीज^१ रीभां^२ दियै^३, खोद^४ हियै परिहंस खमै ।
ऊगतौ भाण बाळक^५ 'अभौ', राय आंगण^६ इण विध^७ रमै ॥ ६१

एका^८ बाळ^९ अमीर^{१०}, वडौ करि आंठि^{११} वणावै ।
इण^{१२} पाए^{१३} असपती, रवद तिण^{१४} खडौ रहावै^{१५} ।
सभि आवै 'अभसाह', तेज दळ सभे विदण तदि ।
संकि अमीर^{१६} पतिसाह, जाय अंबखास^{१७} तजे जदि ।
सांगुहा मिळै उमराव सुजि^{१८}, निजर करै अनमी नमै ।
ऊगतौ भाण बाळक 'अभौ', राय आंगण^{१९} इण विध^{२०} रमै ॥ ६२

सिसु^{२१} उथापि इक^{२२} साह, साह सिसु^{२३} अवर सथप्यै ।
सिसु सुभड़ां हित सभे, पटै गढ़ देस समप्यै ।
सिसु इक^{२४} मंत्री सरूप, धार^{२५} दफतर भर धारै ।
सिसु दुज करे सरूप, एक^{२६} सिसु कथा उचारै ।
कवि होय एक सिसु गुण कहै, सांसण गज दै तिण समै ।
ससि वेस 'अभौ' 'अगजीत' सुत, राय आंगण^{२७} इण विध^{२८} रमै ॥ ६३

१ ख. ग. खीजि । २ क. रिजां । ३ ग. दीयै । ४ ख. षोद । ग. वोंदे । ५ ख. बाळक । ६ ख. ग. अंगण । ७ ख. ग. विधि । ८ ख. एक । ग. ऐक । ९ ख. ग. बाल । १० ख. ग. अमीर । ११ ख. ग. आंठ । १२ ख. ग. यण । १३ ग. पाये । १४ ख. तण । १५ ख. ग. रणावै । १६ ख. अमीर । १७ ख. अंबखास । १८ ख. ग. सुजि । १९ ख. ग. अंगण । २० ख. विधि । २१ ख. ग. ससि । २२ ख. ग. हिक । २३ ख. ग. ससि । २४ ग. ईक । २५ ख. ग. धारि । २६ ग. ऐक । २७ ख. ग. अंगण । २८ ख. ग. विधि ।

६१. दिल्लेस — बादशाह । खीज — कोप कर । रीभां — दान, पुरस्कार । खोद — खुद, स्वयं । परिहंस — परिहास हो कर, हँस कर ।

६२. आंठि — गर्व, शत्रुता । रवद — मुसलमान । अभसाह — अभयसिंह । विदण — युद्ध करनेको । तदि — तब । जदि — जब ।

६३. सिसु — बच्चा, लड़का । उथापि — हटा कर, औंधा कर । साह — बादशाह । अवर — अन्य । सथप्यै — नियुक्त करता है । पटै — जागीर । समप्यै — देता है । गुण — कीर्ति, यश । ससि वेस — बाल्यावस्था । अगजीत — महाराजा अजीतसिंह ।

झहा^१—जग^२ सास्तर^३ कहिया^४ जिता, सुभ सुभ चहन संसार ।
 रांमत^५ सभि 'अभमल' रमै, कमधज राजकुमार^६ ॥ ६४
 तप वधियौ^७ 'अभमल'तणौ, इळ ससि वेस अभंग ।
 तपधर मुगळांणातणौ^८, आथमियौ^९ अवरंग ॥ ६५
 कवित्त—जदि दळ सजि^{१०} 'अगजीत', उत्तन जोधाणै आयौ ।
 लसकर जाफर लूटि, जमीं निज अमल जमायौ ।
 जाफरखां जिण वार, असुर मुख^{११} त्रणा^{१२} अधारे ।
 'अजा'तणां ऊंमरां, ओट^{१३} सस जीव उवारे^{१४} ।
 साहरौ हजारी पांच सुजि, किलम भिख्यारी^{१५} जिम कढ़े ।
 'गजसाह' दुवौ जोधाण गढ़^{१६}, चमर हुंतां 'अभमल' चढ़े ॥ ६६
 मंगळीक नंदि^{१७} महा, वजै नौवति^{१८} जिण वेळा ।
 मंगळ करै चंद्रमुखी, चित्र अवछाड़ सचेळा ।

१ ख. ग. दोहा । २ ग. जगि । ३ ख. सास्त्र । ग. सास्त्र । ४ ख. ग. कहिया ।
 ५ ग. संगति । ६ ग. राजकुमार । ७ ख. ग. वधियौ । ८ ख. मुगलाणी । ग. मुगलाणां ।
 ९ ख. ग. आथमियो । १० ख. ग. सभि । ११ ग. मुखि । १२ ख. ग. त्रिणां ।
 १३ ख. ग. ओट । १४ ख. ग. उवारे । १५ ख. विषारी । ग. भिषारी । १६ ग.
 नढ़ि । १७ ख. नदि । ग. नद । १८ ग. नौवति ।

६४. चहन—चिन्ह । रांमत—क्रीड़ा, खेल । सभि—मध्य, पं । अभमल—महाराजकुमार अभयसिंह ।

६५. तप—ऐश्वर्य, रीति । इळ—पृथ्वी, संसार । ससि वेस=शिशु-वयस—बाल्यावस्था ।
 तपधर—तप=ऐश्वर्य-प्रकाश+धर—धारण करने वाला सूर्य । मुगळांणांतणौ—
 मुगलोका । आथमियो—अस्त हो गया, अवसान हो गया । अवरंग—औरंगजेब बादशाह ।

६६. अगजीत—महाराजा अजीतसिंह । उत्तन—वतन, जन्मभूमि । जोधाणै—जोधपुर ।
 लसकर—सेना, दल । जाफर—जाफरबेग नामक यवन जिसको, वि. सं. १७६१में
 बादशाहने जोधपुर पर भेजा था । अमल—अधिकार । जमायौ—स्थापित किया ।
 त्रणा—वासका तिनका । अधारे—मुखमें लिया । अजातणा—महाराजा अजीतसिंहके ।
 ओट—आड । सस—(सहस्र, हजारों ?) । किलम—यवन, मुसलमान । भिख्यारी—
 भिक्षुक । कढ़े—निकाल दिया । गजसाह—महाराजा गजसिंह । दुवौ—दूसरा, वंशज ।

६७. मंगळीक—मांगलिक । नंदि—नाद, वाद्य-ध्वनि । मंगळ—उत्सव, हर्ष, मांगलिक गायन ।
 अवछाड़—रक्षा, आच्छादनका वस्त्र । सचेळा—(?) ।

अंब डाळ कुंभ आंणि, विमळ वर तरणि वंदावै ।
 वांदि कळस तिण वार, भूप द्रव^१ रूप भरावै ।
 आवियौ^२ वांदि तोरण 'अजौ', प्ह सिंगार चौकी^३ परै ।
 तदि मिळै^४ लोक मुरधरतणा, कोड^५ दरव^६ निजरां करै ॥ ६७

महाराजा अजीतसिंहरे स्वागतरी वरणण

छंद नाराच

अनेक जोध मंत्र आय, बंदवै^१ बळा^२ बळा ।
 कहै^३ अनेक बांणि^४ क्रीत^५, पात^६ गीत प्रघळा^७ ।
 रचै विलद छौळ रीभ, क्रुंद सीस कापियौ^८ ।
 'अजौ' नरिंद^९ जेण^{१०} वार, इंद्र जेम ओपियौ^{११} ॥ ६८
 दुर्जिंद^{१२} वेद मंत्र दाखि^{१३}, आशिवाद^{१४} उच्चरै^{१५} ।
 सतोत्र पाठ ह्वै^{१६} सकति^{१७}, कोटि पारथी करै ।

१ ख. ग. द्रव्य । २ ख. ग. आवीयो । ३ ख. चोरी । ४ ख. ग. मिले । ५ ख. ग. कोडि । ६ ख. दरव । ७ ख. ग. वंदवै । ८ ख. ग. बळा बळा । ९ ख. कहै । १० ख. ग. बांणि । ११ ख. ग. क्रीति । १२ ख. प्रीति । १३ ख. ग. प्रघळा । १४ ख. ग. कोपीयो । १५ ख. ग. नरिंद । १६ ख. जिण । १७ ख. बोपीयो । ग. बोपीयो । १८ ख. ग. दुज्यंद । १९ ग. दाख । २० ग. आशीवाद । २१ ग. उच्चरै । २२ ग. हुवै । २३ ख. सकति । ग. सक्ति ।

६७. अंब - आम्र, आम । डाळ - टहनी, वृक्ष-शाखा । कुंभ - जल-कलश । तरणि - तरुणी, स्त्री, रमणी । वंदावै - नमस्कार कराती हैं । वांदि - वंदना कर, नमस्कार कर । अजौ - महाराजा अजीतसिंह । प्ह - राजा । सिंगार चौकी - जोधपुरके किलेमें बना एक स्थान विशेष ।

६८. जोध - योद्धा । मंत्र - मन्त्री । बंदवै - वंदन करते हैं । बळा बळा - चारों ओरसे । क्रीत - कीर्ति । पात - कवि, चारण । गीत - डिगलका छंद विशेष । प्रघळा - बहुत । विलद - महान, बुलंद । छौळ - हिलोर, लहर । रीभ - पुरस्कार, दान । क्रुंद - निर्धनता, कंगाली । कापियौ - काटा । नरिंद - नरेन्द्र, राजा । ओपियौ - सुशोभित हुआ ।

६९. दुर्जिंद - द्विजेन्द्र, ब्राह्मण । दाखि - कह कर पढ़ कर । आशिवाद - आशीर्वाद । सतोत्र - स्तोत्र । पारथी - प्रार्थना या पार्थिव-शिवलिङ्गका अर्चन ।

हुवै पुराण ज्याग होम, जोड़ भाण जोपियौ^१ ।
 'अजौ'^२ नरिंद^३ जेण वार^४, इंद्र जेम ओपियौ^५ ॥ ६६
 विनोदवानं^६ वागवानं फूलवानं^७ केवलं^८ ।
 छभा मधे धरंत छाब, आण^९ भूप अगळ^{१०} ।
 लहंत द्रव्य^{११} साख^{१२} लाख, रंभ खंभ रोपियौ^{१३} ।
 'अजौ' नरिंद^{१४} जेण वार, इंद्र जेम ओपियौ^{१५} ॥ ७०
 करंत कुंकमं तिलक्क^{१६}, पाणि राजप्रोहितं^{१७} ।
 अक्षत^{१८} मोतियां^{१९} चढ़ाय, सोभ भाळ सोहितं ।
 महीख^{२०} चक्र^{२१} चाड़ि मात, सोण^{२२} चंड सो पियौ^{२३} ।
 'अजौ' नरिंद^{२४} जेण वार^{२५}, इंद्र जेम ओपियौ^{२६} ॥ ७१
 कवित्त—इंद्र जेम ओपियौ^{२७}, 'अजौ' नरिंद^{२८} अवतारी* ।
 हित सु^{२९} बहौ^{३०} छक हरख, धरै उच्छव^{३१} छत्रधारी ।

१ ख. ग. जोपीयौ । २ ग. अजो । ३ ख. नरिंद । ४ ख. जिण वार । ५ ख. वोपीयौ ।
 क. औपीयौ । ६ ग. वेनोदवानं । ७ ख. ग. फूलपानं । ८ क. केवलं । ग. केफळं ।
 ९ ख. ग. आणि । १० ख. अगलं । ११ ख. ग. द्रव्य । १२ ग. सष । १३ ख. ग.
 रोपीयौ । १४ ख. ग. नरिंद । १५ ख. वोपीयौ । ग. ओपीयौ । १६ ख. ग. तिलक ।
 १७ ग. राजप्रोहितं । १८ ख. ग. अक्षत । १९ ख. ग. मोतियां । २० ख. ग. महिष ।
 २१ ख. ग. चक्र । २२ ग. ओणि । २३ ख. सोपीयौ । ग. सौपीयौ । २४ ख. ग.
 नरिंद । २५ ख. जिण वार । ग. जेण वार । २६ ख. वोपीयौ । ग. औपीयौ । २७ ख.
 ग. ओपीयौ । २८ ख. नरिंद । ग. नर इंद्र ।

*इससे पहलेकी निम्नलिखित पंक्तियां क. प्रतिमें नहीं मिली हैं—

पतिव्रता समूह प्रेम आवीयौ अघप्पती ।
 वजंत गायत्री वजाय तान गांन नृतती ।
 रती रते सजोड़ रूप लेषि ग्रछ लोपीयौ ।
 'अजौ' नरेंद्र जेणि वार इंद्र जेम ओपीयौ ।

२९ ख. सू । ग. सं । ३० ख. बौहौ । ग. बोह । ३१ ख. ग. उच्छव ।

६६. ज्याग—यज्ञ । जोड़—बराबर, समान । जोपियौ—तेजस्वी हुआ ।

७०. छभा—सभा । मधे—मध्य । छाब—फूल या फल आदि रखनेकी डलिया । आण—
 ला कर । अगळ—अगाड़ी । लहंत—लेते हैं । द्रव्य—द्रव्य, धन । रंभ—रंभा, केला ।
 खंभ—स्कंभ, खंभा ।

७१. पाणि—हाथ । सोभ—कान्ति, शोभा । भाळ—ललाट । महीख—मेंसा । चक्र चाड़ि
 मात—देवीको बलि दे कर । सोण—शोणित, रक्त । चंड—चंडी, दुर्गा । अजौ—
 महाराजा अजीतसिंह ।

७२. छक—शोभा । हरख—हर्ष, प्रसन्नता । उच्छव—उत्सव, हर्ष । छत्रधारी—राजा, नृप ।

सुजि खटव्रन सांसणां, अधिक सुख दियौ^१ असीसां ।
 सुख प्रज^२ सेवा सुम्रण, तांम सुर कोड़ि^३ तेतीसां^४ ।
 महिहंत खप्परांणौ^५ मिटै, हिंदवाणां^६ मुरधर हुवौ^७ ।
 जोधाण^८ 'अजौ' आयौ जदिन^९, दुजड़ पाण^{१०} 'गजबंध' दुवौ^{११} ॥ ७२
 समे^{१२} तेण सुरतांण, दिली फबि^{१३} 'साह बहादर'^{१४} ।
 दळ^{१५} सजि^{१६} आयौ दुगम, अभंग दखणी^{१७} धर ऊपर^{१८} ।
 मिळे निसंक 'अजमाल', जाय सांमुहौ जियारां ।
 खाबै^{१९} कीधा खून, तिकै^{२०} नह गिणै^{२१} तियारां ।
 अंबखास^{२२} मिळे^{२३} असपत्तिहूं, कुरव^{२४} घणौ^{२५} असपति कियौ^{२६} ।
 सिरपाव तुरंग मदफर समपि, लारां दक्खण^{२७} दिस लियौ^{२८} ॥ ७३
 सवाई राजा जयसिंहसू बादसारौ आंबेर छीनणौ अर महाराजा अजीतसिंहरी मदद करणौ
 जदिन साह 'जैसाह', अंबगढ़^{२९} हूंत^{३०} उथपे^{३१} ।
 'जैसा' कण्ठौ 'विजौ', अंब^{३२} गढ़ जेनू^{३३} अप्पे^{३४} ।

१ ख. ग. दीपै । २ ख. व्रज । ३ ख. काडि । ४ ख. ग. त्रितीसां । ५ ख. ग. पांफरांणी । ६ ख. हिंदुवांणी । ७ ख. हुवौ । ८ ग. जोधाणि । ९ ग. जुदिन । १० ख. ग. पाणि । ११ ख. दुवौ । १२ ख. ग. समे । १३ ख. ग. फबि । १४ ख. ग. बहादर । १५ ग. दलि । १६ ख. ग. सभि । १७ ख. ग. दखिणी । १८ ख. ग. उपपर । १९ ख. ग. खाबै । २० ख. ग. तिके । २१ ख. ग. गिणे । २२ ख. अंबखासि । २३ ख. प्रतिकी इस पंक्तिमें यह 'मिले' शब्द नहीं है । २४ ख. कुरव । २५ ख. णौ । २६ ख. ग. कीयो । २७ ख. दक्षिण । ग. दखिण । २८ ख. ग. लीयो । २९ ख. अंबगढ़ । ग. अंबगढ़ । ३० ग. हूंत । ३१ ख. अथापे । ग. उथापे । ३२ ख. अंब । ३३ ग. जेनू । ३४ ख. ग. अप्पे ।

७२. खटव्रन — राजस्थानकी ब्राह्मणादि छः जातियां । प्रज — प्रजा । महिहंत — पृथ्वीसे । खप्परांणी — यवनत्व, मुसलमानोंका धर्म । हिंदवांणी — हिन्दु धर्म । दुजड़ — तलवार । पाण — हाथ । गजबंध दुवौ — दूसरा महाराजा गजसिंह या महाराजा गजसिंहका वंशज । ७३. साह बहादर — बहादुरशाह बादशाह । अजमाल — महाराजा अजीतसिंह । सांमुहौ — सम्मुख, सामने । जियारां — जिस समय । खाबै — बांकुरा, वीर । खून — गुनाह, अपराध । तियारां — उस समय । अंबखास — आम खास । असपत्तिहूं — बादशाहसे । समपि — देकर । लारां — पीछे, साथ । दिस — तरफ । ७४. जैसाह — आमेर का राजा जयसिंह । अंबगढ़ हूंत — आमेरके गढ़से । उथपे — हटायें गये । जैसा — आमेरका राजा जयसिंह । कण्ठौ — कनिष्ठ, छोटा भाई । जेनू — जिसको । अप्पे — दिया । विजौ — आमेरके राजा सवाई जयसिंहका छोटा भाई विजयसिंह ।

जद^१ अजमलहूँ^२ 'जसै', आय मिळ एह^३ उचारी ।
 बोल^४ बांह^५ बगसियौ^६, धणी मुरधर छत्रधारी ।
 'जैसाह'हूंत कहियौ^७ 'अजै', असपति कहि इळ तो अपूँ ।
 उथप्यै^८ तुभ असपति इळा, असपतिनूँ हूँ^९ ऊथपूँ ॥ ७५
 हियै तांम हरखियौ^{१०}, सुणे कथ 'अजण'^{११} सवाई ।
 कहै कुरम^{१२} कमधज हूँ^{१३}, बिहूँ^{१४} कर जोड़ वडाई ।
 आप सिरै हिंदवां^{१५}, आप हिंदवां^{१६} उजागर ।
 राज आप राखियौ^{१७}, कमधपति अहे मुभकर^{१८} ।
 परठिवी^{१९} जागि पतसाह^{२०} नूँ^{२१}, कवण आंट दूजौ करै ।
 मो राज इसी बेळा^{२२} मही^{२३}, आपहीज करि ऊबरै^{२४} ॥ ७५
 एकठ^{२५} करि नूप^{२६} उभै, हिले^{२७} सांमल^{२८} पतिसाहां ।
 पातिसाह^{२९} मुनसंम^{३०}, दिये^{३१} नह कहै^{३२} दुराहां ।
 जोधाणै^{३३} 'अजण'नूँ, थाट बगसण कथ थापै ।
 'जैसाह'नूँ जयार^{३४}, उतन^{३५} आबिर^{३६} न आपै ।

१ ख. ग. जदि । २ क. अममल । ३ ख. ऐह । ४ ख. ग. बोल । ५ ख. ग. बांह ।
 ६ ख. ग. बगसीयौ । ग. बगसीयौ । ७ ख. ग. कहीयौ । ८ ख. ग. ऊथपै । ९ ग. हूँ ।
 १० ख. ग. हरषीयौ । ११ ख. अण । १२ ख. ग. कुरम । १३ ख. ग. हूँ । १४ ख.
 बिहूँ । ग. बिहूँ । १५ ख. हिंदुवां । ग. हींदुवा । १६ ग. हींदुवां । १७ ख. ग. राखीयौ ।
 १८ ख. मुभकर । १९ ख. ग. परछठी । २० ख. ग. पतिसाह । २१ ख. ग. नूँ ।
 २२ ग. बेळा । २३ ख. ग. मही । २४ ख. ग. ऊबरै । २५ ग. एकठ । २६ ख. ग.
 नूप । २७ ख. ग. हिले । २८ ख. ग. सांमिल । २९ ख. पातसाह । ३० ख. मुनिसप्य ।
 ग. मुनसुप्य । ३१ ख. दीए । ग. दीये । ३२ ख. ग. कहे । ३३ ख. ग. जोधाणौ ।
 ३४ ख. ग. जियार । ३५ ख. ऊतन । ३६ ख. ग. आबिर ।

७४. अजमलहूँ - महाराजा अजीतसिंहसे । जसै - सवाई राजा जयसिंहका । जैसाहहूंत - सवाई
 राजा जयसिंहसे । अजै - महाराजा अजीतसिंह । तो - तुभको । अपूँ - दे दूँ । उथप्यै -
 हटा दे । हूँ - मैं ।

७५. हियै - हृदय, मन । हरखियौ - हर्षित हुआ । अजण - महाराजा अजीतसिंहका । सवाई -
 सवाई राजा जयसिंह, विशेष । कुरम - कछवाह राजा जयसिंह । बिहूँ - दोनों ।
 सिरै - श्रेष्ठ । उजागर - उज्ज्वल । आंट - शत्रुता । मो - मेरा ।

७६. हिले - चले । सांमल - साथ । अजणनूँ - महाराजा अजीतसिंहको । थाट - वैभव ।
 बगसण - बख्शीश करनेको । जैसाहनूँ - सवाई राजा जयसिंहको । जयार - जब ।

एकलौ न लै^१ 'अजमल' उतन, पलटै वचन न आपरा ।

नरबदा^२ हुंत^३ मुरड़े नरिद, करे नगारा कूचरा^४ ॥ ७६

कमधांपति कूरमां, उभै मुरड़िया^५ अधपति^६ ।

मुणे बहादरसाह^७, उवर^८ प्रजळे असपत्ती ।

देससुबां^९ लिख^{१०} दियो^{११}, कथन स्त्रीमुखां^{१२} कहै^{१३} इम ।

सराजांम जंग सभे, किला राखी दहुं^{१४} कायम ।

इम लिखे साह दिस^{१५} ऊंबरां^{१६}, मुणि भूपति सरसाविया^{१७} ।

'अमरेस' मिळण^{१८} कागद^{१९} दिया^{२०}, उदियापुर^{२१} दिस^{२२} आविया^{२३} ॥ ७७

महाराणा अमरसिंह द्वितीयसूं दोनों राजाआंरो मिळण सारु उदेपुर जाणो

'अमर रांण' करि उछब^{२४}, पोह^{२५} सांमुहौ पधारे^{२६} ।

असिहूं पहिलां उतरि, जाय 'अगजीत' जुहारे^{२७} ।

महाराण^{२८} महाराज^{२९}, सभे हित मिळे सकाजा ।

महाराण बळ^{३०} मिळे, रचे हित मिरजा राजा ।

१ ग. ले । २ ख. नरबदा । ३ ख. हुंत । ४ ख. कूचरा । ५ ख. ग. मुरड़े । ६ ख. ग. अधपती । ७ ख. बहादरसाह । ग. बाहादरसाह । ८ ख. ग. उवरि । ९ ख. दिस-सूबां । ग. दिससूबा । १० ख. ग. लिखि । ११ ख. ग. दीयो । १२ ख. श्रीमुख । ग. श्रीमुषि । १३ ख. कही । ग. कहा । १४ ख. दुहुं । ग. दुह । १५ ख. ग. दिसि । १६ ख. ऊंबरां । १७ ख. सरसरसावीया । ग. सरसावीया । १८ ख. ग. मिळण । १९ ख. ग. कागल । २० ख. ग. दीया । २१ ख. ग. उदीयापुर । २२ ख. ग. दिसि । २३ ख. ग. आवीया । २४ ख. उछवि । ग. उत्छव । २५ ख. ग. पहां । २६ ग. पधारे । २७ ग. जुहारे । २८ ख. ग. महाराण । २९ ख. महाराज । ३० ख. ग. बलि ।

७६ अजमल — महागजा अजीतसिंह । मुरड़े — कुपित होकर, मुड़े, लौटे ।

७७. कमधांपति — महाराजा अजीतसिंह । कूरमां — मिर्जा राजा जयसिंह । उभै — दोनों । मुरड़िया — कुपित हुए, लौटे । अधपति — राजा । उवर — हृदय । प्रजळे — प्रज्वलित हुआ । असपत्ती — बादशाह । अमरेस — महाराणा अमरसिंह द्वितीय ।

७८. अमर रांण — महाराणा अमरसिंह द्वितीय । पोह — राजा । सांमुहौ — सम्मुख । असिहूं — घोड़ासे । अगजीत — महाराजा अजीतसिंह । जुहारे — अभिवादन किया । मिरजा राजा — मिर्जा राजा जयसिंह ।

चवि वडम^१ बोल^२ गयंदो चढे^३, चमर डमर कह^४ चालिया^५ ।
 सिव विसन ब्रह्म^६ सुर जांणि स्रब^७, हेक साथ^८ मिळ^९ हालिया^{१०} ॥ ७८
 हुतां^{११} राग हौकबा, ब्रह्म^{१२} आए^{१३} छत्रपती^{१४} ।
 ताम^{१५} गजां ऊतरे^{१६}, पोहमि^{१७} हित चढे प्रभत्ती ।
 मुंहगा घण मोलरा, पडे^{१८} पगमंडा अपारां ।
 मह पसमी मुखमलां, तास अतलस जरतारां ।
 तांणाव हीर खंभ नग जड़त, त्रूण जरकस चंद्र तांणिया^{१९} ।
 त्रण तखत छत्र सभि छत्रपती, एम^{२०} अंबासां^{२१} आंणिया^{२२} ॥ ७९
 महमांणी सभि 'अमर', जुगति करि सुपह जिमाए^{२३} ।
 पांन कपूर^{२४} अरोगि, अनै^{२५} मिळ दरगह आए^{२६} ।
 दुभल सिरै^{२७} दीवांण^{२८}, वणे त्रिहुं^{२९} भूप विराजे ।
 छाभा सहित छत्रपती, छत्र चांमर सिर छाजे^{३०} ।

१ ख. ग. वडिम । २ ख. बोल । ३ ग. चढे । ४ ख. ग. करि । ५ ख. ग. चालीया ।
 ६ ग. ब्रह्म । ७ ख. श्रव । ८ ख. साथि । ९ ख. ग. मिलि । १० ख. ग. हालीया ।
 ११ ख. ऊतां । १२ ख. त्रिहूं । ग. त्रिहू । १३ ग. आगे । १४ ख. ग. छत्रपती ।
 १५ ख. ग. ताम । १६ ख. उतरे । ग. ऊतरै । १७ क. पोहम । ग. पहीमि । १८ ख.
 ग. पडे । १९ ख. ग. तांणीयां । २० ग. ऐम । २१ ख. ग. अवासां । २२ ख. ग.
 आंणीयां । २३ ग. जिमाए । २४ ख. कपूरि । २५ ख. अनं । २६ ग. आए ।
 २७ ख. ग. सरै । २८ ग. दीवाणि । २९ ख. ग. त्रिहूं । ३० ख. छाजे ।

७८. चवि — कह कर । वडम — बड़ा । चमर — चंवर । डमर — (डंबर, समूह) । विसन —
 विष्णु । हालिया — चले ।

७९. हौकबा — जलसा, उत्सव, आनन्द । ब्रह्म — तीनों । पोहमि — पृथ्वी । पगमंडा —
 वह कपड़ा या बिछौना जो आदरके लिये किसीके मार्गमें बिछाया जाता है और
 जिस पर पैर रख कर सम्मानित व्यक्ति चलता है । अपारां — श्रुत । मह पसमी =
 महा पश्म + ई — बढ़िया उनके वस्त्र । मुखमलां — मुखमल । तास — एक प्रकारका
 जरदोजी कपड़ा, ताश, जरबत्क । अतलस — एक प्रकारका बहुमूल्य रेशमी वस्त्र,
 अत्लस । जरतारां — सोनेके तारोंसे बना या गूँथा हुआ । जरकस — सोने व चांदीके
 तारोंसे बना कपड़ा । चंद्र — चंदीवा । अंबासां — आवास, भवन ।

८०. महमांणी — आतिथ्य । सभि — तैयार कर । अमर — महाराणा अमरसिंह । जुगति —
 युक्ति । सुपह — राजा । दरगह — दरबार । दुभल — वीर । सिरै दीवांण — खास
 दरबार ।

पुर अंब^१ उदैपुर जोधपुर, इम तप निजरां आवियौ^२ ।
 'जैसाह' ब्रह्म 'अमरौ' त्रजट^३, दइव^४ 'अजौ' दरसावियौ^५ ॥ ८०

महाराजारी जोधपुर पर अमल करणी

जंगम असि जवहार^६, 'अमर' बहु^७ निजर अधारे^८ ।
 सभि दळ दहुवै^९ सुपह, प्रगट मुरधरा पधारे ।
 मुगळ जोधपुर मांह^{१०}, हुंतौ सोबै^{११} छ हजारी ।
 जेण ग्रहण 'अगजीत', विकट फौजां विस्तारी^{१२} ।
 महाराब^{१३} खान दहले मुगळ, गयौ भाजि तजि छक गजै ।
 पतिसाह हुकम विण^{१४} जोधपुर, इम खग बळि^{१५} लीधौ^{१६} 'अजै' ॥ ८१

महाराजा अजीतसिहरी सवाई राजा जयसिहरी मदद करणी

जमे^{१७} अमल जोधाण, करे दळ सबळ^{१८} कराळा ।
 'अजौ'^{१९} करण आवियौ^{२०}, चंड नयरां धखचाळा ।
 हुतौ^{२१} सयद हुसेन^{२२}, अंब^{२३} गढ़ मभि अजरायल ।
 लोक विदा करि लगस, तिकौ^{२४} काढ़े खळ तायल ।

१ ख. अंब । २ ख. ग. आवीयो । ३ ख. त्रजट । ग. त्रचष । ४ ख. देव । ग. देव ।
 ५ ख. ग. दरसावीयो । ६ ग. जव भंवहार । ७ ख. बहौ । ग. बहौ । ८ ख. अधारे ।
 ९ ख. दुहुवै । १० ख. ग. माह । ११ ख. ग. सूबै । १२ ग. विस्तारी । १३ ख.
 ग. महाराव । १४ ख. ग. विणि । १५ ख. ग. वल । १६ ख. लीधो । १७ क. जमे ।
 १८ ख. सबल । १९ ग. अजौ । २० ख. ग. आवीयो । २१ ख. हुंतौ । २२ ख. ग.
 हुस्तेन । २३ ख. अंब । २४ ख. तिको ।

८०. पुर अंब - अमेर नगर । तप - तेज । जैसाह - सवाई राजा जयसिह । ब्रह्म - ब्रह्मा ।
 अमरौ - महाराणा अमरसिह । त्रजट - महादेव । दइव - विष्णु । अजौ - महाराजा
 अजीतसिह । दरसावियौ - दिखाई दिया ।

८१. जंगम - घोड़ा । असि - तलवार । जवहार - जवाहरात । अमर - महाराणा अमर-
 सिह । दहुवै - दोनों । सुपह - राजा । हुंतौ - था । सोबै - सूबा । अगजीत -
 महाराजा अजीतसिह । दहले - भयभीत हो कर । छक - गर्व, रोब । लीधौ - लिया ।
 अजै - महाराजा अजीतसिह ।

८२. अमल - अधिकार, शासन । कराळा - भयंकर । चंड नयरां - दिल्ली । धखचाळा -
 युद्ध । अंब गढ़ - अमेरिका किला । अजरायल - वीर, जबरदस्त । लगस - सेना,
 दल । तायल - आततायी, दुष्ट, क्रोधी ।

इम करे अमल राजा 'अजै', धर मुरधर ढूँडाड़^१ धर ।
असपत्ति^२ तणा लीधा उभै, सांभर^३ डीडवाणा^४ सहर ॥ ८२

सुजि डीडवाणा संभरि, सहित बहु^५ मुलक सकाजा ।
ऊ बांटे^६ 'अजमाल', रैण भुगते^७ महाराजा^८ ।
आवै दरब^९ अपार, पेस आवै बहु^{१०} पाए^{११} ।
वाका एक^{१२} अनेक, जवनपति आगळ^{१३} जाए^{१४} ।
सुणि धिकै साह वाका सहर, जवन रीस^{१५} पावक जिसी ।
फुरमाण लिखे भेजे फजर, दिलीनाथ सयदां दिसी ॥ ८३

इम दसकत आविया^{१६}, देखि वाचिया^{१७} सयदां ।
करे^{१८} हुकम विण^{१९} कही, मुलक नह दिये^{२०} मरदां ।
सो तुम^{२१} लोपिम रीत^{२२}, मुलक दे अमल मिटाया ।
सिंघ - अजीत 'जैसिंघ'^{२३}, अमल गज सिका उठाया ।
अब^{२४} तुम सताव^{२५} जावौ उहां, मभम कसम^{२६} महमंदरां ।
का^{२७} करौ जंग संभरि किलै, का^{२८} चूड़ी पहरो^{२९} करां ॥ ८४

१ ख. दुड़ाडु । २ ख. ग. असपत्ती । ३ ख. ग. सांभरि । ४ ख. ग. डीडवाणां ।
५ ख. वही । ग. बही । ६ ख. ऊ बांटे । ग. ऊंवाटे । ७ ख. भुगते । ८ ग. महाराजा ।
९ ख. दरब । १० ख. ग. वही । ११ ग. पाए । १२ ख. एह । ग. ऐह । १३ ग.
आगलि । १४ ग. जाए । १५ ख. ग. रीभ । १६ ख. ग. आवीया । १७ ख. वांचीया ।
ग. वाचीया । १८ ग. करे । १९ ख. ग. विणि । २० ख. बीयां । ग. बीया । २१ ख.
तुम । २२ ख. ग. रीति । २३ ग. जैसींघ । २४ ख. अब । २५ ख. सताव ।
२६ ग. कस । २७ ख. ग. काय । २८ ख. ग. काय । २९ ख. ग. धारौ ।

८२. अजै - महाराजा अजीतसिंह ।

८३. संभरि - सांभर नगर । अजमाल - महाराजा अजीतसिंह । रैण - भूमि, राज्य ।
भुगते - उपभोग करते हैं । पेस - नजर, भेंट । वाका - घटना । जवनपति - बादशाह ।
आगळ - अगाड़ी । धिके - कोप करता है, प्रज्वलित होता है । जवन - यवन, मुसल-
मान । पावक - अग्नि, आग । दिसी - तरफ, ओर ।

८४. दसकत - हस्ताक्षर, दस्तगु । सयदां - यवनों । सिंघ-अजीत - अजीतसिंह । का - या,
अथवा । जंग - युद्ध । करौ - हाथोंमें ।

महाराजा अजीतसिंहरो सांभरपुररं वास्तै तैयारी करणी, जोधारांरो वरणण
 सुणे सयद ऊससे, अडर^१ वाहर^२ पुर वाळा ।
 अगनिकुंड^३ ऊछले^४, जाणि सींची घत^५ ज्वाळा ।
 जीण पखर असि जड़े, जड़े असुरां जरदाळा ।
 कसि जमदढ़ खग^६ कसे, कसे भूताण^७ कराळा ।
 वडफरां अलीबंध करि विखम, आतस धोम^८ उफाणियां^९ ।
 आणिया^{१०} जोध छिवता^{११} उरस, तांणि चिला मुळतांणियां^{१२} ॥ ८५
 सभि हौदां^{१३} जंग सजे^{१४}, महारावतां मदगळ^{१५} ।
 हुकम हुंतां^{१६} हाजरां, मसत आणिया^{१७} महाबळ ।
 बैसारे^{१८} चख^{१९} बोळ^{२०}, छके आया वेछाडां^{२१} ।
 चढ़े सयद किर चढ़े, प्रचंड कंठीर पहाडां ।
 अनि चढ़े तुरां विकटां^{२२} अगै^{२३}, रबिल^{२४} आलमीनां रटे^{२५} ।
 खळ खटे^{२६} रमण भपटे^{२७} खगां, असुरायण दळ ऊपटे^{२८} ॥ ८६
 सभि दळ आया सयद, कहै^{२९} इण विध^{३०} हलकारां ।
 कया^{३१} नकीबां हुकम, 'जसै' 'अजमल' जिणवारां^{३२} * ।

१ ख. अड । २ ग. वारह । ३ ग. अगनिकुंड । ४ ख. ग. उछले । ५ ख. ग. घृत ।
 ६ ग. खगे । ७ ख. ग. भूथाण । ८ ख. ग. क्रोध । ९ ख. उफाणीयां । ग. उफाणीयां ।
 १० ख. आणीया । ग. अणीया । ११ ख. विछीपा । ग. छिवीया । १२ ख. ग. मुलतां-
 णीयां । १३ ख. ग. हौदा । १४ ख. ग. सजे । १५ ख. मदगल । ग. महगळ ।
 १६ ख. हुंतां । ग. हुंतां । १७ ख. ग. आणीयां । १८ ख. ग. बैसरि । १९ ग. विष ।
 २० ख. बोल । २१ ख. वेछाडा । ग. वेछाडां । २२ ख. ग. विकटे । २३ ख. ग. अगै ।
 २४ ख. ग. रबिल । २५ ख. ग. रटे । २६ ख. ग. घटे । २७ ग. भपटे । २८ ग.
 ऊपटे । २९ ग. कहै । ३० ग. विधि । ३१ ग. करिया । ३२ ग. जिणवारां ।

*ये पंक्तियां ख. प्रतिमें नहीं हैं ।

८५. ऊससे — जोशमें आये । जाणि — मानों । सींची — आहुति दी हो । जीण — जीन, काठी ।
 पखर — घोड़ेका कवच । असि — घोड़ा । जड़े — सुसज्जित किये । असुर — यवने ।
 जरदाळा — कवचों । जमदढ़ — कटार विशेष । भूताण — तर्कश । वडफरां — ढालें ।
 अलीबंध — ढालको पीठ पर कसनेका बंधन । आतस — अग्नि । धोम — धुंआ । उरस —
 आसमान । चिला — प्रत्यंचा । मुळतांणियां — मुजतानके ।

८६. महारावतां — महा योद्धा । मदगळ — हाथी । मसत — मस्त । बैसारे — बैठाये । चख —
 नेत्र । बोळ — लाल । छके — मस्त हो कर, छक कर । वेछाडां — (?) । कंठीर-
 सिंह । तुरां — घोड़ों । अगै — अगाड़ी । रबिल — (रब, विधि ?) । आलमीं — संसारी,
 संसार व्यापी ईश्वर । खळ — शत्रु । खटे — नाश होते हैं । भपटे — प्रहार करते हैं ।
 असुरायण — बादशाह, यवनोका । ऊपटे — उभड़ता है ।

८७. अजमल — महाराजा अजीतसिंह ।

फिर^१ नकीब^२ चहुंतरफ, एम^३ बक^४ कहै अवाजां ।
 वेग^५ चढौ वेढकां, सभे जुध काज^६ सकाजां ।
 *साकति तुरां केजम सभे, सिलह ससत्र^७ केजम^८ सजां ।
 सिधुरां जंगी हौदा सभै^९, धर^{१०} नौबत^{११} नेजां धजां* ॥ ८७

सभे सिलह करि^{१२} ससत्र^{१३}, महाराजा राजा मिळि ।
 अड़े सीस असमान^{१४}, भौह मूछां अणियां^{१५} मिळि ।
 चोळ वदन^{१६} जखचोळ, करं ऊतोळ सेल करि^{१७} ।
 तुरां चढे भड़ तांम, हुवा दहुवै^{१८} दळ हाजर ।
 तीसरौहुवां^{१९} डाकौ^{२०} तबल^{२१}, होण^{२२} अलल जुध हालिया^{२३} ।
 आरंभे^{२४} समर चक्रवति उभै, चमर दुळतां चालिया^{२५} ॥ ८८

‘अजमल’ सकति अराधि^{२६}, ओण^{२७} रक्केब^{२८} उधारे^{२९} ।
 चढे सवाई चढे, इस्ट^{३०} सीरांम उचारे^{३१} ।

१ ख. फिरि । २ ख. नकीव । ३ ग. ऐम । ४ ख. ग. बक । ५ ग. बेगि । ६ ख. सभे । ग. साज । ७ ग. ससत्र । ८ ग. सुरां । ९ ग. सभे । १० ख. ग. धरि । ११ ख. नौबति । ग. नौबति ।

*ये पंक्तियां ख. प्रतिमें अपूर्ण हैं ।

१२ ख. ग. कसि । १३ ख. ग. ससत्र । १४ ग. असमानि । १५ ख. ग. अणियां । १६ ख. ववदन । १७ ख. ग. कर । १८ ख. दहुवै । १९ ख. ग. हुवा । २० ख. ग. डाकै । २१ ख. तबल । २२ ग. होण । २३ ख. ग. हालिया । २४ ग. आरंभे । २५ ख. ग. चालिया । २६ ग. आराधि । २७ ग. ओण । २८ ख. रक्केब । २९ ख. ग. अधारे । ३० ख. ग. इष्ट । ३१ ख. उवारे ।

८७. वेग — शीघ्र । वेढकां — योद्धाओं, वीरों । साकति — घोड़ोंकी जीन । केजम — (?) ।

सिधुरां — हाथियों । नेजां — नेजा, भाला । धजां — ध्वजाएँ ।

८८. सिलह — कवच । भौह — भोंहों । अणियां — नोंकों । मिळि — स्पर्श की, मिल गई । चोळ — लाल । ज[च]ष चोळ — लाल नेत्र । ऊतोळ — उठा कर । करि — हाथमें । डाकौ — नगाड़े पर डंका । तबल — बड़ा ढोल । अलल — त्वरायुक्त, चंचल । समर — युद्ध । चक्रवति — राजा ।

८९. सकति — शक्ति, देवी । अराधि — आराधना कर के । ओण — पैर । रक्केब — रकेब । उधारे — रखे । सवाई — सवाई राजा जयसिंह ।

छजे सीस^१ छांहगीर^२, करे अस^३ वाग करगं^४ ।
 रांवण ऊपर रांम, जाए घड़ियाळ स वगं^५ ।
 घण मोहर^६ अराबा^७ गज घटा, घटा^८ मोहरि रावत घणा ।
 वरियांम दहूं भळहळ वरण, तरण जाणि ग्रीखमतणा ॥ ८६

अठी एम^९ पह^{१०} उभै, दळां पारंभ दरसाया ।
 सयद उठी सिर जोर^{११}, अगन^{१२} भळ जिम दळ आया ।
 वजि^{१३} त्रंवाळ^{१४} दहूं वळां^{१५}, कळळ हूकळां कराळां ।
 धिक^{१६} नाळां भळ धुबै^{१७}, बीज^{१८} करडक वरसाळां^{१९} ।
 धोमार धोम रज डंबर^{२०} धर, मार^{२१} बाण^{२२} गोळां^{२३} मंडै^{२४} ।
 चकि^{२५} इल^{२६} लथराक तिमराक चढ़ि, चक्रवाक दळ ऊचकै^{२७} ॥ ८७

१ ग. सीसि । २ ख. छाहांगीर । ग. छाहांगीर । ३ ख. ग. असि । ४ ग. करगं ।

*यह पंक्ति ख. और ग. प्रतियोंमें निम्न प्रकार है—

रांमण ऊपर रांम, गयौ घड़ियाळ स वगं ।

५ ख. ग. मोहरि । ६ ख. आरावा । ग. आरावा । ७ ख. घणा । ८ ग. ऐम । ९ ख. ग. पहौ । १० ग. जोरि । ११ ख. ग. अगनि । १२ ग. वजि । १३ ख. त्रंवाल । १४ ग. वळां । १५ ख. ग. धिषि । १६ ख. धुबे । ग. धुबे । १७ ग. बीज । १८ ग. वरसाळां । १९ ख. डंबर । ग. डवर । २० ख. माण । २१ बाण । २२ ख. ग. गोळा । २३ ख. ग. मंडे । २४ ख. ग. चक । २५ ख. ग. यल । २६ ख. ग. ऊचंडे ।

८६. छांहगीर — (छत्र; आतपत्र) । घण — बहुत । मोहर — अगाड़ी । अराबा — तोप । घटा — सेना । मोहरि — अगाड़ी । रावत — योद्धा । वरियांम — श्रेष्ठ, वीर । दहूं — दोनों । भळहळ — देदीप्यमान । वरण — रंग, कांति । तरण = तरणि, सूर्य । ग्रीखमतणा — ग्रीष्मके ।

८७. प्रारंभ — प्रारंभ, शुरू । सिर जोर — जबरदस्त । अगन — अग्नि । भळ — लपट । त्रंवाळ — नगाड़ा । दहूं वळां — दोनों ओर । कळळ — कोलाहल । हूकळां — घोड़ोंकी हिनहिनाहट, सेनाका कोलाहल । कराळां — भयंकर । धिक — प्रज्वलित हो कर । नाळां — तोपों, बन्दूकों । धुबै — प्रज्वलित होती है । बीज — विजली । करडक — ध्वनि विशेष । वरसाळां — वर्षा ऋतुएँ । धोमार धोम — पूर्ण धुंम्रा, आच्छादित । रज — धूलि । डंबर — समूह । चकि — चक्र । लथराक — कंपायमान । तिमराक — अंधेरा । चक्रवाक — चक्रवा ।

उभै तरफ ऊपड़ी^१, वाग तिण वार विडंगां ।
 अम्हौसम्हा^२ सुर असुर, जुडै सर संभर^३ जंगां ।
 कसि कवाण^४ सुर कसे^५, पार बगतर^६ उर पंजर ।
 पमंगां हूं(त) भड़ पडै, जाण^७ ग्रह बाज^८ कबूतर^९ ।
 घण पड़े^{१०} धमक सेलां घटां, लह^{११} सकत्ति^{१२} पत्र लोहियां^{१३} ।
 लोहियां^{१४} ऊक वाजी^{१५} धरा, रूक असल सीरोहियां^{१६} ॥ ६१
 अठै^{१७} जठै असि ओरि^{१८}, लोह स्त्रीहथां लगाया ।
 सेलां मैगळ साभि, घाय खग मुगळ^{१९} घाया ।
 सयदां सिर हंस स्रोण, जटी हूरां लहै जोगण ।
 त्रपत^{२०} होय इम तवै, तपौ सब^{२१} सिरै 'जसा'तण ।
 खगि^{२२} रद्द^{२३} हसन हुस्सेन खां, गजां धुजां विहंडे^{२४} 'गजौ' ।
 हाकलै भड़ां 'गजबंध' हरौ, इसी भांति जूटै 'अजौ' ॥ ६२

१ ख. ग. उपड़ी । २ ख. ग. संभरि । ३ ख. कवाण । ४ ख. ग. करै । ५ ख. बगतर । ६ ख. ग. जाणि । ७ ख. बाज । ८ ख. कबूतर । ९ ख. ग. पड़े । १० ख. ग. लहै । ११ ख. ग. सकत्ति । १२ ख. ग. लोहीयां । १३ ख. ग. लोहीयां । १४ ग. बागी । १५ ख. ग. सीरोहीयां । १६ ग. अजौ । १७ ख. ओरि । १८ ख. ग. मूगल । १९ ख. ग. त्रपत । २० ख. अरव । २१ ख. ग. पाणि । २२ ख. ग. रंदा । २३ ग. विहंडे ।

६१. वाग- लगाम । विडंगां- घोड़ों । अम्हौसम्हा- आम्हने सामने । सुर- हिन्दू । असुर- मुसलमान । जुडै- भिड़ते हैं । सर- तालाब, भील । संभर- सांभर । जंगां- युद्धों । पंजर- शरीर । पमंगां- घोड़ों । धमक- प्रहार । सेलां- भालों । घटां- शरीरों । पत्र- खप्पर । लोहियां- खूनका । ऊक- तेज धारा । रूक- तलवार । सीरोहियां- सिरोंही देशकी बनी हुई ।

६२. अठै... ओरि- इधर-उधर, जहां-तहां घोंड़े भोंक कर । लोह- शस्त्र-प्रहार । स्त्रीहथां- खुदके हाथसे । मैगळ- हाथी । साभि- संहार कर के । घाया- संहार किये, मार डाले । सयदां- यवनों, मुसलमानों । हंस- प्राण । स्रोण- शोणित, रक्त । जटी- महादेव । जोगण- रणचंडी, रणयोगिनी । त्रपत- तृप्त, संतुष्टित । तवै- कहते हैं । तपौ- ऐश्वर्यवान हो, राज्य-वैभवयुक्त हो । जसातणा- महाराजा जसवंतसिंहका पुत्र । खगि- तलवारसे । रद्द- नाश, संहार । हसन हुस्सेन खां- सैयद हसनअलीखां और हुसेन खां नामक यवन सेनापति जो इतिहासमें सैयद-बंघुओके नामसे प्रसिद्ध है । गजौ- महाराजा गजसिंहजीका वंशज । हाकलै- उत्ते-जित करता है । गजबंध- महाराजा गजसिंह । हरौ- वंशज । जूटै- भिड़ता है । अजौ- महाराजा अजीतसिंह ।

छंद विराज

जुड़ै^१ भूप जंगं, रसै रोद्र रंगं ।
 सयदांण सूरं, किलम्मं^२ करूरं ॥ ६३
 कूरमं^३ कमधं^४, विनै^५ नेत बंधं^६ ।
 छछोहं^७ छड़ाळां, भटां खाग भाळां ॥ ६४
 वहै लोहं^८ वंका^९, घटां^{१०} ह्वै^{११} घणंका ।
 विनै^{१२} तीर बारा^{१३}, धडां^{१४} स्रोण धारा ॥ ६५
 करं^{१५} पाव केकं^{१६}, उडै धू अनेकं^{१७} ।
 करै ले कराळा, महारुद्र^{१८} माळा ॥ ६६
 विनां^{१९} धू विहंडं^{२०}, सचै^{२१} जंग संडं^{२२} ।
 कढी खाग कोपै, जिंसा राह जोपै ॥ ६७
 हुवै लोह हत्थं^{२३}, विन्है^{२४} लूथ बत्थं^{२५} ।
 जडै^{२६} जंमदाढं^{२७}, करं^{२८} पार काढं ॥ ६८

१ ख. ग. जोडे । २ ख. किलम्मा । ग. किलम्मां । ३ ख. ग. कूरम्मां । ४ ख. ग. कमंधां । ५ ख. विन्हे । ग. विन्है । ६ ख. बंधं । ग. बंधां । ७ ख. ग. छछोहां । ८ ख. होल । ९ ग. वंका । १० ख. ग. घटा । ११ ग. हुवै । १२ ख. विन्हे । ग. बीन्है । १३ ख. वारा । १४ ख. धडा । १५ ख. करः । १६ ख. ग. केकां । १७ ख. ग. अनेकां । १८ ग. साहारुद्र । १९ ख. विना । ग. विवां । २० ख. ग. विहंडां । २१ ख. ग. रचै । २२ ख. रुडां । ग. रुडां । २३ ख. ग. हत्थां । २४ ख. विन्हे । ग. विन्है । २५ ख. वत्थां । ग. वत्थां । २६ ग. तजै । २७ ख. जमः दाढं । ग. जसः दाढं । २८ ख. ग. करां ।

६३. जुड़ै—भिड़ते हैं । रसै रोद्र रंगं—रोद्र रसमें रंगे हुए हैं । सयदांण—सैयद, यवन, सैयद-बंधु । सूरं—शूरवीर । किलम्मं—यवन, मुसलमान । करूरं—भयंकर ।

६४. कूरमं—कछवाह वंश । कमधं—राठोड़ वंश । विनै—दोनों । नेत बंधं—ध्वजाधारी, योद्धा । छछोहं—तेज । छड़ाळां—भाला । भटां—प्रहारों । भाळां—आग, लपट ।

६५. लोह—अस्त्र-शस्त्र । घटां—शरीर । घणंका—ध्वनि विशेष । बारा—छेद, बाहर । धडां—शरीरों । स्रोण—खून, रक्त ।

६६. करं—हाथ । धू—मस्तक, शिर । कराळा—भयंकर । माळा—मुंडमाला ।

६७. विहंडं—नाश, ध्वंस । संडं—वीर, रुंड । जोपै—जोशमें आते हैं ।

६८. विन्है—दोनों । लूथ बत्थं—गुत्थमगुत्थ । जंमदाढं—कटार विशेष ।

लगां लोह लूटै, जमी सीस^१ जूटै ।
 पड़ै^२ खोण^३ पाणै, जगा^४ जेठ जाणै^५ ॥ ६६
 परी कंत पावै, अनै^६ हूर आवै ।
 मंडै^६ कंठमाळा, बरै^७ बिकराळा^८ ॥ १००
 त्रुटै घाव तुंडं, भिड़ै^९ रुंडमुंडं^९
 लड़ै फौज लाडा, उडै लोह आडा ॥ १०१
 भंभारा भभक्कै, चौरंगा उचक्कै^{१०} ।
 करै वीर हक्कं, छके जाणि छक्कं ॥ १०२
 धुवै खाग धारू, महासूर^{११} मारू ।
 खिलै^{१२} भाट खंडे, वयंडं^{१३} विहंडै ॥ १०३
 तई कुंभ^{१४} तूटा^{१५}, छिले खोण छूटा^{१६} ।
 मही रंग मट्टा, फबै^{१७} जाणि फुट्टा^{१८} ॥ १०४

१ ग. सीसि । २ ख. पडे । ३ ख. श्रोण । ग. श्रोण । ४ ख. ग. जग्ग । ५ ख. जाणे । ६ ख. मंडे । ७ ख. ग. वरै । ८ ख. ग. विकराळा । ९ ख. ग. रुंडभिंडं । १० ख. ग. उचक्कै । ११ ख. ग. माहासूर । १२ ख. ग. वेल्है । १३ ख. ग. वयडां । १४ क. कुंभ । १५ ख. ग. तुट्टां । १६ ख. ग. छुट्टा । १७ ख. फवे । ग. फबे । १८ ख. ग. फुट्टा ।

६६. खोण—खून, रक्त । पाणै—(?) ।

१००. परी—अप्सरा । कंत—पति । अनै—और । हूर—अप्सरा । बरै—वरण करती है । बिकराळा—भयंकर ।

१०१. तुंडं—मस्तक, मुख । भिड़ै—युद्ध करते हैं । रुंडमुंडं—बिना मस्तकका घड़, कबंध । लाडा—योद्धा, वीर । उडै आडा—प्रहार होते हैं ।

१०२. भंभारा—छेद, घाव । भभक्कै—उभड़ते हैं । चौरंगा—बिना हाथ-पैर और शिरका धड़ । उचक्कै—कूदते हैं । वीर हक्कं—वीर ध्वनि । छके—मस्त ।

१०३. धुवै—तेज क्रोधमें होते हैं, तेज युद्ध होता है । मारू—राठोड़ । भाट—प्रहार । वयंडं—हाथी । विहंडै—मारते हैं ।

१०४. कुंभ—हाथीके सिरके दोनों ओर ऊपर उभड़े हुए भाग । छिले—उमड़ गया, छल-छला कर । खोण—शोणित । मही—पृथ्वी । मट्टा—बड़ा मिट्टीका पात्र, मटका । फबै—शोभा देते हैं । फुट्टा—टूट गये ।

खगां धार खूटै^१, तई संड^२ तूटै ।
 परां नाग पाए^३, जाणै उड्डु^४ जाए^५ ॥ १०५
 पड़े पक्खराळा^६, तड़फै^७ उताळा ।
 जळां^८ तौछ^९ जेहा, ओपै^{१०} मच्छ एहा^{११} ॥ १०६
 किलक्कै हकारै, कालिक्का^{१२} डकारै ।
 हसै रिक्ख हासं, रचै वीर^{१३} रासं ॥ १०७
 तुरी वाग ताणं^{१४}, भाळै खेल भाणं ।
 चौरंगं^{१५} सचूपौ^{१६}, कमंधां^{१७} स कूपौ ॥ १०८
 सयदांण सारां, धुवै^{१८} खाग धारां ।
 कियौ^{१९} रूप केहौ, जड़ा रुद्र जेहौ ॥ १०९
 सुतं सच्छळेसं^{२०}, विढ़ै काळवेसं ।
 अरी थाट आवै, घणा लोह घावै ॥ ११०
 तई सीस^{२१} तूटै^{२२}, जई भींच^{२३} जूटै^{२४} ।
 सभै रोद^{२५} सूर^{२६}, पड़े^{२७} लोह पूरं^{२८} ॥ १११

१ ख. घुहै। ग. घुट्टै । २ ख. सुंड। ग. सुडि। ३ ग. पाए। ४ ख. उड। ग. ऊड।
 ५ ग. जाए। ६ ख. ग. पक्खराळा। ७ ख. ग. तड़फै। ८ ख. ग. जळां। ९ ख. ग.
 तोछ। १० ख. ग. ओपै। ११ ग. ऐहा। १२ ख. कालिका। १३ ग. बीर।
 १४ ख. ग. ताणं। १५ ख. ग. चौरंगा। १६ ख. ग. सचूपौ। १७ ख. ग. कमंधे।
 १८ ख. ग. धुवै। १९ ख. कीयां। ग. कीया। २० ख. ग. सव्वलेसं। २१ ग. सीसि।
 २२ ख. ग. तुट्टै। २३ ख. ग. भीम। २४ ख. ग. जुट्टै। २५ ख. ग. रोद। २६ ख.
 ग. सूर। २७ ख. ग. पड़े। २८ ख. ग. पूरां।

१०५. खूटै - प्रहार होता है। संड - हाथीकी सूंड। परां - पाखें। नाग - सर्प। जाणै - मानों।
 १०६. पक्खराळा - कवचधारी। तड़फै - तड़फड़ाते हैं। उताळा - तेज। जळां - पानी।
 तौछ - थोड़ा, कम। ओपै - शोभा देते हैं। मच्छ - मछली।
 १०७. किलक्कै - किलकारी मारती है। रिक्ख - नारद ऋषि।
 १०८. तुरी - घोड़ा। भाळै - देखता है। भाण - सूर्य। चौरंग - युद्ध। सचूपौ - चतुर,
 दक्ष। कूपौ - कूपावत साखाका राठीड़।
 १०९. सयदांण - यवन, सैयद। धुवै - संहार करता है। जड़ा - जटा। रुद्र - महादेव।
 जेहौ - जंसा।
 ११०. विढ़ै - युद्ध करता है। काळवेसं - काल, यमराज। घावै - संहार करता है।
 १११. तई - उसके। जई - जिससे। भींच - थोड़ा। जूटै - भिड़ते हैं। रोद - यवन।

अपच्छं^१ उमाही, वरंमाळ वाही ।
 भडै^२ घाव^३ भल्लै, हुवै^४ हंस हल्लै ॥ ११२
 हुवै^५ दिव्यदेहा, सुरत्री सनेहा ।
 विवाणं^६ विराजै, गयं^७ स्वर्गि^८ गाजै^९ ॥ ११३
 'अजै' जेण^{१०} वारां, हकाले हजारं ।
 लगी मांहि लग्गी, वधे खाग वग्गी ॥ ११४
 मारू फील मंता, दियै^{११} पाव दंता ।
 कडक्कै^{१२} कपाळां, चडै^{१३} वीर चाळां ॥ ११५
 हुवै^{१४} जंग हौदां, रचै^{१५} जंग रौदां ।
 गहै^{१६} क्रुंद^{१७} गाढं, जडै^{१८} जंमदाढं^{१९} ॥ ११६
 सयदां संधारै, धरा लोथ^{२०} धारै^{२१} ।
 विडै^{२२} सयद^{२३} बीता, जुडै भूप जीता ॥ ११७

१ ख. ग. अपच्छा । २ ख. ग. भडै । ३ ख. ग. घाट । ४ ख. हुवे । ५ ग. हुवो ।
 ६ ख. ग. विवाणां । ७ ख. गया । ग. गयो । ८ ख. ग. श्रमि । ९ ख. ग. गाजे ।
 १० ख. ग. जेणि । ११ ख. ग. दीये । १२ ख. ग. कडके । १३ ख. वडे । ग. चडे ।
 १४ ग. हुवे । १५ ख. ग. रचे । १६ ख. ग्रहे । ग. ग्रह । १७ ख. कांद । ग. कौद ।
 १८ ख. ग. जडे । १९ ख. ग. जम्मदाढं । २० ख. ग. लोथि । २१ ख. ग. धारे ।
 २२ ख. विडे । २३ ख. ग. सैद ।

११२. अपच्छं - अप्सरा । उमाही - उत्कंठित । भडै - वीरगति प्राप्त होते हैं । हंस -
 प्राण । हल्ले - चलते हैं ।
 ११३. सुरत्री - अप्सरा । विवाणं - वायुयान । विराजै - बैठते हैं । स्वर्गि - स्वर्ग ।
 ११४. अजै - महाराजा अजीतसिंह । हकाले - उत्साहित किये । मांहि - में । लग्गी -
 लग गई । वग्गी - प्रहार हुआ ।
 ११५. मारू - राठीड़ । फील - हाथी । मंता - मस्त, मस्तक । दंता - दांत । कडक्कै -
 ध्वनि विशेष होती है । वीर चाळां - युद्धों ।
 ११६. जंग - युद्ध । हौदां - अस्मारियों । रौदां - यवनों, मुसलमानों ।
 ११७. सयदां - यवनों, सैयदों । संधारै - संहार करता है । धरा - पृथ्वी । लोथ -
 लाश । विडै - युद्ध कर के । बीता - व्यतीत हो गये, वीर गति प्राप्त हुए ।

कवित्त—के कूरम कमंधरा, विहंड घायल जिण वारां ।
 विखम इकहथी वही, पड़े खळ थाट अपारां ।
 हर अपछर रिख हूर, चंड खेचर ग्रह^१ भूचर ।
 सिरवर कौतिग सुवर, रुधिर पळ नूत^२ मिळ डंबर ।
 'जैसाह' सहित^३ नौबति^४ बजवि^५, गुमर धार^६ दूजौ गजौ ।
 सांभरी^७ खेत जसवंततण^८, अभंग एम^९ जीतौ अजौ ॥ ११८

बादसाह बहादुरसाहरो महाराजा अजीतसिंहसू कुपित होणौ अर महाराजारौ
 दिल्लीरी सलतनतमें उथल-पुथल करणौ

सयदां(ण) इम साजिया^{१०}, उडे वाका अणथाहै^{११} ।
 सुणे बहादर^{१२} साह, मंगळ प्रजळे उर माहै^{१३} ।
 बडा^{१४} अमीर बुलाय, साह भेजे^{१५} तिण सम्मै ।
 'अजा' 'जसा' दिस असुर, मुहम^{१६} नंह को आंगम्मै^{१७} ।
 भेजे अमीर असपति भिड़ण, वरियांमां^{१८} दिस^{१९} दळ वडै^{२०} ।
 दै नहीं हाथ पांनां रवद^{२१}, असतीफा दे औछड़ै ॥ ११९

१ ख. गृह । ग. गृह । २ ख. ग. नूत । ३ ग. सहति । ४ ख. ग. नौबति । ५ ख.
 ग. बजवि । ६ ख. ग. धारि । ७ ख. ग. संभरी । ८ ख. ग. सुतण । ९ ग. ऐम ।
 १० ख. ग. सांभीया । ११ ख. ग. अणथाहै । १२ ख. बहादर । ग. बाहादर ।
 १३ ख. ग. माहै । १४ ख. ग. बडा । १५ ख. ग. भेजे । १६ ख. ग. मुहम । १७ ख.
 आंगम्मै । ग. आंगम्मै । १८ ख. ग. वरीयांमां । १९ ख. ग. दिसि । २० ख. वलै ।
 २१ ख. दवद ।

११८. कूरम—कछवाह । विहंड—संहार कर के । इकहथी—एक प्रकारका शस्त्र-विशेष,
 छोटी तलवार । थाट—सेना, दल, समूह । हर—महादेव । अपछर—अपसरा ।
 रिख—नारद ऋषि । हूर—परी । चंड—युद्धप्रिय योगिनी । खेचर—आकाशचारी ।
 भूचर—भूमि पर विचरण करने वाले । सिरवर—श्री वर । कौतिग—कौतूहल ।
 सुवर—श्रेष्ठ, अच्छा । पळ—मांस । डंबर—समूह । जैसाह—सवाई राजा जयसिंह ।
 गुमर—गर्व । दूजौ—दूसरा । गजौ—महाराजा गजसिंह । सांभरी—सांभर ।
 जसवंततण—जसवंतसिंहका पुत्र । अजौ—महाराजा अजीतसिंह ।

११९. सयदांण—यवन, मुसलमान, सेयद । साजिया—संहार किया । उडे—फैल गये ।
 वाका—घटनाएँ । अणथाहै—अपार । मंगळ—अग्नि, आग । प्रजळ—प्रज्वलित
 हो कर । माहै—में । सम्मै—समय । अजा—महाराजा अजीतसिंह । जसा—सवाई
 राजा जयसिंह । मुहम—मुहिम्म, युद्ध । आंगम्मै—साहस कर सकता है । भिड़ण—
 युद्ध करनेको । वरियांमां—श्रेष्ठ । पांनां—पानका बीड़ा । रवद—यवन, मुसल-
 मान । औछड़ै—पीछे हटते हैं ।

प्रजळै उर पतिसाह, दाह औरिस^१ अति दाभै^२ ।
 मनै न^३ (हि) हुकम अमीर, साह मनसूबा^४ साभै^५ ।
 दहुंवां दिस^६ लिख^७ दिया^८, साह फुरमाण सकाजा ।
 उत्तन दुरंग आपणा^९, रखौ^{१०} राजा महाराजा^{११} * ।
 इम लिखे साह हुय^{१२} दीन^{१३} अति, मिटै^{१४} दिली पौरिस^{१५} मजा ।
 इम सुणे राह उचरै उभै, वाह तेज राजा 'अजा' ॥ १२०

नीसांणी हंसगति

इम पतिसाह नमाय लीध इळ, एहा^{१६} भूप^{१७} 'अजीत' उजागर ।
 डंडे माल लिया^{१८} डीडवाणा^{१९}, भोगवि माळ लिया^{२०} सर संभर ।
 दावागरां साल पोह^{२१} दारुण^{२२}, दिल्लेसुरांतणौ^{२३} दावागर ।
 जम कैलास दिसा नह जावै, इम जोधाण न आवै आसुर^{२४} ॥ १२१
 'अजमल' तेज दिलेसां ऊपरि, वरखै^{२५} अखम भाण बिहंतर^{२६} ।
 आठ पहर दहलै^{२७} असपत्ती, कमधज तोलै दिन किरंमर ।

१ ख. बोरिस । ग. बोरिस । २ ख. दाभे । ३ ख. नह । ग. न । ४ ख. मनसूबा ।
 ५ ग. सक्ति । ६ ख. ग. दिसि । ७ ख. ग. लिषि । ८ ख. ग. दीया । ९ ग. आपणां ।
 १० ग. राषो । ११ ग. माहाराजा ।

* यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है ।

१२ ख. होय । ग. होय । १३ ख. दीण । १४ ख. ग. मिटे । १५ ख. ग. पौरिस ।
 १६ ग. ऐहा । १७ ख. भूत । १८ ख. ग. लीया । १९ ख. ग. डीडवाणां । २० ख.
 ग. लीया । २१ ख. ग. पोहौ । २२ ख. ग. दारुण । २३ ख. ग. दिलेस्वरांतणौ । २४ ग.
 असुर । २५ ख. ग. वरते । २६ ख. बिहतरि । ग. बिहत्तर । २७ ग. दहले ।

१२०. प्रजळै—जलता है । दाह—जलन । औरिस—उर, हृदय । मनसूबा—विचार ।
 साभै—रचता है । दहुंवां—दोनों । साह—बादशाह । फुरमाण—आज्ञा-पत्र । उत्तन—
 वतन, जन्मभूमि । दुरंग—दुर्ग, गढ़ । अजा—महाराजा अजीतसिंह ।

१२१. सर संभर—सांभर भील । दावागरां—शत्रु । साल—शल्य । पोह—राजा ।
 दिल्लेसुरांतणौ—बादशाहोंको । जम—यमराज । आसुर—यवन, मुसलमान ।

१२२. अजमल—महाराजा अजीतसिंह । दिलेसां—दिल्लीशों, बादशाहों । वरखै—बर-
 सता है । बिहंतर—भयंकर, अधिक । दहलै—भयभीत होता है । तोलै—प्रहार हेतु
 शस्त्र उठाता है । दिन—दिन । किरंमर—तलवार ।

‘अजमल’ फौज जदिन सभि आवै, धावै फौज तदिन साहां धर ।
 तखत^१ बैठि^२ छत्र चमर धरै तदि, चगथो^३ तखत तजै छत्र चमर^४ ॥ १२२
 मूंछां वळ^५ घालै^६ महाराजा^७, घूंघट घालै^८ ताम दिलीधर ।
 एहा^९ दूठ नरेस ‘अजीता’, कुळ दीता दळ पुर भयंकर ।
 जिण बहु^{१०} वार मुगळ दळ जीता, प्रजळे^{११} तेणि दिलेस्वर पंजर ।
 असपति सोच पड़े पीळा अंगि^{१२}, भिळ^{१३} बहु^{१४} सोच पड़े^{१५} मुख भंमर^{१६} ॥
 खिलबति^{१७} करै न^{१८} खिलबति खानै, तसबी^{१९} खानै अजुं न तंतर ।
 आलंमीन^{२०} रबील^{२१} न उचारै^{२२}, सभै न न्याव अदालित^{२३} सधर^{२४} ।
 धरै न जोम चमर^{२५} छत्रधारै, अंब^{२६} दिवांण^{२७} सभै न अवसर^{२८} ।
 अंबखास पतिसाह न आवै, अंग^{२९} पौसाक न पहरै अंतर^{३०} ॥ १२४
 नौख न जौख करै नव रोजै^{३१}, जौख^{३२} न भूखण धरै जवाहर^{३३} ।
 दसकत^{३४} करै न मिळै दिवांणां^{३५}, अरजी फरज^{३६} मतालब^{३७} ऊपर ।

१ ख. ग. तषति । २ ख. बैठि । ३ ख. ग. चगथो । ४ ख. ग. चम्मर । ५ ग. बळ । ६ ग. घातै । ७ ख. ग. माहाराजा । ८ ख. ग. घातै । ९ ग. ऐहा । १० ख. वोहो । ग. वहो । ११ ख. ग. प्रजलै । १२ ख. ग. अंग । १३ ख. ग. भिलि । १४ ख. वहो । ग. बहो । १५ ख. पडे । १६ ख. भम्मर । ग. भमर । १७ ख. ग. खिलबति । १८ ख. त । १९ ख. ग. तसबी । २० ख. ग. आलमीन । २१ ख. ग. रविल । २२ ख. ग. उच्चारै । २३ ख. ग. अदालति । २४ ख. सच्चर । ग. सव्वर । २५ ख. चम्मर । २६ ख. ग. आंव । २७ ग. दीवांण । २८ ख. अवसर । ग. अवसर । २९ ख. अंगि । ग. अंगि । ३० ख. अंतर । ग. अंतर । ३१ ग. रोजै । ३२ क. जोष । ३३ ख. ग. जवाहर । ३४ ख. दसकति । ३५ ग. दीवांणां । ३६ ख. ग. फरद । ३७ ख. मतालब ।

१२२. जदिन — जिस दिन । सभि — कटिबद्ध हो कर । तदिन — उस दिन । चगथो — चगताई वंशका, मुगल बादशाह ।

१२३. दूठ — जबरदस्त, शक्तिशाली । अजीता — महाराजा अजीतसिंह । कुळ दीता — कुल-आदित्य, सूर्यवंशी । दिलेस्वर — बादशाह । पंजर — शरीर । भंमर — व्याम, काला ।

१२४. खिलबति — हंसी-मजाक, मखोल । खिलबति खानै — सभा, समाज, विलासगृह । तसबी खानै = तस्वीहखान — जप-माला जपनेका स्थान । अजुं — वज्र, नमाजसे पहले हाथ-पैर धोना, पवित्र होना । तंतर — (?) । आलंमीन रबील — ‘रबीउल आलमीन’ ये कलमे के शब्द हैं । न्याव — न्याय । अदालित — न्यायालय, कचहरी । सधर — दूढ़, पक्का । जोम — जोश । अंब दिवांण — आम दीवान । अंबखास — आमखास । पतिसाह — बादशाह ।

१२५. नौख — नवीन । जौख — आनन्द, खुशी, हर्ष । नव रोजै — नौ रोजके त्योहार में, जशन में । फरज — फर्द (आज्ञा) । मतालब — मतालब, मतलबका बहुवचन जिसका अर्थ वांछित, मनोनीत अर्थात् वसूल करने योग्य रकम । अजी, फरज (फर्द) और मतालब ये तीन प्रकारके कागज पेश होते थे । उन पर हस्ताक्षर नहीं करता था ।

राग न रंग उमंग न राजस, हौज न वांग फुंहार न हुन्नर ।
 ह्वे असवार सिकार न हालत, पाठ कुरांन न पीर पैकंबर ॥ १२५
 अंग संनिपात^१ ज्यंहीं^२ हुय^३ आळस^४, आठूं^५ पहर^६ रहै घर अंदर ।
 विरहा अगनि जळै चंदवदनी^७, हुरमां कदे^८ न आवै हाजर ।
 इम 'अजमाल'तणै भय असपति, औरस^९ अगनि जळै^{१०} उर^{११} अंतर^{१२} ।
 सुख करि नींद कदे^{१३} नहि सूता, दुख मंभि बीता साह बहादर ॥ १२६
 सभि दळ पूर आए^{१४} साहिजादा^{१५}, धोखळ^{१६} धोम^{१७} वधे^{१८} दिल्ली धर ।
 जोगणि दिली तजे^{१९} वर जूनां, वानै चढ़ी नवा धारण वर ।
 देखि कटाच्छ^{२०} लड़े साहिजादा, जोवन^{२१} मसत काम वट निज्जर^{२२} ।
 बढि^{२३} खग धारअवरसब^{२४} बीता, जीता मौजदीन दळ^{२५} जाहर^{२६} ॥ १२७

१ ख. सभि । २ ख. ग. जही । ३ ख. ग. होई । ४ ग. आलम । ५ ख. आठ ।
 ६ ख. पौहोर । ग. पहोर । ७ ग. चंदवदनी । ८ ख. कदे । ९ ग. औरिस ।
 १० ख. ग. जले । ११ ग. उरि । १२ ख. अंतरि । १३ ख. कदे । १४ ख. अये ।
 ग. आए । १५ ग. साहिजादो । १६ ख. धोषल । ग. धौषल । १७ ग. धोम ।
 १८ ख. वधे । १९ ग. तजे । २० ख. ग. कटाछि । २१ ख. ग. जोवन । २२ ख.
 नज्जर । ग. नझ्जर । २३ ख. ग. बढि । २४ ख. ग. सह । २५ ख. धम्म । ग. धम ।
 २६ ख. ग. जगहर ।

१२५. पीर — धर्म-गुरु मुशिद, बूढ़ा । पैकंबर — पैगंबर, ईश्वरका दूत ।

१२६. संनिपात — उन्मत्तता, पागलपन । विरहा अगनि — विरहाग्नि । औरस — हृदय की ।
 साह बहादर — बहादुरशाह ।

१२७. पूर — पूर्ण, पूरा । साहिजादा — शाहजादा । धोखळ — युद्ध, उपद्रव । धोम — अग्नि ।
 जोगणि — योगिनी, रणप्रिय, चढीरूपी । वर — पति । जूनां — पुराना, प्राचीन । वानै =
 वानो — विवाहसे पूर्व की जाने वाली रस्म विशेष जिसमें वर-वधूको अपने-अपने
 कुटुम्बी-जन निमंत्रण दे कर उत्तम और पौष्टिक भोजन कराते हैं, मंगल गीत गाते हैं
 और प्रसन्नता प्रकट करते हैं । कटाच्छ — कटाक्ष । जोवन — यौवन । मसत — उन्मत्त,
 मस्त । काम — कामदेव, अनंग । मौजदीन — बहादुरशाहका पुत्र मोइजुद्दीन जो अपने
 भाइयोंको मार कर वि. सं. १७६९ की वैत्र सुदि १५ पूर्णिमा (तदनुसार ई.सं. १७१२
 की १० अप्रैल)को दिल्लीके तख्त पर बादशाह बन कर बैठा ।

जीता^१ मौजदीन दल जीता, कैद करे तकबीर^२ करदूर^{*} ।
 असपति फरकसेर^३ तिण अवसर^४, वीद जुवान^५ हुवा दिल्लीवर^६ ।
 अबदल हसनअली अजराइल^७, मारे^८ जुलफगार तै मौसर ।
 एक^९ उजीर हुवा असपत्ती, इक उमराव अमीरल अज्जर^{१०} ॥ १२८
 अवर अमीर भूपजां आगलि, करै सिलांम^{११} दहू^{१२} जोड़े कर ।
 सयदां^{१३} विदां किया^{१४} गज सिक्का^{१५}, धर अन^{१६} लीध नलीध मुरद्धर^{१७} ।
 अवर नरेस नमे असपत्ती, एक^{१८} 'अजीत' नमे नह अडुर ।
 'अजमलि'^{१९} नाटसाळ असपतियां, ऊगा तदिनहूंत जम^{२०} ऊधर^{२१} ॥ १२९
 जिण 'अवरंग'तणा दल जीता, आतम सकति वजाई^{२२} असमर^{२३} ।
 मारि बहादर^{२४} साह^{२५} मनाया, जोरै मुलक लिया^{२६} जोरावर ।

१ ख. ग. जुध करि । २ ख. तकबीर ।

*निम्न पंक्तियां ख. और ग. प्रतियोंमें हैं, किन्तु उपरोक्त क. प्रतिमें नहीं हैं—

हरवल सैद कीयां दण्ण हूँ, आया फरकसेर तै ऊपर ।

आगलि हसन अली अबदुल्ला, बिहूँ दाहण तेग बहादर ।

३ ख. ओसरि । ग. ओसर । ४ ख. जवा । ग. जवान । ५ ग. दिल्लीवर । ६ ख. ग.
 अजरायल । ७ ग. मारै । ८ ग. ऐक । ९ ग. अजर । १० ग. सलांम । ११ ख.
 विहूँ । ग. बिहूँ । १२ क. ख. सदां । १३ ख. ग. कीया । १४ ख. सिका । १५ ख.
 ग. अनि । १६ ख. मुरधर । १७ ग. ऐक । १८ ख. ग. अजमल । १९ ख. ग. धर ।
 २० ख. ग. उद्धर । २१ ख. ग. वजाय । २२ ख. ग. असम्मर । २३ ख. बहादर ।
 ग. बाहादर । २४ ग. साहि । २५ ख. ग. लीया ।

१२८. मौजदीन — मोइजुद्दीन जहांदार साह । तकबीर — ईश्वरकी प्रशंसा (यहाँ सहायतार्थ
 ठीक बैठता है) तकबुर, अभिमान, गर्व । करदूर — (?) । फरकसेर = फरक-
 सियर — इसने भी मोइजुद्दीनको कैद कर लिया था और स्वयं दिल्लीके सिंहासन पर बि.
 सं. १७६९ की माघ वदि १०को बादशाह बन कर बैठ गया था । अबदल — अब्दुल्लाखां ।
 अजराइल — जबरदस्त, शक्तिशाली । जुलफगार — जुलफकार नामक यवन । मौसर —
 अवसर, मौका । उजीर — धजीर । असपत्ती — बादशाह । अमीरल — अमीरोंका
 सरदार । अज्जर = अमीर उल् अजूर—बड़े स्तंबे वाला, अमीर ।

१२९. अवर — अवर, अन्य । अमीर — सरदार । आगलि — अगाड़ी, आगे । जोड़े कर — कर-
 बद्ध हो कर । सयदां — संयद भाई । अजीत — महाराजा अजीतसिंह । अडुर —
 निर्भय । अजमलि — महाराजा अजीतसिंह । नाटसाळ — शल्य रूप, वीर ।

१३०. अवरंग — बादशाह औरंगजेब । असमर — तलवार । जोरावर — शक्तिशाली ।

‘अजमलि’^१ तणी एम^२ वणि^३ आई, साहांहंत^४ करंतां सम्मर ।
 आप करै खातर सुज^५ आवै, खूंदालमां न आणै खातर ॥ १३०
 मोहकम^६ मारि लिया^७ दिल्ली मभि, गिणिया^८ नहीं दिलेस्वर गुम्मर ।
 इण विध^९ देखि गरुर ‘अजम्मल’^{१०}, असपति कोप कियौ^{११} पह^{१२} ऊपर^{१३} ।
 सभि हसनली लार बाईसी^{१४}, कीधा^{१५} विदा सतेज लसकर ।
 आया हसनअली अजरायल, जाजुळमांन भयंकर जज्जर^{१६} ॥ १३१

१ ख. ग. अजमल । २ ग. ऐम । ३ ख. वणी । ग. वणि । ४ ख. हंत । ग. हुंता ।
 ५ ख. ग. सुजि । ६ ख. ग. मोहौकम । ७ ख. ग. लीया । ८ ख. ग. विणीया ।
 ९ ख. ग. विधि । १० ख. ग. अजमल । ११ ख. ग. कीया । १२ ख. ग. पहौ ।
 १३ ख. ऊपरि । १४ ख. ग. बाईसी । १५ ख. कीध । १६ ग. जज्जर ।

१३०. सम्मर — युद्ध । खातर — इच्छा, मर्जी । सुज — वह । खूंदालमां — बादशाहों ।
 खातर — विचार, ध्यान ।

१३१. मोहकम — यह नागौरके राव इन्द्रसिंहका पुत्र था । बादशाह फर्रुखसियर राव इन्द्र-
 सिंहकी हल रखता था, अतः महाराजा अजीतसिंहजीने जब मोहकमसिंह नागौरसे बाद-
 शाह फर्रुखसियरसे मिलने दिल्ली गया था तब भाटी अमरसिंह केसोदासोत,
 राठौड़ अमरसिंह नाथावत, कर्णसिंह विजयसिंहोत (थोब) एवं राठौड़ दुर्जनसिंह सबल-
 सिंहोत, जोधा (पाटोदी)को बीस-पच्चीस सवारोंके साथ उसको मारने के लिए
 भेजा । वे व्यापारियोंके रूपमें दिल्ली पहुँचे और जब एक दिन कुंवर
 मोहकमसिंह संध्या समय किसी नबाबके यहांसे मातमपुर्सी कर के लौट रहा था तब
 इन लोगोंने उसे मार्गमें ही मार डाला । — देखो महामहोपाध्याय गौरीशंकर हीरा-
 चंद ओझा कृत जोधपुर राज्यका इतिहास, द्वितीय खंड, पृ. ५५५ । दिलेस्वर — दिल्ली-
 स्वर, बादशाह । गुम्मर — शक्ति, बल, गर्व । गरुर — गर्व, अभिमान । अजम्मल —
 महाराजा अजीतसिंह । पह — राजा । सभि — सुसज्जित कर, तैयार कर । हसनली —
 सैयद हुसेन अलीखां । वि.वि. — जब महाराजा अजीतसिंहके भेजे हुए योद्धाओंने राव इन्द्र-
 सिंहके कुंवर मोहकमसिंहको मार डाला तो फर्रुखसियर बहुत कुपित हुआ और उसने
 बड़ी सेना देकर मारवाड़ पर सैयद हुसेन अलीखांको भेजा था । यह घटना वि सं १७७०
 पौष सुदि प्रतिपदा की है । — देखो महामहोपाध्याय पं. गौरीशंकर हीराचंद ओझा
 कृत जोधपुर राज्यका इतिहास, द्वितीय खंड पृ० ५५६ । बाईसी — सेना, फौज
 जिसमें बाईस सरदार या अफसर होते थे । अजरायल — जबरदस्त । जाजुळमांन —
 जाज्वल्यमान । जज्जर — यमराज ।

‘अजमल’ विदा कियौ^१ जिण औसरि^२ धरि दळ पुर ‘अभौ’ पाटोधर ।
 ‘अभमल’ मिळे हसनली अणभंग, साइत मज्झि^३ फिरै^४ घैसाहर^५ ।
 सू-वस^६ राखि मुलक न सांमंद, दळ सांमंद मोडै^७ दावागर^८ ।
 ‘अभमल’ उभळ दळां सभि आयौ, नर^९ सिणगार^{१०} जोगणी नगर ॥ १३२
 मिलिया^{११} असपतिहंत ‘अभैमल’, असपति कुरब किया अ(प)रंपर ।
 ब्रवि सिरपाव तुरी गज ब्रविया^{१२}, खग जमदाढ़ जड़ित नग^{१३} खंजर^{१४} ।
 मनसप^{१५} पंचहजारी समपे, परठे कुरब^{१६} राह दो^{१७} ऊपर ।
 इण विध^{१८} विदा किया^{१९} असपत्ती, क्रांमति ‘अभपती’ सुजि संकर ॥ १३३
 भळहळ रती भुजां भर भल्ले, हल्ले उतन^{२०} नरेस ‘जसाहर’ ।
 आयौ जोधदुरंग ऊमहियां^{२१}, डहियां^{२२} फौज गजां धज डंबर^{२३} ।

१ ख. ग. कीयौ । २ क. औसरि । ग. उसरि । ३ ख. मज्झि । ग. मझि । ४ ख. ग. फिरे । ५ ख. ग. घांसाहर । ६ ख. ग. सूव । ७ ख. मोडे । ८ ख. दीवागर । ९ ख. ग. नरां । १० ख. ग. सिगार । ११ ख. ग. मिलीया । १२ ख. ग. ब्रविया । १३ ख. ग. जुग । १४ ख. खंजर । ग. खंभर । १५ ख. मुनसप । ग. मुनसुप । १६ ख. कुरब । १७ ख. ग. दोय । १८ ख. ग. विधि । १९ ख. ग. कीया । २० ग. उतनि । २१ ख. ग. ऊमहीयां । २२ ख. ग. डहीयां । २३ ख. डंबर । ग. डंबर ।

१३२. अजमल - महाराजा अजीतसिंह । औसरि - अवसर, मौका । दळ - सेना । पुर - पूर्ण । अभौ - अभयसिंह । पाटोधर - युवराज, पट्टाधिकारी । अभमल - अभयसिंह । अणभंग - वीर, योद्धा । साइत - क्षण भरका समय । मज्झि - मध्य, में । घैसाहर - सेना, दल । सू-वस - कुशल, निष्कंठक । सांमंद - समुद्र । दावागर - शत्रु । उभळ - उमड़ कर । नर सिणगार - नर-श्रेष्ठ, नर-पुंगव । जोगणी नगर - दिल्ली शहर ।

१३३. अभैमल - महाराजकुमार अभयसिंह । कुरब - मान, सम्मान । अ(प)रंपर - अपार, असीम । ब्रवि - देकर । तुरी - घोड़ा । ब्रविया - दिये, प्रदान किये । परठे - प्रतिष्ठा कर के । राह - संप्रदाय । ऊपर - विशेष । क्रांमति - क्रांति, दीप्ति, तेज । अभपति - महाराजकुमार अभयसिंह । सुजि - मानों, जैसे । संकर (?)

१३४. भळहळ - देदीप्यमान । रती - क्रांति, दीप्ति, तेज । भर - उत्तरदायित्व, जबाबदेह, जिम्मेदारी । भल्ले - धारण कर के । उतन - वतन, जन्मभूमि । जसाहर - महाराजा जसवंतसिंहका पौत्र, वंशज । जोधदुरंग - जोधपुरका दुर्ग । ऊमहियां - उत्कंठित, जोशपूर्ण । डहियां - लिए हुए । गजां - हाथियों । धज - घोड़ा । डंबर - समूह ।

जाय 'अभै' 'अगजीत' जुहारे, चक्रवत्ती^१ होतां सिर चंमर^२ ।
 मिले 'अजीत' सनेह 'अभैमल', 'गजपति' दुवै धरे बहु^३ गुम्मर ॥ १३४
 देखि 'अभैमल' तेज जिकै दिन^४, आलम एह^५ कथै^६ कथ उच्चर ।
 सूरजवंस 'अजीत'तणौ सुत, सूरजवंसतणौ सहसक्किर^७ ॥ १३५
 कवित्त- असपति मेळ 'अजीत', धरा नायक नह धारे^८ ।
 आदि सुरां आसुरां, वैर जिम दाव विचारे^९ ।
 वलि 'अवरंग'हूं वैर, उवर^{१०} मझि जिकौ^{११} अमावौ ।
 जेण तजै न 'अजीत', दिलीपतिहूँता दावौ^{१२} ।
 कमधजां राव^{१३} 'अवरंग' किलम, तूं थपि चहँतौ आपणौ^{१४} ।
 उण आँटहूँत चाहै 'अजी', अवरंग वंस उथापणौ^{१५} ॥ १३६
 समै^{१६} जेण पतिस्मह, दुगम बुधिकाळ दबायौ ।
 सैद ग्रहण पतिसाह, आप भय चूक उठायौ ।
 खेध^{१७} पड़ै चित खान^{१८}, खोद^{१९} उज्जीर हुवा खळ ।
 सांभलि अलीहुसेन^{२०}, दखिणहूँ^{२१} अयौ^{२२} मझे दळ ।

१ ख. चक्रवति । २ ख. ग. चम्मर । ३ ख. बहु । ग. बहौ । ४ ग. दिन । ५ ग. ऐह । ६ ख. कहै । ७ ख. ग. सहसक्कर । ८ ख. ग. धारै । ९ ख. ग. विचारै ।
 १० ख. उवरि । १ ग. जिको । *यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है ।
 १२ ख. ग. राव । १३ ग. आपणै । १४ ग. उथापणै । १५ ख. म. समै । १६ ख. क. खेल । १७ ख. ग. घाँति । १८ ग. घौँद । १९ ख. अलिहुसेन । २० ख. दक्षिण ।
 ग. दक्षिण । २१ ग. आयौ ।

१३४. अभै - महाराजकुमार अभयसिंह । अगजीत - महाराजा अजीतसिंह । जुहारे - अभि-
 वादन किया । चक्रवत्ती - राजा । चंमर - चँवर । अजीत - महाराजा अजीतसिंह ।
 अभैमल - महाराजकुमार अभयसिंह । गजपति - महाराजा गजसिंह । दुवै - दूसरे,
 वंशज । गुम्मर - गर्व, अभिमान ।

१३५. आलम - संसार । सहसक्किर - सूर्य ।

१३६. सुरां - हिन्दुओं । आसुरां - मुसलमानों । दाव - अवसर । अमावौ - न समाने वाला,
 अपार । दावौ - दावा, नालिश । अवरंग - बादशाह औरंगजेब । किलम - मुसल-
 मान । थपि - स्थापित कर । आँटहूँत - शत्रुतासे । अजी - महाराजा अजीतसिंह ।
 उथापणौ - उन्मूलन करना, नाश करना ।

१३७. सैद - संयद । चूक - षड़यंत्र । खोद - बादशाह । उज्जीर - वजीर, दीवान । खळ -
 शत्रु ।

पतिसाह ग्रहण जोधाणपति, पेखे मौसर पावियो^१ ।
 दइवाण^२ 'अजौ' दळ सभि दिली, आप मुरादौ आवियो^३ ॥ १३६
 आइ^४ दिली ईखिया^५, जोध चौतरा 'जसारां' ।
 सुजि 'अवरंग' सजी^६ (···), इता खटके उणवारां^७ ।
 जूना भड़ां जियार, कहै^८ इण भांत^९ हकीकत ।
 माति^{१०} आदि जादम्म^{११}, मात अनि अठै खगां अत^{१२} ।
 आइठाण^{१३} देखि कथ सुणि 'अजै', धिखे क्रोध इम चित धरी ।
 असपती मारि मांडूं अठै, एक^{१४} कवरि^{१५} असपत्तिरी ॥ १३७
 धख^{१६} इम चख^{१७} (···) धिखे, ताण^{१८} मूछां खग तोलै^{१९} ।
 भड़ांहंत^{२०} भूपाळ, बहसि^{२१} नाहर जिम बोलै^{२२} ।
 खत्री खांडाधार^{२३}, एह^{२४} वायक अवखाणै^{२५} ।
 जिकौ^{२६} विरद उजवाळि^{२७}, खूद पलटौ खुरसाणै^{२८} ।

१ ख. ग. पावियो । २ ख. ग. दइवाण । ३ ख. ग. आवियो । ४ ख. ग. आय ।
 ५ ख. ईषोया । ग. इषिया । ६ ख. साया । ग. साभीया । ७ ग. उणवारां । ८ ख.
 कहे । ९ ख. ग. भाति । १० ख. ग. मात । ११ ख. जाहम्मि । ग. जाह्मि ।
 १२ ख. ग. मृत । १३ ख. आयठाण । ग. आयवाण । १४ ग. ऐक । १५ ख. ग.
 कवर । १६ ख. षग । १७ ख. ग. धरि चष । १८ ख. ग. ताणि । १९ ग. तोले ।
 २० ग. हुंत । २१ ख. बहसि । ग. वहसि । २२ ग. बोले । २३ ख. ग. षंडाधार ।
 २४ ग. ऐह । २५ ख. अवखाणौ । २६ ख. ग. जिको । २७ ख. अजुवालि । ग.
 अजवाळि । २८ ख. घुरसाणौ ।

१३७. पेखे — देख कर । मौसर — अवसर, मौका । पावियो — प्राप्त किया । दइवाण — वीर,
 शक्तिशाली । आप मुरादौ — अपनी इच्छासे कार्य करने वाला । आवियो — आया ।
 १३८. ईखिया — देखे । जोध — महाराजा अजीतसिंह राव जोधाका वंशज, वीर । चौतरा —
 शवके दाह-स्थान पर या समाधि-स्थान पर बनायी गयी स्मृति-चिन्हकी चौकी ।
 जसारां — महाराजा जसवंतसिंहके । सुजी — संहार किये, मारे । खटके — कसके, दर्द
 रूप हुए । उणवारां — उस समय । जूना — प्राचीन, पुराना । जियार — जिस समय ।
 माति — माता । जादम्म — यादव । अत — मृत्यु प्राप्त हुई । आइठाण — चिन्ह,
 संकेत-स्थान । अजै — महाराजा अजीतसिंह । धिखे — प्रज्वलित हुआ । कवरि —
 कब्र ।
 १३९. भड़ांहंत — योद्धाओंसे । बहसि — जोशमें आ कर । खांडाधार — तल-वारकी धार ।
 वायक — वाक्य । अवखाणौ — कहावत, लोकोक्ति । खूद — बादशाह । खुरसाणै —
 मुसलमानों ।

महि वैर वंस गोहरि मंडप, 'अवरंग'^१ बहु^२ कीधा इसा ।
ताबूत^३ (रा) वैर भूलै तिके, कहै 'अजौ' राजा 'किसा' ॥ १३६

छंद हणूफाल^४

कथ एम^५ सुणि मचकूर^६, सब^७ कहै इण विध^८ सूर ।
महि वंस रवि महाराज^९, अन^{१०} भूप जोड़^{११} न आज ॥ १४०
अनि करै कुण इण भांति, खित वयर काढ़ण खांति ।
इक वयर धरा अबीह^{१२}, सुजि^{१३} वंस दूजौ 'सीह' ॥ १४१
अरु वैर^{१४} तीजौ गाय, प्रम मंडप^{१५} चौथौ पाय ।
ऐ च्यार वयर^{१६} अजेब, जग^{१७} कीध^{१८} 'अवरंगजेब' ॥ १४२
पह^{१९} कही वात प्रमाण, जुड़^{२०} वयर लेण सुजांण ।
कमधज्ज^{२१} तड़ तड़^{२२} केक, 'अवरंग'^{२३} हणे अनेक ॥ १४३
सुजि काढ़ि वैर सकाज, उत्थापि^{२४} असपति आज ।
इक साह^{२५} तखत उथापि, पतिसाह दूजौ थापि ॥ १४४

१ ग. अवरंगि । २ ख. वही । ग. बही । ३ ख. ताबुरा । ग. तावरा । ४ ख. ग. हनुफाल । ५ ग. ऐम । ६ ख. ग. मचकूर । ७ ख. अब । ८ ख. विधि । ग. विधि । ९ ग. माहाराज । १० ख. ग. अनि । ११ ख. ग. जोजन । १२ ग. सूजि । १३ ख. ग. वयर । १४ ख. मंड । १५ ख. वैर । ग. वैरि । १६ ग. जगि । १७ ख. ग. कीया । १८ ख. ग. पोहौ । १९ ख. ग. जुड़ि । २० ख. कमधज । ग. कमधज्ज । २१ ग. भड़ । २२ ग. अवरंगि । २३ ख. ग. ऊषापि । २४ ख. साहि ।

१३६. गोहरि मंडप — कन्न, समाधि-भवन । ताबूत — वह संदूक जिसमें शवको बन्द कर के गाड़ते हैं । तोट — यहाँ कन्नका ही अर्थ ठीक बैठता है ।

१४०. मचकूर — मजकूर, लिखित विवरण, विचार-विमर्श । वंस-रवि — सूर्यवंश । जोड़ — बराबर, समान ।

१४१. खित — भूमि । वयर — वैर, शत्रुता । खांति — विचार । अबीह — आद्वितीय, वीर । सीह — राव सीहाका वंश ।

१४२. प्रम मंडप — देवालय, देव मन्दिर, विष्णु भवन । अजेब — अजब, अद्भुत ।

१४३. पह — राजा । जुड़ — भिड़ कर, युद्ध कर । तड़ — शाखा, उपशाखा । केक — कई ।

१४४. उत्थापि — हटा कर । थापि — स्थापित कर ।

कीजिये^१ इण विध^२ कांम, निज पंग नृप^३ जिम नांम ।
 विध^४ एम^५ करतां वात, भिळ^६ सैद दहुंवे भ्रात ॥ १४५
 तन जीव असपति^७ त्रास, पह^८ अया^९ 'अजमल' पास ।
 खांहसन्न^{१०} अबदुलखान, इम कही वात अमान ॥ १४६
 'अजमाल' सुणिजै एह^{११}, कर जोड़^{१२} एम^{१३} कहेह* ।
 इस^{१४} साह की हुइ^{१५} और^{१६}, जंग किया^{१७} हम वरजोर ॥ १४७
 विढ़^{१८} पड़े जुध^{१९} उस वेर, सिर खमे^{२०} बह^{२१} समसेर ।
 अति लोह भेले^{२२} अंग, इम फतै कीध अभंग ॥ १४८
 मिळ^{२३} मौजदीनह मारि, करि एक^{२४} इस इकतारि^{२५} ।
 इस तरह दिल्ली आंणि, पतिसाह कीया प्रमांणि ॥ १४९
 इक साइयां^{२६} कै एह, दिल अवर न धरी देह ।
 सरियत्त^{२७} निमख सिपाह, सो गिणी नह पतिसाह ॥ १५०
 'जैसिध' ध्रोह जणाय, रचि दीध चित 'मभि राय ।
 सो मांनि फररक^{२८}—साह, चित^{२९} हमै मारण चाह ॥ १५१

१ ख. कीजिए । ग. कीजिए । २ ख. ग. विधि । ३ ख. ग. नृप । ४ ख. ग. विधि ।
 ५ ग. ऐम । ६ ख. ग. मिलि । ७ ख. असति । ८ ख. ग. पौहो । ९ ग. आय ।
 १० ख. ग. सन । ११ ग. ऐह । १२ ग. जोड़ि । १३ ग. ऐम ।

*यह पंक्ति ख. प्रतिमें अपूर्ण है ।

१४ ग. इम । १५ ख. ग. होय । १६ ख. ग. और । १७ ख. ग. कीया । १८ ख. ग.
 बड़ि । १९ ख. ग. जुधि । २० ख. खसो । २१ ख. बहो । ग. बहो । २२ क. भेले ।
 २३ ख. ग. मिलि । २४ ग. ऐक । २५ ख. कतार । २६ ख. साइयां । ग. साइयां ।
 २७ ख. ग. सरीयत । २८ ख. ग. फररकक । २९ ग. चित ।

१४५. पंग नृप — राजा जयचन्द जिसका विरुद्ध 'दलपांगला' था । सैद — हुसनअलीखाँ और
 अब्दुल्लाखाँ नामक दोनों सैन्यद भाई ।

१४६. अजमल — महाराजा अजीतसिंह ।

१४७. कहेह — कहता है ।

१४८. विढ़ — युद्ध कर । वेर — वेला, समय । खमे — सहन करते हैं । समसेर — तलवार ।
 लोह — शस्त्र-प्रहार । भेले — सहन करे ।

१४९. मौजदीन — मुइजुद्दीन जहाँदार शाह । इकतारि — सत्ता, प्रभुत्व, हुकूमत ।

१५०. सरियत्त — धर्म-शास्त्र । निमख — नमक । सिपाह — सेना, बल, फौज ।

१५१. ध्रोह — द्वेष, डाह । फररक-साह — फर्रुखसियर नामक बादशाह ।

दिन राति^१ हम मभि^२ दाव, इम करै साह उपाव ।
 चित दूध फट्टा चाय, जो फेर नहि^३ मिळ^४ जाय ॥ १५२
 कथ कहे^५ एम^६ कुराण, महमंदका फुरमाण^७ ।
 बिन^८ खून धोह^९ विचार^{१०}, मारै सुलीजे^{११} मार^{१२} ॥ १५३
 कहै आलमीन कताब^{१३}, इण^{१४} माहि नाहि अजाब ।
 दिल करै वीच^{१५} दरोग, जो पहिल मारण जोग ॥ १५४
 सो किया^{१६} यह^{१७} 'जैसाह', रख साख^{१८} दहुंवै राह ।
 कम^{१९} उतन जमियत^{२०} काज, इह दाव में^{२१} है आज ॥ १५५
 लख दोय दळ हम लार, है इसै दोय हजार ।
 जुड़ि पहल^{२२} इससे^{२३} जंग, अब^{२४} मार लेहि^{२५} अभंग ॥ १५६
 जंग जीत तखतह जाय, असपती दीय^{२६} उठाय ।
 कमधज्ज^{२७} तुम बिन^{२८} कोय, हम दोय सैन हि^{२९} होय ॥ १५७
 अनि^{३०} करै कुण विण आप, इह^{३१} दिली^{३२} थाप उथाप ।
 ततवीर कर धरि तौर^{३३}, असपती^{३४} कीजे^{३५} और ॥ १५८

१ ग. राति । २ ख. ग. परि । ३ ग. नह । ४ ग. मिलि । ५ ख. ग. कहै । ६ ग. एम । ७ ख. फरमाण । ८ ग. विण । ९ ख. ग. धोह । १० ख. ग. विचारि । ११ ग. सुलीजे । १२ ख. ग. मारि । १३ ख. ग. किताब । १४ ख. ग. इस । १५ ख. ग. वीचि । १६ ख. ग. कीया । १७ ख. ग. इस । १८ ग. साखि । १९ ख. ग. कमि । २० ख. ग. जमीयत । २१ ख. ग. में । २२ ग. पहिल । २३ ख. इससै । २४ ख. ग. अब । २५ ख. ग. लेह । २६ ख. दीयां । ग. दीया । २७ ख. कमधज । ग. कमधज्ज । २८ ख. ग. विण । २९ ख. ग. ह । ३० ख. ग. अन्य । ३१ ख. ग. यह । ३२ ग. दिली । ३३ ग. तौरि । ३४ ख. ग. असपति । ३५ ख. जीके । ग. कीजे ।

१५२. चाय — चेत, यदि । चित जाय — यदि चित और दूध फट जाते हैं तो वे फिर नहीं मिलते ।

१५३. खून — गुनाह ।

१५४. आलमीन कताब — धर्म-पुस्तक । अजाब — पापोंका वह दंड जो यमलोकमें मिलता है, कष्ट, पाप । दरोग — कपट, दुरोग ।

१५५. जैसाह — सवाई राजा जयसिंह । साख — साक्षी । दहुंवै — दोनों । कम उतन काज — थोड़ीसी जमीन और सेनाके लिए । जमियत = जमीन — फौज ।

१५६. लार — पीछे । अभंग — वीर ।

१५८. इह — यह । तौर — तरीका, विधि । ततवीर — तदवीर, उपाय

हम रहै^१ नौकर^२ होय, दिल^३ आप बंधव दोय ।
 पलटां न वायक पेस, नहि^४ तजां हुकम नरेस ॥ १५६
 महाराज^५ विच^६ रहमाण, करि सौंस छिबी^७ कुराण ।
 तदि धरे^८ दिल परतीत, इम बोलियौ^९ 'अगजीत' ॥ १६०
 हिंदवाण^{१०} तीरथ होय, कर जठै न लगै कोय^{११} ।
 साळगरांम^{१२} सिलाह, दै नहीं आसुर दाह ॥ १६१
 जिग होय दुज जप जाप, आसुर करै न उथाप ।
 जिण मोह^{१३} महिदुर जाय^{१४}, ग्रह तठै मन^{१५} ह्वै^{१६} गाय ॥ १६२
 *असुराण सीस उपाड़ि, परसाद न सकै पाड़ि ।
 प्रासाद^{१७} नवनवा प्रमेस, हिंदवाण^{१८} सभै^{१९} हमेस* ॥ १६३
 आगै जु दियौ^{२०} छुडाय, जेजियौ^{२१} सुज^{२२} मिट^{२३} जाय ।
 अर साह दरगह आइ^{२४}, मह^{२५} पूज हूं^{२६} महमाय^{२७} ॥ १६४

१ ख. कहै । २ ख. नौकरि । ३ ख. दिलि । ४ ख. ग. नह । ५ ख. ग. महाराज ।
 ६ ख. ग. विचि । ७ ख. ग. छिबे । ८ ग. धरै । ९ ख. ग. बोलीयौ । १० ख.
 हिंदुवाण । ग. हीदुवाण । ११ ग. कोइ । १२ ख. ग. साळगरांम । १३ ख. ग. मुह ।
 १४ ख. दुजाय । ग. बुजाय । १५ ख. ग. न । १६ ख. ग. ह्वै । १७ ग. परसाद ।
 १८ ख. ग. हिंदुवाण । १९ ख. सभै ।

*यह पंक्तियाँ ख. प्रतिमें अपूर्ण हैं ।

२० ख. ग. दीयौ । २१ ख. ग. जेजीयौ । २२ ख. ग. सुजि । २३ ख. ग. मिटि ।
 २४ ख. ग. आय । २५ ख. ग. महि । २६ ख. ग. बूं । २७ ख. महामाय । ग. साहा-
 माय ।

१६०. रहमाण — ईश्वर । सौंस — शपथ । छिबी — तसबीह, माला । परतीत — विश्वास ।
 अगजीत — महाराजा अजीतसिंह ।

१६१. साळगरांम — शालिग्राम । दाह — जलन (?) ।

१६२. जिग — यज्ञ । दुज — द्विज, ब्राह्मण । आसुर — यवन, मुसलमान ।

१६३. असुराण — यवन, मुसलमान । परसाद — प्रासाद, मंदिर, देवालय । पाड़ि — गिरा कर ।
 प्रासाद — देव-मंदिर । प्रमेस = परमेश — विष्णु, ईश्वर । हिंदवाण — हिन्दू, हिन्दु-
 स्तान । सभै — तैयार करें ।

१६४. जेजियौ — एक प्रकारका कर जो मुसलमानी राज्यमें अन्य धर्म वालोंसे लिया जाता था,
 जजिया । महमाय — देवी, दुर्गा, महामाया ।

मिळ^१ लालकोट मभार, भालरां ह्वै भणकार ।
 परमळा^२ धूप प्रकास, उदियात^३ रवि^४ अंबखास ॥ १६५
 राखूं सुरहि^५ रनधीर^६, मेटूं स मिटै अमीर ।
 हरवळे^७ कूरम^८ हूंत^९, कळि तजौ विग्रह कूंत^{१०} ॥ १६६
 *सुजि बाळ^{११} वय समराथ, हद ग्रहे में इण हाथ ।
 आलंमहूंत अमेळ, खित करे लीध उखेळ^{*} ॥ १६७
 राखियौ^{१२} डिगतौ राज, ईसांन^{१३} मानै आज ।
 सुजि करूं वळि ईसांन, थट रखण हिंदुसथान^{१४} ॥ १६८
 आ मिटण न दूं^{१५} अनादि^{१६}, मो थकां हिंदु मजादि^{१७} ।
 तजि दाव छळ^{१८} तुरकांण, 'जैसाह' दीजै जांण ॥ १६९
 दिल्लीस^{१९} रखत दरब्ब^{२०}, सुजि लियूं^{२१} वांटि सरब्ब^{२२} ।
 ह्वै हुकम जिम हिज होय, करि उजर न सकै कोय ॥ १७०
 विध^{२३} इती मानौ वात^{२४}, तौ साह कितियक^{२५} वात^{२६} ।
 ऊथाप^{२७} दू^{२८} इण वार, करि जुद्ध^{२९} बुद्ध^{३०} प्रकार ॥ १७१

१ ख. ग. मिलि । २ ख. प्रमल्ला । ग. प्रम्मल्ला । ३ ख. ग. उदगार । ४ ख. हुवै ।
 ग. ह्वै । ५ क. सरहै । ६ ख. ग. सधीर । ७ ग. हरवल । ८ ग. कुरम । ९ ग.
 हुंत । १० ख. हूंत । ११ ख. वाल ।

*यह पंक्ति ग. प्रतिमें नहीं है ।

१२ ख. ग. राषीयो । १३ ग. इसांन । १४ ग. हिंदूसथान । १५ ख. ग. दूं । १६ ख.
 ग. अनादी । १७ ख. ग. मजाद । १८ ख. छलि । १९ ख. ग. दिल्लीस । २० ख. ग.
 दरब । २१ ख. लिहूं । ग. लिऊं । २२ ख. ग. सरब । २३ ख. ग. विधि । २४ ख.
 ग. बात । २५ ख. कितोक । ग. कितोयक । २६ ख. ग. बात । २७ ख. ग. ऊथापि ।
 २८ ख. ग. दू । २९ ग. युद्ध । ३० ख. ग. बुद्धि ।

१६५. भालरां — देव-मन्दिरोंमें बजाया जाने वाला घंटा विशेष । भणकार — ध्वनि विशेष ।
 परमळा — सुगंध । अंबखास — आमखास ।

१६६. हरवळे — हरावल । कूरम हूंत — कछवाहोसे । कळि — विचार कर (?) । विग्रह —
 युद्ध । कूंत — भाला ।

१६७. वय — आयु, उम्र । अमेळ — शत्रुता । उखेळ — युद्ध ।

१६८. डिगतौ — डाँवाडोल होता हुआ । ईसांन — ग्रहसान । थट — वैभव, ठाठ ।

१६९. थकां — होते हुए । मजादि — मर्यादा । तुरकांण — यवन ।

१७०. दिल्लीस — दिल्लीके बादशाह । दरब्ब — द्रव्य, धन-दौलत । उजर — उज, दावा ।

१७१. कितियक — कितनी । बुद्ध — बुद्धि ।

इण मांहि एक^१ अदाब^२, नह मनू^३ एक^४ निबाब^५ ।
 जदि आपहूँता जंग, उखेळ करूं अभंग ॥ १७२
 सुणि कहे^६ इम सयदाण^७, पह^८ हुकम सरव^९ प्रमाण ।
 सभि एम^{१०} तरह सलाह, दहूँ^{११} गए^{१२} सयद दुबाह^{१३} ॥ १७३
 'जैसाह'हूँत जबाब^{१४}, सुजि कहे 'अजै' सताब^{१५} ।
 उण वार अंब नरेस, दिय^{१६} सिख^{१७} सलाह दिलेस ॥ १७४
 जदि सीख करि 'जैसाह', दिस^{१८} उतन चढ़े दुबाह^{१९} ।
 तन लगे नह खग ताप, पह^{२०} 'अजन'^{२१} रे^{२२} परताप^{२३} ॥ १७५
 सयदाण कमध सकोज, मिळ^{२४} थाट सभि महाराज^{२५} ।
 अंब^{२६} खास मांभलि^{२७} आय, असपत्ति^{२८} लीय^{२९} उठाय ॥ १७६
 ग्रहि हणे साह गहेर, सुज^{३०} नांम फररकसेर ।
 इम वयर लीध अथाह, नरइंद^{३१} मुरधरनाह ॥ १७७

१ ग. एक । २ ख. अदाब । ३ ख. ग. मनौ । ४ ख. ग. कदे । ५ ख. नपाब ।
 ग. नबाब । ६ ग. कहै । ७ ख. ग. सईदाण । ८ ख. पौहौ । ग. पहौ । ९ ख. सरव ।
 १० ख. ग. इम । ११ ख. ग. दहूँ । १२ ख. गये । ग. गए । १३ ख. दुबाह । ग.
 दुबाह । १४ ख. जबाब । १५ ख. सताब । १६ ख. ग. दीय । १७ ख. ग. सीख ।
 १८ ख. ग. दिसि । १९ ख. ग. दुबाह । २० ख. ग. पौहौ । २१ ख. ग. अजण ।
 २२ ख. ग. तणै । २३ ख. ग. प्रताप । २४ ख. ग. मिलि । २५ ख. ग. माहाराज ।
 २६ ख. अंब । २७ ख. ग. मांभलि । २८ ख. ग. असपत्ति । २९ ख. ग. लीयी ।
 ३० ख. ग. सुजि । ३१ ख. ग. नरयंद ।

१७२. अदाब - आदर, अदब (?) ।

१७३. सयदाण - सैयद भाई—ये दो भाई थे जिनके नाम क्रमशः सैयद हुसेनअलीखां (अमीरुल उमरा) और अब्दुल्लाखां (कुतुबुल्मुल्क) थे ।

१७४. अजै - महाराजा अजीतसिंह । अंब नरेस - आमेर नरेस सवाई राजा जयसिंह । नोट - सैयद अब्दुल्लाखां (कुतुबुल्मुल्क) ख्याल था कि आमेर नरेस जयसिंहजी भी उसके विरुद्ध बादशाहको भड़काते हैं । इससे उसने फर्रुखसियरको दबा कर उन्हें अपने देशको लौटनेकी आज्ञा दिलवा दी । दिलेस - दिल्लीश, बादशाह ।

१७५. उतन - जन्मभूमि । दुबाह - वीर, योद्धा । ताप - भय, आशंका । पह - राजा । अजन - महाराजा अजीतसिंह ।

१७६. थाट - सेना, दल । अंबखास - आमखास । मांभलि - मध्य, में । असपत्ति - बादशाह ।

१७७. ग्रहि - पकड़ कर । गहेर - जबरदस्त (?) । सुज - जिस । फररकसेर - फर्रुखसियर । वयर - वर, शत्रुता । लीध - लिया । अथाह - अपार । नरइंद - नरेन्द्र, राजा ।

सुज^१ तेज देखि^२ सधीर, अड़ियौ^३ न कोय अमीर ।
 सभि तांम 'अजण' सलाह, सा' थियौ^४ दौलासाह^५ ॥ १७८
 इक साह तखत उथापि, इक साह तखतह आपि^६ ।
 कथ कहे जिम कमधेस, द्रव^७ वांटी^८ लीध दिलेस ॥ १७९
 रजतेस कनक रखत्त, तै चमर छत्र तखत्त ।
 असि गयंद लीध अपार, हद माल मुलक जुहार ॥ १८०
 निज जोगणीपुर^९ नाह, सुजि पड़े दौला साह ।
 तीसरौ असपति तांम, बलि^{१०} थापियौ^{११} बरियांम^{१२} ॥ १८१
 अणभंग तप अणथाह, सुजि नांम^{१३} महमंद साह ।
 दे तखत छत्र दुभाळ, अति धरे छक 'अजमाल' ॥ १८२
 आगरै गढ़ उणवार^{१४}, ऊठियौ^{१५} दुंद उदार^{१६} ।
 घर छत्र बहसे^{१७} धांम, निज नेक सेरह नांम ॥ १८३

१ ख. ग. सुजि । २ ख. देष । ३ ख. ग. अड़ियौ । ४ ख. ग. सथपीयो । ५ ख. दौलासाह । ६ ग. आप । ७ ख. द्रव । ग. द्रव्य । ८ ग. बांटी । ९ ख. जोगणिपुर । १० ख. ग. बलि । ११ ख. ग. थापीयो । १२ ख. बरियाम । ग. बरीयाम । १३ ख. तांम । १४ ग. उणवार । १५ ख. ऊठियो । ग. उठियो । १६ ख. ग. अपार । १७ ख. बहसे ।

१७८. अड़ियौ - भिड़ा, टक्कर ली । अजण - महाराजा अजीतसिंह । सलाह - राय । सा' - शाह, बादशाह । दौलासाह - रफीउद्दौला नामक व्यक्ति जिसको सैयद भाइयोंसे मिल कर महाराजा अजीतसिंहने दिल्लीके सिंहासन पर शाहजहाँ सानीके नामसे वि. सं. १७७६ को राज्यसिंहासन पर बैठाया था ।

१७९. उथापि - उठा कर, उच्छेद कर । आपि - दे कर । दिलेस - दिल्लीश, बादशाह ।

१८०. रजतेस - चांदी, रोप्य । कनक - स्वर्ण, सोना । रखत्त - द्रव्य, धन । जुहार - जवाहिरात ।

१८१. जोगणीपुर - दिल्ली । नाह - नाथ, राजा, बादशाह । पड़े - मर गये, अवसान हुआ । थापियौ - मुकरंर किया, स्थापित किया । बरियांम - श्रेष्ठ ।

१८२. अणभंग - वीर । तप - ऐश्वर्य, तेज । अणथाह - अपार, असीम । महमंद साह - शाहजादा रोशनअख्तर जिसको सैयद भाइयोंसे मिल कर महाराजा अजीतसिंहजीने रफीउद्दौलाकी बाद रोशनअख्तर नासिरुद्दीन मोहम्मद शाहके नामसे दिल्लीके सिंहासन पर बैठाया । दुभाळ - वीर । छक - गर्व । अजमाल - महाराजा अजीतसिंह ।

१८३. दुंद - द्रुण्ड । बहसे - जोशमें । सेरह नांम - (?) ।

सभि तोप कोट सनाह, सुजि जोम भरियौ^१ साह ।
 सुणि दुंद इम 'सयदांण', जगजीत पह^२ जोधाण ॥ १८४
 सभि थाट चढ़िया^३ सूर, रोसंग अंग गरूर ।
 अकबर^४ बहादर^५ आय, जुध कीध धोम जगाय ॥ १८५
 दगि नाळ भाळ दुरंत, गढ़ घेरियौ^६ गहतंत ।
 उडि रीठ गोळां आग^७, लख अगन^८ मे^९ भड़ लाग^{१०} ॥ १८६
 जुध सुणे इम 'जैसाह',^{११} दळ पूर सज्जि^{१२} दुबाह ।
 लड़ि करण नेक दिलेस, निज सीम^{१३} आय^{१४} नरेस ॥ १८७
 सुणि एह^{१५} कथ 'सयदांण', मिळ^{१६} 'अजण' अमली^{१७} मांण ।
 चाढ़ाय असि उर चोट^{१८}, करि हाक भेळे^{१९} कोट ॥ १८८
 गढ़ लीध करि गजगाह, सुजि गहे^{२०} नेकहसाह ।
 'जैसाह' दिस^{२१} जमरांण^{२२}, खळ चढ़े दळ खुरसांण ॥ १८९

१ ख. ग. भरीयौ । २ ख. पौ । ग. पौहो । ३ ख. ग. चढ़ीया । ४ ख. अकबरा ।
 ग. अकबरा । ५ ख. ग. वादह । ६ ग. घेरीयौ । ७ ख. ग. आगि । ८ ख. ग.
 अगनि । ९ ख. ग. मे । १० ख. ग. लागि । ११ ग. जयसाह । १२ ख. ग. सभे ।
 १३ ग. सीस । १४ ख. ग. आयौ । १५ ग. ऐह । १६ ख. ग. मिलि । १७ ग.
 अवली । १८ ख. चोवट । १९ क. भेळं । २० ख. ग. गहे । २१ ख. ग. दिसि ।
 २२ ख. रांण ।

१८४. सनाह — कवच । सुजि — वह । जोम — जोश । सयदांण — दोनों सयद भाई ।
 जोधाण — जोधपुर ।

१८५. थाट — सेना । रोसंग — रोषपूर्ण शरीर वाला । गरूर — गर्व । धोम — अग्नि,
 क्रोधाग्नि ।

१८६. नाळ — तोप । भाळ — ज्वाला, आगकी लपट । दुरंत — भयंकर । गहतंत — गंभीर,
 वीर । रीठ — प्रहार या प्रहारकी ध्वनि । भड़ — निरंतर होने वाली छोटी-छोटी
 बूंदोंकी वर्षा ।

१८७. जैसाह — सवाई राजा जयसिंह । दुबाह — वीर, योद्धा । नेक — हित, भलाई ।

१८८. अजण — महाराजा अजीतसिंह । अमली मांण — अपने ऐश्वर्यका उपभोग करने वाला ।
 हाक — जोशपूर्ण आवाज । भेळे — जीत लिया, हरा दिया ।

१८९. गजगाह — युद्ध । जमरांण — यमराज ।

चळचळे चवदह चाळ, थट हुवा जिम जळ थाळ^१ ।
 सुत विसन^२ बह^३ वधि सोच^४, इम लिखे खत आलोच^५ ॥ १६०
 स्त्रीहत्थ लेखि सकज्ज^६, 'अजमालहूंत' अरज्ज^७ ।
 स्त्री महाराज^८ सकाज, इळ वंस सूरिज^९ आज ॥ १६१
 मो मदत^{१०} कीध हमेस, निज अहे हाथ नरेस ।
 वरियांम^{११} आलम वार^{१२}, मो राज उतन मंभार^{१३} ॥ १६२
 यां^{१४} हूंत होत^{१५} उथाप, 'अजमाल'^{१६} राखै^{१७} आप ।
 बलि साह फररक बार, अरि हुता^{१८} सयद अपार ॥ १६३
 सभि थाट कुरव सुथाळ, मो^{१९} राखियौ^{२०} 'अजमाल' ।
 वरियांम^{२१} तीजी वार, अब^{२२} नको अवर अधोर ॥ १६४
 कीजिये^{२३} फेर^{२४} सकाज, 'अजमाल' ऊपर आज ।
 उमराव^{२५} मंत्रिय^{२६} आंणि, पह^{२७} दीध कागद पांणि ॥ १६५

१ ख. थाह । २ ग. विसन । ३ ख. बहौ । ग. बहौ । ४ ग. सोच । ५ ग. आलोच ।
 ६ ख. सकज । ग. सकज्ज । ७ ख. अरक । ग. अरज्ज । ८ ख. ग. महाराज ।
 ९ ग. सूरिज । १० ख. ग. मदति । ११ ग. वरीयांम । १२ ग. बार । १३ ख. ग.
 मभार । १४ ख. ग. इळ । १५ ख. हुंता । ग. हुतां । १६ ख. ग. अगजीत ।
 १७ ख. ग. राखे । १८ ख. हुंता । ग. हुंतां । १९ ख. मौ । २० ख. ग. राखीयौ ।
 २१ ख. वरीयांम । ग. वरियांम । २२ ख. ग. अब । २३ ख. कीजीए । ग. कीजीए ।
 २४ ख. वले । ग. बले । २५ ख. उंवराव । ग. जबराव । २६ ख. ग. मंत्रिय ।
 २७ ख. ग. पौहौ ।

१६०. चळचळे - चलायमान हुए, भयभीत हुए । चाळ - लोक । थट - सेना । आलोच -
 विचार कर । सुत विसन - विष्णुसिंहका पुत्र सवाई जयसिंह ।

१६१. इळ - पृथ्वी । वंस सूरिज - सूर्यवंश ।

१६३. साह फररक बार - बादशाह फरखसियर । अरि - शत्रु । सयद - दोनों सयद
 भाई ।

१६४. सुथाळ - ठीक, अनुकूल । अवर - अन्य । अधार - आधार, सहारा । नको -
 कोई नहीं ।

१६५. फेर - फिर । ऊपर - मदद, रक्षा । पह - राजा । पांणि - हाथ ।

मुख^१ वचन बह^२ मनुहारि^३, कहि^४ भांत^५ भांत प्रकारि^६ ।
 मेल्हिया^७ 'जसै' महीप, आविया^८ 'अजण' समीप ॥ १९६
 मुख वचन कहि^९ सामाज^{१०}, करि^{११} दीध अरज^{१२} सकाज ।
 इम वांचि खत 'अजमाल', खितनाथ हुवौ खुस्याळ ॥ १९७
 तै सुभइ मंत्री तांम, विध^{१३} कीध हित वरियांम ।
 बिहुं 'सैद' तांम बुलाय, इम कहै बुद्धि उपाय ॥ १९८
 कथ अगै कीध करार, लोपां न हुकम लिगार ।
 इक वात जिण^{१४} मझि आज, करि करौ आतुर काज ॥ १९९
 'जैसाह'हंता जंग, आरंभ तजौ अभंग ।
 मुनसप^{१५} तजोस^{१६} प्रमाण, फिर^{१७} देह लिखि फुरमाण ॥ २००
 तै लिखौ हित कथ तीख, सझि एम^{१८} वरसह सीख ।
 इम लिखौ हेत^{१९} उपाय, जोधाण मो संग^{२०} जाय ॥ २०१
 सुण^{२१} वयण इम सयदांण, उर^{२२} धिखे क्रोध उफांण ।
 दिल मांहि लागौ दाह, 'अजमाल' कुरब अथाह ॥ २०२

१ ख. मुखि । २ ख. बहौ । ग. बहौ । ३ ख. ग. मनुहार । ४ ख. ग. कहै । ५ ख. ग. भांति भांति । ६ ख. ग. प्रकार । ७ ख. ग. मेल्हीया । ८ ख. ग. आवीया । ९ ख. कहे । ग. कहै । १० ख. ग. समाज । ११ ख. ग. कर । १२ ख. वचन । १३ ख. ग. वधि । १४ ग. जिणि । १५ ख. सप्प । ग. सुप्प । १६ ख. जितौ । ग. जीतौ । १७ ग. फिर । १८ ख. ग. एक । १९ ख. हेठ । २० ख. ग. संगि । २१ ख. ग. सुणि । २२ ख. ग. उरि ।

१९६. अजण — महाराजा अजीतसिंह ।

१९७. खितनाथ = क्षितिनाथ — राजा । खुस्याळ — प्रसन्न, खुश ।

१९८. सुभइ — सुभट, योद्धा । बिहुं सैद — दोनों सैयद भाई हुसेनअलीखां (अमीरुल उमरा) और अब्दुल्लाखां (कुतुबुलमुल्क) ।

१९९. करार — वायदा, कोल । लिगार — किंचित, थोड़ा ।

२००. जंग — युद्ध । अभंग — वीर ।

२०२. धिखे — क्रोधाग्निसे प्रज्वलित हुए । उफांण — उबाल ।

सो लोप न सकै सैद^१, कथ कीध पहलां^२ कैद ।
 कथ कहे^३ तजे^४ करूर, जो^५ हुकम पह^६ मनजूर ॥ २०३
 सजि^७ दसकतां सुरतांण, महपती^८ दिस^९ फुरमाण ।
 दाखियौ^{१०} जिम लिख दीध, कूरमां ऊपर कीध ॥ २०४
 सो लीध पह^{११} 'जैसाह', आवियौ^{१२} सभे उछाह ।
 जदि सीख किय^{१३} जगजीत, जोधांण दिस^{१४} अगजीत ॥ २०५
 सभि रीभ बह^{१५} सुरतांण, सभि निजर बह सयदांण ।
 इम^{१६} मेलियौ^{१७} अणपाल, मुरधरा दिस^{१८} 'अजमाल' ॥ २०६

महाराजा अजीतसिंहरी दूजा राजाचारं साथ जोधपुर आगमन
 'जैसाह' मिळै^{१९} जियार, लख गौड़ हाडा लार ।
 इंद्रसिंघ सोपुर^{२०} ईस, सुजि लार नांमत सीस ॥ २०७
 रचि बुधौ बूंदी^{२१} राव, पह^{२२} लार बंदत^{२३} पाव ।
 सीसोद^{२४} हिक सुवियांण^{२५}, 'राजसी' दादौ रांण ॥ २०८
 उण नांम भड़^{२६} 'अखमाल', सुजि थाट लार सुथाळ ।
 यां सहित 'विसन' सुजाव, रचि थाठ कूरम^{२७} राव ॥ २०९

१ ग. भेद । २ ख. पहिलै । ग. पहिलां । ३ ग. कहै । ४ ग. तजे । ५ ख. जो ।
 ६ ख. ग. पोहो । ७ ख. ग. सभि । ८ ख. महपति । ग. पहीपती । ९ ख. ग. दिसि ।
 १० ख. ग. दाखीयो । ११ ख. ग. पोहो । १२ ख. ग. आवीयो । १३ ख. ग. कीय ।
 १४ ख. ग. दिसि । १५ ख. वही । ग. बही । १६ ख. ग. यम । १७ ख. ग. मेलीयो ।
 १८ ख. ग. दिसि । १९ ग. मिळि । २० ख. ग. पर । २१ ख. बूंदी । ग. बूदी ।
 २२ ख. ग. पोहो । २३ ख. वंत । २४ ग. सीसोद । २५ ख. ग. सभियांण । २६ ख.
 भड़ । २७ ख. कूरम । ग. कूरम ।

२०३. सैद - सयद भाई ।

२०४. महपती - राजा । दिस - ओर । फुरमाण - फरमान, आज्ञापत्र ।

२०५. पह जैसाह - सवाई राजा जयसिंह । जदि - जब । अगजीत - महाराजा अजीतसिंह ।

२०६. मेलियो - भेजा । अणपाल - वीर, योद्धा । दिस - तरफ । अजमाल - महाराजा अजीतसिंह ।

२०७. जियार - जब ।

२०८. बुधौ - बूंदीका राव राजा बुद्धसिंह । लार - पीछे । सीसोद - सीसोदिया वंशका राजपूत । हिक - एक । सुवियांण = सुभियांण - श्रेष्ठ । राजसी - रांण - महाराणा राजसिंह ।

२०९. अखमाल - (?) । थाट - सेना, दल । सुथाळ - श्रेष्ठ । विसन सुजाव - विष्णु-सिंहका पुत्र । नोट - मिर्जा राजा जयसिंहके पौत्र और रामसिंहके पुत्रका नाम विसन-सिंह था, वही सवाई जयसिंहके पिता थे ।

वड वडा गढ़ वरियांम^१, ताबीन^२ 'अजमल' तांम ।
 आवियौ^३ अमलीमाण, जोधाण-पति जोधाण ॥ २१०
 हरखंत सहर उछाह, चक्रवरत^४ दरसण चाह ।
 गजगमणि मंगळ गाय, वर^५ कुंभ हरित वंदाय^६ ॥ २११
 छक विच^७ पुर अवछाड़ि^८, पौसाक दुरंग पहाड़ि^९ ।
 जरतार जगमग जोति^{१०}, अति भाण जाण उदोति^{११} ॥ २१२
 पौसाक तास अपार, सब^{१२} नारि^{१३} नर संगार^{१४} ।
 भूषणस^{१५} नवनव भाव, जगमग^{१६} कनक जड़ाव ॥ २१३
 सिणगार गज असि सोभ, लखि हुवे ईंदर विलोभ ।
 मिल^{१७} मंत्री^{१८} सुभइसमाज, साजंत^{१९} निज^{२०} रस^{२१} साज^{२२} ॥ २१४
 बाजंत्र^{२३} वजत^{२४} बमेक^{२५}, कृत^{२६} राग रंग अनेक ।
 नवछावरेस नरंद^{२७}, उछळंत द्रव^{२८} भइ इंद ॥ २१५

१ ग. वरीयांम । २ ख. ग. ताबीन । ३ ख. ग. आवीयौ । ४ ख. ग. चक्रवर्ति ।
 ५ ग. बरि । ६ ग. बंदाय । ७ क. चित्र । ८ ख. ग. अवछाड़ि । ९ ख. ग. पहाड़ि ।
 १० ग. जोत ।

ख. तथा ग. प्रतियोगे अनुसार— अति जाण भाण उदोति ।

११ ख. अव । १२ ख. जारि । १३ ख. ग. सिणगार । १४ ख. भूषणजू । ग. भूषणमु ।
 १५ ख. ग. जगमग । १६ ख. ग. मिलि । १७ ख. मंत्री । ग. मंत्रीय । १८ ख. ग.
 सार्भंत । १९ ख. ग. नज । २० ख. ग. रिस । २१ ख. ग. काज । २२ ख. वाजित्र ।
 ग. बाजित्र । २३ ख. ग. वजत । २४ ख. ग. बमेक । २५ ख. ग. कृत । २६ ख.
 ग. नरचंद । २७ ख. द्रव ।

२१०. ताबीन — आज्ञाकारी, हुक्म मानने वाले ताबईन । जोधाण — जोधपुर ।

२११. हरखंत — हर्षित होता है । चक्रवरत — चक्रवर्ती राजा । चाह — इच्छा । मंगळ —
 मांगलिक गायन । वर...वंदाय — घट के ऊपर हरी दूबें रख कर सौभाग्यवती स्त्रियों
 सामने आती हैं; इस मांगलिक रस्म को 'हरी वंदाना' कहते हैं ।

२१२. छक — वैभव, ऐश्वर्य । पहाड़ि — पहिना कर ।

२१३. कनक जड़ाव — स्वर्ण-जडित ।

२१४. सिणगार — शृंगार । सोभ — शोभा, दीप्ति । विलोभ — मोहिन ।

२१५. बाजंत्र — वाद्य । नवछावरेस — न्योछावर । नरंद — नरेन्द्र, राजा ।

*सिर^१ चमर होत सकाज, कहि ब्रह्म^२ बह^३ कविराज ।
 बंदि^४ तोरणां जिम इंद^५, आवियौ^६ गढ़ नरइंद* ॥ २१६
 पतिव्रता^७ नेह अपार, सभि सोळ सरस सिंगार^८ ।
 बह^९ कळा लछण^{१०} बतीस, सभि^{११} आभरण खटतीस ॥ २१७
 अति रूप क्रांति उजास, प्रफुल्ल^{१२} वदन^{१३} प्रकास ।
 आवियौ^{१४} पह^{१५} उण वार^{१६}, मिंदरां^{१७} राज मंभार ॥ २१८
 गायणी नूत^{१८} संगीत, रंग करत उरवस^{१९} रीत ।
 करि हावभाव अनेक, कट्टाच्छ^{२०} मनमथ केक ॥ २१९
 वाजंत्र^{२१} वजत^{२२} विसाळ, रस रागरंग रसाळ ।
 मिळ^{२३} भूळ सुकिया^{२४} बांम, कृत^{२५} रूप रति जिम कांम ॥ २२०
 'अजमाल' भूप अवास^{२६}, वणि इंद्र जेम विलास ।
 तिण वार निसा वितीत, आवियौ^{२७} गौख 'अजीत' ॥ २२१
 तदि हुवा^{२८} हाजर तांम, वड वडा स्रब वरियांम ।
 तळि^{२९} गौख ऊभा तांम, साभंत सुपह सलांम ॥ २२२

१ ख. सिरि । २ ख. विरद । ३ ख. बहो ।

*यह पंक्ति ग. प्रतिमें नहीं है ।

४ ख. बंदि । ५ ख. व्यंद । ६ ख. आवीयो । ७ ग. परिव्रता । ८ ख. ग. शृंगार ।
 ९ ख. बहो । ग. बहो । १० ग. लछण । ११ ग. सभ । १२ ख. प्रफुल्लित । ग.
 प्रफुल्लित । १३ ग. बदन । १४ ख. ग. आवीयो । १५ ख. ग. पोहो । १६ ग. उण-
 वार । १७ ख. ग. मंदिरां । १८ ख. ग. नृत्य । १९ ग. उरवसि । २० ख. काटाछ ।
 ग. काटाछि । २१ ख. वाजित्र । ग. वाञ्छिभत्र । २२ ख. ग. वजति । २३ ख. ग. मिलि ।
 २४ ख. ग. स्वकीया । २५ ख. ग. कृत । २६ ग. अवास । २७ ख. ग. आवीयो ।
 २८ ख. हुवा । ग. हुवा । २९ ख. तयि । ग. लपि ।

२१६. ब्रह्म — विरुद । नरइंद — नरेन्द्र, राजा ।

२१७. सिंगार — शृंगार । आभरण — आभूषण ।

२१८. उजास — प्रकाश, दीप्ति । प्रफुल्ल — हर्षित, प्रफुल्लित । बदन — मुख । मिंदरां राज —
 राजभवन । मंभार — में, मध्य ।

२१९. गायणी — वेद्या, नृत्यकी । उरवसी — उर्वशी नामक अप्सरा । कट्टाच्छ — कटाक्ष ।
 मनमथ — कामदेव । केक — कई ।

२२०. वाजंत्र — वाद्य । भूळ — समूह । सुकिया — स्वकीया, पतिव्रता । बांम — स्त्री । रति —
 कामदेवकी स्त्री ।

२२१. निसा — रात्रि । वितीत — व्यतीत । गौख — गवाक्ष, भरोखा ।

२२२. वरियांम — श्रेष्ठ । तळि — नीचे । सुपह — वीर, योद्धा ।

तवि^१ निजर दौलति तांम, निज कहै वळ जस नांम* ।
हुय^२ निजर^३ दौलति^४ हांम, संग्राम करै सलांम ॥ २२३
पह^५ सरण सेवत पाव, औ रांमपुर रौ राव ।
ह्वै निजर^६ स्त्रीमहाराज^७, दूसरौ राव दराज ॥ २२४
औ बुधौ बूंदी^८ ईस^९, सो नमत कदांमां^{१०} सीस ।
सिंघ^{११} महाबली सकाज^{१२}, महि निजर^{१३} ह्वै महाराज^{१४} ॥ २२५
नृप^{१५} गौड़ निज ताबीन, तसलीम साजत^{१६} तीन ।
गढ़ एण^{१७} सौपुर^{१८} गांम, इंद्रसिंघ^{१९} इणांरौ नांम^{२०} ॥ २२६
नरिइंद नजर नगाह सुत चित्रगढ़ पतिसाह ।
सुत जियां^{२१} दोइ^{२२} सुथाळ, मिळ^{२३} मालफत अखमाल^{२४} ॥ २२७
सीसोद करत सलांम, ऊंमेद^{२५} मुलक इनांम ।
सजि निगह निजर सताव, नमि करत कुनस^{२६} निबाव^{२७} ॥ २२८

१ ग. रवि ।

*ख. और ग. में— निज कहै जस बलनांम ।

२ ख. ग. होय । ३ ग. नजर । ४ ख. ग. दौलत । ५ ख. ग. पहो । ६ ग. नजर ।
७ ख. माहाराज । ८ ग. बुंदी । ९ ख. इस । १० ख. ग. कदमां । ११ ख. सिंह ।
१२ ग. सक्काज । १३ ख. ग. नजर । १४ ख. माहाराज । १५ ख. ग. नृप ।
१६ ख. ग. साभत । १७ ग. ऐण । १८ ख. ग. सोपर । १९ ख. इंद्रसिंघ । २० ख.
ग. नांम । २१ ख. ग. जीयां । २२ ख. ग. दोय । २३ ग. मिलि ।

*ख. और ग. प्रतियोंके अनुसार इस पंक्तिमें— मिलि माल अखफत माल ।

२४ ख. ग. उमैद । २५ ख. कुनस । ग. कुनस । २६ ख. ग. नबाव ।

२२३. तवि — कह कर । निजर दौलति — नकीब द्वारा राजा-महाराजाके अग्राड़ी उच्चारण किये जाने वाले शब्द जिसका अर्थ यह होता है कि जिस पर आप कृपा-कटाक्ष डालते हैं वह दौलतमन्द हो जाता है । हांम — इच्छा ।

२२४. पह सरण — शरण में आए हुए राजा । दराज — महान ।

२२५. बुधौ — बूंदीका राव राजा बुधसिंह । महि निजर — नीची निगाह ।

२२६. ताबीन — आधीन, मातहत, आज्ञाकारी । तसलीम — तीन — तीन बार सलाम करता है ।

२२७. चित्रगढ़ — चित्तौड़गढ़ । मालफत — फतहमल या फतहसिंह सीसोदिया जो राणा राजसिंहका पुत्र था । अखमाल — अखेसिंह सीसोदिया ।

२२८. सीसोद — सीसोदिया वंशकाराजपूत । कुनस = कुनुंश; कोरनिस — अभिवादन । गर्दन झुका कर तीन कदम पीछे हटना और प्रत्येक कदम पर हाथ से सलाम करना कोर-निस करना कहलाता है ।

तूराण मुलक तवन्द^१, रोहिलाखांन रवन्द^२ ।
 पह^३ करत वंदण^४ पाव, इम^५ साहका उमराव ॥ २२६
 सभि सज्भि तीन सलांम, अति खमे सिर इतमांम ।
 जुडि खड़ा बिहुं^६ कर^७ जोड़, मदमसत गज घड़^८ मोड़ ॥ २३०
 द्रुहुं राह दिस^९ कुळ दीत, इक नजर^{१०} कीध 'अजीत' ।
 तप इसौ भळहळ तौर, 'अजमाल' जोड़ न और ॥ २३१
 छक वंस पूर छतीस, खब^{११} पाइ नांम^{१२} सीस^{१३} * ।
 'अजमाल' भूप अरोड़, जयचंद भूपति जोड़ ॥ २३२
 कवित्त—ऐरापति आरिखां, पवै घण गाज पटाभर ।
 ऊंच^{१४} खवा आरिखां, तुरंग घण वर सालोतर ।
 राजलोक नूप^{१५} मिंदर^{१६}, सकौ^{१७} पतिव्रत दिढ़ सुंदर ।
 देस कोस अदुतीय, घणा द्रव^{१८} उच्छव^{१९} घोघर ।
 पाटवी कुंवर^{२०} दिनकर प्रभा, वसिष्ठ^{२१} प्रोहितराज वर ।
 सासत्र^{२२} अजाद^{२३} मंत्री सदिढ़, धरपति 'अजमल' छत्रधर^{२४} ॥ २३३

१ ख. ग. तवद् । २ ख. रवद् । ग. रवद । ३ ख. ग. पहुँ । ४ ग. बंदण । ५ ख. ग. इह । * यहाँ पर ख. और ग. प्रतियोगोंमें— सभि तीन तीन सलांम ।
 ६ ख. ग. बिहुँ । ७ ग. करि । ८ ख. ग. अघमोड़ । ९ ख. ग. दिसि । १० ख. नीजर । ग. निजर ।

* ख. और ग. प्रतियोगोंमें— छक पूर वंस छतीस ।

११ ख. पाय । १२ ख. ग. नाम । १३ ख. ग. तसीस । १४ ख. ग. उची । १५ ख. ग. नूप । १६ ख. ग. मंदिर । १७ ख. ग. सकौ । १८ ग. द्रव्य । १९ ग. उच्छव । २० ग. कवर । २१ ख. ग. वसिष्ठ । २२ ग. सास्त्र । २३ ग. मजाव । २४ ग. छत्रधरि ।

२२६. तवन्द—कहते हैं । रवन्द—यवन, मुसलमान ।

२३०. इतमांम—समाप्ति, पूर्ति, इत्मांम । मदमसत—मदोन्मत्त । गज घड़ मोड़—हाथियोंके दलको पीछे हटाने वाले ।

२३१. कुळ दीत—कुल आदित्य, सूर्यवंश । जोड़—बराबर ।

२३३. पटाभर—हाथी । ऊंच खवा—उच्चैः खवा नामक इन्द्रका दवेत रंगका घोड़ा । आरिखां—समान । तुरंग—घोड़ा । वर—श्रेष्ठ । सालोतर—शालिहोत्र । राजलोक—राजाकी पट्टराणिएँ । सकौ—सब । दिढ़—दृढ़, अटल । कोस—खजाना, कोष । अदुतीय—अद्वितीय । घोघर—प्रत्येक घरमें । पाटवी कुंवर—जेष्ठ कुमार । दिनकर—सूर्य । सासत्र...सदिढ़—शास्त्र-मर्यादा में सुदृढ़ ।

दूहौ^१—अष्ट अंग राजस अडिग, जीव मंत्रि^२ दिद जाणि ।
 जो केहौ नृप^३ 'अजण'रै, वड कवि तिकौ^४ वखाणि ॥ २३४
 कवित्त—संद मुगळ साजतां^५, अमी 'महमंद' वंचाए^६ ।
 रांण मंत्री करि^७ अरज, दरस वड प्राग कराए^८ ।
 अंब नयर^९ उथपतां, थाट 'जैसाह' थपाए^{१०} ।
 देह सतीतफा दिली, जेण जेजियौ^{११} छुडाए^{१२} ।
 'अजण'^{१३}रै मंत्रि^{१४} पतिसाह अग्र, सभि^{१५} हिंदू^{१६} ध्रम सीमसी ।
 ईसान कियौ^{१७} धू जिम अडिग, खलक तणै सिर खीमसी ॥ २३५
 जयचंद जेम^{१८} 'अजीत', मसत उच्छव^{१९} धर मांणे ।
 इंद्र जेम ओपियौ^{२०}, 'जोध' दूजौ^{२१} जोधाणे ।
 दिली तखत दईवाण^{२२}, हेल मांही^{२३} करि^{२४} हिम्मति ।
 ऊंथलपथल अनेक, पान जिम किया^{२५} असप्पति^{२६} ।
 'जसराज' सुतण ग्रहराज जिम, विखम राज^{२७} जग सिर वहै ।
 तिण वार महाराजा^{२८} तणै, राव राजा सरणै रहै^{२९} ॥ २३६

१ ग. दुहा । २ ख. ग. मंत्री । ३ ख. ग. नृप । ४ ग. तकौ । ५ ख. ग. साभतां ।
 ६ ग. बंचाए । ७ ग. कर । ८ ग. कराए । ९ ख. नंयर । ग. नैयर । १० ग.
 थपाए । ११ ख. ग. जेजियो । १२ ग. छुडाए । १३ ग. अजसाल । १४ ख. ग.
 मंत्री । १५ ग. सभि । १६ ख. ग. हींदू । १७ ख. ग. कीयो । १८ ख. एम ।
 १९ ख. उच्छव । ग. उत्छव । २० ख. ग. ओपीयो । २१ ख. दुजै । २२ ख. दैवाण ।
 ग. दईवाण । २३ ख. महि । ग. माहे । २४ ख. कर । २५ ख. ग. कीया । २६ ख.
 असपति । २७ ख. ग. राह । २८ ख. ग. माहाराजा । २९ ख. रह ।

२३४. अजण — महाराजा. अजीतसिंह ।

२३५. संद — सयद भाई । साजतां — मारने पर । अंब नयर — आंबेर नगर । उथपतां —
 उन्मूलन करने पर, हटाने पर, उलटने पर । जेजियो — जजिया नामक कर । खीमसी —
 भंडारी शाखाका खीमसी नामक ओसवाल जो महाराजा अजीतसिंहका पूर्ण कृपापात्र
 था । सतीतफा — स्तीफा, त्यागपत्र; महाराजा अजीतसिंहजी ने जजिया माफ कराने
 के लिए दिल्ली से सम्बन्ध-विच्छेद करने तक का निश्चय किया था ।

२३६. मांणे — उपभोग किया । ओपियो — शोभायमान हुआ । जोध — राव जोधा ।
 दूजौ — दूसरा । दईवाण — स्वामी, दीवान । हेल — क्रीड़ा, खेल । ऊंथलपथल...
 असप्पति — जिस तरह पान को उलटपुलट करते हैं उसी तरह इच्छानुसार एक के
 बाद एक दिल्लीके बादशाहोंको बदला । जसराज सुतण — यशवंतसिंहका पुत्र ।
 ग्रहराज — सूर्य ।

समें^१ जेण^२ हसनली, चूक करि हणे चकत्थां^३ ।
 'अजौ'^४ क्रोध ऊफणै^५, कमध^६ सांभळ^७ इम^८ कत्थां^९ ।
 वळे हुई^{१०} तिण वार, महीपति^{११} हूं कथ मालिम ।
 जुध^{१२} करि ग्रहियौ^{१३} जवन, खांन अबदुल खूंदालिम^{१४} ।
 तदि 'अजै' भेजि दळ हणि तुरक, विखम लियौ^{१५} भळहळ वखत ।
 आगरा दिली हूता अधिक, तारागढ़ दूजौ^{१६} तखत ॥ २३७

दळ सभि 'अजौ' दुभाल, 'अजौ' तारागढ़ आयौ ।
 ऊथापे असुरांण, विमळ हिंदुवांण वणायौ ।
 पीर जठे पूजता, पवित्र सुर^{१७} जठे पुजाया^{१८} ।
 तंबा कटती तठै^{१९}, जिग्ग बह होम जगाया^{२०} ।
 तवता^{२१} कुरांण काजी तठै, ब्रह्म पुरांण वचाविया^{२२} ।
 आसुरां धरम मेटे 'अजै', सुरां धरम दरसाविया ॥ २३८

१ ख. ग. समे । २ ग. जेण । ३ ख. ग. चकत्थां । ४ ग. अजौ । ५ ख. ऊफणे ।
 ६ ख. कमध । ७ ख. ग. सांभळि । ८ ग. इम । ९ ख. ग. कत्थां । १० ग. हुई ।
 ११ ख. महीपति । १२ ग. जुधि । १३ ख. ग. ग्रहियौ । १४ ख. खूंदालिम ।
 १५ ख. ग. लियौ । १६ ख. ग. तीजौ । १७ ग. सुर । १८ ग. पूजाया । १९ ख. तव ।

*ख. प्रतिमें—जिठै जग होम जगाया ।

ग. प्रतिमें—जठै जिग होम जगाया ।

२० ग. हुवता । २१ ख. ग. वचाविया ।

२३७. हसनली = सैयद हुसेनअली — मुहम्मद बादशाहने इसे धोखेसे मीर हैदर खां काशगरीके द्वारा मरवा डाला । चूक — घोखा, छल । चकत्थां — चगताई वंशके मुगल । अजौ — महाराजा अजीतसिंह । कमध — राठौड़ । सांभळ — सुन कर । कत्थां — वृत्तान्त । खांन अबदुल — सैयद अब्दुल्लाखां जिसको सैयद हुसेनअलीके मारे जानेके बाद मुहम्मद शाहने सुल्तान इब्राहीमके साथ ही कैद कर लिया । खूंदालिम — बादशाह । अजै — महाराजा अजीतसिंह ।

२३८. दुभाल — वीर, योद्धा । असुरांण — बादशाह । विमळ — पवित्र, उज्ज्वल । हिंदुवांण — हिन्दुस्तान या हिन्दू धर्म । पीर — मुसलमानोंके धर्म गुरु, मुशिद । सुर — देवता । तंबा — गाय । तवता — पढ़ते, स्तवन करते थे । आसुरां — असुरों, मुसलमानों ।

संभरि^१ लीध तिण समै, लूटि डिडवांणौ^२ लीधौ ।
 करि दफतर तिर^३ कलम, कमंध आरंभ कीधौ ।
 आप^४ आय अजमेर^५, मिळै दळ सबळ महाबळ ।
 कागद भेजे सकळ, आय पिळळे दळ सबळ* ।
 धर-थंभ रखै खग पांण धर, धर साहां लूटै धखां ।
 उण वार^६ करै राजा 'अजौ', लखां खरच ओपत^७ लखां ॥ २३६
 समद पूर दळ सबळ, हुवा देखे^८ भाळाहळ ।
 'अजौ'^९ दिली ऊपरां, विखम तोलै^{१०} वीजूजळ ।
 तखत बैठि धर छत्र, कमंध इम चमर करावै ।
 जिकौ करै अजमेर, आपनूं जिकौ सुहावै ।
 गजमिका^{११} तराजू अदल^{१२} गहि, तोग मही-मुरतब, तुरंग ।
 पतिसाह हुवौ 'अजमाल' पह^{१३}, दिली जेम तारादुरंग ॥ २४०
 तखत रवा तइयार^{१४} रहै, नाळकियां^{१५} हाजरि^{१६} ।
 बहसि^{१७} गुरज बरदार, करै अतमांम^{१८} भयंकरि ।

१ ग. संभरि । २ ख. डीडवांणौ । ३ ख. ग. तर । ४ ग. आय । ५ ग. मेर ।

*यह पंक्ति ख. और ग. प्रतियोंमें नहीं है । यहाँ पर ख. तथा ग. प्रतियोंमें निम्न पंक्ति है—
 दरब भलल पही दियै, बड़े दाद नीबळो वळ ।

६ ग. उणवार । ७ ख. ओपत । ८ ख. देखे । ९ ख. अजौ । ग. अजै । १० ख. ग. तोले । ११ ख. ग. गजसिका । १२ ख. ग. अदलि । १३ ख. ग. पोहौ । १४ ख. ग. तइयार । १५ ख. ग. नाळकियां । १६ ख. ग. हाजर । १७ ख. ग. बहसि । १८ ख. ग. अतिमांम ।

२३६. संभरि—सांभर नगर । तिर—(?) । कलम—मुसलमान । धर थंभ—भूमिका रक्षक या सहारा, राजा । साहां—बादशाहों । धखां—(?) । अजौ—महा-राजा अजीतसिंह । ओपत—आय, आमदनी ।

२४०. विखम—विषम, भयंकर । तोलै—प्रहार हेतु शस्त्र उठाता है । वीजूजळ—तलवार । जिकौ—जो, वह । गजमिका—(?) । अदल—न्याय, इन्साफ । तोग—देखो पृ. २२, भाग २ की टिप्पणी । मही मुरतब—मुसलमान बादशाहोंके तथा मुगलकालीन राजाओंके आगे हाथी पर चलने वाले सात झंडे जिन पर मछली और ग्रहों आदिकी आकृतियाँ होती हैं, माहीमरातिब । तुरंग—घोड़ा । तारादुरंग—अजमेरके पासका तारागढ़ ।

२४१. रवा—रौनक, शोभा, रवाई । बहसि—जोशमें, उत्साहमें । गुरज बरदार—गदा नामक शस्त्र उठा कर राजा या बादशाहके आगे चलने वाला, गुर्जरदार । अतमांम—एहतमांम ।

रावराजा'र अमीर, करै सेवा जोड़े कर ।
 अमल कीध धर इती, सरां तीरां सर संभर^१ ।
 उचरेस मंडै वाका अखर^२, केवी भाजै जिम कुरंग ।
 पतिसाह हुवौ^३ 'अजमाल' पह^४, दिली जेम तारा दुरंग ॥ २४१
 खत्रियां^५ गुर अंबखास, अनै पह^६ सभै अदालत^७ ।
 भुगतै सुख बह^८ भोग, सुपह^९ नित सायत^{१०} सायत^{११} ।
 रमणै रमण सिकार, सभै दळ पूर सकाजा ।
 नौबति वाजा निहंसि^{१२}, रजां ढांकै ग्रहराजा ।
 दळ उभळ^{१३} हुवै दसही दिसा, अलल खुरां धूजै उरंग ।
 पतिसाह हुवौ 'अजमाल' पह^{१४}, दिली जेम तारा दुरंग ॥ २४२
 पह^{१५} दाखल^{१६} पौसाक, अनै जवहर धर आए^{१७} ।
 एम^{१८} खबर^{१९} अनि पहां, ज्वाब पल^{२०} पल मझि जाए^{२१} ।
 आमदांनी^{२२} इक दोय^{२३}, अनै तीसरी अवाई ।
 दिली तणा दसतूर, सरा तोरा पतिसाई^{२४} ।
 गजसिंघ हरौ भारी गुमर, सरब करै असपक सुरंग ।
 पतिसाह हुवौ^{२५} 'अजमाल' पह^{२६}, दिली जेम तारा दुरंग ॥ २४३

१ ख. ग. संभर । २ ख. ग. अखिर । ३ ग. हुवो । ४ ख. ग. पौहो । ५ ख. ग. पत्रियां । ६ ख. पौहो । ग. पौहो । ७ ख. ग. अदालति । ८ ख. ग. बहो । ९ ख. सुपहो । १० ख. आयत । ११ ख. ग. सायति । १२ ख. ग. निहंसि । १३ ग. ऊभळ । १४ ख. ग. पौहो । १५ ख. ग. पौहो । १६ ख. दाखल । ग. दाखलि । १७ ख. आए । १८ ग. एम । १९ ग. खबर । २० ख. पलि पलि । २१ ख. जाए । २२ ख. ग. आमदानी । २३ ख. दोइ । ग. दोई । २४ ख. पतिसाही । २५ ग. हुवो । २६ ख. ग. पौहो ।

२४१. केवी - वृत्त । कुरंग - हरिया । अजमाल - महाराजा अजीतसिंह ।

२४२. अंबखास - आम-खास । सुपह - राजा । सायत - क्षण । रमण - शिकार खेलनेके मैदानमें । रमण - शिकार खेलनेको । नौबति - वाद्य विशेष । निहंसि - बज कर, ध्वनि कर । रजां - धूलि करणों । ढांकै - आच्छादित करता है । ग्रह राजा - सूर्य । अलल - घोड़ा । उरंग - शेषनाग । अजमाल - महाराजा अजीतसिंह ।

२४३. ज्वाब - जवाब, उत्तर । अवाई - आनेकी खबर (?) । हरौ - वंशज, पौत्र । भारी - बहुत । गुमर - गर्व । असपक सुरंग - असपक शफकतका बहुवचन है जिसका अर्थ अपनी अनुकम्पा या महरवानीसे सबको पूर्ण हर्षयुक्त करना है ।

बावसाहरो मुदफरखानं नै महाराजा अजीतसिंह पर अजमेर छोडाण सारू दळबळ सहित भेजणो

मंगळ क्रोध १ हंमद, साह प्रजळे १ दळ सब्बळ २ ।
 खेधक मुदफरखानं, मुगळ तेड़ियौ ३ महाबळ ४ ।
 तोरा फील तुरंग, बगसि ५ आरबा खजांनां ।
 तीस सहंस ६ ताबीन ७, असुर दळ दीध ८ अमाना ९ ।
 मुरतबौ १० हजारो हफत महि, पांन ग्रहंतां ११ पावियौ १२ ।
 इम विदा होय १३ मुदफरअली १४, 'अजण' भूप दिसि १५ आवियौ १६ ॥ २४४

महाराजा अजीतसिंहजीरौ महाराजकुमार अभयसिंहजीनूं मुदफरसू
 मुकाबलो करण सारू तैयार कर सांमां भेजणो

एम १७ सुणे 'अजमाल', आप ऊपरि दळ १८ आया ।
 दुभल १९ सभै २० दरबार २१, वडा भड २२ मंत्र २३ बुलाया ।
 तेज - पुंज तेड़ियौ २४, कुंवर भळहळ क्रामत्ती २५ ।
 ऊससतौ आवियौ २६, उरस छिबतौ २७ अभपत्ती २८ ।
 'अजमल' जुहार २९ बैठौ ३० 'अभौ', सनमुख ३१ तेज समीपियौ ३२ ।
 रघुनाथ जांणि रवि ३३ वंस रवि, दसरथि आगळ दीपियौ ३४ ॥ २४५

१ ग. प्रजुळे । २ ग. सबळ । ३ ख. ग. तेड़ियौ । ४ ग. महाबळ । ५ ख. ग. बगसि ।
 ६ ख. ग. सहस । ७ ख. ग. ताबीन । ८ ख. लोध । ग. दीध । ९ ख. अमानां । ग.
 अमानां । १० ख. मुरतबौ । ११ ख. ग्रहंता । १२ ख. ग. पावियो । १३ ग. होइ ।
 १४ ग. मुदफरली । १५ ख. दिसि । १६ ख. ग. आवियो । १७ ग. एम । १८ ख.
 दल । १९ ग. दुभले । २० ग. सभे । २१ ख. दरबार । २२ ख. भड । २३ ख.
 ग. मंत्री । २४ ख. ग. तेड़ियौ । २५ ख. ग. क्रामती । २६ ख. आवियो । ग.
 आवियो । २७ ख. बवतौ । ग. छिबतौ । २८ ख. अभपती । २९ ख. ग. जुहारि ।
 ३० ख. बैठो । ३१ ख. ग. सनमुख । ३२ ख. समीपियो । ग. समीपियो । ३३ ग.
 रघुवंस । ३४ ग. दीपियो ।

२४४. मंगळ - अग्नि, आग । प्रजळ - प्रज्वलित हुई । सब्बळ - शक्तिशाली, जबरदस्त ।
 तेड़ियौ - बुलाया । ताबीन - आज्ञाकारी लोग, ताबईन । मुरतबौ - पद, ओहदा ।
 अजणभूप - महाराजा अजीतसिंह ।

२४५. मंत्र - मन्त्री । तेज-पुंज - तेजस्वी । भळहळ - देदीप्यमान । क्रामती - कांति,
 दीप्ति । ऊससतौ - जोशपूर्ण होता हुआ । उरस - आसमान । छिबतौ - स्पर्श करता
 हुआ । अभपत्ती - महाराजकुमार अभयसिंह । अजमल - महाराजा अजीतसिंह ।
 जुहार - अभिवादन, अभिवादन कर के । अभौ - महाराजकुमार अभयसिंह ।
 जांणि - मातों । रवि वंस रवि - सूर्यवंशका सूर्य । आगळ - अगाड़ी । दीपियो -
 शोभित हुआ ।

उण मौसर 'अगजीत', तई भुज गयण सु तोलै^१ ।
 कर^२ मूछां^३ धरि कमध^४, बहस^५ तोलै^६ खग बोलै^७ ।
 सुज^८ दल^९ महमंदसाह^{१०}, असुर मुदफर खड़ि आए^{११} ।
 जियां^{१२} हूंत जुध करूं, चुरस सांमुहा^{१३} चलाए^{१४} ।
 सुणि कहै सुभड^{१५} मंत्री सकळ, लड़ण^{१६} बडौ मौसर^{१७} लभौ ।
 सुण^{१८} एम^{१९} वयण 'अगजीत' सुत, अजरायल बोले^{२०} 'अभौ' ॥ २४६

रहौ अठै महाराज, आप आणंद उपाए^{२१} ।
 बीड़ौ^{२२} मो बगसिजे^{२३}, जडूं^{२४} मुदफर हूं^{२५} जाए^{२६} ।
 जुडै^{२७} त मारूं जवन^{२८}, भांति^{२९} बल^{३०} काय भजाऊं ।
 करि भट खंड कराळ^{३१}, चाक खंड^{३२} खंड चढाऊं^{३३} ।
 पुर नारनौळ साहिजांपुरां^{३४}, दलि^{३५} लूटूं^{३६} दसदेसनूं ।
 अजमेर सोच दियूं^{३७} उवर^{३८}, दिल्ली सोच दिलेसनूं ॥ २४७

१ ख. तोले । २ ख. करि । ३ ख. ग. मूछां । ४ ख. ग. कमध । ५ ग. बहसि ।
 ६ ख. ग. तोले । ७ ग. बोलै । ८ ख. ग. सुजि । ९ ख. दल । १० ख. ग. महमद-
 साह । ११ ग. आए । १२ ख. जीयां । ग. जीया । १३ ग. सामुहा । १४ ग.
 चलाए । १५ ख. सुभड । १६ ख. लड़ण । १७ ग. मौसर । १८ ख. भण । १९ ग.
 एम । २० ख. बोले । २१ ख. ऊपाए । ग. उपाए । २२ ख. बीडा । ग. बीड़ा ।
 २३ ख. बरगसिजै । ग. बगसिजै । २४ ख. जुडूं । ग. जुडू । २५ ग. हूत । २६ ग.
 जाए । २७ ग. गुडे । २८ ख. जव । २९ ख. ग. भांजि । ३० ख. बल । ३१ ख.
 कराळ । ३२ ख. ग. खट । ३३ ग. चडाटांऊ । ३४ ग. साहिजापुरां । ३५ ख.
 दलि । ३६ ग. लूटू । ३७ ख. ग. जिमछूं । ३८ ख. ग. उवरि ।

२४६. मौसर - अवसर, मौका । अगजीत - महाराजा अजीदसिंह । तई - (?) ।
 गयण - प्रकाश । बहस - जोशमें आ कर । महमंदसाह - बादशाह मुहम्मदशाह ।
 असुर - मुसलमान । मुदफर - मुजफ्फरअलीखां । चुरस - ठीक (?) । सांमुहा -
 सम्मुख, सामने । बडौ - बड़ा । लभौ - प्राप्त हुआ, मिला । अजरायल - जबर-
 दस्त, शक्तिशाली । अभौ - महाराजकुमार अमयसिंह ।
 २४७. जडूं - पकड़ लूं, बंधनमें डाल दूं । दिलेसनूं - बादशाहको ।

महाराजकुमारनूं जोसमें करणौ

सुत स्याबासे^१ सुपह, पांन^२ दीधा निज पांणे^३ ।
 कम^४ धरि^५ कसे कटार, 'अजै' बह^६ छक^७ चित आणे^८ ।
 साथ दिया^९ तिण समै, उभै मिसलां उमरावां ।
 मंत्री रुघपति मोहरि^{१०}, सूर ध्रम^{११} अचळ सभावां^{१२} ।
 कथ कहै 'अभौ' मदफर^{१३} किस्सू^{१४}, चढै^{१५} धकै जुध^{१६} चाहनूं ।
 जो^{१७} करै^{१८} आय पतिसाह जुध, पकडू^{१९} तौ पतिसाहनूं ॥ २४८

तई^{२०} साज माजि तुरग^{२१}, आंणि पंडवां अधारे ।
 मेघाडंबर^{२२} मदफर^{२३}, सभै^{२४} माहुतां^{२५} सिंगारै^{२६} ।
 साथ तुरां सभि साथ^{२७}, पहर^{२८} समहर पौसाकां ।
 साबळ^{२९} पकड़े सूर, चढे दारण वृप चाकां ।
 हल्ले बहि^{३०} भिल्ले हमस^{३१}, जळध उभल्ले करि जुवा ।
 दरगाह 'अजण' विमरीर^{३२} दळ, हुय तयार हाजर^{३३} हुवा ॥ २४९

१ ख. सावा । ग. सावा । २ ख. पांण । ३ ख. पांणे । ४ ख. ग. करि । ५ ख. मरि । ६ ख. रहौ । ७ ख. बक । ८ ख. आणे । ९ ख. ग. दीया । १० ख. मोहोरि । ग. मोहौरि । ११ ग. धरम । १२ ख. सुभावां । ग. सुभावा । १३ ख. ग. मदफर । १४ ख. किस्सू ग. किस्सू । १५ ख. ग. चढै । १६ ग. जध । १७ ख. ग. जो । १८ ख. करि । १९ ख. पकडू । २० ख. तई । २१ ख. ग. तुरां । २२ ख. मेघमंदर । ग. मेघमंडर । २३ ख. मदफरां । ग. मदफरा । २४ ख. ग. सभै । २५ ख. ग. माहुतां । २६ ग. सिंगारे । २७ ग. साज । २८ ख. ग. पहरि । २९ ख. साबल । ३० ख. बहीर । ग. बहीर । ३१ ख. ग. हमस । ३२ ख. विमलीर । ३३ ग. हाजरि ।

२४८. स्याबासे — शाबास कहा, धन्य-धन्य कह कर । सुपह — राजा । पांणे — हाथसे । अजै — महाराज अजीतसिंह । छक — जोश । रुघपति — भंडारी रघुनाथसिंह । मोहरि — अगाड़ी । अभौ — महाराजकुमार अभयसिंह । मदफर — मुजफ्फरअली । किस्सू — क्या ।

२४९. साज...तुरंग — घोड़े पर चारजामा कस कर । मेघाडंबर — छत्र विशेष । समहर — युद्ध । साबळ — माला विशेष । जळध — जलधि, समुद्र । उभल्ले — उमड़े । अजण — महाराजा अजीतसिंह । विमरीर — जबरदस्त ।

महाराजकुमार अभयसिंहजीरी तैयारीरौ वरणण

सभि 'अजणहूँ' सलाम, ताम^१ मल्हपे 'अभपत्ती' ।
 उरस भुजां तोलियौ, करे जप महा सकती ।
 खुटहड़ गज जिम^२ विखम, भरे^३ पौरस भाळाहळ ।
 पय रकेब^४ धरि पमंग^५, हरख^६ चढियौ^७ भाळाहळ ।
 हुय^८ तबल^९ बंब^{१०} दळ^{११} सभिहले, दुगम गरद उडि नभ दिसौ ।
 उण वार रूप 'अभमाल' रौ, जोम देह धरियां^{१२} जिसौ ॥ २५०

छंद हणूफाळ

इम चढे कंवर अभंग, जगजीत करण^{१३} जंग ।
 सजि^{१४} साथ दळ बह^{१५} साज^{१६}, रुवनाथ मंत्री^{१७} राज ॥ २५१
 वड वडा भड़ विकराळ, कमधज्ज चढ़ि कळचाळ^{१८} ।
 धर धूजि अस^{१९} नग धोम, वणि गरद धूंधळि^{२०} वोम ॥ २५२
 भिळे^{२१} तिमर ढंकीयौ^{२२} भांण, नद घोर घण नीसांण ।
 हुवि^{२३} कमळ^{२४} सेस हजार, पड़ि कोम सीस^{२५} अपार ॥ २५३

१ ग. ताम । २ ख. ग. जिमबोख । ३ ख. ग. भरे । ४ ख. ग. रकेब । ५ ख. पमंगे । ग. पमंगि । ६ ख. ग. हरखि । ७ ख. चढीयो । ८ ख. ग. होय । ९ ख. तबल । १० ख. बंब । ११ ख. दल । १२ ख. ग. धरीयां । १३ ग. कारणि । १४ ख. ग. सभि । १५ ख. बहो । ग. बहो । १६ ग. साभ । १७ ख. ग. मंत्रीय । १८ ख. ग. कलिचाल । १९ ख. ग. असि । २० ख. धूंधल । ग. धूंधळ । २१ ख. ग. भिलि । २२ ख. ढकीयो । ग. ढंकीयो । २३ ख. ग. हुवि । २४ ख. कमल । २५ ख. पोठ । ग. पोव ।

२५० अजणहूँ — महाराजा अजीतसिंह । मल्हपे — छलांग भरी, कूदे । अभपत्ती — महाराज-कुमार अभयसिंह । खुटहड़ — वीर । पौरस भाळाहळ — पुरुषार्थसे लबालब भरा हुआ (?) । पय — पैर । रकेब — रकाब । पमंग — घोड़ा । भाळाहळ — जोशपूर्ण (?) । तबल — बड़ा ढोल । बंब — नगाड़ा । दुगम — दुर्गम । गरद — धूलि । नभ — आकाश । दिसौ — ओर । अभमाल — महाराजकुमार अभयसिंह । जोम — जोश । जिसौ — जैसा ।
 २५२ विकराळ — भयंकर, जबरदस्त । कळचाळ — युद्ध । अस — घोड़ा । नग — पैर । वणि...वोम — आकाश-धूलिसे आच्छादित हो गया ।
 २५३ तिमर — अन्धेरा । ढंकीयो — आच्छादित कर दिया । भांण — सूर्य । नद — नाद, ध्वनि । नीसांण — वाद्य विशेष । कमळ — शिर । सेस — शेषनाग । कोम — कच्छ-पावतार ।

भरि^१ कोम कसकत भार, ढह^२ जात भार अढार ।
 वडि विखम पाहड़ वाट, घण हुवै अवघट^३ घाट ॥ २५४
 धर सिखर^४ थरहर धाम, तुटि^५ नदी सर जळ तांम ।
 असपती धर औद्राक^६, चक च्यार चढिया^७ चाक ॥ २५५
 ऊडंत^८ खग असमाण, पडि गरद छूटत पाण^९ ।
 परइंद नाग अपार, घण धोम वोम^{१०} संघार ॥ २५६
 आमुज्झि^{११} म्रग^{१२} अकुळाइ^{१३}, पडि जाय धर म्रत^{१४} पाइ ।
 गजगाज^{१५} हींस तुरंग, दहलंत साह दुरंग^{१६} ॥ २५७
 त्रंब^{१७} गजर तूर त्रहाक^{१८}, ह्वै^{१९} कळळ हूंकळ^{२०} हाक ।
 तपवंत खूटत^{२१} ताळ^{२२}, वणि जांणि निस वरसाळ^{२३} ॥ २५८
 हुय^{२४} धाम जळ विरहक्क, चय तांम छंडत चक्क ।
 सभि थाट असपति साल, इम आवियौ^{२५} 'अभमाल' ॥ २५९

१ ख. ग. भार । २ ख. टह । ३ ख. अणघट । ४ ख. ग. सिषर । ५ ख. ग. त्रुटि ।
 ६ ग. औद्राक । ७ ख. ग. चढीया । ८ क. उडंड । ९ ख. ग. प्राण । १० क. बोम ।
 ११ ख. आमुझि । ग. आमुझि । १२ ख. ग. मृग । १३ ख. ग. अकुलाय । १४ ख.
 ग. मृत । १५ ख. ग. गजगाह । १६ ख. दुरंत । १७ ख. त्रंब । १८ ग. त्रहाक ।
 १९ ख. ग. हुव । २० क. हुकल । ग. हुंकळ । २१ ख. ग. छूटत । २२ ख. ताल ।
 २३ ख. वरसाल । २४ ख. ग. होय । २५ ख. ग. आवीयो ।

२५४. भार अढार — अष्टादश भार वनस्पति, आवू पर्वतका एक नाम । विखम — विषम ।

वाट — मार्ग । अवघट घाट — ऊँचे-नीचे, ऊबड़-खावड़ स्थान ।

२५५. औद्राक — भय, डर, उद्रेक । चक...चाक — चारों दिशाएँ चाक पर चढ़ गईं, कंपाय-
 मान हो गईं ।

२५६. परइंद नाग — सपक्ष सर्प । वोम — व्योम ।

२५७. हींस — घोड़ोंकी हिनहिनाहट । तुरंग — घोड़ा । दहलंत — भयभीत, कंपायमान ।
 साह — बादशाह । दुरंग — दुर्ग, गढ़ ।

२५८. त्रंब — नगाड़ा । गजर — आवाज । तूर — वाद्य विशेष । त्रहाक — ध्वनि ।
 कळळ...हाक — सेनाका कोलाहल व घोड़ोंके हिनहिनाहटकी सम्मिलित ध्वनि हो
 रही है ।

२५९. जळ विरहक्क — जलविहीन । चय — दिग्गज, दिग्पाल । चक्क — दिशा । सभि —
 सुसज्जित हो कर । थाट — सेना । असपति — बादशाह । साल — शल्य । अभमाल —
 महाराजकुमार अभयसिंह ।

इम खबर^१ मुदफर आय, जुध आंगमिण^२ नह जाय ।
 इम सुणे दळ औसाप, तन मुगळ खाधी ताप ॥ २६०
 बिध बाध^३ जिम वधबाव^४, पलटंत गज पछ पाव ।
 इम गाज सुणि 'अभमल्ल'^५, गह छाडि थाट मुगळ ॥ २६१
 मुदफरखानरौ भाग जाणौ
 भजि गया विण^६ गजभार, हय थाट तीस हजार^७ ।
 मिट^८ लाज छाडि गुमान, खडि गयौ मुदफर खान^९ ॥ २६२
 बहसतौ खाग संबाहि^{१०}, मारतौ तो पल^{११} मांहि ।
 'अभमाल' विरद उदार, लागै न भागां लार ॥ २६३
 परि लसे सारंग^{१२} पीव, जिण^{१३} वचे मुदफर जीव ।
 इम करे विरद अपाल^{१४}, मन धारि छक 'अभमाल' ॥ २६४
 धर साह लूटण धाव, दळ हले जिम दरियाव ।
 बहसंत खांधीबंध^{१५}, कळिचाळ सूर कमंध ॥ २६५
 महाराजकुमाररौ संरमें आग लगाणी तथा माल लूटणौ
 अति धरै धक^{१६} अणभंग, जोधार मंडण^{१७} जंग ।
 जोजनां^{१८} तीन जयार^{१९}, वणि^{२०} हले दळ विसतार^{२१} ॥ २६६

१ ख. खबरि । ग. खबरि । २ क. अगमिण । ख. आंगमण । ३ ख. बाध । ४ क. वधिबाव । ग. वधबाव । ५ ख. अभमल । ६ ख. ग. विणि । ७ ख. हजार । ८ ख. मिटि । ९ ख. गांन । १० ख. संबादि । ११ ग. पळ । १२ ग. सारंगि । १३ ख. ग. जिणि । १४ ग. अपाल । १५ ख. बांधीबंध । १६ ख. ग. धक । १७ ख. रमण । १८ ख. ग. जोजनां । १९ ख. ग. जियार । २० ख. ग. पणि । २१ ग. विस्तार ।

२६०. मुदफर — मुजफ्फरअलीखां । आंगमणि — वशमें, अधिकारमें । औसाप — शौर्य, पराक्रम । ताप — भय, डर ।
 २६१. बिध — विधि, प्रकार । वधबाव — व्याघ्रके महककी हवा । पछ — पीछा । अभमल्ल — महाराजकुमार अभयसिंहजी । गह — गर्व ।
 २६२. गजभार — हाथी दल । थाट — समूह, दल । खडि — चला कर । मुदफर खान — मुजफ्फरअलीखां ।
 २६३. बहसतौ — जोशपूर्ण । संबाहि — सम्हाल कर, धारण कर । लार — पीछे ।
 २६४. अपाल — अभयवित्त, अत्यन्त ।
 २६५. धाव — दाव, पेच । दरियाव — समुद्र । बहसंत — जोशपूर्ण होते हैं । खांधीबंध — राठोड़ । कळिचाळ — युद्ध ।
 २६६. धक — प्रबल इच्छा । अणभंग — क्षीर । मंडण — करनेको । जोजनां तीन जयार — तीन योजन तक ।

आवैस धकै अमास, उडि जाय गढ़^१ असि हास ।
लूटंत संपत्ति^२ लाख, सरदांण ह्वै^३ घण साख ॥ २६७
करि तहसमहसां केक, असपत्ति सहर अनेक ।
महि साह सहरां मौड़, ठहराव सोबा^४ ठौड़ ॥ २६८
सिप्पाह^५ वसै कमंध, बावीस^६ हसती-बंध^७ ।
निज नारनौळह नाम, धुर तेग - बंदा^८ धाम^९ ॥ २६९
अनि लोक संपत्ति इंद, जिण मांहि दळ - वाजंद^{१०} ।
दइवांण^{११} सोबादार^{१२}, पाठांण^{१३} सूर अपार ॥ २७०
अ^{१४} सहर को^{१५} ऊफांण^{१६}, 'अभमाल' घेरे^{१७} आण ।
चहुं^{१८} तरफ थाट चलाय, लागाय वळ वळ लाय ॥ २७१
धुबि^{१९} भाळ^{२०} भळहळ^{२१} धोम, हणमंत लंक जिम होम ।
जाळीस सबळ पट जागि, आलीस आलिय आगि ॥ २७२
खट^{२२} छपर चंदण^{२३} खाट, प्रजळंत^{२४} चंदण कपाट ।
लगि भाळ^{२५} प्रजळत^{२६} लाख, खंभ पाट चंदण खाख ॥ २७३

१ क. गड । ग. गडि । २ ख. असपत्ति । ३ ग. हुवै । ४ ख. सोबा । ५ ख. ग. सिप्पाह । ६ ख. बावीस । ७ ख. हस्तीबंध । ग. हस्तीबंध । ८ ख. बंधां । ग. बंधा । ९ ख. धाम । १० ख. ग. वाज्यंद । ११ ख. दइवांण । १२ ख. सूबादार । ग. सूबा-दार । १३ ग. पाठाण । १४ ख. ग. वो । १५ ख. ग. कीध । १६ ख. ग. उफांण । १७ ग. घेरे । १८ ख. चहुं । ग. चहु । १९ ख. ग. धुबि । २० ख. भाल । २१ ख. खलहल । २२ ख. ग. वट । २३ ख. चंद । २४ ख. प्रजलंत । २५ ख. भाल । २६ ख. प्रजलत ।

२६७. आवैस - आवेश, उत्साह । सरदांण - (?) ।

२६८. तहसमहसां - तहस-तहस, नाश । महि - पृथ्वी । सोबा - सुबा, प्रान्त ।

२६९. सिप्पाह - योद्धा (?), सेना । हसती-बंध - बड़ा सरदार जिसके यहाँ हाथी सवारीमें काम लिया जाता हो ।

२७०. इंद - इन्द्र । वाजंद - घोड़ा । दइवांण - महान, वीर । सोबादार - सुबादार, प्रान्तपति ।

२७१. थाट - सेना, दल ।

२७२. धुबि - प्रज्वलित हो कर । भाळ - ज्वाला, आगकी लपट । धोम - अग्नि, आग । आलीय - बढ़िया, श्रेष्ठ ।

२७३. भाळ - ज्वाला, आगकी लपट । खंभ = स्कंभ - खंभा ।

घड़^१ पड़ै सभि घमसांण, प्रजळंत^२ मुगळ^३ पठांण ।
 रोगनी खंभ चितरांम, विकराळ^४ भाळ^५ विरांम ॥ २७४
 उडि पड़ै पाट दिवाळ, लगि लोल पाथर लाल ।
 धड़ड़ंत^६ भाळ^७ धौमाल, कड़ड़ंत^८ बीज कराळ ॥ २७५
 कटहड़ा^९ मंडप कराळ, झळि काठ वभकत भाळ^{१०} ।
 हिम हीर जळि^{११} हिंडलाट, अंगीर दमंग उपाट ॥ २७६
 इम ठांम ठांम अगन्नि^{१२}, गहतंत लगन^{१३} गगन्नि^{१४} ।
 किरि^{१५} मिळै रवि हितकारि, पावक्क बांह^{१६} पसारि ॥ २७७
 इम जळे घण^{१७} आगार^{१८}, जळियौ^{१९} न वीच^{२०} बजार^{२१} ।
 उण ठौड़ लोक अपार, हलि धसे लूटणहार^{२२} ॥ २७८
 सुणि^{२३} लूट पहल सिपाह, असि^{२४} सुतर लूटि^{२५} अथाह ।
 अति लीध ससत्र^{२६} अनोप, तहं^{२७} झिलम बगततर^{२८} टोप ॥ २७९

१ ख. ग. घण । २ ख. प्रजलत । ३ ख. मुगल । ४ ख. विकराला । ५ ख. झाल ।
 ६ ख. धड़ड़ंत । ७ ख. झाल । ८ ख. कड़ड़ंत । ९ ख. कटहड़ा । १० ख. झाल ।
 ११ ख. जले । १२ ग. अगिनि । १३ क. लगनि । १४ क. प्रगनि । १५ क. करि ।
 १६ ख. बांह । १७ ख. घणा । १८ ख. अगार । ग. अंगार । १९ ख. जलीयौ । ग.
 जळीयौ । २० ख. ग. वीचि । २१ ख. बजार । २२ ख. आस । २३ ख. ग. सुजि ।
 २४ ख. असौ । २५ ख. ग. लीध । २६ ख. ग. ससत्र । २७ ख. तह । ग. तहा ।
 २८ ख. बगततर ।

२७४. घड़-सेना । घमसांण-युद्ध । रोगनी-रोगनी, चिकना । विरांम-निरन्तर ।
 २७५. पाट-मकानके छतके पथरोंकी दृढ़ताके लिए उनके नीचे दीवारों पर लगाया जाने
 वाला लम्बोत्तरा पथर । धड़ड़ंत-ध्वनि करते हुए अग्निका प्रज्वलित होना ।
 धौमाल-अग्नि, आग ।
 २७६. कटहड़ा-कटघरा । वभकत-भभकती हैं । हीर-लकड़ीका मध्य ठोस भाग ।
 हिंडलाट-(?) । दमंग-छोटे-छोटे अग्नि-कण ।
 २७७. किरि-मानों । रवि-सूर्य । पावक्क-अग्नि ।
 २७८. आगार-भवन, घर ।
 २७९. सुतर-ऊँट । झिलम बगततर-एक प्रकारका कवच जो युद्धके समय शिर पर धारण
 किया जाता है, शिरस्त्राण ।

मिळ^१ थाट लुटे^२ अमीर, हिम जड़ित भूखण हीर ।
तारख^३ सरखत वितान, मुकेस^४ जरियसि मान ॥ २८०
करि रजत कंचन केक, नागजड़ित वंस अनेक ।

..... ॥ २८१
नग - जड़ित सुजड़ नराज, वडवडा मदफर^५ वाज^६ ।
पौसाक ऊंच अपार, भलि^७ लुटे द्रव्य^८ भंडार ॥ २८२
वाजार^९ लुटत वजाज^{१०}, तखतास तहतह ताज ।
वधि पोत कीमति वेस^{११}, मझि कारचौभ मुकेस^{१२} ॥ २८३
सिकलात मुखमल खास, तहताज अतलस तास ।
खुल^{१३} इलाइच खिमखाप^{१४}, सुजि मुलमुला^{१५} स्त्रीसाप ॥ २८४
बासता^{१६} भिड़वच^{१७} बंध, सूपेत माल सुबंध^{१८} ।
कसबीस^{१९} चीरा कौर, अंगरेज फिरंगी और ॥ २८५

१ ख. ग. मिलि । २ ग. लूटे । ३ ख. ग. तारक । ४ ख. ग. मुक्केस । ५ ख. मव-
भर । ६ ख. ग. बाज । ७ ख. मिलि । ग. मिळि । ८ ग. द्रव्य । ९ ख. वाजार ।
१० ख. वजाज । ११ ख. वेसि । ग. बेसि । १२ ख. ग. मुकेसि । १३ ख. ग. बुलि ।
१४ ख. ग. किमखाप । १५ ग. मुषमल । १६ ख. ग. बासता । १७ ग. भिड़वच ।
१८ ख. सबंध । १९ ख. कसबीस ।

२८०. अमीर - धनाढ्य । हिम - सोना, स्वर्ण । हीर - हीरा । मुकेस - चांदी सं नेके चौड़े
तार, इन तारोंका बुना कपड़ा, मुक्केस । जरियसि - चांदी सोनेके तार जिन पर
सुनहला मुलम्मा हो ।

२८१. रजत - चांदी, रोप्य । कंचन - स्वर्ण, सोना ।

२८२. सुजड़ - कटार । नराज - तलवार । मदफर - हाथी ।

२८३. पोत - वस्त्र, रेशम । वेस - पहनावा । कारचौभ - लकड़ीका चौखटा जिसमें कपड़ा
कस कर कसीदेका काम होता है, जरदेजी, कसीदाकारी ।

२८४. सिकलात - बहुमूल्य ऊनी बनात, सिकलात । तहताज - (?) । अतलस -
एक प्रकारका बहुमूल्य रेशमी वस्त्र विशेष, अतलस । तास - एक प्रकारका सुनहले
तारोंका जड़ाऊ कपड़ा । खुल - (?) । इलाइच - एक प्रकारका बहुमूल्य कपड़ा ।
खिमखाप - खीनखाप, एक प्रकारका बहुमूल्य कपड़ा । मुलमुला - एक प्रकारका
पतला बारीक सूतसे बुना कपड़ा विशेष । स्त्रीसाप - एक प्रकारका बहुमूल्य कपड़ा ।

२८५. बासता - एक प्रकारका लाल रंगका कपड़ा । भिड़वच - एक प्रकारका कपड़ा ।
सूपेत - सफेद । कसबीस - (?) । चीरा - पगड़ी (?) । कौर - गोटा, दिनारी ।

भर मौल^१ नीलक भार, आसावरीस उदार ।
 दुल्लीच गिलम दुसाल, थिरमा सफंभ^२ सुथाळ^३ ॥ २८६
 महि^४ माल बह^५ पसमीर, कर उतन जे^६ कसमीर ।
 इकतार पोत असाधि, विरहांनपुर रंग बाधि ॥ २८७
 बह^७ माल सामंद बीट, छिबदार^८ वंदर छींट^९ ।
 गुलदार रंग गहीर, चित्रकार नाटी चोर ॥ २८८
 सुजि तार^{१०} रेसमसूत, अति रंग छबि^{११} अदभूत ।
 भर लुटत कीमति भार, इक^{१२} कपड़ गंज अपार ॥ २८९
 पासार हट्ट प्रियोग, लूटति^{१३} किंकर लोग ।
 सब^{१४} चीज मेवा सोय, कजि भार न लिए कोय ॥ २९०
 बावना^{१५} चंदन^{१६} बोह^{१७}, महि डमरअंबर^{१८} मोह^{१९} ।
 किसतूर^{२०} केसर^{२१} केक, असि ऊंट^{२२} भरत अनेक ॥ २९१

१ ख. मोर । २ ख. ग. सुपंभ । ३ ख. ग. सुसाल । ४ ख. पहि । ५ ख. बहौ ।
 ग. बहौ । ६ ख. ग. जै । ७ ख. ग. बह । ८ ख. ग. छिविदार । ९ ख. ग. छीट ।
 १० क. तोर । ११ ख. ग. छवि । १२ क. ईक । १३ ख. ग. लूटति । १४ ख. ग.
 अब । १५ ख. बावना । १६ ख. चंदण । १७ ख. बोह । ग. बौह । १८ ख. ग.
 अंबर । १९ क. मोह । २० ख. कस्तूर । ग. कस्तूरि । २१ ख. ग. केसरि । २२ ख.
 ऊंट ।

२८६. नीलक - (?) । आसावरीस - एक प्रकारका सूती कपड़ा । दुल्लीच - एक
 प्रकार का कालीन अथवा दुली ? गिलम - बहुत मोटा मुलायम गद्दा या बिछौना,
 ऊनका बना हुआ नरम और चिकना कालीन । दुसाल - एक प्रकारका ओढ़नेका
 कीमती कपड़ा । थिरमा - (?) । सुथाळ - (?) ।

२८७. पसमीर - एक प्रकारका बहुत बढ़िया ऊनी कपड़ा जो बड़ा मुलायम और मजबूत होता
 है और कश्मीरमें ही सबसे अच्छा बनता है, पश्मीना । इकतार - (?) । पोत -
 वस्त्रकी मोटाई । बाधि - विशेष ।

२८८. बीट - टापू । छिबदार - सुन्दर । छींट - एक प्रकारका कपड़ा । गुलदार - एक
 प्रकारका कसीदा अथवा इस प्रकारके कसीदा वाला कपड़ा । नाटी चोर - (?) ।

२९०. किंकर - सेवक ।

२९१. बावना चंदन - सर्वश्रेष्ठ चंदन । बोह - खुशबू ।

परिपूर^१ लच्छि प्रताप, सुजि लुटत^२ हाट^३ सराप^४ ।
 बह^५ मौहर रिपिया^६ बांधि^७, सिर धरे^८ चोमट^९ सांधि ॥ २६२
 ग्रहि^{१०} अमीरस^{११} बेगार^{१२}, हम्माल जेम हजार ।
 तदि जंवहरी^{१३} हट तांम, जंवहार^{१४} लूटिय^{१५} जांम ॥ २६३
 अति किमति^{१६} हीर उदार, माणिक^{१७} लाल मंभार ।
 सभि सीप^{१८} ओपति सिध^{१९}, बड वार मुकत^{२०} अविध^{२१} ॥ २६४
 कलरंग घाट कुमाच, पन्नास^{२२} नीलम पाच ।
 संग रंग ढंग सुडाल^{२३}, पुखराज अन्य^{२४} प्रवाल ॥ २६५
 लसणिया^{२५} नील भलक्क^{२६}, दुति^{२७} वंस^{२८} गोमीदक्क^{२९} ।
 चत्र असी जाति उचार, जिण वार लूटि^{३०} जुहार^{३१} ॥ २६६

१ ख. परपूर । ग. पपुरि । २ ख. ग. लुटत । ३ ख. हाठ । ४ ख. सराफ । ५ ख. बौहौ । ग. बौहौ । ६ ख. हपैया । ७ ख. बांधि । ८ ग. धरै । ९ ख. ग. चोमट । १० ग. ग्रहे । ११ क. अमीरस । ग. अमीर । १२ ख. वेगार । १३ ख. जंवहरी । ग. जवहरी । १४ ख. जवहार । १५ ख. लूटीया । ग. लुटीया । १६ ग. कामति । १७ ग. माणिक । १८ ख. ग. सीप । १९ ख. सिध । ग. संधि । २० ख. मुकति । २१ ग. अविध । २२ ख. पन्नास । ग. पनांस । २३ ख. ग. सुडाल । २४ ख. अन्य । ग. अने । २५ ख. ग. लसणीया । २६ ख. भलक्क । २७ ख. ग. जति । २८ ख. ग. वंस । २९ ग. गोमीदक्क । ३० ग. लूटै । ३१ ख. ग. जंहार ।

२६२. लच्छि—लक्ष्मी । सराप—सोने-चांदीका व्यापारी, सराफ । मौहर—स्वर्ण-मुद्रा विशेष । चोमट—(?)

२६३. बेगार—बलात् कराया हुआ काम । जंवहरी—जवाहरात बेचने या परखने वाला जोहरी । हट—हाट, दुकान । जंवहार—जवाहरात ।

२६४. हीर—हीरा । मुकत—मोती । अविध—बिना छेद किया हुआ ।

२६५. कलरंग—(?) । घाट—प्रकार । कुमाच—एक प्रकारका कपड़ा । पन्नास—पन्ना । नीलम—नीले रंगका रत्न, नीलमणि । पाच—(?) ।

२६६. लसणिया—धूमिल रंगका एक रत्न विशेष या बहुमूल्य पत्थर, रुद्राक्षक । नील—(?) । भलक्क—(?) । वंस—(?) । गोमीदक्क—एक प्रसिद्ध मणि जिसकी गणना नौ रत्नोंमें की जाती है, गोभेदक । चत्र—जाति—चौरासी प्रकारके । जुहार—जवाहरात

लूटे^१ न ग्रेह अलीण, दुजराज न लुटे दीण ।
 अनि लूटि सब^२ असहास^३, सकि^४ नार-नोलह^५ नास ॥ २६७
 सुणिया^६ न दीठा सोय, पहरंत^७ जंवहर^८ पोय ।
 अति हुवा द्रव्य^९ उपाव, रंक हुता स हुवा राव ॥ २६८
 इळ^{१०} कनक मौ^{११} र^{१२} उडाय, वधि जोम तबल^{१३} वजाय ।
 दे साह रै उर^{१४} दाह, इम आवियौ^{१५} 'अभसाह' ॥ २६९

बादसाहरी भयभीत होणो

इम आप डेरां ओप, दिन रात^{१६} वसियौ^{१७} दोप ।
 बळ^{१८} सभेदळ^{१९} विकराळ^{२०}, चढ़^{२१} हले^{२२} कजि धक^{२३} चाळ^{२४} ।
 पड़^{२५} दिली तांम प्रकार, पड़ि^{२६} भार जमना^{२७} पार ।
 जवनेस लोक जितोक^{२८}, चळचळे चंदन^{२९} चौक^{३०} ॥ ३०१
 धूजंत धर तन धीर, अनि भूप सरब^{३१} अमीर ।
 दिल सोच महमंद दाह, हुय कंप^{३२} उर पतिसाह ॥ ३०२

१ ख. ग. लूट । २ ख. श्रव । ग. श्रब । ३ ख. अनहास । ४ क. ससि । ५ ख. नार-नोलह । ग. नार-नौलह । ६ ग. सुणीयां । ७ ग. पहरत । ८ ख. जवहर । ९ ख. ग. द्रव । १० ख. इल । ११ ख. ग. मोर । १२ ख. तबल । १३ ग. उरि । १४ ख. ग. आवीयौ । १५ ग. रति । १६ ख. वलीयौ । १७ ख. ग. बल । १८ ख. दल । १९ ख. विकराल । २० ख. ग. चठि । २१ ग. हलै । २२ ख. ग. घल । २३ ख. ग. चाल । २४ ख. पडि । ग. पड़ि । २५ ख. पडि । २६ ग. जमनां । २७ ख. ग. जितौक । २८ ख. ग. चंदन । २९ क. चौक । ३० ग. सराब । ३१ ग. केऐ ।

२६७. अलीण - अग्राह्य, अनुचित । दुजराज - द्विजराज, ग्राह्य । दीण - दीन, गरीब ।
 २६८. पहरंत - पहिनेते हैं, धारण करते हैं । जंवहर - जवाहरात, रत्न । उपाव - उपाय ।
 रंक - गरीब । हुता - थे । राव - राजा, समृद्ध ।
 २६९. इळ - पृथ्वी । कनक - स्वर्ण, सोना । मौ^{११} र - मुहर, मोहर । जोम - जोश ।
 तबल - वाद्य विशेष । अभसाह - महाराजकुमार अभयसिंह ।
 ३००. ओप - शोभायमान हुए । दोप - (?) । कजि - लिए । धक चाळ - युद्ध ।
 ३०१. जवनेस - यवनेश, बादशाह । जितोक - जितना । चळचळे - कम्पायमान हुये ।
 चंदन चौक - चांदनी चौक ।
 ३०२. अनि - अन्य । कंप - भय, डर ।

ह्वै^१ करत कूक^२ हजार, पड़ि^३ ठौड़ ठौड़^४ पुकार ।
 दळ^५ दहल^६ ऊजड़ि^७ देस, चढ़ि तटां^८ लोक चलेस ॥ ३०३
 घण सोर जोर न^९ घात^{१०}, पड़ि दिली मझि उतपात ।
 धुजि मीरजादा धाम, बेसुतर^{११} भाजत^{१२} बांम^{१३} ॥ ३०४
 दळ दिली कळळ^{१४} दरोळ^{१५}, चढ़ि वेगमां चख^{१६}-डोल^{१७} ।
 तिण वार दळ^{१८} सुरतांण, खळ^{१९} भळे^{२०} इम खुरसांण ॥ ३०५
 रुघ तपत बांण^{२१} सधार, खळ^{२२} भळे^{२३} जिम जळ^{२४} खार ।
 इम खड़े बाज^{२५} अलंग^{२६}, आविया दळ अणभंग ॥ ३०६

साहज्यांपुर लूटणौ

जवनेस नगर सजोस, पुर साहिजां सिर पोस^{२७} ।
 दळ^{२८} पूर सूर दुबाह, सो घेरियौ 'अभसाह' ॥ ३०७
 जुध करे हण जवनांण^{२९}, पाड़ेस^{३०} मुगळ^{३१} पठांण^{३२} ।
 जालेस^{३३} पुर जिणवार, होळिका^{३४} जांणि हजार ॥ ३०८

१ ख. हुव । ग. हुब । २ ख. कूक । ३ ख. पड़ि । ४ ख. वोड़ । ५ ख. ग. दल ।
 ६ ख. ग. दहल । ७ ख. ग. उजड़ । ८ ग. तहां । ९ ख. ग. जोरनि । १० ख.
 धाम । ११ ख. ग. वेसतर । १२ ग. भाजंत । १३ ख. वाम । १४ ख. कलल ।
 १५ ख. दरोल । १६ ख. ग. चक । १७ ख. ग. डोल । १८ ख. ग. दल । १९ ख.
 खल । २० ख. भले । २१ ख. बाण । ग. बांण । २२ ख. खल । २३ ख. भले ।
 २४ ख. ग. जल । २५ ख. ग. बाज । २६ ख. ग. अलंग । २७ ग. पौस । २८ ख.
 दल । २९ ख. जवनाण । ३० ख. पाडेस । ३१ ग. मुगल । ३२ ख. पठाण ।
 ३३ ख. ग. जालेस । ३४ ख. ग. होलिका ।

३०३. कूक — ब्राहि-ब्राह्मिकी पुकार । दहल — भयभीत हो कर ।
 ३०४. मीरजादा — (मीरजाद.) मीरका लड़का शाहजादा । बेसुतर — अशान्त, भयभीत,
 बेसुकुन । बांम — स्त्री ।
 ३०५. कळळ — ब्राहि-ब्राहि । वेगमां — रानियें, बीबियें । चख-डोल — एक प्रकारका वाहन
 विशेष । दळ — सेना, फौज । सुरतांण — बादशाह, सुल्तान । खळ भळे — भयभीत
 हो गये, घबराहटमें पड़ गये । खुरसांण — बादशाह ।
 ३०६. रुघ — श्रीरामचंद्र भगवान । जळ खार — खारा समुद्र, लवणोद । खड़े — चल कर ।
 बाज — घोड़ा । अलंग — दूरसे । अणभंग — वीर ।
 ३०७. जवनेस — बादशाह । पुर साहिजां — शाहजहाँपुर । सिर पोस — सर-पोश, रक्षक ।
 दुबाह — वीर । अभसाह — महाराजकुमार अभयसिंह ।
 ३०८. जवनांण — यवन, मुसलमान । जांणि — मानों ।

धन लूट^१ कीधौ^२ धाण, वधि नारनोळ^३ विनाण^४ ।
 चंड नयर^५ रा^६ परचंड^७, दो^८ नगर औ भुजदंड^९ ॥ ३०६
 भांजिया^{१०} जिके भुजाळ^{११}, 'अभमाल' विरद उजाळ^{१२} ।
 मंडियौ^{१३} न धके^{१४} मुगळ^{१५}, इम जीपियौ^{१६} अभमल्ल ॥ ३१०
 धर साह धोकळ^{१७} धींग^{१८}, सो^{१९} कहै धोकळसींग^{२०} ।
 सभि साह मुलक सरद्द^{२१}, मोसरां^{२२} पहल मरद्द ॥ ३११
 कुळ भाण विरद कहाय, जुध जीत तबल^{२३} वजाय ।
 इम हले थाट अथाह, छिल^{२४} उरस छिब^{२५} 'अभसाह' ॥ ३१२
 गाजतां गयंद गहीर, वाजतां नौबत^{२६} वीर^{२७} ।
 आवि्यौ^{२८} थाट अथाग, रंग हुवां उच्छब^{२९} राग ॥ ३१३
 'अजमाल' सजि उच्छाह, गह-महत भड़^{३०} दरगाह ।
 उण वार 'अभमल' आय, पह^{३१} कीध वंदण^{३२} षाय ॥ ३१४

१ ख. ग. लूटि । २ ख. कीधो । ग. कीधउ । ३ ख. नालिर । ४ ख. विनाण ।
 ५ ख. ग. नगर । ६ ख. ग. तणा । ७ ख. ग. प्रचंड । ८ ख. ग. दोब । ९ ग.
 भुजडंड । १० ख. भांजीया । ग. भेजीया । ११ ख. भुजाल । १२ ख. उजाल ।
 १३ ख. ग. मंडीयो । १४ ख. ग. धकं । १५ ख. ग. मुगल । १६ ख. ग. जीपीयो ।
 १७ ख. धोकल । ग. धोकल । १८ ख. ग. धींग । १९ ख. ग. सौहो । २० ग. धोकल-
 सींग । २१ ख. मोसरां । ग. मोसरा । २२ ख. तबल । २३ ख. ग. सिर । २४ ख.
 ग. छिवि । २५ ख. नौबति । ग. नौबति । २६ ग. वीर । २७ ख. ग. आवीया ।
 २८ ख. ग. उच्छब । २९ ख. भड । ३० ख. ग. पोहो । ३१ ख. ग. बंधण ।

३०६. कीधो — किया । धाण — नाश, ध्वंश । विनाण — नाश । चंड नयर — दिल्ली नगर ।
 भुजदंड — जबरदस्त ।

३१०. भुजाळ — वीर; शक्तिशाली । अभमाल — महाराजकुमार अभयसिंह । जीपियौ —
 विजयी हुआ । अभमल्ल — देखो ऊपर अभमाल ।

३११ धोकळ — युद्ध, लड़ाई । धींग — जबरदस्त । सरद्द — सरहद । मोसरां पहल — अव-
 सरके पूर्व ही, श्मश्रुके बाल निकलनेके पहिले ही । मरद्द — मर्द, वीर ।

३१२. कुळ भाण — सूर्यवंश । विरद — विरुद, कीर्ति । तबल — एक प्रकारका बड़ा ढोल ।
 थाट — सेना, दल । अथाह — अपार, असीम । छिल — उमड़ कर । उरस — आसमान ।

३१३. अथाग — अपार, असीम । रंग — हर्ष, आनन्द । उच्छब — उत्सव ।

३१४. अजमाल — महाराजा अजीतसिंह । उच्छाह — उत्साह, हर्ष । गह-महत — भीड़, समूह ।
 दरगाह — दरबार । पह — वीर । कीध — किया ।

महाराजा अजीतसिंहजीसूं महाराजकुमार अभयसिंहजीरो मिळणो
 सुत तात मिळे^१ सनेह । दो जाणिं सूरज^२ देह ।
 अति पुर छक अमराव । पति करत वंदण^३ पाव^४ ॥ ३१५
 हसि मिळे 'अजण'^५ हुळास । कमधज्ज जोम प्रकास ।
 उण समे^६ छभा उदार । वेखवा जिसडी^७ वार ॥ ३१६
 धर दिली पडियौ^८ धोमं^९ । जोधाण धरियौ^{१०} जोम ।
 उण वार सुकवि अनंत । कमधजां^{११} क्रीत कहंत ॥ ३१७
 धनि कमध कुळ^{१२} अवधेस । दुति धन्य^{१३} मुरधर देस ।
 धनि अगंज गढ़ जोधाण । पह^{१४} 'अजण' धनि परमाण^{१५} ॥ ३१८
 दळ^{१६} साह जीपि^{१७} दुवाह^{१८}, सुत तास धनि 'अभसाह' ।
 ॥ ३१९

कवित्त—जदिन 'अभै'^{१९} जाणियौ, इळा^{२०} थंभण उमरावां ।
 गज समपण लख गांव^{२१}, एम जाणै उमरावां^{२२} ।
 अकलबंत मंत्रियां, दुजां जाणै^{२३} सुखदायक ।
 'अजै' 'अभौ' जाणियौ, वंस^{२४} सूरज^{२५} वरदायक ।

१ ख. ग. मिले । २ ख. ग. सूरज । ३ ग. वंदण । ४ ख. पाव । ५ ग. अजण ।
 ६ ख. वार । ग. बार । ७ ख. जिसठी । ग. जिसडी । ८ ख. ग. पाडियो । ९ ख.
 धोम । १० ख. थरियो । ११ ख. कमधज्ज । ग. कमधभा । १२ ख. ग. कुल ।
 १३ ख. ग. धन । १४ ख. पौहो । ग. पोहो । १५ ख. परमाण । १६ ख. दल ।
 १७ ख. जीत । ग. जीते । १८ ख. दुवाह । १९ ख. ग. अभौ । २० ख. इला ।
 २१ ख. ग. गांव । २२ ख. ग. कविरावां । २३ ख. जाणे । २४ ग. वस । २५ ग.
 सूरजि ।

३१५. तात — पिता । छक — हर्ष, प्रसन्नता ।
 ३१६. अजण — महाराजा अजीतसिंह । हुळास — हर्ष । जोम — जोश । छभा — सभा, दरबार ।
 वेखवा — देखनेको । जिसडी — जैसी । वार — समय ।
 ३१७. धोम — अग्नि, प्राग । जोम — जोश, उमंग । क्रीत — कीर्ति ।
 ३१८. धनि — धन्य-धन्य । कमध — राठीड़ । अवधेस — श्रीरामचन्द्र भगवान । अगंज —
 अजयी ।
 ३१९. जीपि — जीत कर । दुवाह — वीर । अभसाह — अभयसिंह ।
 ३२०. जदिन — जिस दिन । अभै — महाराजकुमार अभयसिंह । इळा — पृथ्वी । इळा थंभण —
 भूमि रक्षक, वीर, राजा । उमरावां — सरदारों । अजै — महाराजा अजीतसिंह ।
 अभौ — महाराजकुमार अभयसिंह । वरदायक — यशस्वी, वीर ।

जाणियौ साह महमंद^१ जदिन, जाजुळ तप 'जगजीतरौ' ।
जाणियौ^२ 'अभै'^३ सारै जगत्त^४, अवतारी 'अगजीतरौ' ॥ ३२७

सजि मसलत^५ सुरताण, अनै दीवाण अमीरां ।
मिळि^६ अमखास मभार^७, सभे मचकूर सधीरां ।
एक छाडि अजमेर, अवर^८ लीजिये^९ मुलक अथि^{१०} ।
नाहर-खान नरिद^{११}, कन्ह^{१२} मेलियौ^{१३} कहे कथि^{१४} ।
आवियौ खान नाहर अडर^{१५}, सांभण^{१६} दाव सरीतनूं ।
मगरूर सरा दरबार^{१७} मभि^{१८}, जाय मिळे^{१९} 'अगजीतनूं' ॥ ३२१

पह^{२०} 'अजमल' परताप, प्रसिद्ध^{२१} दौलत^{२२} इण पाई ।
वार वार कीरत करै, जाणै सब लोक वडाई ।
नारनौळ जाळियौ, लूट साहिजांपुर लीधौ ।
बूब हुई सब जगत, दाह साहां उर दीधौ ।

१ ख. महमद । २ ग. जाणीयो । ३ ख. ग. अभौ । ४ ख. ग. जगति । ५ ख. ग. मसलति । ६ ख. ग. मिलि । ७ ख. ग. मभारि । ८ ग. अबर । ९ ख. ग. लीजीयो । १० ख. ग. अथ । ११ ख. रिदरं । ग. रिद । १२ ख. ग. कन्है । १३ ख. मेलीयो । ग. मेलहीयो । १४ ख. ग. कथ । १५ ख. ग. अडर । १६ ग. सोभण । १७ ख. दरबार । १८ ख. मजि । १९ ख. मिले । ग. मिले । २० ख. ग. पौहौ । २१ ख. ग. प्रसिध । २२ ख. ग. दौलति ।

३२०. जाजुळ — जाज्वल्यमान । तप — तेज, कांति । अगजीतरौ — महाराजा अजीतसिंहका ।

३२१. मसलत = मसलहत — परामर्श, सलाह । अनै — और । अमखास — आमखास । मभार — मध्य, में । मचकूर — (?) । सधीरां — वीरों । छाडि — छोड़ कर । अवर — अपर, अन्य । अथि — अर्थ, धनदौलत । नरिद — नरेन्द्र, राजा । कन्ह — पास । कथि — कथा, वृत्तान्त । नाहर खान — नाहरखान नामक यवन । सांभण — सरीतनूं — अपना मतलब हल करनेको । मगरूर — गर्वपूर्ण, अभिमानी । अगजीतनूं — महाराजा अजीतसिंहको ।

३२२. अजमल — महाराजा अजीतसिंह । प्रसिद्ध — प्रसिद्धि, कीर्ति । वडाई — बड़प्पन । साहिजांपुर — साहजहांपुर । लीधौ — लिया । बूब — ब्राह्म-ब्राह्मिकी पुकार । दाह — जलन । साहां — बादशाहों । दीधौ — दिया ।

जाळतां सहर ऊठी जिके, परजाळां असपत्तिरै ।
 ऊफणि बराळां क्रोध, उरि वे भाळां असपत्तिरै ॥ ३२२
 आप हुवै उसवास, रविदपति सुणि इम रीसां ।
 जांमन ह्वां तिण जतन, बोल बांहां बावीसां ।
 खोद तजे सब खून, प्रगट इम आप पधारै ।
 तिल उसवास न तिकौ, एम 'अभमल' उच्चारै ।
 'अभमाल' कहै जांमन अवर, परठां नह तजि पांणरी ।
 साहरै अम्हां जांमन सदा, जमदह खग जोधांणरी ॥ ३२३
 सुणि कथ इम 'जैसाह', अनै उमराव इकीसां ।
 जाजुळि तप जांणियौ, विखम छवि विसवा वीसां ।
 वाह वाह 'अभमाल', बोल इम कहै सवाई ।
 हीमति मरदां हुवै, सभै ज्यां मदत गुसाई ।
 इम कहे सकळ भड़ ऊठिया, साभण कूच समाजरौ ।
 हालज्ये दिली रच्छिक हुसी, राज तपौबळ राजरौ ॥ ३२४

छंद पद्धरी

किलमांण मार^१ बहु^२ गरद^३ कीध ।

लसकर तुरंग^४ गज लूटि^५ लीध ।

नोट - छंद नं० ३२२ और ३२३ ख. व ग. प्रतिमें नहीं मिले ।

१ ख. ग. मारि । २ ख. बहौ । ग. बहौ । ३ ग. गरब । ४ ग. तुरग । ५ ख. लूट ।

३२२. परजाळां - प्रज्वलन, दाह । असपत्तिरै - बादशाहके । ऊफणि - उबाल खा कर ।
 बराळां - बाण, भाप । भाळां - आगकी लपटें ।

३२३. उसवास - दुखकी अवस्थामें ऊपरको चढ़ती हुई सांस, उच्छवास, लम्बी सांस । रविद-
 पति - बादशाह । जांमन - जामिन, प्रतिभू । खोद - बादशाह । अभमाल - महा-
 राजकुमार अभयसिंह । अम्हां - हम । बाहां बावीसां - बाईसों सामन्तोंकी तलवारें ।

३२४. जैसाह - सवाई राजा जयसिंह । अनै - और । जाजुळि - जाज्वल्यमान । विखम -
 विषम, भयंकर । विसवा वीसां - पूर्ण, पक्का, दृढ़ । वाह वाह - धन्य-धन्य, शाबास ।
 सवाई - सवाई राजा जयसिंह । गुसाई - गोस्वामी, ईश्वर । रच्छिक - रक्षक ।
 राज तपौ बळ - राज्य तप-बलसे प्रतिष्ठित रहे । राजरौ - श्रीमानका, आपका ।

३२५ किलमांण - यवन, मुसलमान । गरद - नाश, ध्वंस, धूलि । कीध - किये । लसकर -
 सेना । तुरंग - घोड़ा । लीध - लिये ।

संभली^१ वात महमंद^२ साह ।
 उर^३ क्रोध अगनि प्रजळे^४ अथाह ॥ ३२५
 वड वडा खान भूपति बुलाय^५ ।
 अंबखास^६ कीध पतिसाह आय ।
 पहिला ज दीध पतिसाह पांन ।
 खिलकत्ति इरादतिमंद खान ॥ ३२६
 हैदरकुली^७ दळ^८ बळ^९ गहीर ।
 महि विदा कीध आतस^{१०} समीर^{११} ।
 महमंदखान अमलीक - मांण ।
 परठियो^{१२} विदा बगसी^{१३} पठांण ॥ ३२७
 करि क्रोध विदा कीधा सक्रोध ।
 'जैसिघ' सहित बावीस^{१४} जोध ।
 दळ^{१५} बळ^{१६} तुरंग गज ससत्र^{१७} द्रव्व^{१८} ।
 समपिया^{१९} साह तोरा सरब ॥ ३२८
 ऊडंत घमस नौबति^{२०} अग्राज^{२१} ।
 साहरा थाट हालै^{२२} सकाज ।

१ ख. सांभली । ग. सांभलि । २ ख. ग. महमद । ३ ख. ग. उरि । ४ क. प्रजळै ।
 ५ ख. बुलाय । ६ ख. अंबखास । ७ ख. हैरादकुली । ग. हैदराकुली । ८ ख. दल ।
 ९ ख. बल । १० क. आतम । ११ ग. अमीर । १२ ख. ग. परठियो । १३ ख.
 बंस । ग. बंगस । १४ ख. बम्बीस । १५ ख. दल । १६ ख. बल । १७ ख. ग.
 ससत्र । १८ ख. द्रव्व । १९ ख. समपीया । ग. समपीयो । २० ख. नौबत । २१ ख.
 अजयो । २२ ख. हाले ।

३२५. संभली - सुनी ।

३२६. अंबखास - आमखास । खिलकत्ति - जन-समूह, भीड़ । इरादतिमंद खान - शर्फुद्दीन
 इरादतमंदखान नामक व्यक्ति, जिसे बादशाहने अजमेरका हाकिम बनाया था ।

३२७. हैदरकुली - हैदरकुलीखान नामक व्यक्ति, जो अहमदाबादसे इस समय वापिस दिल्ली आ
 रहा था । महमंदखान - मुहम्मदशाह । अमलीक-मांण - अपने ऐश्वर्यका उपभोग
 करने वाला । परठियो - भेजा । विदा - कूच ।

३२८. जोध - योद्धा, वीर । समपिया - समर्पण किये, दिये । तोरा - कुरब मान, तोड़े,
 द्रव्यकी पैलियाँ ।

३२९. घमस - ध्वनि विशेष । अग्राज - गर्जना ।

घण हले गयंद बजि^१ घरर^२ घोर ।
 सहनाय तूर नक्कीब^३ सोर ॥ ३२६
 वहतां^४ दळ^५ ऊजड़^६ हुवै वाट^७ ।
 घण घटा रुंख^८ चढि गिरंद^९ घाट ।
 बेबे^{१०} कबाण^{११} तरगस्स बंध^{१२} ।
 असुराण कंध गिड़^{१३} जोम अंध ॥ ३३०
 काळरा^{१४} कुटंबी^{१५} रूप काळ ।
 भाळरा^{१६} रूप चख क्रोध भाळ ।
 धमचक्क चाळरा^{१७} बंध^{१८} धूत ।
 भाळरा भयंकर रूप भूत^{१९} ॥ ३३१
 हालंत इसा उजबक^{२०} हरोळ^{२१} ।
 चिख^{२२} चोळ^{२३} गोळ^{२४} एहां^{२५} चंदोळ^{२६} ।
 भड़^{२७} इसा दसत चख^{२८} क्रोध भाळ^{२९} ।
 रवदाळ^{३०} इसा ही जस्तराळ^{३१} ॥ ३३२

१ ख. ग. बाजि । २ ख. ग. घंट । ३ ख. नक्कीब । ४ ग. वह । ५ ख. ग. दल ।
 ६ ख. ग. उवट । ७ ख. ग. घाट । ८ ख. ग. रूप । ९ ख. ग. गिरद । १० ख.
 वेवे । ११ ख. कबाण । १२ ख. बंध । १३ ख. डिग । १४ ख. कालरा । १५ ख.
 कुटंबी । १६ ख. ग. भाळरा । १७ ख. चालरा । १८ ख. बंध । १९ ग. भूप ।
 २० ख. ग. उजबक । २१ ख. हरोल । ग. हरोळ । २२ ख. ग. चख । २३ ख. चोल ।
 २४ ख. गोल । २५ ख. एहां । ग. ऐहां । २६ ख. ग. चंबील । २७ ख. भड़ ।
 २८ ख. ग. चप । २९ ख. ग. मास । ३० ख. रवदाल । ३१ ख. ग. जवस्तरास ।

३२६. सहनाय - वाद्य विशेष । तूर - वाद्य विशेष । नक्कीब - बादशाह या राजाकी
 सवारीके अगाड़ी नजरदोलतकी आवाज लगते हुए चलने वाला व्यक्ति विशेष ।

३३०. ऊजड़ - ऊबड़ खाबड़ स्थान, उवट । वाट - मार्ग, रास्ता । गिरंद - पर्वत । घाट -
 पहाड़ोंके मध्यके तंग रास्ते । बेबे - दो दो । कबाण - कमान, धनुष । तरगस्स -
 तर्कश, भाषा । असुराण - यवन, मुसलमान । गिड़ - मस्त ऊंट या सूधर ।
 जोम - जोश ।

३३१. भाळ - ज्वाला, आग, आगकी लपट । चख - नेत्र । धमचक्क - युद्ध । चाळ -
 अंचल, वस्त्र, छोर । धूत - उन्मत्त । चख क्रोध भाळ - क्रोधमें आँखोंसे लपट
 निकलती हुई ।

३३२. हालंत - चलते हैं । उजबक - तातारियोंकी एक जाति, उद्दण्ड, मूर्ख । हरोळ - सेनाका
 अग्र भाग, हरावल । चिख - चक्षु, नेत्र । चोळ - लाल । गोळ - सेना, सेनाका
 मध्य भाग । चंदोळ - सेनाका पीछिका भाग । दसत - दस्त, हाथ या दिखाई देते हैं ।
 रवदाळ - यवन, मुसलमान । जस्तराळ - छलांग भरने वाला ।

ज्वां^१ मांहि मिळै^२ 'जैसाह' आय ।
 वैसंदर जांणिक भोल वाय ।
 जवनांण आवियौ^३ सुणे जांम ।
 तारागढ़ सभियौ^४ 'अजण' तांम ॥ ३३३
 सुत 'कुसळ'^५ 'ऊद' हरवळ^६ सकज्ज^७ ।
 'अमरेस'^८ तांम कीधी अरज्ज^९ ।
 'अवरंग' छोडि मुन^{१०} सप^{११} अभंग ।
 'जगसाह' आप भळि^{१२} कीध जंग ॥ ३३४
 सभियौ^{१३} जैतारण^{१४} जुध सधीर ।
 'अवरंग'तणौ मारे^{१५} अमीर ।
 दळ^{१६} सभि 'अवरंग'रौ फौजदार ।
 विढियौ^{१७} गढ़ आए जेण^{१८} वार ॥ ३३५
 आपरा लूंण परताप^{१९} अन्न ।
 'जगसाह' अगै लड़ियौ^{२०} जवन्न ।

१ ख. ग. बडां । २ ख. मिले । ग. मिलै । ३ ख. ग. आवीयौ । ४ ख. ग. सभियो ।
 ५ ग. कुसुल । ६ ख. बल । ग. बल । ७ ख. सकेज । ग. सकज्ज । ८ ग. अमेरेस ।
 ९ ख. अरज । १० ख. ग. मन । ११ ख. ग. सुप । १२ ख. बलि । १३ ख. ग.
 सभियो । १४ ख. ग. जैतारणि । १५ ख. ग. मारै । १६ ख. दल । १७ ख.
 विठियो । ग. विठियो । १८ ख. ग. जेणि । १९ ख. परतापि । ग. प्रताप । २० ख.
 ग. लसियो ।

३३३. जैसाह — सवाई राजा जयसिंह । वैसंदर — (वैश्वानर) अग्नि, आग । जांणिक —
 मानों । भोल — प्रवाहा । जवनांण — यवन, बादशाह । जांम — समय । तारागढ़ —
 अजमेरके पासका किला । सभियौ — सुसज्जित किया । अजण — महाराजा
 अजीतसिंह ।

३३४. कुसळ — नीमाजके ठाकुर जगरामसिंहका पुत्र कुमार कुशलसिंह उदावत । ऊद —
 राठोड़ोंकी उदावत शाखाका वीर । हरवळ — सेनाके अगाड़ी । अमरेस — नीमाजका
 ठाकुर, उदावत अमरसिंह राठोड़ । अरज्ज — अर्ज, प्रार्थना । जगसाह — नीमाजके
 ठाकुर जगरामसिंहके लिये यह प्रयोग आया है । छळि — लिए ।

३३५. विढियो — युद्ध किया ।

३३६. अगै — पहिले, पूर्वकालमें ।

‘जगसाह’ आप छलि समर जोड़ि ।
 मोहकम’ दळ^३ लूटे दीध मोड़ि^३ ॥ ३३६
 अनि घणा कीध जुध सुछलि^४ आप ।
 पह^५ जिकौ^६ आज कीजे^७ प्रताप ।
 ऊथाप हुवै नह अरज आज ।
 मांगू^८ सुजि पाऊं^९ महाराज^{१०} ॥ ३३७
 दईवाण^{११} ‘अजण’ तद^{१२} वचन दीध ।
 कर जोड़ि ‘अमर’ तदि अरज कीध ।
 ‘महमंद’ असुर पतिसाह माप ।
 इम हिंदवाण^{१३} पतिसाह आप ॥ ३३८
 तुल वाद^{१४} बरोबर^{१५} राज तेज ।
 महाराज आप वधतै^{१६} मजेज ।
 ऊथपे थपे पतिसाह आप ।
 उवां कदे भूप न किया उथाप ॥ ३३९
 धरथंभ बरोबर^{१७} तुजकधार^{१८} ।
 वेढरौ^{१९} एम^{२०} कीधौ^{२१} विचार ।

१ ख. ग. मोहकम । २ ख. दल । ३ ख. मोड़ि । ४ ख. सुछलि । ५ ख. ग. पोहो ।
 ६ ख. ग. जिको । ७ ख. ग. कीजे । ८ ख. मांगु । ९ ख. पाऊं । ग. पाऊ । १० ख.
 ग. महाराज । ११ ख. ग. दईवाण । १२ ख. ग. तदि । १३ ख. ग. हीदवाण ।
 १४ ख. वारि । १५ ख. बरोबर । १६ ख. वधतौ । ग. वधतो । १७ ख. बरोबरि ।
 ग. बरोबरि । १८ क. त्रुजकधार । १९ ख. ग. वेढरौ । २० ग. ऐम । २१ ख. ग. कीजे ।

३३७. सुछलि — लिए । ऊथाप...आज — मेरी प्रार्थना आज रद्द नहीं की जाय ।

३३८. दईवाण — स्वामी, वीर । अमर — नीमाजका ठाकुर अमरसिंह उदावत जिसने तारा-
 गढ़की रक्षार्थ बड़ा शौर्यका कार्य किया था । महमंद — अबुलफतह नासिरुद्दीन
 मुहम्मदशाह । हिंदवाण — हिन्दू, हिन्दू धर्म ।

३३९. तुल — तुला, तकड़ी । वधतै — विशेष । मजेज — मिजाज, गर्व । ऊथपे...आप —
 आपने कई बादशाहोंको तरुतसे हटा दिए और कईको बादशाह बना दिये । कदे —
 कभी भी ।

३४०. धरथंभ — भूमिस्तंभ, भूमिक्षक, राजा । तुजक — तुजुक, सैन्य-सज्जा करने वाला,
 फौजकी व्यवस्था करने वाला, प्रबंध करने वाला । वेढ — युद्ध ।

साह हूं साह जूटे सक्रोध ।
 जोधाण^१ हुं जूटै^२ सदा जोध ॥ ३४०
 छक बाध^३ नोख^४ जोधाण छात ।
 वधि तेम कीजिये^५ नोख वात ।
 उण साह जोध मेले^६ अनेक ।
 अर आप मेलजे^७ मूभ^८ एक^९ ॥ ३४१
 गढ़ चढ़े नाळ दगऊं गरीठ ।
 रवदां दळ^{१०} गोळां^{११} करूं रीठ ।
 आपरा तेजहूँता अभंग ।
 जवनां^{१२} दळ^{१३} अटकूं करे जंग ॥ ३४२
 मुरधरा मौहर^{१४} दळ सभि अमाप^{*} ।
 ऊपर^{१५} कजि रहिजे^{१६} भूप आप ।
 इम सुणे रीभियौ^{१७} पह^{१८} 'अजन्न'^{१९} ।
 जमदढ़ खग बगसे दळ^{२०} 'जतन्न'^{२१} ॥ ३४३

१ ख. ग. जोधां । २ ग. जुटै । ३ ख. छकवाध । ग. छकवाधि । ४ ख. नोक ।
 ५ ख. कीजीए । ग. कीजीयं । ६ ख. ग. मेलहे । ७ ख. ग. मेलहेजे । ८ ख. मुभ ।
 ९ ग. ऐक । १० ख. दल । ११ ख. गोलां । ग. गोळा । १२ ख. जवनां । १३ ख.
 दल । १४ ख. ग. मौहौरि ।

*ख. प्रतिमें यह पंक्ति— 'मुरधरा मौहौरि सभि दल अमाप है ।'

१५ ग. उपरि । १६ ख. रहजै । ग. रहजे । १७ ख. ग. रीभीयौ । १८ ख. ग. पोहौ ।
 १९ ख. अज्जन । ग. अज्जनं । २० ख. दल । २१ ख. जतन्न । ग. जतन्न ।

३४०. जूटै — भिड़ते हैं ।

३४१. छक — बैभव, शौर्य । बाध — पूर्ण, सब, विशेष । नोख — श्रेष्ठ । जोधाण छात —
 जोधपुरका राजा । जोध — योद्धा, वीर । अर — और ।

३४२. नाळ — तोप । गरीठ — जबरदस्त, महान गरिष्ठ । दगऊं — तोप दागूं । रवदां — यवनों,
 मुसलमानों । रीठ — युद्ध ।

३४३. पह — राजा । अजन्न — महाराजा अजीतसिंह । जमदढ़ — कटार विशेष । दळ —
 सेना । जतन्न — यत्न, रक्षा ।

सिरपाव बगसि^१ बह^२ सिलह साज^३ ।
 स्त्रीहथां^४ खाग बांधे^५ सकाज ।
 कमधज्ज^६ 'अखा' हर^७ देवक्रन^८ ।
 तड जोध सथांना^९ 'हर' सुतन^{१०} ॥ ३४४
 धारे^{११} छक 'मोहण'^{१२} हर सुधांम ।
 सुजि किलादार^{१३} मंत्री संग्राम ।
 विजपाळ मंत्रि^{१४} दळ अवरि^{१५} बाधि^{१६} ।
 सांमांन दीध गढ पहलि^{१७} साधि ॥ ३४५
 दे कुरब^{१८} भाल बह^{१९} खान^{२०} दीध ।
 कमधज्ज^{२१} 'अमर' इम विदा कीध ।
 सभि त्रण सलांम भड़ थाग^{२२} संग ।
 भुज उरस छिबै^{२३} मलपै^{२४} अभंग ॥ ३४६
 नव खंड सिरै जुध करण नांम ।
 तारागढ चढियौ^{२५} 'अजण'^{२६} तांम ।
 धर ऊवर^{२७} कज^{२८} पह^{२९} तेज धांम ।
 मुरधरा मौहर^{३०} मंडियौ^{३१} मुकांम ॥ ३४७

१ ख. बगसि । २ ख. बौहौ । ग. बौहौ । ३ ग. सांभ । ४ ख. ग. श्रीहथां । ५ ख. बांधे । ६ ग. कमधज्ज । ७ ख. आपहर । ग. अषाहर । ८ ख. देवक्रन । ग. देवक्रन । ९ ख. ग. साथ । १० ख. ग. सुतन । ११ ख. ग. धारक । १२ क. मोहण । १३ ख. किलार । १४ ख. ग. मंत्री । १५ ख. ग. अवर । १६ ख. ग. बाधि । १७ ख. ग. पहल । १८ ख. कुरव । १९ ख. बहौ । ग. बहौ । २० ख. ग. पान । २१ ख. कमधज्ज । ग. कमधज्ज । २२ ग. थाट । २३ ख. ग. छिबे । २४ ख. महपे । ग. महपे । २५ ख. ग. चढियौ । २६ ख. ग. अमर । २७ ख. ग. ऊपर । २८ ख. ग. कजि । २९ ख. ग. पहौ । ३० ख. ग. मौहौरि । ३१ ख. ग. मंडीया ।

३४४. सिलह — अस्त्र-अस्त्र । तड — शाखा । सुतन — सुत, पुत्र ।

३४५. छक — जोश, उमंग ।

३४६. अमर — नीमाजका ठाकुर अमरसिंह । त्रण — तीन । थाग — (?) । उरस — आसमान । छिबै — स्पर्श करते हैं । मलपै — कूदते हैं । अभंग — वीर ।

३४७. सिरै — श्रेष्ठ, शिरमोर । अजण — महाराजा अजीतसिंह । मौहर — सहायक, अग्रणी । मंडियौ — बना, रचा । मुकांम — पड़ाव ।

वणियो^१ गढ़ 'अम्मर' सूरवीर ।
 कळचाळ^२ जांणि पाखर कंठीर ।
 उण वार^३ असुर दळ लगो आइ^४ ।
 धुबि तोप^५ मंगळ^६ गिर तर धुजाइ^७ ॥ ३४८
 'अमरेस' सघण गोळां अपार ।
 वरसै असुरां सिर^८ बारवार^९ ।
 अति गोळां^{१०} भळहळ भपट आय ।
 लागी बह^{११} खळदळ बीच^{१२} लाय^{१३} ॥ ३४९
 चालंत^{१४} इसा गोळा अचूक ।
 भड़ भिड़ज पटाभर हुवै भूक ।
 दहुं^{१५} तरफ भाळ धर अंबर^{१६} दीठ ।
 रुख ओळां गोळां पड़ै रीठ ॥ ३५०
 मिल^{१७} उडै अरध घट रंग माट^{१८} ।
 घण दिये^{१९} कबर^{२०} खळ अरध घाट ।

१ ख. ग. वणीयो । २ ख. ग. कळिचाळ । ३ ग. वार । ४ ख. ग. आय । ५ ख. तोव । ६ ख. मंग । ७ ख. ग. धुजाय । ८ ख. ग. सिरि । ९ ग. बारवार । १० ख. गोलां । ग. गोळा । ११ ख. बीहौ । ग. बीहौ । १२ ख. ग. बीचि । १३ ख. याल । १४ ग. चालत । १५ ग. दुहु । १६ ख. अंबर । १७ ख. ग. मिल । १८ ख. ग. माट । १९ ख. ग. बीयं । २० ख. कबर ।

३४८. अम्मर — नीमाज ठाकुर अमरसिंह । कळचाळ — युद्ध । जांणि — मानों । पाखर — कवच । कंठीर — सिंह । धुबि — तोपोंके छूटनेसे आवाज हो कर । मंगळ — (?) । गिर = गिरि — पर्व । तर = तरु — वृक्ष ।

३४९. अमरेस — नीमाजका ठाकुर अमरसिंह । सघण — घना । भळहळ — प्रज्वलित, आग । भपट — आगकी लपट । खळदळ — शत्रु सेना । लाय — अग्निकांड ।

३५०. भड़ — थोड़ा । भिड़ज — घोड़ा । पटाभर — हाथी । भूक — चुरचुर, नाश । भाळ — आगकी लपट । धर — पृथ्वी । अंबर — आसमान । रुख — प्रकार, तरह । ओळां — वर्षा उपल । रीठ — प्रहार ।

३५१. घट — शरीर । रंग माट — रंगके मिट्टीके बने बर्तन । कबर — कब्र ।

बैरिहरा^१ दीसै रूप वाधि ।
अजमेर मेर हुंता^२ असाधि ॥ ३५१
गीत^३

कहर इरादतमंद्र^४ 'जैसाह' हैदुरकुली^५ ,
दळ बंगस^६ पखै^७ लागै न को^८ दाव ।
एक उमराव 'अगजीत'रै अटकिया^९ ,
असपति तणा बावीस^{१०} उमराव ॥ ३५२(१)
धोम धड़हड़ अनड़ दोठ^{११} तोपां धुबै^{१२} ,
रीठ पड़ि दड़ड़ गोळां विरोधा ।
'अजा'रै हेक जोधार थांभै असुर ,
जवनरा हेक इकवीप जोधा ॥ ३५२(२)
हारि मानै^{१३} कियौ^{१४} मेळ भड़ साहरां ,
हाथ भट हजारी पंच हायौ ।
वाजतां नगारां गुमर धरियां^{१५} बिमर^{१६} ,
'अमर' छूटां पटां^{१७} मिळण आयौ ॥ ३५२(३)

१ ख. ग. बैरहरा । २ ग. हुतां । ३ ख. गीत सांगोर । ग. गीत साणौर । ४ क. मंजैसाह । ५ ख. ग. हैदुरकुली । ६ ख. बंगस । ग. बंगस । ७ ख. ग. पखै । ८ ग. कौ । ९ ख. अटकाया । ग. अटकीया । १० ख. डावीस । ११ क. डोठ । १२ ख. धुबै । १३ ख. माने । ग. मानै । १४ ख. ग. धरीयां । १५ ख. ग. कीयो । १६ ख. विहद । ग. विरद । १७ ख. भंडां ।

३५१. बैरिहरा—शत्रुवंशजों । वाधि—विशेष । असाधि—(?) ।

३५२(१). कहर—(कह) काप, गुस्सा । इरादतमंद्र—शत्रुहीना इरादतमंदखां नामक व्यक्ति जिसको अजमेर छीननेके लिए अजमेरका हाकिम बना कर बादशाहने महाराजा अजीतसिंहके विरुद्ध दलबल सहित भेजा । जैसाह—सवाई जयसिंह । बंगस—यवन, मुसलमान । एक उमराव—यह नोमाज ठाकुर अमरसिंहके लिए प्रयोग किया गया है ।

३५२(२). धोम—घनि । धड़हड़—आगके प्रज्वलित या तोप आदिके छूटनेकी तेज ध्वनि । अनड़—गड़, किला । धुबै—तोपें छूटती हैं । रीठ—प्रहार । दड़ड़—ध्वनि विशेष । अजा—महाराजा अजीतसिंह । हेक—एक । जोधार—योद्धा, वीर । थांभै—रोक दिये ।

३५२(३). हारि—पराजय, हार । मेळ—मित्रता । गुमर—गर्व । बिमर—जबरदस्त । अमर—नोमाज ठाकुर अमरसिंह । छूटां—आयो—पूर्ण जोशमें भर कर, मिलनेके लिये आयो ।

मिळे^१ 'जैसाह' उमराव^२ खांनां मिळे^३ ,
 आप^४ सुत 'कुसळ' पह^५ मिळे एतै^६ ।
 कहै जग थाय नह अचड़ इण विध^७ कही ,
 जाय नह नांम रवि^८ चंद^९ जेतै^{१०} ॥ ३५२(४)

दूहौ^{११}—सभि बळ^{१२} महमंदसाहरा, आया दळ अणपाल^{१३} ।
 सुपह 'अजै' जै^{१४} सांमुहौ, मोकळियौ^{१५} 'अभमाल' ॥ ३५३
 कवित्त—मोकळियौ^{१६} 'अभमाल', सभे दळ पुर सकाजा ।
 असुर दळां सभि आयौ^{१७}, विमळ वाजंतां वाजा ।
 सहर लूटि^{१८} साहरा, अगै^{१९} कीधा थळ ऊथळ ।
 तिण^{२०} नह गिणिया^{२१} तिकै^{२२}, मसत छक हूंत^{२३} 'अभमाल'^{२४} ।
 विच^{२५} साह दळां डेरा वणे, तेज पुंज आयौ तदिन ।
 उतरियौ^{२६} गयंदहूता 'अभौ', जळ^{२७} चढियौ^{२८} मुरधरजदिन ॥ ३५४

१ ग. मिलै । २ ख. ग. उवराव । ३ ग. मिलै । ४ ख. आयं । ५ ख. ग. पोहौ ।
 ६ ग. ऐतै । ७ ख. विधि । ८ ख. ग. ससि । ९ ख. ग. सुर । १० ग. जेतै ।
 ११ ख. दूहा । ग. दूहो । १२ ख. दल । ग. बलि । १३ ख. अणपार । १४ ख. ग. ज्यां ।
 १५ ग. मोकलीयो । १६ ख. ग. मोकलीया । १७ ग. आयौ । १८ ख. लूट ।
 १९ ग. आगै । २० ग. तिल । २१ ग. गिणीयां । २२ ख. ग. तिके । २३ ग.
 हूँ । २४ ग. अभमल । २५ ख. ग. विचि । २६ ख. उतरीयो । ग. उतरीयो ।
 २७ ख. जलि । २८ ख. ग. चढीयो ।

३५२(४). जैसाह—सवाई राजा जयसिंह, आमेर । उमराव खांनां—निजमुलमुलके लिये
 प्रयोग किया गया है । कुसळ—नीमाजका ठाकुर कुशलसिंह । पह—योद्धा ।
 रवि—सूर्य ।

३५३. बळ—सेना, दल । महमंदसाह—नासिरुद्दीन मोहम्मद शाह । अणपाल—बेरोक,
 निःशंक । सुपह—राजा । अजै—महाराजा अजीतसिंह । जै—जिस । सांमुहो—
 सम्मुख, सामने । मोकळियौ—भेजा । अभमाल—महाराजकुमार अभयसिंह ।

३५४. थळ ऊथळ—उथल-पुथल । छक—जोश । अभमल—महाराजकुमार अभयसिंह ।
 साह—बादशाह । तदिन—उस दिन । अभौ—महाराजकुमार अभयसिंह । जळ—
 कांति, शोभा । जदिन—जब, जिस दिन ।

डेरों दाखिल^१ दुभल, होय दरबार^२ कीध हद ।
जठै आदि 'जैसाह', जवन सह^३ आय मिळे जद ।
ताछ ताछ बंदि^४ अतर, मंडि^५ डंबर^६ मनुहारां^७ ।
नरमी करै अनेक, 'अभा' आगलि उण वारां^८ ।

*असपती भड़ां मांभलि 'अभौ', दिपै अंजस^९ जगदीसमौ ।

वाईस^{१०} दवे^{११} देखे बहस^{१२}, तेज पुंज तेईसमौ^{१३} * ॥ ३५५

१ ख. ग. दाखिल । २ ख. ग. दरवार । ३ ख. ग. सौही । ४ ख. ग. बंदि । ५ ख. ग. मंडे । ६ ख. ग. डंबर । ७ ख. मनुहारा । ग. मनहारा । ८ ग. वारां । ९ ग. अंजस । १० ग. वाईस । ११ ख. ग. दवे । १२ ख. ग. बहस । १३ ग. तेवीसमौ ।

*ख. तथा ग. प्रतियोंमें यहांसे आगे निम्न वर्णन अधिक मिला है—

असपति भड़ बोलीया, अभा हूता तिण ओसर ।
अजण लीध अजमेर, सहर डिडवांणों संभर ।
मारे दोय अमीर, कटक आपहर बलि कीधौ ।
नारनौल जाळीयो, लूटि साहज्यांपुर लीधौ ।
जालतां सहर ऊठि जिके, पर जाळां तसपतिरै ।
उफणै बराळां क्रोध उरि, वैफाळां असपतिरै ।
आप हुवै असवार, रवदपति सुणि इम रीसां ।
जासन ह्वां तिण जतन, बोल वाहां वावीसां ।
खोद तजै श्रव पून, प्रगट इम आप पचारे ।
तिल उसवास नतिकौ, ऐम अभमल उचारे ।
अभमाल कहै जांमन अवर, परठान हत जिपांणरी ।
साहरै अम्हा जांमन सदां, जमदढ़ खग जोधांणरी ।
सुणि कथ इम जैसाह, अनै उमराव इकीसां ।
जाजुलि तप जांणीयो, विखम छवि विसवांवीसां ।
वाह वाह अभमाल, बोल इम कहे सवाई ।
हिमति मरदां हुवै, सभै ज्यां मदति गुसाई ।
इम कहै सकल भड़ उठीया, साभण कूचे समाजरी ।
हालजे दिली रछिक हुसो, राज तपी बळ राजरी ॥

३५५. दुभल — वीर । ताछ — भांति, प्रकार । अतर — इश । डंबर — सुगंध, महक ।
नरमी — विनम्रता । अभा — महाराजकुमार अभयसिंह । आगलि — अगाड़ी । वारां —
समय । असपती — बादशाह । भड़ां — योद्धाओं । मांभलि — मध्य, में ।

आय डेरां ऊमरां, कूच नगारा कीधा ।
 साह मिळे^१ 'अभसाह', दुभल नगारा^२ दीधा ।
 सभि दळ 'अजमल' सुतण, चढे गज हौद चमीरां ।
 चढे गजां दळ चढे^३, अवर बावीस^४ अमीरां ।
 बोह^५ ढळक^६ ढाल नेजास बोह^७, बह^८ पटभर डग^९ बेडिया^{१०} ।
 दळसाह मोड़ि जूनी^{११} दिली, खूनी धोकळ^{१२} खेडिया^{१३} ॥ ३५६

केक दीह सभि कमंध, 'अभौ' जोगणिपुर आए^{१४} ।
 दळ बगसी^{१५} र दिवाण^{१६}, जाय अरजां गुजराए^{१७} ।
 सायत^{१८} देखे साह, तांम तेडियौ^{१९} 'अजण' तण ।
 आयौ दळ सभि 'अभौ', घणै^{२०} छकहूंत विरद घण ।
 ऊतरे गजां दरगह असुर, तेज चढे जगचख तिसौ ।
 जदि हले मसत मदभर जिहीं^{२१}, दिलीनाथ 'महमंद'^{२२} दिसौ ॥ ३५७

१ ख. ग. मिलण । २ ख. ग. नगारा । ३ ख. ग. चले । ४ ख. ग. बावीस । ५ ख. बोहो । ६ ख. ग. ढळकि । ७ ख. बोहो । ग. बोहो । ८ ख. बोहो । ९ ग. गज । १० ख. बेडिया । ग. बेडिया । ११ ख. जूनी । १२ ख. ग. धौकळि । १३ ख. ग. बेडिया । १४ ख. ग. आये । १५ ख. बगसी । १६ ख. दीवाण । १७ ग. गुराजराए । १८ ग. साय । १९ ख. ग. तेडियो । २० ख. ग. घणा । २१ ख. ग. जहीं । २२ ख. महमद । ग. महमद ।

३५६. ऊमरां - अमीरों, सरदारों । साह - बादशाह । अभसाह - महाराजकुमार अभयसिंह । अजमल - महाराजा अजीतसिंह । सुतण - पुत्र । हौद - हाथीका चारजामा विशेष । चमीरां - सोनेका, स्वर्णका । ढळक - [ढालें ?] । नेजा - भाला । बह - बहुत । पटभर - हाथी । डग बेडिया - हाथीके पैर बाँधनेकी जंजीर निमड । खूनी - कुपित । धोकळ - युद्ध ।

३५७. केक - कई, कुछ । दीह - दिवस, दिन । कमंध - राठोड़ । अभौ - महाराजकुमार अभयसिंह । जोगणिपुर - दिल्ली । बगसी - सेनाको बेतन देने वाला, बख्शी । दिवाण - वजीर, दीवान । सायत - अबसर, मौका । तेडियौ - बुलाया । अजण - महाराजा अजीतसिंह । तण - तनय, पुत्र । घणै - बहुत । छकहूंत - जोशसे । विरद घण - बहुतसे विरुद्धोंको धारण करने वाला । दरगह - दरबार । असुर - मुसलमान । जगचख - सूर्य । मसत - मस्त । मदभर - हाथी, गज । महमंद - नासिरुद्दीन मोहम्मद शाह नामक बादशाह । दिसौ - तरफ, ओर ।

अंबखास^१ 'अभमाल', भळळ पौरस^२ भाळाहळ ।
 आयौ छिवतौ^३ उरसि, बोल^४ चख चोळ महाबळ ।
 तुजकमीर ताप हूं, जाब^५ दीधौ नह जाए^६ ।
 सभे^७ अनम^८ सलाम, एम^९ पाए^{१०} निज आए^{११} ।
 तप देखि हुवौ^{१२} दिन चंद तिम, मंद कळा महमंद मुख ।
 उमराव खान दबिया^{१३} अवर^{१४}, रवि उदोत^{१५} खिदोत^{१६} रुख ॥ ३५८

एम^{१७} देखि 'अभमाल', पांण तप तेज प्रभत्ती^{१८} ।
 कमंध हंत तद^{१९} कीध, प्रीत^{२०} भय^{२१} हुं असपत्ती^{२२} ।
 तोरा^{२३} जवहर^{२४} ताम, किलमपति दीध कुरब कर^{२५} ।
 सरब खून पतिसाह, माफ कीधा जिण मौसर^{२६} ।
 इम जाण^{२७} साह पूजे^{२८} 'अभौ', आकथ बिया^{२९} अचंभसी^{३०} ।
 कोपियां^{३१} धरा लूटी तिकौ^{३२}, थाट दियां^{३३} दळ थंभसी ॥ ३५९

१ ख. ग. आंबखास । २ ख. ग. पौरिस । ३ ख. ग. छिवितौ । ४ ख. बोल ।
 ५ ख. जाब । ६ ग. जाए । ७ ख. ग. सभे । ८ ख. ग. अनम । ९ ग. ऐम ।
 १० ग. पाए । ११ ख. आए । १२ ख. ग. हुवो । १३ ख. दबोया । ग. दबोया ।
 १४ ग. अवर । १५ ख. उदोत । ग. उदोत । १६ ख. ग. खिदोत । १७ ग. ऐम ।
 १८ ख. ग. प्रभती । १९ ख. ग. तदि । २० ख. ग. प्रीति । २१ ग. भयं । २२ क.
 अभपती । २३ ख. ग. तोरा । २४ ख. जंवहर । २५ ख. कुवकर । ग. कुरबकरि ।
 २६ ख. ग. मौसरि । २७ ख. ग. जाणि । २८ ख. पूजे । २९ ख. बीयां । ग. बीया ।
 ३० क. अचंभसी । ३१ ख. ग. कोपीयां । ३२ ख. ग. तिको । ३३ ख. ग. लीयां ।

३५८. अंबखास - आम-खास । अभमाल - महाराजकुमार अभयसिंह । भळळ - देदीप्यमान ।
 पौरस - पोष, शक्ति । भाळाहळ - सूर्य, अग्नि । छिवतौ - स्पर्श करता हुआ, छूता
 हुआ । उरसि - आसमान । चख - चक्षु, नेत्र । चोळ - लाल, रक्तवर्ण । तुजक-
 मीर - अभियान यां जलूस आदिकी व्यवस्था करने वाला कर्मचारी, मीरतुजक ।
 ताप - भय, डर, रोब । जाब - जवाब । दीधौ - दिया । उमराव - अमीर, सर-
 दार । खान - मुसलमान । रवि - सूर्य । उदोत - उदय । खिदोत - खद्योत, नक्षत्र,
 जुगनू । रुख - प्रकार तरह ।

३५९. पांण - प्राण, बल, शक्ति । प्रभत्ती - प्रभा, कांति । असपत्ती - वादशाह । तोरा -
 आभूषण विशेष, तुरी । जवहर - जवाहरात । किलमपति - बादशाह । दीध - दिये ।
 कुरब - मान, प्रतिष्ठा । खून - गुनाह, अपराध । मौसर - अवसर । पूजे - मान
 करता है । बियां - दूसरों । अचंभसी - आश्चर्ययुक्त ।

एक^१ समे^२ 'अभमाल', एम^३ आबियो^४ पुजाए^५ ।
 दुभल वार दूसरी, चढ़ण कटहड़ै^६ चलाए^७ ।
 अनवह^८ चढ़े अमीर, साहजादां नह मौसर ।
 उठै^९ चढ़े^{१०} धर^{११} जोम, बहसि^{१२} 'अभमाल' बहादर^{१३} ।
 गज तजै डांण अन^{१४} पह^{१५} गुमर, तेज साह इसड़ौ^{१६} तठै ।
 अटकियो^{१७} असुर तिण पर^{१८} 'अभै', जमदढ़ कर धरियो^{१९} जठै ॥ ३६०

पेखि रोस पतिसाह, माळ मोतियां^{२०} समप्पै^{२१} ।
 बगसी^{२२} भेजि सताब^{२३}, आंणि माळा^{२४} सुज^{२५} अप्पै ।
 मीर - तुजक मारिवा, धिखे जमदढ़ कर धारै^{२६} ।
 दुभल खानदौरांस, पटाभर जिम पूतारै^{२७} ।
 असतूत^{२८} करै^{२९} बह^{३०} करिअरज, जोड़े हाथ जुहारियो^{३१} ।
 असपती मौहर^{३२} आंणे 'अभौ', इण विध^{३३} कोध उतारियो^{३४} ॥ ३६१

१ ग. ऐक । २ ख. ग. समे । ३ ग. ऐम । ४ ख. ग. आबियो । ५ ग. पुजाए ।
 ६ ख. कटहलै । ७ ग. चलाए । ८ ख. अतिनह । ग. अनिनह । ९ ख. ग. जठै ।
 १० ख. ग. चढ़े । ११ ख. ग. धरि । १२ ख. ग. बहसि । १३ ख. बहादर । १४ ख.
 ग. अनि । १५ ख. ग. पोहौ । १६ ग. इसडो । १७ ग. अटकीयो । १८ ग. परि ।
 १९ ख. ग. धरियो । २० ख. ग. मोतियां । २१ ख. समप्पे । ग. सम्मप्पे । २२ ख.
 बगसी । २३ ख. सताब । २४ ख. ग. माला । २५ ख. ग. सुजि । २६ ख. धारे ।
 २७ ख. ग. पूतारे । २८ ग. असतूति । २९ ग. करे । ३० ख. बोहौ । ग. बोहौ ।
 ३१ ख. जवारीयो । ग. जह्वारीयो । ३२ ख. मौहोरि । ग. मौहोरि । ३३ ग. विधि ।
 ३४ ख. ग. उतारियो ।

३६०. आबियो - आया । दुभल - वीर । वार - समय, वेला । कटहड़ै - कटहरा । धर -
 धारण कर के । जोम - जोश, आवेश । बहसि - जोशमें आ कर (?) ।
 डांण - मद जो हाथीके मस्तक पर श्रवता है, दान । अन - अन्य । पह - राजा, योद्धा ।
 गुमर - गर्व । साह - बादशाह । इसड़ौ - ऐसा । अभै - महाराजकुमार अभयसिंह ।
 ३६१. बगसी - बक्शी । सताब - शीघ्र । समप्पै - समर्पण किया । मीर तुजक - सेनाका
 या अभियान तथा जलूसकी तैयारीका प्रबंधकर्ता कर्मचारी । धिखे - क्रोधपूर्ण हो कर ।
 जमदढ़ - कटार विशेष । खान दौरां - (?) । पटाभर - साथी । पूतारै -
 जोश दिलाता है, उत्साहित करता है । असतूत - अस्तुति, प्रार्थना । जोड़े हाथ -
 करबद्ध हो कर । जुहारियो - अभिवादन किया । असपती - बादशाह । मौहर -
 अगड़ी, अग्र । आंणे - ला कर । अभौ - महाराजकुमार अभयसिंह ।

खौदालम अंबखास, अचड़ कटहड़ै उबारी^१ ।
 धरे^२ गरब^३ जोधाण, करग धारतां कटारी ।
 इण विध^४ मेळ अमेळ, करै साहां कळिनारौ ।
 सीख करे साहसूं, अडर मलपियौ^५ 'अजा'रौ^६ ।
 असवार हुवौ^७ गज ऊपरा, चढ़ि छक थाट चलावियौ^८ ।
 इम अचड़ खाट^९ छिवतौ^{१०} उरस^{११}, 'अभमल' डेरां आवियौ^{१२} ॥ ३६२

सोरठा^{१३}

इम अचड़ां अणपाल, कंवरांगुर दिन दिन करै ।
 मरूधर 'अभमाल', अति छक धारै 'अजण' उत^{१४} ॥ ३६३
 जोधाणौ^{१५} जिण वार, इळ^{१६} माणै राजा 'अजौ' ।
 आसीसै^{१७} अणपार, जस खट व्रन^{१८} 'जसराज' उत^{१९} ॥ ३६४
 सांसण जूना^{२०} सोय, दत मुकदम भूपाळ^{२१} दत ।
 करै न खेचल कोय, जगपाळग 'जसराज' उत^{२२} ॥ ३६५

१ ख. ग. उवारी । २ ख. ग. धरीयौ । ३ ख. ग. गरब । ४ ख. ग. विधि ।
 ५ ख. ग. मल्हपियौ । ६ ख. अडारौ । ७ ख. हुवौ । ८ ख. चलाइयौ । ग. चलाबीयौ ।
 ९ ख. खाटि । १० ख. ग. छिवतौ । ११ ग. उरसि । १२ ख. ग. आवीयौ ।
 १३ ख. दुहा सोरठा । ग. दुहा सोरठा । १४ ख. ग. उत । १५ ख. जोधाणै । ग.
 जोधणै । १६ ख. इण । १७ ख. आसी । १८ ख. व्रण । ग. व्रण । १९ ख. ग. उत ।
 २० ख. जूना । २१ ख. नूपाल । २२ ख. ग. उत ।

३६२. खौदालम - बादशाह । अंबखास - आमखास । अचड़ - कीर्ति । कटहड़ै - राजा-
 महाराजा या बादशाहके इर्द-गिर्द बनी काष्ठकी प्रवेष्टिनीमें । उबारी - रक्षा की ।
 मेळ - भेरी । अमेळ - शत्रुता । कळिनारौ - (?) । मलपियौ - कूदा,
 छलांग भरी । अजारौ - महाराजा अजीतसिंहका, महाराजकुमार अभयसिंह । खाट -
 प्राप्त कर के ।

३६३. अणपाल - बेरोकटोक । कंवरांगुर - महाराजकुमार श्रेष्ठ अभयसिंह । छक - जोश,
 शक्ति । अजण उत - महाराजा अजीतसिंहका पुत्र महाराजकुमार अभयसिंह ।

३६४. इळ - पृथ्वी । माणै - उपभोग करता है । अजौ - महाराजा अजीतसिंह । खट व्रन -
 ब्राह्मणादि छः जातियाँ विशेष । जसराज उत - महाराजा जसवंतसिंहका पुत्र महा-
 राजा अजीतसिंह ।

३६५. जूना - प्राचीन, पुराना । दत - दान । मुकदम - प्रधान, मुख्य, मुकद्दम । खेचल -
 तकलीफ, कष्ट । जगपाळग - संसारका पालनकर्ता ।

जस ध्रम काज^१ जगीस, नवां गांव^२ 'अजमल' नरिंद ।
 तांवापत्र^३ ब्रवि^४ तीस, जस लीधौ^५ 'जसराज'-उत^६ ॥ ३६६
 कवि उमरावां केक^७, दुजां केक मंत्रियां^८ दिया ।
 इम मज किया^९ अनेक, जगि घर^{१०} घर 'जसराज'-उत^{११} ॥ ३६७
 सुजि घर असि सिरपाव, दुभल कड़ा मोती दुगम^{१२} ।
 दिल 'अजमल' दरियाव, जग^{१३} दीधा 'जसराज'-उत^{१४} * ॥ ३६८
 वणि हरचंद जिम वार, वधियौ^{१५} सुख चहुंवै वरण ।
 तप रवि जिम तिण वार, जग ऊपर^{१६} 'जसराज'-उत^{१७} ॥ ३६९
 धरि^{१८} हिंदवांणां ढाळ, दावाबंध दिलेसरां^{१९} ।
 इम सुग^{२०} गौ 'अजमल', जस खाटे 'जसराज'-उत^{२१} ॥ ३७०

इति षष्ठ प्रकरण ।

★

१ ख. ग काजि । १ ख. ग. गांम । ३ ख. तांवापत्र । ४ बवि । ग. ब्रवि । ५ ख. ग. लीधा । ६ ख. ग. ऊत । ७ ख. केम । ८ ख. ग. मंत्रियां । ९ ख. ग. कीया । १० ख. ग. घरि घरि । ११ ख. ग. उत । १२ ख. दरव । ग. दरब । १३ ख. ग. जगि । १४ ख. ग. उत ।

*ख. तथा ग. प्रतियोंमें यह पंक्ति निम्न प्रकार है— 'अजमल दिल दरियाव ।'

१५ ख. ग. वधियौ । १६ ख. ग. ऊपरि । १७ ख. ग. उत । १८ ग. घर । १९ ग. दिलेसुरां । २० ग. शुगि । २१ ग. उत ।

॥ ये दो पंक्तियां ख. प्रतिमें नहीं हैं ।

३६६. जगीस — राजा, नृप । तांवापत्र — दानमें दी गई भूमिका सनद-पत्र जो ताअकी चदर पर बना हुआ होता है । ब्रवि — दे कर ।

३६७. दुजां — द्विजों, ब्राह्मणों ।

३६८. अजमल — महाराजा अजीतसिंह ।

३६९. हरचंद — सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र । वार — समय । चहुंवै — चारों ।

३७०. हिंदवांणां — हिन्दुओं । दावाबंध — दावा करने वाला, शत्रु । दिलेसरां — बादशाहों । सुग — स्वर्ग । गौ — गया । अजमल — महाराजा अजीतसिंह ।

दिल्लीमें महाराजा अभयसिंहरे राजतिलकरी वरणण

कवित्त-तदिन 'अभा'रे तिलक, साह स्त्रीहथां सधारे^१ ।
 ते^२ अवींद मोतियां^३, अखित स्त्रीहथां अधारे* ।
 राज इंद्र राजेस^४, रटे^५ स्त्रीमुख महाराजा^६ ।
 स्त्री कमळे^७ सोहिया^८, रूप स्त्रीवंत ग्रहराजा ।
 स्त्रीहथां साह सिरपाव सजि^९, असि^{१०} गज ब्रविस्त्रीनग^{११} अथां^{१२} ।
 स्त्रीहथां खाग खंजर सहित, सुजड़ बंधाए^{१३} स्त्रीहथां ॥ १
 इहौ^{१४} - इम विध^{१५} विध 'अभमाल'रौ, सभे कुरब^{१६} सुरताण ।
 अति भळहळ तप ओपियो^{१७}, भळहळ कमथां भाण ॥ २

छंद पदुरी

तपवंत भूप^{१८} निज धाम तत्र ।
 छज कनक सिंघासण चमर छत्र ।
 दुतिवंत करे सन्नान^{१९} दान ।
 विध^{२०} राज रीत सासत्र^{२१} विधान ॥ ३
 पौसाक ऊंच^{२२} जवहर अपार ।
 करि जोतवंत^{२३} भूखण प्रकार ।

१ ख. अधारे । २ ग. ते । ३ ग. मोतीयां ।

*यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है ।

४ ग. राजेसु । ५ ख. ग. रटे । ६ ख. ग. साहाराजा । ७ ख. कम्मलि । ग. कम्मलि ।
 ८ ख. ग. सोहीया । ९ ख. ग. सभि । १० ख. अजि । ११ ग. भग । १२ ख.
 हथां । १३ ख. बंधाए । ग. बंधाए । १४ ख. ग. दोहा । १५ ख. ग. विधि विधि ।
 १६ ख. कुरब । १७ ख. ग. ओपीयो । १८ ख. घूप । १९ ख. ग. सन्नान । २० ख.
 ग. विधि । २१ ख. ग. सास्त्र । २२ ख. ऊंच । २३ ख. ग. जोतिवंत ।

१. तदिन - उस दिन । अभा - महाराजा अभयसिंहके । अवींद - अविद्ध, बिना छेदके ।
 साह - बादशाह । अखित - अक्षत । स्त्रीहथां - अपने स्वयंके हाथों । अधारे - किया ।
 राजेस - सुशोभित होता है । कमळे - शिर पर, शिरसे । सोहिया - सुशोभित हुआ ।
 स्त्रीवंत - लक्ष्मीवान् । ग्रहराजा - सूर्य, भानु । ब्रवि - दे कर । सुजड़ - कटार ।
 बंधाए - धारण करवाए ।
२. अभमाल - महाराजा अभयसिंह । भळहळ - प्रज्वलित, देदीप्यमान । तप - ऐश्वर्य ।
 कमथां - राठीयों । भाण - सूर्य ।
३. तपवंत - तपस्यापूर्ण, ऐश्वर्यवान् । तत्र - वहां । छज - सुशोभित हो कर । कनक -
 सुवर्ण, सोना । दुतिवंत - कांतिवान् । सन्नान - स्नान । विध - विधि, ढंग, कानून ।
४. ऊंच - बढ़िया, श्रेष्ठ । जवहर - जवाहरात । जोतवंत - ज्योतिवान् । भूखण - आभूषण ।

*कसि जड़ित जवाहर खग कटार ।
 तुररास जवाहर रूप तार ॥ ४
 सोवन्न^१ जवाहर अति सरूप ।
 धरि जड़ित जवाहर पांणि धूप ।*
 जयजरी सिमांनां खंभ जड़ाव ।
 तै रूप मेख रेसम तणाव ॥ ५
 पग मंडा जरकसी वणि अपार ।
 वरियांम मलपियौ^३ जेण^३ वार ।
 आवियौ^४ सिंहासण^५ राज इंद्र^६ ।
 ब्राजियौ^७ सिंघासण^८ क्रीत विंद^९ ॥ ६
 ओपियौ^{१०} छत्र जगमग उदार ।
 चौसरा चमर उजळंग चार ।
 प्रत जोतग सासत्र^{११} सुभ^{१२} प्रमाण^{१३} ।
 अभिखेक दीध द्विजराज आण^{१४} ॥ ७

१ ग. सोवन्न । *ख. प्रतिमें ये पंक्तियां अपूर्ण हैं ।

२ ख. ग. मलपीयौ । ३ ख. ग. जेण । ४ ख. ग. आवीयौ । ५ ख. सिंहासणि । ग. सिंघासणि । ६ ख. ग. यंद । ७ ख. ग. ब्राजीयौ । ८ ख. ग. सिंघासणि । ९ ख. वंद । ग. वंद । १० ख. ओपीयौ । ग. ओपीयौ । ११ ख. सासत्र । १२ ग. सुत । १३ ख. ग. प्रमाणि । १४ ख. ग. आणि ।

४. जवाहर — जवाहरात ।

५. सोवन्न — सोना, सुवर्ण । सरूप — सुन्दर, मनोहर । पांणि — हाथ (?) । धूप — तलवार । जयजरी — जरीदार । सिमांनां — शामियाना । तणाव — वे रस्सियाँ जिनके सहारे तंबू खड़ा किया जाता है ।

६. पग मंडा — वह कपड़ा या बिछौना जो आदरके लिए किसी महापुरुष या राजा महाराजाके मार्गमें बिछाया जाता है । वरियांम — वीर, श्रेष्ठ । मलपियौ — चला, छलांग भरी । ब्राजियौ — बैठा, सुशोभित हुआ । क्रीत — कीर्ति । इंद्र — दूल्हा, पति ।

७. जगमग — चमक-दमकयुक्त । चौसरा — पुष्पहार, फूलोंकी मालाएँ । उजळंग = उज्ज्वल + अंग — उज्ज्वल । जोतग — ज्योतिष । अभिखेक — अभिषेक । दीध — दिया । द्विजराज — ब्राह्मण । आण — आ कर, बुला कर ।

पह^१ तिलक कीध कुंकुम सु पाणि^२ ।
 मोतियां अक्षत^३ चाढ़े^४ प्रमाणि ।
 जस जोतख^५ द्विज्ज^६ लिखंत^७ जंत्र ।*
 मुख^८ पढ़त महा^९ द्विज^{१०} वेद^{११} मंत्र ॥ ८
 करि करि नौछावरि^{१२} द्रव्व^{१३} केक ।
 उछळंत हीर मोती अनेक ।
 पन्नास^{१४} लाल माणिक अपार ।
 ध्रवि जाणि जवाहर^{१५} सघण धार ॥ ९
 सहनाय मुरसलां रंग सवाद ।
 नववती^{१६} घोर मंगलीक नाद ।
 सुभ^{१७} सुभइ मंत्रि^{१८} कनि^{१९} लोक सब्ब^{२०} ।
 दुति करति^{२१} नजर घण रज^{२२} दरव्व^{२३} ॥ १०
 वरदाइ^{२४} पढ़त गुण कवि वखाणि^{२५} ।
 मंगलीक वयण मौसर प्रमाणि^{२६} ।

१ ख. ग. पोहो । २ ख. प्रमाणि । ३ ख. ग. अक्षित । ४ ग. चाढ़े । ५ ख. ग. जेत ।
 ६ ख. ग. दुज । ७ ख. ग. लिखत ।

*ख. तथा ग. प्रतियोंमें यह पंक्ति निम्न प्रकार है—

जस जेत पत्र दुज लिखत जंत्र ।

८ ख. ग. मुषि । ९ ख. माहा । १० क. द्वज । ११ ख. देव । १२ ख. ग. नव-
 छावरि । १३ ख. द्रव । ग. द्रव्व । १४ ख. पनास । १५ ग. जवाहर । १६ ख.
 नववति । ग. नववत्ति । १७ ख. ग. सुजि । १८ ख. ग. मंत्री । १९ ख. करि ।
 २० ख. सब्ब । ग. अरब्ब । २१ ख. ग. करत । २२ ख. रतन । ग. रजत । २३ ख.
 ग. द्रव्व । २४ ख. ग. वरदाय । २५ ख. ग. वखाण । २६ ख. ग. प्रमाण ।

८ सु पाणि — सुन्दर हाथसे । जोतख — ज्योतिष । द्विज्ज — ब्राह्मण । जंत्र — यंत्र ।

९ नौछावरि — न्यौछावर । द्रव्व — द्रव्य, धन । हीर — हीरा । ध्रवि — वर्षा, बरमात
 हुई । जाणि — मानों, जैसे । सघण — सघन, घना ।

१० सहनाय — सहनाई नामक वाद्य विशेष । मुरसलां — वाद्य विशेषों । नववती — नौवत ।
 मंगलीक — मांगलिक । सुभइ — योद्धा । सब्ब — सर्व, सब । रज = रजत, चांदी ।
 दरव्व — द्रव्य, धन-दौलत ।

११ वरदाइ — जोश दिला कर, विरुदा कर । गुण — कीर्ति, यश । वयण — वचन, शब्द ।
 मौसर — अवसर, मौका ।

राजसी अंग पौसाक रूप ।
 भळहळत जोत रवि जेम भूप ॥ ११
 अंग तेजवंत सोभा अनंग ।
 'अजमाल' पाट^१ 'अभमल' अभंग ।
 बरियांम^२ सीस^३ किय^४ जेण^५ वार^६ ।
 आरती राज - प्रोहित उदार ॥ १२
 सोहियौ^७ 'अभौ' इण विध^८ सकाज ।
 रघुवंस^९ उजागर महाराज^{१०} ।
 वाधारण हिंदुसथान^{११} वान ।
 'अभमाल' जोड़^{१२} नह भूप आन ॥ १३
 स्त्री भगवतगीता हित सधार ।
 स्त्री कर्ण^{१३} अजन हूं कहै^{१४} सार ।
 नर देह तणै^{१५} मभ^{१६} हूं नरिंद ।
 औ 'अभौ' जिकौ जोधाण इंद^{*} ॥ १४

१ ख. पाटि । ग. पाटि । २ ख. बरीयाम । ग. बरीयाम । ३ ग. सीसि । ४ ग. कीय ।
 ५ ख. ग. जेणि । ६ ग. बार । ७ ख. ग. सोहीयी । ८ ख. ग. विधि । ९ ग. रघु-
 बंसि । १० ख. ग. माहाराजा । ११ ख. ग. हिंदुसथान । १२ ग. जोड़ि । १३ ख.
 ग. कुण्ठ । १४ ख. ग. कहे । १५ ग. तणै । १६ ख. ग. मभि ।

*ख. तथा ग. प्रतियोंमें यह पंक्ति इस प्रकार है—

औ जिको अभौ जोधाण इंद ।

११. भळहळत - देदीप्यमान होता है । रवि - सूर्य ।

१२. अनंग - कामदेव । अजमाल - महाराजा अजीतसिंह । अभमल - महाराजा अभयसिंह ।
अभंग - वीर, योद्धा ।

१३. सोहियौ - सुशोभित हुआ । अभौ - महाराजा अभयसिंह । उजागर - उज्ज्वल करने
वाला । वाधारण - बढानेको । वान - कीर्ति, यश । जोड़ - बराबर, समान । आन -
अन्य, दूसरा ।

१४. अजन - वीर अर्जुन । अभौ - महाराजा अभयसिंह । जिकौ - वह । जोधाण इंद -
जोधपुरका स्वामी या राजा ।

प्रम अंस सूर दाता प्रमांण ।
 वित^१ दियण लियण^२ मुंहगा^३ वखांण ।
 लख समपण भांजण खळां^४ लाख ।
 सूरजकुळ^५ सूरज^६ तेर साख ॥ १५
 थट नाथ फबै^७ बळ^८ पूर थाट ।
 परताप चौगुणै^९ 'अजण' पाट ।
 ।
 ॥ १६

कवित्त-चढ़ि प्रताप चौगुणै, पाट^{१०} पिततणै^{११} प्रभत्ती ।
 असपत्ती अरधियौ^{१२}, पेखि पौरस^{१३} छत्रपत्ती ।
 भड़^{१४} तोरा^{१५} गज भिड़ज, जड़ित सोवन्न^{१६} जवाहर^{१७} ।
 गढ़ बगसै^{१८} नागौर^{१९}, दुसह दहले^{२०} दावागर ।
 साह हूं विदा हुय^{२१} दळ सभे, नरिद असौ फबियौ^{२२} नभौ ।
 'अजमाल' ब्रह्म लग आखिया^{२३}, इता नीर चाढ़ै 'अभौ' ॥ १७

१ ग. वित्त । २ ख. ग. लीयण । ३ ख. ग. मौहगा । ४ ख. लखां । ५ ख. ग. सूरजकुल । ६ ग. सूरज । ७ ख. फते । ग. फबे । ८ ख. वल । ९ ख. चौगणे । ग. चौगणै । १० ख. ग. पाटि । ११ ग. तणै । १२ ख. ग. अरधीयो । १३ ग. पौरिस । १४ ख. ग. भर । १५ ख. तोरा । १६ ख. सोवन । ग. सोवन्न । १७ ख. जवाहर । ग. जंवारह । १८ ख. ग. बगसे । १९ ग. नागौर । २० ख. दहवे । २१ ख. ग. होय । २२ ख. फबीयो । ग. फबीयो । २३ ख. ग. आषीया ।

१५. प्रम-परम, विष्णु, ईश्वर । वित-धन, द्रव्य । दियण-देने वाला । लियण-लेने वाला । मुंहगा-महंगा । वखांण-कीर्ति, यश । लख-लाख, लक्ष । समपण-देनेके लिये । भांजण-नाश करनेको ।

१६. थट-वैभव, ऐश्वर्य । फबै-सुशोभित होता है । थाट-वैभव, सेना । अजण-महाराजा अजीतसिंह । पाट-राज्यसिंहासन ।

१७. पिततणै-पिताके । प्रभत्ती-कीर्ति, यश । असपत्ती-बादशाह । अरधियो-आधे भागका मालिक, अर्द्ध शक्तिवान । पेखि-देख कर । पौरस-पोरुष, शक्ति । छत्रपत्ती-राजा । भड़-योद्धा । तोरा-तोड़ा, रुपयोकी थैली । भिड़ज-घोड़ा । सोवन्न-सुवर्ण, सोना । दुसह-शत्रु । दहले-भयभीत हुए । दावागर-शत्रु । साहहूं-बादशाहसे । विदा-प्रस्थान, कूच । असौ-ऐसा । फबियौ-सुशोभित हुआ । नभौ-आकाश, नभ । अभौ-महाराजा अभयसिंह ।

महाराजा अभयसिंहरी जोधपुर दिस आगमन

सभि दळ भळहळ सकळ, गयंद चढ़ियौ^१ गह धारे ।
 हळाबोळ^२ दळ हले, वाजि दुंदुभ^३ जिण वारे ।
 धमस नाळ रजधोम^४, भळळ तप भंख कमळ भळ ।
 धर थरसळ धरधरण, उतन दिस हलै^५ 'अभैमल' ।
 ढळकतां^६ ढाल^७ मदधर^८ धजां, घंट घोर अग्राज^९ घण ।
 चढ़ियां^{१०} मजेज होतां चमर, तेजपुंज 'अगजीत'तण ॥ १८

दाह^{११} केक मभि^{१२} दुभल, 'अभौ' मुरधर मभि आए^{१३} ।
 मिळे बंधव^{१४} भड़ मंत्री, प्रजा आणंद सुख पाए^{१५} ।
 दाबागर गा दहलि, मिळे^{१६} सरणां गिर-भंगर ।
 चित सयणां सुख चहै, कहै जस विरद कवेसर^{१७} ।
 करि ठांम ठांम वंदण कळस, सरस गांम निज गांम सुख ।
 ह्वै नजर नरां सांमंद हरख, राका निस सांमंद रुख ॥ १९

१ ख. ग. चढ़ीयौ । २ ख. हळाबोळ । ३ ग. दुंदुभि । ४ ग. रजधोम । ५ ख. हले ।
 ६ ग. ढळकत । ७ ख. ग. ढाल । ८ ग. मदभर । ९ ग. आग्राज । १० ख. ग.
 चढ़ीयां । ११ ग. दाह । १२ ग. सभि । १३ ग. आए । १४ ख. बंधव । १५ ग.
 पाए । १६ ग. भळे । १७ ग. कवेसर ।

१८. भळहळ - तेजस्वी (?) । सकळ - सब । गह - गर्व । हळाबोळ - समुद्र, महासागर ।
 दुंदुभ - नक्कारा । धमस - प्रहार । नाळ - घोड़ोंके टापके नीचे लगाया जाने वाला
 वृत्ताकार उपकरण । रज - धूलि । धोम - धुँआ । भळळ - सूर्य । तप - प्रकाश, तेज ।
 भंख - मन्द दिखाई देनेका भाव । कमळ भळ - कमल मुर्झा गये । धर - पृथ्वी ।
 थरसळ - कंपायमान । धरधरण - शेषनाग । उतन - जन्म-भूमि, वतन । दिस - तरफ,
 ओर । अभैमल - महाराजा अभयसिंह । ढळकतां - लुढ़कते हुए । मदधर - हाथी ।
 धजां - ध्वजाएँ । घंट - घंटा । घोर - तेज । अग्राज - गर्जना, ध्वनि । घण - बहुत,
 मेघ । मजेज - शीघ्र । अगजीत - महाराजा अजीतसिंह । तण - तनय, पुत्र ।

१९. दाह - जलन । केक - कई, कुछ । दुभल - वीर । अभौ - महाराजा अभयसिंह ।
 मभि - मध्य, में । दाबागर - शत्रु । दहलि - भयभीत हो कर । गिर-भंगर - गिरि-
 कुंज या पहाड़ोंकी भाड़ी । सयणां - हितैषियों । विरद - विरुद । कवेसर - कवीश्वर,
 महाकवि । ठांम - स्थान । वंदण - अभिवादन । सरस - आनन्दपूर्वक । सांमंद -
 समुद्र । राका - पूर्णमासी । निसा - रात्रि । रुख - तरह, प्रकार ।

जदि नजीक जोधांण, सभे मुक्कांम सकाजा ।
 अंग केसर वहौ अतर, मंडे डंबर महाराजा ।
 मंडे गोठ जीमियौ^१, जोध कवि थाट जिमाए^२ ।
 करि^३ जळ नूमळ^४ कपूर, पांनि^५ आरोगि प्रभाए^६ ।
 पौसाक ऊंच जवहर पहरि, कसि आवध^७ चढ़ियौ^८ करी ।
 बणि हले थाट सोभा वणी, इंद्र जेम 'अभमल्ल'री ॥ २०

महाराजा अभयसिंहजीरा स्वागतरी वरणण

छंद हणूंकाल^९

उण वार^{१०} वणि नरइंद्र, 'अभमाल' वाणिक इंद्र ।
 पौसाक ऊंच अपार, सब^{११} गत्थ^{१२} वणि सिणगार ॥ २१
 गजबोल चित्रह^{१३} गात, सिर इंद्रधनुख सुभात ।
 जरकसीके जरतार, पिड भूल^{१४} फूल^{१५} अपार ॥ २२

महाराजा अभयसिंहरी लवाजमारी वरणण

वणि रतन^{१६} हौदा वाधि, सोवनी रजत असाधि ।

लवाजमारा हाथियांरी वरणण

कळवूत^{१७} जरकस केक, नव मेघाडंबर^{१८} अनेक ॥ २३

१ ख. ग. जीमियौ । २ ग. जीमाए । ३ ख. ग. जरि । ४ ख. ग. नूमल । ५ ग. पांनि । ६ ग. प्रभाए । ७ क. आवस । ८ ख. ग. चढ़ियौ । ९ ग. हणुंकाल । १० ग. वार । ११ ख. ग. अब । १२ ख. ठाथ । ग. थाट । १३ ख. ग. चित्रत । १४ ग. फूल । १५ ग. भूल । १६ ग. रजत । १७ ग. कळवूत । १८ ख. मेघाडंबर । ग. मेघडंबर ।

२०. जोध - योद्धा, वीर । थाट - समूह । जिमाए - भोजन करवाये । पांनि - हाथ, तांबूल । आवध = आयुध - अस्त्रशस्त्र । करी - हाथी, गज । थाट - दल, सेना । अभमल्ल - महाराजा अभयसिंह ।
२१. नरइंद्र - नरेन्द्र, राजा । अभमाल - महाराजा अभयसिंह । वाणिक - कांति, शोभा ।
२२. गजबोल - (?) । जरकसी - सोने-चांदीके तारोंका काम, कलावूतका काम । जरतार - सोने-चांदीके तारोंसे बना हुआ या गुंथा हुआ । फूल - फूलपत्तीकी चित्रकारी ।
२३. हौदा - अम्मारी । सोवनी - सोनेकी, स्वर्णिम । रजत - चांदीकी । असाधि - (?) मेघाडंबर - एक प्रकारका छत्र विशेष ।

के जड़ित जवहर कांम, धुर मेघडंबर^१ धाम ।
 लड़ लूब मोतिय^२ लागि, जग जोति अति छवि जागि^३ ॥ २४
 पौसाक ऊंच अनोप^४, इम पीलवान्ह ओप^५ ।
 असवार गज उण वार^६, पुज देव दुज अणपार ॥ २५
 महमाय पूजा मान, महरंग^७ गज^८ मसतान ।
 करि घंट घोर किलाव, वणि चमर बंध^९ वणाव ॥ २६
 भळहळत^{१०} चित्रत भाल, ढळकत रंग रंगडाल ।
 धज फरर नेजा धार, सभि तोग धर असवार ॥ २७
 वणि मही-मुरतव^{११} वाग, नौबत्ति^{१२} धारक नाग ।
 धरहरत मदभर धार, वप सघण जिम विसतार^{१३} ॥ २८
 बह^{१४} लंगर धर चख बोळ, क्रीडंत भसर कपोळ ।

लबाजमारा घोड़ांरौ वरणण

तदि नचत नाच तुरंग, अति चपळ नटवर अंग ॥ २९

१ ख. मेघडंबर । २ ख. ग. मोतिय । ३ ख. जाग । ४ ग. अनोप । ५ ग. ओप ।
 ६ ग. उण वार । ७ ख. मोहोरंग । ग. मोहरंग । ८ ग. ज । ९ ख. बंध । १० ख.
 भलहलत । ११ ग. मही मुरतब । १२ ख. ग. नौबत्ति । १३ ग. विस्तार । १४ ख.
 बोहो । ग. बोहो ।

२४. जवहर - जवाहरात । मेघडंबर - मेघाडंबर । लड़-लूब मोतिय - मोतियोंके गुच्छोंकी पंक्ति । छवि - शोभा ।

२५. ऊंच - श्रेष्ठ । अनोप - अनुपम, बढ़िया । पीलवान्ह - महावत । ओप - शोभा देती है ।
 दुज = द्विज - ब्राह्मण । अणपार - असीम, अपार ।

२६. महमाय - महामाता, देवी, दुर्गा । महरंग - (?) । मसतान - मस्त । करि - हाथी । घंट - घंटा जो हाथीकी भूलके साथ लटकता रहता है । किलाव - हाथी, ऊँट, कुत्ते आदिके गलेका पट्टा, किलावः । चमर बंध - (?) ।

२७. भळहळत - वेदीप्यमान । भाल - ललाट । ढळकत - लुढ़कती है । धज - ध्वजा । फरर - छोटी-छोटी झड़िँ जो भालोंके साथ लगी रहती है । नेजा - भाला । तोग - मुगलकालीन बादशाहोंका ध्वज विशेष जिस पर सुरा गायके पूंछके बालोंके गुच्छे लगे रहते थे ।

२८. मही-मुरतब - यवन बादशाहोंके आगे हाथी पर चलने वाले सात भंडे जिन पर मछली और ग्रहों आदिकी आकृतियाँ होती थीं, माहीमरातिब । नौबत्ति - नौबत, नगाड़ा विशेष । धारक - धारण करने वाला । नाग - हाथी । धरहरत - ध्वनि विशेष । मदभर - हाथी । वप - वपु, शरीर । सघण - घना ।

२९. लंगर - शृंखला, जंजीर । चख - चक्षु, नेत्र । बोळ - लाल । क्रीडंत - क्रीड़ा करते हैं । तुरंग - घोड़ा । चपळ - चंचल । नटवर - श्रेष्ठ नट (जैसे फुर्तीले) ।

सभि रजत सोव्रन^१ साज, तारीफ छवि^२ तह ताज ।
 रसमी मुखमल रंग, सकळाति ऊच^३ सुचंग ॥ ३०
 जरतार कस गुलजार, दमकंत घण रंगदार ।
 बादळां-याळ^४ वणाव^५, सभि भळक बीज सिळाव ॥ ३१
 किलंगी स तुररा केक, असि सीस फबत अनेक ।
 गरकाव^६ केसरि अंग, उच्छाह^७ अंग उमंग ॥ ३२
 पौसाक जवहर^८ पूर, जगचख्य जोति जहूर ।
 वां^९ तुरां पर उणवार^{१०}, असवार इसा अपार ॥ ३३

ऊंटारौ वरणण

जर वफत^{११} भूल जमाज^{१२}, सकळात मुखमल साज ।
 सीसम्म^{१३} कूचिय^{१४} सांम, करि दंत वेलिय^{१५} कांम ॥ ३४

१ ख. ग. सोव्रण । २ ख. ग. छवि । ३ ग. भंच । ४ क. वाळदां याळ । ५ ग. वणाव । ६ ख. गरकाव । ७ ख. उच्छाह । ग. उत्साह । ८ ख. जवहर । ग. जंवहर । ९ क. वा तुरां । १० ग. उणवार । ११ ग. वफत । १२ ख. जमाल । १३ ख. ग. सीस्संम । १४ ख. ग. कूचीय । १५ ख. ग. बेलीय ।

३०. रजत — शोभा देता है, चांदी । सोव्रन — सुवर्ण, सोना । साज — घोड़े, ऊँट आदिके चारजामाके उपकरण । सुचंग — सुन्दर, श्रेष्ठ ।

३१. कस — (?) । गुलजार — यहाँ गुलनार शब्द होना चाहिए जिसका अर्थ एक प्रकारका कसोदा होता है । दमकंत — चमकते हैं । बादळां-याळ — घोड़ेकी गर्दनके बालों पर चांदी या सोनेके चमकीले तार गूँथे हुए हैं, जो इस प्रकार चमकते हैं मानों बिजली चमकती हो । सिळाव — बिजलीकी चमक, दमक ।

३२. किलंगी — एक प्रकारका आभूषण विशेष जो शिर पर लगाया जाता है । तुररा — एक प्रकारका आभूषण विशेष । असि — घोड़ा । फबत — शोभा देते हैं । गरकाव — डूबा हुआ । उच्छाह — उत्साह । उमंग — जोश ।

३३. जवहर — जवाहरात । जगचख्य = जगत् चक्षु — सूर्य । जोति — प्रकाश । जहूर — जुहूर, प्रकट, जाहिर होना । वां — उन । तुरां — घोड़ों ।

३४. जर — स्वर्ण, सोना । जर वफत — सोने-चांदीके तारोंसे बना कपड़ा, जरबफत । भूल — पावर । जमाज — ऊँट । सकळात — ओढ़नेका वस्त्र (?) । सीसम्म — एक प्रकारका वृक्ष, शीशम । कूचिय — ऊँटका चारजामा । करि — हाथी ।

अबनोस^१ चंदण अंग, करि रूप मोर कुरंग ।
 कठ रजत मभि छवि कोर, चित्र कनक हंस चकोर ॥ ३५
 दहुं तंग रेसम दीध, कसणास^२ रेसम कीध ।
 सोभंत स्त्रीय सकाज, ता सीस कुल्लह ताज ॥ ३६
 नक्केल सुरंग नराट, पचरंग डोरिय^३ पाट ।
 तक्खी स^४ रंग महताव^५, जरताव^६ पंख जुगाव^७ ॥ ३७
 पचरंग मोहरिय^८ पेस, वणि लूब^९ रेसम वेस^{१०} ।
 अति रूप जूंग अपार, कुंभरा^{११} जांणि कुमार ॥ ३८
 रेसम्म^{१२} सांमळ रंग, जकसेस घूघर जंग ।
 पल पंच दस धव पाय, जोजन्न^{१३} ऊपरि जाय ॥ ३९
 वां पीठि चह^{१४} असवार, दे खबरि^{१५} खबरदार^{१६} ।
 दुति साज जिल्लहदार, कलंगेपसर^{१७} हौकार ॥ ४०

१ ग. अबनोस । २ ग. कसणास । ३ ख. डोरीय । ग. दोरीय । ४ ख. तपीस ।
 ग. तापीस । ५ ग. महताव । ६ ग. जरताव । ७ ग. जुगाव । ८ ख. मोहोरीय ।
 ग. महोरीय । ९ ख. लूब । १० ख. पेस । ग. वेस । ११ ख. कुंभरा । ग. कूभरा ।
 १२ ख. ग. रेसम । १३ ख. ग. जोजन । १४ ख. चहौ । ग. वहौ । १५ ख. देषवरि ।
 ग. देषवरि । १६ क. षच्छरदार । १७ ग. कलंगेपसर ।

३५. अबनोस — अबनूसका वृक्ष । कुरंग — हरिण । कठ — काष्ठ । रजत — चांदी । कनक — स्वर्ण, सोना ।

३६. तंग — जीन कसनेका तसमा । कसणास — फीता । कुल्लह — घोड़ा विशेष, संभव है यह शब्द कुलाह हो जिसका अर्थ भूरे रंगका घोड़ा होता है और जिसके पीर गांठसे सुमों तक काले होते हैं अथवा घोड़ेके शिरका आभूषण विशेष । ताज — घोड़ा ।

३७. नक्केल — ऊँटके नाकमें डाला जाने वाला उपकरण विशेष । सुरंग — लाल, सुन्दर । नराट — बहुत । पचरंग — पांच रंगका । डोरिय — रस्सी या डोर । पाट — रेशम । तक्खी — एक प्रकारकी गद्दी जो ऊँटके चारजामाके नीचे रखी जाती है । महताव — चांद, चंद्र (?) । जरताव — (?) । पंख — (?) । जुगाव — (?) ।

३८. मोहरिय — ऊँटको नाकसे बाँधनेकी रस्सी विशेष । लूब — गुच्छा । जूंग — ऊँट । कुंभरा — क्रीच पक्षी । वि.वि. — सुन्दर ऊँटको प्रायः 'कुरभरी वच्चो है' ऐसा कह कर पुकारते हैं ।

३९. जकसेस — ऊँट । घूघर — घूघरियाँ । जंग — (?) । धव — दौड़ । जोजन्न — योजन । ऊपरि — अधिक, विशेष ।

४०. वां — उन, उनकी । चह — इच्छा करता है, चाहता है । खबरदार — संदेश देने वाला, सूचना पहुँचाने वाला । जिल्लहदार — कांतियुक्त, चमकदार । कलंगेपसर — (?) । हौकार — ध्वनि विशेष ।

सभि तीन हाथ सलंब, कर आबनूसिय^१ कंब ।
 करहास धारक केक, आवंत जात अनेक ॥ ४१
 कोतिल्ल^२ बह^३ केकाण, पांडवा दोरिय^४ पाण ।
 भळहळत साज भळूस, भडफिया^५ पोस भळूस ॥ ४२
 नरयंद^६ हालत नग्रि, उछटंत^७ कोतिल अग्रि ।
 रुहता बरोबर^८ कोर, जसवल्ल^९ हाक सजोर ॥ ४३
 करि कनक छडियां^{१०} केक, अग्नि छड़ी रूप अनेक ।
 जवहार हीर जड़ीस, छाजंत हाथ छड़ीस ॥ ४४
 इम चोपदार उदार, अत माल^{११} करत अपार ।

बाधारों वरणण

तालंग घोर तबल्ल^{१२}, सहनाय नद मुरसल्ल ॥ ४५
 वाजंत कळहळ वाज, गाजंत बह^{१३} गजराज ।
 सनमुख^{१४} मिळण^{१५} सकाज, रचिनजर बह^{१६} महाराज^{१७} ॥ ४६

१ ख. आबनूसी । ग. आबनूसी । २ ख. कोतिल । ग. कोतिल । ३ ख. बहो । ग. बहो ।
 ४ ख. ग. दोरीय । ५ ख. ग. भडफोया । ६ ख. नरयंद । ग. नरीयंद । ७ क. उबटंत ।
 ८ ख. बरोबर । ९ क. कसवल्ल । १० ख. ग. छड़ीयां । ११ ग. माम । १२ ख.
 तबल्ल । १३ ख. ग. बौहो । १४ ख. सनमुख । ग. सनमुखि । १५ ख. मिलन । ग.
 मिलत । १६ ख. बहो । ग. बहो । १७ ख. माहाराज ।

४१. सलंब - लम्बाई सहित, लम्बायमान । कर - हाथ । आबनूसिय - आबनूसका वृक्ष ।
 वि.वि. - आबनूसका वृक्ष बहुत ही मजबूत होता है । इसकी छड़िएँ प्रसिद्ध होती हैं ।
 कंब - छड़ी । करहास - ऊँट । धारक - धारण करने वाला, रखने वाला ।
 ४२. कोतिल्ल - राजाकी सवारीका घोड़ा । केकाण - घोड़ा । पांडवा - पांडवा - डगकी
 दूरीका फासिला । भळहळत - देदीप्यमान, चमकदार । साज - जीनके उपकरण ।
 भळूस - (?) । भडफिया - तेज गतिसे चलाये ।
 ४३. नरयंद - नरेन्द्र, राजा । नग्रि - नगर । उछटंत - छायांग भरते हैं । अग्रि - अगाड़ी ।
 जसवल्ल - यश (?) । हाक - आवाज ।
 ४४. करि - हाथमें । कनक - सुवर्ण, सोना । अग्नि - अन्य । रूप - चांदी, रोप्य । जवहार -
 जवहारात । हीर - हीरा । जड़ीस - जटित । छाजंत - शोभा देती हैं । छड़ीस - छड़ी ।
 ४५. तालंग - वाद्य विशेष । तबल्ल - वाद्य विशेष । सहनाय - सहनाई नामक वाद्य । नद -
 ध्वनि, नाद । मुरसल्ल - वाद्य विशेष ।
 ४६. वाजंत - ध्वनि करते हैं । कळहळ - कौलाहल । वाज - घोड़ा । गाजंत - गर्जना
 करते हैं । गजराज - हाथी । सकाज - लिए । नजर - भेंट ।

आवंत लोक अपार, वणि उछब बह^१ जिणवार^२ ।

वरसणारथी प्रजारा समूहरो वरणण

बह^३ नारि नर जुथ बेह, *आवंत लोक अछेह* ॥ ४७

संगार^४ विधि विधि साज^५, कमधज्ज दरसण काज^६ ।

हुय^७ जाण^८ समंद हिलोळ, लख लोक^९ हाल किलोळ ॥ ४८

चालंत इम चतुरंग, रंगराग बह^{१०} रसरंग ।

देखिवा जिसौ दुभाल, उणवाररौ^{११} 'अभमाल' ॥ ४९

त्रिय^{१२} जूथ मिलि बह^{१३} तांम, विधि^{१४} रूप अति छवि वांम ।

सभियांस सोळ संगार^{१५}, चित उछब मंगळचार^{१६} ॥ ५०

प्रफुलंत वदन प्रवीत, गावंत रस रंग गीत ।

महाराजा अभयसिंहजोरो वधावो

त्यां मांहि^{१७} त्रिय^{१८} सिरताज, सोभाग भाग सकाज ॥ ५१

सुभ चिहन सील सुचंग, अति रजत भूषण अंग ।

सिर कळस^{१९} धरियां^{२०} सोय, हरखंत अति चित होय ॥ ५२

१ ख. बौहो । ग. बहो । २ ख. जिणवार । ३ ख. बौहो । ग. बहो ।

*ख. प्रतिमें यह अंश— 'आवंत लोक लोक अछेह' ।

४ ख. शृंगार । ५ ग. साजि । ६ ख. ग. काजि । ७ ख. ग. होय । ८ ख. जाणि ।

९ क. लोल । १० ख. ग. बहो । ११ ग. उणवाररौ । १२ ग. त्रिय । १३ ख. ग.

बौहो । १४ ग. वधि । १५ ख. ग. शृंगार । १६ ग. मंगळाचार । १७ ग. मांहि ।

१८ ख. ग. त्रिय । १९ ख. कल । २० ख. ग. धरियां ।

४७. जुथ—यूथ, समूह । अछेह—अपार, असीम ।

४८. विध विध—तरह-तरहके । साज—सजा कर । काज—लिये । जाण—मानों । हिलोळ—विलोडित, तरंगित । किलोळ—क्रीड़ा ।

४९. चतुरंग—चतुरंगिनी सेना, सेना । दुभाल—वीर ।

५०. त्रिय—स्त्री । जूथ = यूथ—समूह । छवि—सुन्दरता । वांम—स्त्री । मंगळचार—मांगलिक काम ।

५१. प्रफुलंत—प्रफुल्लित होते हैं । वदन—मुख । प्रवीत—पवित्र । रस—आनन्द ।

५२. चिहन—चिन्ह । सुचंग—सुन्दर । रजत—शोभा देते हैं ।

वर रजत^१ कुंभ विसाळ, दुतिवंत मभि अंब डाळ ।
 दांहिणै हथ अंब डाळ, रति फूल फळित रसाळ ॥ ५३
 सुजि वाम भुज समराथि, हरियाळ^२ दोवज^३ हाथि ।
 करि मंगळीक करग्रि, उद्विआस पुत्र मुख अग्रि ॥ ५४
 इम भूप^४ सनमुख^५ आय, वर तरुणि कळस वंदाय^६ ।
 कुंभ मंगळीक सकांम, वंदेस कर^७ वरियांम ॥ ५५
 द्रव रूप^८ भरि^९ दूभाल, इम आवियो^{१०} 'अभमाल' ।
 राजेस उच्छव^{११} रीध, करि वंदण तोरण दीध ॥ ५६

वाजाररी वरणण

बहु^{१२} चित्रहट^{१३} वाजार^{१४}, सभियास बहु^{१५} सिणगार ।
 अबछाड़ जरकस ओप^{१६}, अति जोत^{१७} रंग अनोप ॥ ५७
 लहरीस^{१८} कोर हुलास, तह^{१९} ताज पड़दा तास ।
 रवि किरण^{२०} रूप रसाळ, वादळां^{२१} बंदरवाळ ॥ ५८

१ क. रजन । २ ख. ग. हरीयाळ । ३ ग. दोबज । ४ ख. ग. भूष । ५ ग. सन-
 मुषि । ६ ग. वंदाय । ७ ख. ग. करि । ८ ग. भूप । ९ ख. ग. भरे । १० ख.
 ग. आवियो । ११ ख. उच्छव । ग. उत्छव । १२ ख. वहाँ । ग. बहाँ । १३ ख. ग.
 चित्रहट्ट । १४ ख. वाजार । ग. वजार । १५ ख. बौहौ । ग. बहौ । १६ ख. ओप ।
 १७ ख. ग. जोति । १८ ख. ग. लहरीक । १९ ख. ग. तहै । २० ख. ग. किरणी ।
 २१ ख. वांदरां । ग. वादळां ।

५३. रजत - चांदी, रीथ । कुंभ - घट । दुतिवंत - द्युतिवान । अंब डाळ - आम वृक्षकी
 टहनी ।

५४. वाम - बाया । समराथि - समर्थ, शक्तिशाली । हरियाळ - हरित । दोवज - दूर्वा ।
 मंगळीक - मांगलिक । करग्रि - हाथका अग्र भाग । उद्विआस - (?) ।

५५. वर तरुणि - सौभाग्यवती स्त्रिणै । कळस वंदाय - कलशका अभिवादन करवा कर के ।
 वरियांम - श्रेष्ठ ।

५६. दूभाल - वीर, योद्धा । अभमाल - महाराजकुमार अभयसिंह । राजेस - महाराजा ।
 उच्छव - उत्सव । रीध - प्रसन्न हो कर । वंदण - नमस्कार, अभिवादन ।

५७. सभियास - सजाये गये । अबछाड़ - ढकनेका वस्त्र । जरकस - सोने-चांदीके तारोंसे
 बना हुआ कपड़ा । अनोप - सुशोभित हुए ।

५८. लहरीस - लहरदार या लहर युक्त । हुलास - हर्ष, प्रसन्नता । तह - नीचेका भाग ।
 ताज - शाही मुकुट । रवि - सूर्य । तास - कपड़ा विशेष । रसाळ - मनोहर । वादळां -
 चांदी या सोनेका चिपटा चमकीला तार, कामदनीके तार । बंदरवाळ - फूल-पत्तों
 या कपड़ेकी झालरी जो मंगल-सूचनार्थ द्वार पर या खंभों पर बांधी जाती है, तोरण ।

सुनहरिय^१ तार^२ सकाज रूपहरिय^३ जोति विराज ।
 भळहळत इम पुर भूप, रवि चंद्र किरण^४ सरूप ॥ ५६
 विच हट्ट हट्ट विछात, दुतिवंत अति दरसात^५ ।
 भर मुखमलां पर भार, पसमीस बाब^६ अपार ॥ ६०
 करि जाजमां पर कीध, दुल्लीच तकिया^७ दीध ।
 गीदवां^८ पर गरकाब, बह^९ ऊंच मुखमल बाब^{१०} ॥ ६१
 धनवंत कोडियधज्ज^{११}, सुजि दीप^{१२} लाख सकज्ज^{१३} ।
 दुतिवंत दौलतिदार, पौसाक तास अपार ॥ ६२
 नखसिक्ख^{१४} भूखण नौख, जवहार^{१५} कंचण जौख ।
 उण विछायत अणथाह, स्त्रीवंत सोभ^{१६} अथाह^{१७} ॥ ६३
 जगमगत इम बह^{१८} जोति, अति जाण^{१९} भाण उदोति ।
 धरतरणि जाणिस धारि^{२०}, साजोति तण^{२१} सिणगार^{२२} ॥ ६४

१ ख. ग. सुनहरीय । २ ग. तार । ३ ग. रूपहरीय । ४ ग. किरणि । ५ ख. दुरसात ।
 ६ ख. बाब । ७ ग. तकिया । ८ ग. गीदवा । ९ ख. बहो । १० ख. बाब ।
 ११ ख. ग. कोडियधज्ज । १२ ख. दीय । १३ ख. ग. सकज्ज । १४ ख. ग. नख-
 सिक्ख । १५ ग. जवहार । १६ ख. ग. सोभत । १७ ख. ग. साह । १८ ख. वही ।
 ग. बहो । १९ ख. जाणि । २० ख. ग. धार । २१ ख. ग. तणा । २२ ख. ग.
 सिंगार ।

५६. सुनहरिय - सोनेके । रूपहरिय - रूपके । भळहळत - चमकते हैं, देदीप्यमान होते हैं ।
 ६०. विछात - विछायात । दरसात - दिखाई देती है । पसमीस - एक प्रकारका बढ़िया
 ऊनी कपड़ा, पस्मीन । बाब - बापत, बुना हुआ, वस्त्र, कपड़, प्रकार तरह ।
 ६१. दुल्लीच - दुलीचा, एक प्रकारकी विछायात । गीदवां - गाल तकिये विशेष ।
 ६२. कोडियधज्ज - करोड़पति । दौलतिदार - धनाढ्य, संपन्न ।
 ६३. नौख - श्रेष्ठ । कंचण - सुवर्ण, सोना । जौख - आनन्द, हर्ष । अणथाह - अपार,
 असीम । स्त्रीवंत - श्रीमान्, लक्ष्मीवान् । सोभ - शोभा, कीर्ति । अथाह - अपार,
 असीम ।
 ६४. जाण - मानों । भाण - सूर्य । उदोति - उदय होता है । तरणि - सूर्य, तरुणी ।
 साजोति - सज्योति ।

आवंत पह^१ 'अभमाल', देखंत जोख दुभाल ।
 पर हट्ट अट्ट अपार, आवास चित्र उदार ॥ ६५
 *सभि^२ वांम सोळ सिंगार, भळकंत वोज सिलार ।
 छक पूर जोवन^३ छाक, तन रूप मनि मुसताक* ॥ ६६
 सभि^३ आभ्रणेस छतीस, तनि^४ लछण सुभ जुगतीस ।

प्रजारा महाराजारा दरसन करणा

निरखंत म्रिग वह^५ नैण^६, वप^७ कनक कोकल^८ वैण ॥ ६७
 हरखंत मुख जुत^९ हास, आणंद^{१०} चंद उजास ।
 निरखंत वह^{११} वरनार^{१२}, मिळि गोख गोख मभार^{१३} ॥ ६८
 सुभद्रस्ट^{१४} करि 'अभसाह', निरखंत पुर नरनाह ।
 उच्छाह^{१५} घर घर एम^{१६}, जळ छौळ सागर जेम ॥ ६९

१ ख. ग. पौहौ ।

* प्रस्तुत पंक्तियाँ ख. प्रतिमें इस प्रकार मिली हैं—

नवकाम भलहल नोष, गुलदार चिग बहौ गोष ।

वां चढ़ी रूप उदार, सभि वांम सोळ सिंगार ॥

२ ख. ग. जोवन । ३ ख. छजि । ग. छवि । ४ ख. ग. तनि । ५ ख. वोहौ । ग. बहौ ।

६ ख. तथा ग. प्रतियोंमें यह पंक्ति निम्न प्रकार है— निरखंत बहौ मृग नैण ।

६ ख. वेप । ग. वपि । ७ ख. ग. कोकिल । ८ ग. जुच । ९ ख. आनंद । ग. आनंद ।

१० ख. ग. पौहौ । ११ ख. ग. नारि । १२ ख. ग. मंभारि । १३ ख. सुभद्रष्टि ।

ग. सुभद्रष्ट । १४ ख. उच्छाह । ग. उच्छाह । १५ ग. ऐम ।

६५. अभमाल — महाराजा अभयसिंह । जोख — आनन्द, हर्ष । दुभाल — वीर, योद्धा । हट्ट —
 दुकान । अट्ट — महल, अट्टालिका । आवास — भवन ।

६६. सभि — सज कर । वांम — स्त्री । सोळ सिंगार — सोलह शृंगार । भळकंत — चम-
 कती है । वोज — बिजली । सिलार — बिजलीकी चमक ।

६७. आभ्रणे — आभूषणोंमें । तनि — उनके । जुगतीस — बत्तीस । वप — वपु, शरीर ।
 कनक — सोना, स्वर्ण । वैण — वचन, वाणी ।

६८. मुख जुत हास — हास्ययुक्त मुखसे । गोख — गवाक्ष, भरोखा ।

६९. अभसाह — महाराजा अभयसिंह । नरनाह — नरनाथ, राजा ।

निज नगर एम^१ निहारि^२, आवियौ^३ राज दुवारि^४ ।
उण ठौड़ लोग^५ अनंत, मन राज छक मदमंत ॥ ७०

आभूषणरौ वरणण

सिरपाव जरकस साज^१, तुररा ज सिर^२ तह ताज ।
सुतसीप स्रवणां सोहि, महि^३ लाल सोव्रण^४ मोहि ॥ ७१
करि कड़ा सोव्रन काज, सोव्रन^५ आवध^६ साज ।
वणि कंठ^७ सोव्रन वेस, सोव्रन^८ जगि^९ पवित्रेस ॥ ७२
धुगधुगी सोव्रन^{१०} धार, जिण^{११} वीच जड़त^{१२} जुहार^{१३} ।
सोव्रन^{१४} पन्न^{१५} सधीर, हृद जड़त^{१६} सोव्रन^{१७} हीर ॥ ७३
वींट सी^{१८} सोव्रन वेल, मांणक्क^{१९} सोव्रन मेल ।
सुजि करां इम सिणगार, दुति लहत बह^{२०} दरबार ॥ ७४

१ ग. ऐम । २ ख. निहार । ३ ख. ग. आवीयौ । ४ ख. दुवार । ग. वरबारि ।
५ ख. ग. लोक । ६ ग. साइभ । ७ ख. ग. सिरि । ८ ख. ग. मभि । ९ ख. ग.
सोव्रन । १० ख. ग. सोव्रन । ११ ख. आवत । १२ ख. ग. कठि । १३ ख. सोव्रन ।
घ. सोव्रन । १४ ख. जग । १५ ग. सोव्रन । १६ ख. ग. जिणि । १७ ख. ग.
जड़ित । १८ ख. जह्वार । जह्वार । १९ ख. ग. सोव्रन । २० ख. पन । ग. पन्न ।
२१ ख. ग. जड़ित । २२ ग. सोव्रन । २३ ग. वीटीसं । २४ ख. ग. माणिक ।
२५ ख. ग. वौहौ ।

७०. निहारि — देख कर । राज दुवारि — राज्यद्वार पर । छक — तृप्त । मदमंत — मस्त,
मदोन्मत्त ।

७१. जरकस — सोने-चांदीके तारोंसे बुना कपड़ा । तुररा — सुनहरे तारोंसे बना आभूषण
जो शिरकी पगड़ी पर लगाते हैं । तह — नीचे । सुतसीप — मोती । स्रवणां — कानोंमें ।
सोहि — शोभा देते हैं । महि — (?) । सोव्रण — सुवर्ण, सोना ।

७२. कड़ा — वलय । आवध — आयुध, अस्त्र-शस्त्र । साज — अस्त्र-शस्त्रोंकी सजावटके उप-
करण । वेस — आभूषण । जगि पवित्रेस — यज्ञोपवीत ।

७३. धुगधुगी — एक प्रकारका आभूषण विशेष । जड़त — जटिल । जुहार — जवाहरात ।
पन्न — पन्ना नामक प्यरोजेक जातिका रत्न विशेष । हीर — हीरा ।

७४. वींटी — मुद्रिका । सोव्रन मेल — एक प्रकारका आभूषण ।

वणि एम^१ छवि विसतार, गढ़नाथ खिदमतिगार^२ ।
 सहचरीय^३ रंभ समान, गावंत मंगळ गांन ॥ ७५
 सोभंत रूप सरीर, चंद जांणि कडिदय^४ चीर ।
 इम^५ कुंभ सीस^६ अधारि, उणहीज कुंभ उणहारि ॥ ७६
 गजगमणि^७ सोळ सिंगार, कृतकास्स^८ भूंब^९ प्रकार ।
 अति रंग उच्छव^{१०} गाइ^{११}, 'अभमाल' सनमुख^{१२} आइ ॥ ७७
 उणहीज विध^{१३} सुत अस्स, सिर^{१४} अंब^{१५} डाळ कळस्स ।
 इकहत्थ^{१६} रूप सुअच्छ^{१७}, मभि एक^{१८} हत्थ^{१९} दधि मच्छ^{२०} ॥ ७८
 कुंभ सुपह^{२१} बंदण^{२२} कीध, द्रव^{२३} रजत मभि धर दीध ।
 धरथंभ निज गढ़ धांम, वंदि^{२४} तोरणां^{२५} वरियांम ॥ ७९

१ य. ऐण । २ ख. ग. छवि । ३ ख. ग. विजमतिगार । ४ ख. कंठीय । ग. कट्टीय ।
 ५ ख. ग. इक । ६ ख. ग. सीसि । ७ ग. गममणि । ८ क. कृतक । ९ ग. कृत-
 गास । १० ख. ग. भूल । ११ ख. उछव । ग. उत्छव । १२ ख. ग. नाय । १३ ग.
 सनमुखि । १४ ख. ग. विधि । १५ ख. ग. सिरि । १६ ख. अंब । १७ ख. ग.
 इकहत्थि । १८ ख. अछ । ग. अत्छ । १९ ग. ऐक । २० ख. ग. हत्थि । २१ ख.
 मछ । ग. मत्छ । २२ ख. बंदण । ग. बदण । २३ ख. ग. द्रव । २४ ग. बंदि ।
 २५ ख. ग. तोरणा ।

७५. खिदमतिगार - सेवक, नोकर । सहचरीय - सखी, सहेली, पत्नी, भार्या । रंभ -
 रंभा नामक अप्सरा, अप्सरा । मंगळ गांन - मांगलिक गायन ।

७६. सोभंत - शोभा देते हैं । चंद - चंद्रमा । जांणि - मानों । कुंभ - कलश । अधारि -
 धारण कर के । उणहारि - सूरत (?)

७७. कृतकास्स - कृतिका नक्षत्र जिसकी प्रायः युवतियोंको उपमा दी जाती है । भूंब - समूह ।
 रंग - आनन्द, हर्ष । उच्छव - उत्सव । अभमाल - महाराजा अभयसिंह ।

७८. उण...मच्छ - (?) ।

७९. सुपह - राजा । बंदण - अभिवादन । कीध - किया । द्रव - द्रव्य । रजत - चांदी ।
 दीध - दिया । धरथंभ - धरास्तंभ, राजा । बंदि - नमस्कार कर के । वरियांम -
 श्रेष्ठ ।

इळ चढे पह^१ उणवार^२, पह^३ चढे दुरंग पगार ।
 पगमंडा हीर पसम्म^४, नवरंग वाणि^५ नरम्म^६ ॥ ८०
 असलूफ रंग उजास, खित मंडे मुखमल खास ।
 अतिलूब^७ छिब^८ उणवार^९, दुति जरी^{१०} छापादार ॥ ८१
 धर फरस जेम धरीस, रंग लहरदार जरीस ।
 धर सिरै राजस धाम, तासरा^{११} धरिया^{१२} ताम ॥ ८२
 पग मंड थान अपार, हिक^{१३} हिक मोल हजार ।
 रंग विछाइत^{१४} अनिराज, दुति इसा पायंदाज ॥ ८३
 सिर^{१५} मौहरि^{१६} चौक^{१७} सिंगार, चौ पसम गिलमां चार ।
 वणि कनक जवहर वंस, कसि हीर डोरि कसंस ॥ ८४
 इण^{१८} वणे रूप उमंग, समियांत जरिय^{१९} सचंग ।
 बह^{२०} कासमीर बिलौर^{२१}, अनि रंग छबि धर और ॥ ८५

१ ख. ग. पोहो । २ ख. उणवार । ग. ऊणवार । ३ ख. पहो । ग. पोहो । ४ ख. पसंस । ग. पसंग । ५ ख. ग. वणे । ६ ख. नरंम । ग. नरंग । ७ ख. अतलू । ग. अतलस । ८ ख. ग. विछि । ९ ख. ग. अणवार । १० ख. ग. जरीय । ११ ग. तसपरा । १२ ख. ग. धरीया । १३ ग. हिक । १४ ख. विछायत । ग. विछायति । १५ ख. ग. सिरि । १६ ख. ग. मोहौरि । १७ ख. ग. चोकि । १८ ख. ग. इम । १९ ख. जरीय । ग. जरीप । २० ख. ग. बहो । २१ ख. ग. बिलोर ।

८०. इळ - इला, पृथ्वी । पगार - (?) । पसम्म - बढ़िया बहुमूल्य ऊनी वस्त्र विशेष, पदम ।

८१. असलूफ - (?) । खित - क्षिति, पृथ्वी । अतिलूब - (?) । छिब - शोभा । दुति - द्युति, कांति । छापादार - छापयुक्त ।

८२. धर फरस - परशु धारण करने वाला (?) । धरीस - राजा (?) । जरीस - (?) । सिरै - श्रेष्ठ । राजस धाम - राज-भवन । तासरा - सुनहरे तारोंके जड़ाऊ कपड़ेके ।

८३. विछाइत - विछानेका कपड़ा, जाजम आदि । अनिराज - अन्य राजा । पायंदाज - फर्शके किनारेका वह मोटा कपड़ा जिस पर पैर पोंछ कर अन्दर जाते हैं, पैर पोंछनेका कपड़ा ।

८४. मौहरि - अग्राड़ी । चौक सिंगार - जोधपुरके गढ़के अन्दरका स्थान विशेष, शृंगार-चौकी । चौ - चारों, चारों ओर । गिलमां - बहुत मोटा मुलायम गद्दा या बिछोना । चार - श्रेष्ठ । कनक - सुवर्ण, सोना । जवहर - जवाहरात । हीर डोरि - वे रस्सिएँ जिनके हीरे जड़े हुए होते हैं । कसंस - कसते हैं ।

८५. उमंग - जोश । समियांत - शामियाना, बड़ा तंबू । जरिय - जरीके । सचंग - सुन्दर । बिलौर - एक प्रकारका स्वच्छ पत्थर जो पारदर्शक होता है, स्फटिक ।

मंडि जाब^१ ज्वाब मतंग, संग असम सरवर संग ।
तै^२ वीच सरवर^३ तत्र, छजि तखत जवहर^४ छत्र ॥ ८६
कथ खमां खमां कहंत, गजमसत जिम गहतंत ।
दुति एम^५ हंत दुभाल, आवियौ^६ पह^७ अभमाल ॥ ८७

महाराजा अभयसिंहजीरै दरबाररी वरणण

लख लोक गहमह लार, क्रत^८ रागरंग^९ नृतकार ।
अति करत सुकवि असीस, सिणगार-चौकी^{१०} सीस^{११} ॥ ८८
चढि एण^{१२} विध^{१३} चक्रवत्ति^{१४}, तदि ब्राजियोस^{१५} तखत्ति^{१६} ।
चौसरा^{१७} चमर सचार^{१८}, वणि भूपट वारंवार^{१९} ॥ ८९
नवछावरेस सनेह, मोतियां^{२०} मंडियो^{२१} मेह ।
दहुं मिसल थाट दुबाह^{२२}, गहतंत भड़ दरगाह ॥ ९०

१ ख. ज्वाव । ग. ज्वाब । २ ख. ते । ३ ख. ग. जगमग । ४ ग. जंवहर । ५ ग. एम । ६ ख. ग. आवीयो । ७ ख. ग. पोही । ८ ख. ग. कृत । ९ ख. ग. नृतकार । १० ख. चावकी । ग. चवकी । ११ ख. सीष । १२ ग. ऐण । १३ ख. ग. विधि । १४ ख. ग. चक्रवर्ति । १५ ख. ग. ब्रजियोस । १६ ग. तिषत्ति । १७ ख. चौसरा । १८ ख. ग. सचार । १९ ग. वारंवार । २० ख. ग. मोतियां । २१ ख. ग. मंडियो । २२ ख. ग. दुबाह ।

८६. मंडि — रच कर, बना कर । जाब ज्वाब = जा-ब-जा — स्थान-स्थान, जगह-जगह । मतंग — हाथी । संग असम = संगे-असवद — एक प्रकार का काले रंगका पत्थर विशेष । सरवर — (?) । छजि — सुशोभित कर के ।

८७. खमां खमां — राजा महाराजाओंके सामने उच्चारण किया जाने वाला शब्द जिसका अर्थ "क्षमा करने वाले" हैं । गज गहतंत — मस्त हाथीके समान गर्वसे पूर्ण हैं । दुति — छूति । दुभाल — वीर । अभमाल — अभयसिंह ।

८८. गहमह — भीड़, समूह । लार — पीछे । क्रत — करते हैं, करते हुए । नृतकार — नृत्य-कार । असीस — आशीश । सीस — पर, ऊपर ।

८९. चक्रवत्ति — चक्रवर्ती, राजा । ब्राजियोस — शोभायमान हुआ, आसीन हुआ । तखत्ति — तख्त, राज्य सिंहासन । चौसरा — पुष्पहार । चमर = चमर — चंवर । सचार — (?) । भूपट — चंवरका भोंका या संचालन ।

९०. नवछावरेस — नवोछावर । सनेह — स्नेह, स्नेहपूर्वक । मंडियो — रचा गया, बना । मिसल — राजाके पार्श्वमें बैठने वाले सरदारोंकी पंक्ति । थाट — शोभा । दुबाह — वीर । गहतंत — गर्वपूर्ण, समूह । दरगाह — दरबार ।

मंत्रीस सकवि^१ समाज, राजंत^२ प्रोहित राज ।
 साजंत दुज स्तुति साधि, वाजंत नौबत^३ वाधि ॥ ६१
 वाजत्र^४ वजत विमेक, नित^५ गांन करत अनेक ।
 सोभंत इंद्र समाज, रवि वंस रवि महाराज^६ ॥ ६२
 अतरेस छंति अवास, पह^७ पंग सेज^८ प्रकास ।

अंतहपुरी वरणण

दुति भाण पदमणि^९ देखि, पति जेम पदमणि^{१०} पेखि ॥ ६३
 सज्जंत^{११} सोळ सिंगार^{१२}, आभरण दूण अढ़ार ।
 *नव जरी वेलि अनूप^{१३}, चिग नौख गौख सचूप ॥ ६४
 सहचरी चतुर सबोह^{१४}, मिल^{१५} रचत उच्छव^{१६} मोह ।
 वर करत चौक वणाव^{१७}, करि कुंमकुंमां छिड़काव^{१८} ॥ ६५

१ ख. सकवि । ग. सुकवि । २ ख. राजंति । ३ ख. ग. नौबति । ४ ख. ग. वाजित्र ।
 ५ ख. ग. नूत । ६ ख. साहाराज । ७ ख. ग. पोहो । ८ ख. ग. सेभि । ९ ख. ग.
 पद्यणि । १० ग. पद्यणि ।

*यह पद्यांश ख. प्रतिमें अपूर्ण है ।

११ ख. साजंत । ग. सालंज । १२ ख. ग. शृंगार ।

*ख. तथा ग. प्रतियोंमें यह पंक्ति निम्न प्रकार है— 'चिग गोष नौष सचूप ।'

१३ ख. संबोह । ग. संबोह । १४ ख. ग. मिल । १५ ख. उच्छव । ग. उत्तव ।
 १६ ख. वणाव । १७ ख. छड़काव । ग. छड़काव ।

६१. मंत्रीस — महामात्य, महामंत्री । राजंत — शोभा देते हैं । साजंत — करते हैं । दुज-
 द्विज, ब्राह्मण । वाधि — वाद्य, विशेष ।

६२. वाजत्र — वाद्य, बाजे । विमेक — विवेक । रवि वंस रवि — सूर्यवंशका सूर्य ।

६३. अतरेस — इत्र । अवास — भवन । पह पंग — राजा जयचन्द । पेखि — देख कर ।

६४. आभरण — आभूषण । दूण अढ़ार — छत्तीस । नव जरी — (?) । चिग —
 बांस या सरकंडेकी तीलियों से बना हुआ झुझरीदार पर्दा, चिलमन । नौख — श्रेष्ठ ।
 सचूप — सुन्दर, मनोहर ।

६५. सहचरी — सखी, सहेली । सबोह — सब । उच्छव — उत्सव । चौक — मांगलिक अव-
 सरो पर आंगनमें या खुले स्थानोंमें आटे, अबीर, अनाजके दानोंसे या मोतियोंसे बनाए
 हुए रेखा चित्र । कुंमकुंमां — (?) ।

मभि छभा राज मंभारि, नव उछब^१ इम नर नारि ।

जोधपुरमें महाराजा अभयसिंहजोरौ राज्याभितेक

पढ़ि मंत्र ब्रह्म^२ प्रवीत^३, दुतिवार^४ देखि अद्वीत ॥ ६६

वर तिलक कीजै^५ वार, अबिखेक^६ राज उदार ।

स्त्रीकमल^७ फबि सिरताज, स्त्री अनुज अखित सकाज ॥ ६७

सब लोक नजर सुपेस, निज हृथ लीध नरेस ।

धुर^८ थाळ प्रोहित धारि^९, किय^{१०} आरती अधिकारि^{११} ॥ ६८

इम वणे निज आथाण^{१२}, पह^{१३} पंगराज प्रमाण^{१४} ॥ ६९

महाराजरो अंतहपुरमें पधारणौ

कवित्त-पंगराज प्रमाण^{१५}, प्रगट चढ़ियौ^{१६} 'अभपत्ती' ।

सह^{१७} जाणियौ^{१८} संसार, राज^{१९} भाळाहळ रत्ती ।

कवि सुभड़ां करि^{२०} कुरब, सभे आणंद समाजा ।

मगज धार^{२१} माल्हियौ^{२२}, राजमंदिरां^{२३} महाराजा^{२४} ।

१ ख. ग. उछब । २ ख. ब्रह्म । ग. ब्रह्म । ३ ख. प्रतीत । ४ ग. दुतिवार । ५ ख. ग. कीय । ६ ख. ग. अबिषेक । ७ ख. ग. श्रीकम्मल । ८ ख. ग. धुरि । ९ ख. ग. धारी । १० ख. ग. कीय । ११ ख. अधिकार । १२ ख. ग. आथाणि । १३ ख. ग. पोहौ । १४ ख. ग. प्रमाण । १५ ख. परमाण । ग. प्रमाण । १६ ख. ग. चढ़ियौ । १७ ख. ग. सह । १८ ख. ग. जाणीयो । १९ क. राग । २० क. कसि । २१ ख. ग. धारि । २२ ख. ग. मल्हियौ । २३ ख. ग. राजमंदिरां । २४ ख. ग. माहाराजा ।

६६. मभि - मध्य, में । छभा - सभा । मंभारि - मध्य, में । ब्रह्म - ब्राह्मण । प्रवीत - पवित्र । अद्वीत - अद्वितीय ।

६७. अबिखेक - अभिषेक, राज्यतिलक । स्त्रीकमल - श्रीमुख (?) । फबि - शोभा दे कर । सिरताज - मुकुट, श्रेष्ठ । अनुज - छोटा भाई ।

६८. सुपेस - सुन्दर भेंट, भेंट ।

६९. आथाण - भवन, घर । पह पंगराज - वीर राठोड़ राजा जयचन्द । प्रमाण - समान, तुल्य ।

१००. अभपत्ती - राजा अभयसिंह । भाळाहळ - रवि, सूर्य । रत्ती - कांति, दीप्ति । सुभड़ां - योद्धाओं । कसि - कस कर, बांध कर । मगज - गवं । माल्हियौ - गौरवपूर्ण मंदगतिसे चला ।

सुकिया^१ समूह^२ मिल^३ नेह सुख, नृत^४ गायन^५ आणंद^६ में^७ ।
 सुरराज^८ जेम नरराज सुख, 'अभमल'^९ राजस इंद में^{१०} ॥ १००
 गिलम विछायत गरक, पसम मौड़ा^{११} तकिया^{१२} पर ।
 तठै विराजै^{१३} ताम, सभे आणंद^{१४} नरेसुर ।
 सभिसभित्तीन सलांम, चंद^{१५} वदनियां^{१६} उछव^{१७} चित ।
 हुवां^{१८} विराजै^{१९} हुकम, हरखि आणंद सहित^{२०} हित ।
 जगपीलसोत^{२१} गिरदां जरी, जोतीवंती^{२२} कपूर^{२३} जलि ।
 अगरेल^{२४} चिराकां जोति अति, कळा जोति भळहळ कमळि^{२५} ॥ १०१

गाथा

सोळह सभि सिणगार, सोळह वीस आभरण सुंदरि^{२६} ।
 वाजंत्र^{२७} सभि विसतारं, गांन संगीत करण मिल^{२८} गाइण^{२९} ॥ १०२
 मुगधा वेस प्रमाणै^{३०}, लखि अति रूप उरवसी लज्यत^{३१} ।
 पय घुघर बंध^{३२} पांगौ^{३३}, सभियौ^{३४} नमस्कार^{३५} सारदा^{३६} ॥ १०३

१ ख. ग. सुकीया । २ ख. ग. समूह । ३ ख. मिलि । ग. मिले । ४ ख. ग. नृति ।
 ५ ख. ग. गायणि । ६ ख. ग. आनंद । ७ ख. में । ग. में । ८ ग. सुररा । ९ क.
 अजमल । १० ख. में । ग. में । ११ ख. ग. मोड़ा । १२ ख. ग. तकिया । १३ ख.
 विराजे । १४ ख. आण । १५ ख. ग. चंद्र । १६ ख. वदनीया । ग. वदीय । १७ ख.
 ग. उछव । १८ ग. हुवा । १९ ख. ग. विराजे । २० ख. ग. सहित । २१ ख. ग.
 जगिपीलसोत । २२ ख. ग. जोतिवती । २३ ख. ग. कपूर । २४ ग. अगरेलि ।
 २५ ख. कमति । २६ ग. सुंदर । २७ ख. ग. वाजित्र । २८ ख. ग. मिलि । २९ ख.
 गायण । ग. गायणि । ३० ख. ग. प्रमाणे । ३१ ख. लज्जत । ग. लज्मत । ३२ ख.
 बंधि । ग. बंधि । ३३ ख. ग. पांणे । ३४ ख. ग. सभियौ । ३५ ख. ग. नमस्कार ।
 ३६ ग. सरदा ।

१००. सुकिया — अपने ही पतिसे अनुराग रखने वाली, पतिव्रता । नेह — स्नेह । सुरराज —
 इन्द्र । अभमल — महाराजा अभयसिंह ।

१०१. गिलम — बहुत मोटा मुलायम गद्दा । गरक — डूबा हुआ । पसम — बढ़िया ऊन,
 पशुम । मौड़ा — मसनद । नरेसुर — नरेश्वर, राजा । जग — जगि, प्रज्वलित हुई ।
 पीलसोत — एक प्रकारका दीपक विशेष । गिरदां जरी — (?) । अगरेल —
 एक प्रकारका सुगंधित पदार्थ । भळहळ — देदीप्यमान, कांतिमान । कमळ — शिर,
 मस्तक, मुख ।

१०२. वाजंत्र — वाद्य । गाइण — गाने वाली ।

१०३. मुगधा — साहित्यमें वह नायिका जो पूर्ण युवावस्थाको प्राप्त हो परन्तु जिसमें काम-
 चेष्टाएँ न हो, अज्ञात यौवना । वेस = वयस — आयु, उम्र । उरवसी — उर्वशी नामक
 अप्सरा । लज्यत — लजायमान होती है । पय — पैर । घुघर — घुंघरू । सभियौ — किया ।

ताल अदंग^१ तंबूरं, सुर वीणा वीणाधरि सुंदरि^२ ।
हरखत^३ नूपत^४ हजूरं, सभे सलाम अलाप कीध सुर ॥ १०४

दोहा—गांन सप्त सुर ग्राम मुर, अरु^५ मुरछन यकवीस^६ ।
तांन कोटि गुणचासते, मूरतिवंत मईस^७ ॥ १०५
ताल अस्ट द्वादस तवन^८, सोळह भेद संगीत ।
राग छत्तीसह^९ रागणी, पंच उकति सुप्रवीत ॥ १०६
जुगति च्यार जुग च्यार जंत्र, अस्ट च्यार परमाणं^{१०} ।
चौरासी नाटक^{११} चतुर, विध^{१२} रसरीत^{१३} वखाण ॥ १०७
अति प्रकास गति भेद अति, विगति एह^{१४} विसतार ।
आदि आदि कहिया^{१५} इता, सति प्रबंध ततसार ॥ १०८
सौ^{१६} प्रवीण गायण सकळ, उछटत^{१७} उच्छव^{१८} आखि ।
महि संगीत सागर महीं, स्त्रीधर वायक साखि ॥ १०९

१ ख. ग. मृदंग । २ ख. सुंदर । ३ ख. ग. हरषित । ४ ख. ग. नूपति । ५ ख. ग. अर । ६ ख. इकवीस । ग. ईकवीस । ७ ग. इमईस । ८ ख. तबल । ९ ग. छत्तीसीह । १० ख. ग. परवाण । ११ ख. ग. नाटिक । १२ ख. ग. विधि । १३ ग. रसरीति । १४ ग. ऐह । १५ ख. कहिया । ग. कहिये । १६ ख. सो । १७ ख. ग. उछटत । १८ ख. उछव । ग. उत्छव ।

१०४. तंबूरं—वाद्य विशेष । वीणाधरी—वीणा नामक वाद्यको धारण करने वाली ।
अलाप—संगीतके सात स्वरोंका साधन, तान, अलाप । सुर—संगीतमें वह शब्द जिसका कोई निश्चित रूप हो और जिसकी कोमलता या तीव्रता अथवा उत्तार-चढ़ाव आदिका सुनते ही सहजमें अनुमान हो सके ।

१०५. सप्त सुर—(नोट—संगीत संबंधी शब्दोंके लिए विस्तारपूर्वक टिप्पणि परिशिष्टमें देखें—सम्पादक ।) ग्राम—संगीतमें सुभीतेके लिये षड्ज, मध्यम, और गांधार ये तीन ग्राम माने गये हैं जिन्हें क्रमशः नंदावर्त, सुभद्र, और जीमूत भी कहते हैं । मुर—तीन । मुरछन—संगीतमें एक ग्रामसे दूसरे ग्राम तक जानेमें सातों स्वरोंका आरोह, अवरोह, मूर्च्छना ।

१०८. विगति—वृत्तान्त, हाल, विवरण । सति—सच्चे । प्रबंध—पूर्वापर संगति लेख या अनेक संबद्ध पद्योंमें पूरा होने वाला काव्य, निबंध । ततसार—सारतत्त्व, निचोड़ ।

१०९. गायण—गाने वाली, वेश्या । उछटत—(?) । उच्छव—उत्सव, जलशा । आखि—कह कर ।

अथ संगीत नृत^१ भेद वरननं^२ कवित्त

धुनि अदंग^३ धुधकटस^४, धुकट धुधुकटस^५ धुकट धुर^६ ।
 भणणणणण^७ जंत्र भणकि, प्रगट^८ भिमभिम^९ धुनि नूपर ।
 उमंग अंग उछरंग, रंग क्रुकु थुंग थुंग रत ।
 थेइय^{१०} थेइय तत थेइय^{११}, ततततत थेइय^{१२} थेइय तत ।
 नवरंग कटाच्छ रस रंग नृत^{१३}, जंग जंग वाजिय^{१४} जगत ।
 द्वैरमिय^{१५} उरप तुरपंग हद, लाग दाट त्रैवट लगत ॥ ११०

भाव हाव रंग भेद^{१६}, काम कट्टाच्छ^{१७} उघट क्रत^{१८} * ।
 राग वखत^{१९} परमाण^{२०}, नवल रति रूप करत नृत^{२१} ।
 वीणताल सुरवीण, तार तंबूर^{२२} चंग तदि ।
 प्रत खंजरी पिनाक, जुगति^{२३} मरदंग^{२४} वजत^{२५} जदि ।

१ ख. ग. नृत । २ ख. ग. वननं । ३ ख. ग. मृदंग । ४ ग. धुधकटत । ५ ग. धुधकटत । ६ ख. सर । ग. धर । ७ ग. भणण । ८ ग. प्रगटि । ९ ख. भिम । ग. रिमभिम । १० ख. ग. थेईय थेईय । ११ ख. ग. थेईय । १२ ख. ग. थेईय थेईय । १३ ख. नृति । ग. नति । १४ ख. ग. वाजीय । १५ ख. ग. द्वैरमईय । १६ ख. भेद । १७ ख. कटाछि । ग. कट्टाछि । १८ ख. ग. क्रत ।

* यहाँ पर ख. प्रतिमें 'छप्पय' तथा ग. प्रतिमें 'छप्पै' शीर्षक दिया हुआ है ।

१९ ग. वषत । २० ख. प्रमाण । ग. परमाण । २१ ख. ग. नृत । २२ ख. चबूर । २३ ख. जुगत । २४ ख. ग. मिरदंग । २५ ग. वजत ।

११०. जंत्र-वीणा । धुनि-ध्वनि । उछरंग-उत्साह, जोश । उरप- (?) ।
 तुरपंग- (?) । लाग- (?) । दाट- (?) । त्रैवट- (?) ।

१११. भाव-नवयुवती स्त्रियोंके २८ प्रकारके स्वभावज, अलंकारोंके अंतर्गत तीन प्रकारके अंगज अलंकारोंमें से पहला, नायक आदिको देखनेके कारण अथवा और किसी प्रकार नायिकाके मनमें उत्पन्न होने वाला विकार । हाव-नायिकाकी स्वाभाविक चेष्टाएँ जो पुरुषको उसकी ओर आकर्षित करती हैं । साहित्यमें इनकी संख्या ग्यारह मानी गई है, इन सबके लिए परिशिष्टमें देखें । काम-कामदेव । कट्टाच्छ-कटाक्ष, तिरछी चितवन । उघट- (?) । नवल-नवीन । रति रूप-कामदेवकी स्त्रीके सौंदर्यके समान । तंबूर-वाद्य विशेष । चंग-वाद्य विशेष । पिनाक-वाद्य विशेष । जुगति-युक्ति । मरदंग-मृदंग ।

ऐराक^१ पियै^२ प्याला 'अभौ', सुख मुसताक^३ नरेसुरां^४ ।
सुरपति विभूल है देखि सुख, मन विभूल^५ मुनि ईस्वरां ॥ १११

छंद विरवेखक^६

वाणिक एम^७ विनोद, 'अभैमल' इंद्र इसौ ।
ओपम^८ रूप अनोप, जठै रतिराज जिसौ ।
जोवत जोख^९ जमाव, घणूं नूत^{१०} भेद घणै^{११} ।
क्रीड़ति^{१२} जाणि किसन्न, बंदावन^{१३} रास वणै^{१४} ॥ ११२

दूहा— लग कलियाण विहंग लग, सुणि रंगराग सुथाल ।
सुख सुकिया^{१५} सेभां वसै^{१६}, महाराज^{१७} 'अभमाल' ॥ ११३
उच्छव^{१८} हास विलास अति, पतिव्रत रीभ प्रभाज ।
सोभा दंपति नेह सुख, रति सोभा रतिराज ॥ ११४

१ ख. ग. ऐराक । २ ख. ग. पियै । ३ ख. मुषताक । ४ ग. सूरपति । ५ ख. थिमुल । ६ ख. विखेखक । ग. विसेखक । ७ ख. ऐक । ८ ख. ग. ओपत । ९ ख. ग. जोष । १० ख. ग. नूत । ११ ख. ग. घणे । १२ ख. ग. क्रीडंत । १३ ख. वंदावन । ग. बंदावन । १४ ख. रासणे । ग. वणे । १५ ख. सुकीयां । ग. सुकीया । १६ ख. ग. वसे । १७ ख. ग. महाराजा । १८ ख. उच्छव । ग. उत्छव ।

१११. ऐराक—तेज शराब । मुसताक—उत्कंठित, उत्सुक, मुस्ताक । विभूल—भ्रमित ।
मुनि ईस्वरां—मुनीश्वरों, महर्षियों ।

११२. वाणिक—डंग, व्यवस्था । अभैमल—महाराजा अभयसिंह । ओपम—उपमा । अनोप—अनुपम । रतिराज—कामदेव । जोख=योषा—स्त्री, महिला । जमाव—समूह, यूथ । क्रीड़ति—क्रीड़ा करता है । जाणि—मानों । किसन्न—श्रीकृष्ण । रास—रासलीला ।

११३. लग—तक, पर्यन्त । कलियाण—सम्पूर्ण जातिका एक शुद्ध राग, कल्याण । इसके गानेका समय रात्रिका पहला प्रहर है । विहंग—एक राग जो आधी रातके बाद लग-भग २ बजे गाया जाता है, बिहाग । रंगराग—गायन, गायनका रसास्वादन, आनन्द । सुथाल—व्यवस्थित, सुन्दर ढंगसे । सुकिया—स्वकीया, पतिव्रता । सेभां—शय्याओं । अभमाल—अभयसिंह ।

११४. उच्छव—उत्सव, जलसा । हास—परिहास, दिल्लगी । विलास—प्रसन्न या प्रफुल्लित करनेकी क्रिया । रति—कामदेवकी पत्नी । रतिराज—कामदेव ।

इम^१ निस^२ विति^३ आणंदमै^४, प्रगटे भांण प्रताप^५ ।

‘अभौ’^६ भरोखै आवियौ^७, छत्रपति जोधां छात ॥ ११५

प्रातकालीन नगररौ वरणण

खट वरनां ताळा खुले^८, सीस नमै^९ संसार ।

करै^{१०} निजर रीभां करै^{११}, इंद्र भड़ दरब अपार ॥ ११६

करि^{१२} बंदण^{१३} सूरिज कमंध, दिस^{१४} सूरज्ज^{१५} उदार^{१६} ।

ईखे^{१७} सूरज^{१८} अंजसियौ^{१९}, सूरिज कुळ सिणगार ॥ ११७

हाका आसीसां^{२०} हुवै, तांम निजर^{२१} विसतार ।

इण सोभा दीठौ ‘अभौ’^{२२}, जोधाणै^{२३} जिणवार ॥ ११८

छंद नाराज^{२४}

सभंत ब्रह्म के सिनांन^{२५}, केक त्रप्पणं करै ।

धरत्त^{२६} केक न्यास ध्यान, चंडि^{२७} पाठ उच्चरै ।

१ ग. ईम । २ ख. निसि । ३ ख. ग. वीती । ४ ख. ग. आणंदमै । ५ ख. ग. प्रभात ।
६ ख. अभौ । ७ ख. ग. आबीयो । ८ ख. ग. पुले । ९ ख. ग. नमे । १० ख. ग.
करे । ११ ख. ग. करे । १२ ख. ग. करे । १३ ग. बंदण । १४ ख. ग. दिसि ।
१५ ख. सूरज । ग. सूरिज । १६ ख. ग. ऊदार । १७ ग. इषे । १८ ख. ग. सूरिज ।
१९ ख. ग. अंजसीयो । २० ख. आसासां । २१ ग. निजरी । २२ ग. अभै । २३ ख.
जोधाणौ । २४ ख. ग. नाराज । २५ ख. ग. सनांन । २६ ख. ग. धरंत । २७ ख.
चंडि ।

११५. निस — रात्रि । विति — व्यतीत हुई । भांण — सूर्य । अभौ — महाराजा अभयसिंह ।

छत्रपति — राजा । जोधां — राज जोधाके वंशजों । छात — श्रेष्ठ, शिर-मौर ।

११६. खट वरनां — राजस्थानकी छः प्रमुख जातियाँ यथा— ब्राह्मण, सन्यासी, जती आदि ।

ताळा — भाग्य, पेशाती । इंद्र भड़ — इंद्रकी वर्षाके समान । दरब — द्रव्य, धन-दौलत ।

११७. बंदण — नमस्कार । सूरिज — सूर्य । विस — तरफ, ओर । सूरज्ज — सूर्य, भानु ।

ईखे — देख कर । अंजसियौ — गर्वित हुआ, गर्वयुक्त हुआ ।

११८. हाका — आवाज । दीठौ — देखा गया ।

११९. सभंत — साधन करते हैं । ब्रह्म — ब्राह्मण । के — कई । सिनांन — स्नान । त्रप्पणं —
कर्मकाण्डकी एक क्रिया जिसमें देव, ऋषि और पितरोंको तुष्ट करनेके लिये हाथ या
अरघ्यसे जल देते हैं, तर्पण । न्यास — पूजाकी एक तांत्रिक पद्धति जिसके अनुसार
देवताके भिन्न-भिन्न अंगोंका ध्यान करते हुए मंत्र पढ़ कर उन पर विशेष वरुणोंका स्थापन ।

जपंत गायत्रीस जाप, वेद मंत्र ब्रह्मळा^१ ।
 करंत पूज नौ प्रकार, केक कंत कम्मळा ॥ ११६
 जिगंत^२ ज्वाळ होम ज्वाप^३, अहुत्त^४ घृत^५ अपै ।
 करंत पारथी अनेक, जोग इंद्र के^६ जपै ।
 उचार स्त्री^७ सुभागवंत^८, संस्र^९ नाम संभरै ।
 गिनान उग्र स्त्रीय गीत, केकयं कथा करै ॥ १२०
 खिरोद^{१०} कन्न^{११} खीनखास, धारियं^{१२} धुजंबरं^{१३} ।
 सुसोभितं^{१४} सिखास सुत्र, ^{१५} सेनयं^{१६} पितंबरं ।
 हरी कुसं समुद्र हाथ^{१७}, चित्र भाळ चंदणं ।
 करंत पाण जोडि केक, वेणि^{१८} भाणि^{१९} वंदणं ॥ १२१
 सनान के खत्री सभंत^{२०}, ते^{२१} करंत^{२२} तरपणं^{२३} ।
 दुजंस^{२४} दान गाय दान, आय देत अरपणं^{२५} ।

१ ख. विमाला । ग. विम्मळा । २ ख. जिगंत । ग. जिगन । ३ ख. ग. जाप । ४ ख. ग. आहुतं । ५ ख. ग. घृतं । ६ ग. कै । ७ ख. ग. श्रीय । ८ ख. ग. भागवंत । ९ ख. संश्र । ग. संश्री । १० ख. ग. क्षीरोद । ११ ख. ग. कन । १२ ख. ग. धारीयां । १३ ख. ग. धूतंबर । १४ ख. ग. सुसोभितं । १५ ख. ग. सूत्र । १६ ख. तेनयं । ग. तैनयं । १७ ग. हाथि । १८ ख. ग. वेणि । १९ ख. भाल । ग. भाण । २० क. सकंत । २१ ख. ग. तै । २२ ग. करतं । २३ ख. तर्पणं । ग. तिर्पणं । २४ ख. ग. दुजे । २५ ख. ग. अर्पणं ।

११६. गायत्रीस — गायत्रीमंत्र । ब्रह्मळा — विमल, पवित्र । केक — कई । कंत कम्मळा — लक्ष्मीपति ।

१२०. जिगंत — यज्ञ । ज्वाप — जाप । अहुत्त — आहुति । घृत — घृत । अपै — देते हैं । पारथी — प्रार्थना ।

१२१. खिरोद — एक प्रकारका वस्त्र विशेष, क्षीरोद । खीनखास — एक प्रकारका वस्त्र विशेष, खीनखाप । सिखा — शिखा, चोटी । सूत्र — यज्ञोपवीत, जनेऊ । पितंबरं — पीताम्बर वस्त्र । हरी — दुर्गा, दोब । चित्र भाळ — ललाटमें तिलकादि ।

१२२. सनान — स्नान । खत्री — क्षत्रिय । सभंत — करते हैं । तरपणं — कर्मकाण्डकी एक क्रिया, तर्पण । दुजंस — द्विज, ब्राह्मण । अरपणं — अर्पण ।

प्रमाण खोंडसं^१ प्रकार, देत उग्र दानयं^२ ।
 प्रमेस चंड रुद्र^३ पूज, सेवतं समानयं^४ ॥ १२२
 अनट्ट जे अखा^५ अवाच्य^६, सूरमंस^७ री नरा ।
 परं सती^८ अभेट पिंड, दास गाय दीनरा^९ ।
 धणी स अग्र होत ढाल, जूटि^{१०}, धामजग्र में^{११} ।
 इसा वसंत के अपार, गाढ़ पूर नग्र में^{१२} ॥ १२३
 सनांन दान के सजंत^{१३}, तै बईस उग्रता ।
 जईन सास्त्र त्रांण जाण^{१४}, ध्यांन ग्यांन धारता ।
 पौसाक ऊंच द्रव्व^{१५} पूर, भूखणं धरं भरं ।
 जगत्त^{१६} जै कनक जोत^{१७}, जोति जै जवाहरं ॥ १२४
 खुले बजार^{१८} हाट खूटि, छज्जयं^{१९} विछायतं ।
 इसा बईस तेणि^{२०} वार, वेण^{२१} ठौड़^{२२} आवतं ।
 वणैस^{२३} हट्ट हट्ट वीच, वाणिजं खवेसरा^{२४} ।
 लखां खरीद देत लेत, रूप में^{२५} धनेसरा ॥ १२५

१ ग. षोडशं । २ ग. दानयं । ३ ख. रुद्र । ४ ग. समानयं । ५ क. मृषा । ६ ख. ग. अवाचि । ७ ख. ग. सूरमांस । ८ ख. ग. सत्री । ९ ख. दानरा । १० ग. जूक्ति । ११ ख. ग. में । १२ ख. में । ग. में । १३ ख. ग. सभंत । १४ ख. ग. जाणि । १५ ख. द्रव । ग. द्रव्व । १६ ख. जगंत । १७ ख. ग. जोति जोति । १८ ख. ग. वजार । १९ ख. ग. छजयं । २० ख. ग. तेण । २१ ख. ग. वेणि । २२ ख. ठौर । ग. ठौड़ । २३ ख. ग. वणैस ।

*ख. प्रतिमें यह पद्यांश— 'लखां खरीद लेत देत ।'

२४ ख. खवेसरां । ग. अवेसरां । २५ ख. ग. में ।

१२२. प्रमेस — (परम + ईश) विष्णु, ईश्वर । चंड — चंडिका, दुर्गा । रुद्र — महादेव । समानयं — (?) ।

१२३. अनट्ट — कभी याचकको न नहीं कहने वाला । अखा — मृषा, असत्य । अवाच्य — जो कहने योग्य न हो । परं — दूसरे की । अभेट — अस्पर्श, स्पर्श न करनेकी क्रिया । पिंड — शरीर । ढाल — रक्षक, रक्षा । जूटि — लग कर । धामजग्र — युद्ध । वसंत — रहते हैं । गाढ़ पूर — शक्तिशाली ।

१२४. जईन — जैन । ऊंच — श्रेष्ठ । द्रव्व — द्रव्य । कनक — स्वर्ण, सोना ।

१२५. छज्जयं — सुशोभित । विछायतं — वह कपड़ा जो बड़ी सभा आदिमें बैठनेके लिये विछाया जाय । बईस — वेश्य वर्ण । हट्ट हट्ट — प्रति दूकान । वाणिजं — वाणिज्य, व्यापार । खवेसरा — सबका । धनेसरा — कुबेरका ।

सिधं^१ निधं अठं नवं स, सच्चयं^२ घरं घरै ।
 इकौस^३ नाम आखतं^४, अनेक साद उच्चरै ।
 समुद्र के^५ क्रतं^६ सनांन, रुद्र जाप रच्चयं ।
 खटं स क्रम्म^७ वांटी खाइ^८, आप वांट^९ अच्चयं ॥ १२६
 दुवार है सरब्ब^{१०} दास, जै वसेख दुज्जयं^{११} ।
 अतीत ग्रेह तप्प^{१२} आय, प्रीत हूंत^{१३} पुज्जयं^{१४} ।
 वसै सुखी छहु वरन्न^{१५}, अन्न^{१६} धन्न^{१७} अग्गळा^{१८} ।
 अवास गोख ग्रेह ऊंच, एक^{१९} एक अग्गळा* ॥ १२७
 करी तुरी चित्रांम^{२०} केळि, द्वार द्वार डंबरं^{२१} ।
 गुलाब के लगंत गात, अंतरेस अंबरं ।
 नचंत केक रंतं^{२२} राग, विम्मळं विलावळं ।
 करंत गोख जोख केक, हेम^{२३} में^{२४} भळाहळं ॥ १२८

१ ग. सिधि । २ ख. ग. रच्चयं । ३ ख. ईकोस । ग. इकोस । ४ ख. आयतां । ग. आयतां । ५ ख. ग. जे । ६ ख. ल. क्रष । ७ ख. लाय । ८ ख. ग. वंट । ९ ख. ग. सरब । १० ग. दुइभयं । ११ ख. ताप । ग. ताम । १२ ख. ग. प्रीति । १३ ख. ग. पुइभयं । १४ ख. ग. वरन । १५ ख. अन्न । ग. अन्न । १६ ग. धन्न । १७ ख. सघळा । ग. अघळा । १८ ग. ऐक ऐक ।

*यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है ।

२० ग. चित्रांग । २१ ग. डंबरं । २२ ख. ग. तांन । २३ ग. हेम । २४ ग. में ।

१२६. सिधं—आठ प्रकारकी सिद्धियाँ । निधं—नव प्रकारकी निधियाँ । सच्चयं—सञ्चित, वास्तविक रूप में । आखतं—कहते हैं । साद—आवाज, शब्द ।

१२७. दुवार—दरवाजा । वसेख—विशेष । दुज्जयं—द्विज, ब्राह्मण, पंडित । अतीत—सन्ध्यासी, फकीर । पुज्जयं—पूजे जाते हैं । वरन्न—वरण, जाति (हिंदू) । अग्गळा अधिक, अपार । अवास—भवन । गोख—भरोखा । अग्गळा—विशेष ।

१२८. करी—हाथी । तुरी—घोड़ा । चित्रांम—चित्र । केळि—केल वृक्ष । डंबरं—समूह । अंतरेस—इत्र । अंबरं—(?) । विम्मळं—पवित्र । विलावळं—एक राग जो केदार और कल्याणके योगसे बनता है । यह दीपक रागका पुत्र माना जाता है । यह सबेरेके समय गाया जाता है । जोख—आनन्द, हर्ष । हेम—स्वर्ण, सोना । भळाहळं—देदीप्यमान, चमकयुक्त ।

करंत केक चित्र कांम, रूप भूप^१ रंगरा^२ ।
 कवी विनोद^३ भूप क्रत^४, उच्चरै^५ उमंगरा ।
 वईदराज^६ के विसाळ, औखधी^७ उपाइक^८ ।
 तई^९ रसायणी^{१०} स्वधातु^{११}, स्वच्छयं^{१२} रसायकं^{१३} ॥ १२६
 पढंत जोतकी^{१४} पुराण, तारकेस के तवै ।
 रघुंस^{१५} सांम जुभू^{१६} अथू^{१७}, च्यार^{१८} वेद^{१९} के^{२०} चवै ।
 सिखंत^{२१} केक भेद सौण, साधनं सरोदरा^{२२} ।
 महा मंत्रेस अगमं^{२३}, मही^{२४} अभ्यास मोदरा ॥ १३०
 अराध वीर मंत्र एक, साधनं सधीतरा ।
 सिखंत भेद कोक^{२५} सार, सासत्रं संगीतरा ।

१ ख. ग. रूप । २ ख. रंगता । ३ ग. विनोद । ४ ख. ग. क्रीति । ५ ख. ग. उच्चरै । ६ ग. वईदराज । ७ ख. औषधी । ग. उषधी । ८ ख. ग. उपायकं । ९ ख. भई । १० ग. रसाइणी । ११ ख. सुधातु । ग. सुधातुर । १२ ख. ग. रच्चयं । १३ ख. ग. रसाइकं । १४ ख. ग. जोतिकं । १५ ख. ग. रघुस । १६ ख. ग. जुञ्ज । १७ ख. अथ्र । ग. अथु । १८ ख. ग. च्यारि । १९ ग. वेद । २० ग. कै । २१ ख. ग. सीषंत । २२ ख. सरोदया । २३ ख. ग. आगमं । २४ ख. ग. महा । २५ ख. ग. केक ।

१२६. केक - कई । कांम - कामिनी, कार्य । रंगरा - आनंदका । क्रत - कीर्ति । उच्चरै - उच्चारण करते हैं । उमंगरा - जोशके । वईदराज - वैद्यराज, चिकित्सक । औखधी - औषधी, दवा । उपाइक - उत्पन्न करने वाला, बनाने वाला । तई - उनमें । रसायणी - रसायन विद्याको जानने वाला । स्वधातु - (?) । स्वच्छयं - साफ, भेतरहित । रसायकं - रसायन ।

१३०. जोतकी - ज्योतिषी, यहाँ पंडित अर्थ ठीक जेंचता है । तारकेस - तर्क-शास्त्र अथवा तारकेश्वर, शिव । तवै - स्तवन करते हैं । रघुंस - ऋग्वेद । सांम - सामवेद । जुभू - यजुर्वेद । अथू - अथर्ववेद । चवै - पढ़ते हैं । सौण - शकुन । सरोदरा - स्वरोदयके । महा मंत्रेस - महामंत्र । अगमं - दुर्लभ । मोदरा - हर्ष ।

१३१. वीर मंत्र - वीरोंको जगानेके मंत्र, भूत-प्रेतके मंत्र । साधनं - किसी कार्यको सिद्ध करनेकी क्रिया, सिद्धि । सधीतरा - (?) । सिखंत - सीखते हैं । कोक-सार - काम-शास्त्र ।

मलं अखाड़ केक मंड, दाव धाव दायकं ।
 वहंत के पटास्य^१ बंक^२, पाणवंत पाइकं^३ ॥ १३१
 सजंत^४ के चिकन^५ साज, सुंदरां^६ ससोभरा^७ ।
 करंत के मुकेस काम, भार कार चौभरा^८ ।
 तणंत के वणंत^९ तास, प्रम्मळं^{१०} पटंबरं ।
 सिवंत^{११} के जरी सकाज, अंग अंग अंबरं^{१२} ॥ १३२
 करंत कनक^{१३} काम, जोति भाण मै जसं ।
 सिगार आवध^{१४} सिरै, तिसं^{१५} जरंत तैनसं^{१६} ।
 वणाय खाग चाढ़ि वाढ़^{१७}, ओपवै^{१८} उजासरा ।
 वणंत वोच^{१९} नीर वाधि, रूप में^{२०} वणासरा ॥ १३३
 वढाळ सेल के वणाय, कीध ओपमै कळा ।
 जिकै^{२१} कुमारबीज^{२२} जाणि, चंचळा अपचछळा^{२३} ।

१ ख. ग. पटास । २ ख. ग. बांकि । ३ ख. ग. पायकं । ४ ख. ग. सभंत । ५ ख. ग. चिकनं । ६ ख. ग. सुंदरं । ७ ख. सुशोभरा । ग. सुसोभरा । ८ ख. चौभरा । ९ ख. ग. वणंत । १० ख. प्रमल्लं । ११ ख. ग. सीवंत । १२ ख. अंबरं । ग. अंबबरं । १३ ख. नकंसं । ग. गकस । १४ ख. ग. आवधां । १५ ख. निसां । ग. निसा । १६ ख. ग. हंतसां । १७ ख. वाट । ग. वाढ़ि । १८ ग. ओपवै । १९ ग. बीज । २० ख. ग. मै । २१ ख. ग. जिके । २२ ख. ग. बीज । २३ ख. ग. अपचछळा ।

१३१. मलं—मल्ल, द्वन्द्व युद्ध करने वाला, पहलवान । अखाड़—अखाड़ा, कुस्ती लड़नेका स्थान । वहंत—धारण करते हैं । पटास्य—पटा, प्रायः दो हाथ लम्बी किर्चके आकारकी लोहेकी पट्टी जिससे तलवारकी काट और बचाव सीखते हैं । बंक—तलवार विशेष, वक्र । पाणवंत—वलवान । पाइकं—चतुर, दक्ष, नौकर ।

१३२. चिकन—एक प्रकारका कशीदा जो रेशम या सूतसे कपड़े पर काढ़ा जाता है । ससोभरा—शोभासहित, शोभा व कांति वाला । मुकेस—सोने-चांदीके चौड़े तार, इन तारोंका बना हुआ कपड़ा, मुक्केश । भार—(?) । कार चौभरा—लकड़ीका चौखटा जिसमें कपड़ा कस कर कसीदेका काम हो, जरदोजी । तास—कपड़ा विशेष । प्रम्मळं—सुन्दर । पटंबरं—रेशमके वस्त्र । सिवंत—सीते हैं ।

१३३. केक—कई । कनक—स्वर्ण, सोना । भाण—सूर्य, भानु । वाढ़—शस्त्रका पैना भाग, शस्त्रकी धार । ओपवै—उज्ज्वल करते हैं । बीज—बिजली । वणासरा—वनास नदी ।

१३४. वढाळ—तलवार । सेल—भाला । ओपमै—चमकमें, द्युतिमें । अपचछळा—चंचल, उदण्ड ।

करंत नोख^१ नोख कांम, सोवनी संवाहरं^२ ।
 घड़ंत हेम घाट के, जड़ंत के जंवाहरं ॥ १३४
 रंगै अनेक^३ रंगरेज, आबदार अंबरं^४ ।
 हुलास ह्वै मुनिद्र हांसि^५, देखि देखि डंबरं^६ ।
 रजंत के कनक^७ रूप, भार द्रव्य^८ भारखं ।
 विराजमान स्त्रीबरं^९, रचे^{१०} करंत पारखं ॥ १३५
 जंवाहरं^{११} परक्ख^{१२} जोत^{१३} के जवाहरी करै ।
 अनोप रंग तोल आब^{१४}, संग ढंग संभरै ।
 घरं घरं सघन^{१५} भंभ फूल पै भलं ।
 तरं तरं करंत तांम - क्रील बाणि कोकिलं ॥ १३६

स्त्री वरणण

निवाण त्री भरंत नीर, रूप कुंभ हेमरा ।
 मैमंत जोबनं^{१६} मनोज, नेह कंत नेमरा ।
 चलै गयंद जेम चाल, भाल इंदु^{१७} सोभयं^{१८} ।
 महामुनेस^{१९} होत मोह, लेख^{२०} रूप लोभयं ॥ १३७

१ ख. ग. नोष नोष । २ ग. संवाहरां । ३ ग. अनेक । ४ ख. अचवरं । ५ ख. ग. होस । ६ ख. डंबरं । ग. डंवरं । ७ ख. ग. कनक । ८ ख. द्रव्य । ग. द्रव्य । ९ ख. ग. श्रीवरं । १० ख. ग. रजै । ११ ग. जवाहरं । १२ ख. ग. परक्ख । १३ ख. ग. जोति । १४ ख. अब । १५ ख. सघन । ग. सघन । १६ ख. ग. जोबनं । १७ ख. ग. इंदु । १८ ग. सभयं । १९ ख. ग. महामुनेस । २० ग. लेख ।

१३४. नोख - श्रेष्ठ । सोवनी - स्वर्णमयी । घड़ंत - घड़ते हैं । हेम - सोना । जंवाहरं - जवाहरात ।

१३५. आबदार - चमकदार, द्युतिवान । अंबरं - वस्त्र । हुलास - हर्ष, प्रसन्नता । डंबरं - (?) । रजंत - शोभा देते हैं, चांदीके । के - कई । कनक - स्वर्ण । स्त्रीबरं - धनाढ्य ।

१३६. परक्ख - परीक्षा । जोत - ज्योति, कांति । जवाहरी - जोहरी । अनोप - अनुपम । आब - कांति, चमक । संग - (?) । संभरै - (?) । सघन - घना । भंभ - फूल, फल व घने पत्तोंयुक्त टहनी, टहनी । तरं - वृक्ष । क्रील - क्रीड़ा ।

१३७. निवाण - जलाशय, तालाब । त्री - स्त्री । कुंभ - कलश, घड़ा । हेमरा - स्वर्णके, सोनेके । मैमंत - मस्त, उन्मत्त । जोबनं - जवानी । मनोज - कामदेव । गयंद - हाथी, गज । भाल - ललाट । इंदु - चंद्रमा । सोभयं - शोभा देती है । महामुनेस - महामुनि, महर्षि । लेख - प्रारब्ध ।

वणै^१ भुजंग रूप वेणि, मंग^२ सीस मोतियां^३ ।
 प्रजा^४ लजै न छत्र^५ पांति^६, जोय तास जोतियां^७ ।
 छुटी अलक्क^८ नाग छौन^९, सोभ एम^{१०} साज ही ।
 रथंस जाणि चंद्र रासि, रूप में^{११} विराजही^{१२} ॥ १३८
 राजै^{१३} मुखं सबाधि^{१४} रूप, *जोति चंद्र हूं जहीं ।
 रहै सदा अखंड रूप, *निकख^{१५} सांमता^{१६} मही^{१७} ।
 सिद्धर बिंदु^{१८} भाल सोभ, ओपियौ^{१९} आणंद रै ।
 जिकौ^{२०} उरम्म^{२१} माल^{२२} जाणि, चाढ़ि दीध चंद^{२३} रै ॥ १३९
 सरीस मोतियां^{२४} सधार^{२५}, कोर भाल केसरी ।
 कला तमंस^{२६} वीच^{२७} कीध^{२८}, चंद^{२९} जाणि चंदरी ।
 भँजै^{३०} धनंख चक्र भौह, सोभ काम साबळ^{३१} ।
 प्रफुलयां^{३२} कटाच्छ^{३३} फूर कंत^{३४} नेत्र कम्मळ^{३५} ॥ १४०

१ ख. ग. वणे। २ ख. ग. मांग। ३ ख. ग. मोतीयां। ४ ख. प्रभा। ग. प्रला।
 ५ ग. छत्र। ६ ख. पाणि। ७ ख. ग. जोतीयां। ८ ख. अलक। ग. अलक। ९ ग.
 छौन। १० ख. ए। ग. ऐम। ११ ख. ग. में। १२ ख. बिराजही। १३ ख. ग.
 रजै। १४ ख. ग. सबाधि। ख. प्रतिमें नहीं है।
 १५ ख. विष। ग. निषि। १६ ग. सांमता। १७ ग. नहीं। १८ ख. ग. बिंदु।
 १९ ख. ओपीयौ। ग. ओपीयौ। २० ख. ग. जिकौ। २१ ख. उरम। ग. उरम।
 २२ ग. मोज। २३ ख. ग. वंदरै। २४ ख. मोतीया। ग. मोतीयां। २५ ख. ग.
 सधारि। २६ ख. ग. तमं। २७ ख. विचै। ग. विचै। २८ ख. म. कीध। ग. सकीध।
 २९ ग. आडं। ३० क. जुजै। ३१ ख. ग. सावल। ३२ ख. प्रफुलयां। ३३ ख.
 कटाछ। ग. कछ। ३४ ख. ग. पूरकांति। ३५ ख. ग. कम्मल।

१३८. भुजंग — सर्प। वेणि — स्त्रियोंके शिरके बालोंकी गुंथी हुई चोटी। मंग — शिरके बालोंके बीचकी वह रेखा जो बालोंको दो ओर विभक्त कर के बनाई जाती है, मांग, सीमंत। अलक्क — मस्तकके धर-उधर लटकने वाले मरोड़दार बाल, अलकें। छौन — बच्चा। सोभ — सुन्दरता, शोभा। रथंस — (?)। विराजही — मानों चंद्रमा अलका रूप रास (वल्ग)की पकड़ कर रथमें बैठा हो।

१३९. राजै — शोभा देता है। सबाधि रूप — पूर्ण रूप। निक्ख — निकष, कसौटी ? सांमता — कालापन। भाल — ललाट। सोभ — शोभा देता है। ओपियौ — सुशोभित हुआ। उरम्म माल = ऊर्मिमाल — समुद्र, सागर।

१४०. सरीस...चंदरी — ललाटमें केशोंके पास-पास मोतियोंकी लड़ी इस प्रकार शोभायमान हो रही है मानों रात्रिकी श्यामतामें चंद्र का प्रकाश हो।

अनंग बाण लाजि जाइ^१, ईख^२ नैण अंजण^३ ।
 मनी तजै कुरंग मीन, जोय रूप खंजण^४ ।
 जड़ावमें^५ तिलक^६ जोति, एम^७ भाल अंकरै ।
 निजं वरंस^८ 'जोति' निक्क^९, ओपियौ^{१०} मयंक^{११} ॥ १४१
 ससोभ भूखणं स्तुतं^{१२}, वणे जड़ाव बांमरा^{१३} ।
 विराजमानं जाणि वीर, कोर बांधि^{१४} कामरा^{१५} ।
 चमंकवै त्रटक चक्र, ओपमा उमंदरा ।
 जड़ाव चक्र दोय जै, रथंस जाणि चंदरा ॥ १४२
 सुकीर नासिका सरूप, वेस रीत राजियै* ।
 सुरू^{१६} गुरू^{१७} र भोम सुक्र^{१८}, राजद्वार राजियै^{१९} ।

१ ख. ग. जाय । २ ख. ग. ईषि । ३ ख. ग. अंज्जण । ४ ख. ग. से । ५ ख. तिलक । ग. तिलक । ६ ग. ऐम । ७ ख. उरंस । ग. उरम । ८ ख. ग. न्यक्र । ९ ख. बोपीयौ । ग. बोपीयै । १० ख. श्रुतं । ग. श्रुभं । ११ ख. वामरा । ग. वामरा । १२ ख. बांधि । १३ ख. ग. कामरा ।

*ख. तथा ग. प्रतियोंमें यह पद्यांश इस प्रकार है— 'बेसरी विराजियै ।'

१४ ख. ग. सुर । १५ ख. ग. गुरू । १६ ख. जोड । ग. जाड । १७ ख. ग. राजियै ।

१४१. अनंग—कामदेव । लाजि जाइ—लज्जित हो जाते हैं । ईख—देख कर । नैण—नेत्र । अंजण—काजल । मनी—गर्व । कुरंग—हरिण । मीन—मछली । जोय—देख कर । खंजण—एक प्रसिद्ध पक्षी विशेष जो स्वभावसे बहुत ही चंचल होता है । इसकी चंचलताकी स्त्रियोंके नेत्रोंको उपमा दी जाती है । निक्क—(?) । ओपियौ—शोभायमान हुआ । मयंक—चंद्रमा ।

१४२. ससोभ—शोभापूर्वक, शोभासहित । भूखणं—आभूषण । स्तुतं—श्रुति, कान । बांमरा—स्त्रीका । त्रटक—तारंक, कानका आभूषण । ओपमा—उपमा ।

१४३. सुकीर...राजियै—सुन्दर तोतेके नाकके समान नाक है और उसमें मोतियुक्त बेसर (नामक आभूषण (नथ) इससे वह ऐसा शोभायमान होता है मानो सुरगुरु (बृहस्पति) भोम (मंगल) और शुक्र ये तीनों राजद्वार पर उपस्थित हो गये हों । यहाँ बेसर जो सोनेकी बनी हुई, उसका रंग सुर-गुरु (बृहस्पति) समान है, पीत है तथा बेसरमें जो मोती है उनका रंग श्वेत है । वह शुक्रके समान प्रतीत होता है और ओठोंका रंग लाल है जहाँ पर मोतियोंयुक्त बेसर लटकता है, वे ओठ मंगलके समान लाल प्रतीत होते हुए आनंददायक हैं ।

मुखं प्रकास हास मंद, ओपमा^१ उजासयं^२ ।
 उदै^३ अरद्ध^४ भाणए^५, मयंकजं प्रकासयं ॥ १४३
 चुनी^६ सुचंग रूपचै, कणंस नील क्रांमती ।
 दिठौण^७ रूप भोम^८ दीध, रीभियै रतीपती^९ ।
 कपोन^{१०} कंठ पोत केम, मोह ओपमा^{११} मिळी ।
 जिंका तनूज^{१२} भांणि जांणि^{१३}, मेर^{१४} खंग^{१५} मंडळी ॥ १४४
 सरीसकंठ^{१६} सोभयं, मुक्त^{१७} माळ नूममळी^{१८} ।
 सुमेर^{१९} खंग^{२०} हुंत स्रोत, जांणि गंग ऊजळी* ।
 हमेळ बेल चंद्रहार, सोभयै सकाजयं ।
 उडंत^{२१} नेक चंद्र अग्र^{२२}, राज पंत राजयं ॥ १४५

१ ख. ग. ओपमं । २ ख. उभासयं । ३ ख. ग. उदै । ४ ख. अरद्ध । ग. ऊरद्ध ।
 ५ ख. एम । ग. ऐम । ६ ख. ग. चुनी । ७ ग. दिठौण । ८ ख. ग. भोमि । ९ ग.
 रत्तिपती । १० ख. ग. कपोळ । ११ ग. ओपमां । १२ ख. तनूज । ग. तनज ।
 १३ ख. ग. भांणि । १४ ख. ग. मेरि । १५ ख. शृंग । ग. अंग । १६ ख. सरीर ।
 १७ ख. ग. मुक्कत । १८ ख. ग. नूमळी । १९ ग. समेर । २० ख. ग. शृंग ।

*ग. प्रतिमें यह पंक्ति इस प्रकार है— सुमेर शृंग हुंत जांणि, स्रोत गंग ऊजळी ।

२१ ख. ग. उडं । २२ ख. ग. अग्रि ।

१४३. अरद्ध — आधा । भाणए — सूर्य । मयंकजं — चंद्रमा ।

१४४. चुनी — माणिक्यादि रत्नका बहुत छोटा टुकड़ा, चुनी । सुचंग — सुन्दर । नील —
 रत्न विशेष । क्रांमती — कांति, चमक । दिठौण — (?) । भोम — मंगल ।
 रीभियै — मोहित हुआ । रतीपती — कामदेव । पोत — एक प्रकारका अत्यन्त बारीक
 मोती विशेष जो स्त्रियोंके कंठाभरण (तिमणिया) विशेषमें परोया जाता है । तनूज
 भांणि — सूर्यतनया, यमुना । जांणि — मानों । मेर — सुमेर ।

१४५. सरीस — श्री नामक कंठाभरण । सोभयं — शोभायमान हो रही है । मुक्त माळ —
 मोतियोंका हार । नूममळी — स्वच्छ, उज्ज्वल । सुमेर — सुमेरु पर्वत । खंग — शिखर
 स्रोत — स्रोत, यहां भरना अर्थ बैठता है । गंग — गंगा नदी । हमेळ — एक
 प्रकारका कंठाभरण । बेल — आभूषण विशेष । चंद्रहार — आभूषण विशेष । सोभयं —
 शोभायमान होता है । उडंत — उड़ते हैं । नेक — ठीक, मानों । राज पंत — (?) ।
 राजयं — शोभायमान होते हैं ।

दुहुँ^१ विसाळ चंपडाळ, ओपयं^२ भुजा इसी ।
 दुरद् दंत रंगदार, चंद्रबाह^३ चौपसी^४ ।
 बिनै^५ जड़ाव बाजुबंध^६, सम्म^७ पाट^८ सोहिया^९ ।
 स्निखंड साखि^{१०} जाणि स्रप्प, मैण^{११} धार मोहिया^{१२} ॥ १४६
 प्रवीण कंकणीस^{१३} पौच^{१४}, गज्जरा^{१५} ज नौग्रही^{१६} ।
 हिमंकरं रखत्त^{१७} हस्त, भेद जाणि सोभही^{१८} ।
 *विराजमान रूप^{१९} वाधि, अंगुली अनोपए ।
 अनोप पंकजं अरद्ध, पंख जाणि ओपए ॥ १४७
 समुद्रिका छलास छाप, सो जड़ाव संगरा ।
 अनेक भौर^{२०} जाणि आय, रीभ^{२१} रंगरागरा^{२२} ।

१ ख. दुहुँ । २ ख. ओपोए । ग. ओपीये । ३ ख. बाह । ग. बांह । ४ क. चौपसी ।
 ग. चौपसी । ५ ख. बिनै । ग. विन्है । ६ ख. बाजुबंध । ७ ख. ग. साम । ८ ख.
 ग. पाटि । ९ ख. ग. सोहीया । १० ख. ग. साप । ११ ख. ग. मेणि । १२ ग.
 मोहीया । १३ ख. ग. कंकणीस । १४ ग. पौचि । १५ ख. ग. गज्जरा । १६ ख.
 ग. नवग्रही । १७ ख. ग. नखत्र । १८ ग. ओपए ।

*ये दो पंक्तियां ग. प्रतिमें नहीं हैं । *यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है ।

१९ क. रूख । २० ख. भौर । ग. भौरि । २१ ख. ग. रीभि । २२ ख. ग. रंगरंगरा ।

१४६. चंपडाळ — चम्पाकी डाली । ओपयं — शोभायमान होती हैं । दुरद् — हाथी, गज ।
 दंत — दांत । चंद्रबाह — हाथी-दांतकी पतले चौरकी विशेष प्रकारकी रंगदार चूड़ियोंके
 चूड़ेका नाम जिसे चंद्रबाई या चंद्रबाहका चूड़ा कहते हैं । चौपसी — शोभित होती है ।
 बिनै — दोनों । जड़ाव — जटित । बाजुबंध — स्त्रियोंके बांह पर धारण करनेका
 आभूषण विशेष । सम्म पाट — श्याम रंगका रेशम । वि.वि. — बाजुबंध रेशम या
 सूतके धागोंमें पिरोया जाता है । सोहिया — सुशोभित हुए । स्निखंड — चंदन-वृक्ष ।
 साखि — शाखा, टहनी । जाणि — मानों । स्रप्प — सर्प, सांप । मैण धार = मणि-
 धर — मणिको धारण करने वाला कृष्ण सर्प । मोहिया — मोहित कर दिया गया हो ।
१४७. कंकणीस — स्त्रियोंके हाथका आभूषण विशेष । पौच — स्त्रियोंकी कलाईका आभूषण
 विशेष । गज्जरा — स्त्रियोंकी कलाईका आभूषण विशेष । नौग्रही — स्त्रियोंकी कलाईका
 आभूषण । हिमंकरं — चंद्रमा । रखत्त — नक्षत्र, ऋक्ष । सोभही — शोभित होता है ।
 विराजमान — सुशोभित । अनोपए — अनुपम । पंकजं — कमल ।
१४८. समुद्रिका — मुद्रिकासहित । छलास — एक प्रकारकी सादी अंगुठी जो घातुके तारके
 टुकड़ेको मोड़ कर बनाई जाती है । भौर — भौरा । रीभ — मोहित हो कर । रंगराग —
 वर्ष. आनंद ।

रजै सुमंघ^१ बूंद^२ रेख, कोमळं करै^३ क्रिया^४ ।
 अरंग जाणि रूप अंक, चित्रकार^५ चित्रिया^६ ॥ १४८
 उरंस रूप में^७ उदार, राजए^८ उरोजयं ।
 लघु^९ चित्रांम जाणि लेख, सोत्रनं कळस्सयं^{१०} ।
 कसे हरीस कूचकी^{११}, उरोज ओप आणिजै ।
 छिपा रिमं^{१२} जुगं छिपै^{१३}, जळजं^{१४} पात्र जाणिजै ॥ १४९
 कुचं^{१५} अलक्क^{१६} छूटि केस, वेस जे^{१७} प्रभा वणी ।
 अई महेस पूजिवा, नवीन जाणि नागणी ।
 कनकं^{१८} अंग रंग कंति, सोभ नाभ सुंदरं^{१९} ।
 मुनेस मोह रूप भोम^{२०}, रास जाणि रंधरं ॥ १५०
 छजं^{२१} चित्रं^{२२} कटीस छीण, छुद्रघंटं^{२३} छाजयं ।
 सकौ ग्रहं ससिघ रासि, एक^{२४} साथि आजयं ।

१ ख. ग. सुमंघि । २ ख. बूंद । ग. बुद । ३ ख. ग. कर । ४ ख. क्रिया । ५ ग. चित्रकार । ६ ख. ग. चित्रिया । ७ ख. ग. में । ८ ख. रज्जए । ग. रज्जए । ९ ख. लघु । ग. लघु । १० ख. कस्सयं । ११ ख. कुचकी । ग. कंचुकी । १२ ख. ग. छिपारिपं । १३ ख. ग. छिपे । १४ ख. जलजं । ग. जल्लज । १५ ग. कुच । १६ ख. ग. अलक्क । १७ ख. ग. जे । १८ ख. ग. कनक ।

*ग. प्रतिमें यह पंक्ति इस प्रकार है— 'कनक रंग अंग कंति सोभि नाभि सुंदर' ।

१९ ख. ग. भोमि । २० ख. ग. छजे । २१ ख. ग. चितं । २२ ख. ग. छुद्रघंटि । २३ ग. ऐक ।

१४८. चित्रिया — चित्रित किये ।

१४९. उरंस — वक्षस्थल । उदार — (?) । उरोजयं — स्तन, कुच । लघु — छोटा । चित्रांम — चित्र । सोत्रनं — सुवर्ण, सोना । कळस्सयं — कलश, घट । कूचकी — कंचुकि । उरोज — स्तन, कुच । ओप — उपमा । छिपा — रात्रि । रिमं — शत्रु । जळज — कमल । जाणिजै — मानों ।

१५०. कुचं — स्तन, कुच । अलक्क — मस्तकके इधर-उधर लकटते हुए मरोड़दार बाल । वेस — (?) । प्रभा — कान्ति, दीप्ति, शोभा । महेस — महादेव । पूजिवा — पूजा करनेको । जाणि — मानों । कनक — कनक, सुवर्ण, सोना । कंति — कान्ति, दीप्ति । सोभ — शोभा । नाभ — नाभि । मुनेस — मुनीश, महर्षि । भोम — भूमि । रास — (?) । रंधरं — रंध, छिद्र ।

१५१. छजं — शोभा । कटीस — कटि । छुद्रघंट — क्षुद्रघंटिका, करवनी । छाजयं — शोभित होती है । सकौ — सब । हंप — (?) । आजयं — आजा (?)

रजंत जंघ खंभ रंभ, उरध^१ सोव्रनं^३ इसी ।
 घुमत्त^३ घग्घरं^४ स घेर^५, क्तं^६ में^७ जरक्कसी ॥ १५१
 सरूप पिंड^८ कस्स^९ सोभ, सुंदरं सुसुभरं^{१०} ।
 भमंक कंचनं भुलास^{११}, भूल पाइ^{१२} भंभरं ।
 घमं^{१३} घमंक होत घेर, भंघीकार^{१४} भंभरै ।
 जसौल^{१५} कामं फौज जाणि, यंत्र^{१६} तमांम ऊचरै^{१७} ॥ १५२
 पाए^{१८} सुचंग स्यांम पाट^{१९}, पै कनंक नूपरं^{२०} ।
 मक्रंद कंज रक्खिमांन^{२१}, पीत भौर ऊपरं ।
 भणंक नूपुरास भीण, ओप तास^{२२} एहड़ा^{२३} ।
 बदंत तोतळीस बाणि^{२४}, जाणि पुत्र जेहड़ा^{२५} ॥ १५३

१ ख. ग. ऊर्ध्व । २ ख. ग. सोव्रनं । ३ ख. ग. घुमंत । ४ ख. ग. घग्घरं । ५ ख. घेरा ।
 ६ ख. ग. क्रांति । ७ ख. ग. में । ८ ग. पिंडि । ९ ख. ग. कासु । १० ख. सुसु-
 भरं । ग. सुसुभरं । ११ ख. ग. भलूस । १२ ख. ग. पाय । १३ ख. ग. घणं ।
 १४ ख. ग. भातकार । १५ ग. जसोल । १६ ख. ग. आति । १७ ख. ग. उच्चरै ।
 १८ ख. पोए । ग. पोऐ । १९ ख. ग. पाटि । २० ख. ग. नूपुरं । २१ ख. ग.
 रक्खिमांन । २२ क. आपतास । २३ ख. एहडी । ग. ऐहडी । २४ ख. ग. बाणि
 २५ ख. ग. जेहडी ।

१५१. रजंत - शोभा देती है । जंघ - पिंडली, जंघा । खंभ - स्तंभ, सांभ । रंभ - केला ।
 उरध - उर्ध्व । घग्घरं - लहंगा, घघरी । घेर - फैलाव (?) । क्तं - कान्ति,
 दीप्ति । जरक्कसी - सोने-चांदीके तारोंका काम, जरकशी ।

१५२. सरूप - स्वरूप, सौंदर्य । सोभ - कान्ति । सुसुभरं - सुशुभ्र, स्वच्छ । भमंक -
 ध्वनि विशेष । भुलास भूल - स्त्रियोंका समूह, यूथ । पाइ - पैर । भंभरं - भंभर
 नामक आभूषण । घमं घमंक - चलनेकी ध्वनि । भंघीकार - ध्वनि विशेष ।
 जसौल - यश गायक । यंत्र - वाद्य । तमांम - सब ।

१५३. सुचंग - सुन्दर, मनोहर । पाट - रेशम । पै - चरण । नूपरं - पैरोंका आभूषण
 विशेष । मक्रंद - फूलोंका रस जिसे मधुमक्खियाँ और भौरे आदि चूसते हैं, मकरंद ।
 कंज - कमल । रक्खिमांन - (?) । भणंक - ध्वनि । नूपुरास - नूपुर ।
 भीण - महीनतम ध्वनि । ओप - उपमा । एहड़ा - ऐसा । बदंत - बोलता है ।
 तोतळीस - तुतलाते हुए बोलने वाली । जाणि - मानों । जेहड़ा - जैसा ।

अणोट वीछिया^१ उदार, पाय पंख पंकज ।
 अनंग ह्वै छनंग अंग, रंग रंग में^२ रज ।
 पयंस थान रंग पूर, जावकं^३ तणा जगै ।
 जिकै^४ समान रंभ जाणि, आविया^५ अगे^६ अगे ॥ १५४
 कळावतोस^७ पोस काम, जोति तास यौ^८ जगै ।
 जिकैस^९ चाल हंस जाणि, लोभ धार पै लगै ।
 इसी जिलंभ^{१०} रै अनेक, रंग राग उच्चरी ।
 इसी^{११} अनेक राजद्वार^{१२}, सुंदरी सहच्चरी ॥ १५५
 परी^{१३} चौगणास^{१४} रूप, इंद्र लोक इंदरा ।
 इयांसु^{१५} चौगणा^{१६} उदार, रूप राज^{१७} मिदरा^{१८} ।

घोड़ांरी वरणण

तुरी भळूस साज तांम, धाव देत धारकं ।
 उडांण पंखराज एम^{१९}, पांण में^{२०} अपारकं^{२१} ॥ १५६

१ ख. ग. वीछीया । २ ख. ग. में । ३ ख. ग. जावकां । ४ ख. ग. जिके । ५ ख. ग. आवीया । ६ ख. ग. पयं । ७ ख. ग. कलावतीस । ८ क. यौ । ९ ख. ग. जिकेस । १० ख. जलंभ । ११ ख. ग. यसी । १२ ख. ग. राजद्वारि । १३ ख. ग. परीस । १४ ख. ग. चौगुणास । १५ ख. ईयांस । ग. ईवास । १६ ख. ग. सौगुणा । १७ ख. राज्य । १८ ख. ग. स्पंदरां । १९ ख. ग. ऐम । २० ख. ग. में । २१ ख. अपारकं ।

१५४. अणोट - पैरके अंगूठेमें पहिनेका एक प्रकारका छल्ला । वीछिया - पैरोंकी अंगुलियोंमें धारण करनेका स्त्रियोंका आभूषण विशेष । पाय - पैर । पंकज - कमल । अनंग - कामदेव । छनंग अंग - खंड-खंड, टुक-टुक । रंग - आनंद । रज - तुष्ट, खुश । पयंस थान - (?) । जावकं तणा - मेंहदीके । जगै - सुशोभित होते । जिकै - जिस । रंभ - अप्सरा, रंभा नामक अप्सरा ।

१५५. पोस काम - कामदेवको पोषण करने वाली । जिलंभ - आभा । सहच्चरी - सखी, सहेली, सेविका ।

१५६. परी - अप्सरा । चौगणास - चौगुना । राज मिदरां - राज भवनों । तुरी - घोड़ा । भळूस - (?) । साज - सजावट कर के । धाव - विचार । धारकं - धारण करने वाला । उडांण - दौड़ । पंखराज - गरुड़ । पांण - शक्ति । अपारकं - असीम, अपार ।

पवन्नि^१ सांमुहै पवंग, आसवार धारबै ।
 वजंत^२ सौक^३ पाइ^४ बे, उवारतै^५ बिहारबै ।
 उलट्टु ए^६ पलट्टु यौ, भपट्टु तै सभावतं ।
 समीर नां^७ मिले^८ सकै, इतैस^९ फेर^{१०} आवतं ॥ १५७
 वछेर केतलं सवागि^{११}, फेरकं फरावतं ।
 नटंस नाटकं^{१२} विधानं^{१३}, साभना^{१४} सभावतं ।
 नचंत चातुरीस नृत्य^{१५}, जोड़ तातुरी जिसी^{१६} ।
 परी न पांतुरी न पाइ^{१७}, आतुरी करै इसी^{१८} ॥ १५८
 छमासहं मसत्त^{१९} छाक, चाचरै नरं चढ़ै ।
 अरोह वाज डाक आंणि, काळ कीठगै^{२०} चढ़ै^{२१} ।
 तरील ह्वै हरोळ^{२२} ताम, हट्ट^{२३} हूंत हल्लवै ।
 पटा गिरंद खाळ पूर^{२४}, ऊपटा^{२५} उभल्लवै ॥ १५९

१ ख. ग. पवन्नि । २ ख. ग. वजंत । ३ ख. ग. सौक । ४ ख. पायबै । ग. पायबे ।
 ५ ख. उवायतै । ग. उंवायतै । ६ ग. ऐ । ७ ख. ग. न । ८ ख. ग. मिले । ९ ग.
 इतैस । १० ग. फेरि । ११ ख. ग. सवाग । १२ ख. ग. नाटकं । १३ ग. निधानं ।
 १४ ख. ग. साभना । १५ ख. ग. नृति । १६ ख. यसी । १७ ख. ग. पाय । १८ ग.
 इ । १९ ख. ग. मसत । २० क. गीठगै । २१ ख. कढ़े । ग. कढ़ै । २२ ख. ग.
 हरोल । २३ ख. हव । ग. हव्व । २४ ख. दूर । २५ ख. ऊपटा ।

१५७. पवन्नि - पवन, वायु । सांमुहै - सम्मुख, सामने । पवंग - घोड़ा । आसवार - अस-
 वार । सौक - तेज दौड़, गति, प्रवाह आदिकी ध्वनि । बिहारबै - (?) ।
 भपट्टु - दौड़, तेज दौड़ । समीर - हवा, पवन ।

१५८. वछेर - छोटा घोड़ा । सवागि - बल्गा सहित । फेरकं - घोड़े, ऊँट आदिकी चाल
 सिखाने वाला । विधान - ढंग, प्रकार । साभना - साभना सिद्धि । चातुरीस -
 दक्षता, चतुराई । जोड़ - समानता । तातुरी - त्वरा, शीघ्रता, चंचलता (?) ।
 परी - अप्सरा । पांतुरी - वेव्या, रंडी । पाइ - पेर । आतुरी - शीघ्रता ।

१५९. मसत्त - मसत । छाक - (?) चाचरै - ललाट, माथा । अरोह - सवारी, आरोह ।
 वाज - घोड़ा । डाक - (?) । हरोळ - अगाड़ी, हरावल । हट्ट हूंत -
 (?) । हल्लवै - चलते हैं या चलाये जाते हैं ।

हाथियोंरो वरणण

डगंस^१ बेड़ियां^२ डहै^३, जंभीर^४ भार जूवळां ।
 करंत खून काळकीट, सुंड नाग सांमळां ।
 धतांधतां चरक्ख^५ धोम, ऊडि^६ भाळ ऊछळै^७ ।
 कराळ रूप कोप में^८, उखाडि व्रच्छ^९ आंमळै ॥ १६०
 उधूत^{१०} भूत-सा अनेक, जोम काळ जेहड़ा ।
 सभ्त सूड^{११} हूं सलांम, आय आय एहड़ा^{१२} ।
 घडाळ^{१३} नौबती^{१४} घुरंत, जैदराज^{१५} नागरं ।
 हिलोळ में^{१६} किलोळ होत, सद् जेम सागरं ॥ १६१
 दिपंत^{१७} एम^{१८} राजद्वार, राजनग्र राज में^{१९} ।
 जोधाण हिंदवाण^{२०} जोड़, एणवार^{२१} आजमें^{२२} ।
 इसी विलोकि^{२३} रीभयौ^{२४}, धरं^{२५} छकं 'अभौ'^{२६} धणी ।
 अमीं सुद्रस्ट^{२७} सीचियौ^{२८}, वळे^{२९} घणो प्रभा वणी ॥ १६२

१ ग. डंगस २ ख. ग. बेड़ीयां । ३ ख. ग. डहे । ४ ख. ग. जंजीर । ५ ख. ग. चरख । ६ ख. ग. उडि । ७ ख. ग. उछळै । ८ ख. ग. में । ९ ख. ग. वृछ । १० ख. ग. औधूत । ११ ग. सुंडि । १२ ग. ऐहड़ा । १३ ख. ग. घड़ाळि । १४ ख. ग. नौबती । १५ ख. जहराग । ग. जहराग । १६ ख. में । ग. में । १७ ग. विपांत । १८ ग. ऐम । १९ ख. में । ग. में । २० ख. हंडुवाण । ग. हंडुवोन । २१ ग. ऐणवार । २२ ग. आजमें । २३ ग. विलोकि । २४ ख. रीभयौ । ग. रीभियो । २५ ख. धरे । ग. धरै । २६ ग. अभै । २७ ख. सुद्रिष्ट । ग. सुद्रिष्टि । २८ ख. ग. सीचियौ । २९ ख. वले । ग. वळे ।

१६०. डगंस - निगड, हाथीके पैर बाँधनेकी जंजीर । डहै - धारण करते हैं । जूवळां - पैर, चरण । काळकीट - अत्यन्त श्याम । सांमळां - श्याम, काला । धतांधतां - हाथीको पीछे हटानेका शब्द । चरक्ख - तोप । धोम - अग्नि । भाळ - अग्निकी लपट । आंमळै - दलमलते हैं, कुचलते हैं ।

१६१. उधूत - उद्दण्ड । भूत - प्रेत । सा - समान, तुल्य । जोम - जोश । काळ - यमराज । जेहड़ा - जैसे । सभ्त - करते हैं । सलांम - नमस्कार, अभिवादन । एहड़ा - ऐसे । घडाळ - घड़ियाल, घंटी । नौबती - राजाओं और अमीरोंके दरवाजे पर बजने वाला वाद्य विशेष, नौबत । घुरंत - बजती है । जै - जय । दराज - महान । हिलोळ - तरंग । किलोळ - ध्वनि, क्रीड़ा, खेल । सद् - शब्द ।

१६२. दिपंत - शोभा देता है । राजनग्र - राजनगर । हिंदवाण - हिन्दुस्तान । एणवार - इस समय । छकं - वैभव । अभौ - अभयसिंह । धणी - स्वामी । अमीं - अमृत । सुद्रस्ट - शुभ दृष्टि । सीचियौ - सींचा । प्रभा - कान्ति, शोभा ।

इसौ समाज राज ऊँच, दीपियो^१ नरिंदर^२ ।

समाज अंम्मरं स्तुग^३ इसौ, जिसौ न राज इंदर^४ ।

दुवौस^५ जोड़ि^६ खाग दन्नि^७, तेण सूं धरापती^८ ।

नरापती जोधाण नाथ, ऐहड़ौ^९ अभैपती^{१०} ॥ १६३

दूहा^{११}—सब हिंदू^{१२} राजा^{१३} सिरै, अभपति अमलीमाण ।

सब गढ़ हिंदवाणां^{१४} सिरै, जाजुळ^{१५} गढ़ जोधाण ॥ १६४

जे^{१६} चाकर जोधाणरा, इळ इतरा गढ़ आन ।

अंबनयर मंत्री इसौ, उदियापुर^{१७} परधान ॥ १६५

प्रथम बगीचांरो वरणण
दवावैत

ऐसा^{१८} गढ़ जोधाण और सहरका दरसाव, जिसके^{१९} चौतरफकौं
वागीचूँका डंबर और दरियाऊँका^{२०} वणाव । पहिलै वागीचूँकी
सोभा कहिके^{२१} दिखाय^{२२}, पीछे^{२३} दरियाऊँकी^{२४} तारीफ जिसके^{२५}
गुन^{२६} गाय ।* सो कैसे^{२७} कही^{२८} दिखाय, जळ^{२९} निवाणूँका निवास

१ ख. ग. दीपियो । २ ख. ग. नरचंद । ३ ख. श्रुमं । ४ ख. दुवोन । ग. दुवोन ।
५ ख. ग. जोड़ । ६ ख. दानि । ग. दानि । ७ ख. ग. धरपती । ८ ख. एहड़ौ ।
९ ख. ग. अभपती । १० ख. ग. दोहा । ११ ख. ग. हींदू । १२ ग. राजां । १३ ख.
हिंदुसिरै । ग. हिंदवाणां । १४ ख. ग. जाजुलि । १५ ग. जो । १६ ख. ग. उदियापुर ।
१७ ख. ग. अंसा । १८ ख. ग. जिसके । १९ ख. ग. दरियाऊँका ।

*यह वाक्य ग. प्रतिमें नहीं है ।

२० ख. कहिके । २१ ख. दिखाव । २२ ख. पाछूँ । २३ ख. दरियाऊँ । २४ ख.
जिसके । २५ क. न. । २६ ख. सो सो कैसे । ग. सोकैसें । २७ ख. ग. कहि ।
२८ ख. ग. जल ।

१६३. ऊँच—श्रेष्ठ । दीपियो—शोभायमान हुआ । नरिंदर—नरेन्द्रका, राजाका । अंम्मरं—
देवता । स्तुग—स्वर्ग । दुवौस—दूसरा ही । जोड़ि—समानतामें । खाग दन्नि—
युद्ध और दानमें । तेण—इससे । धरापती—राजा । नरापती—राजा, नरेश ।
अभैपती—अभयसिंह ।

१६४. सब—सब । सिरै—श्रेष्ठ । अभपति—अभयसिंह । अमलीमाण—अपने ऐश्वर्यका
उपभोग करने वाला । हिंदवाणां—भारतवर्ष । जाजुळ—जाज्वल्यमान, तेजस्वी ।

१६५. इळ—पृथ्वी, संसार । आन—अन्य । अंबनयर—आमेर । उदियापुर—उदयपुर ।

१६६. दरसाव—दृश्य, नज्जारा । चौतरफकौं—चारों ओरका । डंबर—समूह । वणाव—
रचना, बनावट, शोभा, शृंगार । जळनिवाणूँका—जलाशयोका ।

रतिराजका वास । गुलजारके रसतै हौजूका^१ वणव । 'इंद्र लोकका
सा उदोत^२ अवांसूका दरसाव । फ्रौहासूकी पंकति जळ-चादसूका^३
उफाण^४ । जळ-चादसूकी धरहर मानूं छिल्ले महिराण । स्त्रीखंडूका
डंबर समीर^५ सैं भोला^६ खावै । मलियागिरके^७ भौलै^८ भूलि
पंखेसर मिणधर भुजंग आवै । अंबूका^९ समूह फळ जंबूका^{१०}
विसतार^{११} । कोकिलूकी कोहक^{१२} मोर चात्रक^{१३} अपार । चंपूकी
अंधेरी बोळसरूके^{१४} थंड । रतिराजके^{१५} असपक्क आसापालवके^{१६}
भंड । सोनजुह^{१७} रियाबेल^{१८} चंबेल^{१९} चंबेलीके फुलवाद मोगरैकी^{२०}
महक गुलाब फूलूकी^{२१} सुगंध जवाद ।

१ ख. ग. हौजूका । २ ख. ग. उदोत । ३ ख. ग. धासूका । ४ ग. ऊफाण । ५ ख. समीर ।
६ ख. भूला । ग. भूल । ७ ग. मिलियागिरके । ८ ख. भोलै । ९ ख. अंबूका ।
ग. अंबुका । १० ख जंबूका । ग. भंबूका । ११ ग. विस्तार । १२ ख. ग. कौहोका ।
१३ ख. ग. चात्रिक । १४ ख. बोलसरूके । ग. बोलसूरी । १५ ख. ग. रतिराजकेसे ।
१६ ख. ग. आसपल्लवके । १७ ख. ग. सोनजुही । १८ ख. यबेल । ग. राबेल ।
१९ ख. चंबेली । ग. चंबेली । २० ख. ग. मोगरेकी । २१ ख. फुलूकी । ग. फूलकी ।

१६६. रतिराज — कामदेव, वसंत ऋतु । गुलजारके — उद्यानके, वाटिकाके । उदोत —
प्रकाशमान । अवांसूका — भवनोंका । फ्रौहासूकी — फव्वारोंकी । जळचादसूका — पानीकी
चौड़ी धार जो कुछ ऊपरसे गिरती हो । उफाण — उमड़ना । धरहर — ध्वनि,
आवाज । छिल्ले — उमड़ रहे हों, सीमा-उलंघन कर रहे हों । महिराण — महार्णव,
सागर, समुद्र । स्त्रीखंडूका — चंदनका । डंबर — समूह । समीर — वायु । भोला —
वायु-प्रवाह या वायु-प्रवाहका आघात । मलियागिर — चंदनगिरि । भौलै — भ्रममें ।
भूलि — भूल कर, भ्रममें पड़ कर । पंखेसर — पंखधारी । मिणधर — मणिधारी सर्प ।
अंबूका — आमोंका । जंबूका — जामुनका (?) । कोहक — कोयलकी आवाज । चात्रक —
चातक । चंपूकी — (चम्पाकी ?) । बोळसरूके — मौलश्रीके । थंड — समूह । असपक्क —
बड़ा तंत्र, खेमा, अस्बक । आसापालवके — अशोक वृक्षके । भंड — समूह । सोनजुह —
एक प्रकारकी जूही जिसके फूल पीले रंगके होते हैं, स्वर्णयूथिका । रियाबेल — रायबेल,
चमेली आदिकी जातिका एक प्रकारका छोटा पौधा जिसमें सफेद रंगके सुगंधित
फूल लगते हैं । चंबेल — (?) । चंबेलीके — चमेलीके । फुलवाद — पुष्प, फूल ।
मोगरैकी — एक प्रकारका बहुत बढ़िया बेला (पुष्प) । जवाद — (जवाजा ?) ।

मालती सेवती केतकी प्रफूलमान^१ । फूलूकी सोभा असमानके^२ तारूका विधान^३ । *केवडूकी बाड़ी* सिरूका विकास^४ । नाफरमां हजार^५ और^६ गुलहूवास^७ । गुललालके^८ डंबर^९ सूरगुलूका^{१०} प्रकास । दाबदी^{११} अजूबां गुलरोसनूका उजास । गुल-नौरंग महंदी गुल-रेसमी गुल सोहै । मुनमथका इंदका^{१२} मुनेस्वरूका मन मोहै । फल-फूलूके^{१३} भार भरी अट्टार^{१४} भार । ठांम ठांमके ऊपर मोरूका तंडव भौरूका गुंजार^{१५} । ठांम ठांम सेती रतिराजके^{१६} नकीब कोकिला बोलै । सीतल मंद सुगंध तीन प्रकारके भोलै । अंजीरूके^{१७} दरखत नागलताके वरेल^{१८} । अंगूर सरदू फली^{१९} अनेक^{२०} बेल^{२१} ।

१ ख. प्रफूलमान । २ ग. आसमानके । ३ ख. विकास ।

*ख. प्रतिमें नहीं है ।

४ ग. वाड़ि । ५ ख. और । ग. ओर । ६ ख. ग. गुलहूकेवास । ७ ख. गुललालूके । ग. गुललालूके । ८ ख. डंबर । ग. डंबर । ९ ग. सूरजगुलूका । १० ख. ग. दाऊदी । ११ ख. ग. इंदका । १२ ग. फूलके । १३ ग. अट्टार । १४ ग. गुंजार । १५ ख. ग. रतिराजकेसे ।

*ग. प्रतिमें इस प्रकार है—सीतल मंद सुगंध तीन प्रकारके पवनके भोलै । १६ ख. ग. अंजीरूके । १७ ख. ग. वरेल । १८ ग. सरदूसफली । १९ ख. ग. अनेक । २० ख. बेल । ग. बेल ।

१६६. मालती—एक प्रकारकी लता जो हिमालय और विंध्याचल पर्वतके बनोंमें अधिकतासे पाई जाती है । सेवती—गुलाबकी एक किस्म जिसके फूल सफेद रंगके होते हैं । केतकी—एक प्रकारका छोटा झाड़ू विशेष, केवड़ेका एक भेद विशेष । प्रफूलमान—प्रफुल्लित, विकसित । तारूका—तारागणके, उडुगणके । विधान—रचना, बनावट, निर्माण । केवडूकी—सफेद केतकीके पौधेकी जो केतकीसे कुछ बड़ा होता है । सिरूका—सिरूका पौधा विशेष । नाफरमां—एक प्रकारका पौधा जिसके फूल ऊँचे या बैंगनी रंगके होते हैं, ना-फरमान । हजार—जिसके हजार या अधिक पंखड़ियां हों, सहस्रदल । गुलहूवास—गुले-अब्बास, लाल व पीले फूलों वाला पौधा, गुलहूवास । (?) । गुललालके—गुललालके (?) डंबर—समूह, महक । सूरगुलूका—(?) दाबदी—एक प्रकारका पौधा जिसके श्वेत रंगका पुष्प होता है, दाऊदी । अजूबां—(?) । गुलरोसनूका—(?) गुल नौरंग—(?) । महंदी—मेंहदी । मुनमथका—मन्मथका, कामदेवका । अट्टार भार—अष्टादश भार वनस्पति । मोरूका—मोरोंका । तंडव—नृत्य । भौरूका—भौरोंका । रतिराजके—वसंत ऋतुके । नकीब—राजा महाराजा व बादशाहकी सवारीके आगे नजरदोलत शब्दका उच्चारण करने वाला । भोलै—वायु-प्रवाह, वायुका भौंका । सरदू—एक प्रकारका लम्बोतरा खरबूजा जो कानुलमें अधिक होता है, खरबूजोंमें यह श्रेष्ठ गिना जाता है ।

बेदानै^१ दाखां बेदानै^२ अनार। चिलकौचै^३ बेह^४ और सेबूका विस्तार^५।
कपूर - गरभ केळीका जूथ केळूकी भूब। स्लीफळ विदाम^६ और
नीबूके^७ लूब। कमळा रसमी नारंगी पैबंदूका^८ हूंनर^९ अदभूत।
रोसनी हमरांनी सुरखांनी सहतूत। ऐसे^{१०} दरखतूके^{११} ऊपर रिसीले^{१२}
फळूका रसपांन कर^{१३}। कीर क्रीला करते हैं। रस सुगंधके डंबर^{१४}
भोम^{१५} पर भरते हैं। ऐसै वगीचूके^{१६} वीचमें^{१७} सलियळ^{१८}
सरोवर^{१९} कैसे। महाराजा वसंतकी फौजके नीसांण जैसे। सघन
गंभीर आरामूका^{२०} पार नहीं^{२१} आवै। आफताफका तेज जिसकी
छांहको^{२२} भेद जमी लग न जावै। ऐसै^{२३} ही जोधांण तैसे^{२४}
वगीचै^{२५}। मंडोवरके वीच^{२६} निवास। जहां स्त्री महाराजके^{२७} खड्ग
जैतकारी काळे गोरे महावीर^{२८} भैरूका^{२९} वास। ऐसै^{३०} वगीचूका

१ ख. वेदानै। ग. वेदानै। २ ख. ग. वेदानै। ३ ख. ग. चिलकौचे। ४ ख. बेही।
ग. वीही। ५ ख. ग. विसतार। ६ ख. ग. वदाम। ७ ग. नीबू। ८ ग. पैबंदका।
९ ख. ग. हुंनर। १० ख. अैसे। ग. अैसे। ११ ख. दखतू। १२ ख. रसीले। ग.
सीतल। १३ ख. ग. करि। १४ ख. डंबर। ग. डंबर। १५ ग. भोम। १६ ख. ग.
वागीचूके। ग. वगीचूके। १७ ख. वीचमें। ग. वीचमें। १८ ख. ग. सलीयल। १९ ख.
ग. सरोस। २० ग. आरामूका। २१ ख. ग. नहीं। २२ ख. ग. छांहकू। २३ ख.
अैसे। ग. अैसे। २४ ख. ग. तैसे। २५ ख. ग. वगीचे। २६ ग. वीचि। २७ ख.
माहाराजाके। ग. माहाराजके। २८ ख. ग. महावीर। २९ ख. भैरूका। ग. भैरूका।
३० ख. अैसे। ग. अैसे।

१६६. चिलकौचै - एक प्रकारका मेवा। बेह - कमलकी नाल। सेबूका - सेव नामक फलका।
कपूर-गरभ - कपूर है गर्भमें जिसके। केळीका - कदलीका। जूथ - यूथ, समूह।
केळूकी - केला नामक फलका। भूब - फलोंका गुच्छा, गुच्छा। स्लीफळ - नारियल।
लूब - गुच्छा, जो लटकता है। पैबंदूका - किसी वृक्षकी शाखा काट कर उसी जातिके
दूसरे वक्षमें जोड़ कर बांधना जिससे फल बढ़ जाय और स्वादमें भी नवीनता हो
जाय। रोसनी - (?)। हमरांनी - (?)। सुरखांनी - (?)।
रिसीले - रसिक, रसास्वदन करने वाला। कीर - तोता। क्रीला - क्रीड़ा, खेल।
डंबर - समूह। भोम - भूमि। सलियळ - पानीसे पूर्ण। नीसांण - वाद्य विशेष।
सघन - घना। गंभीर - गहरा। आरामूका - वाटिकाएँके, उपवनोंके। आफताफका -
सूर्यका। तेज - धूप, प्रकाश। जैतकारी - विजयी। भैरूका - भैरव नामक देवका।

सिंगार^१ सोभाका अथाग । *सिरुंका सिंगार असे बने हैं बाग । *कागा नांम काकरिख भुसंडी^२ दिलके वीच धारी । सब भूमि सेती उत्तिम भूमि देखि तपस्या करनेकी^३ विचारी । केतेक दिन तपस्या करि आराम लगाया । तिस काकरिखके नांम^४ कागा कहाया । तिस बगीचूके^५ दरम्यांन वरणै^६ जेते फळफूलका विस्तार^७ । सब्बूके^८ सिरपोस आनारुंका अधिकार । सौ बेदांणै^९ अनारके^{१०} से रसके पूर हीरुं मांणीकूकी^{११} जोती^{१२} । स्वात^{१३} बूंदसे^{१४} दूसरे मानूं अमृतके^{१५} मोती । ऐसै^{१६} अलोकोक मेवै^{१७} विसन सकतिकू^{१८} अरपण करि प्रसादीक^{१९} आरोगणैमे^{२०} आवै^{२१} । केतेक हजूरके^{२२} सेवगर दुज कवि उमराव मंत्री तिनकू बगसावै । असे अनार बहुत सी मनुहार^{२३} बहुत सी लिखतै^{२४} किसी किसी बखत पातसाहूके पास रसाळ

१ ख. ग. शृंगार । *यह पंक्ति ख. तथा ग. प्रतियोंमें नहीं है ।

२ ख. भुसंडी । ग. भुसुंडी ।

३ ग. प्रतिमें यहसे आगे निम्न पंक्तियां और मिली हैं । इसमें उपरोक्त पंक्ति भी निम्न प्रकार है—

‘कागा नांम काक रिष भुसुंडीका बाग । सो किस वजै सै हू वाकहि दिषाय ।

ऐक समैके वीच काकरिष भुसुंडी दिलके वीच धारी ।’

३ ख. करनेकी । ग. करने । ४ ख. ग. नांय । ५ ख. ग. वागीचेके । ६ ख. ग. वरणे । ७ ख. ग. विस्तार । ८ ख. सब्बूके । ग. सब्बूके । ९ ख. ग. बेदानें । १० ख. ग. अनारके । ११ ख. ग. मांणीकू । १२ ख. जोति । १३ ग. स्वांत । १४ ग. बूंदसे । १५ ख. ग. अमृतके । १६ ख. असे । ग. असे । १७ ख. ग. मेवे । १८ ख. सकतिकू । १९ ख. प्रादीक । २० ख. अरोगनमै । क. आरोगनमै । २१ ग. आवैं । २२ ग. हजूरके । २३ ख. ग. मनुहार । २४ ग. लिखतैं ।

१६६. काकरिख—एक आहार जो लोमश ऋषिके शापसे कौआ हो गये थे, काकभुसुंडि । कागा—जोधपुर नगरके पास स्थित एक पवित्र स्थान । दरम्यांन—मध्य, बीच । सब्बूके—रजनीगंधा नामक पौधा या उसका फूल (?) । सिरपोस—शिरका आवरण । हीरुं—हीरे । मांणीकू—माणिक्योंको । स्वात बूंदसे—स्वाति नक्षत्रकी बूंद जैसे मोती । विसन—विष्णु । सकती—दुर्गाको, देवीको । अरपण—भेंट, अर्पण । प्रसादीक—प्रसाद । सेवगर—सेवक । दुज—ब्राह्मण । रसाळ—स्वादिष्ट और मीठे फल ।

तरीक भिजवावै^१ । जिन्हूके^२ रस सवाद देखै^३ सै विलायतके पातसाहके^४ भेजे^५ । विलायत त[क]के बेदाने अनार सो^६ पैमाल जावै^७ । जिनके^८ रस सवादके^९ मजा देवतूका^{१०} मन हरै^{११} । दिल्लेसुर^{१२} परमेसुर जिसकी स्त्रीमुखसे^{१३} तारीफ^{*} करै । ऐसै^{१४} वगीचै^{१५} अनेक सो तौ^{१६} संखेप^{१७} वरनै^{१८} सुभाय ।

तालावांरौ वरणण

अब दरियाऊंकी तारीफ^{*} सो^{१९} कहिकै दिखाइ^{२०} । जगजीत जोधाणके^{२१} दरियाव कैसै^{२२} । अभैसागर बाळसमंद दोऊ मानसरोवर जैसै^{२३} । अम्रितके समुद्र तैसै लहरूके^{२४} प्रवाह छाजै^{२५} । जिनका^{२६} रूप देखे सै छीरसमुद्रका गुमर भाजै । गंभीर नीर तिम तिममंगल^{२७} ग्राह । थाग^{२८} तै^{२९} अनेक^{३०} पावै नहीं थाह । सारस बतक मुरगाबी बक खेल संजे । हरख^{३१} नचंत तीर खंजन-कुमार^{३२} हंजे । छहूं रिति^{३३} जिन्हूके^{३४} तट^{३५} परि ब्रह्मग्यानी^{३६}

१ ग. भिजवावै । २ ख. जिन्हूके । ग. तिन्हूके । ३ ग. देखै । ४ ग. पातिसाहके । ५ ख. ग. भेजे । ६ ख. ग. सोपै । ७ ग. जावै । ८ ख. ग. जिसके । ९ ख. ग. स्वादका । १० ग. देवतुंका । ११ ग. हरै । १२ ख. ग. दिल्लेसुर । १३ ग. लमुखसै ।

*...*ये पंक्तियां ग. प्रतिमें नहीं हैं ।

१४ ख. असै । १५ ख. वागीचै । १६ ख. तौ । १७ ख. संपेप । १८ ख. वरनै । १९ ग. सो । २० ख. ग. दिखाय । २१ ग. गढ़ जोधाणके । २२ ग. कैसै । २३ ख. जैसे । २४ ख. हलरूके । २५ ग. छाजै । २६ ख. जिन्ह । ग. जिन्हूं । २७ ख. ग. तिमतिमगल । २८ ग. थाघ । २९ ग. तै । ३० ग. अनेके । ३१ ग. हरख । ३२ ग. कुमार । ३३ ख. रति । ३४ ख. ग. जिन्हूके । ३५ ख. ग. तटि । ३६ ख. ब्रह्म के ग्यानी ।

१६६. तरीक - विधि, प्रकार, ढंग, तरीका । मजा - आनन्द, रसास्वादन । दिल्लेसुर - दिल्लीश्वर, बादशाह । संखेप - संक्षेप । दरियाऊंकी - तालाबोंकी । लहरूके - तरंगोंके, हिलोरोके । छाजै - शोभा देते हैं । सै - सब । छीरसमुद्रका - क्षीरसागरका । गुमर - गव । भाजै - नाश होते हैं, मिट जाते हैं । तिममंगल - समुद्रमें रहने वाला मत्स्यके आकारका एक बड़ा भारी जंतु जो तिमि नामक बड़े मत्स्यको भी निगल जाता है । ग्राह - मगर, घड़ियाल । थाग - नदी, तालाब, समुद्र आदिके नीचेकी जमीन, थाह । मुरगाबी - मुरगेकी जातिका एक पक्षी जो जलमें तैरता है और मछलियां पकड़ कर खाता है । हरख - हर्ष । नचंत - नृत्य करते हैं । तीर - तट, किनारा । हंजे - सुन्दर, मनोहर । छहूं - छही । रिति - ऋतु ।

सिध^१ मुनिराज छावै^२ । मानसरोवरके^३ भौलै^४ भूल^५ अनेक(क)^६ लीलंग^७ आवै^८ । ऐसे^९ दरियाऊके^{१०} बीचमें^{११} जिहाज सते से धरवाय । चंदणी^{१२} विछायत करवाय महताबी जरदोजीके^{१३} बंगळे समीयाने^{१४} तणवावै^{१५} । तहां स्त्री महाराजा राजराजेस्वर नरलोकके इंद्र छभा संजुत^{१६} विराजमान होय मजळस वणवावै^{१७} । रस-कवितूकी चरचा रंगराग^{१८} अपार । कुमुदांकी^{१९} फूल पर भंवळका गुंजार^{२०} । सरदकी चंदणी^{२१} चंद्रवंसी विमळका उजास । रितराजके^{२२} दिवस तहां सूरज वंसी^{२३} कंवळका^{२४} प्रकास । इस वजै खटरितुकी क्रीला जल्ले^{२५} गुलाबूकी छाक । तिसके देखे^{२६} तैं होत रितराज मुसताक । लावन्य रूप देखि रितराज^{२७} लोभा । सब राजसकी जळूस सेती गढ़ जोधाणकी सोभा । ऐसा^{२८} एक^{२९} प्रथमीकी^{३०} पीठ पर अगंजी

१ ग. सिद्ध । २ ग. छावै । ३ ख. ग. मानसरोवरके । ४ ख. भोलै । ग. भौलै । ५ ग. भूल । ६ ख. ग. अनेक । ७ ख. लालंग । ८ ख. आवै । ग. आवै । ९ ग. ऐसे । १० ख. दरियाऊके । ११ ख. बीचमें । ग. बीचमें । १२ ख. चांदणी । ग. चांदणीकी । १३ ख. ग. जरदोजीके । १४ ख. ग. समीयाने । १५ ख. तणवावै । ग. तणवावै । १६ ख. ग. संजुत । १७ ग. वणवावै । १८ ख. रागरंग । १९ ख. कुमुदांकी । ग. कुमुदांके । २० ग. गुंझार । २१ ख. ग. चांदणी । २२ ख. रितराजके । २३ ग. वंसी । २४ ख. ग. कंवळका । २५ ख. लगे । ग. गले । २६ ख. देखे । ग. देखे । २७ ख. तराज । २८ ख. ग. ऐसा । २९ ग. एक । ३० ग. प्रथमी ।

१७६. छावै - शोभा देते हैं, फैले हुए हैं । भौलै - भ्रममें, भूलमें । लीलंग - हंस । सते से - धीरेसे । धरवाय - रखवा कर । चंदणी - बिछानेका सफेद रंगका कपड़ा । विछायत - बिछानेका कपड़ा या बिछानेकी क्रिया । महताबी - किसी बड़े भवनके प्रागे अथवा बागके बीचमें बना हुआ गोल या ऊँचा चबूतरा जिस पर लोग रात्रिमें बैठ कर, चांद-चांदनीका आनन्द लेते हैं, अथवा = जरबत्फ । जरदोजीके - सलमे सितारा और जरीका काम, कारचोबीके । समीयाने - शामियाना, बड़ा तंबू । छभा - सभा । संजुत - संयुक्त, सहित । मजळस - बहुतसे लोगोंके बैठनेकी जगह, मजलिस, सभा । कुमुदांकी - लाल कमलोंकी, कुमुदोंकी । भंवळका - भौंरोंका । रितराजके - वसंत ऋतुके । दिवस - दिन । कंवळका - कमलोंका । रितु - ऋतु । क्रीला - क्रीड़ा । जल्ले - (खिले हुए चमकदार ?) । छाक - (ठाठ ?) । रितराज - ऋतुराज, वसंत ऋतु । मुसताक - उत्कृष्ट, मुस्तक । लावन्य - सुन्दरता, लावण्य । लोभा - लुभायमान हुआ । अगंजी - अग्रणी ।

गढ़ जोधाण । जिसने^१ वारंवार सरण रखे^२ राव राजा रावळ रावत
अरु राण । अंबगढ़का राजा, चित्रगढ़का^३ राणा सिर ईसानं वहै^४ ।
और भी राव राजूकूं बखत पड़े सो सरणा गह्या^५ चहै । सरण तकिके^६
महाराजाके^७ कदमूं आवै^८ । जिसकूं समसेरके पाणि फिर^९ उतनकी^{१०}
मसलनि^{११} बैठावै^{१२} । जैसा जिस^{१३} जोधाणगढ़का पातिसाह सो
कीरतिका नाह ।

महाराज अभैसौघजीरो वरणण

सरणाई साधार सरणाई^{१४} राय विजै^{१५} पंजर रूपका अनंग
आजानबाह^{१६} । *खटव्रनका सुरतर हिंदुसथानका पातिसाह ।*
तेजका भाळाहळ पौरसका धाम । जससुगंधका भंमर आरंभका
रांम । वाचका जुजिस्तर^{१७} साचका विधान । सतका^{१८}
हरचंद^{१९} द्रोणसा^{२०} मान^{२१} । सीलका गंगेव भारथका पाथ ।
नख्का जंवहरी जोधाणका नाथ । मेरसा अचळ धू जैसा
ध्यान । संकरसा तपसी गोरखसा ग्यान । लाजका समुद्र^{२२}

१ ख. जिसने । ग. जिसने । २ ख. ग. रवे । ३ ख. ग. चित्रकोटका । ४ ग. बहै ।
५ ख. ग. गति । ६ ख. ग. तकिके । ७ ख. ग. महाराजाके । ८ ग. आवै ।
९ ख. ग. फिर । १० ग. उत्तनकी । ११ ख. ग. मसलंद । १२ ख. बैठावै । ग.
बैठावै । १३ ख. जिस । १४ ख. ग. सरणाय । १५ ग. बिजै । १६ ग. आइभान ।

*यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है ।

१७ ख. ग. जुजिस्तल । १८ ग. सत्तक । १९ ग. हरचंदद । २० ख. जोण । ग. भ्रूण ।
२१ ख. समान । २२ ख. समुद्र ।

१६६. अंबगढ़का - आमेरका । चित्रगढ़का - चित्तौड़गढ़का । ईसानं - अहसान । वहै - धारण
करता है । कदमूं - चरणोंमें । समसेरके - तलवारके । पाणि - बल, शक्ति ।
उतनकी - जन्मभूमिकी, वतनकी । मसलति - परामर्श, सलाह, मस्लहत । पातिसाह -
सम्राट । नाह - नाथ, स्वामी । सरणाई साधार - शरणमें आए हुएकी रक्षा करने
वाला । सरणाई राय - राजा, महाराजाओंको शरण देने वाला । पंजर - शरीर ।
अनंग - कामदेव । आजानबाह - आजानुबाहु । खटव्रनका - ब्राह्मणादि छः
जातियोंका । सुरतर - कल्पवृक्ष । भाळाहळ - सूर्य, अग्नि । भंमर - भौंरा ।
वाचका - वचनोंका । जुजिस्तर - सत्यसंध, युधिष्ठिर । हरचंद - हरिश्चंद्र राजा ।
द्रोण - द्रोणाचार्य ऋषि । सीलका - सदाचारका, सद्बुत्तिका । गंगेव - गंगेय, भीष्म
पितामह । भारथ - युद्ध । पाथ - पार्थ, अर्जुन । नख्का - नरोंका, वीरोंका ।
जंवहरी - जोहरी । मेरसा - सुमेरु पर्वतके समान । धू - भक्तराज ध्रुव, ध्रुव नक्षत्र ।

करण-सा दातार । बीकम-सा^१ बिबेकी^२ परा-उपगार । पांणका
कपिराज सूरजका^३ वंस । देवीका वरदाई दईवका अंस । दिलका
दलेल लहृंका दरियाव । रूपक^४ केसरीज^५ गजबंधका^६ सभाव^७ ।
दवागीरुंका^८ सुरतर^९ दावागीरुंका साल । सब राजूका^{१०}
सिरपोस^{११} महाराजा^{१२} अभमाल । जस^{१३} बखतमें^{१४} सनांन^{१५} दांन
अंबाका^{१६} पूजन करि सिरै^{१७} दरबारका हुकम किया^{१८} । फरमांवर-
दाखूंनै आदाब वजाय^{१९} लिया^{२०} । आठूं^{२१} मिसलके^{२२} हवालगीर
केउ^{२३} धाए^{२४} । फरासूंनै^{२५} आवासूं^{२६} वीच^{२७} विछायत वणवाए^{२८} ।
लाहानूर^{२९} मुसैद^{३०} अंजीलकी चोपस्मी गिलमूंकी^{३१} विछायत करै^{३२} ।

१ ख. ग. बीकमसा । २ ख. ग. बिबेकी । ३ ग. सूरजका । ४ ख. ग. रूप । ५ ख.
कौसेरीभ । ग. कौसेरीभ । ६ ख. गजबंधका । ७ ख. ग. सुभाव । ८ ख. ग. दवागीरुंका ।
९ ग. सुरतर । १० ग. राजौंका । ११ ग. सिरपौंस । १२ ख. ग. महाराजा ।
१३ ख. ग. जिस । १४ ख. बखतमें । ग. बखतमें । १५ ख. ग. सनांन । १६ ख.
ग. अंबिका । १७ ख. ग. सरे । १८ ख. ग. कीया । १९ ग. वजाय । २० ख. ग.
लीया । २१ ख. ग. आठौ । २२ ख. ग. मिसके । २३ ख. हवालगीरनकी । ग. हवाल-
गीरनववी । २४ ख. वधाए । ग. बधाए । २५ ग. फरासूंनै । २६ ख. ग. आवासूं ।
२७ ख. ग. वीचि । २८ ख. वणवाए । ग. वणवाए । २९ ख. ग. लाहानूर । ३० ग.
मुसैद । ३१ ख. ग. गिलमूंकी । ३२ ग. करै ।

१६६. बीकम-सा - विक्रमादित्य जैसा । परा-उपगार - परोपकार । पांणका - प्राणका,
शक्तिका, बलका । कपिराज - हनुमान । देवीका वरदाई - देवीसे वरदान प्राप्त करने
वाला । दईवका - परब्रह्मका, ईश्वरका, श्रीरामचंद्र भगवान्का । दलेल - उदार,
विशाल । लहृंका - तरंगोंका, हिलोरोंका । रूपक - स्वरूपका । केसरीज - जाति
विशेषका सिंह । गजबंधका - महाराजा गजसिंहके । दवागीरुंका - दुआ करने वालोंका,
दुआगोश्योंका, शुभचिंतकोंका । सुरतर - कल्पवृक्ष । दावागीरुंका - शत्रुओंका ।
साल - शल्य । सिरपोस - शिरत्राण, शिरका रक्षक । जस - जिस । अंबाका -
दुर्गाका, देवीका । फरमांवरदाखूंनै - आज्ञाकारियोंने, हुक्म मानने वालोंने । आदाब -
शिष्टाचार । आठूं मिसलके - वे आठ ही बड़े सरदार जो जोधपुरके राजाके पासकी
पंक्तिमें बैठते थे । हवालगीरके - (?) । उधाए - (?) । फरासूंनै - वह
व्यक्ति जिसके जिम्मे दरबार या मजलिस आदिके फर्श आदि बिछाने या रोशनी आदि
करनेका प्रबंध हो, फर्शीने । आवासूं - भवनों । विछायत - बिछानेका वस्त्र ।
लाहानूर - कच्चे रेशमके चमकदार । मुसैद - (?) । अंजीलकी - (?) ।
चोपस्मी - चार प्रकारकी ऊनकी । गिलमूंकी - बहुत मोटा मुलायम गद्दे या बिछौनेकी ।

ज्वाब ज्वाबके ऊपर सबज हमरंग वर मतंगे धरै। सुनही^१ गुलजार कस्मीरके^२ कांम। सबजी असमसिध मीनेके^३ विरांम। ऐसे^४ ठांम ठांमके बिछायतके ऊपर^५ सोहै^६। *सो कैसे^७, मनमथ बालके^८ खिलौने^९ मनमथके मन^{१०} मोहै^{११}। * तिस गिलमूके^{१२} ऊपर रंग वेल^{१३} बूटूका विसतार^{१४}। सो कैसे, रूपकी भोम^{१५} पर अनंगका गुलजार। जिस अवासकी सीढ़ियूके^{१६} ऊपर^{१७} रंगदार सबजू^{१८} पसमीन पायंदाज राजै। सो कैसे जिसकी सोभाके^{१९} देखे^{२०} तै^{२१} नील घन सघनके वदल लाजै। जरकसी आफताबके^{२२} सूरतके^{२३} समियाने^{२४} जड़ाऊ^{२५} खंभूपर खड़े किये^{२६}। किरमजी रेसमके तणाव^{२७} दिये^{२८}। जोतिके बीचतै^{२९} सूरख डोरि कैसी खुली।

१ ख. ग. सुनहरी। २ ख. कस्मीरके। ग. कास्मीरके। ३ ख. मीनेके। ग. मीनके। ४ ख. ग. ऐसे। ५ ख. ग. ऊपर। ६ ख. सोहै। ग. सौहै। ७ ग. कैसे। ८ ख. ग. बालके। ९ ग. बिलौने।

*ग. प्रतिमें यह पंक्ति निम्न प्रकार है—

‘सो कैसे मनमथ बालके बिलौने माहाराजूके मनमथके दिल मोहै।’

१० ख. ग. दिल। ११ ग. मोहै। १२ ख. गिलमूके। १३ ग. वेल। १४ ग. विस्तार। १५ ख. भोमि। ग. भोमि। १६ ख. ग. सीढ़ीयूके। १७ ख. यह शब्द ख. प्रतिमें नहीं है। १८ ख. ग. सबज। १९ ख. ग. सोभाकू। २० ख. ग. देख। २१ ग. तै। २२ ख. ग. आफताबकी। २३ ख. सूरतके। २४ ख. समियाने। ग. समियाने। २५ ख. जड़ाऊ। २६ ख. ग. किये। २७ ग. तनाव। २८ ख. ग. दिये। २९ ख. ग. बीचमें।

१६६. ज्वाब ज्वाब—जगह-जगह, जा-ब-जा, उपयुक्त-स्थान पर। हमरंग—समान रंग वाले। मतंगे—बिछायतको उड़नेसे रोकनेके लिए भारी मोरफंश (?)। सुनही—स्वर्णिम। गुलजार—उपवन, वाटिका। असमसिध—(?)। ठांम ठांमके—स्थान-स्थानके। मनमथ बालके खिलौने—कामदेवके बच्चेके खिलौने, वे मोरफंश इतने सुन्दर थे मानों कामदेवके बच्चेके मनोहर खिलौने हों। भोम—भूमि। अनंगका—कामदेवका। अवास—भवन। सीढ़ीयूके—जानेके। सबजू—हरे रंगका, हरा। पसमीन—बढ़िया मुलायम ऊनका पशमीन। पायंदाज—पैर पोछनेका बिछावन, फंशके किनारे पर रखा हुआ वह कपड़ा जिस पर पैर पीछ कर फंश पर जाते हैं। राजै—शोभायमान होते हैं। सोभाके—कांतिके, दीप्तिके। वदल—बादल, मेघ। जरकसी—कलाबत्का काम। आफताबके—सूर्यकी रोशनीसे बचनेके लिए एक प्रकारका छोटा शामियाना या छत जिस पर जरी कलाबत्का काम हुआ रहता है वह आफताबी कहलाता है। समियाने—शामियाने, तबू। जड़ाऊ—जटित। खंभूपर—खंभोंपर, स्तंभोंपर। किरमजी—किरमिजके रंगका, लाल। तणाव—वे रस्सिएं जो तबू खड़ा करते समय छूटियेसे कसी जाती हैं।

तारामंडलत^१ और^२ धार सुरसतीकी^३ चली । तिसी समझे^४
 बीचमें^५ कनक सिंघासन छत्र मसंद गाव - तकियै । तकियौ^६ संजुगत
 विराजमान कियै^७ । मानूं^८ इंद्रसू^९ जंग कर^{१०} जीतके^{११} लियै^{१२} ।
 सतखनै^{१३} आवासू^{१४} को^{१५} हलहल नरचंदूका^{१६} निवास । गौखूके^{१७}
 बीचमें^{१८} जोतिका उजास । चित्रके^{१९} काम रास - मंडलूका^{२०}
 वणाव । तावदानके^{२१} जलूस^{२२} अस्टपदीका भाव । अस्मूकी^{२३}
 आब^{२४} जे^{२५} महताबूका^{२६} ताब^{२७} । जालियूके^{२८} बीचमें^{२९}
 प्रवाळियूके^{३०} जाब^{३१} । कलाबुतूका^{३२} हुनर^{३३} साईवानूका काम ।
 जरकसके वगीचे लगे^{३४} ठाम ठाम । तिलाकारीके पड़दे जोतिके
 जहूर जरबफती चिगैका^{३५} वणाव^{३६} ।* गुलजारूके वयारे वसंतका

१ ख. तारामंडलतै । २ ख. ग. च्यार । ३ ख. सस्वतकी । ग. सरसतीकी । ४ ख.
 समानेके । ग. समाने । ५ ख. ग. बीचमें । ६ ख. तकियौ । ग. तकियौ । ७ ख. कोए ।
 ग. कीयें । ८ ख. मानौ । ग. मानौ । ९ ख. इंद्रसौ । ग. इंद्रलौसौ । १० ख. ग.
 करि । ११ ख. ग. जीतके । १२ ख. लाए । ग. लीयें । १३ ख. ग. सतखणे ।
 १४ ग. आवासूका । १५ ख. ग. नरिचूका । १६ ख. गोषूके । १७ ख. बीचमें ।
 ग. बीचमें । १८ ख. प्रतिमें यह नहीं है । ग. का । १९ ख. ग. मंडलका । २० ख.
 तावदानूका । ग. तावदानूका । २१ ख. ग. अष्ट । २२ क. अस्मूकी । २३ ख.
 अब । २४ ख. जेव । ग. जेब । २५ ख. महताबूका । ग. महताबूका । २६ ग.
 ताब । २७ ख. ग. जालीयूके । २८ ख. बीचमें । ग. बीचमें । २९ ख. ग. प्रवाळीयूके ।
 ३० ख. ग. जाब । ३१ ख. कलाबुतू । ग. कलाबुतू । ३२ ख. हुनर । ग. हुनर ।
 ३३ ख. लगे । ग. लगे । ३४ ग. चिगैका । ३५ ख. ग. वणाव ।

*ख. तथा ग. प्रतियोंमें यहाँसे आगे निम्न पंक्तियाँ मिली हैं

‘उद्दीत सूर, समीरके भोलेसँ असी दरसावे ।

विद्रलताके बीज सिळाव जिसके देषे सँ पैमाल जावे ।

फोहारूके रसते हौज चादरूका वणाव ।

१६६. तारामंडलतै चली - जिन रसियोंसे जरीके कामके शामियानें व आफताबियाँ बाँधी
 गई थीं वे ऐसी मालूम होती थी मानों तारामंडलसे सरस्वती नदी की धाराएं पृथ्वी
 पर आ रही हैं । तिसी - उस, वही, उसी । समझे - शामियाना । गावतकिये -
 मसनद जो पीठके नीचे रखा जाता है, बड़ा तकिया । संजुगत - संयुक्त, सहित ।
 सतखनै - सात मंजिलके । आवासू की - भवनों, प्रासादों । हलहल - दमक, चमक
 (?) । नरचंदूका - नरेन्द्रोंका, राजाओंका । तावदानके - रोशनदानके ।
 अस्टपदीका - सोनेकी । अस्मूकी - कीमती पत्थरकी । आब - काँति, दीप्ति ।
 महताबूका - रोशनीका । ताब - प्रकाश । प्रवाळियूके - मूंगोका । जाब - जवाब,
 जोड़ । तिलाकारी - सोनेका मुलम्मा चढ़ानेका काम । जहूर - प्रकाश । जर-
 बफती - चाँदी-सोनेके तारोंसे बना कपड़ा, जरबत्फ । चिगैका - चिलभनका ।
 गुलजारूके - उपवनोके ।

भाव । ऐसी हवाके बीच^१ ऐसे^२ डंबर^३ दरसाए^४ । उस बखतमें^५
हुकम माफक^६ खटतीस वंसू^७ राजकुल उमराव आए^८ । सो कैसे,
पौसाकूसै^९ जलूस^{१०} मदमस्त गयंदकी चाल । आवधूसै^{११} कड़ाजूड़
ढळकती ढाल । भुजदंडाके^{१२} जोर पड़ता आभ^{१३} भेलै । खगभाटूके
खेल जमरामसै^{१४} खेलै^{१५} । स्यामके सहाय मुरधरके^{१६} किवाड़^{१७} ।
पिंडके प्रचंड पौरसके पहाड़ । दातार सूर सीलके^{१८} निवास । दीनके^{१९}
सहाय द्विज गऊके दास । जंगूके^{२०} जैतवार अजानवाह^{२१} । ऐसे^{२२}
भड़ आय विराजै^{२३} महाराजकी^{२४} दरगाह । बुधिवंत^{२५} वजीर^{२६}
अकलके अथाह । खानसांमा बगसी^{२७} मिलि आए^{२८} दरगाह ।
वेदव्याससे पिंडित^{२९} ब्रह्मपतिसे कविराज । आए^{३०} अनेक जहां
कीरतिके काज । और^{३१} ही^{३२} खिजमतदार^{३३} लोग^{३४} अपने हवाले^{३५}
पर सब ही दरसाए^{३६} । गण गंधप^{३७} गानधारी सब^{३८} ही मिल^{३९} आए^{४०} ।

१ ख. ग. बीच । २ ख. ग. असै । ३ ख. ग. डंबर । ४ ग. दरसाए । ५ ख.
बखतमें । ग. बखतमें । ६ ग. माफ । ७ ख. ग. वंस । ८ ग. आए । ९ ख. पौसाकूसै ।
११ ख. ग. जलूस । १० ख. ग. आवधूसै । १२ ख. ग. भुजदंडाके । १३ ख. आस-
मान । ग. आसमान । १४ ख. मजरावसू । १५ ग. खेलें । १६ ख. ग. मुरधरके ।
१७ ग. किवाड़ । १८ ग. सीलके । १९ ख. दीनके । २० ख. जंगूके । ग. जंगूके । २१ ख.
ग. अजानवाह । २२ ख. ग. ऐसे । २३ ख. ग. विराजै । २४ ग. महाराजकी । २५ ख.
बुधिवंत । ग. बुधिवंत । २६ ग. बज्जीर । २७ ख. बगसी । २८ ख. आए ।
२९ ख. ग. पिंडित । ३० ग. आए । ३१ ख. और । ३२ ख. ग. भी । ३३ ख. ग.
खिजमतदार । ३४ ख. लोक । ३५ ख. हवाले । ३६ ग. दरसाए । ३७ ख. गण-
गंधप । ३८ ख. वसही । ३९ ख. मिलि । ४० ग. आए ।

१६६. डंबर — समूह । जलूस — सज्जित, प्रकाशमान । मदमस्त — मदोन्मत्त । आवधूसै — अस्त्र-
शस्त्रसे । कड़ाजूड़ — सुसज्जित । ढळकती — लुढ़कती हुई । भेलै — डामते हैं, रोकते हैं ।
जमरामसै — यमराजसे । स्यामके — स्वामीके, मालिकके । सहाय — सहायक, मदद करने
वाला । किवाड़ = कपाट = रक्षक । निवास — रहनेका स्थान । दीनके — गरीबके ।
जंगूके — मुठ्ठोंके । जैतवार — विजयी । अजानवाह — आजानुवाह । दरगाह — दरबार ।
खिजमतदार — सेवक । गण गंधप गानधारी — गंधर्व-गायिकाओंके गण ।

जिस बखत^१ स्त्री महाराजा^२ * केसरिया^३ ऊंच पौसाक पहरि^४ खांधी पाघ पेच वणवाय^५ । जंवहरके^६ सिरपेच^७ सिर सोबा^८ जग जोति जगाय^९ । मणि माणिक हीर पत्त्रे^{१०} सोव्रन संयुगत^{११} मोनेके^{१२} कांम पाघ पर जंवहरी^{१३} किलंगी धरी सो साजोतिकी सिखा परि^{१४} मांनू नवग्रहूँनै^{१५} पंकति करी मोतियांका^{१६} तुररा^{१७} रतनपेचूँके वीच ऐसा^{१८} दरसाए^{१९} । मांनू नवग्रहूँनै^{२०} पास तारागण आए^{२१} । सो तारागण कैसा । कृतका^{२२} नक्षत्रका^{२३} जोतिगण जैसा । जिस^{२४} बखत सिर सोभाके हरवळका मोती पाघके जवाहरके ऊपर तारीफसू^{२५} भोला खावै^{२६} । जिसका जबाब^{२७} इस वजै कहता है जो आलमके विच^{२८} इस भूपतिकी जोड़ और भूपति कोई नहीं^{२९} आवै । जिसके^{३०} देखेसं^{३१} होत सब हिंदुस्थानका^{३२} आघ । ऐसी सोभा से विराजांन स्त्री महाराजा^{३३} अभमालकै सीस^{३४} पाघ ।

१ ख. ग. बखत । २ ग. माहाराज । ३ ख. केसरियाँ ।

ख. प्रतिमें यहांसे आगे— 'रूप हरितास' है ।

४ ख. ग. पहर । ५ ख. ग. वणाय ।

* यहां पर ग. प्रतिमें 'हीरुके' शब्द मिला है ।

६ ग. सिरपेच । ७ ख. ग. सोभा । ८ ख. ग. पन्ने । ९ ख. संयुगत । १० ख. मोनेके । ग. मोनेकै । ११ ख. ग. जवहरी । १२ ख. पर । १३ ख. नवग्रहूँनै । ग. नवग्रहूँनू । १४ ख. ग. मोतीयूँका । १५ ग. तुररा । १६ ख. ग. अंसा । १७ ग. दरसाए । १८ ख. नवग्रह । १९ ग. आए । २० ख. कृतिका । ग. कृतका । २१ ग. नषित्रका । २२ ख. ग. जिम । २३ ख. ग. तारीफसे । २४ ग. खांवै । २५ ख. जबाव । ग. जबाव । २६ ख. ग. वीच । २७ ख. न । ग. नां । २८ ख. जिसकै । २९ ख. देखेसं । ३० ख. ग. हिंदुस्थानका । ३१ ख. महाराज । ग. माहाराजा । ३२ ख. सिर । ग. सिरि ।

१६६. ऊंच—श्रेष्ठ, बढ़िया । खांधी—खांधेवाली, तिरछी । पाघ—पगड़ी । जंवहरके—जवाहरातके । सिरपेच—पगड़ी पर धारण करनेका आभूषण विशेष । जग जोति—चमक, दमक । संयुगतकी—संयुक्तकी, सहितकी । किलंगी—सिरकी पगड़ी पर धारण करनेका आभूषण विशेष । साजोतिकी—प्रकाश या ज्योतिष्युक्तकी । तुररा—शिरपर पगड़ीके साथ धारण करनेका आभूषण विशेष । रतनपेचूँके—शिरमें पगड़ीके साथ धारण करनेका आभूषण विशेष । कृतका—छः तारों वाला सताईस नक्षत्रोंके अंतर्गत तीसरा नक्षत्र, कृतिका । हरवळका—आगेका । भोला खावै—शोभायमान होता है । आलमके—संसारके । विच—में । जोड़—समानता । आघ—सम्मान, प्रतिष्ठा ।

केसरका^१ तिलक ऊदार^२ भळहळतै भाल पर वणवाय । अवीध^३ मोतियूके^४ अक्षत^५ चढ़वाये^६ । सो कैसै^७, मांनूं महाराजाका^८ जस दिगबिजय^९ करि रवि-किरण अरौहि^{१०} जगजीत होय स्त्री कमळि आए^{११} । आबदार ऊजळ^{१२} बडवार मुकताफल सोव्रन लाल संजुति^{१३} रूपवंत स्रवणूवीच^{१४} राजै । सो कैसै^{१५}, मांनूं च्यार नक्षत्र^{१६} दोइ^{१७} रूप धरि मंगळ बाळ-अवसता धरि ब्रह्मपतिकी^{१८} बाहु^{१९} कुंडली^{२०} कीला^{२१} करंत छाजै । मुगतफल^{२२} माणिकूकी कंठी सोभै माळोका विसतार^{२३} । सो^{२४} कैसै, मांनूं मिल^{२५} चली सरस्वती गंगाकी धार । और भी^{२६} भांति भांतिके सासत्र गाए^{२७} जैसै^{२८} राजूका^{२९} वणाव । जोतिके^{३०} जहूर^{३१} दिनकरका^{३२} दरसाव । जरकंबर^{३३} धुगधुगी नवग्रही विराजै^{३४} । जहांगीर^{३५} हथ सांकळै^{३६} सोभाका रूप छाजै^{३७} ।

१ ख. केसरिका । २ ख. ग. उदार । ३ ग. अवीध । ४ ख. ग. मोतियूके । ५ ख. अक्षित । ग. अक्षित । ६ ख. चढ़वाए । ग. चढ़वाए । ७ ख. ग. कैसै । ८ ख. माहाराजाका । ९ ग. दिगबिजय । १० ख. ग. अरौहि । ११ ग. आए । १२ ख. उज्जल । ग. उज्जल । १३ ख. संजुगति । ग. संयुगति । १४ ख. ग. स्रवणवीच । १५ ग. कैसै । १६ ख. ग. नक्षत्र । १७ ख. ग. दोय । १८ ग. ब्रह्मपतिकी । १९ ख. बाहु । ग. बाहु । २० ख. ग. कुंडल । २१ ख. कीला । २२ ख. मुकताफल । २३ ग. विस्तार । २४ ख. सा । २५ ख. ग. मिल । २६ ग. की । २७ ग. गाए । २८ ख. जैसै । २९ ख. राजूके । ग. राजूके । ३० ग. जोतिके । ३१ ख. ग. जहूर । ३२ ग. दिनकरका । ३३ ख. ग. जरकंबर । ३४ ग. विराजै । ३५ ख. ग. जहांगीर । ३६ ख. ग. सांकले । ३७ ख. ग. साजै ।

१६६. उदार — विशाल । भळहळतै — देविप्यमान । भाल — ललाट । अवीध — बिना छेद किया हुआ । रविकिरण — सूर्यकी किरणों । अरौहि — चढ़कर । आबदार — कांतियुक्त । बडवार — बड़ा (?) । मुकताफल — मोती । सोव्रन — सुवर्ण, सोना । लाल — माणिक्य नामक रत्न । संजुति — संयुक्त । स्रवणूवीच — श्रवणमें, कानमें । राजै — शोभा देते हैं । सो कैसै, मांनूं ... कीला करंत छाजै । मानों चार नक्षत्र बालावस्थामें दो मंगलके साथ बृहस्पतिकी बाहुमण्डलीमें क्रीड़ा कर रहे हैं । बृहस्पतिका रंग पीला, वह सोनेकी बालीका रंग है । मुक्ताफल स्वतः नक्षत्रके समान हैं, और लाल मंगल है । जहूर — जुहूर, प्रकाश । दिनकरका — सूर्यका । दरसाव — दर्शन । जरकंबर — (?) । धुगधुगी — कंठमें धारणकरनेका आभूषण विशेष । नवग्रही — आभूषण विशेष । जहांगीर...सांकळे — एक प्रकारका हाथका आभूषण विशेष । छाजै — सुशोभित होते हैं ।

हीरे^१ माणिक पत्नीसौ^२ जड़ित कनक^३ मुद्रका^४, कैसी ? जगजीत
 विरदूकी^५ रूप पंकति जैसी । अैसे^६ भूखणूसू जुगति पन्नूके^७
 मोहरे^८ जूसै^९ कम्मर^{१०} पेचकसि^{११} । जवह(र)के साज सू जमदढ़
 खग कसि । बुलगाखूकी उदगार चौतरफकू बसी । अहमंदनगरका
 बालाबंध^{१२} भल्लूस^{१३} पल्लेदार । सोवनी तारूकी^{१४} लाज वरकी^{१५}
 बेलूकी तरह कौरका^{१६} विसतार । गुलअनारका हौद^{१७} गुल-
 नाफरमांके दीदार कारचौभके^{१८} बूटे^{१९} जरीके तार । अैसे
 बालाबंधके^{२०} दहू^{२१} पल्ले^{२२} बरोबर^{२३} करि केसरिए^{२४} सिरपाव
 ऊपरि^{२५} वणाए^{२६} । कसूबल बालेके^{२७} पर^{२८} पेच पै ठहराए^{२९} ।
 अैसे भल्लूसके साज सू महाराजा^{३०} । अभमाल^{३१} पांन कपूर
 अरौगाए^{३२} । जदी गुलाबी अंतर^{३३} पहिरि करि धूप धारे । खमां^{३४} खमां

१ ख. ग. हीरे । २ ख. पनासो । ३ ख. ग. कनक । ४ ख. ग. मुद्रिका । ५ क. ग.
 विरदूकी । ६ ख. अैसे । ७ ख. पन्नूके । ग. पन्नूके । ८ ख. मोहरे । ९ ग.
 जूसै । १० ख. कम्मर । ११ क. पेचकसि । १२ ख. बालाबंध । १३ ख. भल्लूस ।
 १४ ख. ग. तारूकी । १५ ख. वरजका । १६ ख. ग. कौरका । १७ ख. हौद । १८ ख.
 कारचौभके । ग. चौभके । १९ ग. बूटे । २० ख. ख. बालाबंधके । ग. बालाबंधके । २१ ख. ग.
 दोऊ । २२ ख. पले । २३ ख. बरोबर । ग. बरोबरि । २४ ख. केसरीये । ग. केसरीये ।
 २५ ख. ग. ऊपर । २६ ख. वणाए । ग. वणाए । २७ ख. बालेके । २८ क. घर ।
 २९ ग. ठहराए । ३० ख. महाराजा । ३१ ग. श्रीअभमाल । ३२ ख. अरौगिए ।
 ग. अरौगिए । ३३ ग. अंतर । ३४ ख. खमां खमां । ग. खमां खमां ।

१८६ कनक — सुवर्ण, सोना । मुद्रका — मुद्रिका । विरदूकी — विरदूकी । पंकति — पंक्ति, कतार ।
 संजुगति — संयुक्त, सहित । पन्नूके — परोजेकी जातिका हरे रंगका एक रत्न विशेष ।
 मोहरे — जोड़ । पेचकसि — शस्त्र विशेष । जमदढ़ — कटार, तलवार । बुलगाखूकी —
 कपड़ा विशेषकी । उदगार — (?) । चौतरफकू — चारों ओरका । बालाबंध —
 एक प्रकारका कपड़ा विशेष जो चांचदार पगड़ी पर लपेटा जाता है । कसूबल —
 लाल । बालेके — पगड़ी विशेषके । पेच — पगड़ीकी लपेट । भल्लूसके — सजावटके, समूहके ।
 साज — सजावट, सजा । अभमाल — अभयसिंह । अरौगाए — खाए । जदी — जब ।
 धूप — तलवार । खमां खमां — राजा महाराजा व बड़े सरदारके आगे उच्चारण
 किया जाने वाला शब्द जिसका अर्थ होता है—“आप समर्थ हैं, हमारे अप्रशय क्षमा
 करने वाले हैं ।”

हाके^१ होते^२ अंदरसे^३ बाहर^४ पधारे^५ । तिस बखत सब दरबारके लोगूनै^६ अदाब बजाय सनमुख आय मुजरा किया^७ । दवागीरूनै दुजराजूनै^८ आस्त्रीवाद^९ दिया^{१०} । चौपदारूके हमत्त^{११} न[ज]रदौलतूकी^{१२} हाक । पलकूं हाथूसै कुरब करि^{१३} दुवा^{१४} मुसताक । द्वजराजूकी^{१५} तरफ नजरका इसारा दिया^{१६} । दोऊं कर जोड़िके^{१७} नमसकार किया । औसी जळूस कियै^{१८} मदमस्तज्यू^{१९} पाव धरता तखतकी तरफ हल्ले । दोऊ^{२०} भुजदंडूसै^{२१} आसमानका तोल करता तिस^{२२} बखतका स्त्री महाराजा^{२३} 'अभमाल'का वाणिक देखै^{२४} ही वणि आवै । जेता तुजक^{२५} तेता किस ही सौं कहणेमें^{२६} नावै^{२७} । ऐसे मगजसौं^{२८} आय तखतपरि^{२९} विराजै^{३०} । चौसरै^{३१} चमर होय^{३२} इंद्रा सा छाजे^{३३} ।

१ ग. हाके । २ ख. होते । ग. होतें । ३ ख. अंदरसै । ग. अंदरसें । ४ ख. बाहिर । ग. बाहरि । ५ ग. पधारे । ६ ख. लोगूनो । ग. लोगोनै । ७ ख. ग. कीया । ८ ख. दवाद्विजराजूनै । ग. दवाद्विजराजूनै । घ. दुजराजूनै । ९ ग. आस्त्रीवाद । १० ख. ग. दीया । ११ ख. ग. हमतमन । घ. हमजर । १२ ख. दौलतूकी । ग. दौलतूकी । १३ ख. ग. कर । १४ ख. हुआ । ग. हुआ । १५ ख. द्विजराजूकी । ग. द्विजराजूकी । १६ ख. ग. दीया । १७ ख. ग. जोड़के । १८ ख. कीयै । ग. कीयें । १९ ख. मदमस्तजू । ग. मदमस्तज्ये । २० ग. दोऊं । २१ ख. भुजदंडोसो । ग. भुजदंडोसो । २२ ख. ग. जिस । २३ ख. ग. महाराजा । २४ ख. देखै । ग. देखें । २५ ख. ग. तुजक । २६ ख. ग. कहणमो । घ. कहणमें । २७ ग. नावै । २८ ख. मगजसौं । ग. मगजसो । २९ ख. ग. तखत पर । ३० ख. विराजे । ग. विराजै । ३१ ख. ग. चौसरे । ३२ ख. ग. होइ । ३३ ख. छाजे ।

१६६. अदाब - मान, प्रतिष्ठा । मुजरा - अभिवादन, सलाम । दवागीरूनै - दुआ मांगने वालोंने, शुभचिंतकोंने, दुआगीरोंने । दुजराजूनै - द्विजराजोंने, ब्राह्मणोंने । आस्त्रीवाद - आशीर्वाद । चौपदारूके - वह नौकर जिसके पास चोब या आशा हो, चोबदारके । हमत्त - समान, तुल्य, हमता अथवा महतंग जिसका अर्थ अनुकूल, मुआफिक । दौलतूकी - नजरदौलतके लिये प्रयोग किया गया है । हाक - आवाज । दुवा - प्रार्थना, दुआ । मुसताक - बहुत अधिक इच्छा या कामना रखने वाला, मुस्ताक । द्वजराजूकी - द्विजराजोंकी, ब्राह्मणोंकी । जळूस - सिंहासनारोहण, धूमधामकी सवारी, समारोह । दोऊं - दोनों । हल्ले - दोनों गतिमान हुए, चले । अभमालका - अभय-सिंहाका । वाणिक - शोभा, कांति, सजावट । तुजक - सजावट, प्रबंध, वैभव । मगजसौं - राबसे । विराजै - बैठे, आरूढ़ हुए, शोभायमान हुए । चौसरं - चारों ओर । चमर - सुरा गायके पूछके बानोंके गुच्छे जो काठ, सोने, चांदी आदिके दंडमें लगाये जाते हैं, चँवर ।

जळ चादरुंकी धरहर तमासेका विसतार^१ । सो कैसी, वंकूठसै^२ छूटी
जाणि गंगा हजार धार । छछोहै^३ आव गहर फौहारा^४ छूटै^५ ।
जमीसे^६ मेघ जाणि आसमानसे^७ जूटै^८ । जिस वखतका^९ तेज प्रताप^{१०}
मेरगिर-सा दरसावै^{११} । अनि रावराजूके बूते कंकरसे नजर आवै^{१२} ।
दऊं^{१३} मसल^{१४} बहादरुंकी^{१५} कोरबंधी^{१६} * प्रोहिराज व्यास कवि-
राज पंडितराज विराजै^{१७} । वजीर^{१८} खानसांमां बगसी अपने-अपने मुरात-
बके पाये^{१९} पर छकपूर छाजै^{२०} । खवास पासवान सफर^{२१} समसेर जड़ाऊ
पांनदांन लिए^{२२} खड़े^{२३} मो^{२४} कैसा^{२५} । अनि राव अनि राजूके अंग भोळै
पड़ै अंसा^{२६} । दरियावका^{२७} पूर छभाका दरसाव । पोसतकी^{२८} बाड़ी
फुलवादका^{२९} वणाव । अंसे^{३०} नरलोकके वीच^{३१} नरियंद^{३२} 'अभेमाल'^{३३}

१ ग. विस्तार । २ ख. ग. वंकूठसे । ३ ख. छछोहे । ग. छछोहै । ४ ख. फौहारे । ग.
फौहारें । ५ ख. छूटे । ग. छुटे । ६ ख. जमीसे । ग. जमीसं । घ. जमीसैं । ७ ख.
आसमानसैं । ग. आसमानकौं । ८ ख. जूटे । ग. तुट्टे । ९ ख. ग. वषतका । १० ख.
ग. परताप । ११ ग. दरसावै । १२ ग. आवैं । १३ ख. दोऊं । ग. दोऊ । १४ ख.
ग. मसल । १५ ख. बाहादरुंकी । ग. बाहादरुकी । १६ ख. ग. कोरबंधी ।

* यहाँ पर निम्न पंक्तियां ख. तथा ग. प्रतिमें और मिली हैं—

‘चित्र का सायाळ । बाजूसै बाजू लगे ढालू सनमुखकी कोरबंधी प्रोहिराज ।
१७ ग. विराजै । १८ ख. वजीर । ग. वझीर । १९ ख. पाए । ग. पाए । २० ख.
छाजै । २१ ख. सपर । २२ ख. लीयें । ग. लीयें । २३ ख. खड़े । २४ ख. सो ।
२५ ख. ग. कैसे । २६ ख. अंसे । ग. अंसैं । २७ ख. दरियावका । ग. दरीयावका ।
२८ ख. पोसतकी । २९ ख. फुलवादिका । ग. फूलवादका । ३० ख. ग. अंसे । ३१ ख.
ग. नरलोकके वीच । ३२ ख. ग. नरियंद । ३३ ख. ग. अभेमाल ।

१८६. चादरुंकी — पानीकी चौड़ी धारा जो ऊपरसे गिरती हो । धरहर — ध्वनि विशेष ।
छछोहै — स्वच्छ, निर्मल । मेरगिर-सा — सुमेरु पर्वतके समान । दरसावै — दिखाई
देते हैं । बूते — शक्ति, बल, सामर्थ्य । कंकरसे — किकरसे, सेवकसे । वऊं — दोनों ।
मसल — पंक्ति । कोरबंधी — पंक्तिबद्ध । मुरातबके — प्रतिष्ठाके । छक — शोभा ।
छाजै — शोभायमान होते हैं । खवास — राजाओं और रईसोंके खास खिदमतगार ।
पासवान — राजा महाराजाओंके पास निव्य रहने वाले । सफर — (?) । भोळै —
भ्रांति । दरियावका — समुद्रका । पूर — पूर्ण । छभाका — सभाका । दरसाव —
दृश्य । बाड़ी — बाटिका, उपवन । पोसतकी — अफीमका पोषा । फुलवाद — फूल
लगने वाले पोषे या पुष्प । वणाव — शोभा । नरियंद — नरेन्द्र, राजा । अभेमाल —
अभयसिंह ।

राजै । जिसकी तारोफ सुणि^१ सुरलोकके बीच^२ सुरियंद^३ लाजै^४ । जिसका मयांना^५ इस^६ नरयंदनै^७ अनेक^८ गज कविराजाँको^९ दिया^{१०} । उस^{११} सुरयंदसै^{१२} अनेक गज^{१३} औरापति दिया^{१४} न^{१५} गया । लालच करि राखि लिया^{१६} । नरलोकमें^{१७} नरियंद^{१८} सांसण बहौ^{१९} बगसाए^{२०} । सुरलोकमें^{२१} सुरियंदके दिये^{२२} सांसण सुणवेमें^{२३} न आए^{२४} । इससै 'अभमाल'का प्रताप देखि इंद्रका गरब^{२५} भजै^{२६} । नरइंदकी^{२७} कोरति सुणि सुरिइंद्र^{२८} यौ^{२९} लजै^{३०} । नरियंदका^{३१} प्रताप सुणि समुद्रका गरब^{३२} जावै । इसकी जोड़ उससै^{३३} करणमें^{३४} नावै^{३५} । उसके^{३६} हीरे पन्ने माणिक मोती उसहीमें^{३७} रहै । इसके हीरे पन्ने माणिक मोती रीभूमें^{३८} सब^{३९} आलम लहै^{४०} । जिसका राज तेजकी करौ तारीफ सो^{४१} कैसा । भाळाहळ चक्र सुदरसन^{४२} जैसा । जिसके तेज नजर^{४३}

१ ख. सुणि । २ ख. ग. सुरलोककेबीच । ३ ख. ग. सुरियंद । ४ ग. लाजै । ५ ख. माईना । ग. माईना । ६ ग. ईस । ७ ख. नरिइंदनै । ग. नरियंदनै । ८ क. नेक । ख. अनेक । ९ ख. कविराजाँको । ग. कवीराजाँको । १० ख. ग. दीया । ११ ख. उस । ग. और । १२ ख. ग. सुरियंदसै । ग. सुरयंदसै । १३ ग. गज । १४ ख. ग. दीया । १५ ख. मे । १६ ख. ग. लीया । १७ ख. नरलोकमें । ग. नरलोकमें । १८ ख. नर-इंद । ग. नरयंद । १९ ख. ग. बहौ । २० ख. बगसाण । ग. बगसाए । २१ ख. सुर-लोकमें । ग. सुरलोकमें । २२ ख. दीये । ग. दीए । २३ ख. सुणवेमें । ग. सुणवेमें । २४ ग. आए । २५ ख. गरब । २६ ग. भजै । २७ ख. ग. नरियंदकी । २८ ख. ग. सुरियंद । २९ ख. यौ । ३० ख. लजै । ग. लज्जे । ३१ ख. ग. नरइंदका । ३२ ख. ग. गबै । ग. गबे । ३३ ख. उससै । ग. उससै । ३४ ख. करणमें । ग. करणमें । ३५ ख. ननावै । ग. ननावे । ३६ ग. उसही । ३७ ख. उसहीमें । ग. उसहीमें । ३८ ख. रीभूमें । ग. रीभूमें । ३९ ख. सब । ४० ग. लहै । ४१ ख. ग. तारीफ सो । ४२ ख. ग. सुदरसन । ४३ ग. नर ।

१६६. राजे — शोभायमान होते हैं । सुरियंद — सुरेन्द्र, इन्द्र । मयांना — मतलब । सुरयंदसै — इन्द्रसे, सुरेन्द्रसे । औरापति — ऐरावत नामक इन्द्रका हाथी । सांसण — पुरस्कारमें दी गई जागीर, शासन, राजाकी दान की हुई भूमि । अभमालका — अभयसिंहका । प्रताप — ऐश्वर्य, वैभव, तेज । भजै — नष्ट होते हैं । नरइंदकी — नरेन्द्रकी, राजाकी । यौ — ऐसे । नरियंदका — नरेन्द्रका, राजाका । जोड़ — सपानता, बराबर । रीभूमें — दानमें, पुरस्कारमें । आलम — संसार । भाळाहळ — देदीप्यमान । चक्र सुदरसन — सुदर्शन चक्र ।

आगै^१ मदमस्त गजराज आवै सो मदको^२ छाडि अरु सिरकू^३ नमावै ।
 गिरवरूके^४ वीचमे^५ सांमल^६ रहत सींह^७ अरु^८ गाय । पांणी भी पीयत
 एक ठौड़ एकठे^९ आय^{१०} । रंकसै^{११} राव जोरावर करणै^{१२} न पावै ।
 पंखीकी परसेतो बाज दहसति खावै^{१३} । अैसे^{१४} तेजपुंज महाराजा^{१५}
 स्त्री 'अभमाल' सिरै^{१६} दीवाण^{१७} तखतपर खुसबखतीसै^{१८} विराजे^{१९} ।
 छत्र चमर धरै^{२०} । जिस बखत अपणै^{२१} अपणै किसबूके^{२२} हुन्नरकी^{२३}
 तारीफ सब लोग मालूम करै । जिस बखत^{२४} बेवाहबाज^{२५} गुणी-
 जणूनै^{२६} सुखंका^{२७} अलाप^{२८} किया^{२९} * । सप्त सुर तीन ग्राम इकवीस
 मूरछना^{३०} अष्ट^{३१} ताल गुनचास कोटि तांनूं संजुगति^{३२} छ राग
 छतीस^{३३} रागणीका भेदग जिन्नूने बखत^{३४} प्रमाण उचार^{३५} कियै^{३६} ।
 मांनूं सबके दिलूं विच^{३७} मोहनीमंत्र वसीकरण कियै^{३८} । स्वर

१ ग. आगै । २ ख. ग. मदकू । ३ ग. सिरकौ । ४ ख. ग. गिरवरौ । ५ ख. ग. वीचिमै । ६ ख. ग. सांमिल । ७ ख. ग. सेरकू । ८ ख. ग. और । ९ ख. इक्कठे । १० ग. आये । ११ ग. रंकसै । १२ ख. करणे । १३ ग. खावै । १४ ख. ग. अैसे । १५ ख. ग. महाराजा । १६ ख. ग. सरै । १७ ग. दीवाणि । १८ ख. ग. खुसिबखत । १९ ग. विराजै । २० ख. धरे । २१ ग. आप आपणै । २२ ख. किसव । ग. किसब । २३ ख. हुन्नर । ग. हुन्नर । २४ ख. वषत । २५ ख. बेवाहबाज । ग. बेवाहबाज । २६ ख. जणुनै । २७ ख. सुखं । २८ ख. आलाप । २९ ख. ग. कीया ।

*यहासे आगे ख. तथा ग. प्रतियोंमें— 'सो कंसै' मिला है ।

३० ख. मूर्छना । ग. मुछना । ३१ ख. ग. अष्ट । ३२ ख. संजुगत । ३३ ख. ग. छपंच । ३४ ग. वषत । ३५ ख. ग. उच्चार । ३६ ख. ग. कीया । ३७ ख. ग. दिल वीचि । ३८ ख. ग. कीया ।

१६६. गिरवरूके — गिरवरौके, पर्वतोंके । सांमल—साथ । एकठे — एकत्रित । रंकसै — गरीबसे । राव — संपन्न, धनाढ्य राजा । पंखीकी — पक्षीकी । सेती — सहित, से । दहसति — दहस्त, भय, आतंक । स्त्री अभमाल — श्री अभयसिंह । सिरै दीवाण — प्रमुख दीवान । खुसबखतीसै — हर्षपूर्वक । बेवाहबाज — (?) । गुणीजणूनै — गवैयों, गायकों । सुखंका — स्वरोंका । अलाप — आलाप । नोट—सप्त सुर तीन ग्राम आदि संगीत शब्दोंके लिए परिशिष्ट देखें । संजुगति — सहित । भेदग — भेदज्ञ या रहस्य जानने वाला ।

वाजंत्रका भेद कहि^१ दिखाय सो^२ कैसे खडज^३ रखव^४ गंधार मधम^५
पंचम धईवंत^६ निखाख^७ सप्त^८ सुरके अलाप करि कोकिलुंकी बाणीसै^९
बोलते है जिसके आनंदते^{१०} इत्यादिक नरुंके^{११} मन मोह बसि^{१२} हुवा
तिसका अचिरज कैसा । देवतूके मन भूलते डोलते^{१३} हैं अदंगूके परन
धौलकूके टिकौर^{१४} । सुरवीणूके^{१५} भणहण तंबूरुंके^{१६} घोर ।
तालूकी भूमक भंभरुंके^{१७} भणकार । कामके घुघर^{१८} जैसै^{१९} जंत्रके^{२०}
तार । पिनाकूका^{२१} परवेज स्त्रीमंडलूका सवाद । रंगकी वरखा
अलगौजूके^{२२} नाद । असी भांति अनेक^{२३} उछवसै^{२४} गावते है^{२५}
तारीफकी तांन आसमानसे^{२६} लावते^{२७} है । असा मूरतिवंत^{२८} रागका
थाट रचि जरकस^{२९} जंवहरुंके^{३०} इनांम^{३१} पाए^{३२} । जिस^{३३} बखतमैं
पंडितराजनै^{३४} अपने^{३५} कसबका हुंनर करि दिखाए^{३६} । सो पंडित^{३७}

१ ख. ग. कहै । २ ग. सो । ३ ग. खडज । ४ ग. रखव । ५ ग. मधम ।
६ ख. धईवंत । क. वंत । ७ क. निखास । ८ क. प्रसुर । ग. ऐ सप्त । ९ ख. ग.
वांणीसै । १० ग. भरुंके । ११ ग. बसि । १२ ख. डोलतै । ग. डोलते । १३ ख.
टिकोर । ग. टिकोर । १४ ख. सुरवीणूके । ग. सुरवीणके । १५ ख. तंबूरुंके । ग. तंबूरुंके ।
१६ ख. भंभरुंके । ग. भंभरुंके । १७ ख. ग. घुघर । १८ ख. ग. तैसे । १९ जंत्रको ।
२० ख. पिनाकूको । २१ ख. ग. अलिगुंजु । २२ ख. अनेक । ग. अनेक । २३ ख.
उछव । ग. उछव । २४ ग. हें । २५ ख. ग. आसमानसे । २६ ख. ग. लावते ।
२७ ख. ग. मूरतिवंत । २८ ग. जरकसि । २९ ख. ग. जवहरु । ३० ख. ग. अनांम ।
३१ ग. पाए । ३२ ख. ग. तिस । ३३ ख. ग. पंडितराजूनौ । ३४ ग. अपने ।
३५ ग. दिखाए । ३६ ख. ग. पंडित ।

१६६. वाजंत्रका - वाद्योका । खडज - षडज । रखव - शृषभ । गंधार - गांधार । मधम -
मध्यम । पंचम - सात स्वरोंमें पाँचवाँ स्वर । निखाख - संगीतके सात स्वरोंमेंसे
अन्तिम स्वर निषाद । अचिरज - आश्चर्य । अदंगूके - मृदंगोंके । धौलकूके -
चमड़ेका मंडा वाद्य विशेषका । टिकौर - घंटा । सुरवीणूके - वाद्य विशेषके ।
भणहण - ध्वनि विशेष । तंबूरुंके - वाद्य विशेषके । घोर - ध्वनि, आवाज ।
तालूकी - तालकी । भूमक - ध्वनि विशेष । भंभरुंके - त्रिव्योंके पैरोंमें धारण
करनेका आभूषण विशेषकी । भणकार - ध्वनि विशेष । घुघर - घुंघरू । जंत्रके -
वीणा नामक वाद्यके । पिनाकूका - वाद्य विशेषका । परवेज - (?) । स्त्रीमंडलूका -
वाद्य विशेषका । सवाद - स्वाद, आनन्द, रसानुभूति । अलगौजूके - वाद्य विशेषके ।
नाद - ध्वनि, आवाज । थाट - ठाठ, मूल स्वर ।

कंसे^१। चौबीसमां^२ अवतार वेदव्यास जैसे। सो कैसे बाळ-वय विद्या^३ बुधि सनकादिकूं जैसे। सुखदेवसे^४ तरुण त्रिध^५ सो वेदव्यास तैसे। त्रिकालग्यानंदरसी^६ निज^७ ब्रमकूं^८ पहिचानै^९। भूत, भवस्त^{१०}, वरतमान जुगतिसौं^{११} जाणै^{१२}। च्यार वेद नौ व्याकरण खट सासत्रूके विनाण। पिंडित^{१३} विद्यामें^{१४} पारावार जाणै^{१५} नवदूण^{१६} पुराण। सो पिंडितराज^{१७} स्त्री महाराजाकी^{१८} कीरति प्रतापका वरणणका^{१९} सिलोक पढ़ते^{२०} हैं जिस सिलोकांका^{२१} आदि प्रबंध अष्ट अखिरूंसे^{२२} लेकर इकीस अक्षरूं^{२३} लग पद वणावणैका^{२४} ठहराव च्यार^{२५} पद हुवै^{२६} एक सिलोकाका^{२७} वणाव सो बतीस अखिरूंसे^{२८} लेकर^{२९} चौरासी अखिरूंलंग लही^{३०} इस ऊपर^{३१} होय सो^{३२} दंडक कहियै^{३३}। तिसमें^{३४} फिर^{३५} भेद बहौत सालंकार अठार वरणण^{३६} मात्राका विचार।

१ ख. कंसे। २ ख. चौबीसमों। ३ ख. बिद्या। ४ ख. ग. सुखदेव। ५ ख. ग. वृद्ध। ६ ख. ग. त्रिकालग्यानंदरसी। ७ ग. नि। ८ ख. ग. ब्रह्मकूं। ९ ख. ग. पहिचानै। १० ख. भविष्य। ग. भाविषि। ११ ग. जूगतिंसू। १२ ख. ग. जानै। १३ ख. ग. पंडित। १४ ख. ग. विद्यामें। १५ ग. जाणै। १६ ग. नवदूण। १७ ख. ग. पंडितराज। १८ ख. ग. महाराजाकी। १९ ख. ग. वर्णनका। २० ख. पढ़ते। २१ ख. सिलोकका। ग. सिलोकूका। २२ ख. अखिरूंसे। ग. अखिरूंसे। २३ ख. ग. अक्षर। २४ ख. ग. वणावणैका। २५ ख. चार। २६ ग. हुवै। २७ ख. ग. इलोकका। २८ ग. अखिरूंसे। २९ ग. लेकर। ३० ख. ग. लहीये। ३१ ख. उपर। ग. उपरांत। ३२ ग. होईसो। ३३ ख. ग. कहियै। ३४ ख. तिसमें। ग. तिसमें। ३५ ख. ग. फिर। ३६ ग. वरणन।

१६६. बाळ वय — बाल्यावस्था। तरुण — युवा। त्रिकालग्यानंदरसी — तीनों ही कालोंको देखने वाला, त्रिकालज्ञ। ब्रमकूं — ब्रह्मको। भवस्त — भविष्यत् काल। विनाण — व्याख्या, विवेचन। पारावार — समुद्र, पूर्ण। नवदूण पुराण — अठारह पुराण। जिस सिलोकां पद वणावणैका ठहराव — संस्कृतके विद्वानोंमें परम्परासे प्रचलित रीति चली आ रही है कि वे वर्ण छंदोंमें सबसे छोटे आठ अक्षरोंके अनुष्टुप छंदसे लेकर सबसे बड़े स्रग्धरा छंद (२१ अक्षरोंके) तक प्रधानतासे व्यवहार करते आये हैं। उसीका यहां पर ग्रंथकर्ता कविराजा करणीदांनजीने वर्णन किया है। ठहराव — विश्राम, यति, ठहरनेका स्थान। दंडक — छंदोंका एक भेद, वह छंद जिसमें वर्णोंकी संख्या २६ से अधिक हो। बहौत — बहुत। सालंकार — अलंकारोंसहित, वह काव्य जिसमें अलंकार हों।

*जिसका तौए^१ देवविद्यासौ^२ कोई अंत न पार । * जिस वीच^३ फिर^४ कोई पंडितराज कविराज पूछै मनके वीच संदेह राखि तिस संदेहके मेटणैको^५ दोइ^६ ग्रंथ एक व्रतरतनाकर दूसरा^७ स्तुतबोध साखि^८ और फिरि एक^९ आगलै^{१०} पंडितका वणाया स्लोक^{११} इसही साखिका सो कहणैमें^{१२} आवै^{१३} साखि उही^{१४} सचची जौ^{१५} औरका कह्या वतावै सो कैसे^{१६} कहि दिखाय ।

श्लोक—*अनुष्टुप^{१७} अष्टपदं युक्तं^{१८}, इन्द्रवज्र इकादश^{१९} ।

ऊर्षिद्रवज्र^{२०} इकादश^{२१}, वसंततिलक चतुर्दशः ॥ १६६

पंच-दश^{२२} मालनी छंद, संक्षनी^{२३} सप्तदस्तथा ।

एकौनविंशतिसादूल^{२४}, इकव्रींसति^{२५} श्रगधरा ॥ १६७

एतौ प्रस्थावका सिलौक^{२६} आगिले पंडितका^{२७} कह्या साखिके

*यह पंक्तियां ख. प्रतिमें नहीं है ।

१ ग. तोऐ । २ ग. देवविद्यासो । ३ ग. जिसवीच । ४ ग. फिरि । ५ ग. मेटणैको । ख. मेटणको । ६ ग. दोय । ७ ख. ग. दूसरा । ८ ख. ग. श्रुतिबोधसाधि । ९ ग. ऐक । १० ख. ग. आगले । ११ ख. ग. श्लोक । १२ ख. कहणैमें । ग. कहणैमें । १३ ग. आवै । १४ ख. ग. वही । १५ ख. ग. जो । १६ ख. कैसे । ग. कैसे । १७ ख. अनुष्टुप । १८ ख. ग. युक्त । १९ ख. ग. एकादश । २० ख. ग. उपेन्द्रवज्र । २१ ख. ग. द्वादश । २२ ख. ग. पंचदश । २३ ख. ग. संक्षनी । २४ ख. एकोनविंशतिसादूल । ग. एकोनविंशतिसादूल । २५ ख. इक विसति । ग. इक विसती । २६ ख. श्लोक । ग. सलोक । २७ ख. ग. पंडितका ।

१६५. देवविद्यासो—संस्कृतका सा (?) ।

१६६. उपर्युक्त श्लोकका पाठ बहुविज एवं आशुकि स्वर्गीय पं० नित्यानन्दजी शास्त्री चांद बावड़ी, जोधपुरने निम्न प्रकारसे शुद्ध किया है—

अनुष्टुब् अष्टाक्षरं, एकादशाक्षी भवतीन्द्रवज्रा ।

(अष्टाक्षरं अनुष्टुब् वै) उपेन्द्रवज्रा लघुपुत्रिका सा ।

ज्येष्ठ वसन्ततिलकं तु चतुर्दशीर्णम् ।

पञ्चदशभिर्बर्णकैः स्थान् मालती संवीर्या ।

रसैरुद्वैच्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी ।

सूर्याश्वमेधसंस्तुतः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम् ।

अ-अर्थानां त्रयेण त्रिभुनियतियुता सधरा कीर्त्तितोयम् ॥ १

वास्ते^१ कहि^२ दिखाया ।

★

पंडतीवाचः काव्य^३

‘सिधाणां^४ च शिरोमणिं शिव इति^५ नागेस्तथेरावतं ।
देवाणां^६ च शिरोमणीं^७ रिति तथा चंद्रो भवे^८ चातुरं^९ ।
पंक्षीणां^{१०} गुरुडौ नगेस्तथै^{११} मेरुं^{१२} ।

सदा स्त्री कन्यां^{१३} सहान्

‘श्रा राज्ञं^{१४} च शिरोमणी^{१५} रभपति^{१६} वरवर्ति सर्वोपरि^{१७} ॥ १६६
नृपतिरभयसिंहश्च^{१८} तैद्रमेवांबभा^{१९} ।
सूस्वर^{२०} पई^{२१} वरतिसौ^{२२} मानिं^{२३} नमानं^{२४} ब्रधी^{२५} ।
रवि कुल क्रतु^{२६} जन्मा शत्रुहंतां^{२७} पृथिव्य^{२८} ।
जयतु सकल दाता धन्य धन्यौ नरेश^{२९} ॥ १७०

१ ख. ग. वासते । २ ग. कहै ।

‘यहां पर निम्न पंक्तियां ख. तथा ग. प्रतियोंमें और मिली हैं—

‘सो चातुरी कळा प्रवीण भूपालूके मन भाया । अब नवीन श्लोक महाराजका
जसबरननका पंडितराज राज छभाके बीच कहते हैं सो कैसे कहि दिषाय ।

३ ख. ग. श्लोक । ४ ख. ग. सिद्धानां । ५ ख. ग. शिव इति । ६ ख. ग. देवानां ।
७ ख. ग. शिरोमणि । ८ ख. ग. चंद्रो भवे । ९ ख. ग. चातुरं । १० ख. ग. पंक्षीणां ।
११ ख. नगेस्तथै । ग. नगेस्तथै । १२ ख. ग. मेरु । १३ ख. ग. कान्त्या । १४ ख.
राज्ञां । ग. राज्ञां । १५ ख. ग. शिरोमणि । १६ ग. रभपति । १७ ख. वरवर्ति
सर्वोपरि । १८ ख. नृपतिरभयसिंहश्च । १९ ख. ग. वाव । २० ख. ग. स्वरू । २१ ख.
ग. पई । २२ ख. मानो । ग. मानो । २३ ख. नामानं । २४ ख. ग. ब्रद्ध । २५ ख.
ग. कुत । २६ ख. ब्राह्म । २७ ख. ग. पृथिव्यां । २८ ग. नरेश ।

१६६. इन श्लोकोंका पाठ भी पूर्व वर्णित विद्वद्वर्य स्वर्गीय पं. नित्यानन्दजी शास्त्रीने
निम्न प्रकारसे शुद्ध किया है—

‘पण्डित उवाच काव्यम्—

सिद्धानां शिव इत्युदीरित, इतो नागेषु चैरावतो,
देवानां च शिरोमणस्तदनु वै चन्द्रश्चकोरे हितः ।
पक्षिष्वा ! गुरुडो जगत्सु बलवान् मेरुर्नगानां तथा ।
राज्ञां तत्त्वकाव्यविदामसावभयराट् वर्वर्ति सर्वोपरि ।

१७०. नृपतिरभयसिंहः श्रीन्द्र एवावभासी
स्वक-पर-समवर्ती मानिनां मानदायी ।
रविकुलकुतजन्मा शत्रुहन्ता पृथिव्यां
जयतु सकलदाता धन्यधन्यो नरेशः ॥

ऐसी विध^१ पंडितराज^२ चातुरच^३ कळा प्रवीण स्त्रिलोकूका^४ प्रबंध
अनेक विध^५ विमळ बांणीसै^६ उच्चरै^७ जिनूसै^८ रीभ^९ स्त्री माहाराज
कनक जग्योपवीत^{१०} चढ़ाया^{११} । कनक रजत द्रव्यसै^{१२} पूजा करै ऐसे^{१३}
उछाहके सरूपसू^{१४} देखि स्त्री माहाराजा^{१५} अर^{१६} चंडीके पुत्र चारण
बोलै^{१७} कविराजसो स्त्री माहाराजाकी छभाके^{१८} कैसे कविराजूकी
तारीफ कहि वताया^{१९} । आदि तौ अमरलोगके^{२०} अग्रकारी अमर-
लोगसै^{२१} आए^{२२}, आय स्त्री नारायण जस अमर करणैके काज नर-
लोग वीच^{२३} प्रथु^{२४} अवतार करिके^{२५} प्रगटाए^{२६} । जिसकी साखि स्त्री
भागवत महापुराणमें^{२७} गाए^{२८} । जहां जहां देवसभाका^{२९} वरणण^{३०}
किया^{३१} तहां तहां सिध^{३२} चारण कहि कहि वताए^{३३} ऐसे कुळके
कविराज, बुधके^{३४} दराज । चातुरी कळाकी सब आलमसै^{३५}

१ ख. ग. विधि । २ ख. ग. पंडितराज । ३ ख. ग. चातुर्ज । ४ ख. स्त्रिलोकूका ।
ग. स्त्रिलोकक । ५ ख. ग. विधि । ६ ख. ग. बांणीसै । ७ ख. ग. रीभ । ८ ख.
ग. जग्योपवित्र । ९ ख. ग. चढ़ाया । १० ख. ग. द्रव्यसै । ११ ख. ग. अरै ।
ग. अरै । १२ ख. ग. सरूपसू । १३ ख. माहाराजा । ग. माहाराज । १४ ख. ग. अर ।
१५ ख. बोले ।

*यहांसे आगे ख. तथा ग. प्रतियोंमें यह पंक्ति निम्न प्रकार है—

‘छभाके कविराज कैसे कविराजूकी तारीफ कहि वताया ।

१६ ख. वताय । १७ ख. ग. अमरलोककै । १८ ख. ग. अमरलोकसै । १९ ख. आए ।
२० ख. ग. नरलोक वीच । २१ ख. प्रथी । ग. प्रिया । २२ ख. धरिके । ग. धरिकै ।
२३ ख. प्रगटाए । ग. प्रगटाए । २४ ख. माहापुराणमें । ग. माहापुराणमें ।

३५यहांसे आगे इस पंक्तिमें— ‘वेदव्यास सुकदेव जैसूनें गाये ।

२५ ख. ग. गाये । २६ ख. ग. छभाका । २७ ख. वरणण । २८ ख. ग. कीया । २९ ख.
ग. सिद्ध । ३० ग. वताए । ३१ ख. बुद्धिके । ग. बुधिके ।

इस पंक्तिसे पहले निम्न शब्द ख. तथा ग. प्रतियोंमें और मिले हैं—

माहा सकतिके वरदाई ।

३२ ग. आलमसै ।

१७१. कनक—स्वर्ण, सोना । जग्योपवीत—यज्ञोपवीत । रजत—चांदी, रीप्य । अमर-
लोगके—स्वर्गके, अमरपुरके । अग्रकारी—अग्रगण्य । बुधके—बुद्धिके । दराज—
महान, बड़ा । आलम—संसार ।

अधिकाई^१ । स्यामधरमके सच्चे खुसबखतीके साहिब, सिंधुके^२ सभाव सरस्वतीके नाइब^३ । दातारूं सूरूके^४ दिलके^५ खुस्याळ^६ । सूंबू^७ कायरूंके हीयूके नाटशाल । दातार सूरू^८ राजूका^९ पुत्र जैसे^{१०} प्यारे । सूंबू^{११} कायर राजूको^{१२} विख जैसे^{१३} खारे । राजसभाके भूखण^{१४} दिलके उदार । विरदूके भारे समसेर बहादरूके^{१५} समसेरूके चित्तारे । अपणी^{१६} खाटी संपति जगतकूं खुलावै^{१७} । लख लहण सवालख विद्रवणका^{१८} विरद बुलावै^{१९} । वडे जंगूंमें^{२०} विरद बोल लोह^{२१} बाहूंकौं^{२२} जोम^{२३} चढ़ि^{२४} लड़ावै^{२५} । आप सबसै^{२६} आगूं वीजूजळ^{२७} वांहै^{२८} । दईवकै धणी और तीसरा न जाणै । असे^{२९} गुण अनेक कवि कहां^{३०} लग वखाणै । च्यार प्रकारकी जुगति सात रूपकूके विधान^{३१} । पंच प्रकारकी उगति^{३२} अस्ताविधान । तीन^{३३} प्रकारका गुण नव प्रकारकी रजधाणी^{३४} । *दोय प्रकारका काइब^{३५} रूप च्यार प्रकारकी

१ ख. अधिकाइ । २ ख. सिंधूके । ग. सिंधूक । ३ ग. नायब । ४ ख. सूरूके । ५ ग. दिलके । ६ ख. ग. खुस्याल । ७ ख. ग. सूंबू । ८ ख. ग. सूर । ९ ख. राजूका । ग. रामूका । घ. राजकूं । १० ग. जैसे । ११ ख. ग. सूंब । १२ ख. ग. राजकू । १३ ग. जैसे ।

*यहांमें आगे ख. तथा ग. प्रतियोंमें निम्न पंक्तियाँ मिली हैं—

‘सनेहके सद्भरण मजलसके मुसताक माहाराजके मनरंजन ।

१४ ग. बाहादरूके । १५ ख. ग. अपनी । १६ ग. बुलावै । १७ ख. ग. वीद्रवण । १८ ख. ग. बोलावै । १९ ख. ग. जंगूं । २० ख. ग. लोह । २१ ख. ग. बाहूंकौ । २२ ख. ग. जोम । २३ ख. वाटि । ग. चाढ़ि । २४ ग. लड़ावै । २५ ख. ग. सबसै । २६ ख. वीजूजल । ग. वीजूजळ । २७ ग. बावै । २८ ख. असे । २९ ग. कहां । ३० ख. ग. निधान । ३१ ख. ग. उकति । ३२ ख. तीन । ३३ ख. ग. रजधाणी ।

*रेखांकित पंक्तियाँ ख. प्रतिमें नहीं हैं ।

३४ ग. कायब ।

१७१. स्यामधरम—स्वामिभक्तिके । खुसबखती—समयकी अनुकूलता, समृद्धि । सिंधुके—समुद्रके । नाइब—नायब । खुस्याळ—खुश करने वाला । सूंबू—कृपणों, सूयों । हीयूके—हृदयके । नाटशाल—शत्रु थोड़ा । विरदूके—विरदके । भारे—समूह । समसेर—तलवार । खाटी—उपार्जन की हुई । लख—लाख । लहण—लेने वाला । सवालख—सवालख । विद्रवणका—देने वालेका । जंगूंमें—युद्धोंमें । जोम—जोश । वीजूजळ—तलवार । वांहै—प्रहार करते हैं । दईवकै—भाग्यके, प्रारब्धके । जुगति—युक्ति ।

बांणी । सात प्रकारका सर च्यारसूं लेके^१ चढ़ावै । आठमै^२ सरकी भूपट पर वे चौरासी बंध रूपकौके^३ सरिजणहार^४ । ऐसे कविराज जिस बखत^५ महाराजाकी^६ राजसभाके बीच^७ भांति भांति गुण गावते^८ हैं । विद्यावांणीके^९ हिलोहल^{१०} दरियावका^{११} सा हिलोहल^{१२} दरसावतै^{१३} हैं । जिस बखत^{१४} स्त्री महाराज^{१५} 'अभामाल' बोहतर^{१६} कळा चौदह विद्या विधान रूपकौकी^{१७} छाकसैं छाजै^{१८} आय स्त्री मुख^{१९} हुकम फुरमाया । जो आगै^{२०} चौरासी बंध रूपकाके^{२१} सब^{२२} भेद नवरस अलंकार संजुगति^{२३} अंतो^{२४} सब ही सुणबेमें^{२५} आया । पै एक^{२६} खट-भाखाकी जुदी जुदी रहस्यतौ^{२७} कहां कहां किसी किसी कवीसुर^{२८} पास दरसाई । पै ठौड़ करि खटभाखा किसीनै^{२९} न गाई^{३०} । जिससै^{३१} खट भाखा एक साथ कहिके^{३२} दिखावौ^{३३} । जिसी जिसी ग्रंथमें^{३४} वरणण किया^{३५} है तिसी तिसी ग्रंथकी^{३६} साखि लावौ^{३७} । अैसे^{३८} हुकम स्त्री महाराजनै^{३९} फुरमाए^{४०} सो कविराजनै^{४१} तीन सलांम करि सिरि ऊपर धारि^{४२} लिया^{४३} । हुकम माफक भाखा वरणणका^{४४} आरंभ किया^{४५} ॥ १७१

१ ख. ग. लेकै । २ ग. आठमैं ।

*यहांसे आगे ख. तथा ग. प्रतियोंमें निम्न पंक्तियां मिली हैं—

वैसा काम पड़े ती आगै नवरस षटभाटा । अकसौ अष्ट अलंकार अंसे ।

३ ख. रूपक । ग. रूपकूं । ४ ख. ग. सिरजणहार । ५ ख. बषत । ६ ख. महा । ७ ख. ग. बीच । ८ ख. जावते । ग. गावतै । ९ ख. ग. विद्यावांणीके । १० ख. हिलोहल । ग. हीडभोहल । ११ ख. ग. दरियावका । १२ ख. ग. होलोहल । १३ ख. है । १४ ग. बषत । १५ ख. ग. महाराजा । १६ ख. ग. बोहतर । १७ ख. ग. रूपकौकी । १८ ग. छाकसैं । १९ ख. ग. मुख । २० ग. आगै । २१ ख. ग. रूपकौके । २२ ख. ग. सब । २३ ख. संजुगत । ग. संयुगत । २४ ख. एतौ । ग. ऐतौ । २५ ख. सुणबेमें । ग. सुणबेमें । २६ ग. एक । २७ ख. रहस्यतौ । ग. रहस्यतौ । २८ ख. ग. कवीसुर । २९ ग. किसीनै । ३० ख. ग. भाई । ३१ ग. जिसमें । ३२ ख. ग. कहिके । ३३ ग. दिखावै । ३४ ख. ग. ग्रंथमें । ३५ ख. ग. कीया । ३६ ख. ग. ग्रंथकी । ३७ ग. लावै । ३८ ग. अैसे । ३९ ख. ग. महाराजनै । ४० ग. फुरमाये । ४१ ख. कविराजनै । ४२ ख. ग. धार । ४३ ख. लाया । ग. लीया । ४४ ग. वरणन । ४५ ख. ग. कीया ।

१७१. निधान — घर । छाकसैं — प्यालासे, शराबसे । चौरासी बंध रूपकौके — डिगलके चौरासी प्रकारके गीत छंदोंके । संजुगति — संयुक्त, सहित ।

अथ खटभाखा वरणण^१ छापै

संसकृत^२ है^३ सुरभाख, आदि पहिला^४ उच्चारुं^५ ।
 सुजि भाखा दूसरी, सेस दूजै विसतारुं ।
 तै अपभ्रंस तीसरै, मगधदेसी चवथम्मै^६ ।
 सरस^७ सूरसेनीस, पढूं थानक^८ पंचम्मै^९ ।
 करि^{१०} थान छठै प्राकृत^{११} कहूं, विधि आ घणी विसत्तरुं^{१२} ।
 सर रचि प्रताप 'अभमाल सह', इम खटभाखा उच्चरुं ॥ १७२

*अथ प्रथम भाखा संस्कृत वरणण^{१३}

स्त्रीमन्त्रेन्द्र जमुना^{१४} तव खङ्गधारा ,
 गंगेव कीर्तिरचला^{१५} प्रतिभाति नित्यं ।
 स्त्रीयोधदुर्गाधिपतीर्थराजस्वयं- ,
 बभौ^{१६} राघववंशजन्मा ॥ १७३

इति खटभाखा लक्षणोः^{१७} ।

संस्कृतस्येदमुदाहरणमुक्त^{१८}

अथ नाग भाखा

बोलै^{१९} चाली पाणं^{२०}, वधै पाणं^{२१} संमुख तारं ।
 कथी^{२२} 'अभूमाण', मंडलाघ^{२३} पैणा महिपत्ती^{२४} ॥ १७४

१ ख. वर्नन । ग. वरनन । घ. वरनन । २ ख. ग. संस्कृत । ३ ख. ग. ह ।
 ४ ख. पहला । ५ ख. ग. ऊचारुं । ६ ख. चवथम्मै । ग. चवथंमै । ७ क सरप ।
 ८ ख. थानि । ग. थानिक । ९ ख. ग. पांचम्मै । १० ख. का । ११ ख, ग. प्राकृत ।
 १२ ख. ग. विसत्तरुं ।

*ग. प्रतिमें यह शीर्षक निम्न प्रकार है— 'अथ प्रथम संस्कृत भाषा वर्नन ॥ श्लोक'

१४ ख. वर्ननं ॥ श्लोक ॥ १५ ख. यमुना । ग. यना । १६ ग. कीर्तिरचला । १७ ख.
 ग. बभौ । १८ ख. ग. लक्षणे । १९ ख. मुक्तं । ग. प्रति में यह शब्द नहीं है ।
 २० ख. बोले । २१ ख. ग. पाणं । २२ ख. ग. वधे । २३ ख. कथा । २४ ख. ग. मंडलाघ्र ।
 २५ ख. ग. महिपत्ती ।

१७२. सुरभाख — सुरभाषा, देववाणी । सुजि — फिर, पुनः । सेस — शेषनाग (यहाँ नाग
 भाषाके लिये प्रयोग किया गया है) । चवथम्मै — चौथी, चतुर्थी । सूरसेनीस — शीर-
 सेनी भाषा । थानक — स्थान ।

१७३. *इस श्लोकका पाठ निम्न प्रकारसे स्वर्गीय पं. श्री नित्यानन्दजी शास्त्रीने संशोधित
 किया है —

श्रीमन् नरेन्द्र ! यमुना तव खङ्गधारा
 गङ्गेव कीर्तिरचला प्रतिभाति नित्यम् ।
 श्रीयोधदुर्गाधिप तीर्थराज-
 स्वयं बभौ राघववंशजन्मा ॥

नाग^१ भाला टिप्पण^२

कश्चित् कवि[ः]राजानं^३ प्रति वदति^४, हे राजन् महदाश्चर्यमेतत्^५ किं न^६ एतत् महदाश्चर्यम्^७ ॥ १७५

अथ भाला^८ अपभ्रंस^९

रंगा नौ^{१०} गय धमयं^{११}, दिठाणे नताय गैदते^{१२} ।

‘अभा’ एह^{१३} ऊभमयं^{१४}, रटाणे^{१५} सतौय^{१६} चित्राळी ॥ १७६

अथ अपभ्रंस^{१७} टिप्पणं^{१८}

इ[द]मन्यत्^{१९} महदाश्चर्यं किं हे राजन् यैः चित्रमिदमिदं^{२०} पग-
जानद्र[य गजेन्द्र]^{२१} द्वास्तेषा[द्वारतेषां]^{२२} बहूतरा^{२३} दंती^{२४} न त्वया^{२५}
दत्ता यदमेवाश्चर्यं^{२६} ॥ १७७

अथ मगध देसी भाला

जुगे^{२७} अठ कठाणं^{२८} सिधाणं^{२९}, लही ए^{३०} स्रगाणं^{३१} ।

खगे पल्ल मभाणं, रिपाणं च^{३२} अप्पवं चरियं^{३३} ॥ १७८

अथ मगधदेसभाला टिप्पणं^{३४}

हे^{३५} राजन् मगधदेसयं^{३६} तृतीयमिदमाश्चर्यं यैः सिद्धैः^{३७} अष्टांग योग-
भ्यासेन^{३८} स्वर्गं न प्रापते^{३९} तत्^{४०} स्वर्गं शत्रूणां^{४१} त्वया खङ्गेन^{४२}
तृणमावेण^{४३} दत्तं इहं ॥ १७९

१ ग. अथ नाग । २ ख. टीपण । ग. टीपनं । ३ ग. कवि- राजानं । ४ ख. ग. प्रतिवदति । ५ ग. महदाश्चर्यमेतत् । ६ ख. त । ७ ख. महदाश्चर्यं । ग. महदाश्चर्यं । ८ ग. भाष । ९ ख. अपभ्रंस । १० ख. नौ । ११ ग. वनयं । १२ ख. गैदते । ग. गैदते । १३ ग. ऐह । १४ ख. ग. उभमयं । १५ ख. रटाणे । ग. ठटाणे । १६ ख. ग. सतौय । १७ ख. अपभ्रंस । १८ ख. ग. टीपणं । १९ ख. इदमन्यत् । ग. इदमनात् । २० ख. चित्रमिदरे । ग. चित्रमिदरे । २१ ख. पगपान-दृष्टा । ग. पगपानदृष्टा । २२ ख. स्तेषां । ग. स्तेषी । २३ ख. बहूतरा । ग. पहूतरा । २४ ख. ग. नस्त्वया । २५ ख. ग. इदमेवाश्चर्यं । २६ ख. ग. २७ ख. ग. अठ । २८ ग. कठाणं । २९ ख. ग. सिधाणं । ३० ग. ऐ । ३१ ख. ग. स्रगाणं । ३२ ख. प्रतिभे नही है । ग. स । ३३ ख. अप्पवंचरी । ग. अप्पवंचरीयं । ३४ ख. ग. टीपणं । ३५ ख. राजन् । ३६ ख. ग. मगधदेसयं । ३७ ख. ग. सिद्धैः । ३८ ग. योगभ्यासेन । ३९ ख. ग. प्राप्यते । ४० ख. ग. तत् । ४१ ख. ग. शत्रूणां । ४२ ख. त्वया खङ्गेन । ग. त्वयास्वखङ्गेन । ४३ ख. ग. तृणमावेण ।

१७५. कश्चित् कवि[ः]राजानं प्रति वदति, हे राजन् ! महदाश्चर्यमेतत् । किं न एतन् महदाश्चर्यम् ?

१७७. इ[द]मन्यद् महदाश्चर्यम् । किम् ? हे राजन् ! यैश्चित्रमन्दिरेऽपि गजा न दत्तास्तेषां [द्वारि] बहुतरा दन्तिनस्त्वया दत्ता इदमेवाश्चर्यम् ।

१७९. हे राजन् ! मगधदेशजं तृतीयमिदमाश्चर्यं यैः सिद्धैः अष्टाङ्गयोगभ्यासेन स्वर्गं न प्राप्यते तत् स्वर्गं शत्रूणां त्वया खङ्गेन तृणमावेण दत्तमिदम् ।

अथ सूरसेनी

गजागमणि^१ अवासौ^२, वामौ^३ सत्र^४ तव^५ सुणि^६ दूंदभी^७ ।अग्रागमणि वनासौ^८, आचंभम पंचमं^९ कथं ॥ १८०

अथ सूरसेनमिदमाश्चर्यं^{१०} हे राजन्^{११} गजगामन्या^{१२} स्वशत्रुस्त्रिया,
स्वमंदिरे तव दूंदभे^{१३} स्वनं^{१४} श्रुत्वा आरण्येमृगवत्^{१५} पलायनं कृतं
इदमपी^{१६} आश्चर्यं ॥ १८१

*अथ प्राकृत^{१७} भाषा वरणण वृहाइम^{१८} पंच भाषा उच्चरे^{१९}, सुणि ग्रंथां तत सार ।अब कुळ भाषा उच्चरूं, पराक्रमी^{२०} अणपार^{२१} ॥ १८२वृजभाषा^{२२} मुरधर विमळ, आदि करे^{२३} उच्चार ।देस देस^{२४} भाषा डंबर^{२५}, वरणूं करि^{२६} विसतार^{२७} ॥ १८३अथ वृजभाषा^{२८} वरणण अदभुत^{२९} रसोवित^{३०} संबंथाअरि भुंडनुतै^{३१} रिनु^{३२} सिघ अनै, भुजदंडनि पांनि^{३३} प्रचंड रचै^{३४} ।किरमालतै^{३५} मंगल ज्वाल^{३६} उठै, मुनिराज विलोकत^{३७} हास्य^{३८} मचै^{३९} ।

१ ख. गजजागमणि । २ ख. ग. अवासो । ३ ख. ग. वामो । ४ ख. शत्र । ग. शत्रू ।
५ ग. तव । ६ ख. ग. सुणि । ७ ख. दूंदभि । ग. दूंदभ । ८ ख. वनासो । ग.
वनासो । ९ ख. पंचमं । १० ख. ग. सूरसेनजमिदमाश्चर्यं । ११ ख. ग. राजन् ।
१२ ख. गजगामिमा । ग. गजगामिन्या । १३ ख. दूंदभे । ग. दूंदुभे । १४ ख. ग. स्वनं ।
१५ ख. अरण्येमृगवत् । ग. अरण्येन्नगवत् । १६ ख. ग. इदमपि । १७ ख. ग. प्राकृत ।

*ग. प्रतिमें यह शीर्षक निम्न प्रकार है— 'अथ भाषा प्राकृत वर्तन ।'

१८ ख. ग. यम । १९ ग. उच्चरं । २० ख. ग. पराकृत । २१ ग. उणपार ।
२२ ख. ग. वृजभाषा । २३ ग. करै । २४ ग. देश । २५ ख. डमर । ग. डंमर ।
२६ ग. कर । २७ ग. विस्तार । २८ ख. ग. वृजभाषा । २९ ख. ग. अदभूत ।
३० ख. ग. रसोवित । ३१ ख. भुंडनुतै । ग. भूडनुते । ३२ ख. ग. रनु । ३३ ख.
पांनि । ३४ ग. रचि । ३५ ख. ग. किरमालतै । ३६ ग. ज्वाळ । ३७ ख. ग.
विलोकित । ३८ ख. हास्य । ३९ ख. मचं । ग. मचं ।

१८१. अथ शोरसेन्यामिदमाश्चर्यम् । हे राजन् ! गजगामिन्या स्वशत्रुस्त्रिया स्वमन्दिरे तव
दुन्दुभेःस्वनं श्रुत्वा आरण्यमृगवत् पलायन् कृतमिदमप्याश्चर्यम् ।

१८२. पराक्रमी — शक्तिशाली । अणपार — अपार, असीम ।

१८३. डंबर — वैभव, शौर्य ।

१८४. पांनि — हाथ । किरमाल — तलवार । मंगल — अग्नि । ज्वाल — आगकी लपट ।
विलोकित — देखते हैं ।

अनि^१ मंगल^२ जलवारे^३ बचै^४, त्रिण^५ वारे जलै यह रीति सचै ।
अदभूत चरित्रकी रीति यह है, जलवारे जरै^६ * त्रणवारे^७ बचै^८ ॥ १८४

अथ^९ द्वितीय इकतीसा कवित^{१०}

साहके^{११} कटहरै^{१२} विफरि ठाढ़ौ अभैसाह^{१३} -
मारन^{१४} तुजकमीर रोसकी रटारीयै^{१५} ।
मीरखान चक्रत^{१६} अमीर परे मुरभाइ^{१७},
छोहकी कटक देखि छटक छटारीयै ।
मोतीमाल साहदे^{१८} मनायौ^{१९} खान दौरां^{२०}...मिल^{२१} -
उभक^{२२} विलोकै^{२३} तहां वेगमां^{२४} अटारीयै^{२५} ।
पांन धारचौ प्रगट गुमांनी धारचौ जोधपुर -
दिल्ली सोच धारचौ कर धारचौ तें कटारीयै ॥ १८५

अथ मुरधर^{२६} भाखा^{२७} दूहा^{२८}

लाल वदन चख लाल, कर जमदढ़ दीधां कमध^{२९} ।
उण वेळा 'अभमाल', जोवण जेहडौ^{३०} 'अजणउत'^{३१} ॥ १८६

१ ख. अनि । २ ख. मंगतौ । ३ ग. जलबारै । ४ ख. बचै । ग. बचचै । ५ ख. ग. तृण । ६ ग. जरै ।

*यहांसे आगे ख. तथा ग. प्रतियोंमें निम्न पंक्तियां हैं—(जलवारे जरै यह रीति सचै ।

अदभूत चरित्रकी रीति यहै जलवारै जरै (त्रिणवारे बचै) ।

७ ख. ग. त्रिणवारे । ८ ख. बचै । ग. बचचै । ९ ख. तथा ग. प्रतियोंमें यह नहीं है ।
१० ख. ग. सर्वथा । ११ ग. साहकै । १२ ग. कटहरै । १३ ख. ग. अभसाह ।
१४ ख. मारनु । १५ ख. रटारीयै । ग. रटारीपे । १६ ख. ग. चक्रित । १७ ख. ग. मुरछाय ।
१८ ख. ग. दे । १९ ग. मनायौ । २० क. दौरां । ग. दौरा । २१ ख. ग. मिल । २२ ख. ग. उभकै ।
२३ ग. विलोकै । २४ ख. वेगम । ग. बेगम । २५ ख. पै । ग. पै । २६ ग. मुरधरा । २७ ख. ग. भाषा । २८ ख. दोहा । ग. दुहा ।
२९ ख. कमध । ३० ख. जेहडौ । ३१ ख. ग. अजणउत ।

१८४. सचै - सत्य, सांच । चरित्रकी - चरित्रकी ।

१८५. कटहरै - कटधरा । विफरि - क्रोध कर के । ठाढ़ौ - खड़ा है । अभसाह - अभय-सिंह । तुजकमीर - अभियान या जलूस आदिकी व्यवस्था करने वाला । चक्रत - चकित, आश्चर्ययुक्त । छोहकी - कोपकी, क्षोभकी ।

१८६ वदन - मुख । चख - चक्षु, नेत्र । जमदढ़ - कटार विशेष । अभमाल - महाराजा अभयसिंह । जेहडौ - जैसा । अजणउत - महाराजा अजीतसिंहका पुत्र ।

कवित्त प्रताप वरणण^१

सूरज हिंदवांणरौ^१, गाढ़ तोलरौ^३ गिरंदह ।
 रूपकरौ रिभवार, अनै रूपरौ अनंगह ।
 वरदायक सकतिरौ^४, कंत^५ क्रीतरौ^६ कहावै ।
 उरड़ जोम अंगरौ, अवर पह^७ मीढ़ न आवै ।
 दौलति^८ प्रताप जैचंदरौ^९, कंत गह सभाव 'गजबंध'रौ ।
 'अभमाल' इसौ 'अजमल्ल'रौ^{१०}, कोड़ि^{११} जुगां राजिस^{१२} करौ ॥ १८७

उत्तरकी भाखा^{१३} पंजाबी नीसांणी

रज्जा^{१४} तं^{१५} वड्डा^{१६} सबै, सिरपोस^{१७} रजंदा ।
 रूप दुडंगा^{१८} रज्जिए^{१९}, तपतेज तुजंदा^{२०} ।
 अज्जा^{२१} तेडा^{२२} अगाळे^{२३}, आगौ^{२४} 'जैचंदा' ।
 नाळ जिन्हूंदी^{२५} हिंद^{२६}, देस सब भूप सभंदा ॥ १८८
 तूदा रावल^{२७} व्याहितै^{२८}, रंक राव^{२९} रचंदा ।
 दिदा^{३०} अर्थू^{३१} दायजै^{३२}, चित्रौड़^{३३} दिपंदा^{३४} ।

१ ख. वरनन । ग. बननं । २ ग. हिंदवांणरौ । ३ ख. तोलरो । ४ ख. सतिरो । ५ ग. कंति । ६ ख. ग. क्रीतिरो । ७ ख. ग. पौहौ । ८ ख. ग. दौलत । ९ ख. जयचंदरो । १० ख. ग. अजमाल । ११ ख. ग. कोडि । १२ ख. ग. राजस । १३ ख. ग. भाषा । १४ ग. रज्जभा । १५ ग. तूं । १६ ख. ग. वडा । १७ ख. सिरथोस । ग. सिरपोस । १८ ख. ग. दुडांदा । १९ ख. रज्जोए । ग. रज्जोए । २० ख. तुभंदा । ग. तुकंदा । २१ ख. ग. अजा । २२ ख. तैडा । ग. तैडा । २३ ख. अगलै । ग. आगलै । २४ ख. जगौ । ग. जगौ । २५ ख. जिन्हूं । २६ ख. ग. दे । २७ ख. तूट्टारागळ । २८ ग. व्याहितै । २९ ग. रा । ३० ख. ग. दिदा । ३१ ख. अर्थू । ३२ ख. दाइजै । ३३ ख. चित्रोड । ३४ ग. दियंदा ।

१८७. हिंदवांणरौ - हिन्दुस्तान । गाढ़ - दृढ़ता, मजबूत । गिरंदह - पर्वत । रूपक - काव्य, कविता । रिभवार - प्रसन्न होने वाला । अनै - और । अनंगह - कामदेव । वरदायक - वरदान प्राप्त करने वाला । कंत - पति । क्रीत - कीर्ति । उरड़ - साहस, शक्ति । मीढ़ - समानता, बराबरी । गह - गम्भीर । गजबंधरौ - गजसिंहका । अभमाल - महाराजा अभयसिंह । अजमल्ल - महाराजा अजीतसिंह ।

१८८. रज्जा - राजा । तं - तू । वड्डा - बड़ा, महान । सिरपोस - शिरत्राण । दुडंगा - सूर्य (?) । तुजंदा - तेरा । अज्ज - महाराजा अजीतसिंह । तेडा - तेरे, तेरा । अगाळे - पूर्व, पहिले । आगौ - पूर्व । नाळ - (?) । जिन्हूंदी - जिनकी ।

१८९. तूदा - तेरा । दिदा - दिया । अर्थू - अर्थ, रूपया, धनदौलत । दायजै - वहेजें । चित्रौड़ - चित्तौड़ गढ़ । दिपंदा - शोभायमान होता है ।

ईसानूँ दे अंकड़े, कत्थे^१ न करंदा ।
जित्थे^२ जित्थे जोइये^३, तित्थी^४ दरसंदा ॥ १८९
कल्ह तुभंदा पित्र^५ सो, 'अजमाल' उपंदा ।
जंदा रक्खंदा^६ सजै, राजस राणंदा^७ ।
रज्ज^८ डिगंदा^९ रक्खिया^{१०}, अंबं नयरंदा^{११} ।
दिलूँ उमंदा 'अभै'^{१२} दिठूँ^{१३}, तू खाट तिन्हंदा ॥ १९०
तैंडा उन्नंदा तुभक^{१४}, दूणे दनसंदा^{१५} ।
एक थपंदा असपई, ऐकै^{१६} उथपंदा ।
दरियावंदा^{१७} फेर^{१८} दिल, लहरूं आमंदा ।
लक्ष^{१९} लहंदा अख्ख, तैतै लक्ष^{२०} दियंदा^{२१} ॥ १९१
दीपंदा 'अभमल' दुडंड^{२२}, तूँ सख तेरंदा ।
तैंडी^{२३} नाळ गुसाईयां, सब^{२४} आलम दंदा ।
देव तरंदा रूप दिढ़, सरणाय सभंदा ।
एक^{२५} तुभंदा^{२६} एक^{२७} अंग, जग सब जाणंदा ॥ १९२

१ ख. ग. कवथे । २ ख. ग. जित्थे जित्थे । ३ ख. ग. जोइये । ४ ख. ग. तित्थी ।
५ ख. पित । ग. पित्त । ६ ख. रवंदा । ग. रावंदा । ७ ग. राणंदा । ८ ग. रज्ज ।
९ ख. डिमंदा । ग. डिगदा । १० ख. रक्खिया । ग. रक्खिया । ११ ख. ग. अंबा ।
१२ ख. ग. अभ । १३ ख. दिठ । १४ ख. तुभक । १५ ख. ग. दरसंदा । १६ ख.
ग. ऐकै । १७ ख. दरियावंदा । १८ ग. फेरि । १९ ख. ग. लष । २० ख. ग.
लष । २१ ख. ग. दीयंदा । २२ ख. दुडंड । दुडयंद । २३ ख. ग. तैंडी । २४ ख.
खव । २५ ख. ग. ऐक । २६ ग. तुभंदा । २७ ग. ऐक ।

१९१. कल्ह—कल । तुभंदा—तेरा । पित्र—पिता । अजमाल—अजीतसिंह । उपंदा—
उत्पन्न (?) । जंदा—जिसका । रक्खंदा—रखा गया है । राजस—राज्य । राणंदा—
महाराणाका । रज्ज—राज्य । डिगंदा—डिगता हुआ । रक्खिया—रखा । अंब—
आमेर । नयरंदा—नगरका । अभै—अभयसिंह । तिन्हंदा—उनका, उसका ।

१९२. तैंडा—(तेरा ?) । उन्नंदा—उनका । थपंदा—स्थापित करता है । असपई—
अश्वपति, बादशाह । उथपंदा—उल्लेखिता है, हटाता है ।

१९३. दीपंदा—सुशोभित होता है । अभमल—अभयसिंह । दुडंड—सूर्य, भानु । सख—
शाखा, वंश । तेरंदा—तेरहका । तैंडी—(तेरी ?) । तरंदा—(तरहका ?) ।
दिढ़—दृढ़ । सरणाय—शरण, पनाह । सभंदा—सज्जित करते हैं । तुभंदा—
तेरा । जाणंदा—जानता है ।

होय बंदा सो ऊबरै, खळ हांय मरंदा ।
 एहा^१ गुण तेंडा^२ 'अभा', किताक कहंदा ।
 घण वरसंदा^३ बूंद ज्यां^४, नहि पार लहंदा ।
 पांन तरंदा पिक्खियै^५, पंथा उतरंदा ॥ १६३
 तूभ गुणंदा पार नां, ज्यां^६ रेण^७ कणंदा ।
 आजंदा दीठा^८ सबै, मै^९ हौर^{१०} नरघंदा ।
 तेंडी^{११} हुंडै^{१२} रज्जवी^{१३}, नहि^{१४} होर करंदा ।
 ॥ १६४

अथ दक्खणकी^{१५} भाखा :: सोरठा^{१६}

आला मुदफर^{१७} खानं, घोए^{१८} चे आला अभा ।
 जाला भज्जी^{१९} खानं, घौय^{२०} दिलीचा मग्गए^{२१} ॥ १६५

अथ सोरठकी भाखा :: सोरठा^{२२}

भूपति बाके^{२३} भाह, तडकै^{२४} ब्रह्खांपहतणा^{२५} ।
 भोगै^{२६} कंत 'अभाह', एकौ^{२७} 'अजमलरावउत'^{२८} ॥ १६६

१ ग. ऐहा । २ ख. र. तेंडा । ३ ख. घरसंदा । ४ ख. ग. ज्यो । ५ ख. ग. पिक्खियै । ६ ख. ग. ज्यो । ७ ख. ग. रेण । ८ ग. दिठा । ९ ख. मै । १० ख. ग. होर । ११ ख. तेंडी । १२ ख. हुंडै । ग. हुंडे । १३ ख. ग. रज्जवी । १४ ख. ग. नहीं । १५ ख. ग. दक्खिण । १६ ख. दूहा । ग. दोहा । १७ ख. मुफर । १८ ग. घोए । १९ ग. भज्जी । २० ख. ग. घौय । २१ ग. मग्गए । २२ ख. ग. ब्रह्मा सोरठा । २३ ख. बाके । ग. केवाके । २४ ख. ग. तडपै । २५ ख. ब्रह्खांपतितणा । ग. ब्रह्खांपहतणा । २६ ग. भोगै । २७ ख. हको । ग. ऐको । २८ ख. ग. अजमल-रावउत ।

१६४. बंदा - भक्त, सेवक । ऊबरै - बचता है । तेंडा - तेरा । अभा - अभयसिंह ।
 किताक - कितने ही । कहंदा - कहते हैं । घण - मेघ, बद्ल । वरसंदा - बरसने वाला । तरंदा - तैरता हुआ । पिक्खियै - देख कर । उतरंदा - उत्तर दिशाका ।
 १६५. गुणंदा - गुणोंका । रेण - भूमि, पृथ्वी । कणंदा - कणोंका । आजंदा - आजके ।
 नरघंदा - राजा । तेंडी - तेरी । हुंडै - बराबरी, समानता । रज्जवी - राजा ।
 १६६. आला - (उच्चपदाधिकारी ?) । घोए - (निरस्त किया, भगा दिया ?) ।
 अभा - अभयसिंह ।
 १६७. बाके - (?) । भाह - (?) । तडकै - (कांपते हैं, विदीर्ण होते हैं ?) ।
 ब्रह्खांपह तणा - (तीन खांपोंके ?) ।

★

अथ सिन्धो^१ भाखा

कुरौ^२ अचे^३ हमार, चंगा माढू रज्जियां^४ ।

अब्भा^५ तुज्भीभार, गनण हत्थी^६ द्रंगड़ा ॥ १६७

अथ दवावत

ऐसी भांतिसै खटि भाखा कहि बताई । चातुरी कलाकी भांति
भांति चतुराई । जिसकी साख^७ प्रथम भाखा संस्कृत सो^८ तौ अनुभूति^९-
कृत्य^{१०} सारस्वतसो^{११} पाई । दूसरी नागभाखा सो^{१२} नागपिंगलसौ
आई । अपभ्रंस^{१३} भाखा^{१४} प्राकृतसो कुल काविवार जिससेती
प्राकृत^{१५} भाखा विस्तार^{१६} करि गई । जिसमें पूरब पच्छिम^{१७}
उत्तर दक्खिणकी^{१८} ए^{१९} च्यार भाखा कहि दिखाई । जिसमें^{२०} तीन
भाखाएँ^{२१} एक^{२२} अंग करिके^{२३} वखांणी । चौथी^{२४} पच्छिमकी^{२५}
भाखा जिसकी कहि^{२६} तीन प्रकारकी वांणी । ऐसे^{२७} तरहसै^{२८}

*इस छन्दसे पूर्व ख. तथा ग. प्रतियोंमें निम्न पंक्तियां और मिली हैं—

‘साषे साष सकां भाषे, भाषह जस भलां ।

ससि आदि तसमां रहस्यै, अजमलरावकृत ।

१ ख. ग. सिद्धी । २ ग. कुरौ । ३ ख. अचे । ४ ख. रज्जिया । ग. रज्जियां ।
५ ख. ग. अब्भा । ६ ख. ग. हथी । ७ ख. ग. साषि । ८ ख. ग. संस्कृत । ९ ख.
ग. अनुभूति । १० ख. ग. कृत । ११ ख. सौ । ग. सौ । १२ ख. सौ । १३ ख.
अपभ्रंश । १४ ख. प्रतिमें नहीं है । १५ ख. ग. प्राकृत ।

१६ यहाँसे आगे निम्न वर्णन ख. तथा ग. प्रतियोंमें और मिला है—

‘(अपभ्रंस भाषा) ग्रंथ विनोद विजयसौ पहिचांणी । मगध देसकी भाषा जैन
सारस्वसै जांणी । सूरसेनी भाषा हेम व्याकरणका विचार नर भाषा (प्राकृतसो
कुलका विवहार जिससेती) ।’

१६ ख. ग. विसतार । १७ ख. ग. पछिम । १८ ख. ग. दक्षिणकी । १९ ग. ऐ ।
२० ख. जिसमें । ग. जिसमें । २१ ख. ग. भाषा । २२ ख. ग. एक एक । २३ ख.
करिके । ग. करिके । २४ ग. चौथी । २५ ख. पछिमकी । ग. पच्छिमकी । २६ ख. ग.
कही । २७ ख. ग. अंसी । २८ ग. तरहसै ।

१६८. कुरौ - (?) । अचे - (?) । चंगा - श्रेष्ठ, स्वस्थ । माढू - मित्र । रज्जियां -
प्रसन्न करने पर । अब्भा - अभयसिंह । गनण - (?) । द्रंगड़ा - नगर ।

१६९. खटि - षट्, छः । अनुभूति - अनुभव, अनुभूतिकृत्य । सारस्वतसो - अनुभूतिस्वरूपा-
चार्यकृत सारस्वत नामक व्याकरण ग्रन्थ । पाई - प्राप्त की । नागपिंगलसौ - एक
प्रसिद्ध छंदोंका लाक्षणिक ग्रंथ नागपिंगल । काविवार - काव्यानुक्रमसे । जिससेती -
जिससे । वखांणी - वर्णन की ।

भाखाका भांति भांतिका^१ वाखाण^२ करिकै दिखाया । दिल्लेसुर^३
पातिसाहूकी^४ भाखा जिसमें^५ पारसीका इलम^६ गाया । ऐसी भाखाके^७
गुण जिस राजसभाके^८ बीच^९ चंडीके वरदायक कविराजूनै^{१०} गाए^{११} ।
लखूं गज^{१२} सांसणूके इनांम पाए^{१३} ॥ १६८

दूहौ^{१४}—कुरब रीझ पाए^{१५} करै^{१६}, कवि आसीस प्रकास ।

कायम 'अभमल' कोड़ि जुग, निज खट भाख निवास^{१७} ॥ १६९

अथ दवावंत

जिस बखतमें^{१८} और भी हुन्नरबंधूनै^{१९} सब हुन्नरका^{२०} तमासा
दिखाया^{२१} । सो कैसे^{२२} कहि दिखाया^{२३} । जिस बखतका विहार^{२४}
सूरति पाक होसनायकानै^{२५} नजर गुजराए^{२६} । आसमांनी मौहरा^{२७}
कियै^{२८} पल्लैसै^{२९} झिलते आए^{३०} । छछोहै^{३१} हौसनायकूकी^{३२}
हमराहसै^{३३} छूटे^{३४} । जगजेठूकी^{३५} तरबीत^{३६} जोमसै^{३७} जूटै^{३८} ।

१ ख. ग. प्रतियोगिमें नहीं है । २ ख. ग. व्याख्यान । ३ ख. ग. दिल्लेसुर । ४ ख. पात-
साहूकी । ५ ख. जिससै । ग. जिससै । ६ ग. ईलम । ७ ग. भाषाके । ८ ख. राज-
सभाके । ९ ख. ग. बीच । १० ग. कविराजूनै । ११ ख. ग. गाये । १२ ग.
गज । १३ ग. पाए । १४ ख. अथदूहा । ग. अथदुहा । घ. दोहा । १५ ग. पाए ।
१६ ग. करै । १७ ख. निवास । १८ ख. बखतमें । ग. बखतमें । १९ ख. हुन्नरबंधूनै ।
ग. हुन्नरबंधूनै । २० ख. हुन्नरका । २१ ख. दिखाया । २२ ख. कैसे । ग. कैसे ।
२३ ग. दिखाया । २४ क. तिहार । २५ ख. हौसनायकू । ग. हौसनायकू । २६ ग.
गुजराए । २७ ख. ग. मौहरा । २८ ख. कीए । ग. कीयै । २९ ग. पल्लेसै ।
३० ग. आए । ३१ ग. छछोहै । ३२ ख. होसनायकूकी । ३३ ग. हमराहसै । ३४ ग.
छूटे । ग. छूटै । ३५ ख. जगजेठूकी । ग. जगजेठूकी । ३६ ख. ग. तरबीत । ३७ ग.
जोमसै । ३८ ख. जूटै । ग. जूटै ।

१६८. वाखाण—वर्णन, व्याख्यान । दिल्लेसुर—दिल्लीश्वर, बादशाह । गाया—वर्णन
किया । वरदायक—विशद बखाने वाले अथवा वरदान देने योग्य । सांसणूके—
राजा द्वारा दानमें दी गई भूमि याग्रामोंके ।

२००. कुरब—मान, प्रतिष्ठा । रीझ—पुरस्कार, दान । अभमल—महाराजा अभयसिंह ।
भाख—भाषा, वाणी ।

२०१. हुन्नरबंधूनै—कलाको जानने वालोंके । पाक—पवित्र । होसनायकानै—चतुरोंके (?) ।
हमराहसै—साथी, मित्र । जगजेठूकी—पहलवानोंकी । तरबीत—(तरबीत,
व्यवस्था ?) ।

पहलवानोरो वरणण

खंगूकी^१ खाटक चौटी^२ बंगडीके दाव । हमरानी कमरपेच दाबूके^३ लगाव । तरह तरहके दाव जंगूके भणाके अपणे^४ अपणे कुरंगूकी हमराहा हौसनायकूके हाके जोधाण मेड़तो^५ वीरखेतके जाए^६ भाजे^७ न लहवहै^८ जेते^९ लड़े^{१०} तेते^{११} बरोबर^{१२} रहे^{१३} । पायकूके^{१४} हमल्ले^{१५} बांक^{१६} पट्टे फूलहथूका^{१७} दाव । नजरवछेकका हुंनर अंगूगा बचाव । हणमंत रूप जगजेठन^{१८} भुजंग^{१९} दंडूपर* दस्तताळ दिया^{२०} । मानूं^{२१} अनेक^{२२} रणजीत ब्रंवागळूके सीस इक डंका किया^{२३} । अवासूं^{२४} गिरदूके बीच^{२५} पडसाद^{२६} फुट्टे । जाजुळमानं^{२७} काळा गोरा वीर^{२८}

१ ख. ग. भृंगूकी । २ ख. ग. चौटी । ३ ख. ग. दाबूके । ४ ख. ग. अपणे अपणे । ५ ख. मंडता । ६ ग. जाए । ७ ख. भांजे । ८ ग. लहवहै । ९ ख. जेते । १० ख. ग. लड़े । ११ ख. ते । १२ ख. बरोबर । ग. बरोबर । १३ ख. रहे । ग. रहै । १४ ख. ग. पायकूके । १५ ख. ग. हमले । १६ ख. ग. बांक । १७ ख. ग. फूलहथूके । १८ ग. जगजेठने । १९ ख. ग. भुजताळ ।

* (दंडूपर) यहाँ से आगे ग. प्रति में निम्न पंक्तियाँ और मिली हैं—

(दंडूपर) मुसताकि हवा आदम अलाह । सिध अन्न हिंदसे वादस्याह महताब दिगर मुमां आफताब आलम तमांम तारीफ ब्रंजाव । हफतविलाइत हे मुदई । हिंदसथानके सिरताज दूमि कुनम उमरदराज (दस्तताळ दिया) ।

२० ख. ग. दीया । २१ ग. मानूं । २२ ख. ग. अनेक । २३ ख. ग. कीया । २४ ग. अवासूं । २५ ख. गिरदूके बीच । ग. गिरदूके बीच । २६ ख. पडसाह । ग. पडसाद । २७ ख. ग. जाजुलिमानं । २८ ग. बीर ।

२०१. खंगूकी — सिरोंकी । खाटक — ध्वनि, आवाज, टक्कर । बंगडीके — दाव विशेष (?) । कमरपेच — कुश्तीका एक दाव, कमरपेटी (?) । जंगूके — जांधोंके । भणाके — ध्वनि विशेष । कुरंगूकी — (?) । हमराहा — साथ । हाके — आवाज, शोरगुल । वीरखेतके — वीर प्रसविनी भूमि । जाए — उत्पन्न । लहवहै — जब तक अवसर हो, युद्ध करते रहते हैं । पायकूके — सिपाहीके, पहलवानके । हमल्ले — आक्रमण, टक्कर । बांक — तलवार विशेष । पट्टे — प्रायः दो हाथ लंबी किचके आकारकी लोहेकी पट्टी जिससे तलवारकी काट या बचाव सिखाया जाता है । फूलहथूका — तलवारका । हणमंत — हनुमान । जगजेठन — पहलवानने । भुजंग...दस्तताळ — भुजाएँ ठोकी, भुजा पर ताल लगाये । ब्रंवागळूके — नगाड़ोंके । अवासूं — भवनोंके । गिरदूके बीच — घेर, आवेष्टन (?) । पडसाद — प्रतिशब्द, प्रतिध्वनि । जाजुळमानं — ज्वालत्यमान । वीर — महादेवका रूप विशेष जिसे भैरवदेव भी कहते हैं ।

जैसे जगजेठ जुट्टे । नजरूँका निहार पंजूका दाव । कदमूँका^१ फुरत
डोरयूँका घाव । जड़ं तेहै डोरी लथोबथ^२ होय^३ जावै । एकल^४-गिड-
वाराहूँकी^५ दंतळूं भड़ औभड़ औसै दरसावै^६ । खोणके फुंहारे आस-
मानको^७ छूटे^८ । लगो^९ धख जमीं पर लौटण ज्यू^{१०} लुट्टै । ऐसे^{११}
किसवूँका^{१२} हुन्नर^{१३} करि मुजरैको^{१४} आवै^{१५} । कड़े सूनैकी^{१६} गुरज
इनांमूँमें^{१७} पावै^{१८} ।

हाथियांरी लड़ाईरी वरणण

जिस बखत^{१९} लाड़ाणूं^{२०} लगौ^{२१} महावतूँने^{२२} छोडे^{२३} छंछांळ ।
भरणां गिरंदसे नीभर^{२४} बहत^{२५} विकराळ । जगरूप भयांणक
जमाति^{२६} जाणै डाकदारूनै डाकके^{२७} हुन्नरसे^{२८} आणे । अंगूके
अवनाड़^{२९} । चालते पहाड़^{३०} । अगडूँपरि^{३१} आय जुटे^{३२} वीफरे^{३३}

१ ग. कदमूँका । २ ख. लथोपूथ । ग. लथोवथ । ३ ख. ग. होय । ४ ख. एकलि ।
ग. एकल । ५ ख. वाराहूँकी । ग. बराहूँकी । ६ ग. वरसावै । ७ ख. आसमानकू ।
ग. आसमानकु । ८ ख. छुटे । ग. छुटै । ९ ग. लगो । १० ग. ज्यूँ । ११ ग. अंसै ।
१२ ख. किसवका । ग. किसवका । १३ ख. हुन्नर । १४ ख. मुजरैको । ग. मुजरैको ।
घ. मुजरैको । १५ ग. आवै । १६ ख. ग. सुनैकी । १७ ख. इनांमूँमें । ग. इनांममें ।
१८ ग. पावै । १९ ख. ग. बखत । २० ख. लड़ाणूं । ग. लड़ाणूं । २१ ख. लगे ।
ग. लगो । २२ ग. महावतूँने । २३ ख. ग. छोडे । २४ ख. निभर । ग. नीभर ।
२५ ग. बहत । २६ ख. ग. जमजमात । २७ ग. डाककै । २८ ख. हुन्नरसे । ग.
हुन्नरसे । २९ ग. अवनाड़ । ३० ग. पाहाड़ । ३१ ख. ग. अगडपर । ३२ ख. जुटे ।
ग. जुटे । ३३ ग. वीफरे ।

२०१. जुट्टे-भिड़े, टक्कर ली । नजरूँका-हटिका । लथोबथ-गुथंगुथ्य । एकलगिड
वाराहूँकी-एक दांत वाले सूअरकी । दंतळूं-दांत । भड़ औभड़-प्रहार टक्कर ।
खोणके-शोणितके, खूनके । लौटण-कबूतर विशेष । कड़े-बल्य । गुरज-
शस्त्र विशेष । लाड़ाणूंलगौ-लड़ानेके लिये । छंछांळ-हाथी । गिरंद-पर्वत ।
नीभर-निर्भर, भरना । विकराळ-महान, जबरदस्त । जमरूप-यम-तुल्य ।
भयांणक-भयावह । जमाति-जमात, समूह । जाणै-मानों । डाकदारूनै-मस्त
हाथीको अपने स्थान पर लाने वाला व्यक्ति । डाक-एक प्रकारका छोटा भाला जो
मस्तहाथीको अपने स्थान पर लानेके लिए उपयोगमें लिया जाता है । अवनाड़-
जबरदस्त, प्रचंड । अगडूँ परि-हाथियोंका बंधस्थल । वीफरे-कुपित हुए ।

वच्छर^१ दतूसळूके खाटक कैसे दरसावे^२ । इंद्र वज्रकी भाट^३ ऐसी^४
नजर आवै । चाचरूकी भचक सुंडाडंडूका^५ उपाट^{*} । चरखूकी भभक
धोम धड़हड़का अंधार । वीरघंट किलावूकी घोर भमरूका गुंजार ।
पोतकारूका^६ पांन फौजदारूका हलकार जगजेठ ज्यू^७ जूटै^८ जाण^९
आबू गिरनार^{१०} भाटकते^{११} हैं पोगर^{१२} आसमानूकूं उपाड़ि इनामूकी
उरड़ ऐसी गजराजूकी राड़ि ऐसे^{१३} समैं मीर सिकारूने^{१४} सलांम
करि अरज गुजराई । जिस^{१५} पर हुकम हुआ^{१६} ।

१ ख. वच्छर । ग. वेच्छर । २ ग. दरसावे । ३ ख. ग. भाटक । ४ ख. अैसे । ग.
अैसे । ५ ख. ग. सुंडाडंडूका ।

*यहांसे आगे निम्न पंक्ति ख. तथा ग. प्रतियोंमें मिली हैं—

‘कूभा थलू पर बड़भौ काळदार भुजंगूकी-सी भाट ।

६ ख. पोतकारूका । ग. पोतकारूका । ७ ख. ज्यू । ग. ज्यू । ८ ख. जुटै । ग. जुटै ।
९ ख. ग. जाणि । १० ख. गिरनार । ११ ग. भाटकते । १२ ख. ग. पोगरा ।
१३ ग. अैसे । १४ ग. सिकारूने । १५ ग. तिस । १६ ख. ग. हुवा ।

२०१. वच्छर - (?) । दतूसळूके - हाथीके मुंहके बाहरके दाँत । खाटक - टक्कर,
आघात । दरसावे - प्रभाव दिखाना । भाट - प्रहार, चोट । चाचरूकी - माथेकी,
लिलाटकी । भचक - टक्कर, आघात । सुंडाडंडूका - सूंडका । उपाट - उठाना ।
चरखूकी - चरखी नामक औजार विशेष में बाँसकी दो नलियाँ जो लगभग सवा फुट
लम्बी होती हैं और उनमें बारूद भरा हुआ रहता है । यह नलियाँ एक दूसरीको
काटती हुई ऊपर नीचे लगी रहती हैं और एक लम्बे बाँसके सिरे पर मजबूतीसे लगाई
हुई रहती हैं । वि०वि०

जब हाथी पूर्ण मस्तीमें होता है और वह किसी आदमी पर झपट कर उसे मारने
ही वाला होता है तो एक आदमी मैदानके किनारे बाँस पर लगी इस चरखीको लिए
खड़ा रहता है जो चरखीदार कहलाता है । उस समय वह चरखी लेकर चलता है,
उसके पास भी एक सूतका पलीता जला हुआ रहता है, वह उसको फूँक लगा कर आग
ताजा कर के चरखीके बारूद को जलाने की बत्ती (पलीता) को जला देता है, इससे
चरखीके दोनों नलियों का बारूद जल जाता है । बारूद जलते ही बाँसके सिरे पर
वह चरखी जोरसे घूमने लगती है और बड़ी जोर की फटाफटकी आवाज करती है,
उसमेंसे धूआ भी निकलता है । चरखीदार उसको हाथीके मुंहके आगे ले जाता है
जिससे हाथी घबरा कर आदमीका पीछा छोड़ देता है और भाग जाता है ।
भभक - धधक, विस्फोट । धोम - अग्नि, आग । धड़हड़ - ध्वनि, आवाज । वीर-
घंट - हाथी के पाखारके साथ बंधा घंटा । किलावूकी - एक मोटा रस्सा जिससे
हाथी को गर्दन से बांध रखते हैं । पोतकारूका - जोश दिलाने वाला । पांन - (?)

फौजदारूका - महावतोंका । हलकार - हुंकार । जगजेठ - पहलवान ।
जूटै - भड़ते हैं । भाटकते - टक्कर लेते । पोगर - हाथीकी सूंड । राड़ि -
लड़ाई, टक्कर । मीर - सरदार । सिकारूने - शिकारोंके । अरज गुजराई -
प्रार्थना या निवेदन किया ।

सिकाररौ वरणण

सिकारकी चढ़ाई । जिस बखत हवालगीरूने^१ सलाम बजाय असवारीका सरांजाम^२ सब हाजर^३ किया^४ । किस किस^५ तरहके^६ कहि बताय^७ । घोड़-बहलि माफे इक्के खासे सुखपाळ मेघाडंबर^८ हौंदूसं गजराज साभूमै^९ भळूस^{१०} * अनेक खास-वरदाखूंने धारी परि^{११} पंखी सजि आए^{१२} मीर-सिकारी तिस बखत स्त्री महाराज^{१३} सबज पौसाक^{१४} पहरि आखेट व्रतके आवध धारे^{१५} तीसरे नगारेके डंके^{१६} रकेब पाव धारे । बाजराज^{१७} आरोह^{१८} कैसे^{१९} दरसावै । सूरज^{२०} सापतासका^{२१} सा रूप नजर आवै । छतीस वंस राजकुळ बाजराजुं अरोहि है । घुमर^{२२} हल्लै^{२३} । छौल जळूसैं जाणि समुंद्र^{२४} छिल्लै

१ ख. ग. हवालगीरूनों । २ ख. सरंजाम । ३ ख. हार । ४ ख. ग. कीया । ५ ख. किसि किसि । ६ ख. तरहे । ग. तरहे । ७ ख. ग. बताय । ८ ख. ग. मेघाडंबर । ९ ख. साजूमै । ग. साजुमें । १० ख. ग. भलूस ।

* यहाँसे आगे निम्न पंक्तियां ख. तथा ग. प्रतियोंमें मिली हैं—

‘बाजराज दुसाल । लाहानूर नळवरकी बंदूक साजुसै भलूस ।’

११ ख. ग. पर । १२ ग. आए । १३ ख. ग. माहाराज । १४ ग. पौसाष । १५ ग. धारे । १६ ख. डंके । १७ ख. बाजराजुं । १८ ग. आरोहि । १९ ख. ग. कैसे । २० ख. ग. सूरज । २१ ग. आफलास । २२ ख. घुम्मर । ग. घुम्मर । २३ ख. ग. हल्ले । २४ ख. ग. सामुंद्र ।

२०१. हवालगीरूने — खबर देने वालोंने (?) । सरांजाम — सामग्री, सामान । घोड़-बहलि — एक प्रकारकी घोड़े द्वारा खींची जाने वाली गाड़ी । माफे — (?) । खासे — राजा या बादशाहकी सवारीका घोड़ा । सुखपाळ — एक प्रकारकी पालकी । मेघाडंबर — एक प्रकारका छत्र विशेष । हौंदूसं — हाथीकी पीठ पर कसा जाने वाला चारजामा । साभूमै — उपकरणमें, सामग्रीमें । भळूस — सुसज्जित । वरदाखूंने — लेजाने वालोंने, वहन करने वालोंने । मीर-सिकारी — शिकार करने वालोंमें प्रमुख अथवा राजा बादशाहोंके शिकारगाहका प्रबंध करने वाला, मीरे-शिकार । सबज — हरे रंगका, सब्ज । आखेट — शिकार । आवध — शस्त्र, आयुध । रकेब — घोड़ेकी काठीका पावदान । बाजराज — घोड़ा । आरोह — सवार हो कर । घुमर — समूह । हल्लै — गतिमान होते हैं, चले । छौल — तरंग, हिलोर । जळूसैं — जलूस । जाणि — मानों । छिल्लै — उमड़ते हैं, सीमाके बाहर होते हैं ।

नगाखंकी घोर नकीबूके^१ हाके^२ छपै^३ कपोलूं क्रीला करते^४ छुटे^५
छंछाळ छोके रज डंबरका^६ पूर चढ़ि ढके भाण । ठामठांमूसें फौजूके^७
डंबर^८ उछटते केकाण । ऐसे^९ विमरीर दळूंसें विकट गिर भिगर
घेरे । फौजूके लगस चौतरफकूं फेरे ।

सिघांरी सिकार

तहां सौनहरी-पटैत^{१०} विकराळ रूप बाध भभकार ऊठे^{११} । रोसका^{१२}
रूप जाणि जमराज^{१३} रुठे । जिन्हूंसें^{१४} सांम्हे^{१५} जाइ^{१६} जूटे^{१७}
महाराजके^{१८} जोधाणके^{१९} राव । हथलूं पहल कीए^{२०} बीजळूके घाव ।
केतेक^{२१} वाघूंपर आप असि धरै । सेल तरवाखंका घाव स्त्री हथूंसें^{२२}
करै । * नाहरू रजपूतांकी^{२३} राड़ि पौरस^{२४} अलेखे । सूरज भी रथ
खांचि^{२५} तिसका कवतग देखै ।

सिघां अर भेंसांरी लड़ाई

केतेग^{२६} सेर नवहत्थे^{२७} मारिके^{२८} गिराए केतेक^{२९} जाळियूकेबीच^{३०}

१ ख. नकीबूकै । २ ख. हाक । ३ ख. छपै । ४ ग. करते । ५ ख. छुटे । ग. छुटे ।
६ ख. ग. डम्बरका । ७ ग. फौजूकै । ८ ख. डम्बर । ग. डम्बर । ९ ख. असे ।
१० क. पटैत । ११ ख. उठे । ग. उठू । १२ ख. रोकसे । १३ ख. ग. जमराव ।
१४ ख. जिहुंसे । १५ ख. सांम्हे । ग. सांम्हें । १६ ख. ग. जाय । १७ ख. जुटे ।
ग. जुटे । १८ क. महारावके । १९ ग. जोधरणके राव । २० ग. कीए । २१ ग.
केतेके । २२ ख. ग. हथसै ।

*यहांसे आगे ख. तथा ग. प्रतियोंमें निम्न पंक्तियां मिली हैं—

‘लगी नरहै असें करत घाय जहां लगै तहां दोय दूक हुय जाय ।’

२३ ख. ग. रजपूतूकी । २४ ख. औरस । २५ ख. ग. थाभि । २६ ख. कैंतक । ग.
केतक । २७ ख. ग. नवहथे । २८ ख. मारिकै । ग. मारकै । २९ ग. केतक । ३० .
जालियांके बीच ।

२०१. घोर — ध्वनि, आवाज । हाके — आवाज । छपै — (पट्पद) भौंरे । कपोलूं — गंडस्थल ।
क्रीला — क्रीड़ा । छंछाळ — हाथी । रज — धूलि । डंबरका — समूहका । पूर —
पूर्ण । भाण — भानु, सूर्य । ठामठांमूसें — स्थान-स्थानसे । केकाण — घोड़ा । विमरीर —
विकट, जबरदस्त । लगस — समूह । सौनहरी-पटैत — एक प्रकारका सिंह ।
विकराळ — भयंकर । भभकार — दहाड़ कर, कोप कर । रोसका — कोपका, क्रोधका ।
रुठे — कोप किया । जिन्हूंसें — जिनसे । सांम्हे — सम्मुख, सामने । जूटे — भिड़े ।
हथलूं — सिंहाका अगला पंजा जिससे वह शत्रु पर प्रहार करता है । बीजळूके —
तलवारोंके । स्त्री हथूंसें — अपने हाथसे । नाहरूं — सिंहों । राड़ि — लड़ाई । पौरस —
शक्ति, बल । अलेखे — अपार, असीम । कवतग — कौतुक । केतेग — कितने ही ।
नवहत्थे — नौहत्था सिंह । जाळियूके बीच — फंदोंके बीच, जालके बीच ।

कैदमे^१ ल्याए^२ । तिनू^३ परि^३ महिषूके चख भाळ^४ तुटै^४ । जमराजके राजबाण^५ आरणै^५ जूटै^५ । सो कैसे^६ भयाणक^६ गजराजूके^६ आकार आरोध^{१०} कंधे^{११} । चोगजे^{१२} साबळसे संग^{१३} जोमसै^{१३} अंधे । धिखते^{१४} आरणसे लोयण जमराजसे असवार कालीनाग ज्यू^{१५} करते फुरणूका फूकार^{१६} ऐसे^{१७} सारवानूके^{१८} हाकलेसै^{१९} विमरीर^{२०} वाघू^{२१} परि^{२१} घाए । उस तरफ केसरसिघ^{२२} पटैत^{२३} नले^{२४} भाड़^{२५} भभकार सांमुहै^{२६} आए । नळू^{२७} हाथळूका दाव औभड़ि^{२८} भड़^{२९} संगूका घाव^{३०} दारणूके^{३१} हाथळ^{३२} लगणै^{३३} न^{३४} पावै । आरणूकें संग^{३३} पार होय^{३४} जावै । फूटे^{३५} घड़^{३६} आफळते^{३७} है^{३८} ज्वाळानळ ज्यों जलते हैं । रुईके^{३९} पहल ज्यों^{४०} संगू^{४१} पर^{४२} चढ़ाई^{४३} रोळै^{४४} ।

१ ख. कैदमे । ग. केदमे । २ ख. ग. लाए । ३ ख. ग. तिन पर । ४ ख. तुट्टे । ग. तुट्टे । ५ ख. ग. आरणे । ६ ख. छूटे । ग. छुट्टे । ७ ख. कैसे । ८ ख. भयाणव । ग. भयानक । ९ ख. गजराजूके । ग. गजराजूके । १० ख. ग. आरोध । ११ ख. ग. कंध । १२ ख. ग. चौगजे । १३ ख. अंग । १४ ख. धिषते । १५ ख. कालीनाग ज्यू । ग. कालीनग ज्यों । १६ ख. फुंकार । १७ ख. ऐसे । ग. ऐसे । १८ ख. ग. सारवानूके । १९ ख. हाकलैसै । २० ख. ग. विमरीर । २१ ख. ग. वाघू पर । २२ ख. ग. केसरसिघ । २३ ख. पट्टैत । २४ ख. ग. नले । २५ ख. ग. भाड़ि । २६ ग. सांम्हे । २७ ख. ग. औभड़ । २८ ख. ग. भड़ । २९ ग. हाघाव । ३० ख. ग. दारणूक । ३१ ख. ग. हाथल । ३२ ख. ग. लगणे ।

*रेखांकित पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है ।

३३ ग. शृंग । ३४ ग. हुय । ३५ ख. में नहीं है । ग. फूटै । ३६ ख. में नहीं है । ग. घट्ट । ३७ ख. फलते । ३८ ग. है । ३९ क. रुईके । ४० ग. पहलजू । ४१ ख. शृंगूपर । ४२ ख. ग. चढ़ाय । ४३ ग. रोले ।

महिषूके — भैंसोंके । चख — नेत्र । भाळ — कोप, कोपाग्नि । राजबाण — राजाके वाहन । आरण — जंगली भैंसे । भयाणक — भयावह, भयंकर । साबळसे — भाला विशेषसे । संग — सींग । जोमसै — जोशसे । धिखते — प्रज्वलित । आरणसे — लुहारकी भट्टीसे । लोयण — नेत्र, लोचन । फुरणूका — नाकके नथनेका । सारवानूके — ऊँटके सवारके । हाकलेसै — हाँक करके । नले — ललाट । भभकार — कोप कर । सांमुहै — सम्मुख, सामने । नळू — ललाट । औभड़ि भड़ — भयंकर रूपसे प्रहार या टक्कर । संगूका — सींगोंका । दारणूके — भयंकरके । आरणूके — भैंसोंके । रुईके पहल ज्यों — धुनी हुई रुईकी मोटी तह जैसी । रोळै — फेंकते हैं ।

छूटे^१ हंस पड़े जाणै^२ मंजीठ बोळे । इस उजैका^३ तमासा देखि गिर^४
भंगरूवीचि^५ घैसाहर^६ फेरे^७ । ग्रैरूके^८ भुंड^९ नटूके^{१०} तटाक घण
घुमरूसै^{११} घेरे । तहां सेती^{१२} होकरि^{१३} ऊठै^{१४} अंधकंध गिड़दी^{१५}
ढाळ अगनकुंडसे^{१६} चखूंवीचि^{१७} भभकते^{१८} क्रोधकी भाळ । हमफरते^{१९}
तोपका^{२०} गोळाज्यू^{२१} आए^{२२} । जिन्हू^{२३} पर ठामठामसेती फौजुंके
लड़ंग धाए ।

सुरांरी सिकाररी वरणण

दंतूसलूकी^{२४} श्रीभड़^{२५} घोड़^{२६} भड़ांसू^{२७} लड़ते हैं । जाजुळमानं^{२८}
जोधार सेलूसै^{२९} जड़तै हैं । ऐसे^{३०} बाराहूके^{३१} ऊपर घण वीजूजळांका^{३२}
घाव । सो कैसे^{३३} सामळे वदूळपर^{३४} वीजूजळांका^{३५} सिळाव । ऐसे^{३६}
भयाणंख एकलगिड़ बराह^{३७} ढाए^{३८} ।

१ ख. छुटे । ग. छूटे । २ ख. जाणि । ३ ख. वजैका । ग. वजैकी । ४ ख. गिरि ।
५ ग. भोगरूवीचे । ६ ख. ग. घांसाहर । ७ ख. फेर । ग. फेरे । ८ ग. ग्रेराहं ।
९ ख. भंड । ग. भूंड । १० ख. नटू । ग. नडू । ११ ख. ग. घूमरसै । १२ ख.
सेती । १३ होकरि । ग. होकर । १४ ग. करि उठे । १५ ख. गिडदा । ग. गोडदा ।
१६ ख. ग. अगनकुंडसे । १७ ख. ग. चखूंवीचि । १८ ख. ग. भभकतै । १९ ख. हमफरतै ।
ग. होफरतै । २० ख. ग. तोपके । २१ ख. ग. गोळाज्यू । २२ ग. आए । २३ ग.
जिन-पर । २४ ख. ग. दंतुसलूके । २५ ख. ग. श्रीभड़ भड़ । २६ ख. घोहू । ग. घोड़ ।
२७ ख. भलूसै । ग. भलूसै । २८ ख. जाजुलिमानं । ग. जाजुलामानं । २९ ग. सैलूसै ।
३० ग. अंसै । ३१ ख. ग. बाराहूके । ३२ ख. ग. वीजूजळांका । ३३ ख. ग. कंसा ।
३४ ख. वदूलपर । ग. वदनपरि । ३५ ख. ग. वीजलूका । ३६ ख. अंसे । ग. अंसा ।
३७ ख. बराह । ग. बाराह । ३८ ख. अन्नके ढाहे । ग. अनेक ढाए ।

२०१. छूटे हंस.....बोळे — उनके प्राण छूट गये और वे खूनसे लथपथ ऐसे प्रतीत होते हैं
मानों मंजीठ धोलमें सराबोर हों । उजैका — प्रकारका । घैसाहर — सेना,
दल । घण — बहुत । घूमरूसै — समूहसे, दलसे । घेरे — आवेष्टन, घेरा । सेती — से ।
होकरि — दहाड़ कर । चखूं — नेत्र । भभकते — प्रज्वलित होते । भाळ — ज्वाला,
आग । हमफरते — तेजीसे स्वास लेते हुए । जिन्हू — जिन पर । ठामठामसेती —
स्थान-स्थानसे । लड़ंग — टुकड़ी, दल । दंतूसलूकी — मुंहके बाहरके दांत ।
श्रीभड़ — टक्कर । भड़ांसू — योद्धाओंसे । जाजुळमानं — जाज्वल्यमान, तेजस्वी ।
जोधार — योद्धा, भट । सेलूसै — भालोंसे । जड़तै हैं — प्रहार करते हैं । बाराहूके —
सूअरोंके । वीजूजळांका — विजलीका, तलवारोंका । सामळे — श्याम रंगके, कृष्ण ।
वदूळपर — बादलों पर, मेघों पर । सिळाव — चमक, दकम । भयाणंख — भयानक ।
एकल बराह — जंगलोंमें अकेला रहने वाला सूअर । ढाए — गिरा दिए, मारे ।

खरगोस हिरणादिरी सिकाररी वरणण

एतेमें^१ केतैक^२ खिरगोस^३ भ्रिग^४ सांमरूके जूथ आए । तिसपर
चित्रु^५ कूतूका^६ धाव । सीहगोसूके^७ दाव । ऊछट^८ भपटसैं मिलते^९
हैं । मोहरा^{१०} जड़ाव करते हैं । पाछै रंजक^{११} मुडियाण^{१२} काळे गोरे
भ्रग^{१३} खरगोस जाणै^{१४} न पावै । जहां देखै^{१५} तहां मारि गिरावै ।
पंखी^{१६} जिनावरूकी^{१७} सिकार । कंदीलूका^{१८} विसतार । मीर-
सिकारूका हुन्नर^{१९} नजर होत^{२०} है । लगतू^{२१} रमतूके आतुरी ।

१ ख. एतेमें । ग. ऐते । २ ग. केतेक । ३ ख. ग. खरगोस । ४ ख. ग. मृग ।
५ ख. चीतू । ग. तीतू । ६ ख. कुतूका । ७ ख. साहगोसू । ग. सीहगोसू । ८ ख.
उछल । ९ ग. मिलतैं । १० ग. मोहोरा । ११ ख. ग. रंज । १२ ग. मुडियाण ।
१३ ख. ग. मृग । १४ ख. जाणे । १५ ग. देखै । १६ ख. ग. पंख । १७ ख. ग.
जानवरूकी । १८ ग. कदिलूका । १९ ख. हुन्नर । ग. हुन्नर । २० ख. होते ।
२१ ख. ग. लगतू ।

२०१. एतेमें - इतनेमें । केतैक - कितने ही । भ्रिग = मृग - हरिण । सांमरूके - भारतीय
मृगोंकी एक जाति विशेषके । वि.वि. - इस जातिका मृग बहुत बड़ा होता है । इसके
कान लंबे होते हैं और सींग बारहसिंगोंके सींगोंके समान होते हैं । इसकी गर्दन पर
बड़े-बड़े बाल होते हैं । जूथ - समूह, टोली । चित्रु - एक प्रकारके शिकारके लिए
शिक्षित किए हुए चीते, इनकी आंख पर ढक्कन लगे रहते हैं । शिकारके समय आंखका
ढक्कन उस समय खोल देते हैं जब हरिणोंकी टोली सामने आ जाती है । ज्योंही आंखका
ढक्कन खोला जाता है त्योंही ये चीते सीधे हरिण पर भपट कर उसे पकड़ लेते हैं ।
उस समय इन चीतोंको शिक्षित करने वाला आदमी दौड़ कर उनके पास पहुँचता है ।
चीता शिकारका खून चूसनेमें लगा रहता है और आदमी वापिस इसकी आंख पर ढक्कन
लगा कर पट्टी बांध देता है । कूतूका - कुत्तोंका । धाव - आक्रमण, हमला । सीहगोसूके -
सियहगोस नामक एक जंगली पशु विशेषके । ऊछट - कूद कर, फांद कर । भपटसैं -
हमलेसे, आक्रमणसे । मोहरा.....करते हैं - उछल कर आक्रमण करते हैं, कोप कर
भपटते हैं । पाछै - एक प्रकारका हरिण । रंजक - एक प्रकारका हरिण । मुडियाण -
एक प्रकारका हरिण जिसके सींग नहीं होते हैं । काळे - कृष्ण हरिण । गोरे - गौर
वर्णके हरिण । पंखी - पक्षी । कंदीलूका - (?) । मीरसिकारूका -
शिकारकी व्यवस्था करने वाला प्रधान कर्मचारी, मीर-शिकार । हुन्नर - कला, हुनर ।
लगतू - लगतू या लगडू नामक पक्षी विशेष जो पक्षियोंका शिकार करनेमें शिक्षित
किया जाता था ।

चरज^१ सींचाणूं सो लाग आतुरी । बाज बहरूकी भपट । कुही^२
 कुही लूंगी^३ ऊछट^४ । लावे^५ तीतर^६ कल तीतर नहरू^७ चाढ़ि
 ऊभटसैं^८ गिरावते हैं । नहरू परू चूच^९ जड़े चरज बटेर मरगाबूकू^{१०}
 धर आवतैं^{११} हैं । आसमानके^{१२} खेल नजरू निहारै^{१३} । अलंगांसू^{१४}
 चढ़ि कुलंगको^{१५} मारि उतारै^{१६} । असै^{१७} तमासै^{१८} अनेक भांति भांति
 पातिसाहूकी^{१९} दस्तूरीकी^{२०} सिकार । हौसनायकांकी^{२१} जीवन^{२२} स्त्री
 महाराजाजीकी रीभवार^{२३} । आतुसूके^{२४} धमके बाणूकी^{२५} चोट^{२६} ।
 संमल^{२७} चीतल पाठे केते लोटपोट । ऐसी आखेट करि नौबत
 बाजतू^{२८} आए^{२९} । दुसमणूकू^{३०} दाह साजणूके मन भाए^{३१} । तिस
 बखत हौसनायकू^{३२} चाक चढ़ाय टंकणै^{३३} बणवाए^{३४} ।

१ ख. ग. चरग । २ ख. कुही । ग. कुहीकु । ३ ख. लूंगीकी । ग. लंगूकी । ४ ख. ग.
 उछट । ५ ख. ग. लावे । ६ ख. ग. तीतर । ७ ख. ग. नहरू ।

*चिन्हित पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है ।

८ ग. उछटसे । ९ ख. ग. चूच । १० ग. मुरगा । ११ क. आवते । १२ ग. आस-
 मानके । १३ ग. निहारे । १४ ख. ग. अलंगसू । १५ ख. कुलंगको । ग. कुलंगको ।
 घ. कुलंगकु । ङ. कुलंगूकू । १६ ग. उतारे । १७ ख. ग. असै । १८ ख. ग. तमासे ।
 १९ ख. ग. पातिसाहूकी । २० ख. दस्तूरीकी । ग. दस्तूर । २१ ख. हौसनायकूकी ।
 ग. हौसनायकोंकी । २२ ग. जीवन । २३ ख. ग. रीभवार । २४ ख. ग. आतुसूके ।
 २५ ख. बाणूकी । २६ ग. चोट । २७ ख. संमल । ग. सामल । २८ ख. बाजतू ।
 ग. बाजत । २९ ग. आए । ३० ख. दुसमणूकू । ग. दुसमणूका । ३१ ग. भाए ।
 ३२ ग. हौसनायकू । ३३ ख. ग. टांकणै । ३४ ख. ग. बणवाये ।

२०१. चरज — पक्षी विशेष । सींचाणूं — शिकारी पक्षी विशेष, सचान (यह बाजसे भिन्न
 होता है) । बाज — शिकारी पक्षी विशेष । बहरूकी — पक्षी विशेषकी । भपट —
 टक्कर, भिड़ंत । कुही — शिकारी पक्षी जो छोटी-छोटी चिड़ियोंको मारता है,
 कुरही । लूंगी — पक्षी विशेषकी । ऊछट — छलांग, भपट, भिड़ंत । नहरू —
 (पक्षी विशेष) । ऊभटसैं — टक्करसे । बटेर — पक्षी विशेष । मरगाबूकू — मुर्गकी
 जातिका एक पक्षी विशेष, मुर्गाबी । अलंगांसू — दूरसे । कुलंगको — पक्षी विशेषको ।
 दस्तूरीकी — नियमकी, कायदेकी । हौसनायकांकी — (?) । रीभवार —
 प्रसन्नता, पुरस्कार, इनाम । आतुसूके — आतशबाजीके । धमके — आवाज । संमल —
 काला हरिण । चीतल — एक प्रकारका हरिण । पाठे — एक प्रकारका हरिण ।
 लोटपोट — कुलांच । दाह — जलन, कुढ़न । साजणूके — सज्जनके । चाक चढ़ाय —
 (?) । टंकणै — (?)

मांस तथा भुंजाईरी वरणण

छुरूं खंजरूँके विहार^१ सूर संवरूँ^२ असे^३ दरसाए सुपेत लाल
भंभार घाट मानूँ^४ नारनौळकी लूट^५ खूटे^६ । वजाजूँके^७ हट^८ यस^९
वजे^{१०} ठांम ठांम छिनौती कर^{११} कर कड़ियाल^{१२} तोलूँ^{१३} चढ़ाए ।
हौसनायकानै^{१४} मसाले चाढ़ि चंडी भोग वणाए^{१५} । चुरू^{१६} आतसूँके
भलपट जग्गे अथाह । दूसरे सठ मठ राजूँके हियै^{१७} पर दाह । भांति^{१८}
भांतिके कड़ियाल^{१९} चरू^{२०} चढ़े सकाज । भांति भांतिके पकवांन
भांति^{२१} भांतिके अनाज । रोगांन^{२२} मसालेसै^{२३} सूलूँकी सीक वणावै^{२४} ।
अनेक^{२५} भांतिके साग तिसका पार न आवै^{२६} । कड़ियालूँके वीचि^{२७}
कूडछुरू^{२८} खरडाते^{२९} वगो^{३०} । दावागरूँके हियै^{३१} विच^{३२} सूलसे^{३३}
लगो^{३४} । ऐसी विध^{३५} भुंजाईकी^{३६} तैयारी^{३७} करि हवालगीरूँनै^{३८}

१ ग. विहारसूँ । २ ख. सांवर । ग. सांवर । ३ ख. असे । ग. ए । ४ ग. मानौ ।
५ ख. लूटि । ६ ख. छुटे । ग. छूटे । ७ ख. ग. वजाजूँके । ८ ख. ग. हाट । ९ ख.
ग. इस । १० ग. वजे । ११ ग. करि । १२ ख. कड़ियाल । ग. कड़ियाले । १३ ख.
ग. तोलूँ । १४ ख. हौसनायगूँनै । ग. हौसनायकूँनै । १५ ख. वणवाए । ग. वणवाए ।
१६ ख. चुरू । ग. चुरू । १७ ख. हीये । ग. हिये । १८ ग. भांत भांत । १९ ख.
कड़ियाल । ग. कड़ियाल । २० ख. चरू । २१ ख. भांत भांत । २२ ख. रोगात ।
२३ ग. मसालेसै । २४ ख. ग. वणवावै । २५ ख. अनेक । २६ ख. पावै । २७ ख.
ग. कड़ियालूँकेवीचि । २८ ख. कूडछुरूका । २९ ख. ग. खरडाट । ३० ख. वगो । ग.
वगो । ३१ ख. हाये । ग. हीऐ । ३२ ख. ग. वीचि । ३३ ख. ग. सेल । ३४ ख.
लगो । ग. लगो । ३५ ख. विधि । ३६ ख. भौंजाई । ग. भोजाइ । ३७ ख. ग. तयारी ।
३८ ग. हवालगीरौने ।

२०१. छुरू—छुरा । खंजरूँके—खंजर नामक शस्त्रके, एक प्रकारके छुरेके । विहार—विदीर्ण
कर चीर कर । सुपेत—श्वेत । भंभार—बहुत बड़ा । खूटे—खोला हो । हट—
दुकान । ठांम ठांम—स्थान-स्थान । छिनौती—उत्तेजना, चुनौती । कड़ियाल—बड़ा
कड़ाह । चंडी—देवी, दुर्गा । भोग—नैवेद्य । चुरू—भोजन पकानेका बड़ा बर्तन
विशेष । आतसूँके—अग्निके, आगके । भलपट—आगकी लपट या लपट लगनेसे
होने वाला चिन्ह । सठ मठ—कृपण, कंजूस । रोगांन—घी तैलादि स्निग्ध पदार्थ ।
सूलूँकी—शिकंजे पर पकाये जाने वाले मांसकी । सीक—लोहेकी सलाख पर पकाया
जाने वाला मांस । कूडछुरू—बड़ी डांडीका चमचा, कलछा । खरडाते—रगड़ते ।
दावागरूँके—शत्रुके, दुश्मनके । सूलसे—शल्यसे, कसकसे । हवालगीरूँनै—वह जिसके
अधिकारमें हो ।

अरज गुजराई । तिस बखत खिलवतके^१ लोगूँके^२ बीच^३ मजलस वणवाई ।

संफलरी वरणण

सोनै^४ रूपै^५ जड़ाऊँके^६ तूंग^७ ऐराक फूलसू^८ भरवाए^९ । रसके पूर सूलूँकी नुकल^{१०} बांढि^{११} प्याला^{१२} फिरवाए । दोऊ मिसलसै उम-राऊँके^{१३} हुकम माफक^{१४} देते^{१५} हैं । सलांम वजाय फूल छाक लेते^{१६} हैं । कविराजूँकू^{१७} स्त्रीमुख हुकम करि बगसावते हैं । *सलांम असीस करि चंडी^{१८} मंत्र पढ़िकै चढ़ावते हैं । *आप लेते हैं प्याला^{१९} तब बोलते हैं कविराव । सत्रु^{२०} सोखिये^{२१} मित्र पोखिये^{२२} । गढ़ूँ कोटूँपर अमल रंगका^{२३} चढ़ाव तिस बखत रंगराज केहौक^{२४} (बै) रस^{२५} रहिसकी बात । अमलूँका चढ़ाव सोभा दरसात । संग असम संगमरवर कस्मीर बिलवर

१ ख. धिलवतनै । ग. धिलवतिनै । २ ख. लोग । ग. लोगन । ४ ख. बीच । ३ ख. सोने । ग. सोनै । ५ ख. ग. रूपे । ६ ग. जड़ायु । ७ ख. ग. तूंग । ८ ग. फूल । ९ ख. ग. भरेआए । १० ख. नुकुल । ११ ख. बांढि । १२ ख. ग. प्याले । १३ ख. ऊमरावूँके । ग. उमरावूँके । १४ ग. माफिक । १५ ख. देतै । १६ ग. लेतै । ग. लेते । १७ ख. कविराजांकू । ग. कविरजावूँकौ । १८ ग. चंडि ।

*चिन्हित पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है ।

१९ ख. ग. प्याले । २० ख. सत्रु । ग. सत्रू । २१ ख. ग. सोषीये । २२ ख. ग. पोषीये । २३ ग. अमलरंगकू । २४ ख. केहौक । २५ ख. ग. पेरस ।

२०१. खिलवतके — मित्र-मंडलांक । मजलस — सभा, जुलूस, नाचरंगका स्थान । तूंग — शराब रखनेका बड़ा पात्र । ऐराक — तेज शराब । सूलूँकी — शिकंजे पर आग पर पकाये हुये मांसकी । नुकल — वह चीज जो शराब अफीमके साथ खाई जाय, नुकल, गजक । मिसलसै — पंक्तिसे, सिलसिलेसे । उमराऊँके — सरदारोंके । माफक — माफिक, अनुकूल । फूल — भट्टीसे प्रथम बार निकाला हुआ हलका शराब । छाक — शराब पीनेका प्याला । स्त्रीमुख — स्वयं, खुद । बगसावते हैं — प्रदान करते हैं । असीस — आशीष । सोखिये — नाश कीजिये । पोखिये — पोषण कीजिये । तिस — उस । केहौक — हर्षोल्लास । रस — आनन्द । संग असम — श्याम रंगका एक बहुत प्रसिद्ध पत्थर, अंग्रेजों के 'संगे-यशब' । संगमरवर — संगमरमर । कस्मीर — कश्मीरका पत्थर विशेष । बिलवर — एक प्रकारका सफेद रंगका पत्थर विशेष, बिल्लौर ।

सूने^१ रूपैके^२ मौरियांनू^३ जड़ाऊके प्याले फिरते हैं। जिस प्यालूके बीच^४ ही^५ अन्नार दालचीनीं परतकाली^६ अंगुरी^७ गले कुलाब ऐसी^८ भांति भांतिके फूल ऐराक भरते हैं। उस बखत चौसरिये^९ पंति^{१०} करि जरकसी समियांतां^{११}। स्त्रीसापका मंगसखांता^{१२}। खडा करि^{१३} सुनहरीकी^{१४} चौकी धरि^{१५}। तिस परि^{१६} भोजन पूर कनकथाल विराजमान करि^{१७} खिजमतगारूने^{१८} अरज कीवी^{१९} भौजाईकी^{२०} तयारी।

भोजनांरो वरणण

तहां सुभड़ कविराजू^{२१} सहित^{२२} आय विराजे^{२३} छत्रधारी। परूसवारेकी ऊरड़^{२४} ठाम ठामसै लगी। चंडी भोग^{२५} अनाजूके गंजू-पर रोगनूकी छोल^{२६} वगी^{२७}। जीमणूके गंज एते दरसावै। जिसकी^{२८}

१ ख. ग. सूने। २ ख. ग. रूपे। ३ ख. मोती पल्लू। ग. मोरी पल्लू। ४ ख. ग. बीच। ५ ख. ग. बीही। ६ ख. परकाली। ७ ख. अंगुरी। ८ ख. अंसे। ग. अंसे। ९ ख. चौसरिये। ग. चौसरिये। १० ख. ग. पंति। ११ ख. ग. समियांतां। १२ ख. मंगस-खाता। १३ ख. ग. कर। १४ ख. तथा ग. प्रतियोंमें नहीं है। १५ ख. ग. धर। १६ ख. ग. पर। १७ ख. कर। १८ ग. खिजमतगारौने। १९ ख. अरजकीवी। २० ख. भौजाई। ग. भौजायी। २१ ग. कविराजां। २२ ग. सहित। २३ ग. विराजे। २४ ख. ग. उरड। २५ ख. भोग। २६ ग. छोल। २७ ख. वगी। २८ ख. जिसकी।

२०१. मौरियांनू - प्यालेके ऊपरका भाग, प्यालेका मुख (?)। जड़ाऊके - जटित, पचि-कारी किया हुआ। गले कुलाब - (?)। फूल ऐराक - हल्के नशेका शराब। चौसरिये - (?)। पंति - पंक्ति। समियांतां - तंबू। स्त्रीसापका - एक प्रकारके कपड़ेका। मंगसखांता - (?)। सुनहरीकी - स्वर्णमकी, सोनेकी। चौकी - पाटा। कनक - स्वर्ण, सोना। विराजमान - शोभायमान, रख कर। खिजमतगारूने - सेवकोंने, अनुचरोंने। सुभड़ - थोड़ा। विराजे - बैठ गये, शोभायमान हुए। छत्रधारी - राजा। परूसवारेकी - परोसनेका कार्य करने वालेकी। ऊरड़ - उमंग, जोश। ठाम ठामसै - स्थान-स्थानसे। चंडी - देवी, दुर्गा। गंजू - डेर। रोगनूकी - घीकी तेल आदि स्निग्ध पदार्थोंकी। छोल - धारा, प्रवाह। वगी - गतिमान हुई। जीमणूके - भोजनोंके। एते - इतने। दरसावै - दिखाई देते हैं।

ओट^१ जीमणहारू^३ नजर^३ न आवै । कुमाच^५ महेली^५ महरि^१ ए^१
मंडोवरके मूंग^५ सुखदा^६ सराय । भोग^{१०} लंजहा के भात जायके^{११}
फूलांकी^{१३} सोभा दरसात । और^{१३} भी भांति^{१४} भांतिके सो कैसे^{१५}
कैसे कहि दिखाय । कमोद^{१६} तुलछी^{१७} स्यामजीरा^{१८} दधि मोगर चीनी
एलची पूरब कपूर पोहप^{१९} प्रसंग हरेवी सौरभ^{२०} कुसुमवा किय^{२१}
जगनाथ भोग औसी चौरासी^{२३} भांति जिन्हुंके^{२३} गंज^{२४} दरसावै ।
सुपेत^{२५} केसरियै^{२६} रंग कविराजूसै गिणणैमें^{२७} नावै^{२८} ।

मांसारौ वरणण

कलिया^{२९} पुलाव^{३०} बिरंज^{३१} दुप्याजा^{३२} जेरी^{३३} बिरियां^{३४} अखनीं
चखताळा भांति भांतिके मजे । भांति भांतिका^{३५} मसाला

१ ख. वोट । २ ख. जिमणहार । ग. जीमणहार । ३ ख. नजर । ग. निजर । ४ ख.
ग. कुमाच । ५ ख. ग. महेल । ६ ख. ग. महरि । ७ ग. ऐ । ८ ख. मूंग । ९ ख.
सूषदा । १० ग. मोग । ११ ख. लंहेके । ग. के । १२ ख. फूलूकी । ग. फूलकी ।
१३ ग. और । १४ ख. भांत भांत । ग. भांत भांति भांतके । १५ ग. कैसे कसे ।
१६ ख. ग. कमोद । १७ ग. तुलसी । १८ ग. सामजीर । १९ ख. ग. पोहोप ।
२० क. सौरांभ । २१ ख. कीया । ग. कीया । २२ ख. चौरासी जातिके । ग.
चौरासी जातके । २३ ख. जिहूं । ग. जिन्हूं । २४ ख. गंज । २५ ख. सुपेद । २६ ख.
केसरीए । ग. केसरीये । २७ ख. गिणणंनै । २८ ख. ग. न आवै । २९ ख. कलिया ।
३० ख. पुलाव । ग. पुलाव । ३१ ख. ग. बिरंज । ३२ ख. दुप्पाजा । ग. दुप्पाजी ।
३३ ख. ग. जेर । ३४ ख. बिरियां । ग. बिरायां । ३५ ख. ग. भांति भांतिके ।

२०१. जीमणहारू — भोजन करने वाले । कुमाच — (?) । महेली — (?) ।
महरि ए — (?) । लंजहा — श्रेष्ठ, स्वादिष्ट । कमोद — एक प्रकारके चावल ।
तुलछी — तुलसी । स्यामजीरा — शाहजीरा, कृष्णजीरा । मोगर — छिलका उतारी
हुई दाल । एलची — इलायची । पोहप — पुष्प, फूल । हरेवी — एक प्रकारकी खटाईयुक्त
दाल । सौरभ — सुगंध, महक । जिन्हूके — जिनसोके, भोज्य-पदार्थके । गंज —
समूह, ढेर । कलिया — दही डाल कर बनाया जाने वाला मांस विशेष । पुलाव —
एक प्रकारका प्रसिद्ध खाद्य जो मांसके साथ चावल डाल कर बनाया जाता है, पलाव,
पुलाव । बिरंज — एक प्रकारके पकाए हुए मीठे चावल । दुप्पाजा — एक प्रकारका
मांस जिसमें केवल प्याज ही पड़ती है, दुपियाज । जेरी बिरियां — एक प्रकारका
पकाया हुआ गोश्त । अखनीं — मांसका रस, शोरबा । चखताळा — (?) ।
मजे — आनन्द ।

रोगांनी^{१*} रौसनी^२ केसरियां^३ चक्खी^४ भांति भांतिकी मिठाई ।
 मेवैकी^५ पुलाव अनेक^६ आई । अजरख^७ जमीकंद रताळूका विसतार ।
 अंबु^८ नींबू^९ अंगीर^{१०} कैरुंका आचार^{११} । वादांमी साबूनी^{१२} सरेसे^{१३}
 जुड़ी । भांति^{१४} भांति मिखरणी^{१५}, भांति^{१६} भांति पुड़ी^{१७} । मेवैकी^{१८}
 खीर नमखकी दोइ^{१९} करवा छूँदा करार जीमे सहकोई^{२०} । जुज-
 स्टळकासा^{२१} ज्याग कुमेरका भंडार । इत्यादिक साक पतूका^{२२} अंत न
 पार । गौरसकी^{२३} उभेल जीमे^{२४} परज्याद^{२५} । सकरसे^{२६} बीहै^{२७}
 तरतकरका^{२८} सवाद । ऐसी विध^{२९} रस^{३०} आई । राजेस्वरुंकी^{३१}
 भूंजाई^{३२} । *कविराजूनै संखेप सी कही । सब कहिणैमें^{३३} ना^{३४} आई^{३५} ।

१ ख. ग. रोगनी ।

*यहां निम्न पंक्तियां ख. तथा ग. प्रतियोंमें और मिली हैं—

‘(रोगनी) छूटि कहलवांनी मसालेदार । सीक चढ़त ली अलबंटे वान सूलै
 अपार रोगांनी ।’

२ ख. ग. रौसनीके । ३ ख. ग. केसरियां । ४ ख. ग. चक्की । ५ ग. मेवे । ६ ख.
 ग. अनेक । ७ ख. ग. अजरख । ८ ख. अंबू । ग. आंब । ९ ख. ग. नींबू । १० ख.
 ग. अंगूर । ११ ख. ग. आचार । १२ ख. साबू । ग. साबू । १३ ख. ग. सीरेसे ।
 १४ ग. भांत भांत । १५ ख. सिखरणी । १६ ग. भांत भांत । १७ ख. पुड़ी । ग.
 पुरी । १८ ख. मेवैकी । ग. प्रतियोंमें नहीं है । १९ ख. ग. दोय । २० ख. ग. सबकोय ।
 २१ ख. ग. जुजष्टल । २२ ख. ग. पतूकी । २३ ख. ग. गौरसकी । २४ ख. ग. जीमे ।
 २५ ख. ग. परजाद । २६ ख. ग. सकरसे । २७ ख. ग. बिहै । २८ ख. ग. तरत-
 वरकी । २९ ख. ग. विधि । ३० ख. ग. रसि । ३१ ख. ग. राजेस्वरुंकी । ३२ ख.
 ग. भोजाई ।

*चिन्हित पंक्तियां ख. प्रतियोंमें नहीं हैं ।

३३ ग. कहीणैमें । ३४ ग. ना ।

२०१. रोगांनी — स्निग्धतायुक्त, जो घी या तेलयुक्त हो । चक्खी — (?) मिठाई विशेष ।
 अजरख — अद्रक । रताळूका — एक प्रकारके भूमिकंदका जिसका शाक बनाया जाता है ।
 अंबु — कच्चा आम । अंगीर — अंगूर । कैरुंका — करील वृक्षके हरे और कच्चे फलका
 जिसका शाक बनाया जाता है । वादांमी — बादामके रंगकी । साबूनी — एक प्रकारकी
 मिठाई । सिखरणी — दही और चीनीका बनाया हुआ एक प्रकारका मीठा पदार्थ
 या शर्वत जिसमें केसर, कपूर तथा मेवे आदि डाले जाते हैं । जुजस्टळका सा — युधि-
 ष्ठिरके समान । ज्याग — यज्ञ । गौरसकी — दूधकी । उभेल — तरंग, हिलोर ।
 *सब कोई — सबके साथ । *कविराज — कवि । *संखेप — संक्षेप ।

जिस बखत सब लोगानै^१ चळू किया^२ जिसकी जलधारा^३ जाई^४ ।
जिस^५ चळू^६ विच^७ अदेवाळ^८ राजूका^९ मगज वहि जाइ^{१०} । तिस
बखत स्त्री महाराजा पांन कपूर अरोगि^{११} हुकम किया^{१२} । हुकमसै
पांन कपूर उमराव कविराजूं^{१३} दियो^{१४} । जिस बखत कविराजूं पांन
कपूर लेकर^{१५} आसीस^{१६} करते हैं *जिस आसीसूंमें^{१७} चूंडराव^{१८} चरु
सुकाळका विरद धरते हैं ।* २०१

तिसका^{१९} कायब^{२०} दुहा^{२१} (सोरठा)

चाचर चरु सुकाळ, जग^{२२} 'अभमल' 'चूंडा'^{२३} जिहीं^{२४} ।

खलक चरु^{२५} जळ खाळ, मठा^{२६} पहां वहिया^{२७} मगज ॥ २०२

दवावैत

जिस बखत स्त्री महाराज^{२८} सब लोककी^{२९} रुसनाईका^{३०} मुजरा
लेकरि^{३१} राजसिंदरू^{३२} पधारै^{३३} । आगू^{३४} वरणन^{३५} किया^{३६} तैसा^{३७}

१ लोगूने । ग. लोगूने । २ ख. ग. कीया । ३ ख. जालधारा । ४ ख. ग. जाय ।
५ ख. ग. तिस । ६ ख. चलूके वहालू । ग. जलूके वाहालू । ७ ख. वोचि । ग. प्रतिमें
नहीं है । ८ ग. देषाल । ९ ख. ग. राजू राखूके । १० ख. ग. जाय । ११ ख.
अरोग्य । ग. आरोग । १२ ख. कीया । १३ ग. दीया । १४ ग. लेकै । १५ ग.
असीस । १६ ग. आसीसमें । १७ ग. चौंडराव ।

*...*रेखांकित पंक्तियां ख. प्रतिमें नहीं हैं ।

१८ ख. ग. जिसका । १९ ख. ग. कायब । २० ख. ग. दोहा । २१ ख. ग. जगि ।
२२ ख. ग. चौंडा । २३ ख. ग. जहीं । २४ ख. ग. चलू । २५ ख. जठा । २६ ख.
ग. वहीया । २७ ख. महाराज । २८ ख. ग. लोकका । २९ ख. रोस्ताईका । ग.
रोस्तानाई । ३० ख. लेकर । ३१ ग. राजसिंदरो । ३२ ख. पधारै । ३३ ख. आगू ।
३४ ख. वरणन । ग. वरनन । ३५ ख. कीया । ३६ ग. जैसा ।

२०१. अदेवाळ — नहीं देने वाले, कृपण । मगज — गर्व । चूंडराव — राव चुण्ड
सुकाळका — राव चूंडाका विरुद था जिसने भूखी प्रजाको भोजन खिन्न
किया था ।

२०२. कायब — काव्य, कविता । चाचर — भाग्य, ललाट
जैसे ही । खलक — संसार । खाळ — नाला । मठा —

२०३. रुसनाईका — रोशनीका संध्योपरान्त । मुजरा — अभि-

सुख विलास आनंद^१ धारै^२ । इस उजै^३ हरहमेस^४ उछाह कौतूहलका
 डंबर जगजीत विरदूका^५ जहूर दातारूका^६ दातार । सूरों सूर जिस^७
 देखेसै^८ सब हिंदुवाण^९ गरब धारै^{१०} । ऐसै^{११} तपतेज^{१२} प्रतापसूं स्त्रीं
 महाराजा^{१३} 'अभमाल' गढ़ जोधाण राज करै । रीभेसै^{१४} तारै ।
 खीजैसै^{१५} मारै । बंदगी^{१६} अरु^{१७} वैर दिलसै न विसारै । जिसका
 मयांन^{१८} जेतूनै दिल सुध बंदगी^{१९} कीवी जिनूकुं^{२०} निवाजस कर^{२१}
 बडे किये । राव 'इंद्रसिंघसै' वैर जिस पर दाव दिया^{२२} । सो वयर
 किस बजैसूं कहि दिखाया^{२३} । महाराज^{२४} जसराज^{२५} सुरगलोक^{२६}
 सिधाए^{२७} । 'अजमाल' बाल अवस्तामें^{२८} उत्तनकूं^{२९} आए । तिस
 बखत रावने छल द्रौह किया^{३०} । जोधाण अपणै^{३१} मुनसफमें^{३२}
 लिया^{३३} । सचत्तौ^{३४} जिणही^{३५} दिन जोधाणके उमरावांसै^{३६} पायो ।
 पबर^{३७} कायम जैतगढ़^{३८} आरै^{३९} कीया । जिस वैरकी धक^{४०}

१ ख. आनंद । ग. आनंद । २ ख. ग. धारे । ३ ख. वजह । ग. बजह । ४ ख. हमेस ।
 ग. हमेस । ५ ख. ग. प्रतियोंमें नहीं है । ६ ग. जिसके । ७ ग. देखे । ८ ख. हींदवाण ।
 ९ ख. ग. धरै । १० ख. असे । ११ ख. ग. तेज । १२ ख. महाराजा । १३ ख.
 रीभे । १४ ग. धीजे । १५ ग. बंदगी । १६ ख. ग. अर । १७ ख. मायनां । ग.
 मैयनां । १८ ख. ग. बंदगी । १९ ख. जिनोको । ग. जिनांको । २० ख. ग. सकरि ।
 २१ ख. ग. दीया । २२ ख. ग. दिखाय । २३ ख. ग. महाराज । २४ ख. जसवंत ।
 २५ ख. ग. देवलोक । घ. अमरलोक । २६ ग. सिधाए । २७ ग. अवस्थामे । ग.
 अवस्तामें । २८ ग. उत्तनको । २९ ख. कीया । ३० ख. ग. अपणे । ३१ ख.
 मुनसफमें । ग. मुनसबमें । ३२ ग. लीया । ३३ ख. सचत्तौ । ३४ ख. ग. जितीही ।
 ३५ ख. ऊमरांऊ । ग. उमरावांसे । ३६ ख. ग. पैवर । ३७ ख. जैतगढ़ । ग. जेतगढ़ ।
 ३८ ग. ओर । ३९ ख. ग. घष ।

२०३. विरदूका - विरदूका । जहूर - प्रकाश । हिंदुवाण - हिन्दुस्तान । रीभेसै - प्रसन्न
 होनेसे । खीजैसै - क्रुद्ध होनेसे । विसारै - विस्मरण करते हैं । मयांन - अर्थ,
 मतलब । जे - अगर, यदि । वयर - वैर, शत्रुता । जसराज - महाराज यशवंतसिंह ।
 अजमाल - महाराज अजीतसिंह । अवस्तामें - आयुमें, अवस्थामें । उत्तनकूं -
 वतनको, जन्मभूमिको । मुनसफमें - मनसबमें (?) । धक - क्रोध ।

स्त्री महाराजा^१ 'अजमाल'^२ नागदुरंगपर^३ दाव दिया^४ । रावइंद्रसीध ऊपर^५ जडा रुद्रकासा^६ कोप किया^७ । हैदल पैदल रथ गजराज हुकमसे बाण आए^८ । जगूँके साज छत्तीस कारवां^९[खा]नूँके^{१०} हवालगीरुनै^{११} । सब जगूँका^{१२} सराजाम^{१३} हाजर किया^{१४} । नागदुरंगकी तरफ फरासूँनै^{१५} पेसखानां खड़ा^{१६} किया^{१७} । जबर ठठरूँके ऊपर भयाणख^{१८} नाळ अतिभार । किलकिला काळिका ज्वाळामुखीका अवतार । जलूसै^{१९} यकी^{२०} याबलूँका चरचार । भैसाबाकहूँका^{२१} रुधर^{२२} चौढ़ै^{२३} मदकी धार । तेल सिंदूरसें^{२४} चरचि धमळूँके जूँट जोय । टल्लूसूँ^{२५} दोवड़े गजपीठ होय । तबल्लूँकी^{२६} घोर गजटिल्लूसै हल्ली । चोळ धजाबोळ^{२७} मोहूरुँसै^{२८} ऐसी^{२९} अनेक चल्ली^{३०} । सीसा सौरडेहूँ अटालूँके भार^{३१} ।

१ ख. ग. माहाराजा । २ ख. ग. अजमाल । ३ ख. नागदुरंग । ४ ख. दीया । ग. कीया । ५ ग. रावइंद्रसीधऊपर । ६ ख. इंद्रकासा । ग. रुद्रकासा । ७ ख. कीया । ८ ख. ग. वणवाए । ९ ख. हकारषानांके । ग. कारषानोंके । १० ग. हवालगीरानै । ११ ख. ग. जगूँका । १२ ख. सरंजाम । ग. सरांजाम । १३ ख. ग. कीया । १४ ग. फरांसांनै । १५ ख. प्रतिमें यह शब्द नहीं है । १६ ख. कीया । १७ ख. भयानख । ग. भयाणख । १८ ख. जसूसै । १९ ख. ग. धोय । २० ख. ग. भंसूँ । २१ ख. ग. रुधिर । २२ ख. चौढ़ै । ग. चाढ़ै । २३ ख. सिंदूरसै । २४ ख. टिल्लूसूँ । ग. टिल्लूँकू । २५ ख. ग. तबल्लूँकी । २६ ग. धजाबोल । २७ ग. मोहूरुँसै । २८ ग. अंस । २९ ग. चली । ३० ख. सौरडेहूँ । ग. सौरडेह ।

२०३. नागदुरंगपर — नागौरके किले पर । दाव — हुक, अधिकार । रुद्रकासा — महादेवकासा । हैदल — पुंड्रसवार, पुंड्रसेना । कारवां^९[खा]नूँके — महकमोंके । हवालगीरुनै — (?) । जगूँका — युद्धका । सराजाम — सामान । पेसखानां — वह खेमा जो अगले पड़ाव पर पहलेसे लगा दिया जाय ताकि दीरेके पदाधिकारियोंको कष्ट न हो, पैशखेमा । ठठरूँके — अस्त्र-शस्त्र, तोपादिको ले जानेकी गाड़ीके । भयाणख — भयानक । नाळ — तोप । किलकिला — एक प्रकारकी तोप । चरचि — पूजा कर के । धमळूँके — बँलके । जूँट — दो, युग, जोड़ा । टल्लूसूँ — प्राधातसे । दोवड़े — दो तहके । चोळ — लाल । सौरडेहूँ — बारूदका गोदाम । अटालूँके — विविध सामानके (?) ।

ऊंटांरी वरणण

कठे हठी^१ पाकेटूकी कतार । सो कैसे बगलूके *उरळे गिर सिखरूसे^२
 थूभा^३ । जबलूके^४ घाट देवलूके थांभा^५ *। अजगरके^६ कंध टांमकसे^७
 सीस । *चखूके^८ चोळग सैल^९ रीस । नौहत्थी^{१०} भोक्^{११} भांगूड
 भल्लेस^{१२} । कड़े^{१३} छंट चसळकते^{१४} नेस । गाजते^{१५} चलै^{१६} राकसूका
 दरसाव । धमणसे धोम फींफरूका फुलाव^{१७} । जिस बखत छत्तीस वंस
 राजकुळ उमराव सिलह^{१८} आंवधूसै कड़ाजूड़ होयके^{१९} पखरेतू^{२०} चढ़ि
 आए^{२१} दळूका पारंभ^{२२} समंदसा दरसाए । जिस बखत सी महाराज^{२३}
 महामायाका^{२४} आराध करि ऊंच पौसाक^{२५} धरि वीर आवध
 धारि^{२६} पौरससै^{२७} पूर अंदरसै बाहिर पधारे । ग्रीखमसे^{२८} भांगकासा
 रूप पटाभर^{२९} ज्यों पाव धारे । हजांरुकी आसीस^{३०} हजांरुकी

१ ख. ग. हठीघघकी ।

*...*चिन्हित पंक्तियां ख. प्रतिमें नहीं हैं ।

२ ग. सिषरसे । ३ ग. थुभा । ४ ग. जबलूके । ५ ग. थंभा । ६ ख. ग. अजगरसे ।
 ७ ख. ग. टांमक । *...*रेखांकित पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है ।

८ ग. चण्णुके । ९ ग. सैल । १० ग. नौहथी । ११ ग. भोक् । १२ ख. मकडे ।
 ग. मकडे । १३ ख. चसळकते । १४ ग. गाजते । १५ ख. चल्ले । १६ ख. फुल्लाव ।
 ग. पुलाव । *...*चिन्हित पंक्तियां ख. प्रतिमें नहीं हैं ।

१७ ग. होयकरि । १८ ग. पखरेत । १९ ग. आए । २० ख. ग. महाराजा ।
 २१ ख. ग. महामायाका । २२ ग. पौसाष । २३ ग. धरि । २४ ख. पौरससै ।
 २५ ख. ग्रीखमके । २६ ख. पटाभर । २७ ख. ग. आसीस ।

२०३. पाकेटूकी - ऊंटकी । बगलूके - बगलके । उरळे - चौड़े । थूभा - कोहान । जबलूके -
 पहाड़के, पर्वतके । घाट - रचना, बनावट । देवलूके - देवालयके । थांभा - स्तंभ ।
 टांमकसे - नगाड़ेसे । चखूके - चक्षुके, नेत्रके । चोळग - लाल, रक्तवर्ण । नौहत्थी - नौ
 हाथ लम्बी (?) । भोक् - ऊंटके बैठनेका स्थान या ढंग । भांगूड - फेन । भल्लेस -
 (?) । कड़े छंट - ऊंट प्रायः मस्तीमें पेशाब करते समय अपनी पूँछको बार-
 बार ऊंचा-नीचा झपटता रहता है, इस क्रियाको कड़े छंट कहते हैं । चसळकते नेस -
 ऊंट मस्तीमें प्रायः मुँहसे दांतोंको टकराता हुआ ध्वनि करता है । धमणसे - धौकनीसे ।
 फींफरूका - फेंफड़ेका । फुलाव - फूलना क्रिया । सिलह - कवच । आंवधूसै - अस्त्र-
 शस्त्रोंसे । कड़ाजूड़ - सुसज्जित । पखरेतू - घोड़ों । महामायाका - देवीका, दुर्गाका ।
 आराध - प्रार्थना । ऊंच - ऊँची श्रेष्ठ । पौरससै - पौरुषसे, बलसे । भांगकासा -
 सूर्यकासा । पटाभर - हाथी ।

सलाम^१ हजार्कूकी निगैदासत^२ हजार्कूपर इतमांम । वींभाजळ^३ रूप
गयंद चढि मेघाडंबर विराजे^४ । नौबतूके^५ निहाव वीरारस वाजे^६ ।
जिस बखत जळाबोळ हालोहळसे^७ फौज हल्ली । नाळूके^८ निहाव सेती
धरती थरसली^९ ।

नागौर पर हल्ली

गजराजूकी हळवळ^{१०} । बाजराजूकी^{११} कळहळ । नाळूका निहाव ।
साबळूका सिळाव । त्रंभागळूके^{१२} डाके । जसोल्लूके^{१३} हाके । भूलाळूकी
भळहळ । पैदलूकी हळवळ । ढालूकी ढळक । चपड़ास^{१४} फूलूकी
भळक । महीमुछट^{१५} * रजडंबरका घटाटोप । तिमरका चढ़ाव ।
भाद्रवैकी^{१६} अमावस घटाका वणाव । असे^{१७} विमरीर दळूसै^{१८} गढ़
नागपुर^{१९} घेरे । तोपूँका^{२०} जंजीरा चौतरफ फेरे । दोऊ तरफ^{२१}
दगी^{२२} तोपू^{२३} अताळ । भालूँका भळहळ गोळूँका वरसाळ । थोमूँका

१ ग. सलाम । २ ख. निर्गैदास्त । ३ ख. वींभाभल । ग. वींभाभळ । ४ ग. विराजै ।
५ ग. नौबतके । ६ ग. वाजे । ७ ख. होलोहलसे । ८ ग. नालूँके । ९ ख. थर-
सल्ली । ग. थरहली । १० ग. हलबल । ११ ख. बाजराजूकी । १२ ग. त्रंभागलूँके ।
१३ ख. जसोलूँके । ग. जसोलूँके । १४ ख. ग. चपरास । १५ ख. महीमुरात ।
ग. माहीमुरात ।

*यहांसे आगे ख. तथा ग. प्रतियोंमें निम्न पद्यांश मिला है—

‘बाकाडंबर नीसाणूँका फरहर जलेबदारूकी भूषट । कोतळू की आछट ।’

१६ ख. ग. भाद्रवैकी । १७ ग. असे । १८ ग. दलासै । १९ ग. नागौर । २० ख.
तोपूँ । २१ ख. ग. तरफसै । २२ ग. लगी । २३ ग. तोप ।

२०३. निगैदासत — संरक्षा, हिफाजत, निगरानी । इतमांम — बन्दोबस्त, प्रबन्ध । वींभाजळ —
विध्याचल । मेघाडंबर — छत्र विशेष । निहाव — ध्वनि । जळाबोळ — जलपूर्ण ।
हालोहळसे — समुद्रसे, सागरसे । हल्ली — गतिमान हुई । नाळूके — तोपोंके, बन्दूकोंके ।
थरसली — कम्पायमान हुई । हळवळ — आवाज, हल्ला । बाजराजूकी — घोड़ोंकी ।
कळहळ — हिनहिनाहटकी ध्वनि । साबळूका — भालूँका । सिळाव — चमक, दमक ।
त्रंभागळूके — नगाड़ोंके । जसोल्लूके — यशगायकके, यशका वर्णन करने वालेके । हाके —
आवाज । भूलाळूकी — पाखर, भूल । भळहळ — चमक । हळवळ — कोलाहल ।
फूलूकी — फुलड़ीकी । भळक — चमक, दमक । रजडंबरका — धूल समूहका । तिमरका —
अंधरेका । वणाव — बनावट । विमरीर — वीर, बहादुर । नागपुर — नागौर ।
जंजीरा — आवेष्टन, घेरा । चौतरफ — चारों ओर । अताळ — (बेहद ?) । भालूँका —
आगकी लपटोंका । भळहळ — चमक, दमक । वरसाळ — वर्षा । थोमूँका — धुंयेंका ।

अंधार । धमाकूँका धोठ । ओळूँकी^१ असण ज्युं^२ गोळूँकी^३ रीठ ।
ज्वाळा तै जम्मीके^४ थरहरते थाळ । कमठका कंध सेसका कपाळ ।
प्रळैकाळका पावस आतसूँका उक^५ भुरजाळ । सिखराळ दुहंगूँके^६ भड़
भिड़ज भूक काळ । चक्र मोरचूँका दबाव^७ नजीक^८ लिया^९ । हाकूसै
धूजे^{१०} रावके^{११} हिया^{१२} ॥ २०३

कवित्त- निडर भूप नागौर^{१३}, समर भोके दळ सब्बळ^{१४} ।
क्रोध धूप कळकळे^{१५}, तूप सोंचे किर^{१६} मंगळ ।
इंद्रसिंघ औद्राव^{१७}, ग्राम^{१८} गोळां^{१९} विखमी गति ।
राव पाव छाडि गौ, जीव साटै दे ईजति^{२०} ।
नौबत^{२१} वजाइ^{२२} जीतौ^{२३} नरिंद, लाखां भाखां जस लभै ।
'गजबंध' हरै नागौर गढ़, एण^{२४} भांत^{२५} लीधौ^{२६} 'अभै' ॥ २०४

१ ख. ग. ओळूँकी । २ ख. ग. ज्युं । ३ ग. गोलींकी । ४ ख. ग. तैजमीके । ५ ख.
ऊत । क. ऊक । ६ ख. ग. दुहंगूँके । ७ ख. ग. दबाव । ८ ख. ग. नजदीक । ९ ख.
लीया । १० ग. धूजे । ११ ख. ग. रावका । १२ ख. हाया । ग. हीया । १३ ख.
ग. नागौर । १४ ख. सच्चल । ग. साबल । १५ ग. कळकळे । १६ ख. ग. किरि ।
१७ ग. औद्राव । १८ ख. ग्राव । १९ ग. गोळा । २० ख. ईजति । २१ ख.
नौबति । ग. नौबति । २२ ख. ग. वजाय । २३ ग. जीतो । २४ ग. ऐण । २५ ख.
भाति । २६ ग. लीधो ।

२०३. धमाकूँका धोठ - एक प्रकारकी बजनी बड़ी बन्दूककी, आवाजका । (?) । असण -
(असनि, वज्र?) । रीठ - प्रहार । थरहरते - कम्पायमान । थाळ - स्थान, बड़ी थाली ।
कपाळ - मस्तक । प्रळैकाळका - प्रलयकालका, संहारके समयका । पावस - वर्षा ।
आतसूँका - (?) । उक - धारा, प्रवाह । भुरजाळ - गढ़, किला । सिखराळ -
विखर वाला । दुहंगूँके - दुर्गोंके, गढ़ोंके । भड़ - योद्धा । भिड़ज - धोड़ा । भूक -
चूर, चूरा । काळ - यमराज । चक्र - सेना । नजीक - निकट । हाकूसै - हत्थेसे,
शोरसे । रावके - राव इन्द्रसिंहके ।

२०४. समर - युद्ध । भोके - भोंक दिये । दळ - सेना । सब्बळ - शक्तिशाली । धूप -
तपत । कळकळे - खोलता है, गर्म होता है । तूप - घी, घत । किर - मानों ।
मंगळ - अग्नि । औद्राव - भय, डर । ग्राम - समूह । विखमी - भयंकर । पाव -
पैर, चरण । साटै - एवजमें । गजबंध - महाराजा गजसिंह । एण - इस । अभै -
अभयसिंह ।

छंद दंग

जीत^१ दळ सभि हले राजा, वाजतां^२ रिणजीत^३ वाजा ।
 राव 'ईदौ'^४ माण रोळे^५, भीम गयदां हूंत भेळे^६ ॥ २०५
 दावागर^७ कर तास दावा, उण समै^८ मेड़तै आवा ।
 जोध जिससै सेर^९ जुटा^{१०}, लोक मारा^{१०} रखत लूटा^{११} ॥ २०६
 भगा^{१२} पौरस माण भग्गौ^{१३}, अड़ सगर उमराव अग्गौ^{१४} ।
 ताप सुणि म्रग^{१५} जेम तासा, वसे खळ गिर-भिंगर वासा ॥ २०७
 थटे आयौ^{१६} जैत^{१७} थंडे, मेड़तै मुक्काम^{१८} मंडै^{१९} ।
 चुरस पातां कीध चौजां, मेड़तै गजगाम मौजां ॥ २०८
 जस विरद सुणि दुरंग जैरां, नजर भेजी 'वीकनैरां' ।
 एह^{२०} सुणि वीकाण^{२१} अक्खे^{२२}, रावळां बह^{२३} निजर रक्खे^{२४} ॥ २०९

१ ग. जीति । २ ग. वाजतां । ३ ख. रणजीत । ग. रणजीति । ४ ख. इदौ । ग. इदो । ५ क. रेलें । ग. रेळे । ६ क. भेलें । ग. भेळे । ७ ख. दाउंगर । ग. दाऊगर । ८ ख. ग. समै । ९ ख. जुटा । ग. जुटा । १० ग. मारे । ११ ख. लुटा । १२ ख. भागा । १३ ख. भग्गौ । ग. भग्गै । १४ ख. ग. अग्गौ । १५ ख. ग. मृग । १६ ग. आयो । १७ ग. जेत । १८ ख. मुक्काम । ग. मुकाम । १९ ख. ग. मंडे । २० ख. येह । २१ ख. ग. जेसाण । २२ ख. ग. अक्खे । २३ ख. बहो । ग. बोहो । २४ ख. ग. रक्खे ।

२०५. राव ईदौ - नागौरका अधिपति राव इन्द्रसिंह । माण - गर्व, मान । रोळे - गया कर, नष्ट कर । भीम - पांडुपुत्र भीम । गयदां हूंत - हाथियों सहित । भेळे - शामिल कर के ।

२०६. दावागर - शत्रु । जुटा - भिड़े । रखत - धन, द्रव्य ।

२०७. भगा - नाश हो गया । भग्गौ - भाग गया, मिट गया । अग्गौ - अगाड़ी । ताप - आतंक । तासा - (तास, डर ?) । गिर भिंगर - गिरिकुंज, पर्वतोका वन । वासा - निवास-स्थान ।

२०८. थटे - वैभवशुक्त हो कर । जैत - विजय । थंडे - प्राप्त कर । चुरस - श्रेष्ठ । पातां - कवियों । चौजां - हर्ष, प्रसन्नता । मौजां - पुरस्कार ।

२०९. नजर - भेंट । वीकनैरां - बीकानेरके । एह - यह । वीकाण - बीकानेर । अक्खे - कहा ।

सुणे रूपा^१ दुरां^२ सत्थां^३, अधक नजरां कीध अत्थां^४ ।
 सुणि फत्तै^५ क्रिय^६ निजर^७ साजा, रचै हित 'जैसाह' राजा ॥ २१०
 थाटपति मेवाड़ थाणै, रचे^८ निजरां^९ दीध 'रांणै' ।
 बापहूँ^{१०} चवगुणी^{११} बाजी, गुमर धरियौ^{१२} बियै^{१३} 'गाजी' ॥ २११
 विदण पहल अयाक वागा, लखे तप सह^{१४} पाय लागा ।
 जोम अचड़ां^{१५} जगत जांणी, एक हुकमां भोमि आंणी ॥ २१२
 लड़े इम नागौर लीधौ^{१६}, दुभल बँधवन्^{१७} पटौ^{१८} दीधौ ।

जैसलमेररा विवाहरी वरणण

सोईज वृद^{१९} महाराज^{२०} साजा, रहे सेवग राव राजा ॥ २१३
 सभेअचड़ां^{२१} दळ सवायौ, एण विध^{२२} 'जेसांण'^{२३} आयौ ।
 सभे^{२४} तोरण चित्र साजा, जैत आगम महाराजा^{२५} ॥ २१४

१ ख. ग. रूप । २ ख. ग. दुरंग । ३ ग. सथां । ४ ख. ग. अथां । ५ ख. फत्तै ।
 ६ ख. ग. कीय । ७ ख. ग. नजर । ८ ग. रचै । ९ ख. ग. नजरां । १० ग. हौं ।
 ११ ख. चवगुणी । १२ ख. ग. धरीयौ । १३ ख. वीयै । ग. वायै । १४ ख. ग.
 सौहौं । १५ ख. अचड़ा । ग. अचंड़ां । १६ ग. लीधो । १७ ख. तथा ग. प्रतियोंमें
 नहीं है । १८ ख. ग. पटै । १९ ख. ग. वृद । २० ख. ग. महाराज । २१ ख.
 अचलां । २२ ख. ग. विधि । २३ ख. जैसांण । २४ ग. सजे । २५ ख. ग. माहा-
 राजा ।

२१०. रूपा — रूपावत शाखाके राठीड़ । नजरां — भेंटें ; अत्थां — अर्थ, धन । जैसाह — सवाई
 राजा जयसिंह ।

२११. थाटपति — बँधवशाली, सेनापति । थाणै — स्थान, चौकी । दीध — दी । बापहूँ —
 पितासे । चवगुणी — चौगुणी । बाजी — मान, विजय (?) । गुमर — गर्व ।
 बियै — दूसरे, द्वितीय । गाजी — महाराजा गजसिंह ।

२१२. विदण — युद्ध । अयाक — (?) । लखे — देख कर । तप — अज, तेज । पाय —
 चरण, पैर । जोम — जोश, शक्ति । अचड़ां — महत्त्वपूर्ण कार्यों । भोमि — भूमि,
 धरा । आंणी — ले आया ।

२१३. लीधो — लिया । दुभल — वीर । पटौ — जागीर । दीधौ — दिया । सोईज — वही ।

२१४. सवायो — अधिक, विशेष । जेसांण — जयसलमेर ।

उछव^१ मिळ^२ त्रिय^३ जूथ^४ आए^५, गांन मंगळचार गाए ।
 अग्र^६ काम^७ कळस^८ आणे^९, पहव^{१०} वंदण कीध पाणे ॥ २१५
 द्रव्य^{११} रूप भराइ दीधौ^{१२}, कमंध तोरण वंदण^{१३} कीधौ ।
 जोइयौ^{१४} पह^{१५} नगरजेहौ^{१६}, अगै वरणण^{१७} कीध एहौ^{१८} ॥ २१६
 दळां^{१९} गहमह कीध^{२०} डंबर^{२१}, चौसरा सिर^{२२} हुवा^{२३} चंम्मर ।
 गाजतां^{२४} गजमेघ गाजा, वाजतां मंगळीक वाजा ॥ २१७
 एम^{२५} गढ^{२६} निज प्रौळ^{२७} आवै^{२८}, गांन सहचर^{२९} भूल गावै^{३०} ।
 कुंभ सनमुख निजर^{३१} कीधौ, लखे छत्रपति वांद^{३२} लीधौ ॥ २१८
 धरे तारक द्रव्य^{३३} धारां, वंदे^{३४} तोरण जेण वारां ।
 ऊतरे^{३५} गजहूंत^{३६} यारां^{३७}, जरी पगमँड^{३८} पडि^{३९} जियारां ॥ २१९

१ ख. उछव । ग. उछवा । २ ख. ग. मिली । ३ ख. त्रिय । ४ ख. ग. जूथ ।
 ५ ग. आऐ । ६ ख. अग्रि । ७ ख. ग. कामणि । ८ ख. ग. कळस । ९ ख. आणे ।
 ग. आणे । १० ख. ग. पौहीव । ११ ख. द्रव्य । १२ ख. दीधौ । १३ ख. वंदण ।
 ग. वंदन । १४ ख. जोवियौ । ग. जोवियौ । १५ ख. ग. पौही । १६ ग. जेहो ।
 १७ ख. वरणण । ग. वरणण । १८ ग. ऐहो । १९ ख. दलं । २० ख. कीयां । ग.
 कीधां । २१ ख. डंम्मर । २२ ख. सिरि । २३ ख. हुता । ग. हूतां । २४ ख.
 गजतां । २५ ग. ऐम । २६ ख. ग. निज गढ । २७ ख. ग. प्रौळि । २८ ख. ग.
 आऐ । २९ ग. सहचरि । ३० ख. गाए । ग. गाऐ । ३१ ख. ग. नजर । ३२ ख.
 वांदि । ३३ ख. द्रव्य । ग. द्रव्य । ३४ ग. वद । ३५ ग. ऊरितरे । ३६ ख. गजहूं ।
 ३७ ख. नियारां । ग. यारां । ३८ ख. ग. पगमँडि । ३९ ख. ग. मंडि ।

२१५. त्रिय - स्त्रिएँ । जूथ - समूह । मंगळचार - मांगलिक । काम - कामिनी । पहव -
 राजा । वंदण - अभिवादन । पाणे - हाथसे ।

२१६. जोइयौ - देखा । अगै - पहिले । एहौ - ऐसा ।

२१७. गहमह - भीड़, समूह । डंबर - उत्सव, हर्ष । चौसरा - चारों ओर । चंम्मर -
 चंवर । मंगळीक - मांगलिक ।

२१८. प्रौळ - प्रतिली, तोरणद्वार । सहचर - सखिएँ, सहेलियेँ । भूल - समूह । कुंभ -
 कलश । लखे - देख कर । वांद - अभिवादन कर के ।

२१९. तारक - चांदी, मोती ? । जेण - जिस । वारां - समयमें । जरी - चांदी-सोनेके तार,
 जिन पर सुनहला मुलम्मा हो । पगमँड - आदरके लिए किसी महात्मा या राजा
 महाराजाके मार्गमें पैर रखनेके लिये बिछाया हुआ कपड़ा ।

विछायत समियां^१ वणिया^२, तई^३ जरकसि^४ हीर तणिया^५ ।
 सिंघ आसण छत्र सोहै, महा जगमग^६ हंस मोहै ॥ २२०
 उरस छिवतौ^७ भूप आए, प्रगट बह^८ खंगार^९ पाए ।
 चम्मरां^{१०} दुळतेस^{११} चारे^{१२}, तखत बैठौ छत्रधारे^{१३} ॥ २२१
 भड़ां मंत्रियां^{१४} जूथ भारा, सजै^{१५} निज^{१६} दरबार^{१७} सारा ।
 भलां पातां जूथ^{१८} भेळा, वखाणै^{१९} पह^{२०} जेण वेळो ॥ २२२
 आज 'अभमल' भूप एहौ^{२१}, जुधां जीपण 'पंग' जेही ।
 सांसणां गयदां समापै, कुरंद^{२२} पातांतणा^{२३} कापै^{२४} ॥ २२३
 जोवतां हिंदवांण जोपै, अवर भूप न जोड़ ओपै ।
 दांन खगरी अचड़ दहुवै, चढ़ी कीरत^{२५} चकां चहुवै ॥ २२४

१ ग. सामियान । २ ख. वणियां । ३ ग. तेइ । ४ ख. ग. जरकस । ५ ख. तणीयां ।
 ६ ग. गजमग । ७ ख. छवितौ । ग. छवितो । ८ ख. ग. चोक । ९ ख. ग. शृंगार ।
 १० ख. ग. चम्मरे । ११ ग. दुळे । १२ ग. सीस चारे । १३ ग. छत्रधार । १४ ख.
 ग. मंत्रीयां । १५ ख. सभै । ग. सभे । १६ ख. नजरां । ग. नभरां । १७ ख. दरव ।
 ग. दरब । १८ ख. ग. भूल । १९ ख. ग. वखाणे । २० ख. पोही । ग. पोही ।
 २१ ग. ऐही । २२ ख. ऊरचंद । ग. कुरचंद । २३ ख. तणां । ग. तणो । २४ ग.
 कापै । २५ ख. ग. कीरति ।

२२०. समियां - तंबू, खेमा । जरकसि - सोने-चांदीके तारोंका काम । तणिया - तने ।
 सिंघ आसण - सिंहासन । जगमग - चमक-दमक । हंस - मन, आत्मा ।

२२१. उरस - आसमान । छिवतौ - स्पर्श करता हुआ । चम्मरां दुळतेस - चंवर डोलाते
 समय ।

२२२. जूथ - यूथ, समूह । भारा - बहुत । पातां - कवियों । वखाणे - प्रशंसा करते हैं ।
 वेळो - समय ।

२२३. एहौ - ऐसा । जीपण - जीतनेके लिये, जीतने वाला । पंग - राजा जयचंद । जेही -
 जैसा । समापै - देता है । कुरंद - निर्धनता, कंगाली । कापै - मिटाता है, दूर
 करता है, काटता है ।

२२४. जोवतां - देखने पर, देखते ही । जोपै - जोशमें आता है । जोड़ - समानता ।
 ओपै - शोभा देते हैं । दहुवै - दोनों । चकां - दिशाएँ । चहुवै - चारों ।

जावसी^१ नह जुगां जातां^२, वात रहसी वीस वातां ।
 बहसि^३ जोड़^४ न होय बीजै^५, कोड़^६ जुग लग राज कीजै ॥ २२५
 सुणै^७ वयणै^८ इम सकाजा, रीभ बगसै^९ महाराजा^{१०} ।
 आरती द्वजराज^{११} आणै^{१२}, प्रीत उच्छब^{१३} कीध पाणै^{१४} ॥ २२६
 'अभौ' जयचंद जेम आजा^{१५}, राजमिंदर^{१६} वसै^{१७} राजा ।
 पतिव्रता बह^{१८} उच्छब पाए^{१९}, अनम गढ़ तदि^{२०} जीति^{२१} आए ॥ २२७
 नवल रंग उछाह नेहा, जुगति रति रतिराज जेहा ।
 गुमर धरियां^{२२} भिलै गोखां, जोधपुर^{२३} गढ़ करै जोखां^{२४} ॥ २२८
 अधिक राजस छक अथाहै^{२५}, मुणै जिहवा^{२६} बैत माहै^{२७} ।
 ॥ २२९

दूहा^{२८}—दवावैत^{२९} मभि दाखियौ^{३०}, इसड़ी राज^{३१} अपाल ।
 जोधाणै जोधाण-पति, माणै धर 'अभमाल' ॥ २३०

१ ख. ग. जावसे । २ ग. जातां । ३ ख. बहसि । ग. वसी । ४ ग. होड़ । ५ ग. बीजौ । ६ ग. कोड़ । ७ ग. सुणै । ८ ख. वयणा । ग. वयणां । ९ ख. वगसे । १० ख. महाराजा । ११ ख. ग. द्विजराज । १२ ख. ग. आणे । १३ ख. ग. उच्छब । १४ ख. पाणे । ग. पाणे । १५ ग. अजा । १६ ख. राजमिंदरा । ग. राजमिंदरा । १७ ख. ग. वसे । १८ ख. बहौ । ग. बहु । १९ ख. आए । ग. पाये । २० ख. ग. पति । २१ ख. ग. जीत । २२ ख. धरीयां । २३ ख. जोधपुरि । २४ ग. जोषां । २५ ख. अथाहे । २६ ख. ग. जिमह्वा । २७ ख. ग. माहे । २८ ख. बोहा । ग. बोहो । २९ ख. ग. दवावैत । ३० ख. दाखियौ । ३१ ख. राजस ।

२२५. जुगां—युगों । वात—वीस वातां—निश्चय, अटल । बहसि—शोभा देगा । बीजै—दूसरे । लग—पर्यन्त ।

२२६. रीभ—पुरस्कार, इनाम । बगसै—प्रदान करते हैं । द्वजराज—ब्राह्मण । पाणै—हाथोंसे ।

२२७. आजा—आज । वसै—निवास करता है । अनम—नहीं झुकने वाले ।

२२८. नवल—नवीन, नया । रंग—आनन्द । उछाह—उत्साह । नेहा—स्नेह । रति—कामदेवकी पत्नी । रतिराज—कामदेव । गुमर—गर्व । भिलै—शोभायमान हो रहा है, कांतियुक्त हो रहा है । जोखां—आनन्द, मीज ।

२३०. मभि—मैं । दाखियौ—कहा, वर्णन किया । इसड़ी—ऐसा । अपाल—बेरोकटोक, निःशंक । माणै—उपभोग करता है ।

इम खट रित करि उछब अति, दिल आणंद दुभाल ।
दरसन काज दिलेसरां^१, मेले दळ 'अभमाल' ॥ २३१

महाराजारी बिल्ली प्रस्थान

मिळिया दळ जोधांणमभि, देखे भूप दुबाह^२ ।
डेरा दिल्ली दिस^३ दिया^४, सुभ मुहरत^५ 'अभसाह' ॥ २३२
कूच^६ नगारा वज्जिया^७, गिर गज्जिया^८ गहीर ।
समंद उलट्टे^९ जिम सजळ^{१०}, वट्टे^{११} लगे वहीर^{१२} ॥ २३३
अठठ^{१३} अटाळां^{१४} भार अति, कठठे जूंग कतार ।
तोप कठट्टे^{१५} गज टलां^{१६}, जूटां^{१७} धमळ जियार ॥ २३४
बह^{१८} जूटां^{१९} कठठेस बह^{२०}, अनि^{२१} आराब^{२२} अपार ।
पमंग गजां भड^{२३} पडतलां, वणि हिलोळ विसतार ॥ २३५

१ ख. ग. दिलेस्वरां । २ ख. ग. दुबाह । ३ ख. विसि । ४ ख. दीया । ५ ख. मोहोरत । ग. मोहरत । ६ ख. कूच । ७ ख. वज्जिया । ग. वाजिया । ८ ख. गज्जिया । ग. गंजीया । ९ ख. उलटां । ग. उलट्टां । १० ख. ग. सुजळ । ११ ख. वट्टां । ग. वाटां । १२ ग. वहीर । १३ ख. अठठ । १४ क. अताळां । ग. अटालौ । १५ ख. ग. कठट्टे । १६ ख. ग. टिलां । १७ क. जूथां । १८ ख. बहौ । ग. बौहौ । १९ ख. भूटां । २० ख. बहौ । ग. बोहौ । २१ ख. ग. अति । २२ ख. आराबां । ग. आराबा । २३ ख. ग. भर ।

२३१. खट रित - छः ऋतुएँ । दुभाल - वीर, योद्धा । दिलेसरां - बादशाहके । दळ - पत्र चिट्ठी । अभमाल - अभयसिंह ।

२३२. दुबाह - वीर, योद्धा । अभसाह - अभयसिंह ।

२३३. कूच - प्रस्थान । वज्जिया - ध्वनित हुए । गिर - पर्वत । गज्जिया - गर्जित हुए, ध्वनित हुए । गहीर - गंभीर । वट्टे - वाट, मार्ग । वहीर - प्रस्थान ।

२३४. अठठ - अटूट, अपार (?) । अटाळां - सामान । कठठे - कठठकी ध्वनि करते चलना । जूंग - ऊँट । कठट्टे - बोझ आदिके कारण शकटादि ध्वनि करते चले । टलां - टक्कर । जूटां - दो, युग्म । धमळ - बैल । जियार - जब ।

२३५. बह - बहुत । जूटां - जुते पर । कठठेस - ध्वनि जो भारसे लदे शकटादिके चलने पर होती है । अनि - अन्य । आराब - तोप । पमंग - घोड़ा । भड - योद्धा । पडतलां = भडपडतलां - योद्धाओं के परतले जिनमें तलवारें लटकाई जाती थीं । हिलोळ - समुद्र ।

सौधां खांनां^१ वेल सजि^२, वटां^३ कहार वहाय ।
 कावड़^४ सरवण धारि कंध, जाणै^५ तीरथ जाय ॥ २३६
 भळहळ साजां गज भिड़ज, मफा^६ इका सुखपाल ।
 घोड़-वहल खासा घणा, दरगह मुहर^७ दुभाल ॥ २३७
 करि^८ तयार हाजर^९ किया^{१०}, औधांदारां आय ।
 साज^{११} जरकसी सोवना^{१२}, विध^{१३} विध नौख वणाय ॥ २३८
 करि पौसाक^{१४} ससत्र^{१५} कसि, साजां^{१६} तुरंग^{१७} सिंगार^{१८} ।
 इम चढ़ि चढ़ि भड़ आविया^{१९}, दळ बह^{२०} राजदुवार^{२१} ॥ २३९
 आतस भळ^{२२} पैदल^{२३} अधिक, बहल खोसबरदोर ।
 दुभल नगरै दूसरै, आया दळ अणपार ॥ २४०

१ ख. वाना । २ ख. ग. सभि । ३ ग. वाटे । ४ ख. ग. कावडि । ५ ख. ग. जाणे ।
 ६ क. पफा । ७ ख. मोहोर । ग. मोहोरि । ८ ग. कर । ९ ख. हरवर । १० ख.
 कीया । ११ ख. सा । १२ ख. सोवतां । १३ ख. विधि विधि । १४ ख. पौसाकां ।
 ग. पौसावां । १५ ख. ग. सस्त्र । १६ ख. जासां । ग. साजा । १७ ग. तुरगि ।
 १८ ग. सिंगारि । १९ ख. आवीया । २० ख. वही । ग. बोही । २१ ग. राजदवार ।
 २२ ख. फळ । २३ ख. फल ।

२३६. सौधां खांनां - राजप्रासाद, अन्तःपुर । वेल सजि - सरदारोंके पदनिशीन जनानाकी सवारी विशेष जो बैलों द्वारा वहन की जाती है । वटां - मार्ग । कहार - पालकी आदिको उठा कर चलने वाला । कावड़ - बोझा ढोनेके लिये तराजूके आकारका एक ढांचा, कांवर । सरवण - श्रवणकुमार । जाणै - मानों ।

२३७. भळहळ - देदीप्यमान । साजां - घोड़े, ऊँट आदिके चारजामेके उपकरण । भिड़ज - घोड़ा । मफा - एक प्रकारकी सवारी । इका - इक्का । घोड़ बहल - घोड़ोंसे खींची जाने वाली गाड़ी विशेष । खासा - राजा या बादशाहकी सवारीका घोड़ा या हाथी । दरगह - दरबार । मुहर - अगाड़ी । दुभाल - वीर, योद्धा ।

२३८. औधांदारां - पदाधिकारी । सोवना - सोनेका । नौख - बढ़िया, श्रेष्ठ ।

२३९. कसि - धारण कर के, बाँध कर के । तुरंग - घोड़ा । सिंगार - सजावट कर के । दळ - सेना ।

२४०. आतस भळ - तोप । बहल - शकट या रथ विशेष । खास बरदार - वह नौकर जो बन्दूक या बल्लम ले कर मालिकके आगे चलता हो । अणपार - असीम, अपार ।

तखि^१ भूलै^२ जरतारियां^३, कूची सोव्रन काम ।
 तंग चहूँ^४ रेसम तणा, जंग किलंगी जांम ॥ २४१
 मौहरी^५ डोरी रेसमी, नौखी चँदण नकेल ।
 रूपाळक फण नाग रंग, बालक जुंग^६ बकेल ॥ २४२
 पाव घड़ी जोजन परा, जिके सहज मभ^७ जाय ।
 कसि मलूक गदरा किया, इसड़ा हाजर आय ॥ २४३
 सकति पूजि^८ 'अभमल' सुपह, पहिर ऊंच पौसाक ।
 करि दधबँध^९ आवध कसे, मलपे छक मुसताक ॥ २४४
 हाल कलोहळ बह^{१०} हुतां, मुजरा छक मैमंत ।
 तांम नगारै^{११} तीसरै, गज^{१२} चढ़ियौ गहतंत ॥ २४५
 चौसर सिर^{१३} हूतां^{१४} चमर दळ^{१५} सभि हले दुभाल ।
 मिळण 'साह महमंद'हूँ, महाराजा^{१६} 'अभमाल' ॥ २४६

१ ख. ग. तषी । २ ख. ग. भूल । ३ ख. जरतारीयां । ४ ख. ग. चहुवें । ५ ख. मोहोरी । ग. मोहोरी । ६ ख. ग. जूंग । ७ ख. ग. मभि । ८ ग. पूज । ९ ख. दधिवंध । ग. दधिवद । १० ख. बौहौ । ग. बौहौ । ११ ख. तगारै । १२ ख. गजि । १३ ख. सिरि । १४ ग. हुतां । १५ ख. दलि । १६ ख. माहाराजा ।

२४१. तखि — ऊँटके चारजामेके नीचे लगाई जाने वाली गद्दी विशेष । भूलै — भूल ऊँट, घोड़ा, बैल आदिकी पीठ पर डालनेका कपड़ेका बना उपकरण । जरतारियां — जिसमें सोने-चांदीके तारोका काम हो । कूची — ऊँटका चारजामा । सोव्रन — सुवर्णका, स्वर्णम । तंग — ऊँट या घोड़ेकी जीन कसनेका पट्टा । जंग — जंगी, बड़ी (?) । किलंगी — पक्षियों के पंखों या चमकदार जरतारों से बना शिरका आभूषण विशेष । जांम — (जाम ?) ।

२४२. मौहरी — ऊँटको नाकके साथ बांधनेकी रस्सी विशेष । नौखी — उत्तम, बढ़िया । नकेल — ऊँटके नाकमें डालनेका काष्ठ या धातुका बना उपकरण विशेष । रूपाळक — चांदीके, रोप्यके । जुंग — ऊँट । बकेल — मस्त ।

२४३. सहज — आसानीसे । मभ — में । मलूक — सुंदर । इसड़ा — ऐसा ।

२४४. सकति — शक्ति, देवी । अभमल — महाराजा अभयसिंह । ऊंच — श्रेष्ठ, उत्तम । दधबँध — (?) । आवध — आयुध । मलपे — (?) । छक — जोश । मुसताक — उत्कण्ठित (?) ।

२४५. हाल — गति, चाल । कलोहळ — कोलाहल । मुजरा — अभिवादन । मैमंत — मस्त । तांम — तब । गहतंत — मस्त ।

२४६. चौसर — चारों ओर । सभि — सुसज्जित कर के । दुभाल — वीर ।

छंद हणूकाल^१

नग तुरँग घमघम नाळ, थट भोम धमहम थाळ ।
 धसमसत धर धहराय, जदि सेस नमि नमि जाय ॥ २४७
 करि कटक हलत कमंध, कसकंत कूरम कंध ।
 उडि गरद चढि असमांन^२, भर^३ तिमर ढंकिय^४ भांण ॥ २४८
 जसवळ^५ [i] हाक सजोर, घंटबीर^६ घग्घर^७ घोर^८ ।
 भळकंत चित्रत भाल, ढळकंत बह^९ रंग^{१०} ढाल^{११} ॥ २४९
 दुति सेल^{१२} फळ दमकंत^{१३}, किरणाळ जिम चमकंत^{१४} ।
 बंब^{१५} गजर^{१६} घोर व्रंवाळ, तळ वितळ चळचळ ताळ ॥ २५०
 बहतास उरस विहंग, पर धार भार पनंग^{१७} ।
 अकुळाइ^{१८} पड़त अनेक, कुरंगांण मूभ्त^{१९} केक ॥ २५१

१ ग. हणुफाल । २ ख. ग. असमांण । ३ ख. ग. भर । ४ ख. ग. ढंकीयो । ५ ख. ग. जसवत्तल । ६ ख. ग. घंटबीर । ७ ख. ग. घग्घर । ८ क. कोर । ९ ख. वही । ग. बोही । १० ख. गज । ग. गम्भ । ११ ख. ग. ढाल । १२ ख. ग. सेल । १३ ख. दमकति । *किरणाळ जिम चमकंत ।—पद्यांश ख. प्रतिमें नहीं है । १४ ख. बंब । १५ ग. राज । १६ ग. पनंग । १७ ख. ग. अकुळाय । १८ ग. मूभ्त ।

२४७. नग—पंर, चरण । घमघम—ध्वनि विशेष । नाळ—घोड़ेके सुमके नीचे बल्यके आकारका लगाया जाने वाला लोहेका उपकरण । थट—वैभव । धमहम—वर्ण्यमान (?) । थाळ—स्थाल । धसमसत—धसती है । धर—भूमि । धहराय—कम्पायमान होती है । सेस—शेषनाग ।

२४८. कमंध—राठीड़ । कसकंत—दबता है, धसता है । कूरम—कूर्मावतार । गरद—धूलि । ढंकिय—आच्छादित हो गया । भांण—सूर्य ।

२४९. जसवळ—यशगायक, यश । हाक—आवाज । सजोर—जोरपूर्ण । घंटबीर—बीरघंट, हाथीकी भूलके साथ लटकने वाला घंटा । घग्घर—ध्वनि । तेज । भळकंत—चमकता है । भाल—ललाट । ढळकंत ढाल—पीठ पर लटकती हुई ढाल ।

२५०. दुति—द्वुति, कांति । सेल—भाला । फळ—भालेका अग्र भाग, भालेकी नोक । दमकत—चमकता है । किरणाळ—सूर्य । बंब—नगाड़ा, नगाड़ेकी ध्वनि । गजर—ध्वनि (?) । व्रंवाळ—नगाड़ा । तळ—सात पातालोंमें प्रथम पाताल । वितळ—पुराणा-नुसार सात पातालोंमेंसे तीसरा पाताल । चळचळ—कम्पायमान । ताळ—(पाताल ?) ।

२५१. उरस—आसमान । पर धार—पंख वाले । पनंग—सर्प, नाग । कुरंगांण—हरिणसमूह, हरिण । मूभ्त—दम घुटता है, घुटन होती है ।

वजि स्वास^१ नास ब्रहास, तर भुडद आतस तास ।
 लंगरां^२ खरळक लागि, उडि^३ पड़त गिरउर^४ आगि ॥ २५२
 हूकळां^५ कळहळ हूंत, कळकळा भगभग कूंत ।
 असि फेण फबि धर एम, तै उरस उडगण तेम ॥ २५३
 सर सुखत^६ जळ सरितास^७, खित चौक मंडित^८ खास ।
 दिन केक^९ मांहि^{१०} दुभाळ, इम लियां^{११} दळ 'अभमाल' ॥ २५४
 रवि जेम^{१२} मधिसम^{१३} रूप, भळहळत क्रामति^{१४} भूप ।
 अति उछव^{१५} डमर^{१६} अनंग^{१७}, आवियौ^{१८} दिली अभंग ॥ २५५
 तब^{१९} अरज बगसी तांम, विध^{२०} आगमण वरियांम ।
 जिण^{२१} सुणे^{२२} साह जबाव^{२३}, तेडियो^{२४} भूप सताब ॥ २५६
 खित^{२५} नकौ जोतिस खूंच, स्वा हीज सायत ऊंच ।
 साहरा डील सधीर, एवज्ज^{२६} मौज अमीर ॥ २५७

१ ख. ग. सास । २ ख. लंगरां । ग. लंगर । ३ ग. उड । ४ ख. ग. गिरवर ।
 ५ ग. हुकला । ६ ग. सौष । ७ ख. ग. सलितस । ८ ख. ग. मंडित । ९ ख.
 केडक । ग. केयक । १० ग. मांभि । ११ ख. लीयां । ग. लीया । १२ ग. जेठ ।
 १३ ख. मध्यसम । ग. मधसम । १४ ग. क्रमती । १५ ख. ग. उछव । १६ ख. ग.
 डवर । १७ ख. ग. उमंग । १८ ख. आवीयो । ग. आवियो । १९ ग. तवि । २० ख.
 ग. विधि । २१ ग. जिणे । २२ ग. सुणे । २३ ख. जवाव । २४ ख. तेडीयो । ग.
 तेडीयो । २५ ख. ग. पिति । २६ ग. एवज ।

२५२. नास - नाक । ब्रहास - घोड़ा । भुडद - गिरते हैं । आतस - उष्णता । तास -
 त्रास, डर । लंगरां - हाथीके पैरकी जंजीरें । खरळक - शृंखला या लंगरकी ध्वनि ।
 गिरउर - गिरिवर, पर्वत ।
 २५३. हूकळां - घोड़ोंके हिनहिनाहटकी ध्वनि । कळहळ - कोलाहल । हूंत - होता है ।
 कळकळा - अत्यन्त उष्ण, तेज । भगभग - चमकते हैं (?) । कूंत - भाला । फेण -
 फेन, भाग । फबि - शोभा देकर ।
 २५४. सरितास - तदी । खित = क्षिति - पृथ्वी ।
 २५५. भळहळ - देदिप्यमान होता है, चमकता है । क्रामति - कांति, दीप्ति । उछव -
 उत्सव । डमर - समूह । अभंग - वीर, योद्धा ।
 २५६. बगसी - बखशी, वह अधिकारी जो लोगोंको वेतन देता हो । आगमण - आगमन,
 आना । वरियांम - श्रेष्ठ । तेडियो - बुलाया । सताब - शीघ्र ।
 २५७. खूंच - कमी (?) । सायत - शायद, मुहूर्त ? । डील - व्यक्ति, आदमी ।

दिल्लीस मुनसपदार, अम्मीर^१ खब^२ उणवार ।
 दळ पूर संग^३ दरियाव, औ^४ अमीरल उमराव ॥ २५८
 विध^५ सांमुहौ वरियांम, निज खानदौरां नाम ।
 मेल्लिया^६ घण^७ अम्मीर, सांमुहा भूप सधीर ॥ २५९
 मुजि नमे^८ साह समान^९, विध^{१०} कहै^{११} हुकम विधान ।
 मुणि हले पह^{१२} 'अभसाह', दिल्लेस दिस^{१३} दरगाह ॥ २६०
 जवनेस दरगह जाय, ऊतरे गजहूं आय ।
 छक चढे पूर छछौह^{१४}, बह^{१५} जाणि संग्रफ बौह^{१६} ॥ २६१
 मुख^{१७} उदत^{१८} जाणि^{१९} प्रमाण^{२०}, जगचक्ख^{२१} बारह^{२२} जाण ।
 ॥ २६२

कवित्त छप्पे^{२३}

आंबखास मझि 'अभौ', उरसि^{२४} छिवतौ पह^{२५} आए ।
 दुहुं^{२६} राह देखतां, अरज बगसी गुजराए ॥ २६३

१ ख. ग. अमीर । २ ख. ग. खब । ३ ख. ग. संगि । ४ ख. यौ । ग. यौ । ५ ख. विधि । ग. धि । ६ ख. मेल्लीया । ७ ग. घण । ८ ग. नमे । ९ ख. समाज । १० ख. ग. विधि । ११ ख. ग. कहे । १२ ख. ग. पौहौ । १३ ख. ग. दिसि । १४ ख. ग. छछौह । १५ ख. ग. बौहौ । १६ ख. बौह । ग. बोह । १७ ग. मुधि । १८ ख. ग. उदित । १९ ख. ग. जोति । २० ख. प्रमाणि । २१ ख. ग. जगचक्ख । २२ ख. जाणि । २३ ग. छप्पे । २४ ख. ग. उरस । २५ ख. पौहौ । ग. पौहौ । २६ ख. दुहुं । ग. दुहुं ।

२५८. अमीरल उमराव — अमीर उमराव ।

२५९. खान दौरां — बादशाहके एक दरबारीका नाम ।

२६०. अभसाह — महाराजा अभयसिंह । दिल्लेस — बादशाह । दिस — तरफ, ओर । दरगाह — दरबार ।

२६१. जवनेस — बादशाह । छक — जोश । छछौह — तेज ।

२६२. उदत — कांति, तेज । प्रमाण — समान । जगचक्ख — सूर्य, भानु ।

२६३. आंबखास — आमखास । अभौ — महाराजा अभयसिंह । उरसि — आसमान । छिवतौ — स्पर्श करता हुआ । राह — सम्प्रदाय, पंथ, मार्ग । गुजराए — पेश की ।

तई मीर तुभकेस, नजर दौलत ऊचारे^१ ।
 वदन नयण^२ विलकुलै^३, साह बह^४ कुरब सधारे^५ ।
 सौ सौ सलांम जोड़ग सभै, नरिंद तठै अनमी नभै^{*} ।
 दे हेत सबै साहसुं मिळे, नरंद जठै अनमी नभै^{॥ २६३}
 बहुत^१ नजीक बुलाय, कहै^२ इम साह हेत कर ।
 हौ चगे खुसबखत, महाराजा^३ राजेस्वर^४ ।
 वहुत^५ दिनूसै^६ मिळे, आज हमै^७ खुस होई ।
 दिगर खैर अफियत्त^८, सुमां सुभ निजर^९ सकोई ।
 अंबखास जोति दूणी उदति^{१०}, सोभा तप सरसाविया^{११} ।
 तुरकांण हेक हिदवांण तड़, दुहूं भांण दरसाविया^{१२} ॥ २६४
 डेरां डंबर वणे, सीख करि तांम सधारे^{१३} ।
 गज अरोह^{१४} दरगाह, प्रथो^{१५} रछपाळ^{१६} पधारे ।

१ ग. उच्चारे । २ ग. नयन । ३ ख. ग. विलकुलै । ४ ख. ग. बहौ । ५ ग. सधारे ।

॥...॥ ये दो पंक्तियां प्राप्त सभी प्रतियोंमें अस्पष्ट हैं ।

*यहासे आगे ख. तथा ग. प्रतियोंमें निम्न पंक्तियां मिली हैं—

‘तरजवी पेच कोरां तितै अतिहठ हौ आणे अभै ।’

६ ख. बौहौत । ग. बहौत ।

॥...॥ विहित पंक्तियां ग. प्रतिमें नहीं है ।

७ ख. कहे । ८ ख. माहाराजा । ९ ख. राजेसुर । १० ख. वहौत । ग. बहौत ।
 ११ ग. दिनौ । १२ ख. हमै । ग. अभै । १३ ख. अफियत । ग. अफिइत । १४ ख.
 ग. नजर । १५ ख. ग. उदित । १६ ख. सरसावीया । ग. दरसावीयो । १७ ख. दर-
 सावीया । ग. दरसावीयो । १८ ग. सिधारे । १९ ख. ग. अरोहि । २० ख. ग. प्रियो
 २१ ग. रछपाळ ।

२६३. तई—उस, आततायी । मीर तुभकेस—अभियान या जलूस आदिकी व्यवस्था करने
 वाला । नजर दौलत ऊचारे—“नजर दौलत” कहा । वदन—मुख । विलकुलै—
 (?) । सौ सौ.....सभै—बराबर के वैभव वाले सौ-सौ बार अभिवादन
 करते हैं ।

२६४. चगे—स्वस्थ । खुसबखत—खुशकिस्मत, सोभाग्यशाली । अफियत्त—सुख, चैन,
 स्वास्थ्य, अफियत । सुमां—(?) । दूणी—द्विगुणित । सरसाविया—
 सुशोभित हुए । तुरकांण—यवन । तड़—दल । दरसाविया—दिखाई दिये ।

२६५. डेरां—पड़ावों या ठहरनेके स्थानों । डंबर—समूह । रछपाळ—रक्षक ।

आय डेरां उतरे^१, तेण^२ मौसर पतिसाहां ।
 भेजे खिजमतिगार^३, पौस^४ जरकसी जिलाहां ।
 अंगूर नासपाती बिही^५, घणी सेव सरदा घणा^६ ।
 मेलिया^७ खूब^८ महमांनियां^९, तरह तरह मेवां तणा ॥ २६५

तै खुसबखती अतर, रचे डंबर रिभ्वारां^{१०} ।
 गुल-क्यारां रंग गहर, हौद चादरां फुंहरां ।
 जळ धारां कढि^{११} जमी, रोसदारां रसतारां ।
 नीभारां कारजां^{१२}, जिलहदारां गुलजारां ।
 'जसराज-पुरा' गोढ़े^{१३} जदिन, रचै 'अभै-पुर' रंगरौ ।
 इखतां हवाल ललचै अमर, उपवन जांणि अनंगरौ ॥ २६६

हमीदखांका गुजरातमें आजाद होना

एम भिलै^{१४} 'अभपती'^{१५}, सुणै रंगराग सकाजा ।
 भिलै साह महमंद, तई^{१६} आणंद^{१७} तराजा ।

१ ख. उतरे । ग. ऊतरे । २ ग. तिण । ३ ख. खिजमतगार । ४ ख. ग. पौस ।
 ५ ख. ग. बीही । ६ ग. घणां । ७ ख. ग. मेलहीया । ८ क. घून । ९ ख. मह-
 मानीयां । ग. महमांनीयां । १० ख. रीभ्वारां । ११ ग. कढ़ । १२ कारजा । ग.
 करंजण । १३ ख. ग. जोड़े । १४ ग. भिले । १५ ख. अभपती । ग. अभपति ।
 १६ ख. नई । ग. तेइ । १७ ग. आणदि ।

२६५. मौसर—अवसर । खिजमतिगार—सेवक । पौस—पोशाक अर्थ ठीक बैठता है ।
 जरकसी—सोने-चांदीके तारोंका काम । जिलाहां—(जिलह या चमकदार ?) । सेव—
 सेव नामक फल । सरदा—एक प्रकारका बढ़िया खरबूजा जो कानुलमें होता है ।
 महमांनियां—आतिथ्य-सत्कारके लिये ।

२६६. डंबर—सुगंध, महक । रिभ्वारां—(रीभ, प्रसन्न करने वाले ?) । गुल क्यारां—
 फूलोंकी क्यारियां । रोस-दारां—(?) । रसतारां—(?) ।
 जिलहदारां—कांतियुक्त, मनोहर । गुलजारां—उपवनों । गोढ़े—पास, निकट ।
 जदिन—जिस दिन । इखतां—देखने पर । हवाल—हाल, स्थिति ।

२६७. भिलै—मस्त होता है, हर्षयुक्त होता है । अभपती—महाराजा अभयसिंह । साह-
 महमंद—मुहम्मदशाह बादशाह । तई—उसके । तराजा—समान, तुल्य ।

समै जेणि^१ दक्षिणेश^२, दुंद^३ *ऊठे^४ चढ़िया^५ दळ ।*
 साहिजादौ^६ जंगळी, मुरड़ि गुजरात महाबळ^७ ।
 हैमंद दिखणियां^८ एक हुय^९, असपति अमल उठाविया^{१०} ।
 हाका पुकार सौबा^{११} हणै^{१२}, वाका दिल्ली आविया^{१३} ॥ २६७

सात हजारां सहित^{१४}, मारि गिरधरा बहादर ।
 बाणूं^{१५} लख माळवौ^{१६}, लीध उज्जीणतणी^{१७} धर ।
 सौबा^{१८} सूरततणा^{१९}, अनै^{२०} अहमदपुर वाळा ।
 ते काजम रा तीन, किलम दारण कळिचाळा ।
 चाळीस सहस दळ चापड़ै, सौबा^{२१} जिकै^{२२} संघारिया^{२३} ।
 अभरांमकुळी^{२४} रुसतम-अली, मुगल सुजाहत मारिया^{२५} ॥ २६८

पातिसाहरो सर-बुलंदनै गुजरातरो सूबादार बणाणौ

वाका सुणि^{२६} असपती, कहर कोपियो^{२७} भयंकर ।
 विदा कीध सिरविलंद, दूठ समसेर बहादर ।

१ ग. जेण । २ ख. दक्षिणसूं ; ग. दक्षिणसुं । ३ ख. ग. दुंद । ४ ख. उठे । ५ ख. चढ़िया । *...*ग. प्रतिमें — 'चढ़े उठि हियो दळ ।' पाठ है ।

६ ग. साहिजादो । ७ ख. माहाबल । ८ ख. दक्षिणीयां । ग. दक्षिणियां । ९ ख. ग. होय । १० ख. उठावीया । ११ ख. ग. सोबां । १२ ख. हणे । १३ ख. आवीया । १४ ग. सहत । १५ ख. वाणूं । ग. वाणू । १६ ग. माळवो । १७ ख. उज्जेणतणी । ग. उज्जीणतणी । १८ ख. सूबा । १९ ख. ग. सूरततरा । २० ग. अनेक । २१ ख. ग. सोबा । २२ ख. ग. जिके । २३ ख. संघारीया । २४ ग. अभिरांमकुली । २५ ख. मारीया । २६ ग. सुण । २७ ख. ग. कोपीयो ।

२६७. दक्षिणेश — दक्षिणके अधिपति या शासक । दुंद = दुन्द — उत्पात, कलह, उपद्रव ।

साहिजादौ...महाबळ —

हैमंद — हमीदखां । अमल — अधिकार । सौबा — प्रान्त, प्रदेश, सूबा । वाका — समाचार, वृत्तान्त ।

२६८. बाणूं — बानवे । अनै — और । किलम — यवन, मुसलमान । कळिचाळा — योद्धा, वीर । चापड़ै — युद्धके मैदानमें, खुले मैदानमें ।

२६९. कहर — क्रोध, कोप । कोपियो — कुपित हुआ । दूठ — जबरदस्त ।

दीध कोड़^१ हिक^२ दरब, दीध पच्चास^३ सहँस दळ ।
 सुजड़ खाग सिरपाव, मुसक असि दीध मद्गळ^४ ।
 कत्तावम^५ मुरजल-मुलकका, दीध अराबा घण मुदित^६ ।
 ईरान विरद उजवाळनू^७, पांन दीध तुरानपति ॥ २६६

सर-बुलंदरौ अहमदाबाद पर अमल करणौ

विखम दळां सभि 'विलंद', एम गुजर^८ धर आए ।
 अंग नायब आपरौ, चुरस हरवळां चलाए ।
 जांम सुणे जंगळी, चढ़े सांमुहां चलाया ।
 सभे अडाळत^९ समर, मारि दळ गरद^{१०} मिळाया ।
 आवियौ^{११} 'विलंद' छिबतौ^{१२} उरस, चकि 'हैमंद' तदि चालियौ^{१३} ।
 दस सहँसहूँत सिर 'विलंद'रौ, हरवळ मारे हालियौ^{१४} ॥ २७०

सर-बुलंदखांका अहमदाबाद पर सुतंतर बादशाह बणणौ

साथ मंत्री साभिया^{१५}, निडर दिल फिकर न धारे^{१६} ।
 खिस गौ 'हमंदखांन'^{१७}, सरस तिण जोम सधारे ।

१ ख. ग. कोडि । २ ग. क । ३ ग. पचास । ४ ख. मुद्गल । ५ ख. कितावम ।
 ग. किताब । ६ ख. मुदित । ७ ख. अजवाळनू । ८ ख. गुज्जर । ग. गुजर । ९ ख.
 ग. अडालज । १० ग. गिरद । ११ ख. आवीधौ । १२ ख. छिबतो । ग. छिबतो ।
 १३ ख. चालीयौ । १४ ख. हालीयौ । १५ ख. साभियां । १६ ख. बारे । १७ ख.
 ग. हैमंदखान ।

२६६. हिक - एक । दरब - द्रव्य । सुजड़ - कटार । असि - घोड़ा । मद्गळ - हाथी ।
 कत्तावम - खिताब, पद । मुरजल - मुबारिजुल-मुल्क - यह सर बुलंदखांकी उपाधि
 थी । अराब - तोप । घण मुदित - अत्यधिक हर्षित हो कर । तुरानपति - तुरान
 तातारका एक नाम है । भुगल तातारकी तरफसे आये थे, अतः कविने बादशाह
 मुहम्मदके लिए तुरानपति शब्दका प्रयोग किया है ।

२७०. चुरस - श्रेष्ठ । हरवळां - सेनाके अग्र भाग पर, हरावल । अडाळत - (?) ।
 गरद - धूलि । छिबतौ - स्पर्श करता हुआ, झूता हुआ । हैमंद - हमीदखां ।
 हालियौ - चला गया ।

२७१. खिस गौ - खिसक गया, पराजित हो गया । हमंदखांन - हमीदखां । सरस - हर्ष-
 पूर्वक । जोम - जोश, उमंग ।

इम मनसभ^१ जाणियो^२, खूद न गिणूं धर खाऊं ।
 अहमदपुर^३ अपणाय, जुदौ^४ पतिसाह कहाऊं ।
 करि इम सलाह मुरडे किसम, मेळ गनीमां मंडियो ।
 आपरौ अमल कीधौ इळा, असपति अमल उचंडियो^५ ॥ २७१

महाराजा अभेसीधजीरं प्रभावरी वरणण

उठै 'दिली'^६ उणवार, 'अभौ' दारुण अतुलीबळ^७ ।
 उरस^८ छिवै^९ अधपती^{१०}, भळळ पौरस^{११} भाळाहळ^{१२} ।
 कमध^{१३} सहाई^{१४} करै, आप मन मभि जीयांणै^{१५} ।
 अन^{१६} अमीर सुर असुर, जियां तिलमात न जाणै ।
 ऊपटै^{१७} भुजां पौरस^{१८} अघट, भावै कितां अभावणौ ।
 धारियां^{१९} अडिग हिंदू धरम, तै सुभाव^{२०} घरवटतणौ ॥ २७२

महाराजा अभेसीधरी दिलीमें सूररी सिकार करणी तथा बादशाहसूं आमलासमें
 नाराज होणौ अर पातसाजीरौ अभेसीधजीनूं मनावणौ

महमंद^{२१} रमणां^{२२} मांहि, दिली जाहर दरवारां ।
 सूर सौंस^{२३} आसुरां, सूर मारिया^{२४} सिकारां ।

१ ख. मनसभि । ग. मनमभि । २ ख. जाणीयो । ग. जाणियो । ३ ग. अहमदपुर ।
 ४ ग. जुदो । ५ ख. उचंडियो । ग. उचंडियो । ६ क. अभौ । ७ ख. अतुलीबल । ग.
 अतुलीबळ । ८ ग. उरसि । ९ ख. ग. छिवै । १० ग. अधपति । ११ ग. पौरस ।
 १२ ख. भालाहस । १३ ख. कंध । ग. कंधि । १४ ख. सहाई । ग. सवाई । १५ ख.
 ग. जिम आणै । १६ ख. ग. अनि । १७ ग. ऊपडै । १८ ख. पौरस । १९ ख.
 धारीयां । २० ग. सभाव । २१ ख. ग. महमद । २२ ख. ग. रमणा । २३ ग.
 सूस । २४ ख. सारीयां ।

२७१. खूद - बादशाह । अहमदपुर - अहमदाबाद । अपणाय - अपने अधिकारमें कर के ।
 जुदौ - पृथक ही । मुरडे - कुपित हो कर, विरुद्ध हो कर । मेळ - मित्रता । गनीमां -
 शत्रुओं । वि.वि. - यहाँ पर यह शब्द मरहटोंके लिये प्रयोगमें लिया गया है ।
 मंडियो - कर लिया । इळा - पृथ्वी । असपति - बादशाह । उचंडियो - उठा दिया,
 हटा दिया ।

२७२. अतुलीबळ - शक्तिशाली । अधपति = अधिपति - राजा । भळळ - देदीप्यमान ।
 पौरस - पौरुष, शक्ति, बल । भाळाहळ - अग्नि, सूर्य । सहाई - मदद, सहायता ।
 जियां - जिन । ऊपटै - उमड़ता है । अघट - अपार, असीम । भावै - चाहे ।
 अभावणौ - अप्रिय, अशुचिकर । घरवटतणौ - वंशका, कुलका ।

२७३. महमंद - बाहशाह मुहम्मदशाह । सूर - सूअर । सौंस - शपथ ।

ऊभौ तुरराबाज, सुणै^१ पाए^२ आपाणै ।
 अडस^३ लागि^४ आयौ^५, खाग^६ जाळण खुरसाणै ।
 किलमेस सहित रुठे कमंध, अंबखास ऊठावियौ^७ ।
 करि नजर^८ प्रीत^९ भय हूंत^{१०} करि, महमंद 'अभौ' मनावियौ^{११} ॥ २७३

बादसाह मुहम्मद साह खनै गुजरातसू खबर आवणी

दीवौ^{१२} करि देखिजै, इसी नह लाय अकारी ।
 जोर तळव जायगा^{१३}, विदा कीजै छत्रधारी ।
 इम करतां आळोज, अरज वाकी इम आयौ ।
 सिर^{१४} विलंद सिर जोर, अमल गुजरात उठायौ ।
 फुरमाण न वदै^{१५} आपरा, इम सुणि वचन अभाविया^{१६} ।
 ततवीर करण मसलति तणा, वडा अमीर बुलाविया^{१७} ॥ २७४
 बगसी^{१८} अने^{१९} वजीर, बहसि^{२०} अति जदा बरही^{२१} ।
 उभै वेग^{२२} आविया^{२३}, 'खानदौरां'^{२४} कमरही^{२५} ।
 सुणे^{२६} साह महमंद, सुणे^{२७} नब्बाव^{२८} सलाही ।
 रंग किया^{२९} राफजी^{३०}, हुकम लोपिया^{३१} अलाही ।

१ ख. ग. सुणे । २ ग. पायै । ३ ख. अडस । ग. अडसि । ४ ग. लाग । ५ ख. आवीयौ । ग. आवियो । ६ ख. ग. घागि । ७ ख. उठीयौ । ग. उठावीयौ । ८ ख. ग. नजरि । ९ ख. ग. प्रीति । १० ग. हुत । ११ ख. मनावीयौ । १२ ख. दिवौ । ग. दीयो । १३ ग. जायमा । १४ ख. सिरि । १५ ख. वंदै । १६ ख. ग. अभाविया । १७ ख. बुलावीया । १८ ख. ग. बगसी । १९ ग. अने । २० ख. ग. बहस । २१ ख. ग. बरही । २२ ख. ग. वेगि । २३ ख. आवीया । २४ ख. खानदौरां । २५ ग. कमरही । २६ ख. सुणै । ग. सुणै । २७ ख. सुणै । २८ ख. नब्बाव । ग. नबाव । २९ ख. ग. कीया । ३० ख. राफसी । ग. रापसी । ३१ ख. लोपीया ।

२७३. अडस — डाह, दाह । किलमेस — बादशाह, यवन । अभौ — महाराजा अभयसिंह । मनावियो — प्रसन्न किया, संतुष्ट किया ।

२७४. दीवौ — दीपक । लाय — अग्नि काण्डकी अग्नि । अकारी — कमजोर । आळोज — विचार । वाकी — वृत्तान्त, समाचार । सिर-जोर — बागी, विद्रोही, सरजोर । अभाविया — अप्रिय, अरुचिकर । ततवीर — अभिष्ट सिद्ध करनेके साधन, तदवीर । मसलती तणा — मसलहतके, विचारके ।

२७५. बरही — (?) । राफजी — वह सेना या दल जो अपने अधिपतिको छोड़ दे; शीया मुसलमानोंका वह दल जिसने हजरतअलीके लड़के जैदका साथ छोड़ दिया था ।

आळोज करण लागा असुर, कहै^१ न^२ जाब कहावियौ^३ ।
 अहमदाबादहंता इतै, वाकौ दूजौ आवियौ^४ ॥ २७५
 ईरानी अतपाक^५, दखिण मिळ^६ किया^७ दुबाहां^८ ।
 मंडिया^९ जठै गनीम, जठै सहनक पतिसाहां ।
 आठ पहर रइयत्त^{१०} जहर पीधां सम जावै^{११} ।
 लूट^{१२} कहर करि लियै^{१३}, सहर विवराळा^{१४} गावै ।
 धन लियै^{१५} मारि नाखै धणी, साथ^{१६} होण^{१७} न दियै^{१८} सतो ।
 असपती सोच वधियौ^{१९} अधिक, इसड़ी सुणे अजाजती ॥ २७६

सर बुलंदसू जुध करणसारु बादसाह मुहम्मदसाहरो बीड़ौ फेरणी
 बिहू^{२०} तांम बोलिया^{२१}, साह अमखास सभावौ^{२२} ।
 नरिंद खान करि निजर^{२३}, फिजर^{२४} बीड़ा फिरवावौ^{२५} ।
 फटे निसा फजरांन, अंब - दीवाण वणाया ।
 तखत बैठ^{२६} सुरतांण, पांन हाजर पधराया ।
 सिर^{२७} विलंद खान 'साहू' सहित, आसंग^{२८} हुवै सु आवसी^{२९} ।
 असमान पड़ै थांभै अडर, औ नर^{३०} पांन उठावसी ॥ २७७

१ ख. ग. कहे । २ ग. नीबाब । ३ ख. ग. कहावियौ । ४ ख. ग. आवीयो । ५ ख. ग. इतफाक । ६ ख. ग. मिलि । ७ ख. ग. कोया । ८ ख. ग. दुवाहां । ९ ख. ग. मंडीया । १० ख. ग. रइयत । ११ ग. जावै । १२ ख. ग. लूटि । १३ ख. ग. लीयै । १४ ख. बेवराल । ग. बेवराल । १५ ख. ग. लीयै । १६ ख. ग. साथि । १७ ख. होण । १८ ग. दीये । १९ ख. ग. वधीया । २० ख. बिहू । ग. बिहू । २१ ख. बोलीया । ग. बोलीया । २२ ग. सभावो । २३ ख. ग. नजर । २४ क. फिकर । २५ ख. ग. फिरवावो । २६ ग. बैठि । २७ ख. सिरि । २८ ख. ग. आसंगद । २९ ख. ग. आवसि । ३० ख. ओरन ।

२७५. जाब - उत्तर, जवाब । कहावियौ - कहलाया ।

२७६. अतपाक - इतिफाक । दुबाहां - वीरों । मंडिया - ठहरे । गनीम - लूटेरा, डाकू । सहनक - (?) । रइयत्त - प्रजा । कहर - कोप, आपत्ति । विवराळा - ब्राह्म-ब्राह्मिणी पुकार । अजाजती - उपद्रव, उत्पात, ज्यादती ।

२७७. अमखास - आमखास । सभावौ - तैयार (करिये) । नरिंद - नरेन्द्र, राजा । फिजर - फजर, प्रातःकाल । निसा - रात्रि । फजरांन - प्रातःकाल । अंब-दीवाण - आम दीवाण । सुरतांण - बादशाह । आसंग - शक्ति, बल । थांभै - रोक दे ।

दवावत^१

जम्मीनके ऊपर परवरदिगारका^३ हुसन दिल्ली सहर जोगमाया^३ जिसके^५ दरम्यांन बावन^५ वीर चौसठ^६ जोगणीका वास^७ । जैवीती^८ विमर अकलका जहूर । पातिसाहूका^९ तखत रुसनाईका^{१०} पूर । जंवाहरका^{११} तखत जंवाहरका छत्र । तेजका अथाह ऐसे^{१२} दिल्लीका^{१३} साहिब जिस तखत पर विराजै है महमंद साह साहिबका नायब पैकंबरुंकी जात कहता^{१४} है । कुरांन चौवीस पीरुंकी करामात जिसनै ऊगती^{१५} मौसरुं ताळके^{१६} जोरसे^{१७} दिल्लोका^{१८} तखत पाया । ऐसा महमंदसाह पातिसाह^{१९} सिर^{२०} अंबखास^{२१} वणवाया । तिस अंबखासके^{२२} बीच^{२३} दोऊ दीननै आय सिर नमाया^{२४} । पातिसाहूका^{२५} एक इसारा पाया । जिस बखतका तेज कैसा पटैत केसर^{२६} सिंघ बाघ निजरुंके^{२७} बीच^{२८} आवै । तौ पातिसाहूके^{२९} सामूं^{३०} देखणै न पावै । हफतहजारी^{*} चमरुंकी भ्रुपट करते^{३१} हैं । दोऊ मिसलत^{३२} खड़े हैं । हिंदू^{३३} मुसलमान जिस बखत मीर-तुजकके दस्त पर^{३४} जंवाहरका

१ ग. दवावौ । २ ख. परवरदगारका । ३ ख. ग. जोगमाया लिछमीका प्रकाश । ४ ख. जिनके । ५ ख. वावन । ६ ग. चौसठि । ७ ग. वासा । ८ ख. जंवंतीका । ग. जंमतीका । ९ ख. पातसाहूका । ग. पातसाहूका । १० ख. ग. रोसनाईका । ११ ग. जवाहरका । १२ ख. अंसी । ग. अंसा । १३ ख. ग. दिलीके । १४ ख. कहैता । १५ ग. उगती । १६ ग. ताळके । १७ ख. ग. जोरसे । १८ ग. दिलोका । १९ ख. ग. पातिसाह जिसनै । २० ख. ग. सरै । २१ ख. ग. आंमखास । २२ ख. ग. आंमखासके । २३ ख. बीच । २४ ग. नवाया । २५ ख. पातसाहूका । २६ ख. ग. केसरी । २७ ख. ग. नजरुंके । २८ ख. बीच । २९ ख. पातसाहूके तेज सौ । ग. पातसाहूके तेज सौ । ३० ख. ग. सामुहां ।

*ख. तथा ग. प्रतियोंमें यहाँसे आगे— सपर समसेर धरते हैं हफत हजारी ।

३१ ग. करते । ३२ ख. ग. मिसल । ३३ ख. हिंदू । ग. हींदु । ३४ ग. दस्त ।

२०८. परवरदिगारका — पर्वरदिगारका, ईश्वरका । हुसन — सौंदर्य, खूबसूरती, हुस्न । जहूर — प्रकाशन । रुसनाईका — प्रकाशका, रोशनीका । पैकंबरुंकी — पैगम्बरकी । जात — उत्पन्न । मौसरुं — श्मश्रुके बाल । ताळके — भाग्यके । दीननै — मजहबोंनै । सामूं — सम्मुख, सामने । चमरुंकी — चंवरोंकी । भ्रुपट — चंवर डोलानेका भौंका । मिसलत — पंक्तियां । मीर-तुजकके — जलूस या अभियान आदिकी व्यवस्था करने वालेके । दस्त पर — हाथ पर ।

पानंदांन । जिस बखत हाजर कौण-कौण । अंबखासका^१ वणाव । सत्तर
 खानं बहौतर^२ उमराव । दिल्लीपतिकी^३ सभा^४ इंद्रका समाजा^५ ।
 सबूका^६ सिरपोस^७ जोधाणका राजा । जिस बखत पातिसाहूने^८
 सीमुख^९ हुकम फुरमाया । अमीर^{१०} 'नुदिखा'^{११} मीर तुजक जो^{१२}
 कोरबन्धीसै फिरवाय^{१३} पान । चित्रकेसे खड़े है हिंदू^{१४} और^{१५} मुसल-
 मान । जिस बखत मीर-तुजकूने^{१६} आदाब बजाय पान फेरणैकू^{१७}
 आया । जुबानसै सवाल सबूकू^{१८} सुणाया । यारौ^{१९} जे ये पान^{२०} जो
 सकस लेवै उठाय । जो सिरविलंदखान साहूसै लड़िबेकू^{२१} जाय । जिण^{२२}
 बखत पातिसाही^{२३} अमीर हाजर कौण^{२४} कौण सो कहि दिखलाय^{२५} ।
 कमरदोखानवजीर^{२६} इतमांदुदोलै^{२७} बहादर^{२८} चिनुंसरतजंग^{२९} । *
 रौसनदोलै तुरराबाज खांसीमबगसी रुस्तमजंग^{३०} । सेर अफनखान^{३१}
 समददोलैकी^{३२} किताब । खोजे^{३३} साहुदीखां^{३४} आतसमीर साहादतखां

१ ख. आमषासका । ग. आबषासका । २ ख. और बौहौतर । ग. और बहतर । ३ ख.
 ग. दिल्लीकी । ४ ख. ग. छभा । ५ ख. समाज । ६ ख. संबूका । ७ क. सिर-
 पोस । ८ ख. ग. पातसाहूने । ९ ख. श्रीमुख । १० ग. अमीनु । ११ ख. दीषां ।
 ग. दीषां । १२ ख. कुंजो । ग. कू कूजो । १३ ग. फिरवाया । १४ ख. ग. हिंदू ।
 १५ ख. प्रतिमें नहीं है । ग. और । १६ ग. तुजकौ । १७ ख. ग. फेरणैकू । १८ ख.
 सबू । ग. सबू । १९ ख. ग. यारो । २० ख. एयान । ग. एपान । २१ ख. जंग करणैकू
 जाय । ग. जंग करणैकौ जाय । २२ ख. जिस । २३ ख. ग. पातसाही । २४ ग. कौन
 कौन । २५ ग. दिखलाया । २६ ख. ग. कमरदोषांवजीर । २७ ख. ग. यतमावुदोलै ।
 २८ ख. बहादर । ग. बाहादर । २९ ख. चीनुंसरतजंग । चीनसरतजंग ।

*यहांसे आगे ख. तथा ग. प्रतियोंमें निम्न पंक्तियां और मिली हैं—

‘षानं दोरा मीर बगसी सम सांम दौले अमीरळ उमराव मनसूर जंग ।’

३० ख. ग. रुस्तमजंग । ३१ ख. ग. अफगनषान । ३२ ख. सामंददोलैका । ग. समसा-
 मंदोलैका । ३३ ग. षोजे । ३४ ख. ग. साहुदीषां ।

२७८. पानंदांन — एक प्रकारका डिब्बा जिसमें पान और पानके लगानेकी सामग्री रखी
 जाती है । वणाव — सजावट, सौंदर्य । सबूका — सबका । सिरपोस — शिरत्राण,
 रक्षक । कोरबन्धी — पंक्ति, कतार । सकस — शरस, व्यक्ति, मनुष्य । लड़िबेकू —
 युद्ध करनेके लिये ।

बहादुर^१ * दलेलजंग खां^२ बहादुर^३ दारोगे खवासां उरहां नल मुलक
अबदल..... मखां बहादुर मीर जुमलांमु^४ जिकरियाखानं^५ सूबेदार
लाहौरके^६ दिलदलेलखां बहादुर^७ मोर जुमलामुखानं^८ खाना तारखां^९
बहादुर जाफर^{१०} जंग सदरसहूर इरादत^{११} मंदखां बहादुर^{१२} सरफ^{१३}
दौलैकी^{१४} किताब। मुरसदकुलीखां^{१५} जाफर खानं वसेरी अलैवरखां^{१६}
बहादुर^{१७} मौतकदु^{१८} दौले कर वल बेगी मदुफरखां^{१९} सूबेदार^{२०}
अजमेर। ऐसे^{२१} ऐसे^{२२} हाजर बौहत^{२३} उस बेर^{२४}। दिलेसुर^{२५}
देखते^{२६} है सिरपोस^{२७} जिहान। ऐसूके^{२८} बीचमें^{२९} फिरते^{३०} है
पांन ॥ २७८

कवित्त^{३१} पांनका^{३२} वणाव

फिरै पांन साहरा, कितां^{३३} ह्वै ज्यांन थरत्थर^{३४}।
फिरै^{३५} पांन साहरा, कितां निजरां^{३६} न धरै कर।
तुजकमीर^{३७} कर^{३८} तांन, केइक मसतांन कहावै।
आंन आंन कथ कहै, पांन नह कोय उठावै।

१ ग. बहादुर। *यहांसे आगे निम्न लिखित पंक्तियां ग. प्रतिमें और मिली हैं—
'दारोगे खवासां उरहांनल मुलक। अबदल समंदषां बहादुर।'

२ ख. ग. पांन।

◆...◆चिन्हांकित पंक्तियां ख. तथा ग. प्रतियोंमें नहीं हैं।

३ ख. जिकरीयाषांन। ४ ख. लाहौरके। ५ ख. ग. बहादुर। ६ ख. ग. जुमलामु-
अजमषांन। ७ ख. ग. तरषां। ८ ख. ग. जफर। ९ ख. ग. यरादत। १० ख.
बहादुर। ग. बाहादुर। ११ ग. सरफ। १२ ख. ग. दौलैका। १३ ख. मुरसदकुलीषां।
ग. मुरसदीकुलीषां। १४ ख. अलैवरदीषां। ग. अलैवदीरदषा। १५ ख. बहादुर। ग.
बाहादुर। १६ ख. प्रतिमें नहीं है।

◆...◆चिन्हांकित पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है।

१७ ग. मुजफर। १८ ग. असें। १९ ग. असें। २० ख. ग. बहुत। २१ ख. ग.
बेर। २२ ख. दिलेस्वर। ग. दिलेसुर। २३ ग. देषत। २४ ख. ग. सिरपोस।
२५ ग. ऐसूके। २६ ख. ग. बीचमें। २७ ग. फिरत। २८ ख. कवित छपै। ग.
छपै कवित। २९ ख. पांन फिरणैका। ग. पांन फिरणेका। ३० ख. किता। ग. किती।
३१ ख. ग. थर थर। ३२ ख. फिरफिरै। ३३ ख. ग. नजरां। ३४ ग. तुभकमीर।
३५ ख. करि।

२७८. ज्यांन — जान, प्राण। थरत्थर — कंपायमान।

‘अभमाल’ विनां हिंदू^१ असुर, दिल अंबखास दबावियौ^२ ।
मेरगिर भार^३ पांनां महीं, उण दिन निजरां^४ आवियौ^५ ॥ २७६

थरहरतै पंजरै, असुर लेवण कजि आवै ।
मीर तुजक चख मिळै, खान दहसत चित खावै ।
मुगलां उडै गुमान, उरड़ आसंग नह आरण ।
पांन देखि पालटै, वाघ दीठां जिम वारण ।
‘अभमाल’ भूप रघुनाथ^६ अंग, रवद भूप अनि राहरा ।
हर धनख^७ जनक^८ जिग जिम हुवा, पांन दिली पतिसाहरा ॥ २८०

महाराजा अभयसिंहजीरो दरबारमें सेरविलंदसूं जुध करण सारूं पांनरो बीड़ो उठाणो

नी लियै^९ खान निबाब^{१०}, आन न लियै^{११} अधपत्ती^{१२} ।
तुजक-मीर करहंत, पांन लीधा असपत्ती ।
ग्रहै^{१३} पांन निज करग, नजर^{१४} कमधज्ज^{१५} निहारै ।
रहे एक औसरा, एम पतिसाह उचारै^{१६} ।
तद^{१७} मुसलमान^{१८} हिंदू तणी^{१९}, आसंग किणहि न^{२०} आविया^{२१} ।
दईवाण देखि असपति दुचित, ‘अभमल’ पांन उठाविया^{२२} ॥ २८१

१ ख. हींदूर । ग. हींदू । २ ख. दवावीयौ । ग. दबावीयौ । ३ ख. धार । ४ ख. ग. नजरां । ५ ख. ग. आवीयौ । ६ ग. रघूनाथ । ७ ख. धनक । ८ ख. प्रतिमें ‘जनक जिम हुवा ।’ ९ ख. लीवै । ग. न लीये । १० ख. नबाब । ग. नबाब । ११ ख. ग. लीयै । १२ ग. अधपति । १३ ख. ग्रहै । १४ ग. निजर । १५ ग. कमधज्ज । १६ ग. उचारै । १७ ख. ग. तदि । १८ ग. मुसलमान । १९ ग. हींदूतणी । २० ख. किएहोन । ग. अवरन । २१ ख. ग. आवीया । २२ ख. उठावीया ।

२७६. अभमाल — महाराजा अभयसिंह । मेरगिर — सुमेरु पर्वत ।

२८०. थरहरतै — कंपायमान होते हुए । पंजरै — शरीर । चख — चक्षु, नेत्र । दहसत — भय, आतंक । गुमान — गर्व । उरड़ — साहस । आसंग — शक्ति, बल । आरण — युद्ध । वारण — हाथी, गज । रवद — मुसलमान ।

२८१. आन — अन्य । अधपत्ती — राजा । असपत्ती — बादशाह । करग — हाथ । निहारै — देखे । औसरा — अवसर, मौका । दईवाण — राजा । दुचित — खिन्नचित । अभमल — महाराजा अभयसिंह ।

बीड़ा ले बोलियौ^१, कमध^२ घाते^३ मूछां कर ।
 उछव^४ करौ असपती, सोच मति^५ धरौ दिलेसुर^६ ।
 मारि^७ सीस मोकळूं, काथ पकडे पौहचाऊं^८ ।
 अजळ भाजि ऊबरै, मुगळ दळ गिरद मिळाऊं ।
 अहमदाबाद हूता असुर, एक दिवस मभि ऊथलूं^९ ।
 विण^{१०} पत्रां रूख जिम सिरविलंद, करे दिली^{११} दिस^{१२} मोकळूं ॥ २८२

बादसाह मुहम्मद साहरो महाराजा अभयसिंहजीनूं जोस दिराणौ
 सुणि इम कहियौ^{१३} साह, महाराजा^{१४} राजेसुर ।
 आगे^{१५} घर^{१६} आपरै, हुवा 'गजबंध' नरेसुर ।
 जेण^{१७} चाड जंहगीर^{१८}, 'भीम' हणि 'खुरम' भजाया ।
 लडि दखिणी^{१९} लूटिया^{२०}, बोलबाला^{२१} करि आया ।
 जुध फतै^{२२} दिलो ईसांन जस, करि आया सोईज^{२३} करै ।
 मो तखत लाज 'महमँद' मुणै, 'अभा' भरोसै आपरै ॥ २८३

१ ख. बोलीयो । ग. बोलियो । २ ग. कमध । ३ ग. घाते । ४ ख. ग. उछव ।
 ५ ग. मत । ६ ख. दिलेस्वर । ग. दिलेसर । ७ ख. मार । ८ ख. पोहौ । ग. पहुँ ।
 ९ ख. उथलूं । ग. उत्थलूं । १० ख. विणि । ११ ख. दिली । १२ ख. ग. दिसी ।
 १३ ग. कहियो । १४ ख. ग. महाराजा । १५ क. आगे । १६ ग. घरि । १७ ख.
 ग. जेणि । १८ ख. ग. जहंगीर । १९ ग. दखणी । २० ख. लूटिया । २१ ख. ग.
 बोलबाला । २२ ख. फते । २३ ग. सोहीज ।

२८२. घाते — डाल कर, रख कर । कर — हाथ । सोच — चिन्ता । दिलेसुर — बादशाह ।
 मोकळूं — भेज दूं । काथ — अथवा, या । पौहचाऊं — पहुँचा दूं । अजळ — अति नीच,
 बहुत ही कमीना । भाजि — भाग कर । ऊबरै — बच जाय । दिवस — दिन । ऊथलूं —
 हटा दूं, पराजित कर दूं, गिरा दूं ।

२८३. घर — वंश, कुल । आगे — पहले, पूर्व । गजबंध — महाराजा गजसिंह जोधपुर ।
 नरेसुर — राजा, नृप । चाड — मदद, सहायता । भीम — सीसोदिया भीमसिंह ।
 (वि. वि. — परिशिष्टमें देखें) । लडि — युद्ध कर के । बोलबाला — विजय, अधिकार (?) ।
 ईसांन — अहसान । सोईज — वही । मुणै — कहता है । भरोसै — सहारे पर, विश्वास
 पर ।

बादसाह मुहम्मदसाहरी ओरसं महाराजा अभयसिंहजीनूं जुधारथ सहायता
सारु धन अर अस्त्रसस्त्र देणा

ताज कुलह सिर पेच, जरी तोरा जर कंबर^१ ।
खंजर जमदढ़ खड़ग, पवंग^२ सिरपाव फटाभर ।
तई^३ लोक ताबीन, तोपखानां^४ गजबाणां^५ ।
सभे^६ साह बगसीस, लाख^७ इकतीस खजानां ।
अहमदाबाद^८ दीधौ^९ उतन, असपति सोच उथालियौ^{१०} ।
ईखतां दोइ^{११} राहां 'अभौ', होय विदा इम हालियौ^{१२} ॥ २८४
महाराजा अभयसिंहजीरो डेरां आणों अर अहमदाबादरे जुद्धरी खबर चारों ओर फैलणी
*गज चढ़ि डेरां गयौ^{१३}, निहस बाजतां^{१४} नगरां ।
बात उडे चहुं बळां^{१५}, खबरदारां हलकारां^{१६} ।

१ ख. कंवर । ग. कम्मर । २ ग. पमंग । ३ ग. तइ । ४ ख. ग. तोबषांना । घ. तोबरषांना । ५ ख. जगवानां । ग. गजवाना । ६ ग. सभे । ७ ख. ग. लाख । ८ ख. ग. अहमदाबाद । ९ ग. दीधो । १० ख. ग. उथालीयौ । ११ ख. ग. दोय । १२ ख. ग. हालीयौ ।

*इससे पहले ख. तथा ग. प्रतियोंमें निम्न कवित्त छप्पे मिला है—

'पठां डार मभि प्रचंड, हले हेकल करि हौफर ।

मुकनांग यां दांमाहि, गयंद दताळ पटाभर ।

अनि सिधां मभि अडर, दुरत नरसिध बहादर ।

पीयण जहर मलपियौ, जांणि सिध थटां जटाधर ।

बीहो सस्त्र विनां पोही सस्त्र बंध, किलम विलंद सिर कोपीयो ।

अंबपास अमीरां मभि 'अभौ', इम मल्हण्तौ ओपीयो ॥'

१३ ख. अयौ । ग. आयौ । १४ ख. बाहस बाजतां । १५ ग. बळां । १६ ख. हर-कारां ।

२८४. ताज — मुकुट । कुलह — (?) । जरी — सोने-चांदीका बना हुआ । तोरा—तोड़ा, पैरका आभूषण विशेष । जर कंबर — (?) । खंजर — शस्त्र विशेष । जमदढ़ — कटार विशेष । पवंग — घोड़ा । पटाभर — हाथी । ताबीन = तईबीन — आधीन । तोपखानां — तोप चलानेका सामान । गजबाणां — (?) । दीधौ — दिया । उतन — देश । उथालियौ — मिटा दिया । ईखतां — देखते हुए । अभौ — महाराजा अभयसिंह । विदा — कूच । हालियौ — चला, प्रस्थान किया ।

२८५. डेरां — ठहरनेका स्थान । निहस — जोशपूर्ण । बात — बखाना । चारों ओर फैल गई । खबरदारां — समाचार ले जाने वालों । हलकारां — दूतों ।

देस देस सिरहदां^१, समाचारां तफसीलां^२ ।
 किया^३ विदा कासीद, आप आपणां उकीलां ।
 'अहमँद' सतार^४ गढ़ वात ऐ^५, पमंग डाक खत पूजिया^६ ।
 तिणवार 'विलंदै' 'साहूतणा'^७, धड़क^८ जीव उर धूजिया^९ ॥ २८५
 चढ़े सभे चतुरंग, तिकण मौसर^{१०} 'अभपत्ती'^{११} ।
 तोप कठठि^{१२} गज टिलां, जूट धवलां^{१३} सांजत्ती^{१४} ।
 महाराजारी दिलीसूं विदा होय जयपुर आवाणी
 बूग^{१५} छडालां^{१६} खिवै^{१७}, होय नक्कीबां^{१८} हाकां^{१९} ।
 हुय^{२०} दलवल^{२१} हाथियां^{२२}, धसल ऊडंड^{२३} धसाकां^{२४} ।
 मुरतबा, तौग^{२५} नेजां महीं, धज^{२६} बहरक फरहर धजां^{२७} ।
 दलहिले^{२८} एम मुरधर दिसी^{२९}, समंद ऊभलै^{३०} जलसजां ॥ २८६

१ ख. सिरहदां । ग. सरहदां । २ ख. तपसीलां । ३ ख. कीया । ४ ख. ग. सितार ।
 ५ ख. ग. वातए । ६ ग. पूजिया । ७ ख. साहूतणा । ८ ख. धडकि । ९ ख. ग. धूजिया ।
 १० ग. मोसर । ११ ख. अभपत्ती । १२ ख. ग. कठठि । १३ ख. ग. धमलां ।
 १४ ख. साभत्ती । ग. साभत्ती । १५ ख. बूग । १६ क. छडालें । ग. छडाळां ।
 १७ ख. खिवै । ग. खिवे । १८ ख. नक्कीबां । ग. नक्कीबां । १९ ख. ग. होय । २० ख.
 हलवल । ग. हलवल । २१ ख. हाथियां । २२ ख. ऊडंडक । ग. ऊडंडत । २३ ख. ग.
 पचाकां । २४ ख. ग. तौग । २५ ख. ग. धज फरहर बहरक । २६ ख. जधां । २७ ख. ग.
 दलहिले । २८ ख. दिली । २९ ख. उभलले । ग. उभलले ।

२८५. तफसीलां - तफसील, विस्तृत वर्णन । कासीद - सन्देशवाहक । उकीलां - वकीलों ।
 अहमँद - अहमदाबाद । सतार - सतारा नगर । धड़क - भयभीत होकर । धूजिया -
 कम्पायमान हुए ।

२८६. चतुरंग - चतुरंगिणी सेना । मौसर - अवसर, मौका । अभपत्ती - महाराजा अभय-
 सिंह । कठठि - ध्वनि विशेष करते हुए चली । टिलां - टक्कर, आघात । जूट -
 युग्म, दो । धवलां - बैलों । सांजत्ती - सामान, उपकरण । बूग - भालों की नौक ।
 छडालां - भालों । खिवै - चमकती है । हाकां - आवाज । दलवल - तैयारी ।
 धसल - घोड़ेका जोश या मस्तीमें होनेका भाव । ऊडंड - घोड़ा । धसाकां - (?) ।
 नेजां - भालों । धज - ध्वजा । बहरक - भालेकी नौकके साथ बंधी रहने वाली
 छोटी भंडी या ध्वजा । फरहर - फहरा कर । दिसी - तरफ, ओर । ऊभलै -
 उमड़ता है ।

चमर हुतां चौसरां, मेघ-डंबर^१ भड़ माया ।
 करहरतां^२ कोतलां, दळां पौरस^३ दरसाया ।
 राग रंग डंबरां, अतर केसरां अपारां ।
 जयगढ़ूंत नजीक^४, वणै^५ भूपति जिणवारां ।
 विलकुलै^६ वधाईदार^७ वधि, आणंद उछव^८ अथाह सूं ।
 आगम्म^९ खबर^{१०} 'अभसाहरी', जाय कहै 'जैसाह'^{११} 'सू'^{१२} ॥ २८७

जयपुरमें महाराजा अभयसिंहजीरें स्वागतरी तैयारीरों बरणण

कवित्त^{१३} दोढ़ी

सुणि ब्रविया^{१४} बह^{१५} सुधन, दुभल वध्वाई^{१६} दारां ।
 सभे अवासां^{१७} डंबर, चित्र अवछाड़ि^{१८} बजारां ।
 चादर हौज फुहार, जळां भरि अतर खजांनां ।
 रचि चिग पड़दा जरी, सरब^{१९} वज्जवे^{२०} सदांनां^{२१} ।
 ठांम ठांम विछि गिलम, विमळ आरांम वणाया ।
 वाग जयनिवांसरा, माग कुमकुमे^{२२} छंटाया ।

१ ग. मेघडंबर । २ क. फरहरतां । ३ ख. पौरस । ४ ख. निज । ५ ख. ग. वणे ।
 ६ ख. विलकुले । ग. विलकुले । ७ ग. वधाईदार । ८ ख. ग. उछव । ९ ग. आगम्म ।
 १० ग. खबरि । ११ ग. जयसाहसु ।

*यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है ।

१२ ख. दोढ़ी कवित । ग. प्रतिमें यह शीर्षक नहीं हैं । १३ ख. ग. ब्रवीया । १४ ख.
 वहो । ग. बहो । १५ ख. ग. वधाई । १६ ख. आवासां । १७ ख. ग. अवछाड़ ।
 १८ ख. ग. सरस । १९ ख. वज्जवे । ग. बजवि । २० ख. ग. सदांनां । २१ ख. ग.
 कुमकुमै ।

२८७. चौसरां - चारों ओर । मेघडंबर - मेघाडंबर, एक प्रकारका छत्र । करहरतां -
 उछल-कूद करते हुए । जयगढ़ूंत - जयपुरसे । विलकुलै - त्वरा करते हैं ।
 वधाईदार - मार्गलिक संदेश देने वाला, खुश-खबरी देने वाला । अभसाहरी - महाराजा
 अभयसिंहकी । जैसाह - सवाई राजा जयसिंह ।

२८८. ब्रविया - दिये । सुधन - श्रेष्ठ धन । वध्वाई दारां - खुशखबरी देने वालोंकी ।
 अवासां - भवनों । डंबर - सजावट । अवछाड़ि - (?) । चिग - चिलमन ।
 वज्जवे - बजाये जाते हैं । सदांनां - सादियाना, मार्गलिक वाद्य । ठांम - स्थान ।
 गिलम - गद्दे । माग - मार्ग । कुमकुमे - कुंकुम, केसर । छंटाया - छिड़काये ।

चतुरंग वणाय गजराज चढ़ि, वजित्र^१ अनेक वजाविया^२ ।
'जैसाह' उछव^३ इम करि जदिन, 'अभमल' सांमा^४ आविया^५ ॥ २८८

दोनों राजावारों मिळणौ

छप्य कवित्त

मिळे दहू^६ महिपती^७, हेत मनुहार हुलासां ।
चढ़े मेघ-डंबरां, प्रगट उच्छाह^८ प्रकासां^९ ।
हुतां^{१०} चमर हालिया^{११}, अधिक रंगराग उछाहां ।
जोए सहर जळूस^{१२}, उरड़ गहमह उच्छाहां^{१३} ।
तदि द्वार^{१४} जयनिवासतणै^{१५}, आय^{१६} गजांहं ऊतरै^{१७} ।
तिणवार^{१८} तास जरकसतणा^{१९} तणा, वर पगमंडा विसतरै^{२०} ॥ २८९

दोनों राजावारों जयनिवास बागमें पधारणौ

वाग^{२१} तांम वरियांम, दहू^{२२} आए चढ़ि^{२३} डंबर^{२४} ।
कारंजां चादरां, नीर धरहरे विहत्तर ।
एक^{२५} साथ^{२६} अन्नेक^{२७}, फबे धरहरै फुहारां ।
विमळ पुहप^{२८} विसतरे^{२९}, भमर भणहणे गुंजारां ।

१ ग. वाजित्र । २ ख. वजावीया । ३ ख. उछव । ४ ख. सांम्हां । ५ ख. आवीयो ।
६ ख. ग. दुहुं । ७ ख. मह्यती । ८ ग. उछाह ।

*यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है ।

९ ख. हुता । १० ख. हालीया । ११ ग. जासूस । १२ ख. ग. अणयाहां । १३ ख.
ग. द्वारि । १४ ख. ग. जैनिवासहतणा । १५ ख. आय । १६ ख. उतरे । ग. उतरै ।
१७ ग. तिणवार । १८ ख. ग. जैसाहतणा । १९ ख. विसतरे । ग. विस्तरे । २० ख.
वागि । २१ ख. दुहुं । २२ ख. सजि । ग. सभि । २३ ख. डंबर । ग. डम्बर ।
२४ ख. एकणिसा । ग. एकणि । २५ ग. साथि । २६ ख. ग. अनेक । २७ ख. पहांप ।
ग. पोहप । २८ ग. विस्तरै ।

२८८. चतुरंग - सेना । वजित्र - वाद्य । जैसाह - सवाई राजा जयसिंह ।

२८९. महिपती - राजा । उरड़ - साहस । गहमह - भीड़, समूह । तास - कपड़ा विशेष ।
पगमंडा - पांवडा । विसतरै - फैलाये गये ।

२९०. डंबर - हर्ष, उमंग, (?) । कारंजां - (?) । विहत्तर - ठीक । धरहरं -
ध्वनि करते हैं । पुहप - पुष्प, फूल । भणहणे - भोरे गुंजन (ध्वनि) करते हैं ।
गुंजारां - भोरोकी आवाज ।

छत्रपती साह^१ तदि^१ हुव छभा, छक रंग उच्छव^३ छाजिया^४ ।
महपती दहू^५ मुकत्तीमहलि^६, वाणिकहूंत विराजिया^७ ॥ २६०

अंबर गुलाबी अतर^८, वंटे^९ विध^{१०} विध जिणवारां ।
मँडे अधिक मनुंहार, अमल वँटि मुफर अपारां^{११} ।

दोनू राजावारी अपणा सुभटारं ताथ भोजन करणी

करै पांति^{१२} चौसरी, जरी तांणियां^{१३} सिमांनां ।
उठै^{१४} भूप आविया^{१५}, थंभ दुहुं^{१६} हिंदुसथानां^{१७} ।
पांतियां^{१८} विराजे तांम पह^{१९}, महा उछव^{२०} गह मांनियां^{२१} ।
पनवाडि^{२२} पात्र थंडे पवित्र, मँडे वडी^{२३} महमांनियां^{२४} * ॥ २६१

चँडी भोग चत्रअसी, भात चत्रअसी पुहप^{२५} भर^{२६} ।
पुडी^{२७} अस्ट^{२८} परकार^{२९}, अनै आचार अपंपर ।

१ ख. ग. सहत । २ ख. ग. दुहुंवे । ३ ख. उछव । ग. उछक । ४ ख. ग. छाजिया ।
५ ख. ग. दुहुं । ६ ख. ग. मुकतिमहल । ७ ख. विराजीया । ८ ग. अंतर । ९ ग. बंटे ।
१० ख. ग. विधि विधि । ११ ग. अपपारां । १२ ख. पांति । १३ ख. ग. तांणीयां ।
१४ ख. उभै । ग. उठे । १५ ख. ग. आवीया । १६ ग. दुह । १७ ख. ग. हींदुसथानां ।
१८ ख. पांतीयां । ग. पांतीयै । १९ ख. पोहो । ग. पौहो । २० ख. ग. उछव । २१ ख.
ग. मांनीयां । २२ ग. पनवाड । २३ ग. कडे । २४ ग. महमानीयां ।

*यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है ।

२५ ख. पौहोष । ग. पौहोष । २६ ग. भरि । २७ ख. पुडी । २८ ख. अस्ट । ग.
अष्ट । २९ ग. प्रकार ।

२६०. छत्रपती—राजा । साह—बादशाह । छभा—सभा । छक—हर्ष । रंग—आनन्द ।
छाजिया—सुशोभित हुए । मुकत्ती-महलि—मोतीमहल । वाणिकहूंत—शोभासे,
सुंदरतासे । विराजिया—शोभायमान हुए ।

२६१. अंबर—एक सुगंधित वस्तु, यह द्वैल मछलीकी अंतर्झियोंमें जमा हुआ एक पदार्थ है
जो हिन्दुस्तान, अफ्रीका और ब्राजीलके समुद्री किनारे पर बहती हुई पाई जाती है ।
अमल—अफीम । मुफर—मनमें उमंग और उल्लास उत्पन्न करने वाला, वह औषध जो
हृदयको आनंदित करे, मुफरेह । पांति—पंक्ति । चौसरी—चार पंक्तियोंकी ।
थंभ=स्तंभ—रक्षक । पांतियां—भोजन करते समय बैठनेके लिये बिछाया जाने
वाला कपड़ा । पनवाडि— (?) । थंडे—एकत्रित किये गये ।

२६२. चँडी भोग—मांस । चत्रअसी—चौरासी प्रकारके । भात—पकाए हुए चावल ।
अनै—और । अपंपर—अपार, असीम ।

पनरह सत पकवान, पाक अड़तीस प्रमाणे^१ ।
 सरसा^२ साग बतीस^३, जियां^४ संख्या बहु^५ जाणे^६ ।
 कनक^७ चौक^८ थाळह कनक^९, सांमिल दहू^{१०} नरेसुरां^{११} ।
 सासत्रां^{१२} जेम भोजन सतर, रीति आदि राजेस्वरां^{१३} ॥ २६२

तांम छौळ^{१४} घततणी^{१५}, वणे^{१६} ऊपरां बहौतरि^{१७} ।
 छकै मसालां डमर^{१८}, तकै सौरंभां^{१९} अम्मरि^{२०} ।
 जीमै^{२१} पह^{२२} इण जुगति, सहत भड़ थटां कवेसर^{२३} ।
 तवन सुजळ करि तई, पांन कपूरह^{२४} हाजर ।
 कुण कहै पार वरणण सुकवि, जीमण तदि^{२५} वणिया^{२६} जिसौ^{२७} ।
 आंबेर^{२८} करै जोधाणनू, कहौ तेण^{२९} अचिरज किसौ^{३०} ॥ २६३

महाराजा अभेंसीधजी अर जैसींघजीरी आपसरी सलाह
 इण^{३१} उछाह 'अभमाल', सभै^{३२} 'जैसाह'^{३३} सकाजा ।
 रहे केक दिन रचे, मिळे राजा महाराजा* ।
 रचे एम मचकूर, भुजा आपणां दिली भर ।
 जिसौईज^{३४} करि जवत, करां सोबा सर पद्धर ।

१ ख. ग. प्रमाणे । २ ख. ग. सरस । ३ ख. ग. छतीस । ४ ख. जियां । ५ ख. बहु । ग. वही । ६ ख. जाणे । ७ ग. कनक । ८ ख. ग. चौक । ९ ख. कनक । १० ग. दुहू । ११ ख. ग. नरेस्वरां । १२ ग. सासत्रां । १३ ख. राजेश्वरां । १४ ग. छौळ । १५ ख. घततणी । १६ ख. ग. वणे । १७ ख. बहौतर । ग. बहौतर । १८ ख. डंबर । ग. डंबर । १९ ख. सौरंभा । २० ख. अम्मर । ग. अम्मर । २१ ख. जीमै । ग. जीमे । २२ ख. ग. पौही । २३ ख. ग. कवेसर । २४ ग. कपूरह । २५ ग. तद । २६ ख. वणीया । ग. वणियां । २७ ख. ग. जिसौ । २८ ख. मे आमेर । ग. आमेर । २९ ग. तिण । ३० ग. किसौ । ३१ ख. ग. इस । ३२ ख. ग. सभे । ३३ ख. जैसाह । *यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है । ३४ ग. जिसोइज ।

२६२. सरसा—रसपूर्ण । कनक चौक—(?) । थाळह—स्थाल, भोजन करनेका बड़ा बर्तन । कनक—स्वर्ण, सोना । नरेसुरां—नरेस्वरां, राजाओं ।

२६३. छौळ—प्रवाह, धारा । डमर—महक, सुगंध । तकै—ताकते हैं । सौरंभां—सुगंध, महक । अम्मरि—देवता । तवन—(?) । अचिरज—आश्चर्य । किसौ—कौनसा ।

२६४. मचकूर—सलाह । (?) । भर—भार, उत्तरदायित्व । पद्धर—सीधा ।

करि इम सलाह हित सीख करि, निडर तपौबल^१ अग्नि नभौ^२ ।
 दिस^३ दखिण 'जसै' डेरा दिया^४, उतन दिसी^५ चढ़ियौ^६ 'अभौ' ॥ २६४
 बधै^७ बंब^८ बंबाळ, वधे दळहले वधायक^९ ।
 उछव^{१०} वधे अणपार, वधे पातां^{११} जस वायक ।
 भड^{१२} बधे^{१३} छक भळळ, उछव^{१४} चित वधे^{१५} उमंगां ।
 वधे डांण मदभरां, पांण बह^{१६} वधे पमंगां ।
 गहतंत वधे फौजां लगस, वधे विनोद विलक्कुले^{१७} ।
 'बखतेस' वधाई दियण वधि^{१८}, ओठी वधिया^{१९} अगळे ॥ २६५

ऊंटारौ वरणण

वहै^{२०} साज वींटिया^{२१}, विहद मुखमलां वनातां ।
 रेसम तँग मुहरियां^{२२}, तखी^{२३} दुरखी^{२४} दरसातां ।
 सपनै कबु^{२५} न सुहाय, आच धारकां उताळां ।
 रुख फण अहि रोसंग, कंध राखिया कमाळां* ।

१ ख. ग. तपोबल । २ ग. लभौ । ३ ख. ग. दिसि । ४ ख. ग. दीया । ५ ग. दिसि । ६ ख. चढ़ी चढ़ीयौ । ७ ख. ग. वधे । ८ ख. बंब । ९ ग. वधायक । १० ख. ग. उछव । ११ ख. पाता । ग. पांतां । १२ ख. ग. भडों । १३ ख. वधे । ग. वधे । १४ ख. ग. उछव । १५ ख. वधि । १६ ख. बहौ । ग. बहे । १७ ख. ग. विलकुले । १८ ग. बिधि । १९ ख. ग. वधीया । २० ग. बहै । २१ ख. वींटिया । ग. वींटिया । २२ ख. मौहरीयां । ग. मौहोरियां । २३ ख. लषी । २४ ख. ग. सुरषी । २५ ख. कव । ग. कंब । *यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है ।

२६४. जसै - सवाई राजा जयसिंह । उतन - वतन, जन्मभूमि । अभौ - महाराजा अभयसिंह ।
 २६५. बंब - नगाड़ा या नगाड़ेकी ध्वनि, वीरोंका उत्साहपूर्ण नाद । बंबाळ - नगाड़ा ।
 वधायक - विशेष । अणपार - अपार, असीम । पातां - चारण कवियों । भड -
 योद्धा । छक - जोश । भळळ - तेज । डांण - हाथी, सिंह, ऊंट आदिके गर्दनसे
 टपकने वाला रस । मदभरां - हाथियों । पांण - शक्ति, बल । पमंगां - घोड़ों ।
 गहतंत - मस्त, जोशपूर्ण । लगस - फौजकी टुकड़ी, सेनाका गतिमें लंबायामान होना ।
 विलक्कुले - प्रफुल्लित होते हैं । बखतेस - महाराजा अभयसिंहके छोटे भाई बखतसिंह ।
 ओठी - शूतर-सवार । अगळे - अगाड़ी ।

२६६. साज - ऊंट, घोड़ा आदिके जीनके उपकरण । वींटिया - आवेष्टित । विहद - अपार ।
 वनातां - कपड़ा विशेष । मुहरियां - ऊंटकी नाकसे बांधनेकी रस्सियां विशेष ।
 तखी - ऊंटकी पीठ पर चारजामाके नीचे डाली जाने वाली गद्दी विशेष । दुरखी - दो
 तह । आच - हाथ । उताळां - तेज, त्वरायुक्त । रुख - ढंग, पुकार । अहि -
 सर्प, नाग । रोसंग - रोष या जोशपूर्ण । कमाळां - ऊंटों ।

छच्छोह^१ पायगछ छड़हड़ा, धुरा विरद करवत धरा ।
करि धाव जाव^२ इसड़ा तिकै^३, पाव घड़ी जोजन परा ॥ २६६

महाराजा अभैसींघजी अर बखतसोंघजीरौ माहोमाह मिळणौ

आरोहक अहड़ा, वेग आविया^४ वछेकां ।
'वखत'^५ वधाई ब्रवी^६, उरड़ धन लहे^७ अनेकां ।
आणंद सुणि अधिराज, मिळण आए^८ सभि घूमर^९ ।
हुय^{१०} सनेह बह^{११} हरख, सुपह इम मिळे पवैसर^{१२} ।
तदि^{१३} जोड़ रांम लछमणतणी, विध^{१४} वांणक^{१५} विसतारिया^{१६} ।
बह^{१७} कळस बांदि^{१८} धर^{१९} रजत बह^{२०}, पहे^{२१} मेड़तै पधारिया^{२२} ॥ २६७

महाराजा अभैसींघजीरौ जोधपुर दिस आगमन

सभे भळूसां साज, वाजराजां^{२३} गजराजां ।
सभे^{२४} ऊंच पौसोक^{२५}, सरव विध^{२६} राज समाजां ।

१ ख. ग. छछोह । २ ख. ग. जाय । ३ ख. तिके । ग. जिके । ४ ख. आवीया ।
५ ख. वषत । ६ ख. ग. ब्रवे । ७ ग. लहे । ८ ग. आए । ९ ख. घुमर । ग.
घुम्मर । १० ख. ग. होय । ११ ख. बहौ । ग. बोहो । १२ ख. पवैसर । ग. पवेसर ।
१३ ख. ग. तदि । १४ ख. ग. विधि । १५ ख. ग. वांणिक । १६ ख. विसतारीया ।
ग. विस्तारिया । १७ ख. बोहो । ग. बोहो । १८ ख. बांधि । ग. बंदि । १९ ख. ग.
धरि । २० ख. बोहौ । ग. बोहौ । २१ ख. ग. पोहौ । २२ ख. ग. पधारीया ।
२३ ग. बीजराजां । २४ ग. सभे । २५ ख. पौसक । २६ ग. विधि ।

२६६. छच्छोह - तेज । पायगछ - (?) । छड़हड़ा - (?) । धुरा - पूर्व,
पहिले । विरद - विरद । करवत धरा - भूमिको काटने वाला आरा, ऊंट । धाव -
दोड़ । जाव - जाना ।

२६७. आरोहक - सवार । अहड़ा - ऐसे । वेग - शीघ्र । वछेकां - (?) । वखत -
बखतसिंह । वधाई - मांगलिक संदेश देने वालेको दिया जाने वाला पुरस्कार ।
ब्रवी - दी । उरड़ - जोश । अधिराज - राजाधिराज महाराजा बखतसिंह ।
घूमर - दल । पवैसर - मानसरोवर । वांणक - ढंग, प्रकार । कळस बांदि -
वधाने वाली स्त्रीके शिर पर धरे हुए कलशका अभिवादन कर के । रजत - चांदी ।
पधारिया - आये ।

२६८. भळूसां - जुलूसों, समारोहों । वाजराजां - घोड़ों । गजराजां - हाथियों ।

क्रसटवाळ^१ केसरां, करै^२ बह^३ चरू^४ उकाळां ।
 केसरिया^५ बह^६ करै^७, मसत उच्छव^८ मतिवाळां^९ ।
 अगनाभ^{१०} अतर सौधा^{११} प्रमळ^{१२}, बँटि^{१३} अग्रगजा वळोवळां^{१४} ।
 जदि चढे अनुज अग्रज गजां, हूतां हाल किलोहळां^{१५} ॥ २६८
 हळाबोळ^{१६} चतुरंग, जळाबोळां^{१७} केसरियां^{१८} ।
 हाकां खंभायचां^{१९}, डोह उच्छव^{२०} डंबरियां^{२१} ।
 अति घण^{२२} मोला^{२३} अतर, तेई^{२४} अग्रमद^{२५} घण तन्नां^{२६} ।
 भोला सुगंध समीर, पडे^{२७} भोला जोजन्नां^{२८} ।
 वाजंत^{२९} तबल गाजंत गज, इम दळ हले अपालरौ^{३०} ।
 जोधाण दिस्स^{३१} चढियौ^{३२} जदिन^{३३}, एम 'अभौ' 'अजमाल'रौ^{३४} ॥ २६९

१ ख. क्रसटवाल । २ ग. करे । ३ ख. बहौ । ग. बहौ । ४ ख. चरू । ५ ख. ग. केसरियां । ६ ख. ग. बहौ । ७ ख. करे । ८ ख. उच्छव । ग. उछाव । ९ ख. ग. मतिवालां । १० ख. ग. मृगनाभ । ११ ख. सोधा । १२ ख. प्रवल । १३ ग. बँटि । १४ ख. वलोवलां । ग. वळोवळां । १५ ख. ग. कलोहळां । १६ ख. हलाबोल । क. हलाबोल । १७ ख. जलाबोला । क. जळाबौळां । १८ ख. ग. केसरियां । १९ ख. वंभाइचां । क. वंभायकां । २० ख. ग. उछव । २१ ख. ग. डंबरियां । २२ ख. घणा । २३ ख. ग. मूला । २४ ग. तेई । २५ ख. ग. मृगमद । २६ ख. तन्नां । २७ ख. पडे । २८ ख. जोजन्नां । २९ ग. वाजंत । ३० ख. अजमालरौ । ग. अभमालरौ । ३१ ग. दिस्सो । ३२ ख. चढीयौ । ३३ ग. जदि ।

*यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है ।

२६८. क्रसटवाळ - (?) । मतिवाळां - मस्त । अगनाभ - किस्तूरी । सौधा - सुगंधित पदार्थ विशेष । प्रमळ - महक । वळोवळां - चारों ओर । अनुज - छोटा भाई । अग्रज - बड़ा भाई । किलोहळां - कोलाहल ।

२६९. हळाबोळ - बहुत, अपार । चतुरंग - सेना, दल । जळाबोळां - तरबतर, शराबोर । हाकां - आवतां । खंभायचां - खम्भाच रागिनी, यह मालकोश रागकी दूसरी रागिनी है । यह रातके दूसरे पहरमें पिछली घड़ी में गाई जाती है । डोह - आनंद । डंबरिया - बाहुल्यता, समूह । अति-घण-मोला - अत्यन्त बहुमूल्य । अग्रमद - किस्तूरी । तन्नां - (?) । भोला - प्रवाह । समीर - हवा । जोजन्नां - योजनां । अपालरौ - बेरोकटोकका, अपार । दिस्स - तरफ, ओर । अभौ - महाराजा अभयसिंह । अजमालरौ - महाराजा अजीतसिंहका ।

डाक तबल मुरसलां, हाक इतमांम जसोलां^१ ।
 चंद^२ गोळ बाजुवां^३, हुवै रंगराग हरोलां^४ ।
 हुवै^५ भपट चम्मरां^६, नाद हुवै^७ पैनायक ।
 कोतल उछटां करै, नटां भपटां है^८ नायक ।
 आवंत लोक सनमुख अनैत, करि सलाम नजरां^९ करै ।
 आवियौ^{१०} 'विभौ' धरि^{११} इंदरौ, 'अभौ'^{१२} उतनगढ़ आपरै ॥ ३००
 केसरियां^{१३} दळ कमध, एम मुरधरपति आया ।
 वंदि^{१४} कळस वर तरणि, भार द्रब^{१५} कळस भराया ।
 तोरण^{१६} चित्र जर तार, सहर बाजार सिंगारे ।
 वर^{१७} नौबति^{१८} वाजतां, महिल^{१९} महाराज^{२०} पधारे ।
 जागियौ^{२१} भाग जोधांणरौ, रंगराग^{२२} रळियांमणा^{२३} ।
 हुय हरख विमळ उच्छव^{२४} हुवै, मंगळ धमळ वधांमणा ॥ ३०१

१ ग. जसोलां । * रेखांकित पद्यांश ख. प्रति में नहीं है ।

२ क. चंधि । ३ ग. बाजवां । ४ ग. हरोलां । ५ ग. हुँ । ६ ग. चमरां ।
 ७ ख. ग. हुवै । ८ ग. वं । ९ ग. निजरां । १० ख. आवीयौ । ११ ख. ग.
 धरीयांस यंद । १२ ग. अभौ । १३ ख. ग. केसरियां । १४ ख. ग. वंदि । १५ ख.
 द्रव । ग. द्रव्य । १६ ख. तुरण । १७ ग. वर । १८ ग. नांबति । १९ ख. ग.
 महिल । २० ख. ग. माहाराज । २१ ख. जागियौ । ग. भागियौ । २२ ख. रंग-
 राज । २३ ख. ग. रळियांमणा । २४ ख. ग. उछव ।

३००. डाक - डंका, वाद्य विशेष । तबल - वाद्य विशेष । मुरसलां - वाद्य विशेष ।
 इतमांम - (?) । जसोलां - यश-गायक । चंद - सेनाका वह भाग जो सेनाके
 पीछे रक्षार्थ रहता हो चंदावल । गोळ - सेनाका मध्य भाग । बाजुवां - इर्द-गिर्द,
 बाजूमें । हरोलां - सेनाका अग्र भाग, हरावल । भपट - चंवर डोलानेका भोंका ।
 पैनायक - वाद्य विशेष । कोतल - जुलूसमें अगाड़ी चलाया जाने वाला सजासजाया
 घोड़ा जिस पर कोई सवार न हो अथवा स्वयं राजाकी सवारीका घोड़ा । उछटां -
 उछल-कूद, चंचलता । नटां-भपटां-है-नायक - (?) । नजरां - भेंट ।
 विभौ - वैभव, ऐश्वर्य । अभौ - महाराजा अभयसिंह ।

३०१. तरणि - तरुणी, युवा स्त्री । भार - समूह । द्रब - द्रव्य, धन । तोरण - वे मालाएं
 आदि जो सजावटके लिए खंभों और दीवारों आदिमें बांध कर लटकाई जाती हैं,
 बंदनवार । जर - स्वर्ण, सोना, तार, चांदी । जागियौ भाग जोधांणरौ - जोधपुर
 नगरका भाग्य खुल गया, वह अहोभाग्य या कृतकृत्य हो गया । रळियांमणा - आनंद-
 पूर्वक, हर्षसहित, मनोहर । मंगळधमळ - मांगलिक गायन । वधांमणा - बधाईके
 गीत

सभि बतीस^१ नव सात, मिळे सुकिया^२ जुथ मेळा ।
 वांणी कोकिल विमळ, चवै चंदवदन^३ सचेळा ।
 गहर अत्त^४ गायणी, करै^५ उच्छव^६ अधिकारां ।
 महा^७ चित्रमिदरं^८, वसे^९ 'अभमल' जिणवारां ।
 नवरंग सनेह आणंद^{१०} नव, उभळ^{११} प्रफूल^{१२} उभाळ सूं^{१३} ।
 रतिराज जोड़ नर^{१४} रज्जिए^{१५}, महाराज^{१६} अभमाल सूं^{१७} ॥ ३०२

निस बीती^{१८} आणंद^{१९}, उदत^{२०} सूरज उणवारे ।
 आय गौख^{२१} अमास^{२२}, नरिंद निज नगर निहारे ॥
 राजतिलक मौसरां, फतै नागौर^{२३} फबाई^{२४} ।
 जदि जदि दीठौ^{२५} जिसौ^{२६}, उणां^{२७} हुंता अधिकारी ।
 तीसरी वार गढ़ सहर^{२८} तदि, ईखे अधिक अडंबरां ।
 तीसरै बोल^{२९} जेठातणै, अधिक चढ़े^{३०} रंग अंबरां^{३१} ॥ ३०३

१ ख. ग. छतीस । २ ख. सुकीया । ३ ख. चंद्रवदन । ग. चंदववनी । ४ ख. नृत । ग. नृति । ५ ख. करे । ६ ख. ग. उच्छव । ७ ख. ग. सवेसन । ८ ख. ग. चित्रमंदिर । ९ ग. वसे । १० ग. आनंद । ११ ख. उच्छव । ग. उत्छव । १२ ख. ग. प्रफूल । १३ ग. उभाळसौ । १४ ग. नह । १५ ग. रजीए । १६ ग. माहाराजा । १७ ग. अभमालसौ । १८ ख. वीती । १९ ख. आणंदमे । ग. आनंदमे । २० ख. ग. उदित । २१ ग. गोष । २२ ख. अम्मस । २३ ख. नागौर । २४ ख. फबाई । २५ ग. दीठो । २६ ख. जिसै । २७ ख. वेण । ग. वण । २८ ग. सहरि । २९ ख. बोल । ग. बौल । ३० ख. चढ़ै । ३१ ख. ग. अम्मरां ।

३०२. सभि बतीस नव सात — बतीस प्रकारके आभूषण और सोलह प्रकारके शृंगार करके । सुकिया — स्वकीया, पतिव्रता । जुथ — यूथ, समूह । मेळा — मिलाप । चवै — कहुती है । चंदवदन — चंद्रमुखी । सचेळा — गंभीर, गांभीर्यपूर्ण । नृत — नृत्यका । अधिकारां — विशेष । महा चित्र मिदरं — महा चित्रमहल । अभमल — महाराजा अभयसिंह । नवरंग...आणंद नव — नये ही आनंद और नवीन ही स्नेह से । उभळ — उमड़ कर । प्रफूल — प्रफुल्लित । रतिराज — कामदेव । जोड़ — समानता । अभमाल — महाराजा अभयसिंह ।

३०३. निस — रात्रि । उदत — उदय । अमास — भवन, आवास । नरिंद — नरेन्द्र, राजा । मौसरां — श्मश्रुके बाल, अवसर । ईखे — देखा । अडंबरां — आडंबर, शोभा, सजावट । बोल — वचन, शब्द । जेठातणै — जेष्ठके ।

भड़ घड़जै^१ भूपाळ, कड़ा मोतियां^२ वधारां ।
 असि सिरपाव अपार, दीध करि^३ कुरब अपारां^४ ।
 सीख घरां दिस^५ सभे, तवे^६ इम हुकम तवांनं ।
 सभि आवौ^७ सांमांन^८, जदिन अखै परवांनं ।
 जो हुकम कहै^९ पगवंदि जदि, एम सुभड़ घर^{१०} आविया^{११} ।
 कमधेस तांम मोती कड़ा, सघण जेम वरसाविया^{१२} ॥ ३०४

कविराजा करि कुरब, तुरंग सिरपाव ब्रवे तदि ।
 समपे गज सांसणां, जड़ित नग कड़ा मुक्त^{१३} जदि^{१४} ।
 हेत नजर^{१५} करि हरख, कहै^{१६} ऊचरे^{१७} हुकम्मां ।
 दे^{१८} असीस विरदाय, करे सिल्लाम^{१९} कदम्मां^{२०} ।
 हुय^{२१} विदा हले^{२२} बह^{२३} चित हरख, निज गुण कहत नरेसुरां ।
 डहकंत प्रथी^{२४} देखे डंबर^{२५}, राजेस्वरां^{२६} कवेसुरां ॥ ३०५
 जोख^{२७} एम जोधाण, रीभ मंडे महाराजा ।
 वागां गोठ वणाव, सभे^{२८} उच्छाह^{२९} सकाजा ।

१ ख. ग. पूजं । २ ख. मोतीयां । ३ ग. कर । ४ ख. ग. उवारां । ५ ख. दिसि ।
 ६ ग. तवे । ७ ख. आयौ । ८ ख. ग. सामांन । ९ ख. कहे । १० ख. ग. घरि ।
 ११ ख. आवीयां । १२ ख. वरसावीया । १३ ख. मुगति । ग. मुगत । १४ ख. तदि ।
 १५ ग. निजर । १६ ख. कहे । १७ ख. उच्चरे । ग. उच्चरे । १८ ख. ग. दे ।
 १९ ग. सिलाम । २० ख. कदंमां । ग. कदंमां । २१ ख. ग. होय । २२ ख. हल्ले ।
 २३ ख. बहौ । ग. बहौ । २४ ख. ग. प्रथी । २५ ख. डंमर । २६ ख. ग. राजेसुरां ।
 २७ ख. ज्यौष । ग. जोष । २८ ग. सभे । २९ ख. ग. उच्छाह ।

३०४. घड़जै — घड़ाते हैं । वधारां — विशेष, जागीर । दीध — दिये । कुरब — प्रतिष्ठा ।
 तवे — कहा । तवांनं — नुकसानका मुआवजा, क्षति-पूर्ति तावान । सभि — सुसज्जित
 होकर । परवांनं — हुब, आज्ञापत्र । जो हुकम — जैसी श्रीमान्की आज्ञा हो । सुभड़ —
 थोड़ा । कमधेस — राठोड़ राजा । सघण — घन, बादल, यहां इंद्र अर्थ ठीक बैठता है ।
 ३०५. तुरंग — घोड़ा । ब्रवे — दिये । सांसणां — राजा द्वारा चारणोंको पुरस्कारमें दी गई
 भूमि या गांव । जड़ित — जटित । मुक्त — मोती, मुक्ता । असीस — आशीष ।
 विरदाय — विरदा कर । डहकंत — हक्का-बक्का होता है । डंबर — (डंमर) वैभव ।
 राजेस्वरां — राजाओं । कवेसरां — कवीश्वरों ।

३०६. जोख — आनंद, हर्ष । रीभ — दान, पुरस्कार ।

रचं रौस^१ रौसरी, कळा बहतरी अधिकारां ।
 रमै कमंध राजिद्र^२, रौस रौसरी सिकारां ।
 जेठी कुरंग मदभर जुटै, होय^३ इनांमां हुन्नरां^४ ।
 क्रीडा विलास विधविध^५ करै, अभौ^६ 'इंद'^७ आडंबरां ॥ ३०६

जळ चादर धरहरां, जोख^८ वागीचां जोवै ।
 रंग चौगांनां रमै, हरख ओछव^९ नित^{१०} होवै ।
 रमै वसंत राजंद^{११}, पतंग चरखां^{१२} अप्पालां^{१३} ।
 केसर^{१४} छौळ^{१५} अबीर, गूज^{१६} डंबरां गुलालां ।
 मंजलसां खास चौकी मंडै^{१७}, अतर गुलाबां अंबरां ।
 क्रीडा^{१८} विलास विधविध^{१९} करै, 'अभौ'^{२०} इंद^{२१} आडंबरां ॥ ३०७

महाराजा अभैसीधजीरो अहमदाबादरै जुध साह आपरा सांमंतानूं फुरमाण भेजणा

विधविध^{२२} भोग विलास, करै^{२३} उच्छव^{२४} कौतूहळ ।
 पछै किया^{२५} छत्रपती^{२६}, विदा फुरमाण चहूंबळ ।

१ ख. चौसरांस । २ ख. राजेंद्र । ग. राज्येंद्र । ३ ग. होय । ४ ग. हुन्नरा ।
 ५ ख. ग. विधिविधि । ६ ख. ग. इंद । ७ क. जौष । ८ ख. ग. उछव । ९ ख.
 नित्य । १० ख. ग. राज्यंद । ११ ख. ग. पिचरकां । १२ ख. ग. अपालां । १३ ख.
 ग. केसरि । १४ ख. ग. छौळ । १५ ख. डंभ । ग. डूभ । १६ ख. ग. मंडै । १७ ख.
 क्रीडा । १८ ख. विधि । १९ ग. अभौ । २० ख. ग. इंद । २१ ख. ग. विधिविधि ।
 २२ ख. करै । २३ ख. ग. उछव । २४ ख. ग. कीया । २५ ग. छत्रपती ।

३०६ रौस - (?) । राजिद्र - राजेन्द्र, महाराजा । जेठी - पहलवान । कुरंग - घोड़ा
 (?) । मदभर - हाथी । क्रीडा - खेल । अभौ - महाराजा अभयसिंह । इंद -
 इन्द्र । आडंबरां - वैभव, ठाठ ।

३०७. धरहरां - आवाज, ध्वनि । रंग - आनंद । ओछव - उत्सव । चरखा - कनकोआका
 डोरा लपेटनेका उपकरण । छौळ - धारा । गूज - (?) । डंबरां - समूह ।
 मंजलसां - मंजलिसों, सभाओं । अंबरां - अंबर नामक सुगंधित पदार्थ । क्रीडा -
 क्रीडा, आनंद । अभौ - अभयसिंह । आडंबरां - वैभव, ऐश्वर्य ।

३०८. विदा - रवानगी, प्रस्थान । फुरमाण - फरमान । चहूंबळ - चारों ओर ।

वांदि^१ वांदि फुरमांण, सिलह पाखर करि सांमां ।
 आया^२ सबै^३ उमराव, सूर बह^४ मिळे^५ समांमां ।
 दळ चढे पूर सामंद्र^६ दुति, कमंध दरगह कांमरा ।
 फिर^७ मिळे^८ पदम अड्डार^९ कपि, रांवण मारण रांमरा ॥ ३०८

ठांम ठांसू मारवाडरा सांमंतरौ जोधपुरमें एकठौ होवणौ

हुकम वजीरां^{१०} हुवा, करौ लसकर अधिकारां ।
 तर कलमां दफतरां, हुवै अन्नेक हजारां ।
 रहै लोक अणपार, हुवै घूमरां मुहल्लां^{११} ।
 आवै रहै अनेक, भडज^{१२} भड भल्ला भल्लां^{१३} ।
 दादनी उरड़ भड मँडि दरब, मिळे^{१४} सबळ दळ मांमरा ।
 किर^{१५} मिळे पदम अड्डार कपि, रांवण मारण रांमरा ॥ ३०९
 दळ बादळ बळ देखि, मगज^{१६} धरि भूप महाबळ ।
 तांणि मूँछ खग तोलि, हुकम इम दीध^{१७} भळाहळ ।

१ ग. वांदि वांदि । २ ख. आया । ३ ख. ग. आया । ४ ख. बहौ । ग. बहौ ।
 ५ ग. मिलै । ६ ख. ग. सामंद । ७ ख. किरि । ग. करि । ८ ख. मिलै । ९ ख.
 अड्डार । ग. अड्डार । १० ख. ग. उजीरां । ११ ग. मुहल्ला । १२ ख. ग. भिडज ।
 १३ ग. भला भला । १४ ख. ग. मिलै । १५ ख. किरि । १६ ख. मगध । १७ ख.
 ग. कीध ।

३०८. सिलह — कवच । पाखर — युद्धके समय घोड़े या हाथीको पहिनाई जाने वाली झूल, हाथी
 या घोड़ेका कवच । सांमां — सामान या सुसज्जित । समांमां — अनुकूल । दुति — धुति,
 प्रकार, ढंग, (?) । दरगह — दरबार । किर — मानों । पदम — गणितमें सोल-
 हवें स्थानकी संख्या, पद्म, जो इस प्रकार लिखी जाती है १००००००००००००००० ।
 कपि — वानर ।

३०९. वजीरां — मंत्रियों । लसकर — सेना, फौज । तर.....हजारां — (?) ।
 घूमरां — दलों । मुहल्लां — मोहल्ला, कूचा । भडज — घोड़ा । भड — घोड़ा ।
 भल्ला भल्लां — बढ़िया से बढ़िया, एकसे एक उत्तम । दादनी — धन्यवाद की ?
 उरड़ — अधिक, बहुत, समूह । भड — निरंतर होने वाली वर्षा । दरब — द्रव्य,
 धन-दीलत । मांमरा — (?) ।

३१०. दल-बादल — एक प्रकार का बहुत बड़ा तंबू या खेमा । मगज — गर्व । तांणि.....
 तोलि — मूँछ पर ताव देकर हाथमें तलवार उठा कर । दीध — दिया । भळाहळ —
 रोबपूर्ण, जोशपूर्ण ।

हुजदारां^१ आपरां, वेग^२ ताकीद करावौ^३ ।
दखिण गुजराति^४ दिसा, पेसखांना^५ पधरावौ^६ ।

फौजरी सामान लेजाणें वाळा ऊंटारी वरणण

सिर वंदि^७ हुकम तिण हिज^८ समें, दिया^९ कारखांनां दुवा ।
कत्तार भार-वरदार कजि, हुकम सारवांनां हुवा ॥ ३१०

बुगर बलौच बँवाळ, जूंग जालोरी^{१०} जब्बर^{११} ।
अजगर कंध अमोभ^{१२}, भ्रगुट^{१३} मुदगर^{१४} भैराहर^{१५} ।
जोल^{१६} खंभ देवळा^{१७}, कमठ ईडर कठठंता ।
घण भरतां जळ घाट, माट जैही^{१८} कठठंता^{१९} * ।

१. ख. ग. हुजदारां । २. ख. वेगि । ३. ख. करावो । ४. ख. ग. गुजरधर । ५. ख. पेसखानो । ग. पेसखानां । ६. ख. पधरावो । ७. ख. वांदि । ग. बांदि । ८. ख. ग. हीज । ९. ख. ग. दीया । १०. ख. जालोरी । ११. ग. जबर । १२. ख. ग. अमोभ । १३. ख. ग. भ्रगुट । १४. ख. मुरगर । १५. ग. भैराहर । १६. क. जोल । ग. जोळ । १७. ग. देवळां । १८. ग. जैही । १९. ग. मटठंता ।

* यह पंक्ति ख. प्रति में नहीं है ।

३१०. हुजदारां - (?) । वेग - शीघ्र । ताकीद - शीघ्रता । पेसखांना - सेनाका वह सामान जो पहिलेही उसके अगाड़ी भेज दिया जाता है, पेशखेमा । पधरावौ - भेज दीजिये । कारखांनां - सरकारी विभाग, महकमा । दुवा - दुआ आशा, हुक्म । भार-वरदार - भारवाहक । कजि - लिये । सारवांनां - शूतर-सवारों ।

३११. बुगर - एक प्रांत विशेष जहांके ऊंट बढ़िया होते हैं अथवा इन प्रांतका ऊंट । बलौच - बिलोचिस्तान या बिलोचिस्तानका ऊंट । बँवाळ - तेजस्वी, तेज । जूंग - ऊंट । जालोरी - जालोर प्रांतका । जब्बर - जबरदस्त । कंध - कंधा, स्कंध । अमोभ - बड़ा । भ्रगुट - मस्तक । मुदगर - काठका बना एक प्रकारका गावदुमा दंड जो मूठकी और पतला और आगेकी और कुछ भारी होता है । पहलवान. इससे कसरत करते हैं । भैराहर - कुएसे जल सींचनेका गिराँरा जिसे चाकला भी कहते हैं । इसकी ऊंटके शिरसे उपमा दी जाती है । जोल - पंर । देवळा - देवालियों । कमठ - कच्छप । ईडर - ऊंटके वक्षस्थलका अवयव विशेष जहांकी चमड़ी खुरदरी एवं कठोर होती है । कठठंता - जोशपूर्ण चलता हुआ, बोभके कारण ध्वनि विशेष करता हुआ ।

मजबूत^१ थूँभ^२ डाचा मगर, जियां पृच्छ करवत जिसा ।
 भोखियां^३ सिंधु^४ नुखतां भटक, अंध कंध राकस इसा ॥ ३११
 नवहत्थो^५ भोकरा, *मसत^६ फीफरा भरारा ।
 बगलां उरली बिहूं, बगलि नीकलै^७ छिकारा^८ * ।
 रंग केइक रातड़ा, भसम धूंहर भमराळा^९ ।
 जटा जूट ऊजळा, केइक भूरा केइ^{१०} काळा ।
 मिळि रीछ रूप अधियांमणा^{११}, जकस^{१२} जिहाजां जम जिसा ।
 भोकियां^{१३} सिंधु^{१४} नुखतां भटक, अधकंध राकस इसा ॥ ३१२
 रव्वारां^{१५} थप्पले^{१६}, घघ^{१७} पाकेट भयंकर ।
 नेसां चसळक नयण, भाळ भागूंडां नीभर ।

१ ख. मजबूत । ग. मजबूत । २ ख. थूंड । ग. थूँभ । ३ ख. भोकीया । ग. भोकिया ।

४ ख. सिंधु । ग. संध । ५ ख. ग. नवहत्थी । ६ ग. मसक ।

... रेखांकित पंचांश ख. प्रति में नहीं है ।

७ ग. नाकलै । ८ ग. बिकारा । ९ ख. ग. भंभराळा । १० ख. ग. के । ११ ख. ग. अधीयांमणा । १२ ख. ग. जकसि । १३ ख. भोकीयां । १४ ख. ग. संध । १५ ख. रेवालां । ग. रेवारां । १६ ख. थापले । ग. थापलै । १७ ख. ग. घघ ।

३११. थूँभ — कोहान, डिल्ला । मगर — घड़ियाल नामक प्राणी । डाचा — मुख, खुला मुख । जियां — जिन । भोखियां — ऊंटको बैठाने पर । सिंधु — ऊंट, (?) । नुखतां — ऊंटका नाकसे बांधनेकी रस्सी, मोहरी । भटक — भटके के साथ खींच कर ।

३१२. नवहत्थी — नौ हाथ लंबा । भोकरा — ऊंटके बैठनेके स्थानका । मसत फीफरा-भरारा — वह इतने मस्त हैं कि उनके फेफड़े फूले रहनेसे मुखकी आवाज भराई सी होती है । बगलां — ऊंटके दोनों अगले पैरोंके पासका वह स्थान जहाँसे वे ऊंटके थड़से मिलता है । उरली — चौड़ी । बिहूं — दोनों । छिकारा — (खरगोश ?) । रातड़ा — लाल । भसम — भस्मीके समान रंगका । धूंहर — आकाशमें बाहुल्यतासे छा जाने वाले रज-कण या इस प्रकारके छा जाने वाले रज-कणके रंगके समान रंगका । भमराळा — भ्रमरके समान रंगका । जटा जूट — घने वालों वाला । ऊजळा — सफेद रंगका । काळा — इयाम रंगका । अधियांमणा — भयंकर । जकस — (?) । जिहाजां — जहाजों । भोकियां — ऊंटोंको भूमि पर बैठाने पर ।

३१३. रव्वारां — रेबासे राजस्थानकी एक जाति विशेष जिसका प्रमुख कार्य ऊँट रखने और चरानेका होता है । थप्पले — पीठ पर थपड़े देकर जोश दिलाता है । घघ — ऊंट । पाकेट — ऊंट । नेस — ऊंटके दांत । चसळक — मस्तीमें आए हुए ऊंट द्वारा अपने मुंहकी चलाते हुए की जाने वाली दांतोंकी ध्वनि विशेष । भाळ — तेज । भागूंडां — फेन । नीभर — निकलते हैं ।

आका रीठ कुरीठ, वयँड छोडे^१ वेछाड़ां^२ ।
 इसा^३ दीठ अरवनाड़, पीठ ले हलै पहाड़ां ।
 कतार भार भर कठठिया^४, करै^५ गाज भंभट करै^६ ।
 हालिया^७ जाणि^८ सांमंद्रहूं, भाद्रव^९ वादळ जळ भरे^{१०} ॥ ३१३

ऊंटाने बैठा कर सामान उतारणी अर तंबू तांणना

कठठ भार भेकिया^{११}, घग्घ^{१२} राकस घाटंबर ।
 उतारिया^{१३} अप्पार^{१४}, पेसखांना पाटंबर ।
 करे नजर^{१५} भर कूंत, फजर तजबीज फरासां ।
 जळ डंबर तर जूथ, चौक^{१६} घर सम^{१७} चौरासां ।
 मेखां निहाव पड़ि मेखचां, ताळी तजे तपेसरा^{१८} ।
 घर धूजि^{१९} धमक^{२०} विसहर धुकै^{२१}, सहस धुकै^{२२} फण सेसरा ॥ ३१४
 तांण^{२३} सरद चवतरफ^{२४}, करे तजबीज कनातां ।
 कनक भळाहळ कळस, वणे बंगळा वनातां ।

१ ख. जोडे । ग. भोडे । २ क. बेठाडां । ३ ख. यसा । ४ ख. कठठीया । ग. कठठीया ।
 ५ ख. करे । ६ ख. ग. करे । ७ ख. हालीया । ८ ग. जाण । ९ ख. भाद्रवि ।
 १० ग. भरे । ११ ख. भेकिया । १२ ख. ग. घघ । १३ ख. उतारीया । ग. उतारिया ।
 १४ ख. ग. अप्पार । १५ ग. नजरि । १६ ख. ग. चौकि । १७ ख. सम । १८ ख.
 तपेसरां । १९ ख. धूज । २० ख. ग. धमकि । २१ ग. धुकै । २२ ग. धुकै । २३ ख.
 ग. तांणि । २४ ग. चोतरफ ।

३१३. आकारीठ — जबरदस्त । कुरीठ — भयंकर । वयँड — हाथी । वेछाड़ां — उदण्ड, मस्त ।
 दीठ — दृष्टि । अरवनाड़ — जबरदस्त । गाज — गर्जना । भंभट — बखेड़ा । भाद्रव —
 भादो मास ।

३१४. भेकिया — ऊंटोंकी भूमि पर बैठा दिये । घग्घ — ऊंट । राकस — राक्षस । घाटंबर —
 प्रकार, ढंग । पाटंबर — वस्त्र, रेशम । डंबर — शराबोर । तर — वृक्ष । चौरासां —
 चारों ओरसे । सम — समतल । निहाव — प्रहार, चोट । मेखचां — खूँटी ठोंकनेकी
 मुगरी, मेखचू । ताळी — व्यानावस्था, समाधि । तपेसरां — तपस्वियों । घर — भूमि,
 धरा । धमक — प्रहार, चोट । विसहर — विषधर, सर्प । धुकै — (?) । सहस —
 सहस्र । सेसरा — शेषनामके ।

३१५. सरद — (?) । चवतरफ — चारों ओर । तजबीज — बंदोबस्त, तजबीज ।
 कनातां — मोटे कपड़ेकी वह दीवार जिसे किसी स्थानको घेर कर आड़ करते हैं ।
 बंगळा — हवादार छोटा तंबू ।

तण^१ पचरंग तणाव, गडे^२ मेखां त्रंवागळ^३ ।
 वंस^४ रजत सोवन्न^५, वणै डेरा दळ वादळ ।
 महाराबदार मँडिया मँडप, ज्वाब ज्वाब^६ ऊपर^७ जुवा ।
 दखिणादि^८ धरा गुजरात दिस^९, हुवै हुकम डेरा हुवा ॥ ३१५
 करि गुलाब छड़िकाव^{१०}, जरी^{११} रावटी जगामग^{१२} ।
 भोलरियां^{१३} मोतियां^{१४}, तिलाकारी^{१५} पड़दा चिग ।
 मंडप तह मुखमुलां^{१६}, खड़ग गहि बालां^{१७} खांतां ।
 जगमग खंभ जड़ाव, मँडे जरदोज^{१८} समांतां ।
 गिलमां विछायत^{१९} मसदां^{२०} गरक, परतकिया^{२१} धर^{२२} प्रेमरा ।
 जगमग जड़ाव वणिया जठै, हेम तखत छत्र हेमरा ॥ ३१६

डेरांरी वरणण

इम डेरां आपरां, और^{२३} डेरा उमरावां ।
 प्रगट व्यास प्रोहितां, कामदारां कविरावां ।

१ ख. तणि । २ ग. गजे । ३ ख. त्रंवागल । ग. त्रंवागळ । ४ ख. ग. वांस ।
 ५ ख. ग. सोवन्न । ६ ख. ज्वाब ज्वाब । ग. ज्वाब ज्वाब । ७ ख. ग. ऊपरि । ८ ख.
 दखिणाव । ९ ख. ग. दिसि । १० ख. छड़िकाव । ग. छड़िकाव । ११ ख. ग. जड़ी ।
 १२ ख. ग. जगमग । १३ ख. भल्लारी । ग. भल्लारी । १४ ख. ग. मोतियां । १५ ग.
 चिलाकारी । १६ ख. ग. मुखमुलां । १७ ख. वाला । ग. बालां । १८ क. जरदोज ।
 १९ ख. ग. विछाति । २० ख. मसदा । २१ ख. ग. कोया । २२ ख. ग. धरि ।
 २३ ग. और ।

३१५. तण - खींच कर । तणाव - वे रस्सियां जिनके सहारे तंबू खड़ा किया जाता है ।
 त्रंवागळ - ताम्रकी (?) । मँडिया - बनाये गये । मँडप - बहुतसे आदमियोंके
 बैठने या ठहरनेके लिये चारों ओरसे खुला परन्तु ऊपरसे छाया स्थान । ज्वाब
 ज्वाब - ठीक स्थान पर, जा-बजा । जुवा - पृथक, भिन्न ।

३१६. रावटी - कपड़ेका बना एक प्रकारका छोटा डेरा जिसके बीचमें एक बंडेर होती है और
 जिसके दोनों ओर दो ढलुए पड़े होते हैं । यह बड़े खेमोंके साथ प्रायः नौकरों
 आदिके ठहरनेके लिये लगाये जाते हैं, छोलदारी । जगमग - चमक-दमक । तिला-
 कारी - सुनहरी कामदार । चिग - चिलमन । समांतां - सामियाना, तंबू । मसदां -
 बड़े तकिए, गोल तकिए ।

मिसल मिसल ऊपरा^१, डहे लरी^२ भर^३ डँबर^४ ।
 वसँत जाण^५ वनपत्रां^६, भार अड्डार^७ पुहण^८ भर^९ ।
 जोगणैतणै^{१०} सोसन^{११} जरद, असपक तणिया^{१२} ऊजळा ।
 सांमणे जाण^{१३} रँगरँग सिखर, वणे आण^{१४} चहुवै^{१५} बळा ॥ ३१७

जुधरा सांमानरी वरणण

सीसा भार सतोल, भार बाणां गाडाभर ।
 गंज^{१६} भार गोळियां^{१७}, भार गोळां भैराहर ।
 भार सोर भातड़ां^{१८}, सूत सिलहां^{१९} सांमानां^{२०} ।
 सरब भार सिरताज, भार पुरकार खजांना ।
 धर भार अराबां अरण-धज, *बेलां हमलां बारणां ।
 धुर भार सकट कटुठ^{२१} धमळ^{२२}*, भार बाण भारथरणां^{२३} ॥ ३१८

तोपांरी पूजा अर तोपांरी वरणण

साक पाक करि सुजळ, मात कहि^{२४} कहि महमाई^{२५} ।
 तेल धार^{२६} ततकाळ^{२७}, चाढ़^{२८} मद-धार चढाई ।

१ ग. उपरा । २ ख. लहरी । ग. लहरि । ३ ख. भरि । ग. करि । ४ ख. डँवर ।
 ५ ख. जाणि । ६ ख. ग. पनपती । ७ ख. ग. अठार । ८ ख. पोहोप । ग. पहोप ।
 ९ ग. सर । १० ख. ग. जोगणेतणे । ११ ख. ग. सोसन । १२ ख. ग. तणीया । १३ ख.
 ग. जाणि । १४ ख. ग. आणि । १५ ख. ग. चहुवै । १६ ख. ग. गज्ज । १७ ख.
 गोलीयां । १८ ख. भाडथां । ग. भाथड़ां । १९ ग. सिलह । २० ख. सामानां ।
 ग. सामानां । २१ ग. कठटे । २२ ग. धमळ । २३ ख. ग. भारथरणां ।

... चिन्हांकित पद्यांश ख. प्रतिमें नहीं है ।

२४ ख. कदि । २५ ख. माहामाई । २६ ग. धारि । २७ ख. ततकाळि । २८ ख.
 चाढि । ग. चाढ़ि ।

३१७. मिसल—पंक्ति । डहे—(?) । डँबर—(?) । भार अड्डार—अष्टादश-
 भार । असपक—खेमा, तंबू । सांमणे—आवण मासमें । सिखर—बादल ।
 चहुवै बळा—चारों ओर ।

३१८. सीसा—सीसक नामक मूल धातु जिसकी बंदूककी गोलिएँ भी बनती हैं । गंज—ढेर ।
 भैराहर—(?) । सोर—बारूद । भातड़ां—थेलों, तर्कशों । सिलहां—कवचों,
 अस्त्रशस्त्रों । अराबां—तोपों । अरणधज बेलां—प्रातःकाल । हमलां—हमालों ।
 कटुठ—ध्वनि विशेष । धमळ—बैल ।

३१९. महमाई—महामाता, देवी, दुर्गा । मद-धार—शराबकी धार ।

बलि^१ चाढ़े बोकड़ा^२, रुधर भैसड़ा जरूर^३ ।
 वदन चोळ^४ करि विखम, लोह^५ कांबियां^६ सिंदूर^७ ।
 धुबि^८ तबल^९ बंब^{१०} उडि अरणधज, हले^{११} धमळ हुय^{१२} हळवळी ।
 हाथियां^{१३} टिलां बेलां^{१४} हमल, हठां नीठ कठठे^{१५} हली ॥ ३१९
 कठठं^{१६} जूट रहकलां, जूट^{१७} नाळियां^{१८} जंबूरां^{१९} ।
 रथ वहलां रेवतां^{२०}, भार पडतल भरपूरां ।
 पंथ लगस पैदलां, सबद घण सोर सुराबां^{२१} ।
 धमळ कोडि बाळदां^{२२}, गोडि गजराज गुराबां ।
 तिण दिन वहीर^{२३} डेरां तरफ, हाल कळोहळ करहली^{२४} ।
 निध^{२५} सुजळ जाणि^{२६} नवसै नदी, एकण साथे ऊभली^{२७} ॥ ३२०

हाथियोंका वरणण

मदतळ डांणां मसत, भरै भरणां गिर नीभर ।
 अन चारा तजि अरध, पियै^{२८} तड़कां नीरोवर ।

१ ख. ग. बलि । २ ख. बोकड़ा । ग. बौकड़ा । ३ ख. ग. जरूर । ४ क. चौळ ।
 ५ ख. बोल । ग. बोळ । ६ ख. ग. कांबीयां । ७ ख. ग. सिंदूर । ८ ख. धुबि ।
 ९ ख. तवल । १० ख. बंब । ग. बंब । ११ ग. हके । १२ ख. ग. होय । १३ ख.
 हाथीयां । १४ ख. ग. बेलां । १५ ख. ग. कठठे । १६ ख. ग. कठट । १७ ग. जूटि ।
 १८ ख. नाळीयां । १९ ख. जंबूरां । २० ख. रेवतां । ग. रेसतां । २१ ख. सुराबां ।
 ग. सराबां । २२ ख. वादलां । ग. बाळधां । २३ ग. बहिर । २४ ख. ग. करिहली ।
 २५ ख. ग. निधि । २६ ग. जाण । २७ ख. ग. ऊभली । २८ ख. पीए । ग. पीए ।

३१९. बोकड़ा — बकरा । भैसड़ा — भैंसा । चोळ — लाल । विखम — भयंकर । धुबि — बज
 कर । तबल — वाद्य विशेष । बंब — नगाड़ा । अरणधज — अरुण ध्वजा, गुदका भंडा ।
 हळवळी — कोलाहल, आवाज । हमल — धक्का, टक्कर । नीठ — कठिनतासे ।
 हाली — चली ।

३२०. रहकळां — छकड़ा जिस पर बहुतसी बंदूकें लगी होती हैं । जूट — (समूह ?) ।
 जंबूरा — एक प्रकारकी छोटी तोप । वहल — बैल गाड़ी । रेवत — घोड़ा । पडतल —
 सामान, सामग्री । लगस — लंबायमान सेनाकी टुकड़ी । सुराबां — बारूद (?) ।
 गुराबां — तोप विशेष । वहीर — प्रस्थान, रवाना । हाल — ध्वनि । निध सुजळ —
 समुद्र ।

३२१. मदतळ — हाथी । डांणां — हाथीके कंधेका मद । तड़कां — तड़ागों, तालाबों । नीरो-
 वर — जल, पानी ।

डग^१ बेड़ियां^२ दुलदु^३, लगां^४ चहुंवां^५ पग लंगर ।
 आकासी सारसी, करै अग्राज^६ भयंकर ।
 भभरूत रजी धोसर^७ भसम, काळदूत चख भाळ किध^८ ।
 बनि^९ बसै भूतकाळा वयंड, वनखंडी अवधूत^{१०} विध^{११} ॥ ३२१
 छच्छ^{१२} मास छाकियां^{१३}, हुवा डाकियां^{१४} हठीलां ।
 प्रचंड नील जमि पीठ, निलै त्रसलै^{१५} जमि नीलां ।
 सघण गाज^{१६} जिम सुणे^{१७}, गाज मदमसत गयंदो ।
 सादूळौ सिर पटकि, मरै संगार^{१८} मयंदो ।
 करि फौतकार^{१९} भुक्कै^{२०} कहर, चाढ़ि सूंड फण चाचरै ।
 सिखराळ गिरद चढि जाणि^{२१} स्रप^{२२}, काळदार भाटक करै ॥ ३२२
 घणा इसा घेरिया^{२३}, भचकि^{२४} करि गडां^{२५} भयंकर ।
 बैठ बैठ बोलतां, नीठ बैठा जोरावर ।

१ ख. उग । २ ख. बेडीयां । ग. बेडीयां । ३ ख. दुदु । ग. दलद्व । ४ ख. लनां ।
 ५ ख. ग. चहुंवे । ६ ख. ग. अग्राज । ७ ख. ग. धूसर । ८ ख. कीध । ९ ग. वलि ।
 १० ख. ग. अवधूत । ११ ख. ग. विधि । १२ ख. छछ । ग. छछ । १३ ख. छाकीयां ।
 १४ ख. डाकीयां । १५ ख. ग. त्रिसलै । १६ ख. जाग । १७ ग. सुणे । १८ ख. ग.
 सिंगार । १९ ग. फूतकार । २० ख. ग. भूकै । २१ ग. जाण । २२ ख. ग. स्रप ।
 २३ ख. घेरीया । २४ ग. भचक । २५ ग. गडा ।

३२१. डग — हाथीके पिछले पैरोंको बांधनेका रस्सेका बन्धन विशेष । चहुंवां — चारों
 पैरोंमें डाली जाने वाली जंजीर । सारसी — हाथीका मस्ती या जोशमें आकर अपनी
 सूंडको उठा कर घुमाना । अग्राज — गर्जना । भभरूत — जोश या आवेगपूर्ण । रजी —
 धूलि । धोसर — धूलिमिश्रित । वयंड — हाथी ।

३२२. छच्छ — छ-छः । छाकिया — मस्त । डाकिया — (डाकी, मोटे ?) । निलै —
 ललाट । त्रसलै — क्रोधादि के कारण ललाटमें पड़ने वाली तीन सिकुड़न । सादूळौ —
 शार्दूल, शेर । मयंदो — हाथी । फौतकार — सांप, बैल, हाथी आदिकी फूतकार ।
 चाचरै — मस्तक पर, ललाट पर । सिखराळ — शिखर वाला । स्रप काळदार — कृष्ण
 सर्प । भाटक — सांपके फनका प्रहार ।

३२३. घणा — बहुत । भचकि — (?) । गडां — गंडस्थलों (?) ।

कलां^१ जळां सँपलाय^२, तेल आंमलां चढ़ावा ।
 कलां जडे^३ कांटिया^४, कलां बांधिया^५ किलावा ।
 कल हूंत तिलक सिर काढिया^६, प्रगट धनख^७ जिम पावसां ।
 कज्जल^८ पहाड़ भळ मँगळ^९ किध, जाणै^{१०} सिधां अमावसां ॥ ३२३

रसां भीड़^{११} रेसमां, भूल घँटवीर भळारी ।
 परां गदीलां परठि, धरां^{१२} चाचरां अंधारी ।
 जोख नोख गुलजार, कलावूतां^{१३} वणि कम्मळ^{१४} ।
 तरह कांम तारीफ, हौसनायक भाळाहळ^{१५} ।
 जगमगत फूल जरदौजरा^{१६}, वयँडां^{१७} पीठ^{१८} वखांणिया^{१९} ।
 अंधार निसां जाणै वरस^{२०}, तारामंडळ^{२१} तांणियां^{२२} ॥ ३२४

महावतारो वरणण

नट कछनी करि निहंग^{२३}, धरे अंगरखा बहादर^{२४} ।
 जमदाढ़क गज वाग^{२५}, कसे सहटीं कर कम्मर^{२६} ।

१ ख. कडां । २ ख. ग. संपलाय । ३ ख. जले । ४ ख. ग. कांटीयां । ५ ख. ग. बांधीया । ६ काढीया । ७ ख. ग. धनक । ८ ख. ग. कश्मल । ९ ग. मम्मळ । १० ख. ग. जाणे । ११ ख. ग. भीड़ । १२ ख. ग. धरे । १३ ख. कलावूलां । १४ ग. कम्मळ । १५ ग. भाळाहळ । १६ ख. ग. जरदौजरा । १७ ख. वयँदां । १८ ख. ग. पीठ । १९ ख. ग. वखांणियां । २० ख. ग. उरस । २१ ग. तारामंडलि । २२ ख. तांणीयां । २३ ग. नीहंग । २४ ख. ग. बहाधर । २५ ख. वाघ । ग. बाघ । २६ ग. कमर ।

३२३. सँपलाय — स्नान करा कर । कांटिया — हुक्क । कलां — कलासे, चतुराईसे ।
 किलावा — हाथीके गलेमें पड़ी हुई कई लड़ोंकी रस्सी जिसमें पैर फंसा कर महावत हाथीको हांकता है । धनख जिम पावसां — मानो वर्षाकालमें इन्द्रधनुष । मँगळ — आग, अग्नि ।

३२४. रसां — रसों । भीड़ — कस कर, बांध कर । घँटवीर — वीरघंट । परां — (?) । गदीलां — गद्दों । अंधारी — हाथीके कुंभस्थल पर डाला जाने वाला प्रावरण । कम्मळ — मस्तक, गिर । (?) । वयँडां — हाथियों । वरस — उरस, आकाश । तांणिया — खींचे ।

३२५. कछनी — घुटनेके ऊपर तक पहिना या कसा जाने वाला वस्त्र विशेष । निहंग — (?) । जमदाढ़क — कटार । गज वाग — हाथीका अंकुश । सहटीं — हड़, मज-बूत । कम्मर — कटि ।

आडि^१ पेच^२ करि अडिग^३, पाघ पर घर हम्मां पर ।
 लाज^४ विरज^५ ताईत, जंत्र^६ मुहरा^७ सिर ऊपर ।
 इम सजे^८ साज मुख करि अरण, जाणै^९ सीह हकालिया^{१०} ।
 सुत बळ बँधाय कहि कुळ कसब^{११}, चढण^{१२} महावत चालिया^{१३} ॥ ३२५
 कहै^{१४} कुराण कतेब, उरह^{१५} हुय^{१६} डम्मांडम्मां^{१७} ।
 पैकंबरां पुकारि, मिळे^{१८} साजणां कुटम्मां^{१९} ।
 सूरज करे^{२०} सलांम, भिड़े मौसरां^{२१} भुंहारे^{२२} ।
 काय लियू^{२३} ईनांम^{२४}, काय जमधाम विचारे^{२५} ।
 नजरां चुकाय^{२६} गज्जन^{२७} निजर^{२८}, तके पीठ आसण तठी ।
 दौडिया लियण नट दौवडी^{२९}, जाण^{३०} पट्ट^{३१} मंडिया^{३२} जठी ॥ ३२६
 छगां छगां धरि नगां, चढे आसणां महावत^{३३} ।
 राह रूत रवि^{३४} पूत^{३५}, धूत थापलिया^{३६} धूरत ।

१ ख. आडि । २ ग. पेच । ३ ख. ग. अडिग । ४ ख. जाल । ५ ख. ग. वरज । ६ ग. जात्र । ७ ख. ग. मोहरा । ८ ख. ग. सजे । ९ ख. जाणे । १० ख. हकालिया ।
 ११ ख. किसब । ग. कीसब । १२ ग. चढत । १३ ख. चालीया । १४ ख. ग. कहै ।
 १५ ख. ऊचर । ग. उबर । १६ ख. होय । ग. होइ । १७ ख. डमांडवा । ग. डमांडवा ।
 १८ ग. मिले । १९ ख. कुटंवां । ग. कुटंवां । २० ग. करे । २१ ख. ग. मौसर ।
 २२ ख. भौहारे । ग. भौहारै । २३ ग. लीयू । २४ ख. ग. इनांम । २५ ग. विचारे ।
 २६ ग. चुकाय । २७ ख. ग. गज । २८ ख. ग. निजनजर । २९ ख. ग. दौवडी ।
 ३० ख. जाणि । ३१ ख. पट्ट । ग. पटि । ३२ ख. ग. मंडीया । ३३ ख. महाबल ।
 ३४ ख. ग. रहि । ३५ ग. पूत । ३६ ख. ग. थापलीया ।

३२५. आडि-पेच - (?) । जंत्र - यंत्र । मुहरा - हाथीके मुंह ऊपर डाला जाने वाला उपकरण । अरण - अरुण, लाल । हकालिया - ललकारा । बळ-बंधाय - साहस दिलवा कर । कसब - धंधा, कार्य ।

३२६. डम्मां डम्मां - कम्पायमान, भयभीत । पैकंबरां - पैगम्बरों । साजणां - सज्जनों, मित्रों । कुटम्मां - कुटुंबियों । मौसरां - श्मश्रु, मूँछें । भुंहारां - भीहें । काय - या, अथवा ।

३२७. छगां छगां - चलने की गति विशेष । नगां - पैरों, (?) । राह रूत - राह ग्रहके समान । रवि पूत - यमराज । धूत - मस्त, उन्मत्त । थापलिया - उत्साहित किये, जोश दिलाया ।

वड़े दळूँका तू-स, सिंगार तै सेर गिराए ।
 वड़े गढूँका जैत, वार इम कहि विरदाए ।
 तरियलां^१ डाकदारां तलक, खूभारण नग खोलिया^२ ।
 सिध पलक खुले धारे सबद, बा.....पुकारे^३ बोलिया^४ ॥ ३२७
 कलाबूत कांमरा, परठि कटहड़ा प्रचंडे ।
 जगमग नग^५ जड़ाव, मेघ डंबर पर मंडे ।
 लाल हरी सिकलात, जिलह जाळियां^६ अजौदां^७ ।
 रसां कसे रेसमां, हेम रूपी^८ हरि^९ हौदां ।
 के सकत^{१०} पूज नौबत कसे, आरौहक^{११} के आरबां^{१२} ।
 धर फरर चढ़े नीसाण धर, तोगां^{१३} मही-मुरातबां^{१४} ॥ ३२८
 सूंडनाग^{१५} सांमळा^{१६}, भोक आंमळा भपेटां ।
 दांतूसळ^{१७} ऊजळां, लगी^{१८} पांतळां लपेटां ।

१ ख. तरीयलां। ग. तेरीयलां। २ ख. बोलीया। ३ ख. पूकारे। ४ ख. बोलिया।
 ५ ख. ग. नगां। ६ ख. जालीयां। ७ ग. अजांदां। ८ ख. रूप। ९ ख. हरी।
 १० ग. केसकति। ११ ख. आरौहक। ग. आरौह। १२ ग. आरबां। १३ ख. ग.
 तोगां। १४ ख. मुरातबां। १५ ख. ग. सूंडनाग। १६ ख. सांमाला। १७ ख. ग.
 दांतूसलां। १८ ख. ग. लगीं।

३२७. दळूँका—दलोंका, समूहोंका। तरियलां—(?)। डाकदारां—मस्त हाथीको राह
 पर लाने वाले वे घुड़सवार जिनके हाथमें प्रायः सूतका गुंथा चाबुक-विशेष होता है,
 जिसे राजस्थानीमें साठ भी कहते हैं। तलक—(?)। खूभारण—हाथीके
 बांधनेका स्थान। नग—पैर। सिध.....पुकारे बोलिया—ध्यानावस्था में बैठे हुए
 तपस्वी की पलक भी खुल जाय।

३२८. कलाबूत कांमरा—सोने-चांदीके कसीदेके काम किया हुआ। कटहड़ा—काठका बना
 हाथीकी पीठ पर रखनेका चारजामा। मेघ डंबर—छत्र विशेष। सिकलात—बहु-
 मूल्य ऊनी वस्त्र। जिलह—चमक। जाळियां—(?)। अजौदां—(?)।
 सकत—शक्ति। आरौहक—सवार। आरबां—तोपों। नीसाण—झंडा। तोगां—
 मुगल साम्राज्यका ध्वज विशेष जिस पर मुरा गायके पूँछके बालोंके गुच्छे लगे रहते
 हैं। यह ध्वज मुगलकालमें उच्च पदाधिकारियोंको ही बादशाहकी ओरसे विशेष
 सम्मानके रूपमें दिया जाता था।

३२९. दांतूसळ—हाथीके बाहर निकले हुए दांत।

कोतक^१ हारां कळळ, अवर सुणजे^३ नह आहट ।
 सणणाहट^३ चरखियां^४, वीर घंटां ठणणाहट^५ ।
 गिल्लोलदार^६ गड - धरि^७ गहि, चरखदार मिळ^८ चालिया^९ ।
 गणपती लार वह^{१०} जाण^{११} गण, हरदवार दिस हालिया^{१२} ॥ ३२९
 लळवळतां^{१३} पोगरां^{१४}, पाय खळहळता लंगर ।
 भळहळतां चख भाळ, चोळ^{१५} भळहळतां चाचर ।
 धरा धूळ धकरूळ, करै फूंकार^{१६} कराळां ।
 ग्रहि उखलै^{१७} गैतूळ, तूळ जिम मूळ तराळां ।
 नेजां दकूळ उडतां निहंग, हसत भूल मिळ^{१८} हालिया^{१९} ।
 कुळअसट^{२०} गिरंद जाणै^{२१} सकळ, थावस^{२२} सुज^{२३} जंगम थिया^{२४} ॥ ३३०
 हसत जयारां^{२५} हले, खून करता खंधारां ।
 तरियल लारां^{२६} तळक, अरण मुख^{२७} धोम^{२८} अंगारां ।
 धोमारां धडहडां^{२९}, डाकदारां हौकारां ।
 चौबारां प्रज चढै^{३०}, पडै^{३१} हट नाळ बाजारां ।

१ ख. ग. कोतगहारां । २ ख. ग. सुणजे । ३ ग. सणणाहटि । ४ ख. चरखीयां ।
 ५ ग. ठणणाट । ६ ग. गिल्लोलदार । ७ ग. धारि । ८ ख. मिलि । ९ ख. चालीया ।
 १० ख. वहौ । ग. बोहौ । ११ ख. जाणि । १२ ख. चालीया । ग. हालीया । १३ ख.
 ललवणतां । १४ ख. पीगरां । १५ क. चोळ । १६ ख. ग. फौतार । १७ ख.
 ऊषलै । १८ ख. ग. इम । १९ ख. हालीया । २० ग. अष्ट । २१ ख. ग. जाणे ।
 २२ ख. ग. थावर । २३ ख. ग. सुजि । २४ ख. थियां । २५ ख. जीयांरा । ग.
 जियारां । २६ ग. लारं । २७ ख. ग. चख । २८ ख. धो । २९ ख. ग. धडहडे ।
 ३० ख. ग. चढे । ३१ ख. पडे ।

३२९. कळळ - कोलाहल । चरखदार - चरखी चलाने वाला । ठणणाहट - ध्वनि विशेष ।
 ३३०. लळवळतां - कोमलताके कारण इधर-उधर झुकने पर । पोगर - हाथीकी सूंड ।
 खळहळता - ध्वनि करता हुआ । लंगर - हाथीके पिछले पैरमें लगी जंजीर ।
 धकरूळ - अधिक धूल उड़नेसे छा जाने वाला अंधकार । गैतूळ - धूलि समूह जो उड़
 कर आकाशमें छा जाता है । तूळ - रूई । तराळां - वृक्षों । नेजां - भालों । दकूळ -
 वस्त्र, कपड़ा । निहंग - आकाश । हसत - हस्ती, हाथी । थावस - स्थावर, अटल ।
 जंगम - चलने वाला ।

३३१. तरियल - (?) । चौबारां - ऊंचे मकान जिनके चारों ओर दरवाजे हों । प्रज -
 प्रजा ।

भरतां^१ अप्पारां^२ मदभरर^३, धारां किर^४ घण धाविया^५ ।
 भणणतां^६ अपारां सिर भमर, इम दरवारां आविया^७ ॥ ३३१
 तन घण^८ घटा तराज, धरर धर^९ वाज तिलक धन ।
 पंत दंत बक^{१०} पाज, वणे^{११} सोभाज^{१२} सेत व्रन ।
 रणक घंट ददराज^{१३}, गाज ज्यूहीं^{१४} गज गाजत ।
 सिर अंकुस सिरताज, वीज^{१५} उपमा ज विराजत ।
 सोहिया^{१६} साज रँगरँग सिखर, सघण समाज सकज्ज रै^{१७} ।
 अग्राज^{१८} करै छिवता^{१९} उरस, राजद्वार 'अभरज्ज' रै^{२०} * ॥ ३३२

घोड़ांरो वरणण

अँराकी^{२१} आरबी, धटी काछी खंधारी ।
 के बलकी^{२२} सौवनी^{२३}, केक^{२४} तुरकी अग्रकारी ।
 मोती सुरंग कमेत^{२५}, लखी अबलख फुलवारी ।
 रँग जड़ाव हमरंग, हरी सुनहरी हजारी^{२६} ।

१ ख. धरतां । ग. धररतां । २ ख. ग. अपारां । ३ ग. मदधरर । ४ ख. किरि । ग. करि । ५ ख. ग. धावीया । ६ ख. भणणता । ग. भणणतं । ७ ख. आवीया ।
 ८ ग. प्रतिमें यह शब्द नहीं है । ९ ख. धुज । ग. धुर । १० ख. ग. बुक । ११ ख. ग. वणे । १२ ग. सोभान । १३ ख. ग. ददुराज । १४ ख. ग. जेहीं । १५ ख. वाज । १६ ख. सोहीया । १७ ख. ग. सकझ्भ रै । १८ ग. अग्राज । १९ ग. छिविता ।
 २० ग. अभराज । *यह पंक्ति ख. प्रति में नहीं है ।
 २१ ख. अँराकी । २२ ख. ग. बलषी । २३ ख. सोदनी । ग. सोवनी । २४ ख. ग. केइक ।
 २५ ख. कर्मत । ग. कुमेत । २६ ख. हइभारी ।

३३१. किर - मानों । भणणतां - ध्वनि विशेष करते हुए, उड़ते हुए ।

३३२. तराज - समान । पंत - पंक्ति । बक - बक पक्षी । रणक - ध्वनि विशेष । ददराज - उदधिराज, समुद्र । अभरज्ज - महाराजा अभयसिंह ।

३३३. अँराकी - घोड़ा विशेष, ईराक देशोत्पन्न घोड़ा । आरबी - अरब देशोत्पन्न घोड़ा । धटी - धाट (ऊमरकोट) देशोत्पन्न घोड़ा । मोती - रंग विशेषका घोड़ा अथवा घोड़ेका रंग विशेष । सुरंग - लाल रंगका घोड़ा । कमेत - रंग विशेषका घोड़ा । लखी - रंग विशेषका घोड़ा । अबलख - चितकबरा घोड़ा । फुलवारी - रंग विशेषका घोड़ा ।

मौहरी^१ चँपा सेली समँध^२, पचकल्याण पहचांणिये^३ ।
 अन्नेक रंग पसमां अलल, जेहा मुखमल जांणिये^४ ॥ ३३३
 डाच लगाणां^५ डहै, इसा पंडवां^६ अपारां ।
 रौल^७ पसम खुरहरां, मळै हाथळां अपारां ।
 अँग काढै^८ आरसी, पोत भरळकै^९ पसम्मां^{१०} ।
 दरियाई^{११} कस दीध, राळ^{१२} लूबै^{१३} रेसम्मां^{१४} ।
 भाकति^{१५} किलावूत्ती^{१६} सभे, तँग^{१७} रेसम^{१८} जुग तांणिया^{१९} ।
 ऊकड़ा^{२०} भीड़^{२१} उडणी इसा, उभै^{२२} कड़ा कसि आंणिया^{२३} ॥ ३३४
 करे^{२४} पोस जरकसी, कड़ी^{२५} सोव्रन कोतल^{२६} कसि ।
 वागडोर^{२७} रेसमी, तरह पचरंग^{२८} धरे तसि ।
 एम खोल^{२९} आंणिया^{३०}, परी करता नूत^{३१} पाए ।
 सूरतपाक^{३२} सुचंग, जळज कुरंगां बधि^{३३} जाए ।
 के रजत साज जंवहर कनक, छौगा मोत्रीयाळ^{३४} छजि ।
 आंणे अनेक हाजर^{३५} इसा, कमध^{३६} होण^{३७} असवार कजि ॥ ३३५

१ ख. ग. मुरहरी । २ ख. सधम । ३ ख. ग. पहचांणीये । ४ ग. जांणीये । ५ ख. णगाण । ६ ख. पांडवां । ग. पांडवी । ७ ख. ग. रौलि । ८ ख. ग. काटे । ९ ख. ग. भरल्लकां । १० ख. पसमां । ग. पसमां । ११ ख. ग. दरियाई । १२ ख. साल । ग. याल । १३ ख. लूबां । ग. लूबा । १४ ख. रेसमां । ग. रेसमां । १५ ख. ग. साववति । १६ ख. किलावूती । ग. किलावूती । १७ ख. तेग । १८ ग. रेसमां । १९ ख. ग. तांणीयां । २० ख. ग. ऊकड़ां । २१ ख. भीड़ । २२ ख. ऊभै । २३ ख. ग. आंणीया । २४ ख. ग. कसे । २५ ग. कड़ा । २६ ख. ग. कोतिल । २७ ख. वागडोरि । ग. वागडोरि । २८ ग. पंचरंग । २९ ख. ग. षोलि । ३० ख. ग. आंणीयां । ३१ ख. ग. नूत । ३२ ख. ग. सूरतिपाक । ३३ ग. बधि । ३४ ख. ग. मोत्रीयाळ । ३५ ख. हाजरि । ३६ ख. ग. कमध । ३७ ख. होण ।

३३३. सेली समँध - रंग विशेषका घोड़ा । पसमां - बाल । अलल - घोड़ा ।

३३४. डाच - मुख । लगाणां - लगाम । डहै - धारण करते हैं । खुरहरां - घोड़की पीठका मेल हटानेका उपकरण विशेष । हाथळां - (हथेलियों ?) । आरसी - आदर्श, दर्पण । भरळकै - चमकते हैं ।

३३५. सुचंग - सुन्दर । जळज - (?) । रजत - रौप्य, चांदी ।

वाहणांरा नाम

घोड़^१ वहल रथ घणा, धमळ धुर के असि^२ धारी ।
 सुजि^३ खासा सुखपाल, इका^४ माफा असवारी ।
 सरब भळूसां साज, जोति सूर^५ न जिगजगै^६ ।
 ऊभा^७ इसा^८ अनेक, आय नूप^९ दरगह अगै^{१०} ।
 हुय^{११} कड़ाजूड़ पैदल वहल, धर^{१२} बँदूक कर^{१३} धाविया^{१४} ।
 सांमांन इता दरगह सुपह, एक नगरै^{१५} आविया^{१६} ॥ ३३६
 ठांम ठांम नक्कीब^{१७}, हाक ताकीद हजारों ।
 दळ पंडव^{१८} तिण दीह^{१९}, सभे^{२०} असि कीध सिंगारां ।
 सभे^{२१} भड़ां पौसाक, कसे आवधां करारां ।
 सूर वंस खटतीस, तांम चढिया^{२२} तोखोरां ।
 हालिया^{२३} समंद हीलोहलां^{२४}, जिसा लगस^{२५} वह^{२६} जूजुवा^{२७} ।
 दळ प्रबळ नगरै दूसरें, हाजर सह^{२८} रावत हुवा^{२९} ॥ ३३७

महाराजा अभैसौघजीरौ वरणण

सकति पूजि^{३०} 'अभसाह', तांम विधवत^{३१} छत्रपत्ती ।
 पहरि ऊंच पौसाक, अत्त^{३२} जवहर आदुत्तो^{३३} ।

१ ख. घोड़ि । ग. घोड । २ ग. अस । ३ ख. सुज्य । ग. सुज । ४ ग. इका ।
 ५ ख. ग. सूरज । ६ ख. जिमजगै । ग. जिमजागै । ७ ग. हुभा । ८ ग. यसा ।
 ९ ख. ग. नूप । १० ग. अगै । ११ ख. ग. होय । १२ ख. ग. धरि । १३ ख.
 ग. करि । १४ ख. धावीया । १५ ग. नगरे । १६ ख. आवीया । १७ ख. नक्कीब ।
 ग. नकीब । १८ ख. पंडवां । ग. पांडवां । १९ ख. दीध । २० ख. ग. साज ।
 २१ ख. सजे । ग. सभे । २२ ख. चढीया । २३ ख. हालीया । २४ ख. हींदोहलां
 ग. हिलोहलां । २५ क. लगत । २६ ख. वही । ग. बो । २७ ख. जूजुवा । ग.
 जूजुवा । २८ ख. सो हो । ग. सो हो । २९ ख. हूवा । ३० ग. पूज । ३१ ख.
 ग. विधि विधि । ३२ ख. ग. अतर । ३३ ग. अदुत्ति ।

३३६. धमळ — बेल । धुर — अगाड़ी । माफा — एक प्रकारका वाहन । भळूसा — चमकदार ।
 जिगजगै — चमकते हैं । कड़ाजूड़ — सुसज्जित ।

३३७. पंडव — यवन, बादसाह । तोखोरां — घोड़ों । लगस — लम्बायमान सेना । जूजुवा —
 पृथक ।

३३८. छत्रपत्ती — राजा । आदुत्ती — अद्वितीय. (?) ।

भीड़^१ ससत्र^२ भलहळा, साज बुलगार^३ सकाजा ।
 आए बाहर^४ अभंग, मसत गज महाराजा^५ ।
 हलबळां दळां मुजरा^६ हुवा^७, गह^८ हाका पहाड^९ गह^{१०} ।
 तण 'अजण' नगारै तीसरै, सुंदर गज चढियौ^{११} सुपह ॥ ३३८
 हुय^{१२} हूकळ कळहळां^{१३}, हले^{१४} दळ प्रघळ^{१५} जळाहळ^{१६} ।
 धर सळकै^{१७} ग्रहि धुकै^{१८}, मरट वजि^{१९} कमठ कळम्मळ^{२०} ।
 राज डंबर^{२१} ढकि अरक, घंट^{२२} द्रगपाल^{२३} दहल घण ।
 समंद लंक थरसलै^{२४}, तांम बोलियो^{२५} वभीखण^{२६} ।
 मम संक^{२७} मथैयळ^{२८} महण^{२९} रै^{३०}, लंक ग्रही इळ^{३१} रघुपती ।
 अग्रहां ग्रहै राजा 'अभौ', गहिया^{३२} गहै^{३३} न गढपती ॥ ३३९
 वस^{३४} डेरां पह^{३५} वसै^{३६}, थाट जाळंधर थाणै ।
 हसंब थाट^{३७} सभि हले, पंथ^{३८} गुजरात पयाणै ।
 सभे^{३९} नास 'सिधला'^{४०}, आस पास^{४१} मेवासां ।
 चत्रमासां गिर^{४२} चढे^{४३}, उडर^{४४} फाटै आसिहासां^{४५} ।

१ ख. भीड़। २ ख. ससत्र। ३ ख. ग. बुलगार। ४ ख. ग. बाहिर। ५ ख. ग. महाराजा। ६ ग. मुजरा। ७ ख. हुवा। ग. हूवा। ८ ख. गज। ग. गजि। ९ ख. पहाड। ग. पाहड। १० ख. मह। ११ ग. चढीयो। १२ ख. ग. होय। १३ ख. कळकळां। १४ ख. हले। १५ ख. प्रवल। ग. प्रबळ। १६ ख. ग. भळाहळ। १७ ख. ग. धसके। १८ ख. ग. धुके। १९ ग. तजि। २० ख. कलमल। ग. कळमळ। २१ ख. डंबर। २२ ख. ग. घंटां। २३ ख. ग. द्रिगपाल। २४ ख. थरहले। ग. थरसले। २५ ख. बोलीयो। ग. बोलियो। २६ ख. ग. भभीखण। २७ ख. संकिम। ग. संकिम संकिम। २८ ख. थोयल। ग. थायळ। २९ ग. महळ। ३० ग. रै। ३१ ख. ग. यळ। ३२ ख. ग्रहीया। ग. ग्रहीया। ३३ ख. ग. ग्रहै। ३४ ख. ग. वसि। ३५ ख. ग. पोही। ३६ ख. ग. वसे। ३७ ग. हाट। ३८ ख. पंथ। ३९ ग. सभे। ४० ख. ग. सिधलां। ४१ ख. ग. पासं। ४२ ग. गिर। ४३ ग. चढे। ४४ ख. ग. उडर। ४५ ख. ग. असिहासां।

३३८. बुलगार - (?) । तण - तनय, पुत्र ।

३३९. हूकळ - घोड़ोंकी हिनहिनाहट । कळहळां - कोलाहल । प्रघळ - अपार, पुष्कल । जळाहळ - समुद्र । सळकै - कंपायमान होती है । ग्रहि - शेषनाग । कमठ - कच्छ-पावतार । कळम्मळ - (?) । अरक - सूर्य । द्रगपाल - हाथी । दहल - भय । थरसलै - कंपायमान होती है । वभीखण - विभीषण । मथैयळ - मथा जाने वाला । महण = महार्णव-समुद्र ।

३४०. जाळंधर - जालोर नगर ।

महाराजा अभयसिंहका सिरोही पर आक्रमण

नीसाण नाद नौबत^१ निहसि^२, वीरनाद तदि^३ वाजियो^४ ।
 सिवपुरी बीह अरबद^५ सिर^६, 'अभौ' सीह^७ अग्राजियो^८ ॥ २४०
 रोहाडौ कर^९ सरद, मारि गिरद^{१०} में^{११} मिळाए^{१२} ।
 तर भंगर था तठै, वाढ़ि^{१३} चौगान वणाए^{१४} ।
 पौसाळियो^{१५} पहट्ट^{१६}, मिळे गिरद^{१७} में^{१८} मुकांमां ।
 तटां चढ़े तिणवार, धरां रावां ऊधामां ।
 फीजां लड़ंग दौड़ै^{१९} फजर, धड़छे^{२०} खग^{२१} खळ ध्रोहियां^{२२} ।
 सिर छाब भरे आणै^{२३} सुभड^{२४}, सरदां जिम सीरोहियां^{२५} ॥ ३४१
 गिर^{२६} गिर गजगांमणी, हुई^{२७} अगगांमणि हल्ले^{२८} ।
 लग^{२९} तर तर पालणौ^{३०}, भंब बाळक बह^{३१} भल्लै^{३२} ।

१ ख. नौबति । ग. नौबति । २ ख. ग. निहस । ३ ख. ग. तजि । ४ ख. ग. वाजियो ।
 ५ ख. ग. अरबद । ६ ख. ग. सिषर । ७ ग. सिंह । ८ ख. अग्राजियो । ९ क.
 ख. करि । १० ख. ग. गरद । ११ ख. ग. में । १२ ग. मिलाये । १३ ख. वाढि ।
 १४ ख. वणाये । ग. वणाए । १५ ख. पौसालीयो । ग. पौसालिये । १६ ग. पहट ।
 १७ ख. ग. गरद । १८ ख. ग. में । १९ ग. दौड़ै । २० ख. ग. धड़छे । २१ ग.
 खगि । २२ ख. ग. धोहोयां । २३ ख. ग. आणै । २४ ग. सुभट । २५ ख. सिरोहीया ।
 ग. सीरोहीयां । २६ ख. गिरि गिरि । २७ ख. ग. हुई । २८ ग. हल्ले । २९ ख. ग.
 लगि । ३० ख. ग. पालणां । ३१ ख. बहौ । ग. बौहौ । ३२ ख. भल्ले । ग. भल्ले ।

३४०. नीसाण—वाद्य विशेष । वीरनाद—वाद्य विशेष । सिवपुरी—सिरोही नगर । बीह—
 भय, डर । अरबद—आबू पर्वत । अग्राजियो—गर्जना की ।
 ३४१. रोहाडौ—रोहाडी नामक एक गांव है । यहाँका ठाकुर हीरादेवाड़ा मारवाड़में उत्पात
 करता था, सर्वप्रथम इसका महाराजा अभयसिंहजीने दमन किया । सरद—परजित ।
 गिरद—धूलि । तर भंगर—घनी झाड़ी । वाढ़ि—काट कर । पौसाळियो—सिरोही
 राज्यान्तर्गत एक गांवका नाम है । बांकीदासकी रूपातके अनुसार महाराजा अभयसिंह
 गुजरात पर आक्रमण करते समय मार्गमें सिरोहीके रावके भाईकी पुत्रीके साथ
 इस पौसालिया गांवमें विवाह किया था । देखो—ऐतिहासिक वातां, ४४४ । पहट्ट—
 नाश कर, ध्वंस कर । लड़ंग—लंबायमान सेना । धड़छे—काट दिये, संहार कर दिये ।
 ध्रोहियां—शत्रुओं, दुश्मनों । छाब—डलिया । सीरोहियां—सिरोही वालोंकी ।
 ३४२. गजगांमणी—हाथीके समान मस्त चालसे चलने वाली । अगगांमणि—हरिणके समान
 चलने वाली । हल्ले—चली, गतिमान हुई । तर तर—तृप्त-तृप्त, वृक्ष-वृक्ष । पालणौ—
 भूला । भंब—टहनी, वृक्षकी शाखा ।

घर^१ घर धमै मसांण, बिनां सिर^२ सिर धड़^३ वैरी ।
 कहि^४ हरि हरि कंपिया^५, भोम^६ परहरि^७ भल्ल भैरी ।
 के वचे^८ त्रणां धरि धरि कमल^९, तेग छोडि^{१०} जुध तेवड़ां^{११} ।
 इम कियौ^{१२} कोप करि करि 'अभै', दळे मांण भड़ देवड़ां ॥ ३४२

करै^{१३} न घड़ां^{१४} कुंवारि^{१५}, करे चढ़ि तेल^{१६} कुंवारे^{१७} ।
 ससत्र^{१८} न कसे छत्तीस, अभ्रण छत्तीस अधारे ।
 सभे न सोळह सार, सोळ सिंगार समारो ।
 सिणगारी नह फौज^{१९}, राजकुंवरी खंगारी^{२०} ।
 'उम्मेदराव'^{२१} नामै 'अभै', लूटि डंड^{२२} डोलौ^{२३} लियौ^{२४} ।
 मछरीक करे^{२५} ताबीन^{२६} मझि, इम पालणपुर^{२७} आवियौ^{२८} ॥ ३४३

१ ख. ग. घरि घरि । २ ख. सिर सिरि । ३ ख. ग. घड । ४ ख. ग. कहै । ५ ख. कंपीया । ६ ख. ग. भोग । ७ ग. परहर । ८ ख. ग. वचं । ९ ख. कमलि । १० ग. छोडि । ११ ख. ग. तेवड़ां । १२ ख. ग. कीया । १३ ख. करे । १४ ख. यडा । १५ ख. कुंवारि । ग. कुआर । १६ ग. ते । १७ ख. कुआरे । ग. कुआरे । १८ ख. ग. ससत्र । १९ ग. फोज । २० ख. ग. सिणगारी । २१ ग. उमेदराव । २२ ग. दंडि । २३ ख. डोलो । २४ ख. लीयो । २५ ग. करै । २६ ख. ग. ताबीन । २७ ग. पालहणपुर । २८ ख. आवीयो ।

३४३. धमै—धुआ निकल रहा । परहरि—छोड़ दी । भल्ल—धारण कर, पकड़ कर । भैरी—वाद्य विशेष । त्रणां—तिनकों । कमल—मुख । तेवड़ां—विचार करके । दळे—नाश करके, मिटा करके, ध्वंस करके । मांण—गर्व । देवड़ां—चौहान वंशकी देवड़ा शाखाके योद्धाओंका ।

३४३. घड़ां कुंवारि—बिना युद्ध किये युद्धार्थ सजी-धजी सेना । कुंवारे—कुमारी । अभ्रण—आभरण, आभूषण । अधारे—धारण किये । सार—अस्त्र-शस्त्र । समारी—सम्हाले, धारण किये । खंगारी—शृंगार करवाया । उम्मेदराव—सिरोहीके महारावका नाम । डोलौ—विवाहकी एक प्रथा विशेष जिसमें पिता अपनी पुत्रीको विवाह हेतु घरके यहाँ ले जाता था अथवा भेज देता था । मछरीक—चौहान राजपूत । ताबीन—मातहत, आधीन ।

कुल बळ^१ सहत^२ करीम, निहंग द्रव^३ सभि निजरांमां^४ ।
 मिलै^५ आय सांमुहौ, सभे अत्रेक^६ सलांमां^७ ।
 कहि^८ करीम कर जोड़ै^९, सदा हम बंदा^{१०} खासा ।
 अनुचर गिण^{११} आपरौ, दीध भूपाळ दिलासा ।
 सतरेज^{१२} तणै^{१३} पहलै^{१४} सहर^{१५}, दळ सभियौ^{१६} 'गजबंध' दुवौ ।
 उच्छाह^{१७} हुवौ सारो इळा, हृद डेरां दाखलि^{१८} हुवौ* ॥ ३४४

सर बुलंदखांको महाराजारी पत्र लिखणो

खत लिखिया दिस^{१९} खान, डकर^{२०} धारै^{२१} वजराई^{२२} ।
 कहर गरीबां करण, मकर^{२३} छाडौ^{२४} मुगळाई ।
 कांम फैल मति^{२५} करौ, स्यांम^{२६} ध्रम धरौ^{२७} सिपाही ।
 सराजांम दौ^{२८} सरब, तोपखानां पतिसाही ।
 अहमदाबाद दीधौ^{२९} अम्हां, सुणौ^{३०} हुकम पतिसाहरौ ।
 मांमलौ^{३१} तजौ^{३२} आवौ^{३३} मिळौ^{३४}, किलौ^{३५} सहर खाली करौ^{३६} ॥ ३४५

१ ख. ग. दळ । २ ग. सहित । ३ ख. ग. द्रव्य । ४ ख. ग. नजरांमां । ५ ख.
 मिलो । ६ ग. अनेक । ७ ग. सिलांमां । ८ ख. ग. कहै । ९ ख. जोड़ि । १० ख.
 बंदा । ११ ख. गिणि । १२ ख. ग. सतरेज । १३ ख. तणो । १४ ख. पहिले । ग.
 पहले । १५ ख. ग. सहरि । १६ ख. ग. सभियां । १७ ग. उच्छाह । १८ ग. दाखिल ।

*यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है ।

१९ ख. ग. दिस ।

◆...◆चिन्हान्कित पद्यांश ख. प्रतिमें नहीं है ।

२० ग. धारौ । २१ ग. उवराई । २२ ग. छांडो । २३ ख. मत । २४ ग. सांम ।
 २५ ख. धरौ । ग. धारौ । २६ ख. ग. छौ । २७ ग. दीधो । २८ ग. सुणो । २९ ग.
 मांमलो । ३० ग. तजौ । ३१ ग. आवो । ३२ ग. मिलां । ३३ ख. किलो ।
 ३४ ख. करो ।

३४४. बळ - सेना, दल । करीम - पालनपुरके नवाबका नाम । निहंग - घोड़ा । द्रव -
 द्रव्य । निजरांमां - नजराना । दिलासा - सांत्वना । गजबंध दुवौ - दूसरा गजसिंह,
 महाराजा अभयसिंहके लिये प्रयोग किया गया है । हृद - बहुत, असीम ।

३४५. खान - मुबारिजुलमुल्क सर बुलंदखां । डकर - जोश, आवेश । वजराई - वज्र जैसी
 कठोरता । कहर - ध्वंस, नाश । मकर - गर्व, अभिमान । छाडौ - छोड़ दो ।
 मुगळाई - यवनत्व । फैल - उत्पात, उपद्रव । स्यांम ध्रम - स्वामी धर्म । सराजांम -
 सामान । अम्हां - हमको । मांमलौ - भगड़ा ।

इम^१ लिखिया 'अभमाल', 'विलंद' कागज वचवाया ।
 'सयद'^२ अली' 'जम्माल'^३, 'अली अहमंद'^४ बुलाया^५ ।
 तरियन^६ खान पठाण, सेख अलियार^७ सलद्दी^८ ।
 मिळै^९ सेख मुजदाह^{१०}, मुगल आगा मुतसदी^{११} ।
 दामादखान अबदल फता, साहिब जादा सांभळै^{१२} ।
 सिर^{१३} विलंद हूंत मसलत^{१४} सभण, मुसलमान एता मिळै^{१५} ॥ ३४४
 आगा सेख मुसाद^{१६}, कहै जंग इहां न कीजे^{१७} ।
 हूव^{१८} इलाहाबाद, लोह^{१९} कर उहां लड़ीजे^{२०} ।
 यहिज^{२१} फतैखां यलम^{२२}, यहिज^{२३} कहि^{२४} साहिब जादा ।
 यह^{२५} हुकम्म^{२६} असपति^{२७}, यहिज^{२८} नौकरां इरादा ।
 सिर^{२९} विलंद मनै^{३०} न मनै असुर, च्यार वार^{३१} टेकां चडै^{३२} ।
 'अहमद'^{३३} 'जमाल' 'अलिहार' अर, तरियलखां^{३४} जुध तेवडै ॥ ३४५
 मुगल निजांमन मुलक, दखण^{३५} सब मुलक दबाया ।
 फतै करी दुय^{३६} फौज, उहां^{३७} फिर^{३८} कोय^{३९} न आया ।

१ ख. ग. डाम । २ ख. ग. सईयद । ३ ख. ग. जमाल । ४ ख. अहवद । ५ ख. बुलवाया । ग. बुलवाया । ६ ख. ग. तरियण । ७ ख. ग. अलीयार । ८ ग. सलद्दी । ९ ख. ग. मिले । १० ख. मुजहाद । ग. मजहाद । ११ ग. मुतसदी । १२ ख. संभिले । ग. संभिले । १३ ख. सिरि । १४ ख. ग. मसलति । १५ ख. ग. मिले । १६ ग. मुजाद । १७ ख. ग. कीजै । १८ ख. ग. हुवा । १९ क. लोह । २० ख. ग. लड़ीजे । २१ ख. ग. यहीज । २२ ख. ग. इलम । २३ ख. इहीज । ग. यहीज । २४ ख. कहै । ग. कही । २५ ख. यहीज । ग. यहज । २६ ख. ग. हुकम । २७ क. असत्री । २८ ख. ग. यहीज । २९ ख. निरि । ३० ग. मानै । ३१ ख. यार । ग. च्यार । ३२ ख. ग. चडै । ३३ ख. अहवद । ग. अहमदावाद । ३४ ख. ग. तरीयनवां । ३५ ख. दखिण । ग. दक्षिण । ३६ ख. ग. दोय । ३७ ख. उहां । ग. हुहां । ३८ ख. फिरि । ३९ ख. ग. कोई ।

३४६. विलंद - मुबारिजुलमुल्क सर बुलंद । तरियनखान - सर बुलंदकी सेनामें एक वीरका नाम । अलियार - अल्लाहयार नामक यवन ।

३४७. लोह - लड़ीजे - अस्त्रों-शस्त्रोंसे वहाँ पर जा कर युद्ध करना चाहिए । यहिज - यह ही । इरादा - विचार । च्यार...चडै - चार वार अपनी बात पर पूर्ण रूपसे डटे रहे । तेवडै - विचार किया ।

३४८. दखण...दबाया - दक्षिणको अपने पूर्ण अधिकारमें कर लिया ।

इस^१ उज्जै तुम इहां, जंग कर^२ अमल जमावौ ।
 अवरन आवै इहां, आप पतिसाह कहावौ ।
 सुणि^३ एम कीध नौबत^४ सरू, इम जबाब^५ लिखिया^६ उतर^७ ।
 महाराज नांम^८ सिरविलंद में^९, सिर सेत्री द्यूगा^{१०} सहर ॥ ३४८
 इम जबाब^{११} सुणि असुर, खिजे कमधज^{१२} खेधायक^{१३} ।
 अँग^{१४} दवात उथपियां^{१५}, नरिंद जाणै^{१६} रुघनायक^{१७} ।
 उभल कोप उणवार, दुभल 'अभमल'^{१८} दरसायौ ।
 काल जवन कथ कहै^{१९}, जाण^{२०} मुचकंद जगायौ ।
 पुर न दू^{२१} तोय नमिळं परति, वदै अभौ इम खळ बके^{२२} ।
 दिन तीन मांय^{२३} मेटू^{२४} दळे, तीन टेक धारी तिके ॥ ३४९
 कहि यम^{२५} हैजम करे, विखम रूपी विकराळा ।
 चढ़ि मदभर चालियौ^{२६}, तूर वाजतां^{२७} त्रंबाळा^{२८} ।
 तूटे^{२९} नदी तटाक, हाक खूटे ताळीहर ।
 पंगराव^{३०} जिम प्रबळ, हले फौजां घैसाहर^{३१} ।

१ ख. ग. इसी । २ ख. ग. करि । ३ ग. सुनि । ४ ख. नौबति । ग. नौबति ।
 ५ ख. जबाब । ग. जुबाब । ६ ग. लिखिया । ७ ख. उतर । ८ ख. ताम । ९ ख.
 ग. में । १० ख. द्यूगा । ग. द्यूगा । ११ ख. जबाब । ग. जुबाब । १२ ख. कमधज ।
 ग. कमधज । १३ ख. ग. खेधाइक । १४ ग. अंगि । १५ ख. उथपियां । ग. उथपि ।
 १६ ख. जाणै । १७ ग. रुघनायक । १८ ग. अभमाल । १९ ख. ग. कहै । २० ख.
 जाणि । २१ ख. ग. द्यू । २२ क. बके । २३ ख. ग. मांहि । २४ ग. मेटु ।
 २५ ख. ग. इम । २६ ख. चालीयौ । २७ ख. वाजतां । ग. बाजतां । २८ ख. त्रंबाळा ।
 ग. त्रंबाळां । २९ ख. तूटे । ३० ख. पंगएव । ३१ ख. घांसाहर । ग. घंसाहर ।

३४८. उज्जै — वजह, कारण । सरू — आरंभ ।

३४९. असुर — यवन, सर बुलंद खां । खिजे — कोप किया । खेधायक — शत्रु । रुघनायक —
 श्रीरामचंद्र । काल जवन — एक प्राचीन राजाका नाम जिसके पिता महर्षि मार्ग्य थे
 तथा माता गोपाली नामकी अप्सरा थी (वि. वि. परिशिष्ट देखें) । मुचकंद — अयो-
 ध्याके प्राचीन राजा मुचुकुंद (वि. वि. परिशिष्ट देखें) । परति — प्रत्यक्ष । वदै —
 कहता है । अभौ — महाराजा अभयसिंह । दळे — नाश कर के ।

३५०. हैजम — सेना, दल । मदभर — हाथी । तटाक — तालाब । हाक — जोशपूर्ण आवाज ।
 खूटे — घट गया । पंगराव — राठौड़ राजा जयचंद । घैसाहर — फौज, समूह ।

हैनाळ पहट गिर तर हुवा, चढ़े घटा रज पर चँडे^१ ।
सरसती नदी तटि सिंधपुर^२, महिपती^३ डेरा मँडे ॥ ३५०

महाराजा अभयसिंहका सरदारारं साथ बड़ौ दरबार करणौ अर सरदारारं

जोसपूरण उत्तर देणौ

दुभल सिरै^४ दरबार, उठै^५ कीधौ 'अभपती'^६ ।
तखत बैठै^७ तेड़िया^८, प्रबळ उमराव प्रभती^९ ।
आठ मिसल उमराव, सूर आविया^{१०} सकाजा ।
दुज मंत्री कवि दुभल, मिले दरगह महाराजा^{११} ।
'अभमाल' छभावणि^{१२} दुभल^{१३} इम, जगचख मुखि मुखि जोपिया^{१४} ।
सांमठा सिंध^{१५} नरसिंध रे, आगळ^{१६} जाणै^{१७} ओपिया^{१८} ॥ ३५१
दरगह पूर दुभल, कहै^{१९} 'अभमाल' एम^{२०} कथ ।
कहौ^{२१} भड़ां किम^{२२} करां, भिड़े मुगळांहूँ^{२३} भारथ ।
चांपावत-तदि चांपा बोलिया^{२४}, सिरै 'माहव'^{२५} भड़ सारां ।
करि आया जिम करां, 'गजण' खुरमह गजभारां ।
तद^{२६} कहै 'कुसळ' 'हरनाथ' तण, मसतक छिबि^{२७} असमानरै ।
रण वसंत फाग खागां रमां, खासावाड़ै खानरै^{२८} ॥ ३५२

१ ग. चढ़े । २ ख. ग. सीधपुरि । ३ ख. महिपती । ग. महपती । ४ ख. सरौ । ग. सरै । ५ ख. ग. उठै । ६ ग. बैठि । ७ ख. तेड़िया । ८ ग. प्रभती । ९ ख. आवीया । १० ख. माहाराजा । ११ ग. मिलि । १२ ख. ग. भूल । १३ ख. जोपीया । ग. जोड़या । १४ ख. सींध । १५ ख. ग. आगलि । १६ ख. जाणे । ग. जाणै । १७ ख. ओपीया । ग. उपीया । १८ ख. ग. कहे । १९ ग. येम । २० ग. कहो । २१ ख. इम । २२ ख. मंगल । ग. मुगलहूँ । २३ ख. बोलीया । २४ ख. ग. माह । २५ ख. ग. तदि । २६ ख. ग. छिबि । *ख. प्रतिमें यह पंक्ति नहीं है ।

३५०. हैनाळ - घोड़ोंके टापोंकी नाल । पहट - टक्कर लग कर । सरसती नदी - साबर-मती नामक नदी । तटि - तट पर । सिंधपुर - स्थानका नाम ।

३५१. प्रभती - तेजस्वी, प्रभामुक्त । दुज - द्विज ब्राह्मण । दरगह - दरबार । जगचख - सूर्य । मुखि - अगाड़ी । जोपिया - जोशपूर्ण हुआ । नरसिंध - नृमिहावतार ।

३५२. चांपा - चांपावत शाखाके राठोड़ । माहव - महासिंह चांपावत पोकरणका ठाकुर । गजभारां - हाथियोंकी सेना । कुसळ - आउआका ठाकुर हरनार्थसिंहका पुत्र चांपावत कुशलसिंह । छिबि - स्पर्श कर के । खासावाड़ै - मुख्य दल जो राजा या सेनापतिके इर्द-गिर्द होता है ।

बहसि^१ 'करण' बोलियौ^२, सुतण 'राजड़' तिण मौसर ।
 तोलि भुजां असमानं, तोल^३ तरवार^४ बहादर^५ ।
 ओरि^६ तुरंग असुररां, जँगी^७ हवदां लगि^८ जाऊं ।
 सिर विहँडूँ घण सत्रां, विखम निज सिर विहँडाऊं* ।
 अभमाल आप छळि करि अचड़, वप विहँडाय^९ रँभा^{१०} वरूँ ।
 जँग^{११} करण महाभारथ^{१२} ज्युंही^{१३}, 'करण' नाम साचौ^{१४} करूँ ॥ ३५३
 कहै अनावत सकत, जुड़ूँ जिम भूप जुजठल^{१५} ।
 कहै दलौ^{१६} 'मुकंद'रौ, हिचू^{१७} ओर^{१८} असि हरवल ।
 दाखै 'भैरूदास', लोह भेलू र भिलाऊं ।
 कहै 'लाल' 'सकत'रौ^{१९}, विखम खग भाट वजाऊं ।
 तदि कहि^{२०} 'किसन'रौ^{२१} 'जसवंत' तण^{२२}, अम्हां वडौ प्रब आजरौ ।
 महाराज^{२३} सुखल^{२४} जुय^{२५} राज मिल^{२६} राज लहूँ^{२७} सुरराजरौ^{२८} ॥ ३५४
 तेजावत तिणवार, 'रूप' बोलै मछराळौ^{२९} ।
 विकराळा^{३०} दळ^{३१} विचै, करूँ धमचक^{३२} कळिचाळौ ।

१ ख. ग. बहसि । २ ख. बोलियौ । ३ ख. ग. तोलि । ४ ख. तरवारि । ५ ख. बहादर । ग. बाहादर । ६ ख. ग. ओरि । ७ ख. जंगि । ८ ग. लग ।

*यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है ।

९ ख. विहँडाए । १० ख. रंभा । ग. अपछर । ११ ख. जंगि । १२ ख. माहाभारथ । १३ ख. जहाँ । ग. जट्टी । १४ ख. सांचौ । १५ ग. जुजठल । १६ क. दलू । १७ ख. ग. हिचू । १८ ख. ग. ओरे । १९ ग. सकति । २० ख. ग. कहै । २१ ख. ग. किसन । २२ ख. ग. सुतण । २३ ख. महाराज । २४ ख. ग. सुखलि । २५ ख. सुय । २६ ख. ग. मिलि । २७ ख. लहौ । २८ ग. सुरराजरौ । २९ ख. छमराळौ । ३० ग. विकराळां । ३१ ग. दळ । ३२ ख. धमचकि ।

३५३. बहसि—जोशमें आकर । करण—पालीके ठाकुर राजसिंह चांपावतका पुत्र करण । राजड़—राजसिंह । विहँडू—नाश करूँ । विहँडाऊं—करवा दूँ, नाश करवा दूँ । छळि—लिए, युद्धमें । वप—शरीर ।

३५४. सकत—शक्तिसिंहका । जुजठल—युधिष्ठिर । दलौ मुकंदरौ—मुकंदसिंहका पुत्र, दलसिंह । हिचू—युद्ध कर । किसन—जसवंतसिंहका पुत्र किसनसिंह । सुखल—युद्ध, लिये । सुरराजरौ—इन्द्रका ।

३५५. तेजावत—रूप—रूपसिंह तेजसिंहका वंशज । मछराळौ—वीर, थोड़ा । धमचक—जबरदस्त, भयंकर । कळिचाळौ—युद्ध ।

‘केहर’^१ ‘जसावत’ कहै, घणां मुगळां खग^२ घाऊं^३ ।
 काय आऊं जुध^४ काम, कियै सिभजियत^५ कहाऊं^६ ।
 बोलियो^७ सुतण ‘हरियँद’^८ बहसि, रुख मजीठ मुख^९ रंगरै ।
 मल सहस जेम कहि सहसमल, जुड़ू^{१०} अखाड़ै जंगरै ॥ ३५५
 इम ‘चांपा’ बोलिया^{११}, आदि विरदां अजवाळा^{१२} ।
 कूपावत—पह^{१३} ‘कूपां’ पूछियो^{१४}, कहै इण^{१५} विध^{१६} कळिचाळा^{१७} ।
 सिरै धणी ‘आसोप’, दुभल^{१८} भळहळ तप दारण^{१९} ।
 रटै^{२०} ‘कन्ह’^{२१} ‘राम’रौ, स्याम काम रौ सुधारण ।
 रिण^{२२} समंद^{२३} किलकिला^{२४} पंख रचि^{२५}, औरि^{२६} तुरंग इम आहुड़ां ।
 तन^{२७} सेल मीर जादांतणै, जंगी हवदांमभि जड़ां ॥ ३५६
 निडर ‘चंडावळ’^{२८} नाथ, रूप ग्रीखम रवि रावत ।
 उदैभाण बोलियो^{२९}, फौज सिरपोस फतावत ।
 हाकलि असि हरवली^{३०}, अणी दल ‘विलंद’ उडाऊं^{३१} ।
 खग भाटां खेलतौ^{३२}, जँगि हवदां लगि जाऊं^{३३} ।

१ ख. ग. केहरि । २ ख. पगि । ३ ख. घाऊं । ग. घाऊ । ४ ख. जुधि । ५ ख. भुजीवत । ६ ग. कहाऊं । ७ ख. बोलीयो । ग. बोलियो । ८ ख. हरीयंद । ९ ख. रुष । १० ख. जुड़ू । ग. जुड़ू । ११ ख. बोलीयो । १२ ख. ग. उजवाळा । १३ ख. ग. पोहो । १४ ख. बोलीयो । ग. पूछियो । १५ ग. इम । १६ ख. ग. विधि । १७ ग. कळिचाळा । १८ ग. दुभल । १९ ग. दारण । २० ख. ग. रटै । २१ ख. ग. कान्ह । २२ ख. ग. रण । २३ ख. समदि । २४ ग. किलकिला । २५ ख. ग. रुष । २६ ग. और । २७ ख. ग. तनि । २८ ख. ग. चंडावलि । २९ ख. बोलीयो । ३० ग. हरवली । ३१ ख. उडाऊं । ३२ ग. खेलतां । ३३ ख. जाऊं । ग. जाड ।

३५५. केहर जसावत — जसावत केसरीसिंह । सिभजियत = जीवित सिंह — युद्धमें घायल वीर । बोलियो.....रंगरै — हरिसिंहका पुत्र सूरतसिंह या गजसिंह जोशमें आकर चेहरा लाल किये हुए बोला । मलसहस — सहसमल बलुआत चांपावत । जुड़ू — भिड़ जाऊं । अखाड़ै — युद्धस्थलमें ।

३५६. चांपा — चांपावत शाखाके राठोड़ । कूपां — कूपावत शाखाके राठोड़ । कळिचाळा — वीर, योद्धा । तप — कांति, तेज । रटै — वीर । कन्हारामरौ — रामसिंहका पुत्र कन्हाराम कूपावत आसोपका ठाकुर । रिण समंद.....जड़ां — युद्ध रूपी समुद्रमें किलकिला पक्षीके समान भपट मारते घोड़ोंको भोंक कर इस प्रकार युद्ध करूंगा कि हाथीके हीवों पर बैठे हुए मीरजादोंके शरीरमें आलोंका प्रहार करूंगा ।

३५७. रवि — सूर्य । रावत — योद्धा, वीर ।

मौताज^१ अम्हां हरवळ मिळण, सो^२ कुळवाट न वीसळं ।
'गोरधन' कियौ^३ 'गजबंध' अग्र, कळह आप अग्र में कळं ॥ ३५७

सुणि^४ 'रामौ'^५ सबळरौ^६, एम बोलियौ^७ अड़ीखंभ^८ ।
विडंग ओरि^९ दळ^{१०} 'विलंद', जवन^{११} खग^{१२} हणूरूप जम ।
घण भेलूं खग घाव, सांम निज कांम सुधारूं^{१३} ।
सिर समपूं^{१४} सँकरनूं^{१५}, रंभ चौसरि^{१६} गळ^{१७} धारूं^{१८} ।

जगतणी मोह माया तजूं, जिम गोपोचंद भरथरी ।
चढ़ि रथां अमरपुर मभि चहूं^{१९}, अमर क्रीत करि आपरी ॥ ३५८

भड़^{२०} बोले^{२१} हरभाण^{२२}, भाण^{२३} पौरस^{२४} भळाहळ^{२५} ।
असुर थाट^{२६} आछटूं^{२७}, भाट बाणांस^{२८} भळाहळ ।
समर वाग^{२९} वज्र कुसम, भमर जिम करि भेदंगर ।
दूं^{३०} दुहां^{३१} मभि^{३२} एक^{३३}, सुवप अम्मर^{३४} काइ^{३५} संकर ।

१ ग. मौताज । २ ग. सो । ३ ख. कीयो । ४ ग. सुणि । ५ ख. रामो । ग. रामो । ६ ख. सबल रौ । ७ ख. बोलीयो । ग. बोलियो । ८ ख. ग. अड़ीषम । ९ ख. ग. वोरि । १० ग. वळि । ११ ग. जवण । १२ ख. ग. खगि । १३ ग. सुधारो । १४ ख. समपो । १५ ग. नौ । १६ ख. ग. चौसर । १७ ख. गळि । १८ ग. धारो । १९ ग. चलौ । २० ख. भडि । २१ ख. बोले । ग. बोले । २२ ख. ग. हरिभाण । २३ ख. ग. भाण । २४ ख. पौरस । २५ ख. भलाहल । ग. भळाहळ । २६ ख. ग. छाट । २७ ग. आछट । २८ ख. बाणांस । ग. बाणांस । २९ ग. वागि । ३० ख. दु । ग. ह । ३१ ख. दुहुवां । ग. दुहुवां । ३२ ग. भभ । ३३ ख. ग. हेक । ३४ ख. अम्मर । ग. अमर । ३५ ख. ग. काय ।

३५७. मौताज — मोहताज, इच्छुक । न वीसळं — विस्मरण नहीं करूं । गोरधन — चंडावलका ठाकुर गोरधनसिंह जिसने महाराजा गजसिंहजीके पक्षमें रह कर शाहजादा खुर्रमसे भयंकर युद्ध किया था ।

३५८. रामो — सबलसिंहका पुत्र रामसिंह । अड़ीखंभ — वीर । विडंग — घोड़ा । सांम — स्वामी । चौसरि — पुष्पहार ।

३५९. हरभाण — भोपतोत हरिभाणसिंह कूपावत । भेदंगर — भेदन करने वाला ।

‘सिरदार’ ‘पीथ’ फतमालसुत, तई गयण भुज तोलिया^१ ।
जुध करां भीम ‘अरजन’^२ ज्युंहीं^३, बँधव ‘भांण’ इम बोलिया^४ ॥ ३५६

‘सांवत’^५ रौ^६ ‘सुरतांण’, तांम बहसे^७ खग तोलै^८ ।
रंग लाल रोसंग, बोळ लोयण करि बोलै^९ ।
असि भोकै आतसां, धसां घड़ ‘विलँद’ समर धर ।
कर^{१०} बहसां^{११} खग करां, विखम तहसां वैरीहर ।
ऊससां^{१२} ससत्र^{१३} भेलां उरडि^{१४}, सिर बगसां^{१५} ससि इंदरै ।
रथ चढ़े हसां गळवांह रँभ, एम वसां पुर इंदरै ॥ ३६०

मेड़तियां^{१६} सिर मौड़^{१७}, ‘सेर’ बोलै^{१८} बळ सब्बळ^{१९} ।
गाहट हरवल^{२०} गोळ, वहुं^{२१} हौदां बीजूजळ^{२२} ।
पाड़ू घणा प्रचंड, मसत मैंगळ खळ मुंगल^{२३} ।
काय भेदुं^{२४} हथकमळ, काय जीव^{२५} पंच कम्मळ^{२६} ।
‘सिरदार’ सुत^{२७} छिवतौ^{२८} उरस, अरण वदन इम उच्चरै^{२९} ।
निज करै सिरारौ कुरव नूप^{३०}, कळह ‘सरौ’ जिमहिज करै ॥ ३६१

१ ख. तोलीया । २ ग. अरजुन । ३ ख. ग. जहीं । ४ ख. वोलीया । ५ ख. ग. सांमंत । ६ ग. रां । ७ ख. ग. बहसे । ८ ख. तोले । ९ ख. बोले । ग. बोले । १० ख. ग. करि । ११ ख. ग. बहसां । १२ ग. उससां । १३ ख. स । ग. ससत्र । १४ ख. ग. उरड । १५ ख. वसां । १६ ख. ग. मेड़तियां । १७ ग. मोड़ । १८ ख. बोले । ग. बोले । १९ ख. सबल । ग. सबल । २० क. हरवल । २१ क. चहुं । ग. वांह । २२ ग. बीजूजळ । २३ ख. मंगल । ग. मुंगळे । २४ ख. ग. भेदू । २५ ख. ग. जीवत । २६ ग. कमल । २७ ख. ग. सुतण । २८ ख. ग. छिवतौ । २९ ग. उच्चरै । ३० ख. ग. नूप ।

३५६. सिरदार — सरदारसिंह फतहसिंह कूपावतका पुत्र । पीथ — पृथ्वीसिंह फतहसिंह कूपावतका पुत्र । भांण — उदयभाणसिंह फतहसिंह कूपावतका पुत्र ।

३६०. सुरतांण — सामंतसिंहका पुत्र सुरताणसिंह कूपावत । बोळ — लाल । लोयण — नेत्र । ऊससां — जोशमें । ससि इंदरै — महादेव ।

३६१. सेर — रीयां ठाकुर शेरसिंह मेड़तिया । गाहट — ध्वंस कर, संहार कर । गोळ — सेना, दल । बीजूजळ — तलवार । मैंगळ — हाथी । सरदार — रीयां ठाकुर सरदारसिंह ।

अभंग 'पदम' बोलियौ^१, अगन^२ पौरस ऊघाड़ै^३ ।
 साजू^४ जुध सहदेव, एम कुरखेत अखाड़ै ।
 जपै 'सूर' सुत^५ 'जैत', मुगळ बह^६ खग भट माखं ।
 पहल वीर भद्र सुवप, धरे संकर वप^७ धाखं^८ ।
 तदि^९ कहै 'भीम' 'मौकम'^{१०} तणौ, वप उपाट छक भळ वरण ।
 जवनां निराट सावळ^{११} जड़े, घाट कखं^{१२} रँगमाट घण ॥ ३६२

जदि मुकँदावत 'जसौ', कहै उच्छाह^{१३} समर करि ।
 ले जाऊं^{१४} लोहड़ां, घड़छि घड़^{१५} 'विलँद' हीक धरि ।
 पछटि खगां भिल^{१६} पड़ूं^{१७}, काय रणखेत सकाजा ।
 काय बचूं^{१८} छक करे, सिंभु जीवत त्रिद साजा ।
 'कलियाण'^{१९} तणौ^{२०} 'रांमौ'^{२१} कहै, सभूं^{२२} समांमौ^{२३} खग समर ।
 करि जीत बिहद कांमौ^{२४} कखं, इळा सुजस नांमौ^{२५} अमर ॥ ३६३

मतवाळौ^{२६} इम मुणै, कमँध दारण^{२७} 'कुसळावत' ।
 जाऊं खासा गजां, घणां मुगळां दळ घावत ।

१ ख. बोलीयो । २ ख. ग. अगनि । ३ ख. ऊघाड़ै । ग. उघाड़ै । ४ ख. ग. साजू ।
 ५ ग. सुत । ६ ख. बहौ । ग. बहु । ७ ग. वपु । ८ ग. धारौ । ९ ग. तद ।
 १० ख. महौकम । ग. मांकम । ११ ख. ग. सावल । १२ ग. करौ । १३ ख. ग.
 उच्छाह । १४ ख. जाउं । १५ ख. गड । ग. घड । १६ ख. ग. भिलि । १७ ख.
 पड़ं । ग. पडु । १८ ख. ग. बचूं । १९ ख. केलियाण । २० ग. तणौ । २१ ग.
 रामौ । २२ ग. सभौ । २३ ग. समांमौ । २४ ग. कांमौ । २५ ख. नामौ । ग.
 नांमौ । २६ ख. मतिवालो । ग. मतिवोलो । २७ ख. दारण ।

३६२. पदम — पद्मविह । सूर — सूरसिंह मेड़तिया । जैत — जैतो या जैतविह मेड़तिया जो
 सूरसिंहका पुत्र था । वीर भद्र — शिवके एक गणका नाम जो उनके पुत्र और अवतार
 माने जाते हैं, कहते हैं कि दक्षका यज्ञ इन्होंनेही ध्वंस किया था । भीम — भीमसिंह
 मेड़तिया । मौकम — मुहकमसिंह मेड़तिया । निराट — बहुत, भयंकर । जड़े —
 प्रहार कर के ।

३६३. मुकँदावत — मुकंतसिंहका पुत्र । जसौ — जसवंतसिंह । लोहड़ां — शस्त्रों, तलवारों ।
 हीक — प्रहार । पछटि — प्रहार कर के । सिंभु जीवत — वह वीर जो युद्धमें अनेक
 शस्त्र-प्रहार सहन कर जीवित रह जाता हो । कलियाण — कल्याणसिंह । रांमौ —
 रामसिंह । समांमौ — उत्तम, श्रेष्ठ । बिहद कांमौ — महान कार्य ।

३६४. मुणै — कहता है । कुसळावत — कुशलसिंहका पुत्र । खासा गजां — वे हाथी जिन पर
 बादशाह या राजा स्वयं सवारी करता है ।

उडै खाग ऊपरा, हसै नारद रिख हासौ ।
 विदुण^१ एम^२ वेखवै, तरण रथ थांभि^३ तमासौ ।
 भड पडूं^४ लोह पूरां^५ भिलै^६, भोम कहै वद^७ भारऊं ।
 अपछरां हाथ^८ प्याला अमृत^९, पीतौ सुरग^{१०} पधारऊं^{११} ॥ ३६४
 जोधांनाथ जियार^{१२}, जोध पूछै^{१३} जोधाहर ।
 'भीम' सुतण अणभंग, बहसि^{१४} बोलियौ^{१५} बहादर^{१६} ।
 असि भेळूं करि उमंग, रंग वीमाह महारिण^{१७} ।
 तीर^{१८} अक्षत^{१९} भेलतौ^{२०}, बीद^{२१} जिमतोरण वंदण^{२२} ।
 खुरसाण विहँड^{२३} साबळ खड़ग, चोळ करां गज चाचरां ।
 'अभमाल' प्रताप रिण^{२४} आपरै, कहै 'प्रताप' फतै करां ॥ ३६५
 भूभावत फतमाल, कहै नाहर करणावत ।
 जग^{२५} लालावत जैत, दुवद^{२६} 'मोहण' उदावत^{२७} ।

१. ख. विटं । ग. विडूं । २ ग. येम । ३ ख. ग. थांभ । ४ ख. भडि पडूं । ग. भडि पडौ ।
 ५ ग. पूर । ६ ग. भलै । ७ ख. ग. वद । ८ ग. होथ । ९ ख. ग. अमृत । १० ग. सुरगि ।
 ११ ग. पधारउ । १२ ख. जोयार । १३ ख. पूछै । १४ ख. ग. बहसि ।
 १५ ख. बोलीयौ । १६ ख. बहादर । ग. बाहादर । १७ ख. महारण । ग. महारण ।
 १८ क. तीन । १९ ख. ग. अक्षत । २० ग. भेलतो । २१ ग. बीद । २२ ख. ग. वांदण ।
 २३ ग. विहँडि । २४ ख. ग. तप । २५ ख. ग. जगि । २६ ख. दुविदां ।
 ग. देषि । २७ ग. उदावत ।

३६४. विदुण - युद्ध । वेखवै - देखता है, देखेगा । तरण - तरणि, सूर्य । भड - भिलै -
 पूर्ण शस्त्र-प्रहारोंको सहन करता हुआ वीरगतिको प्राप्त होऊंगा ।

३६५. जोधांनाथ - महाराजा अभयसिंह । जोधाहर - राज जोधाके वंशज । भीम - भीमसिंह ।
 महारिण - महायुद्ध । तीर - वंदण - तीर रूपी अक्षत (न टूटे हुये चावल जो
 देव-पूजामें देवताओंको चढ़ाये जाते हैं या मांगलिक अवसरों पर तिलक करनेमें लिये
 जाते हैं) को धारण करता हुआ जिस प्रकार दुल्हा तोरण पर आता है वैसे हीमें
 युद्धस्थलमें जाऊंगा । खुरसाण - यवन, मुसलमान । विहँड - नाश कर, ध्वंस कर के ।
 प्रताप - प्रतापसिंह ।

३६६. भूभावत फतमाल - भूभासिंहका पुत्र फतहसिंह । नाहर - नाहरसिंह करणावत ।
 लालावत जैत - लालसिंहका पुत्र जैतसिंह । मोहण - मोहनसिंह ।

साहिव^१ खां 'जोध'रौ, 'वाघ' कहै सुतण^२ विहारी ।
 'फतमल' सिवदांनरौ, भीच लीधां व्रद^३ भारी ।
 अँ^४ कहै 'सूर' दारण इता, जरद पोस सेलां जड़ां ।
 वरियांम^५ मुहर^६ 'सिर' विलँद^७ हूँ रमां^८ डंडे हड रूकड़ां ॥ ३६६
 बहसि^९ 'हठी' बोलियो^{१०}, उरस छिबतौ^{११} 'जोगावत' ।
 चोळ वदन चखचोळ, रूप ग्रीखम रवि रावत ।
 पमँग ओरि स्रब पहिल^{१२}, करुं जुध घड़ा कुंवारी^{१३} ।
 सिर तूटै तौइ^{१४} जुटूं, ऐह^{१५} मो चित इकतारी ।
 रँभ वरुं सराहै हाथ रवि, अर पग सारा है उरगि^{१६} ।
 जोगेस कठण^{१७} पावै जिकौ^{१८}, सहज^{१९} तिकौ^{२०} पाऊं सरगि^{२१} ॥ ३६७
 मुहर^{२२} भूप पित मुहर^{२३}, गुमर घर कुंवर 'गुमानौ' ।
 सादूळौ सिघली, एम बोलियो^{२४} 'अमानौ' ।
 जुडी^{२५} एम जोसरां^{२६}, वेस नां चढै^{२७} वपच्छर^{२८} ।
 मँडू गळै मौसरां, पहल^{२९} चौसरां अपच्छर^{३०} ।

१ ग. साहिव । २ ग. प्रतिमें यह नहीं है । ३ ख. वृंद । ४ ग. अँ । ५ ख. वरी-
 याम । ग. वरियाम । ६ ख. सहौरि । ग. सहौर । ७ ग. सिरि विलंद । ८ क.
 रिमां । ९ ख. ग. बहसि । १० ख. बोलीयो । ग. बोलियो । ११ ख. छिबीयो ।
 ग. छिबीयो । १२ ख. ग. पहल । १३ ख. ग. कुंवारी । १४ ख. ग. तहाँ । १५ ख.
 एह । १६ ख. ख. उरग । १७ ख. ग. कठिण । १८ ख. जिको । १९ ग. सहजि ।
 २० ख. ग. तिको । २१ ख. ग. मुरग । २२ ख. नौहोरि । ग. मोहोरि । २३ ख.
 मोहरि । ग. मोहरि । २४ ख. बोलीयो । ग. बोलियो । २५ ग. जुडु । २६ ग.
 जोसरां । २७ ख. ग. लगे । २८ ख. ग. वपछर । २९ ग. पहिल । ३० ख.
 अपछर । ग. अपछरां ।

३६६. जोधरौ - जोधसिंहका पुत्र । वाघ - बाघसिंह । विहारी - विहारीदास । भीच -
 योद्धा । जरद पोस - कवचधारी । डंडे हड - चरचरी नृत्य, होलिका नृत्य । रूकड़ां -
 तलवारों ।

३६७. हठी - हठीसिंह । रावत - योद्धा, वीर । घड़ा कुंवारी - बिना युद्ध किये हुए मुसज्जित
 सेना । जोगेस - योगीश, महायोगी ।

३६८. मुहर - अगाड़ी, अग्र । गुमानौ - गुमानसिंह । सादूळौ - शार्दूलसिंह । सिघली - वीर ।

वड़^१ पड़ू^२ विहर^३ थाटां^४ 'विळंद'^५, भुजलग^६ भट सेलां भचड़ि^७ ।
सुग^८ वसूं कहै 'हटमल' सुतन, अमूनि^९ जिम खाटे अचड़ि^{१०} ॥ ३६८

उठै^{११} उमेदहवार, रिधू दूजौ 'रतनागर' ।
'अगसत' जिम आचऊं, समर अरि घूमर^{१२} सागर ।
भिड़^{१३} सिर^{१४} भद्र जातियां^{१५}, विहर^{१६} खग^{१७} गंज वणाऊं ।
माळ आदि मोतियां^{१८}, उमां भूखण पहराऊं^{१९} ।

जिम करूं वीरभद्र दक्ष^{२०} जग्यन^{२१}, कचर-घाण किलमांणरौ ।
इम 'अभा' हंत मिसलति^{२२} अरज, रटै 'पतौ' 'महिरांणरौ' ॥ ३६९

उदावत-ऊदां^{२३} वूभै^{२४} 'अभौ'^{२५}, 'हदौ'^{२६} बोलीयौ^{२७} बहादर ।
हद जूनौ खिलह्वार, जोध वदियौ^{२८} धमजगगर^{२९} ।
छळ बळ समर वछेक, वौर^{३०} असि लोह उडाऊं^{३१} ।
घाऊं^{३२} खळ दळ घणां, चुरसि^{३३} कुळि सुजस^{३४} चढ़ाऊं ।

१ ख. वड़ि । ग. विड़ि । २ ग. पड़ । ३ ख. ग. विलंद । ४ ख. विहंड । ग. विहंडि ।
५ ख. भुजलंग । ६ ख. ग. भचड । ७ ख. ग. श्रुगि । ८ ख. ग. अभिमुनौ ।
९ ख. ग. अचड । १० ग. उठे । ११ ख. ग. घुम्मर । १२ ख. ग. भिड़ि । १३ ख.
ग. सिरि । १४ ख. ग. जातियां । १५ ख. ग. विहरि । १६ ग. खगि । १७ ख.
ग. मोतियां । १८ ख. ग. पहिराऊं । १९ ख. ग. दधि । २० ख. ग. जगन । २१ ख.
ग. मसलति । २२ ख. ऊदा । ग. उदा । २३ ख. वूभै । ग. वूभै । २४ ख. ग.
अभौ । २५ ग. हदौ । २६ ख. बोलीयौ । २७ ख. ग. विदीया । २८ ग. धमजागगर ।
२९ ख. वौर । ग. वोरि । ३० क. उंचाऊं । ३१ ख. घाऊं । ग. घावु । ३२ ख. ग.
चुरस । ३३ ख. ग. सुजल ।

३६८. थाटां—दलों, सेनाओं । भुजलग—तलवार । भचड़ि—टक्कर खा कर । हटमल—
हठीसिंह । अमूनि—अर्जुनपुत्र वीर अभिमन्यु ।

३६९. रिधू—निश्चय, अटल । रतनागर—रत्नाकर समुद्र । अगसत—अगस्त मुनि ।
आचवू—आचमन करलू । घूमर—सेना (?) । भिड़—टक्कर लेकर । भद्र-
जातियां श्वेत रंगके हाथियों । कचर-घाण—ध्वंस, संहार । पतौ—प्रतापसिंह ।
महिरांणरौ—समुद्रसिंहा ।

३७०. ऊदां—उदावत शाखाके राठीड़ । हदौ—रिदेराम उदावत । धमजगगर—युद्ध ।
वौर—भोंक कर । लोह उडाऊं—शस्त्र-प्रहार करूं ।

सीरांम मुहरि^१ लंका समरि^२, कियो^३ 'अजे'^४ कपि जिम करूं* ।
भागडूं सेर-विलदहुं, अमर पुर जाऊं अर रंभ वरूं^५ ॥ ३७०

उण वेळां बोलियो^६, अडर 'जसराज'^७ पतावत ।
वरण अरण फवि^८ वरण, अरण लोयण दरसावत ।
हरवळ अस^९ हाकल, सत्रां धमरोळू^{१०} साबळ^{११} ।
गोळ जडूं सिर गयँद, खंभ^{१२} जंगी हवदां खळ ।
घण लोह वाहि^{१३} भेलूं^{१४} घणा, वप चुख^{१५} चुख हौरंभ^{१६} वरूं ।
काय होय सिंभजीवत कळह^{१७}, कर मरंग^{१८} मुजरौ करूं ॥ ३७१

'जगड़' हरां मधि^{१९} जोध, एक हूंतौ^{२०} उणवारां ।
एक लाख एरसौ^{२१}, विखम पौरस^{२२} विसतारां^{२३} ।

१ ख. मोहौरि । ग. मोहर । २ ख. ग. समर । ३ ख. कीयो । ४ ग. अजो ।

* ख. तथा ग. प्रतियोंमें यहां पर निम्नलिखित पंक्ति है—

'आपरें मोहर राजा अभा. घड असुरां असि नग घरूं ।'

॥ यह पंक्ति ख. तथा ग. प्रतियोंमें नहीं है ।

५ ख. बोलियो । ग. बोलियो । ६ ग. जसुराज । ७ ख. ग. फवि । ८ ख. ग. असि ।
९ ग. धमरोलो । १० ख. साबल । ग. साबल । ११ ख. ग. खंभ । १२ ग. बाहि ।
१३ ख. लेहूं । १४ ग. चष चष । १५ ख. ग. होयरंभ ।

॥ यह पद्यांश ग. प्रतिमें निम्न प्रकार है—

'काय होय जीवत सिंभु ज्यौं कलह ।'

१६ ख. करिमरंग । ग. करि मररंग । १७ ख. मभि । ग. मभिजोध । १८ ग. हतो ।
१९ ग. ऐरसौ । २० ख. पौरस । २१ ग. विसतारौ ।

३७० अजे कपि — अंजनीपुत्र हनुमान । भागडूं — युद्ध करूं ।

३७१. धमरोळूं — संहार करूं, मारूं । साबळ — भाला विशेष । गोळ — एक प्रकारका भाला ।
जडूं — प्रहार करूं । खळ — शत्रु । सिंभजीवत — वह वीर जो युद्धस्थलमें शस्त्र-
प्रहारोंसे क्षतविक्षत हो कर जीवित रह जाय ।

३७२. जगड़ हरां मधि — जगरामसिंहके वंशजोंमें ।

कहै सिलह नह^१ करू^२ *, मिळूं खग भाट^३ समेळा ।
 नजर चढ़ै नीसाण, वाज^४ ओरू^५ तिण वेळा ।
 धारण सलाह चित नह^६ धरै, आरण करण उतावळौ^७ ।
 वावळा गयँद मसतां^८ विधी, वींफरियो^९ रिण वावळौ ॥ ३७२

करणावत—‘करणावत’ कळिचाळ, तांम^{१०} पूछै^{११} ‘अभपत्ती’ ।
 रगावत ‘अभमाल’, पांण छक कहै प्रभत्ती ।
 ओरे^{१२} स हरवळां, सेल खळ^{१३} खगां^{१४} सँघारू^{१५} ।
 गज असवारां गोळ, धड़छि घण लोह लोह सँघारू^{१६} ।
 ह्वां अमर काय सिंभजोत^{१७} ह्वां, विखम ‘विलँद’ फौजां^{१८} विहर^{१९} ।
 करमाळ रँगै मुजरौ^{२०} करू, केसरिया^{२१} भक्त बोळ^{२२} करि ॥ ३७३

१ ग. न। २ ग. करी ।

* यहाँसे आगे ख. तथा ग. प्रतियोगमें निम्न वर्णन मिला है—

‘(कहै सिलह नह करू), सपर नह बोट सधारी ।

सुजड धारि षग सेल, भिडज वीरौ गज भारौ ।

घरा मुगल वेध पछट घरा, घरा विषतोरण धामरौ ।

वरियांम हूंत इण विध वदै, मांन सिंघ सुभ रांमरौ ।

जंता पूछै जदिने, ओट पायक ओरावत ।

पहल पतौ पूछ्यौ, गुमर धार कगौ रावत ।

कहै जैजन करौ, (मिलूं षग भाट समेळा) ।’

३ ख. भाटि । ४ ख. वाजि । ५ ग. ओरू । ६ ग. एणविध । ७ ग. उतावळौ ।
 ८ ख. ग. मसतांन । ९ ख. वीफरीयो । १० ग. तेम । ११ ख. ग. पूछै । १२ ग.
 ओरे । १३ ख. ग. षगि । १४ ख. ग. षलां । १५ ग. सिघारौ । १६ ख. ग. सघारू ।
 १७ ख. ग. सिंभ बत । १८ ग. फौजां । १९ ग. विहर । २० ग. मुजरौ । २१ ख.
 केसरियां २२ ख. बोल ।

३७२. मिळूं...समेळा — जहाँ पर भयंकर तलवारका प्रहार होता होगा वहाँ जा कर युद्ध करूंगा । वाज ओरू — घोड़ा भौंक दूंगा । वींफरियो — क्रोध किया । रिण वावळौ — रणोन्मत्त ।

३७३. करणावत — राठोड़ोंकी एक शाखा जिसमें वीर दुर्गादास जन्मा था । करणावत शाखाका राठोड़ । कळिचाळ — योद्धा, वीर । दुरगावत अभमाल — देशभक्त वीर राठोड़ दुर्गादासका पुत्र अभयसिंह । गोळ — सेना, या सेनाका पीछेका अथवा सेनाका मध्य भाग । धड़छि — काट कर, संहार कर । सिंभजोत — वह वीर जिसके शरीर पर युद्धस्थलमें युद्ध करते समय अग्रणीत शस्त्र-प्रहार हो गये हों ।

जैतौ^१ अग्नि^२ ब्रजागि, ताम बोलै^३ महकन तण^४ ।
 अंग पौरस^५ ऊफणै^६, घणै छकहूंत विरद घण ।
 कहै औरि केकाण, सेल असुराण कलं सळ ।
 वीसहथी हथवीस^७, ओक^८ पाऊं रत^९ ऊजळ^{१०} ।
 भुज लगां 'विलँद' घड़ भड़ भिड़ज, धरा पाटि^{११} भाटकि^{१२} धरू^{१३} ।
 आपरा लूण^{१४} हुंता^{१५} 'अभा', कळह बोलवाला^{१६} कलं ॥ ३७४
 ऊगंती^{१७} मौसरां, अडर सिध^{१८} 'करण अभावत'^{१९} ।
 कवरां^{२०} गुर इम^{२१} कहै, वरण मुख अरण वधावत ।
 अणी फूल उपरा, भोकि ऊडंड भळाहळ ।
 सभू राड़ सांघणी, वाहि सांबळ^{२२} वीजूजळ ।
 जरदाळ घण पखराळ जुड़ि, विहँड^{२३} खाळ^{२४} नारँग वहै ।
 हद करां इसौ^{२५} जुध विहदहूँ, करां भोकि^{२६} सूरज^{२७} कहै ॥ ३७५

१ ग. जेतो । २ ख. ग. अग्नि । ३ ख. बोले । ग. बोले । ४ ग. महकनतन ।
 ५ ख. पौरस । ग. पोरस । ६ ख. ग. ऊफणै । ७ ग. हथवास । ८ ख. ग.
 ओक । ९ ख. ग. रथ । १० ख. ऊभल । ग. उभल । ११ ख. ग. पाट । १२ ग.
 भाटक । १३ ग. धरौ । १४ ख. लूण । १५ ग. हुता । १६ ख. बोलवाला । ग.
 बोर बालक । १७ ख. ग. उगंती । १८ ग. सिध । १९ ग. अभाव । २० ख. ग.
 कवरां । २१ ख. इ । २२ क. सामल । ग. साबल । २३ ख. विहँडि । २४ ख.
 षालि । २५ ग. इसौ । २६ ख. ग. भोक । २७ ख. ग. सूरज ।

३७४. जैतौ..... महकन तण - महकरण या महेकावतका पुत्र करणोत जैता वज्राग्निके
 समान था, उस समय बोला । ओक - देवीका खप्पर जिससे वह पान करती है, अञ्जलि
 रत - रक्त, खून । भिड़ज - घोड़ा । धरा पाटि - भूमिको पाट कर । अभा - महा-
 राजा अभयसिंह । कळह - युद्ध । बोलवाला - विजय, जीत ।

३७५. ऊगंती - निकलती हुई । मौसरां - इमशु, इमशुके बाल । सिध - करणोत सिध जो
 अभकरणका पुत्र और वीर दुर्गादासका पौत्र था । करण अभावत - अभयकरणका पुत्र ।
 सांघणी - बहिया । वाहि - प्रहार कर के । वीजूजळ - तलवार । जरदाळ - कवच-
 धारी योद्धा । पखराळ - कवचधारी घोड़ा । जुड़ि - भिड़ कर । नारँग - रक्त,
 खून । हद..... कहै - मैं इस प्रकारसे भयंकर युद्ध करूंगा कि मेरे हाथोंको सूर्य
 भगवान भी घन्यवाद देंगे ।

करमसिहोत-पुहव^१ तांम पूछियौ^२, करमसीयौत कमधज ।
 उदैसीघ^३ बोलियौ^४, छाक पौरस बळ उछज^५ ।
 भिड़ज हरोळां भेळि, रवद सावळां जड़े^६ रिम ।
 जांहूं लोपि सतेज, तोप वाळां गोळां तिम ।
 दळ 'विलँद' घणा^७ विहँडे^८ दुजड़, उरड़^९ गोळां धज ऊनगे^{१०} ।
 करि दुसह भूक मुजरौ^{११} करां^{१२}, रूक सेल दहुवै^{१३} रंगे ॥ ३७६

भदौ^{१४} 'दलौ'^{१५} कुळ^{१६} भाण, 'कलौ'^{१७} संग्राम^{१८} अणंकळ ।
 राणावतां भुंभार^{१९}, 'सिवौ'^{२०} 'बालां'^{२१} सहंसबळ ।
 'भीम' धवेचां भाण, 'माल' 'राजल'^{२२} महवेचां ।
 जैतमालां 'नरहरौ'^{२३}, 'मग्घ'^{२४} पातां जुध मेचां ।
 केसवौ^{२५} भड़ां मँडळां 'मुकँद'^{२६}, वोदां हिंदू^{२७} सिघ वण ।
 अै कहै करौ^{२८} खग भट इसी, रवि साराहै हाथ रिण^{२९} ॥ ३७७

१ ख. ग. पहुव । २ ख. ग. पूछिया । ३ ख. ग. उदैसिघ । ४ ख. बोलीयो ।
 ५ ख. उछज । ६ ख. ग. जड़ । ७ ग. घणू । ८ ख. ग. विहँड़ । ९ ग. उडज ।
 १० ग. अनगे । ११ ख. ग. मुजरो । १२ ख. कलं । ग. करौं । १३ ख. ग. दुहुवै ।
 १४ ख. ग. भदां । १५ ग. दलौं । १६ ख. कुलि । ग. कुण । १७ ख. ग. कलां ।
 १८ ख. संगराम । ग. सगरांम । १९ ख. ग. जुभार । २० ख. सिवो । २१ ग.
 बालं । २२ ख. ग. राजल । २३ ग. नरहरां । २४ ख. ग. मेघ । २५ क. कस्सवो ।
 २६ ख. ग. मुकट । २७ ख. ग. हींदू । २८ ख. ग. करां । २९ ख. रणि । ग.
 रवि ।

३७६. करमसीयोत - राठोड़ोंकी एक उपशाखा या इस शाखाका व्यक्ति । रवद - मुसलमान ।
 दुजड़ - कटार । दुसह - शत्रु । भूक - संहार, ध्वंस ।

३७७. भदौ - राठोड़ोंकी भदावत शाखाका वीर । दलौ - दलसिंह । कलौ - कल्याणसिंह ।
 अणंकळ - वीर । राणावतां - राठोड़ वंशकी एक शाखाका । 'बालां' - राठोड़ोंकी
 बाला शाखाके व्यक्तियोंमें । धवेचां - राठोड़ोंकी धवेचा शाखाके व्यक्तियोंमें ।
 माल - मालदेव । महवेचां - राठोड़ोंकी महवेचा शाखाके व्यक्तियोंमें । जैतमालां -
 राठोड़ोंकी जैतमालोत शाखाके व्यक्तियोंमें । पातां - राठोड़ोंकी पातभवत शाखाके
 व्यक्तियोंमें । मँडळां - राठोड़ोंकी मंडला शाखाके व्यक्तियोंमें । वोदां - राठोड़ोंकी
 वंदावत शाखाके व्यक्तियोंमें ।

भोजहरां^१ 'नाहरो', 'मोकमल'^२ भड़ भारमलोतां^३ ।
 भीमोतां^४ 'साहिबौ', त्युंहिज^५ 'जसकन' भीमोतां^६ ।
 'सुरतौ'^७ 'गांगावतां'^८, नरां 'पदमौ'^९ नर नायक ।
 अणभंग 'चूंडावतां'^{१०}, 'विजौ' कमधं^{११} वरदायक ।
 दूभड़ां^{१२} रायपालां^{१३} दुभल, वयल धरां^{१४} सिर^{१५} दुंद^{१६} वण^{१७} ।
 अै कहै करौ^{१८} खग भट इसी, रवि वाखाणै हाथ रिण^{१९} ॥ ३७८
 विखम रूप वांकड़ौ^{२०}, कहै ऊहड़ कळिचाळौ ।
 सयद पठाणां सिरै, पमंग^{२१} भोकू^{२२} पखराळौ ।
 समर धीवि^{२३} अड़सलां^{२४}, रवद जरदैतां रालूं ।
 आज लूण आपरौ, 'अभा' जुध करि अजवाळूं^{२५} ।
 केवांण पांण कणकण करूं, आछट^{२६} घड़ असुरांणरी ।
 कपिराज जेम कर^{२७} अहि करूं, पोथी वेद पुरांणरी ॥ ३७९
 भाटी-भाटी पूछै^{२८} भूप, छकां 'उद-भांण'^{२९} वरै^{३०} छजि^{३१} ।
 जिणरौ^{३२} दादौ^{३३} 'राम', आयौ^{३४} मुरधर कजि ।

१ ग. भोजहरौ । २ ख. ग. भोहक । ३ ग. भारमलोतां । ४ ख. भीमोतो । ग. भीमोतां । ५ ख. त्युंहीज । ग. त्यौहीज । ६ ख. रूपोतां । ग. रूपीतां । ७ ख. ग. सुरतो । ८ ख. गांगावतां । ९ ग. पदमो । १० ख. चौडावतां । ग. चांडावतां । ११ ख. ग. कमधज । १२ ख. ग. दूवडौ । १३ ख. रायपालो । १४ ख. धरी । १५ ख. ग. सिरि । १६ ख. ग. दूद । १७ ख. ग. वणि । १८ ख. ग. करां । १९ ख. ग. रिणि । २० ख. वांकडौ । ग. वांकडो । २१ ख. पमंग । ग. पवंग । २२ ग. भोकौ । २३ ख. धीवि । ग. धीब । २४ ख. ग. सावलां । २५ ख. अजुवालूं । ग. उजवालूं । २६ ग. आछटि । २७ ख. ग. करि । २८ ख. ग. पूछे । २९ ग. उदभांण । ३० ख. ग. सिरै । ३१ ग. छज । ३२ ग. जिणरो । ३३ ग. दादो । ३४ ग. आयो ।

३७८. भोजहरां — राठीड़ वंशकी भोजावत शाखाके व्यक्तियोंमें । भारमलोतां — राठीड़ वंशकी भारमलोत शाखाके व्यक्तियोंमें । भीमोतां — राठीड़ वंशकी भीमोत शाखाके व्यक्तियोंमें । नरां — राठीड़ वंशकी नरावत शाखाके व्यक्तियोंमें । चूंडावतां — चूंडावत शाखाके व्यक्तियोंमें । विजौ — विजयसिंह । रायपालां — राठीड़ोंकी रायपाल शाखाके व्यक्तियोंमें । ३७९. ऊहड़ — राठीड़ोंकी ऊहड़ शाखाका व्यक्ति । कळिचाळौ — योद्धा, वीर । पखराळौ — कवचधारी घोड़ा । अड़सलां — शत्रुओं । जरदैतां — कवचधारी योद्धाओं । केवांण — कृपाण, तलवार । घड़ — सेना ।

स्यामध्रमी^१ चितसाच, सूर दारण मसलत्ती ।
 बहसि 'भाण' बोलियो, पाण तप भाण प्रभत्ती* ।
 सम^२ एम पमँग औरुं समर, पमँग कसै धारक पदम ।
 समसेर भाण^३ विहँडां^४ सत्रां, करे मेर जेही^५ कदम ॥ ३८०
 'सूर' सुतण तिण समै, 'हठी' बोलियो^६ भळाहळ^७ ।
 उमंग समर उछाह^८, दुमँग^९ पौरस^{१०} दावानळ ।
 कहै भोक^{११} केकाण, पहल धजि^{१२} कूंत धपाऊं ।
 पछै^{१३} विलँद थट परा, अजर खग पछट उडाऊं ।
 मसतक्क^{१४} हाथ पग जड़^{१५} मुगळ, तेग^{१६} अरण भक बोळ तिम^{१७} ।
 'विलँद'रा जोध^{१८} दमँगळ विचे^{१९}, जुड़े करुं नट भगळ जिम ॥ ३८१
 'नाहर' सुत नरनाह^{२०}, कहै हाजर^{२१} छक कारण ।
 घैसाहर^{२२} सिणगार^{२३}, दुती^{२४} भैराहर दारण ।
 कहै निवाहर^{२५} कथन, तुरँग नाहर जिम तोरुं ।
 दळ धू माहर दुसह, अणहथा हर^{२६} मभि^{२७} ओरुं^{२८} ।

१ ख. स्यामध्रमी । ग. सामध्रमी ।

* यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है ।

२ ख. ग. समि । ३ ख. भाटि । ग. भाट । ४ ख. विहँडं । ग. विहँडू । ५ ख. जेही । ६ ख. बोलियो । ग. बोलियो । ७ ग. भळाभळ । ८ ख. ग. दुगम । ९ ग. पौरस । १० ख. ग. भोकि । ११ ख. ग. धज । १२ ख. पछौ । ग. पछो । १३ ख. मसतक । ग. मसतकि । १४ ख. ग. जड़ि ।

१५ यह पद्यांश ख. तथा ग. प्रतियोंमें अलग अलग निम्न प्रकार हैं—

ख. 'तेभ कबोल मजीठ तिम ।' ग. 'तेभ कबोल मजीठ तिम ।'

१५ ख. तेभ । ग. तेभ । १६ ग. जोध । १७ ख. ग. विचै । १८ ग. नरनाथ । १९ ख. ग. जाहर । २० ख. घसाहरस । ग. घांसाहर । २१ ख. ग. सणगार । २२ ख. ग. दुरत । २३ ग. नवाहर । २४ ग. हड़ । २५ ग. मधि । २६ ख. वोरुं ।

३८०. पाण - प्राण, शक्ति, बल । प्रभत्ती - प्रमा, कांति । समसेर - तलवार । विहँडां - संहार कर दूँ ।

३८१. सुतण - पुत्र । हठी - हठीसिंह । सूर - सूरसिंह । भळाहळ - तेजस्वी । उमंग - जोश । दुमँग - अग्नि-कण । थट - सेना । पछट - प्रहार । दमँगळ - युद्ध । नट भगळ जिम - इन्द्रजालके खेल करने वालेके समान ।

३८२. घैसाहर - सेना, दल ।

धौखले^१ रिमां खग भट धजर^२, धुर^३ मौहर चौसर धरुं^४ ।
कर^५ सूर सराहै इम^६ कळह, कहै 'सूरजादौ' करुं^७ ॥ ३८२

'सहसौ'^८ बोलै^९ सूर, अडर उण वार 'अखारौ'^{१०} ।
पमंग^{११} ओरि^{१२} सब^{१३} पहल, करुं घमसाण करारौ ।
वाहूँ^{१४} सावळ बीज^{१५}, सहूं बीजळ बहु^{१६} सावळ^{१७} ।
वाढ़ि मुगळ दळ वढ़ूं, चढ़ूं रंभा रथ चंचळ ।
हालऊं सुरग चमरां हुतां, अमरां मभि वप धर^{१८} अमर ।
अजवाळि^{१९} रिजक राखूं अखै, सा ऊजळ^{२०} कीरत^{२१} समर ॥ ३८३

चौहान-बहसि^{२२} तांम बोलिया^{२३}, बिन्ह^{२४} चहुंवाण बहादर^{२५} ।
'अजबौहरौ'^{२६} अभंग, रत्त^{२७} मुख चख रातंबर^{२८} ।
जंग भोकि जंगमां, असह खग^{२९} बरंग^{३०} उडावां^{३१} ।
तै सरियत^{३२} कुळ तणी^{३३}, करे कुळ विरद कहावां ।
भखियौ ज लूण भूपाळरौ, घणा रिजक सांमल^{३४} घणौ ।
कहि संभरीक ऊजळ^{३५} करां^{३६}, तिकौ^{३७} लूण सांभर तणौ^{३८} ॥ ३८४

१ ख. घोखले । ग. घूखले । २ ग. धजरि । ३ ख. ग. धूरि । ४ ग. धरौ । ५ ख. सर । ६ ख. ग. यम । ७ ख. करौ । ८ ग. सहसौ । ९ ख. बोले । १० ख. अपारौ । ११ ग. पवंग । १२ ख. घोरि । ग. वारे । १३ ख. ग. अव । १४ ग. बाहूँ । १५ ग. बीज । १६ ख. ग. वहौ । १७ ख. सांवल । ग. सावल । १८ ख. ग. धरि । १९ ख. उजवाळि । २० ग. ऊजळ । २१ ख. ग. कीरति । २२ ख. ग. बहसि । २३ ख. बोलीया । ग. बोलीया । २४ ख. बिहूँ । ग. बिहूँ । २५ ख. बादर । ग. बाहादर । २६ ख. अजबौह । ग. बाह । २७ ख. ग. रंग । २८ ख. ग. रातंबर । २९ ख. ग. खगि । ३० ख. ग. वरंग । ३१ ख. उडावा । उडावां । ३२ ख. ग. सरी-यत । ३३ ख. कुळ तणा । ३४ ख. सांमल । ग. सोमिल । ३५ ख. उजल । ३६ ग. करौ । ३७ ख. तिको । ३८ ख. संभरि । ख. सांभर तणू ।

३८२. धौखले — ध्वंस कर के । धजर — भाला ।

३८३. अखारौ — अक्षयसिंहका । घमसाण — युद्ध । बीज — तलवार । बीजळ — तलवार ।

३८४. रातंबर — लाल । जंगमां — घोड़ों । बरंग — खंड, टुक । संभरीक — चौहान राज-पूत ।

दुजणसिंघ दईवांण, सूर बोलै^१ 'सबळावत'^२ ।
 भूप भड़ां भुजदंड^३, पटा इण कजि पूजावत^४ ।
 आज^५ तिकौ^६ अवसांण, घाव खग करि 'साऊ' घड़ ।
 सत्रां खाग घण सहं, भाग धिन^७ मूळ^८ कहै भड़ ।
 पिंड विहँड होय चुख चुख^९ पड़ूं, ताय वरूं रँभ हित^{१०} तिकौ^{११} ।
 सुलभ ही जिकौ^{१२} पाऊं सुरग, जगत घणौ दुल्लभ जिकौ ॥ ३८५
 उण वेळा^{१३} बोलियौ^{१४}, 'दली' सोनगरी^{१५} दारण ।
 तुरंग थाट तुरकांण, वीच ओरूं^{१६} घड़ वारण ।
 बगतर धार बँगाळ, कहूर खग धार पछट करि ।
 घण विहूरूं^{१७} खळ घाट, पाट तर^{१८} चँदण तणी परि ।
 घण प्रळय लोह भेलूं घणा, रंभ वरूं सुख सरग^{१९} रिध ।
 इळ नौख अचड़ राखूं अमर, वीरम रांणग^{२०} देव^{२१} विध^{२२} ॥ ३८६
 खांप खांपरा खत्री^{२३}, एम बोलै^{२४} भड़ अडुर^{२५} ।
 राजगुरु पुरोहित केसरीसिंह
 राजा प्रोहितराज, जठै पूछै^{२६} छक जाहर ।

१ ख. बोले । २ ग. भुजडंड । ३ ग. पुजावत । ४ ख. आजि । ५ ख. जिकौ । ग. जिको । ६ ख. धनि । ग. धन । ७ ग. जभि । ८ ग. चष चष । ९ ग. हिव । १० ख. ग. तिको । ११ ख. ग. जिको । १२ ख. वेलां । १३ ख. बोलीयो । १४ ख. सोनगरी । १५ ख. ग. वोळ । १६ ग. विहँड । १७ ख. ग. रत । १८ ख. सरगि । ग. सुरगि । १९ ख. रांणग । २० ख. देव । २१ ख. ग. विधि । २२ ग. क्षत्रि । २३ ख. बोले । ग. बोले । २४ ख. ग. अडुर । २५ ख. पूजै ।

३८५. दईवांण - वीर, समर्थ । सबळावत - सबलसिंहका पुत्र । भुजदंड - समर्थ, शक्ति-शाली । साऊ - शाह भरहठा जो सर वुलंदकी तरफ था । चुख चुख - खंड-खंड, टक-टक ।

३८६. सोनगरी - चौहानोंकी सोनगरा शाखाका व्यक्ति । दारण - जबरदस्त । तुरंग - घोड़ा । थाट - सेना । वारण - हाथी । बँगाळ - मुसलमान । कहूर - कोप । रिध - ऋद्धि, अटल ।

३८७. खांप - शाखा, गोत्र ।

कहै प्रोहित 'केहरी', अमहां घरवट अधिकारी ।
 सांम सुछळ^१ सत्र वाढ़ि^२, वडा^३ जुध तरै वडाई^४ ।
 रिण^५ सेल खाग जमदढ़^६ रिमां^७, वाहि भेल^८ अपछर वरूं ।
 महाराज^९ आज महाराज छलि, कीधौ 'दळपति' तिम^{१०} करूं ॥ ३८७

चारण कवि—तदि बोलियौ^{११} सतेज, 'सुभौ' जैसिघ समोभ्रम ।
 वप तौ छोटी वेस, सूर कुळ वाट^{१२} वडी^{१३} स्रम ।
 आप मुहरि^{१४} 'अभपतो', भिड़ज औरूं गजभारां ।
 जड़ूं मुगळ जरदैत, धमक भळहळ चव धारां^{१५} ।
 इम धसूं गोळ मभि करि उरड़, मसत लोपि घड़ मैंगळां ।
 ऊजळा करूं पीळा-अक्षत^{१६}, अमुर विहूँड खग ऊजळां ॥ ३८८

पह^{१७} बारट^{१८} पूछियौ^{१९}, बहसि 'गोरख' जद^{२०} बोलै ।
 असमांण^{२१} छवि अडर, तांण^{२२} मूछां खग तोलै ।
 जुड़े 'गजण' जालोर^{२३}, रमे^{२४} 'राजड़' खग^{२५} धारां ।
 'अजा' सुछळि^{२६} 'केहरी', प्रगट जुध कीध अपारां ।

१ ख. ग. सुछलि । २ ख. वाटि । ३ ख. वडा । ग. वड़ा । ४ ख. लडाई । ५ ख. ग. रिण । ६ ग. जमदाढ़ । ७ ग. रिम । ८ ख. ग. भेलि । ९ ख. महाराज । १० ख. ग. जिम । ११ ख. बोलियो । ग. बोलियो । १२ ग. वाटि । १३ ग. चडी । १४ ख. मोहौरि । ग. मोहरि । १५ क. भवधारां । ग. भवधारी । १६ ख. ग. पीळा अक्षित । १७ ख. ग. पौहौ । १८ ख. ग. घाट । १९ ख. ग. पूछिया । २० ख. तदि । ग. तद । २१ ग. आसमान । २२ ख. ताडि । ग. ताणि । २३ ख. ग. जालोर । २४ ख. रमे । २५ ख. वग । २६ ख. सुछल ।

३८७. केहरी—केसरीसिंह पुरोहित । घरवट—वंश, वंश-गुण । वाढ़ि—काट कर । वडाई—बढ़पन, महानता । जमदढ़—कटार । रिमां—शत्रुओं । वाहि—प्रहार कर के । भेल—सहन कर के । वरूं—वरण करूं । छलि—युद्ध, लिये ।

३८८. समोभ्रम—पुत्र । वपतौ—शरीर तो । जरदैत—कवचधारी । धमक—प्रहार । चवधारां—भालों । गोळ—सेना । पीळा अक्षत—मांगलिक अवसरों पर कुंकुमपत्रिकाके स्थान पर प्रयोगमें लिये जाने वाले केसरमें रंगे चावल ।

३८९. गोरख—गोरखदान बारहठ । राजड़—राजसिंह बारहठ । केहरी—केसरीसिंह बारहठ ।

५वां^१ जेम^२ ओरिअसि रणि^३ अथग, साजू^४ 'विलँद' समाजसूं ।
असुराण रुधिर खग करि अरुण^५, सभूं दवा महाराज^६ सूं ॥ ३८६

कवित्त दोहो^७

सूर सती सुत सूर, रटै रुधपत्ती^८ रोहड़ ।
विढूं भाट वीजळां, घाट विमरीर^९ त्रवधि^{१०} घड़ ।
कहि 'द्वारौ' धधवाड़^{११}, असुर असि धकै चढ़ाऊं ।
तिसी भाट रूपकां, जिसी खग भाट वजाऊं ।
वींद ज्युं हीं चढ़ि वांन, तेजवांनह अति तीखौ ।
'मुकन'^{१२} जेणि^{१३} मौसरां, सुकवि जोववा^{१४} सरीखौ^{१५} ।
तुररौस^{१६} धारि औरूं तुरंग, हई^{१७} सेल खागां हणे ।
सुभराज करूं महाराज सूं^{१८}, वीर साज इण^{१९} विध वणे ॥ ३८७
सुतण 'नाथ' 'खेतसी', वदै सांदू खग वाहण^{२०} ।
'बखतौ'^{२१} खिड़ियौ^{२२} वदै, रचूं 'अमरा' जैही रण ।

१ ख. ग. वां । २ ख. ग. जेमि । ३ ख. ग. रण । ४ ख. ग. साभूं । ५ ख. अरण ।
६ ख. ग. माहाराज । ७ ख. दोहो । ग. दौहो । ८ ग. रुधपति । ९ ख. ग. विषमरी ।
१० ख. ग. त्रिवध । ११ ख. धधवाड़ । १२ ख. ग. मुकंद । १३ ग. जेण । १४ ख.
जोउवा । ग. जोयवा । १५ ख. सरिखो । १६ ख. तुररोमु । ग. तुररोस । १७ ख.
हुड़ । १८ ग. सौ । १९ ग. इणि । २० ग. बांहण । २१ ग. बखतो । २२ ख. खडीयौ ।
ग. खडियौ ।

३८०. रुधपत्ती - रघुनाथसिंह । रोहड़ - रोहड़िया शाखाका चारण कवि । वीजळां -
तलवारों । घाट - प्रकार । द्वारौ धधवाड़ - द्वारकादास धधवाड़िया गोत्रका चारण
कवि । रूपकां - कविताएँ अथवा डिंगल गीत (छंद विशेष) । मुकन - मुकंददान
चारण कवि । सुकवि...सरीखौ - मुकंददान चारण कवि जो उस समय देखने योग्य
था । हई - छोड़ा । सुभराज - अभिवादन, जिसका अर्थ आपका राज्य अथवा
आप स्वयं सबके लिये कल्याणदायक हो ।

३८१. नाथ - नाथूसिंह सांदू गोत्रका चारण । खेतसी - नाथूसिंह सांदू चारणका पुत्र ।
सांदू - चारणोंका गोत्र विशेष । बखतौ खिड़ियौ - खिड़िया गोत्रका बखता नामक
चारण कवि जो अपने समय का प्रसिद्ध कवि था । अमरा - यह बखतौ खिड़ियाका
पिता था, इसने महाराजा अजीतसिंहके समय बड़ी स्वामी-भक्ति प्रदर्शित की थी ।

मुणै नवल महियार^१, रहूं हरवळां महारण^{*} ।
 रटै वीर रूपकां, चवै इण विध^२ कथ चारण ।
 सभि^३ सभि सलांम^४ वहसै^५ सुभइ^६, जियां^७ कहै ब्रद^८ जूजवा^९ ।
 रस्सवीर कवी सोभा रचै^{१०}, " हेक जाणि बह^{११} वप हुवा^{१२} ॥ ३६१
 पूछै व्यास पवित्र, तांम महाराज 'अजण'तण ।
 स्यांमध्रमी^{१३} बुध^{१४} सरस, घणू^{१५} सुभच्चित^{१६} देखि^{१७} घण ।
 'दीपावत' 'फतमाल', एम बोलै^{१८} अग्रकारी ।
 सभि खग सत्र रत्र^{१९} सीस, जुगत^{२०} पूजू^{२१} जटधारी ।
 आसरीवाद करि करि अचइ, जंग^{२२} सुरंग^{२३} धारुं जलौ^{२४} ।
 ताजीम^{२५} कुरब दीधौ^{२६} तिकौ^{२७}, आदि दिखाऊं ऊजळौ^{२८} ॥ ३६२
 मुत्सुद्धी-पह^{२९} वजीर पूछिया^{३०}, धरा थंभण बुधधारी^{३१} ।
 स्यांमध्रमी दिल साच, एक खांवद^{३२} इकतारी ।
 एक हुकम आधीन, अवर सद्धन^{३३} नह^{३४} आणै ।
 आप^{३५} सूर उदार^{३६}, जोध विदिया^{३७} सह^{३८} जाणै ।

१ ग. मोहयार । *यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है ।

२ ख. विधि । ३ ग. सजि सजि । ४ ख. ग. सलाह । ५ ख. ग. वहसै । ६ ग. सुभट । ७ ख. जीयां । ८ ख. ग. वृद । ९ ख. जूजवार । ग. जूजुवार ।

१० ख. तथा ग. प्रतियोंमें यह पद्यांश तिम्म प्रकार है—

'रसवीर सुकवि सोभा रचै ।'

१० ख. रचे । ११ ख. ग. वहाँ । १२ ख. हुवा । १३ ग. सांमध्रमी । १४ ख. बुधि । ग. बुधि । १५ ग. घण । १६ ग. सुभच्चयंत । १७ ख. ग. देखि । १८ ख. बोले । १९ ख. रन । ग. रत । २० ख. ग. जुगणि । २१ ख. पूजुं । ग. पूजू । २२ ख. ग. रंगे । २३ ग. सुरंग । २४ ख. जलौं । २५ ख. जीम । २६ ख. दीधौ । २७ ख. तिको । २८ ग. ऊळौ । २९ ख. ग. पहौ । ३० ख. ग. पूछिया । ३१ ख. बुधिधारी । ३२ ख. ग. खांवद । ३३ ख. साधन । ग. साधण । ३४ ग. नहि । ३५ ख. ग. आपै । ३६ ख. ग. उदार । ३७ ख. विदीया । ३८ ख. ग. जुध ।

३६१. मुणै—कहता है । नवल महियार—नवलदान महियारिया गोत्रका चारण कवि ।

३६२. फतमाल—व्यास पदवी धारण करने वाला ब्राह्मण । अग्रकारी—अग्रगण्य । सत्र—शत्रु । रत्र—खून, रक्त । जटधारी—महादेव ।

३६३. बुधधारी—बुद्धिमान । स्यांम—'इकतारी—सच्चे दिलसे जो स्वामी-भक्त था तथा एक ही मालिकको मानने वाला था ।

बोलिया^१ 'रतन' 'गिरधर' बिनै^२, सिरै दीवाण^३ सकाजरा ।
 भट खाग रमां खासां भंडां, मंत्रो तौ महाराज^४ रा ॥ ३६३
 राजभार ब्रद^५ रछिक, कहै 'घनरूप' एम^६ कथ ।
 असि भोकां^७ उजबकां, भिड़ूं जरदैतां भारथ ।
 'दलौ'^८ 'लखौ'^९ दर्ईवाण, कहै जुध करां^{१०} किरम्मर^{११} ।
 पुणै^{१२} एम^{१३} गोपाळ, जड़ूं^{१४} हरवळ धमजगगर ।
 बगसी बाळ किसन्न^{१५}, कहै जरदैतां कापू ।
 सिरबंधी^{१६} रातळां, अमख जवनां तिण^{१७} आपूं ।
 तिण बार^{१८} ब्रह्म^{१९} जयदेव तण, निहँग छिबै^{२०} आरक नयण^{२१} ।
 महाराजा^{२२} तांम पूछै मतै, राजखान 'सांमां' 'रयण'^{२३} ॥ ३६४
 वदै 'रयण' तिणवार, सार संसार एह सति ।
 सरस मरण अवसांण, पछट खग धार सुछळ^{२४} पति ।
 कथ इम सासन्न^{२५} कहै, दुलह^{२६} लहिजै^{२७} पुरब^{२८} दत^{२९} ।
 आज दोय अधिकार, मध्धि^{३०} सरस्वति^{३१} द्वारामति ।

१ ख. बोलोया । ग. बीलीया । २ ख. विहूं । ग. विहू । ३ ख. दिवाण । ४ ख. माहा-
 राजा । ५ ख. ब्रिद । ग. वृंद । ६ ग. ऐम । ७ ख. ग. भोके । ८ ग. दलो । ९ ग.
 लषो । १० ग. करौ । ११ ख. ग. किरमर । १२ ग. पुणे । १३ ग. ऐम । १४ ख.
 जुडु । ग. जुडू । १५ ख. ग. बाळकिसन । १६ ख. सिरि । १७ ख. ग. वित । १८ ख. ग.
 वार । १९ ग. ब्रह्म । २० ख. ग. छिवै । २१ ग. नयन । २२ ख. महाराज ।
 २३ ख. रयण । २४ ख. ग. सुछलि । २५ ख. सासन्न । २६ ग. दुलभ । २७ ख. ग.
 लहजै । २८ ग. पुरब । २९ ग. दति । ३० ख. मधि । ग. मद्य । ३१ ख. ग.
 सरसती ।

३६३. रतन - रतनसिंह, भंडारी शाखाका ग्रीसवाल । गिरधर - यह भी भंडारी शाखाका
 ग्रीसवाल था ।

३६४. उजबकां - तातारियोंकी उजबक जातिका व्यक्ति । धमजगगर - युद्ध । रातळां -
 मांसाहारी पक्षी विशेष । अमख - आमिष, मांस । निहँग - आकाश । आरक -
 लाल ।

३६५. वदै - कहता है । रयण - रतनसिंह । सति - सत्य । पछट - प्रहार कर के ।
 सुछळ - लिए, युद्ध । दुलह - दुर्लभ । पुरब दत - प्रारब्ध । मध्धि - मध्य । सर-
 स्वति - साबरमती नदी । द्वारामति - द्वारका ।

नज फतै आप संदेह नह, नृप^१ प्रब^२ हूं^३ चूकूं^४ नहीं ।
 किलमांण^५ विहंड^६ खग^७ अत^८ करूं, जुध द्रोणाचारज^९ ज्युंही^{१०} ॥ ३६५
 रटै अवर कथ 'रयण', सूर स्रंगार^{११} संपेखै^{१२} ।
 सरब धरम सिरपोस^{१३}, स्यामध्रम ध्रम^{१४} संदेखै^{१५} ।
 सूरलोक^{१६} सतपुरी, ध्रता^{१७} धामिकां धरां^{१८} ध्रति ।
 इंद्रपुरी सुख अधिक, उमा^{१९} उमळा विमळा रति ।
 सुज^{२०} लहै सूर खग अत^{२१} सभे, निरजर लखि व्रखभै^{२२} नहीं ।
 किलमांण^{२३} विहंड^{२४} खग अत^{२५} करूं, जुध द्रोणाचारज ज्युंही^{२६} ॥ ३६६
 सिरै इता अवसांण, बहल^{२७} मो बाधि^{२८} भगत-बळ ।
 अय^{२९} अरथ ले^{३०} जाय, आय सनकादक^{३१} उज्जळ^{३२} ।
 मिळै^{३३} मुकति-सांमीप, हुवै हरि दरस दसा हिम ।
 पुरी सूर इंद्र पुरी, जिकै^{३४} दीसै दासी जिम ।
 सुजि लहूं प्रीति भारी सभे, मो इकतारी^{३५} चित महीं ।
 किलमांण विहंड^{३६} खग अत^{३७} करूं, जुध द्रोणाचारज ज्युंही^{३८} ॥ ३६७

१ ख. ग. नृप । २ ख. प्रब । ३ ग. हौ । ४ ख. चूकू । ग. चूको । ५ ख. किलिमांन ।
 ६ ख. विहंडि । ७ ग. षळ । ८ ख. ग. मृत । ९ ग. द्रोणाचारज । १० ख. ग. जहीं ।
 ११ ख. ग. शृंगार । १२ ख. संपेखे । १३ ग. सिरपोस । १४ ख. ग. धरम । १५ ग.
 सदेखै । १६ ग. सुरलोक । १७ ख. धृतां । ग. धाता । १८ ख. ग. परा । १९ ख. ग.
 रुमा । २० ख. ग. सुजि । २१ ख. ग. मृत । २२ ख. ग. वृखभै । २३ ख. किलिमांण ।
 २४ ख. ग. विहंडि । २५ ख. ग. जही । २६ ख. ग. बहल । २७ ख. बाधि ।
 ग. बांधि । २८ ख. ग. अय । २९ ख. मेळे । ३० ख. ग. सनकादिक । ३१ ख. उज्जल ।
 ग. उज्जळ । ३२ ख. मिळे । ग. मिळै । ३३ ख. ग. जिके । ३४ ख. इकतारा ।
 ३५ ख. ग. विहंडि । ३६ ख. ग. मृत । ३७ ख. ग. जहीं ।

३६५. प्रब - पर्व, पुण्य अवसर । किलमांण - यवन, मुसलमान । विहंड - संहार कर के ।
 द्रोणाचारज - द्रोणाचार्य ।

३६६. संपेखै - देखता है । सिरपोस - श्रेष्ठ, शिरमौर । सूरलोक - वीरगति प्राप्त होने
 वाले वीरोंको प्राप्त होने वाला लोक । सतपुर - पतिके साथ सती होने वाली
 सतियोंको प्राप्त होने वाला लोक । ध्रता - (?) । धामिकां - (?) ।
 निरजर - देवता । व्रखभै - (?) ।

३६७. बाधि - विशेष, उत्तम । भगत-बळ - भक्तिका बल । मिळै - प्राप्त होते हैं । मुकति-
 सांमीप - एक प्रकारकी मुक्ति जिसमें मुक्त जीवका भगवानके समीप पहुँच जाना माना
 जाता है । पुरी सूर - सुरलोक । इकतारी - एक ही, दृढ़ ।

महाराज^१ 'अभमाल', पूछ^२ धावड़ महपत्ती^३ ।
 एक रंग अणभंग, बोल^४ करि^५ भ्रगुट^६ बिरत्ती^७ ।
 आप काज^८ इण वार, सुभज^९ कुळ लाज सुधारूं^{१०} ।
 वाज^{११} ओरि^{१२} घड़ 'विलैंद', आज^{१३} जगिनांम उचारूं^{१४} ।
 निरख^{१५} नाग थट निजर^{१६}, धजर ज्यां सीस धमोड़ूं^{१७} ।
 बजर^{१८} जेम बांणास^{१९}, अजर पिसणां^{२०} अंग^{२१} तोड़ूं ।
 पळचार^{२२} आस पूरूं^{२३} प्रगट, चित उछाह इसड़ौ^{२४} चहै ।
 वणि अमर देह अपछर वरूं, करूं एम धावड़ कहै ॥ ३६८

विहूं^{२५} बंधव^{२६} विरदैत^{२७}, अनड़ धांधल^{२८} अतुळीबळ ।
 अभंग नरै 'भगवान', अरज कीधी पह^{२९} आगळ ।
 आप मुहरि^{३०} असि^{३१} ओरि, घणां मुगळां खग घाऊं^{३२} ।
 आवां काम^{३३} अचूक, पुरी सातह सुर पाऊं^{३४} ।

१ ख. ग. महाराजा । २ ख. ग. पूछि । ३ ख. महपती । ४ ख. बोली । ५ ख. कर ।
 ६ ख. भृगुट । भृगुटि । ७ ख. विरत्ती । ग. विरत्ती । ८ ख. काल । ९ ख. ग. सुभज ।
 १० ग. सधारूं । ११ ख. वाजि । ग. वाज । १२ ग. ओर । १३ क. आज । १४ ख.
 ग. उगळ । १५ ख. ग. निरखि । १६ ख. ग. नजर । १७ ख. ग. धमोड़ । १८ ख.
 बजर । ग. वजर । १९ ख. ग. बाणास । २० ख. ग. पिसुणां । २१ ख. अंगि । ग.
 अंग । २२ ग. पलच्यार । २३ ग. पूर । २४ ग. इसड़ौ । २५ ख. विहूं । ग. बिहूं ।
 २६ ख. बंधव । ग. बंधव । २७ ख. वरदैत । २८ ख. धांधल । ग. धांधल ।
 २९ ख. ग. पौह । ३० ख. मोहोरि । ग. मोहर । ३१ ख. असवो । ग. असवार ।
 ३२ ख. धावां । ग. धावां । ३३ ख. कामि । ३४ ख. ग. पावां ।

३६८. धावड़ - राजकुमारको दूध पान कराने वाली स्त्रीका पति । अणभंग - वीर, योद्धा ।
 भ्रगुट - मस्तक, ललाट । बिरत्ती - (?) । सुभज - श्रेष्ठ । वाज - घोड़ा ।
 घड़ - सेना । नाग थट - हाथी-दल । धजर - भाला । धमोड़ूं - प्रहार करूं ।
 बजर - वज्र । बांणास - तलवार । अजर - अजयी । पिसणां - शत्रुओं । पळ-
 चार - मांसाहारी ।

३६९. विरदैत - यशस्वी, विरुद्धधारी । अनड़ - वीर । धांधल - राठोड़ोंकी एक शाखा
 अथवा इस शाखाका व्यक्ति । अतुळीबळ - अतुल्य बलशाली । नरै - नरावत शाखाका
 राठोड़ । आगळ - अगाड़ी । मुहरि - अगाड़ी । घाऊं - संहार कर दू । अचूक -
 निश्चय ही ।

तिण वार कहै तिजड़ाहथौ, 'केहर'^१ खीची जोस करि ।
 खग भटां करे दहवट^२ खळां, वसू^३ अमरपुर रंभ वरि^४ ॥ ३९९
 दूहा^५—तदि^६ मसलति मझि तेड़ियौ^७, नरिंद बँधव नरनाह ।
 बैला तिण^८ आयौ 'बखत', गहमहत्त^९ दरगाह ॥ ४००
 'अनुज नमे'^{१०} तदि अग्रजे^{११}, ठह^{१२} ताजीमां ठीक ।
 करो^{१३} कुरब्बां^{१४} पलक करि, दिय^{१५} आसण नजदीक^{१६} ॥ ४०१
 सेनापति दूजौ^{१७} सगह, तेड़े पह^{१८} तिण वार ।
 विखम भड़ां लीधौ 'विजौ'^{१९}, आयौ^{२०} मँत्री उदार ॥ ४०२
 नमे^{२१} कदम्मां^{२२} तदि निजर, यसारत^{२३} बरियांम^{२४} ।
 तदि^{२५} पाए^{२६} बैठा^{२७} मँत्री, सभे^{२८} तीन सल्लामं^{२९} ॥ ४०३
 प्रथम 'अभैपति'^{३०} 'पूछियौ'^{३१}, भूप कणैठी^{३२} भ्रात ।
 अब भगड़ौ कीजे किसूं, वखतसिध वडगात^{३३} ॥ ४०४

१ ख. केहरि २ ग. देहवट । ३ ग. वसु । ४ ग. वर । ५ ख. ग. दोहा । ६ ग. तव । ७ ख. तेडीयो । ग. तेडियो । ८ ख. तिणि । ९ ख. गहमहत्तै । ग. गहमहते । १० ख. नमे । ११ ख. पौहौ अग्रज । १२ ख. ठहि । १३ ख. करां । १४ ख. पलकां कुरव । १५ ख. दीय ।

... यह दोहा ग. प्रतिमें नहीं है ।

१६ ग. दूजो । १७ ख. पौहौ । ग. पौह । १८ ग. विजो । १९ ग. आयो । २० ख. ग. नमे । २१ ख. कदमां । ग. कदमां । २२ ख. ग. इसारति । २३ ख. बरियाम । ग. बरियांम । २४ ग. ततदे । २५ ग. पाये । २६ ग. बैठां । २७ ग. साजे । २८ ख. ग. सलाम । २९ ग. अनैप्रत । ३० ख. पूछियौ । ३१ ग. कणीठी ।

♦ यह पंक्ति ख. तथा ग. प्रतियोंमें निम्न प्रकार है—

'कर जोडे कीधी अरज, वखतसिध वडगात ।'

३९९. तिजड़ाहथौ—खड्गधारी वीर । केहर—केसरी सिंह । खीची—चौहान वंशकी खीची शाखाका व्यक्ति । भटां—प्रहारों । दहवट—ध्वंस, संहार ।

४००. तेड़ियो—बुलाया । नरिंद—नरेंद्र, राजा अभयसिंह । नरनाह—नरनाथ, राजा ।

बैला—समय । बखत—बखतसिंह । गहमहत्त—जनसमूह । दरगाह—दरबार ।

४०१. ठह—ठहर कर । कुरब्बां—सम्मान ।

४०२. सगह—सगवं । तेड़े—बुला कर, बुलाया । विजौ—भंडारी विजयराज ।

४०३. यसारत—इशारा या संकेत, इशारत । बरियांम—श्रेष्ठ । सल्लामं—अभिवादन ।

४०४. कणैठी—छोटा, कनिष्ठ । भगड़ौ—युद्ध । वडगात—वीर, महान ।

छंद द्वक्षरी [बेअक्षरी^१]

स्त्री महाराज^२ आप^३ कुळ सूरज^४ ।
 धरपति तेरह साख कमंधज ।
 *कर ग्रहि मूभ निवाजस कीधौ ।
 दूजौ^५ राज नागपुर^६ दीधौ* ॥ ४०५
 नेजा खासा तोग नवब्बति^७ ।
 पह^८ दीधा मो^९ विनां^{१०} दिलीपति^{११} ।
 सो ऊजळा करूं कसि सारां ।
 भिड़ज वधे ओरूं^{१२} गज - भारां ॥ ४०६
 राज^{१३} मोहरि^{१४} उपति^{१५} रघुराई ।
 भिड़ूं^{१६} जेण^{१७} विध^{१८} लखमण भाई ।
 भिड़ि^{१९} षल थाट करूं जुध भूकां ।
 रांवण जेम 'विलद' दळ रूकां ॥ ४०७
 उडती भाळां लोपि^{२०} अराबां ।
 वह^{२१} गजघड़ खगि हणूं निबावां^{२२} ।

१ ख. वे अक्षरी । ग. बे अक्षरी । २ ख. ग. महाराज । ३ ख. ग. आप । ४ ख. ग. सूरज । ५ ग. दूजो । ६ ग. नागपुर ।

... ये दो पक्तियां ख. प्रतिमें नहीं मिली हैं ।

७ ख. ग. नववत्ति । ८ ख. ग. पौहो । ९ ख. मो । १० ख. विनो । ११ ग. दिलीपति ।
 १२ ग. नेरु । १३ ख. राजि । १४ ग. मोहरि । १५ ख. अभपति । ग. अभमल ।
 १६ ग. भिडे । १७ ग. जेसा । १८ ख. ग. विधि । १९ ग. लडि । २० ग. लोपे ।
 २१ ख. वहो । ग. बहो । २२ ख. ग. नबावां ।

४०५. धरपति - राजा । तेरह साख - राठीड़ वंशकी प्रमुख तेरह शाखाएं । निवाजस - महरबानी, बरूशीश । नागपुर - नागौर ।

४०६. नेजा - भाला । खासा - राजा या बादशाहकी सवारीका हाथी या घोड़ा । नवब्बति - नौबत । सारां - तलवारों । भिड़ज - घोड़ा । गज भारां - हाथीदल ।

४०७. मोहरि - पूर्व, अगाड़ी । उपति - महाराजा अभयसिंहके लिए प्रयोग किया गया है (?) । रघुराई - श्रीरामचंद्र भगवान । लखमण - लक्ष्मण । षल थाट - शत्रु-सेना । भूकां - ध्वंस, नाश । रूकां - तलवारों ।

४०८. भाळां - आगकी लपटें । अराबां - तोपें । गजघड़ - गजघटा, हस्तिमूह ।

कूभाथळां विहरि घण काळां ।
 मारि^१ गजां लोपूं मछराळां^२ ॥ ४०८
 इम हरवळ दळ डोहि^३ अथागां ।
 खासां - भंडां वजाऊं खागां ।
 भिलम समेत^४ किलम सिर भाडूं^५ ।
 पखरैतां जरदैतां पाडूं^६ ॥ ४०९
 'सिर'^७ - विलदेस'^८ - तणा घैसाहर^९ ।
 पाडूं खग भट घणौ^{१०} पँवाहर^{११} ।
 वीज अखाढ जेम^{१२} खग वाढां^{१३} ।
 गोळ दरोळ करूं अवगाढां ॥ ४१०
 भेलूं^{१४} लोह अनेक भिलाऊं ।
 अरुण होय मुजरा कजि आऊं^{१५} ।
 रँवैत सहित होय रातंबर^{१६} ।
 करूं^{१७} सलांम^{१८} रंगियै किरमर ॥ ४११

१ ग. मार । २ ख. ग. मतिवालां । ३ ग. डोहि । ४ ख. सहेत । ग. सहित । ५ ख. भाड । ग. भाडू । ६ ख. जरपाडू । ७ ख. सिरि । ८ ग. विवळदेस । ९ ख. ग. घांसाहर । १० ख. घणो । ग. घणा । ११ ख. ग. पँवाहर । १२ ग. जेम । १३ ख. वाहां । १४ ग. भेलो । १५ ख. आऊं । १६ ख. रातंबर । १७ ग. करो । १८ ग. सिलांम ।

४०८. कूभाथळां - कुम्भस्थलों । विहरि - विदीर्ण करके । मछराळां - वीरों ।

४०९. डोहि - विलोडित करके, मंथन करके । अथागां - अपार, असीम । वजाऊं खागां - तलवारोंके प्रहार करूं । भिलम - युद्धके समय सिर पर धारण करनेका टोप विशेष । किलम - मुसलमान । भाडूं - काट डालूं । पखरैतां - कवचधारी घोड़ों । जरदैतां - कवचधारी योद्धाओं ।

४१०. सिर-विलदेस - सर बुलंदखां । घैसाहर - तणा, दल । पँवाहर - (?) । वीज - बिजली । अखाढ - आषाढ मास । वाढां - कांटों । गोळ - सेना, फौज । दरोळ - उपद्रव । अवगाढां - वीरों, धैर्यवानोंमें ।

४११. भेलूं लोह - प्रहार सहन करूं । अरुण - लाल । मुजरा - अभिवादन । रँवैत - घोड़ा । रातंबर - लाल । किरमर - तलवार ।

रटूं जेणिहूं^१ कलूं^२ बाधि रिण^३ ।
 तौ आपरौ बँधव 'अजमल'तण ।
 इम सुणि वयण हुवौ^४ आणंद^५ वर^६ ।
 स्याबासियौ^७ बँधव राजेसुर ॥ ४१२
 प्रफुलत वदन होय 'अभमल' पह^८ ।
 सुभइ 'धिराज'तणा पूछै सह^९ ।
 कहै^{१०} भइंकिण^{११} विध^{१२} जुधकीजै ।
 दिल मझि^{१३} होय तेम कहि दीजै ॥ ४१३
 छोटो दिनां वेस वप^{१४} छोटी ।
 मोटी अकल लाज कुल मोटी ।
 करि^{१५} करि तीन सलांम जेम कर^{१६} ।
 बहसि^{१७} बहसि बोलिया^{१८} बहादर^{१९} ॥ ४१४
 अणभँग सिरै जोध करणावत ।
 अणचलि^{२०} सूरज.....करणावत* ।
 तायक जोध 'पतौ' 'महकन'^{२१} तण ।
 घणछक दुहू^{२२} बोलिया^{२३} ब्रद^{२४} घण ॥ ४१५

१ ग. हु । २ ग. कलू । ३ ख. ग. रण । ४ ख. हुआ । ५ ग. आनंद । ६ ख. ग. उर । ७ ख. साबासीयो । ग. सावासियो । ८ ख. ग. पोहो । ९ ख. सोहो । ग. सोहो । १० ख. ग. कहो । ११ ख. प्रतिमें यह शब्द नहीं है । १२ ख. विधि । १३ ग. मझि । १४ ग. वप । १५ ख. कर कर । १६ ख. ग. करि । १७ ख. ग. बहसि बहसि । १८ ख. बोलीया । १९ ख. बहादर । ग. बाहादर । २० ख. ग. अणचल ।

* ख. तथा ग. प्रतियोंमें यह पंक्ति निम्न प्रकार है—'अणचल सूरज करण अभातव ।'
 २१ ख. महिकन । २२ ग. दुहू । २३ ख. बोलीया । ग. बोलीया । २४ ख. ग. ब्रद ।

४१२. बाधि—विशेष । तण—तनय, पुत्र । वयण—वचन, वाक्य । स्याबासियौ—उत्साहित किया, जोश दिलाया ।

४१३. सुभइ—योद्धा । धिराज—अधिराज, महाराज बखतसिंह ।

४१४. वेस—वयस, आयु । वप—शरीर । मोटी—महान, बड़ी ।

४१५. अणभँग—वीर, योद्धा । जोध—योद्धा । करणावत—राठोड़ वंशकी एक शाखा या इस शाखाका व्यक्ति । अणचलि—अटल, दृढ़ । पतौ—प्रतापसिंह । महकन—महकरण । घणछक—युद्ध (?) । ब्रद घण—अनेक विरुद्धोंको धारण करने वाले ।

धसे^१ हरवळां^२ चौड़े^३ - धाड़े ।
 आडा^४ लोहां^५ लड़ां अखाड़े^६ ।
 हरखे^७ पह^८ बूभिया^९ भळाहळ^{१०} ।

मेड़तिया— मेड़तिया^{११} बोलिया^{१२} महाबळ^{१३} ॥ ४१६ ॥

दाखै तांम 'कुसळसी' दूजौ ।
 सिरदारोत^{१४} महाभड़^{१५} 'सूजौ'^{१६} ।
 साकुर पहल ओरलूं सारां ।
 धमरोळूं^{१७} हरवळ चौधारां^{१८} ॥ ४१७ ॥
 रंग मट फूट^{१९} घट करि रवदाळां ।
 कळह भाट खेलूं^{२०} किरमाळां ।
 जाजळमांन^{२१} भयंकर जोसां ।
 पाड़ूं बह^{२२} खळ बगतर - पोसां ॥ ४१८ ॥
 घण ठेलूं मुगळ - दळ घेरां ।
 सामै^{२३} मुख^{२४} भेलूं समसेरां ।

१ ख. ग. घसि । २ ख. ग. हरवल । ३ ग. चौड़ेधाड़े । ४ ख. आडी । ५ ख. वगां ।
 ग. वागां । ६ ख. ग. आषाड़े । ७ ग. हरखे । ८ ख. ग. पोहो । ९ ख. बूभिया ।
 ग. बूभिया । १० ख. भळाहळ । ११ ख. ग. मेड़तीया । १२ ख. बोलीया । १३ ग.
 माहाबळ । १४ सिरदारोत । ग. सिरदारोत । १५ ग. महीभड़ । १६ ग. सूजो ।
 १७ ग. धमरोळां । १८ ख. चवधारां । ग. चौधारां । १९ ख. ग. फुट । २० ख.
 खेलूं । २१ ख. जाजुलमांन । ग. जाजुलमांन । २२ ख. बोहो । ग. बोहो । २३ ख.
 सामंहे । ग. सामं । २४ ख. मुख ।

४१६. चौड़े-धाड़े— खुले ग्राम । आडा...लड़ां—तलवारोंसे युद्ध करेंगे । अखाड़े—युद्ध ।
 बूभिया—पूछे । भळाहळ—तेजस्वी ।

४१७. सिरदारोत—सिरदारसिंहका पुत्र । सूजौ—सूरजमल या सूरजसिंह । साकुर—घोड़ा ।
 धमरोळूं—संहार कर दूं, मारूं । चौधारां—भालों ।

४१८. रंग मट—रंग डालनेका मिट्टीका पात्र । घट—शरीर । रवदाळां—यवनों, मुसल-
 मानों । किरमाळां—तलवारों । बगतर-पोसां—कवचधारी ।

४१९. घण...घेरां—मुगलोंके अपार दल समूहको पीछे हटा दूंगा । भेलूं—सहन करूंगा ।
 समसेरां—तलवारों ।

वर^१ अपछर^२ जग क्रीत^३ वधाऊं ।
 का^४ सिंभजीवत विरद कहाऊं ॥ ४१९
 विदतां नारद सँकर वखाणै ।
 पह^५ तो^६ रिजक लियौ परमाणै ।
 आगि^७ ब्रजागि^८ बोलियौ^९ अन्नड^{१०} ।
 'भोज' तणौ 'अखमाल' महाभड^{११} ॥ ४२०
 वधि^{१२} खल थटां कलू^{१३} भळ वेगां ।
 तखा भुजंग ज्यु^{१४} हीं भल^{१५} तेगां^{१६} ।
 भळहळ गदा जेम खग भाडू^{१७} ।
 भीम पँडव^{१८} जिम गजां भमाडू^{१९} ॥ ४२१
 'हरियँद'^{२०} 'भाऊ'^{२१} सुतन^{२२} हठाळौ ।
 'चंद' हरो^{२३} बोलै कळिचाळौ ।
 ओरू^{२४} वाज हरवळां ऊपर^{२५} ।
 जरदैतां खेलूं खग गज्जर^{२६} ॥ ४२२

१ ख. ग. वरूँ । २ ख. ग. अपछर । ३ ख. ग. क्रीति । ४. ख. ग. काय । ५ ख. पोहौ ।
 ग. पोहौ । ६ ख. तो । ७ ग. आग । ८ ग. ब्रजाग । ९ ख. बोलीयो । ग. बोलियो ।
 १० ख. ग. अन्नड । ११ ख. माहाभड । १२ ग. विधि । १३ ग. करो । १४ ख. ग.
 जहाँ । १५ ख. ग. भड । १६ ख. तेषां । १७ ग. पांठवि । १८ ख. भंमाडू । १९ ग.
 हरियँद । २० ग. भीम । २१ ख. सुतण । ग. सुतण । २२ ख. हलौ । २३ ख. ग.
 वोरूँ । २४ ग. ऊपर । २५ ग. गजर ।

४१९. वर—वरण करके, पाणिग्रहण करके । क्रीत—क्रीति । का—या, अथवा । सिंभ-
 जीवत—युद्धमें बहुतसे अस्त्र-शस्त्रके धारकोंको सहन कर घायल होने वाला वह वीर जो
 जीवित रह गया हो ।

४२०. विदतां—युद्ध करते हुएको । वखाणै—प्रशंसा करें । रिजक—जागीर । आगि-
 ब्रजागि—वज्राग्निके समान । अन्नड—योद्धा, वीर ।

४२१. वधि—संहार करके । थटां—सेनाओं । भळ—अग्नि । तखा—तक्षक नाग, तेज ।
 भल—धारण करके । तेगां—तलवारों । भळहळ—चमचमाती हुई, देदीप्यमान ।
 भाडू—प्रहार कलू, प्रहारसे गिरा दूँ । भमाडू—भ्रमायमान कर दूँ ।

४२२. हरियँद—हरिसिंह । हठाळौ—हठीला वीर । हरो—वंशज । कळिचाळौ—वीर ।
 वाज—घोड़ा । गज्जर—प्रहार ।

दुगम जवन घड़ि^१ कांमणि दोळी ।
हुय^२ खेलूं गेहरियां^३ होळी ।
खग भट वसंत महारिण^४ खेलूं ।
भट खग सुजळ अनि रता भेलूं ॥ ४२३
बळे कळं रिण^५ मंभि^६ विमाहौ^७ ।
सुध दस रेख खाग भट साहौ ।
हेकणि^८ हाथ अछर हथळेवौ^९ ।
करि हिक खग बाहूं^{१०} धर केवौ ॥ ४२४
पड़ि रिण^{११} रथ^{१२} चढ़ि सुरग^{१३} पधारूं ।
इळा एण विध^{१४} अचड़ उबारूं ।
रटै हेक 'पदमौ'^{१५} 'रतनावत' ।
दूजौ^{१६} 'पदम' रटै^{१७} 'दौलावत' ॥ ४२५
बाहि^{१८} बुहाय^{१९} घणी वीजूजळ ।
तंडळ खगां^{२०} करे ह्वां^{२१} तंडळ ।

१ ख. ग. घड । २ ख. ग. होय । ३ ख. गेहरीयो । ४ ख. माहारण । ग. महारण ।
५ ख. ग. रण । ६ ख. मभि । ग. मभ । ७ ख. ग. वीमाहौ । ग. हेकण । ८ ख.
ग. हथळेवो । ९ ग. बाहू । १० ख. ग. रणि । ११ ख. रथि । १२ ख. सुरणि ।
१३ ख. ग. विधि । १४ ग. पदमो । १५ ग. दूजो । १६ ग. रटै । १७ ख. बाहि ।
१८ ख. ग. बुहाय । १९ ख. डलां । ग. षोळां । २० ख. ग. ह्वां ।

४२३. दुगम — दुर्गम, कठिन । घड़ि — घटा, सेना । कांमणि — कामिनी । दोळी — चारों
ओर । गेहरियां — फाल्गुन मास का गेहर नामक नृत्यमें भाग लेने वाला । महारिण —
महारण, बड़ा युद्ध ।

४२४. बळे — फिर, पुनः । विमाहौ — विवाह । साहौ — विवाह-लग्न । हेकणि — एक ।
हथळेवौ — पाणिग्रहण, पाणिपीडन ।

४२५. सुरग — स्वर्ग । पधारूं — गमन करूं । इळा — पृथ्वी, भूमि । अचड़ — महत्त्वपूर्ण
कार्य, कीर्ति ।

४२६. बाहि — चला कर, प्रहार कर । बुहाय — चलवा कर । वीजूजळ — तलवार ।
तंडळ — ध्वंस, नाश, खंड-खंड ।

इम प्रथमी^१ सिर^२ क्रीत^३ उबारां ।
 परणे अपछर सुरगि पधारां ॥ ४२६
 दारण वाघ रूप दरसावत ।
 चांपावत-चोळ नयण बोलै^४ चांपावत^५ ।
 तेज पुंज 'सुरती'^६ 'हरियँद'^७ तण ।
 'अचळावत' तेजौ^८ 'पँचआणण' ॥ ४२७
 चवै एह कुळ^९ सुजळ चढावां^{१०} ।
 विखम थाट खग भाट वजावां ।
 तिण वेळा रावत 'वखता'रा ।
 कूंपावत-कूंपावत बोलै^{११} कळि^{१२} नारा ॥ ४२८
 देवीसिंघ 'संमत'^{१३} सुत दारण ।
 'रांम' सुतण रघुपति रोसारण ।
 दाखै^{१४} अँ गज घड़ां^{१५} दमंगळ ।
 वाह^{१६} करै^{१७} हाथळ वीजूजळ ॥ ४२९

१ ख. ग. प्रियमी । २ ख. ग. सिरि । ३ ख. ग. क्रीति । ४ ख. बोले । ग. बोले ।
 ५ ख. चंपावत । ६ ग. सुरती । ७ ग. हियँद । ८ ग. तेजो । ९ ख. ग. कुळि ।
 १० ग. वजावां । ११ ख. बोले । १२ ग. कळ । १३ ख. संमत । ग. सांमत । १४ ख.
 वषप । ग. देवै । १५ ख. घड़ां । ग. घटां । १६ ग. बाह । १७ ख. ग. करां ।

४२६. सिर-ऊपर, पर । क्रीत-क्रीति । परणे-विवाह करके । सुरगि-स्वर्गमें ।

४२७. दारण-दाहण, भयंकर । चोळ-लाल, रक्त । चांपावत-राठोड़ वंशकी एक उप-
 शाखा अथवा इस शाखाका व्यक्ति । सुरती-सुरतसिंह । हरियँद-हरिसिंह ।
 तेजौ-तेजसिंह ।

४२८. चवै-कहता है । सुजळ-काति, आभा । विखम-विषम, भयंकर । थाट-सेना,
 दल, समूह । खग-वजावां-तलवारके प्रहार करें, तलवारके घाट उतार दें ।
 वेळा-समय, अवसर । रावत-योद्धा, वीर । वखतारा-महाराजा बखतसिंहके ।
 कूंपावत-राठोड़ वंशकी एक उपशाखा या इस शाखाका व्यक्ति । कळि नारा-वीर,
 योद्धा ।

४२९. संमत-सांमतसिंह कूंपावत । रांम-रामसिंह । रघुपति-रघुनाथसिंह । रोसारण-
 रोसमें लाल, जोशपूर्ण । दाखै-कहता है । गजघड़ां-हाथियोंके दल । दमंगळ-
 महान, जबरदस्त, युद्ध । वाह-प्रहार । हाथळ-हाथकी ।

उवरै संकर सकति^१ अरोधा ।
 जोधा राठौड़- जाजुलमांन^२ महाभड़ 'जोधा' ।
 जगि सुरतांणसिंघ 'भूभावत'^३ ।
 जाजुलमांन^४ 'दलौ' 'जगतावत' ॥ ४३०
 घण व्रद धार कहै त्रबंधी^५ घड़ ।
 दुसहां खेलूं^६ रूक डँडेहड़ ।
 तण 'राजल'^७ 'पातल'^८ अतुलीबल^९ ।
 हरनाथोत^{१०} 'करण' भाळाहळ ॥ ४३१
 दुंहवै^{११} कहै एण विध^{१२} दारण ।
 विडंग भोकि लोपां घड^{१३} वारण ।
 घाय खगां खळ करां वरंग घट ।
 भेलां खळां तणी बह^{१४} खग भट ॥ ४३२

१ ग. सगति । २ ख. जाजुलिमांन । ग. जाजळमांन । ३ ख. ग. भूभावत । ४ ख. जाजुलिमांन । ग. जाजळमांन । ५ ख. ग. त्रिवंधी । ६ क. खेलूं । ७ ख. ग. राजड । ८ ख. पातुल । ९ ख. अतुलीबल । ग. अतुलीबळ । १० ख. हरिनाथोत । ग. हरिनाथोत । ११ ख. ग. दुंहवै । १२ ख. ग. विधि । १३ ख. घण । १४ ख. बहौ । ग. बहो ।

४३०. जोधा - राठौड़ोंकी एक उपशाखा या इस शाखाका व्यक्ति । भूभावत - भूभारसिंहका पुत्र । दलौ जगतावत - जगतसिंहका पुत्र दलौ ।

४३१. घण...धार - अपार विरुद्धोंको धारण करने वाला । त्रबंधी घड़ - तीन प्रकारकी सेनासे (पैदल, अश्व-दल और गज-दल) । दुसहां - शत्रुओं । रूक - तलवार । डँडेहड़ - होजिकोत्सवके समय गेहर नामक नृत्यमें उपयोगमें ली जाने वाली काष्ठकी छड़ी । राजल - राजसिंह । पातल - प्रतापसिंह । अतुलीबल - अतुल-बलशाली । हरनाथोत - हरनाथसिंहका पुत्र । करण - कर्णसिंह । भाळाहळ - तेजस्वी ।

४३२. विडंग - घोड़ा । लोपां - लांघ जाय । घड - सेना । वारण - हाथी, गज । घाय खगां - तलवारोंसे संहार कर के, तलवारके घाट उतार कर के । खळ...घट - शत्रुओंके शरीरको खंड-खंड कर दूंगा । भेलां...भट - और विपक्षियोंके अमित शस्त्र प्रहारोंको सहन करूंगा ।

पड़ि चुख चुख हुय^१ वरां अपच्छर^२ ।
 अमरापुरां वसां हुय^३ अम्मर^४ ।
 उदावतं - अतुलीबळ^५ बोले^६ ऊदावत ।
 (भड़) सारां सिरै^७ 'चैन' सूजावत^८ ॥ ४३३

धख^९ करि फूल अणी असि धारूं ।
 मुगळ सिलह बंध खग भट मारूं ।
 खेलूं^{१०} भिलूं^{११} अखाडां^{१२} खंडां^{१३} ।
 भूल हणूं खळ खासां भंडां ॥ ४३४
 कमध 'पतावत' मते करारै ।
 करमसीयोत- इणहिज विध^{१४} 'ऊदल' उच्चारै^{१५} ।
 हुय^{१६} विमरीर रूप भाळाहळ ।
 बोले^{१७} 'करमसियोत'^{१८} महाबळ ॥ ४३५

१ ख. ग. होय । २ ख. ग. अपच्छर । ३ ख. ग. होय । ४ ख. अम्मर । ग. अमर ।
 ५ ख. अतुलीबल । ६ ख. बोले । ७ ख. ग. सिर । ८ ख. ग. सुभावत । ९ ख. ग.
 धव । १० क. खिलूं । ११ ख. भिलूं । ग. भेलौं । १२ ख. अडां । ग. आडां । १३ ख.
 ग. षडां । १४ ख. विधि । १५ ख. ऊचारै । १६ ख. ग. होय । १७ ख. बोले ।
 १८ ख. करमसीयोत ।

४३३. पड़ि.....अपच्छर - तथा युद्धस्थलमें खंड-खंड हो कर गिरुंगा और वीरगति
 प्राप्त होता हुआ अप्सराका वरण करुंगा । अमरापुरां- स्वर्गका । अम्मर-अमर,
 देव । ऊदावत - राठोड़ोंकी एक उपशाखा तथा इस शाखाका व्यक्ति । भड़...सिरै -
 योद्धाओंमें सर्वश्रेष्ठ । चैन सूजावत - चैनसिंह सुजावत ।

४३४. धख - रोश, जोश, कोप । फूल अणी - तलवारकी नोक । सिलह बंध - अस्त्रशस्त्रोंसे
 सुसज्जित, कवचधारी । खेलूं...खंडां - युद्धस्थलमें युद्धरूपी खेल खेलूं और शस्त्र-
 प्रहारोंको धारण करता हुआ विपक्षियोंको खंड-खंड करता हुआ उनके भुण्ड (भूल)के
 भुण्ड खासा भंडाके पास ही ध्वंस कर दूंगा ।

४३५. पतावत - प्रतापसिंहका पुत्र । मते करारै - जबरदस्त विचारसे । ऊदल - उदावत
 शाखाका वीर । उच्चारै - कहता है । भाळाहळ - अग्नि या सूर्य । करमसियोत -
 राठोड़ वंशकी एक उपशाखा या इस शाखाका व्यक्ति ।

लाल नयण अंबर सिर लगतौ^१ ।
जद^२ बोलियौ^३ 'लखावत'^४ 'जगतौ'^५ * ।
वधि^६ हरनाथ तणौ^७ जिण^८ वारै^९ ।
इम हिज सिभूसिघ उचारै^{१०} ॥ ४३६
अचिरज किसौ^{११} एह अधिकारै ।
भड़ विमरीर 'ऊदरै'^{१२} भाई ।
ऊहड़ राठौड़- घाय खगां भांजण^{१३} उजबक^{१४} घड़ ।
अणभंग तांम बोलियौ^{१५} ऊहड़ ॥ ४३७
ओपम नयण धिखंतां आरण ।
दाखै सूर 'बिहारी' दारण ।
हाथियांताण^{१६} जँगी हवदांमै^{१७} ।
रोपूं सेल घड़ां रवदांमै^{१८} ॥ ४३८
अंग भकबौळ^{१९} रुधर^{२०} हुय^{२१} आऊं^{२२} ।
कायम जीवत सिभ^{२३} कहाऊं ।

१ ग. लगतो । २ ख. ग. जदि । ३ ख. बोलियो । ग. बोलियो । ४ ग. लाषावत ।
५ ग. जगतो । * इस पंक्तिसे आगे ख. तथा ग. प्रतियोंमें निम्न पंक्तियां मिली हैं—

'विधि विधि बीभळ भाळ वजाऊं ।
घण रवदाळ सिलह बंध थाऊं ।'

६ ख. विधि । ग. बधि । ७ ग. तणो । ८ ग. तिण । ९ ग. वारे । १० ख. उचरि ।
११ ग. किसो । १२ ख. ऊदरो । ग. ऊदरो । १३ ख. भां । १४ ख. जवक । १५ ख.
बोलीया । ग. बोलिया । १६ ख. हाथियांताणा । १७ ख. ग. हवदांमै । १८ ख. ग.
रवदांमै । १९ ख. घोल । ग. बोल । २० ख. ग. रुधिर । २१ ग. होय । २२ ख.
आऊं । ग. जाऊं । २३ ग. सिभु ।

४३६. अंबर — आसमान । जगतौ — जगतसिंह ।

४३७. अचिरज — आश्चर्य । ऊदरै — उदर्याधिके । घाय घड़ — तलवारोंके प्रहारोंसे उजबकों
(यवन शाखा विशेष)की सेनाका ध्वंस करूंगा । अणभंग — वीर । ऊहड़ — राठौड़ोंकी
एक उपशाखा या इस शाखाका व्यक्ति ।

४३८. धिखंतां — प्रज्वलित । आरण — लोहारकी भट्टी । बिहारी — बिहारीसिंह । दारण —
शक्तिशाली, वीर । हवदांमै — हाथियोंके हीठोंमें । रोपूं सेल — भाला (एक शस्त्र)
खड़ा करूँ ।

४३९. भकबौळ...आऊं — हाथीके हीठोंमें भालेका प्रहार करूंगा और मैं स्वयं अस्त्रशस्त्रोंके
प्रहारोंसे अपने शरीरको रक्तमें तरबतर करके ही आ कर महाराजासे सलाम करूंगा ।
जीवत सिभ — युद्धमें हो कर जीवित रहने वाला वीर ।

चौहाण- जै^१संभरी संभर^२ उजवाळा^३ ।
चाहुवाण^४ बोलै^५ कळिचाळा ॥ ४३६

‘लाल’ सुतण मौकौ^६ अजरायल^७ ।
तै^८ बंधव^९ ‘माहव’^{१०} रिण तायल ।
अै दाखै असि भोक^{११} अथाहां ।
वधि वधि^{१२} खळां सीस^{१३} खग वाहां ॥ ४४०

भाटी- अरण नयण चख रीस उपाटी ।
भड़ विमरीर बोलिया^{१४} भाटी ।
सूरजमाल सुतन भड़ ‘सामळ’ ।
‘जूभा’^{१५}रौ ‘नाथ’रौ भूळाहळ ॥ ४४१
कहै दुहं ओरे^{१६} केकाणां^{१७} ।
घण खग भाट रमां घमसाणां ।
तण जगमाल ‘हिमत’ तिण वारै ।
आऊं^{१८} काम^{१९} एम उच्चारै^{२०} ॥ ४४२

१ ग. जे । २ ख. ग. संभरा । ३ ख. ग. ऊजाळा । ४ ख. ग. चाहुवाण । ५ ख. बोले । ग. बोले । ६ ख. मोहौकौ । ग. मोहोको । ७ ख. ग. अजराइल । ८ ग. ते । ९ ख. बंधव । १० ख. ताव । ११ ख. भोकि । १२ ग. विधि । १३ ख. सीसि । १४ ख. बोलीया । १५ ख. ग. भूभा । १६ ख. ग. वारे । १७ ख. काणां । १८ ख. आऊं । ग. आऊ । १९ ख. कामि । २० ग. उचारे ।

३३६. जै - जो । संभरी - चौहान वंशका विरुद्ध, चौहान । संभर - सांभर नामक स्थान ।
उजवाळा - उज्ज्वल करने वाला । कळिचाळा - वीर, योद्धा ।

४४०. लाल - लालसिंह । मौकौ - मुहकमसिंह । अजरायल - वीर । माहव - माधवसिंह ।
तायल - (कोपवान ?) । अै - ये । दाखै - कहते हैं । भोक - भोंक कर । अथाहां -
अपार । वधि वधि - बढ़-बढ़ कर । खग वाहां - तलवारका प्रहार करें, योद्धा ।

४४१. उपाटी - बड़ी । सामळ - श्यामसिंह ।

४४२. केकाणां - घोड़ों । घण...घमसाणां - अपार तलवार प्रहार करते हुए युद्धस्थलमें
युद्ध-खेल खेलेंगे । हिमत - हिम्मतसिंह । आऊं काम - वीरगतिको प्राप्त हो जाऊंगा ।

घण ब्रद पूर बारहट^१ घररौ ।
 करणीदांन कहै केहररौ^२ ।
 ओरुं^३ ऊछट^४ जोम अलीलौ ।
 नेजायतां तणै विच^५ नीलौ ॥ ४४३
 वीजळ कळहळ^६ धार विहारां ।
 पछटूं जरद - पोस^७ अणपारां ।
 भूलूं नह कुळवाट सुभाए ।
 असी^८ सुरंगी^९ यै^{१०} खग^{११} आए ॥ ४४४
 कहै पिरोहित^{१२} राज अणंकळ^{१३} ।
 'माहव'रौ 'विजपाळ' महाबळ^{१४} ।
 भेळूं^{१५} तुरंग भमर गज भारां ।
 घडछूं दुसह ऊजळी धारां ॥ ४४५
 तै पौहचूं लग नील^{१६} पताखां ।
 इम उजवाळूं^{१७} पीळां - आखां^{१८} ।

१ ख. ग. बारहट । २ ख. कहरा । ३ ख. ओरुं । ग. ओरौ । ४ ख. ऊछट । ५ ख. ग. विचि । ६ ख. ग. भळहळ । ७ ख. गरद अंस । ग. गरद पोस । ८ ख. ग. आसी । ९ ख. सुरंगी । ग. सुरंगि । १० ख. ए । ग. ऐ । ११ ख. घ । ग. षणि । १२ ख. पिरोहित । १३ ख. अणंदकल । १४ ख. माहावल । ग. माहाबळ । १५ ख. भेलू । १६ ग. वाळ । १७ ग. अजवाळू । १८ ख. ग. पीळाआखां ।

४४३. घण... पूर - अनेक विरद धारण किये हुए । करणीदांन - यह मुदियाड़के ठाकुर केसरी सिंहका पुत्र था । केहररौ - केसरीसिंहका । ऊछट - विशेष, श्रेष्ठ । जोम - जोश । अलीलौ - घोड़ा । नेजायतां तणै - भाला-धारियोंके । नीलौ - रंग विशेषका घोड़ा ।
 ४४४. वीजळ - तलवार । कळहळ - युद्ध, युद्धका कोलाहल । कुळवाट - कुलमार्ग । असी - घोड़ा । सुरंगी - लाल रंग ।
 ४४५. अणंकळ - वीर । माहवरौ - माधवका (पुत्र) । भेळूं - भोंक दूं । भमर - श्याम रंगका घोड़ा । गज भारां - हाथियोंका दल । घडछूं - संहार कर दूं । धारां - तलवारों ।
 ४४६. तै - उससे । पौहचूं - पहुंच जाऊं । लग - तक, पर्यन्त । नील पताखां - हरे रंगकी झंडी । उजवाळूं - उज्ज्वल कर दूं । पीळां आखां - मांगलिक अवसरों पर केसरमें रंगे हुए अश्वत । वि. वि. राजस्थानमें यह एक प्रथा है कि मांगलिक अवसरों पर अपने इष्ट मित्रों व संबंधियोंको चावलको केसर या पीले रंगमें रंग कर निमंत्रण-पत्रके तौर पर ब्राह्मणके साथ भेजे जाते हैं । यहां कविका तात्पर्य यह है कि महाराजाने मुझे मांगलिक अवसरों पर आमन्त्रित किया है अतः आजके इस युद्धमें भी मैं अपना कर्त्तव्य पूर्ण करूंगा ।

'अधिराजरी' दिवाण^१ उचारै ।
 भेळूं असि खग कटि^२ गज भारै ॥ ४४६
 धडचूं^३ (छूं) मुगळ पह^४ चख ज^५ धौळी ।
 पुणै^६ एण^७ विध^८ 'लाल' पँचोळी^९ ।
 कहै व्यास खळ हणां किरंमर^{१०} ।
 नंदलाल हरलाल^{११} नृभै^{१२} नर ॥ ४४७
 तोले^{१३} खाग गयण भुज तोलै^{१४} ।
 'बखतेस'रा जोध इम बोलै^{१५} ।
 छक इसडौ 'अधिराज' छभारौ ।
 औ^{१६} सब^{१७} तेज प्रताप 'अभा'रौ ॥ ४४८
 उण मौसर^{१८} पह^{१९} लूण उजाळौ^{२०} ।
 पूछै^{२१} स्यामध्रमी 'विजयाळौ' ।
 सावधान दहुवै^{२२} गुण साहै^{२३} ।
 मंत्रीपणा खत्रीवट माहै^{२४} ॥ ४४९

१ ख. ग. दीवाण । २ ग. कटि । ३ ख. ग. धडचूं । ४ ख. ग. पहो । ५ ख. चिधज ।
 ग. चिधिज ६ ग. पुणे । ७ ग. ऐण । ८ ख. ग. विधि । ९ ख. पचोली । ग.
 पचोळी १० ख. किरंमर । ग. करिमर । ११ ख. ग. हरिलाल । १२ ख. ग. नृभै ।
 १३ ग. तोलै । १४ ख. तोले । १५ ख. बोले । १६ ख. औपे । ग. औ । १७ ख.
 प्रतिमें यह शब्द नहीं है । १८ ख. ग. मौसर । १९ ख. ग. पोही । २० ख. उजालू ।
 २१ ख. पूछे । २२ ख. ग. दुहुवै । २३ ख. साहे । २४ ख. शत्रीवट माहे ।

४४७. अधिराजरी—महाराज बखतसिंहका । भेळूं—भोंक दूं । गज भारै—हाथियोंके समूहमें ।

४४७. धौळी—श्वेत, धवल । पुणै—कहता है । लाल—लालचंद । पँचोळी—कायस्थ । किरंमर—तलवार ।

४४८. तोले—प्रहार हेतु तलवार उठा कर । गयण—ग्रासमान । बखतेसरा—महाराजा बखतसिंहका । छक—तेज, रतबा, प्रभाव । सब—सर्व, सब । अभांरौ—अभय-सिंहका ।

४४९. मौसर—अवसर, मौका । विजयाळौ—विजयराज भंडारी । मंत्रीपणा—मंत्रीत्व । खत्रीवट माहै—क्षत्रियत्वमें ।

कीधी अरज 'विजै' जोड़ै कर ।
 सुणिजे^१ महाराज^२ राजेस्वर^३ ।
 आज प्रताप राजरौ^४ अहौ^५ ।
 जग ऊपरा^६ सहस^७-किर^८ जेहौ^९ ॥ ४५०
 दळबळ^{१०} द्रव्व^{११} दान खग दावै ।
 अनि भूपाळ जोड़ नह^{१२} आवै ।
 कूंत साहनू हुतौ^{१३} सकाजा ।
 मोहम^{१४} जिसी लीध^{१५} महाराजा^{१६} ॥ ४५१
 थाट दिलेस भार भुज थँभियौ^{१७} ।
 आपां^{१८} जिसौ काम आरंभियौ^{१९} ।
 समर जीत 'गजण'हूं सवाई ।
 आप तणा खग तणी अवार्ई ॥ ४५२
 खान अवर दहसत^{२०} सब खावै ।
 आपहूंत लड़वा नह आवै ।
 सरस आप खग तप सरसांणै ।
 'मुदफर' दळ भागा मुगळांणै ॥ ४५३

१ ग. सुणजे। २ ख. माहाराजा। ग. महाराजा। ३ ख. ग. राजेसुर। ४ ग. आप।
 ५ ख. ग. एहौ। ६ ख. उपरां। ७ ख. ग. सहस। ८ ख. ग. कर। ९ क. जेहौ।
 १० ख. दलवल। ११ ख. द्रव्व। ग. द्रव। १२ ग. नहि। १३ ख. हुतो। ग. हूतो।
 १४ ग. मोहम। १५ ख. ग. लीधी। १६ ग. माहाराजा। १७ ख. थंभियौ।
 १८ ग. आप। १९ ख. आरंभियौ। २० ख. अव दहसत पावै। ग. सब दहसत पावै।

४५०. विजै—विजयराज भंडारी। जोड़ै कर—करबद्ध होकर। प्रताप—प्रभाव, ऐश्वर्य।
 सहस-किर—सूर्य।

४५१. अनि—अन्य। जोड़—समानता। कूंत—अनुमान। मोहम— (?)।

४५२. थाट—सेना, दल। दिलेस—दिल्लीश, बादशाह। भार भुज—उत्तरदायित्वके
 रूपमें। थँभियौ—थाम्हा। समर—युद्ध। गजणहूं—महाराजा गजसिंह। सवाई—
 विशेष, अधिक। अवार्ई—खबर, संदेश।

४५३. दहसत—भय, आतंक। सरस—जोशपूर्ण। तप—प्रभाव, तेज। सरसांणै—
 फूल गया।

आप तणा खग तेज अप्रबल^१ ।
 दहल^२ वगा^३ वाजींद तणा दळ ।
 राव ताव खग देखि धोम रवि^४ ।
 भज्ज^५ गयौ इंद्रसिंघ मनव^६ भवि^७ ॥ ४५४
 बहसे^८ आप सिंघ जिम बोलै^९ ।
 तुरराबाज^{१०} सीस^{११} खग तोलै ।
 पह^{१२} इम चढ़े लियण^{१३} निज पाया ।
 अंबखास^{१४} दिस^{१५} घाट चलाया ॥ ४५५
 आगम सुण^{१६} आपरी अवाई ।
 सब जळ थाप^{१७} हुई^{१८} पतिसाही^{१९} ।
 ऊठे^{२०} असपति गयौ.....अगेतौ^{२१} ।
 सतर बहोतर^{२२} भड़ां सहेतौ^{२३} ॥ ४५६
 इसड़ौ तप आपरी 'अजावत' ।
 आसंग किणहि^{२४} अमीर न आवत ।

१ ख. अप्रबल । ग. अपरबल । २ ख. दहलि । ३ ख. ग. भगा । ४ ख. ग. रव ।
 ५ ख. भाजि । ग. भाज । ६ ख. मांनि । ग. मांन । ७ ख. ग. भव । ८ ख. बहसे ।
 ९ ख. बोले । १० ख. वाजि । ग. तुरराबाजि । ११ ख. ग. सीसि । १२ ख. ग. पौहौ ।
 १३ ख. ग. लियण । १४ ख. अंबखास । ग. अंबखास । १५ ख. ग. दिसि । १६ ख.
 सुणि । ग. सुणी । १७ ख. ग. थाळ । १८ ग. हुइ । १९ ख. ग. पतिसाई । २० ग.
 उठै । २१ ग. अगेतो । २२ ख. बहतर । ग. बहैतर । २३ ख. सहेतो । ग. सहेतौ ।
 २४ ख. किणहीं । ग. किण ।

४५४. अप्रबल - अपार, असीम । दहल - भय । वगा - (?) । वाजींद तणा - (?) ।
 राव - नागौर अधिपति इंद्रसिंह । ताव - रोब । धोम - (?) । रवि - सूर्य ।
 इंद्रसिंघ - नागौराधिपति राव अमरसिंहका वंशज । मनव - मनमें । भवि - भय ।

४५५. बहसे - जोशमें आ कर ।

४५६. आगम - आगमन, आना । सब...पतिसाही - आपके आगमनकी सूचना सुन कर
 दिल्लीकी बादशाहत इस प्रकारसे कम्पायमान हो गई जैसे जलाशयके जलके मध्य
 थपड़ मारनेसे पानी विलोडित होता है ।

४५७. तप - रोब, प्रभाव । अजावत - महाराजा अजीतसिंहके पुत्र । आसंग - बल, शक्ति,
 सामर्थ्य ।

दिलीस्वरां^१ घर जिती दबाई^२ ।
 सब^३ जोवतां दिली पतिसाही^४ ॥ ४५७
 घर हिंदू^५ दूजां रजधानी ।
 तुरक 'इरांन'^६ अने 'तूरांनी' ।
 आपहूंत लड़िवा^७ कजि आवै ।
 दोय अमीर इसा दरसावै ॥ ४५८
 एक निजांम तेवड़ै आरण ।
 दूजौ^८ सेर विलँदखां दारण ।
 सूरापण^९ मसलत बळ सधतौ ।
 'विलँद' निजांम हूंत पणि^{१०} वधतौ ॥ ४५९
 अड़तालीस^{११} सहंस असवारां ।
 खानजिहां^{१२} जिण^{१३} हणे^{१४} खँधारां ।
 घर पूरब्ब^{१५} धीर छत्र धारे ।
 साठि हजारां हूंत सँधारे ॥ ४६०
 'सूर विलँद' विढ़तां^{१६} सुरतांणां ।
 जीतौ सफरजंग जमरांणां ।
 दळ सभि धसे समँदचै अंदर ।
 'विलँद' लियौ^{१७} गढ़ छइया वंदर ॥ ४६१

१ ख. ग. दिलीमुरां । २ ख. दवाई । ग. दबाइ । ३ ख. श्रव । ग. सरब । ४ ग. पतिसाई । ५ ख. ग. हींदू । ६ ग. ईरांन । ७ ग. लड़वा । ८ ग. दूजो । ९ ग. सुरापान । १० ग. पण । ११ ख. ग. अठताली । १२ ग. पांजहां । १३ ख. ग. जिणि । १४ ख. ग. हणै । १५ ख. पूरब्ब । १६ ग. वढ़तां । १७ ख. लीयौ ।

४५७. दिलीस्वरां — बादशाहों ।

४५८. रजधानी — राजधानी । दरसावै — दिखाई देते हैं ।

४५९. तेवड़ै — विचार करता है । आरण — युद्ध । दारण — जबरदस्त । सूरापण — शौर्य । मसलत — मसलहत । सधतौ — साधन करता हुआ । पणि — भी । वधतौ — विशेष ।

४६१. जमरांणां — यमराजके तुल्य, जबरदस्त ।

इसड़ौ^१ 'विलँद' सँबाहै^२ आजा ।
 मोटौ^३ भाग तूभ महाराजा^४ ।
 सभे समर जीतसां सरोसौ ।
 भाग आपरातणौ भरोसौ ॥ ४६२
 इसड़ौ 'विलँद' मरै काइ^५ भाजै ।
 छत्रपति^६ तूभ वडौ जस छाजै ।
 इण^७ मारियां^८ काढ़ियां^९ इणनूं ।
 दहल सोच पड़सी दक्खिणनूं^{१०} ॥ ४६३
 साहू मंत्री मेळ^{११} (सी) सकाजा^{१२} ।
 मिळणे^{१३} आहूँता^{१४} महाराजा^{१५} ।
 कर जोड़े^{१६} अरजां सुज^{१७} करसी ।
 धणी जेम निजरां^{१८} द्रव^{१९} धरसी ॥ ४६४
 उभ^{२०} कंठौ^{२१} 'पीलू' नह आसी ।
 जो आसी लड़ि भाजे जासी ।
 सत्र नमसी भय प्रीत^{२२} सकोई ।
 करि^{२३} सिर कान न कड्डै^{२४} कोई ॥ ४६५

१ ग. इसड़ो । २ ख. सबाहे । ग. सिमाहे । ३ ग. मोटो । ४ ख. ग. माहाराजा ।
 ५ ख. ग. काय । ६ ख. छत्रपती । ७ ख. यण । ८ ख. मारीयां । ९ ख. काढ़ीयां ।
 १० ख. दक्खिण नूं । ग. दक्खणनूं । ११ ख. ग. मेल्हसी । १२ ग. साजा । १३ ख. ग.
 मिलण । १४ ख. आपहूँत । ग. आपहूँता । १५ ख. माहाराजा । १६ ग. जोड़ ।
 १७ ख. ग. सुजि । १८ ख. नजरां । ग. नजरौ । १९ ख. ग. द्रव । २० ख. ग. उभय ।
 २१ ग. कंठो । २२ ख. ग. प्रीति । २३ ख. ग. कर । २४ ख. ग. कट्टै ।

४६२. विलँद — सर विलंद खां । सँबाहै — (?) । आजा — उज्ज्वका बहुवचन जिसका
 अर्थ हाथ, पैर आदि शरीरके अवयव अथवा साहस । सरोसौ — रोशपूर्ण, रोशयुक्त ।

४६३. काइ — या, अथवा । छाजै — शोभायमान होगा । काढ़ियां — निकालने पर । दहल —
 आंतक, भय ।

४६५. सकोई — सब । करि...कोई — कोई भी तुमसे युद्ध करनेके लिए कान तक ऊंचा नहीं
 करेगा ।

खळ मेवास^१ धड़क सह^२ खासी ।
 एक हुकम सारी घर आसी ।
 वणसी अमल चकरवरतीरौ ।
 तदि आवसी कि^३ पर^४ धरत्रीरौ^५ ॥ ४६६
 थाटनाथ होसी दहुं थाटां ।
 भळहळ भड़ां परख खग भाटां ।
 असपति^६ सुणे करेसी आणंद ।
 मुनसप पटा मेलसी^७ 'महमंद'^८ ॥ ४६७
 पह^९ सांभर^{१०} लगी^{११} सांमंद^{१२} पाजा ।
 रहसी दास होय अनि राजा ।
 कुळ पैतीस सेव सब^{१३} करसी ।
 भूपति रैत जेम दंड भरसो ॥ ४६८
 महि हम तम खमसी अतिमांमां^{१४} ।
 सौ सौ गजहूं करसि सलांमां ।
 सिलह ससत्र^{१५} करि वीर समाजा ।
 जुध वैगौ^{१६} कीजे^{१७} महाराजा^{१८} ॥ ४६९

१ ग. मेवास । २ ख. ग. सौहौ । ३ ख. ग. की । ४ ख. ग. प । ५ ख. ग. घरती ।
 ६ ख. असपती । ७ ख. ग. मेलहसी । ८ ख. ग. पौहौ । ९ ख. ग. संभरि । १० ख.
 ग. लग । ११ ग. सांमद । १२ ख. सब । ग. सब । १३ ग. अतिमानां । १४ ख. ग.
 ससत्र । १५ ख. वैगौ । ग. वैगो । १६ ख. ग. कीजे । १७ ख. महाराजा ।

४६६. मेवास - डाकुओं या लुटेरोंके सुरक्षित रहनेके स्थान । धड़क - भय, आतंक ।
 अमल - अधिकार । चकरवरती - चक्रवर्ती । पर - शत्रु, अन्य, दूसरा । धरत्री -
 धरती ।

४६७. थाटनाथ - सेनापति । परख - परीक्षा । असपति - बादशाह । मुनसप - मनसब ।
 पटा - जागीरकी सनद ।

४६८. लगी - तक । सांमंद - समुद्र । पाजा - सीमा, हद्द ।

४६९. महि - पृथ्वी । हम तम - हम और तुम, राजस्थानमें प्रचलित अनादर-सूचक प्रयोग ।
 खमसी - सहन करेंगे । अतिमांमां - (?) । वैगौ - शीघ्र ।

आप मुहरि^१ हूं लड़ूँ अचूकां ।
 राम मुहरि^२ हणमत जिम रूकां ।
 इसड़ी वात सुणे^३ 'अभपत्ती' ।
 मंत्री थापलियौ^४ महिपत्ती^५ ॥ ४७०
 वीर जके^६ ताबीन^७ विचारी^८ ।
 'अभमल' पहे^९ पूछै^{१०} अग्रकारी ।
 करि सलाम बोले^{११} कलिनारौ ।
 वेढक सांमतसिंघ 'विजा'रौ ॥ ४७१
 ओरे तुरंग थाट अविद्याटां^{१२} ।
 भळहळ भगळ रमूं खग भाटां ।
 करवत विहर करूं केवांणां^{१३} ।
 काठ चँदण जेही किलमांणां ॥ ४७२
 भेलूं लोह अनेक फिलांऊं ।
 कळहण^{१४} जीवतसिंभ कहाऊं ।
 'ईदावत' 'सत्रसल' भड़ आखै ।
 'दौळौ'^{१५} 'पदमावत' इम दाखै ॥ ४७३

१ ख. ग. मोहीरि । २ ख. मोहरि । ग. मोहरि । ३ ग. सुणे । ४ ख. ग. थापलीयौ ।
 ५ ख. ग. महपत्ती । ६ ख. ग. जिके । ७ ख. ग. ताबीन । ८ ख. ग. विजारी ।
 ९ ख. ग. पोहौ । १० ख. पूछे । ११ ख. बोले । १२ ख. ग. अविद्याटां । १३ ग.
 केवांगी । १४ ख. ग. कलहणि । १५ ग. बोले ।

४७०. मुहरि - अगाड़ी, अग्र । हणमत - हनुमान । रूकां - तलवारों । थापलियौ - उत्सा-
 हित किया, जोश दिलाया । महिपत्ती - राजा ।

४७१. ताबीन - आधीन । वेढक - योद्धा, वीर ।

४७१. अविद्याटां - युद्धों । भगळ - ऐंद्रजालिक खेल । रमूं - खेल खेलूं । विहर -
 विदीर्ण । केवांणां - तलवारों । जेही - जैसे ही । किलमांणां - यवनों, मुसलमानों ।

४७३. भेलूं - सहन करूं । लोह - शस्त्र-प्रहार । फिलांऊं - अनेकों पर शस्त्र-प्रहार करूं ।
 कळहण - युद्ध । जीवतसिंभ - वह योद्धा जो रणक्षेत्रमें अनेक अस्त्र-शस्त्रोंके धावोंसे
 ग्राहत होने पर भी जीवित रह जाता है । आखै - कहता है । दाखै - कहता है ।

अस^१ दळ मुगळ^२ ओर^३ अथागां ।
 खेलां^४ भगळ भळाहळ खागां ।
 तद^५ बोले^६ 'जालम'^७ 'केहर' तण ।
 घण मगरूर सूर पौरस^८ घण ॥ ४७४
 घूमर^९ असि भोके सत्र घाऊं ।
 अधर भकुट^{१०} बीजळा^{११} उडाऊं ।
 बहसि^{१२} रईस लिये^{१३} भक बौळा^{१४} ।
 गवड़ खेलवादी जिम गोळा^{१५} ॥ ४७५
 बोळ^{१६} करे^{१७} असमर^{१८} रत^{१९} बोहां^{२०} ।
 लालंबर हुय पूरा^{२१} लोहां^{२२} ।
 सत्र विहंड^{२३} खुरसांण सकाजा ।
 मुजरौ^{२४} करूं^{२५} एम महाराजा^{२६} ॥ ४७६
 धज कुळ वाट^{२७} मेड़ता धुरतौ ।
 'सेरावत' बोले^{२८} भड़ 'सुरतौ' ।

१ ख. ग. असि । २ ख. मुगल । ग. मुगल । ३ ख. ओरि । ग. ओर । ४ ग. खेलां ।
 ५ ख. ग. तदि । ६ ख. बोले । ग. बोले । ७ ख. ग. जालिम । ८ ख. पौरस । ग.
 पिंड पौरस । ९ ख. घूमर । ग. घूमर । १० ख. भृगुड । ११ ग. बीझळा । १२ ख.
 बहोसि । ग. बोहोसि । १३ ख. ग. लिये । १४ ख. बोला । ग. बोळा । १५ ख. बोला ।
 ग. गोळा । १६ ख. बोल । ग. बोळ । १७ ग. करे । १८ ख. ग. असिमर । १९ ग.
 रति । २० ख. बोहां । २१ ग. पुरा । २२ ख. लोहां । ग. लोहा । २३ ख. ग.
 विहंडे । २४ ग. मुजरौ । २५ ख. ग. करों । २६ ख. महाराजा । ग. साहाराजा ।
 २७ क. दाट । २८ ख. बोले । ग. बोले ।

४७४. ओर — भोंक कर । अथागां — अपार । मगरूर — गर्वधारी, गर्व ।

४७५. घूमर — समूह, दल । सत्र — शत्रु । घाऊं — संहार कर दूं । भकुट — शिर, मस्तक ।
 बीजळा — तलवार । बहसि — जोशमें आकर । भक बौळा — खूनमें तरबतर, सरा-
 बोर । गवड़ खेलवादी — गौड़िया बाजीके समान ।

४७६. बोळ — लाल, रक्तपूर्ण । असमर — तलवार । रत — रक्त, खून । बोहां — प्रवाह,
 (?) । लालंबर — लाल रंग पूर्ण । लोहां — शस्त्र-प्रहारों । विहंड — ध्वंस करके ।
 खुरसांण — यवन, मुसलमान । मुजरौ — अभिवादन ।

४७७. धज — ध्वज । कुळ वाट — कुल-मार्ग, वंश-गुण । धुरतौ — धारण करता हुआ ।

अणभँग राजसिंघ^१ 'पेमावत'^२ ।
 सिंभूसिंघ बोलियौ^३ 'हटी' सुत ॥ ४७७
 जवन हरौल विहरि मधि जावां ।
 असुर गोळ मभि^४ लोह उडावां ।
 'गजण' 'सवाई' तणौ खत्री^५ गुर ।
 आखै जड़ूं साबळां^६ आसुर ॥ ४७८
 लोही ताळ सिलहबँध लोभै ।
 समँद वोच^७ जिम वादळ सोभै ।
 दाखै 'विजपाळोत'^८ 'बहादर' ।
 हरवळ अणी हाकलूं^९ हैमर ॥ ४७९
 करूं^{१०} भाट भलहळ केवांणां ।
 मछ ओछा^{११} जळ ज्यूं मुगळांणां ।
 भिड़ जस मेलूं^{१२} खळ^{१३} दळ भारै ।
 एम^{१४} 'हटी'...सुत 'सिवौ'^{१५} उचारै ॥ ४८०
 खाग पछट काढूं रत खाळां^{१६} ।
 रँगमट^{१७} जेम^{१८} भृगुट^{१९} रवदाळां ।

१ ग. राजासिर । २ ख. बोलीयो । ग. बोलीयो । ३ ग. महि । ४ ख. षत्र ।
 ५ ख. सांबलां । ग. साबलां । ६ ख. वोचि । ग. बीच । ७ ख. ग. विजपालरी । ८ ख.
 ग. हाकलू । ९ ग. करौ । १० ख. ग. घोछा । ११ ग. मेळी । १२ ख. षग ।
 १३ ग. हेम । १४ ख. ग. सिवो । १५ ख. पाला । १६ ख. रंगमट । १७ ख. ए ।
 ग. एम । १८ ख. ग. भृगुट ।

४७७. अणभँग — नहीं भुक्ने वाला वीर । पेमावत — पेमसिंहका पुत्र । हटी — हटीसिंह ।
 ४७८. विहरि — विदीर्ण कर के, नाश कर के । मधि — मध्य, बीच । गोळ — सेना, दल ।
 लोह उडावां — शस्त्र-प्रहार करें । गजण — गजसिंह । सवाई — सवाईसिंह । आखै —
 कहता है । जड़ूं — प्रहार करूं । साबळां — भालों विशेष । आसुर — यवन, मुसलमान ।
 ४७९. ताळ — तालाब । सिलहबँध — कवचधारी या अस्त्र-शस्त्रधारी । लोभै — लोभायमान
 होते हैं । अणी — सेना, अनीक । हैमर — घोड़ा ।
 ४८०. भाट — प्रहार । भलहळ — चमकदार । केवांणां — तलवारों । मछ — मछली, मत्स्य ।
 मुगळांणां — मुसलमान । सिवौ — शिवसिंह ।
 ४८१. पछट — प्रहार कर के । काढूं — निकाल दूं । खाळां — नाला । रँगमट — रंग डालने
 या धोलनेका पात्र विशेष । रवदाळां — मुसलमानों ।

अणभंग कहै जोध 'ऊदावत'^१ ।
 आगि ब्रजागि 'गजौ'^२ 'लालावत' ॥ ४८१
 लोहां भड़ औभड़ा^३ लगावां ।
 असुर दड़ां जिम सीस उडावां ।
 जाजुलि जुध^४ भेळूं असि जालिम^५ ।
 'सिरदाररौ' कहै भड़ 'सालिम'^६ ॥ ४८२
 धख कथ एण हीज विध^७ धारूं ।
 'मौहकम' 'राम'^८ 'अमर' सुत मारूं ।
 वदै वहूं^९ खेलां^{१०} जुध वागां ।
 खासा भँडे^{११} डंडेहड़ खागां ॥ ४८३
 कमँध हठीसुत^{१२} रूप कराळौ ।
 चवै गुलाब सिंघ^{१३} कळिचाळौ ।
 घण खळ असि भोके खग^{१४} घाऊं^{१५} ।
 वयळ मँडळ नट कुँडळ वणाऊं ॥ ४८४
 अरि हति^{१६} फूल धार भेलै^{१७} अति ।
 भूत गणां संकर पूजावति^{१८} ।

१ ख. ग. ईदावत । २ ख. गलौ । ग. गजौ । ३ ग. ओभड़ां । ४ ख. ग. जुधि ।
 ५ ग. जालम । ६ ग. सालम । ७ ख. ग. विधि । ८ ग. राम । ९ ख. ग. त्रिहूं ।
 १० ख. खेलां । ११ ख. ग. भँडां । १२ ग. हठीसुत । १३ ख. सिंघ सिंघ । १४ ख.
 ग. षणि । १५ ख. ग. घावूं । १६ ख. हथ । ग. हथि । १७ ख. भेलूं । ग. भेलू ।
 १८ ख. ग. पूजभति ।

४८१. ऊदावत — राठौड़ वंशकी एक शाखा या इस शाखाका व्यक्ति । गजौ — गजसिंह ।
 लालावत — लालसिंहका वंशज ।
 ४८२. औभड़ां — प्रहार । दड़ां — गेंद । जाजुलि — जाज्वल्यमान । भेळूं — भोंक दूं ।
 जालिम — जबरदस्त । सिरदाररौ — सिरदारसिंहका । सालिम — सालिमसिंह ।
 ४८३. धख — जलन, जोश । एण — इस । वदै — कहता है । डंडेहड़ — होलिका नृत्यके
 समय प्रयोगमें लिया जाने वाला डंडा या छड़ी ।
 ४८४. चवै — कहता है । कळिचाळौ — वीर, योद्धा । घाऊं — ध्वंस कर दूं । वयळ मँडळ —
 सूर्यमंडल । नट कुँडळ — (?) ।
 ४८५. अरि — शत्रु । हति — संहार कर के । फूल धार — तलवार ।

करूं सनांन विहर रत कम्मळ^१ ।
 जटी^२ सनांन जेम^३ गंगाजळ ॥ ४८५
 वदै गुलाब^४ नेह अवरीरा ।
 पहरूं हार गुलाब परीरा ।
 चमर हुतां^५ रथ^६ चढे चलाऊं ।
 जुगति एण अमरापुर^६ जाऊं ॥ ४८६
 गजघड़^७ तुरंग हाकलूं गहतंत ।
 सुत 'गोकळ' दाखै इम 'सामंत' ।
 धीबै^८ सेल सनाह^९ धडाळां ।
 बरघळ^{१०} कर^{११} पाडूं^{१२} बंगाळां ॥ ४८७
 वदै 'किसन' 'पिथ' सुत कुळ वाटां ।
 भाडूं^{१३} सूर खळां खग भाटां ।
 'राम' सुजाव मौड रिमराहां ।
 वदै भोक^{१४} असि बीजळ वाहां ॥ ४८८
 अरि करनत्त न^{१५} हंस उडाऊं^{१६} ।
 कहै 'रतन' जस उत्तन कहाऊं^{१७} ।

१ क. कम्मल । २ क. जवन । ३ ग. सिनांन । ४ ख. हुता । ५ ख. ग. रथि ।
 ६ ख. अमरापुरि । ७ ख. गगजघड । ग. गजघट । ८ ख. धीबे । ग. धीबे । ९ ख.
 संनाह । ग. सन्नाह । १० ख. ग. बरघल । ११ ख. करि । १२ ख. पाडूं । १३ ख.
 भाटूं । १४ ख. ग. भोकि । १५ ख. ग. करिनतन । १६ ख. उडावूं । ग. उडावूं ।
 १७ ग. कहावूं ।

४८५. विहर—काट कर । रत—रक्त, खून । कम्मळ—शिर । जटी—महादेव ।

४८६. अवरीरा—नागकन्या विशेष जिसको वीरगति प्राप्त करने वाले वीर ही प्राप्त करते हैं । परीरा—अप्सराके । अमरापुर—स्वर्ग ।

४८७. गजघड़—हाथी दल । तुरंग—घोड़ा । हाकलूं—हांकूं, चलाऊं । गहतंत—मस्त । दाखै—कहता है । सामंत—वीर, योद्धा, सामंतसिंह । धीबै—प्रहार कर के, मार कर के । सनाह—कवच । धडाळां—(?) । बरघळ—बड़ा छेद । पाडूं—संहार कर दूं । बंगाळां—यवन, मुसलमान ।

४८८. वदै—कहता है । किसन—किसनसिंह । बीजळ—तलवार ।

४८९. हंस—प्राण । रतन—रतनसिंह । उत्तन—जन्मभूमि ।

‘अजण’ तणौ ‘जगतेस’ उचारै ।
 मेळू असि हरवळां^१ मँभारै ॥ ४८६
 किलम सिलहवँध खांडू^२ जस^३ कर^४ ।
 प्रचँड किसन चाणूर तणी पर^५ ।
 इण हिज विध^६ ‘सुरतेस’ ‘अखावत’ ।
 रटै धीर ‘अमरावत’ रावत ॥ ४८७
 कहै ‘भीम’ सुत दारण ‘केहर’^७ ।
 रँवत^८ ओरू^९ जाडै घूमर^{१०} ।
 घण रवदळ सावळां घाऊं^{११} ।
 कहै ‘रतन’ ‘जस’ उत्तन कहाऊं^{१२} ॥ ४८८
 इण हिज^{१३} विध^{१४} कथ कहै^{१५} उ चारण ।
 दुभल ‘सुखावत’ ‘केहर’^{१६} दारण^{१७} ।
 रँवत^{१८} वधि ओरू^{१९} धिकते^{२०} रिण^{२१} ।
 तवै एम ‘भगवंत’ ‘भाऊ’^{२२} तण ॥ ४८९

१ ख. हरवले । २ ख. ग. पांडू । ३ ख. ग. जुध । ४ ख. ग. करि । ५ ख. ग. परि । ६ ख. ग. विधि । ७ ख. ग. केहरि । ८ ख. रेवंत । ग. रेवत । ९ ख. ग. चोळू । १० ख. घूमरि । ग. घूमरि । ११ ख. घांवू । घावू ।

*यह पंक्ति ख. तथा ग. प्रतियोगे निम्न प्रकार है—

‘बीजळ हाथ लग जां वजावू ।’

१२ ग. हीज । १३ ख. ग. विधि । १४ ख. ग. करै । १५ ख. ग. केहरि । १६ ख. दारण । १७ ख. रेवंत । ग. रेवत । १८ ख. ओरू । ग. ओरू । १९ ख. ग. विषते । २० ख. ग. रण । २१ ग. भावू ।

४८६. अजण — अर्जुनसिंह । जगतेस — जगतसिंहका वंशज । हरवळां — हरावल । मँभारै — मध्यमें ।

४८७. सिलहवँध — अस्त्र-शस्त्रोंसे सुसज्जित । चाणूर — कंसका पहलवान जिसका श्रीकृष्णने वध किया ।

४८८. भीम — भीमसिंह । केहर — केसरीसिंह । रँवत — घोड़ा । जाडै घूमर घने दलमें । सावळां — भालों । घाऊं — संहार करूँ ।

४८९. दुभल — वीर । सुखावत — सुखसिंहका पुत्र । केहर — केसरीसिंह । दारण — जबर-दस्त । वधि — बढ़ कर, जोशमें आ कर । धिकते — प्रज्वलित । रिण — युद्ध । तवै — कहता है । भगवंत — भगवत्सिंह । भाऊ — भाऊसिंह ।

जड़कूं सेल जैतखँभ जेहै^१ ।
 असि असवार कहै^२ चित्र एहै^३ ।
 'भूप' कहै सुत 'देव' सुभेवौ^४ ।
 काढूं देव दांणवां^५ केवौ^६ ॥ ४६३
 खग भट 'विलँद' थटां परि^७ खेलूं ।
 असुरां नारँग ताळ उभेलूं ।
 कह^८ 'जैसिघ'^९ 'सिभु'सुत^{१०} इम कथ ।
 भुज-लग भट विहँडूं खळ भारथ ॥ ४६४
 विहँड^{११} खळां बह^{१२} खोण^{१३} वहाऊं ।
 पत्र भरि भरि^{१४} काळिका धपाऊं ।
 'रांम'सुतन^{१५} बोलै^{१६} 'सिघ'^{१७} राजड़^{१८} ।
 घण खग हाथळ वहूं त्रिविध^{१९} घड़ ॥ ४६५
 मारुं 'भैरव' सुतण महाबळ^{२०} ।
 'वैरौ'^{२१} बोलै^{२२} तोले^{२३} बीजळ^{२४} ।
 मेळूं असि घूमर मुगळांणां ।
 कलं निहाव घाव^{२५} केवांणां ॥ ४६६

१ ख. ग. जेही । २ ख. ग. रहै । ३ ख. एही । ग. ऐहीं । ४ ग. सुभेवो । ५ ख. दांणवो । ६ ख. केवो । ७ ख. सिरि । ग. सिर । ८ ख. ग. कहै । ९ ग. जैसिघ । १० ख. सिभुसुत । ११ ग. विहँडि । १२ ख. बौही । ग. बौही । १३ ख. ओणि । ग. आण । १४ ग. भर । १५ ख. ग. सुतण । १६ ख. बोले । ग. सिघ । १७ ग. बोलै । १८ ग. राज । १९ ख. त्रिविध । ग. त्रिविध । २० ख. माहाबल । ग. महाभड । २१ ख. वैरो । २२ ख. बोले । २३ ख. तोलै । २४ ग. बीजळ । २५ ख. घाव ।

४६३. जड़कूं - प्रहार करूं । जैतखँभ - जयस्थंभ । सुभेवौ - श्रेष्ठ, रहस्यपूर्ण, (?) ।
 केवौ - शत्रुता, प्रतिकार, संकट ।

४६४. थटां - दल, सेनाएं । नारँग - रक्त, खून । ताळ - तालाव । उभेलूं - उभड़ा दूं ।
 भुज-लग - तलवार । विहँडूं - मार-काट करूं, ध्वंस करूं । भारथ - भारत, युद्ध ।

४६५. खोण - शोणित, खून । धपाऊं - तृप्त कर दूं । सिघ राजड़ - राजसिंह । हाथळ -
 शस्त्र-प्रहार (?) । घड़ - सेना ।

४६६. तोले - प्रहार हेतु शस्त्र उठा कर । बीजळ - तलवार । घूमर - दल । मुगळांणां -
 मुगलों, यवनों । निहाव - प्रहार । केवांणां - तलवारों ।

धुमर^१ खळां विहंडि खग घाटां ।
 भेलूं वहळ खळां खग भाटां ।
 विच^२ गळ रंभ वरूं^३ वरमाळां^४ ।
 ओयण^५ मभि उभळतां^६ अँत्रोळां ॥ ४६७
 भाडूं^७ खळां^८ सिलहवँध भळहळ ।
 दुरदां टिला^९ कहुं दांतूसळ^{१०} ।
 इम चुख-चुख^{११} हुय^{१२} पडूं अखाडै ।
 चंचळ तांम अछर रथ चाडै ॥ ४६८
 भळहळ खेडि^{१३} विवांणां भोकां ।
 सुर हुय^{१४} इम जाऊं^{१५} सुरलोकां ।
 इम बोले^{१६} मेडतिया^{१७} अडुर ।
 धुर जोधार^{१८} पुछै^{१९} पाटोधर ॥ ४६९
 चौरंग^{२०} जिण गिलिया^{२१} 'चौडावत' ।
 ओ^{२२} बोले^{२३} 'राजड़' 'किसतावत' ।

१ ख. धूमर । ग. धूमर । २ ख. विचि । ३ ख. वरूं । ग. धरी । ४ ग. वरमालों ।
 ५ ख. ओयणां । ग. ओयणां । ६ ख. उलभटां । ग. उलभतां । ७ ग. भडू । ८ ख.
 ग. वगां । ९ ख. टिलां । १० ख. दांतूसल । ग. दांतूसल । ११ ग. चष चष । १२ ख.
 होइ । ग. होय । १३ ख. वेडि । ग. वेलि । १४ ख. ग. होय । १५ ख. जाऊ ।
 १६ ख. बोले । १७ ख. मेडतीया । १८ ख. ग. जांधां । १९ ख. ग. पूछै । २० ख.
 ग. चौरंगि । २१ ख. गिलीया । २२ ख. ओ । २३ ख. बोले ।

४६७. धुमर — सेना । विहंडि — ध्वंस करके, संहार करके । वहळ — अपार, बहुत । गळ —
 कंठ, गर्दन । रंभ — अप्सरा । ओयण — पैर, चरण । मभि — में । उभळतां —
 बंधते हुए । अँत्रोळां — अंत्रों ।

४६८. दुरदां — द्विदों, गजों । टिला — टक्कर, आघात । दांतूसळ — हाथीका बाहरका दांत ।
 चुख-चुख — खंड-खंड । पडूं — वीरगति प्राप्त हो जाऊं । अखाडै — युद्धमें । चंचळ —
 चपल । तांम — तब । अछर — अप्सरा ।

४६९. विवांणां — विमानों, वायुयानों । मेडतिया — राठीड़ वंशकी एक शाखा । अडुर —
 निर्भय । धुर — प्रथम । पाटोधर — राजसिंहासनाधिकारी, राजा ।

५००. चौरंग — युद्ध । (?) । गिलिया — निगल गया । चौडावत — राव चूडाका वंशज ।
 राजड़ — राजसिंह ।

'राजड़' कहै दळां रवदाळां ।
 कळह वसंत खेलूं किरमाळां ॥ ५००
 इम बोलै^१ जोधा छक ऊजळ^३ ।
 'ऊदा' पूछै तांम 'अभैमल' ।
 सिरै 'मांन' भड़ 'कांन'^४ समोभ्रम ।
 सूर^५ च्यार दुजा^६ इण हिज^७ सम ॥ ५०१
 उचरे^८ पंचां^९ भड़ां अभंगां ।
 जुडां^{१०} पांच पंडव^{११} जिम जंगां ।
 रजवट छक बोलै^{१२} इम^{१३} रावत ।
 'करणौ'^{१४} 'भाऊ' सुत कूपावत^{१५} ॥ ५०२
 जरदैतां ओरे^{१६} असि जाऊं^{१७} ।
 वजर धजर घण गजर वजाऊं ।
 'अभै' तांम पूछै वड रावत ।
 सूरवीर कूरम सेषावत ॥ ५०३

१ ग. बोलै । २ ख. बोले । ३ ख. उजल । ग. उभल । ४ ख. कांन्ह । ग. कान्ह ।
 ५ ख. ग. सूर । ६ ख. ग. दूजा । ७ ख. ग. हीज । ८ ख. ऊचरे । ९ ख. पाचां ।
 ग. थांचां । १० ग. जडा । ११ ख. पांडवां । ग. पंडवां । १२ ख. बोले । ग. बोले ।
 १३ ख. ग. वड । १४ ग. करणौ । १५ ख. कुंपावत । १६ ख. बोरे । ग. बोरे ।
 १७ ख. जाऊं ।

५००. रवदाळां - यवनों । किरमाळां - तलवारों ।

५०१. जोधा - राव जोधाके वंशज, राठीड़ोंकी एक उपशाखा । छक - सभा, समूह ।
 ऊदा - राठीड़ोंकी उदावत शाखा । तांम - उन, तब । अभैमल - महाराजा अभय-
 सिंह । सिरै - श्रेष्ठ । मांन - मानसिंह । भड़ - योद्धा । कांन - कानसिंह ।
 समोभ्रम - पुत्र । दूजा - दूसरे । सम - समान ।

५०२. जुडां - भिड़ जाय । रजवट - क्षत्रियत्व । छक - जोश । रावत - योद्धा । कूपा-
 वत - राठीड़ वंशकी एक उपशाखा ।

५०३. जरदैतां - कवचधारी योद्धाओं । वजर - तलवार । धजर - भाला । गजर -
 प्रहार । वड रावत - महावीर । कूरम - कछवाहा वंश । सेषावत - कछवाहा वंशकी
 एक शाखा ।

लाल तांम बोले^१ चख लालां ।
 ढाहूं खग भाटां गज^२ ढालां ।
 काकौ 'लाल'तणौ कळिनारौ^३ ।
 इम सुणि^४ बोले^५ 'विसन' 'अभारौ'^६ ॥ ५०४
 जवन हरोळ^७ विहँडि मधि जाऊं^८ ।
 बीजळ खासा गजां वजाऊं ।
 सर सावळ^९ खग खँजर दुसारां ।
 पंजर हुवां^{१०} लडूं अणपारां ॥ ५०५
 पाडि^{११} घडा^{१२} मुगळांण पठांणां ।
 वरि अपछर^{१३} इम चढूं विवांणां^{१४} ।
 पह^{१५} जोधांण सुछळ^{१६} जस पावां^{१७} ।
 इम आंबेर^{१८} दुरंग अँजसावां^{१९} ॥ ५०६
 नरिंद सिखरहर^{२०} पूछि^{२१} निवाहर^{२२} ।
 नरुहरा पूछे^{२३} नर नाहर ।

१ ख. बोले । २ ग. गळ । ३ ख. ग. कलनारौ । ४ ग. सुण । ५ ख. बोले ।
 ६ ख. ग. अनारौ । ७ ख. हरोल । ८ ख. जावूं । ९ ग. सावळ । १० ग. हुवां ।
 ११ ग. पाड । १२ ख. ग. घणां । १३ ख. ग. अपछर वरि । १४ ग. विमांणां ।
 १५ ख. ग. पौही । १६ ख. ग. सुछळि । १७ ख. ग. पाऊं । १८ ख. आंबेर ।
 १९ ख. ग. अँजसाऊं । २० ग. हरि । २१ ख. वृष्णि । ग. वृष्णि । २२ ग. निवाहै ।
 २३ ख. ग. पूछे ।

५०४. ढाहूं—गिरा दूं, मार दूं । गज ढालां—हाथीके मस्तक ऊपर युद्धके समय धारण कराया जाने वाला उपकरण । काकौ—चाचा । लाल तणौ—लालसिंहका । कळि-नारौ—योद्धा, वीर । विसन—विसनसिंह ।

५०५. मधि—मध्यमें, बीचमें । बीजळ—बजाऊं—बादशाहके सवारीके हाथी पर तलवारका प्रहार कर्त्त । सर—तीर । सावळ—भाला विशेष । खँजर—एक प्रकारका छुरा या शस्त्र विशेष । पंजर—शरीर । अणपारां—अपार, असीम ।

५०६. पाडि—मार कर । घडा—सेना । वरि—वरण कर के । अपछर—अप्सरा । विवांणां—विमानों । सुछळ—श्रेष्ठ युद्ध । आंबेर—आमेर नगर । अँजसावां—गौरवान्वित कर्त्त ।

५०७. नरिंद—नरेंद्र, राजा । सिखर हर—शेखावत (?) । नरुहरा—नरुका शाखाके कछवाह ।

छाक बँवाळ^१ अपछरां^२ छायाल ।
 अरज कीध 'पदमै' अजरायल ॥ ५०७
 हरवळ वीच^३ हाकलूं हैमर ।
 पार करूं साबळ खळ पिंजर ।
 भळहळ वीज^४ रूप खग^५ भाडूं ।
 पिसण घणां जरदैत पछाडूं ॥ ५०८
 वणि होळिका^६ थंभ जुध वेरां^७ ।
 सिर पर बह^८ भेलूं^९ समसेरां ।
 धार विहार अणी घट^{१०} धौरंग ।
 चुख-चुख होय पडूं रिण^{११} चौरंग ॥ ५०९
 वरूं^{१२} अपछर^{१३} चढि कनक^{१४} विवांणां^{१५} ।
 इम^{१६} जाऊं^{१७} सुरिइंद^{१८} आथांणां ।
 भूलि^{१९} त्रहूं^{२०} इण विध^{२१} भाळाहळ ।
 मसलत^{२२} सभ^{२३} बोलियो^{२४} महाबळ ॥ ५१०
 इम भड उरड देखि छक ऊजळ^{२५} ।
 अति ग्रव पह^{२६} धारियो^{२७} 'अभैमल' ।

१ ख. बँवाल । २ ख. ग. अपछरां । ३ ख. वीचि । ४ ग. धाज । ५ ग. चष षग ।
 ६ ग. होळका । ७ ग. वेरां । ८ ख. बहौ । ग. बहौ । ९ ख. भेलौ । १० ग. वट ।
 ११ ख. ग. इम । १२ ख. ग. वरूं । १३ ख. अछर । १४ ग. क । १५ ख. ग.
 विमांणां । १६ ख. ग. यम । १७ ख. जाऊं । ग. जाऊ । १८ ख. सुरइंद । ग. सुरियंद ।
 १९ ख. ग. भूल । २० ख. ग. त्रहूं । २१ ख. ग. विधि । २२ ख. ग. मसलति ।
 २३ ख. ग. सभ । २४ ख. बोलीया । ग. बोलीया । २५ ख. ग. उजळ । २६ ख.
 पोहौ । ग. पोहौ । २७ ख. ग. धारीयो ।

५०७. छाक बँवाळ - महा जवरदस्त । अपछरां छायाल - अपसरा वरण करनेको प्रबल उत्सुक ।
 पदमै - पदमसिंह । अजरायल - जवरदस्त ।

५०८. हैमर - घोड़ा । पिंजर - शरीर । भाडूं - प्रहार करूं । पिसण - शत्रु ।

५०९. भेलूं - सहन करूं । विहार - विदीर्ण होकर । अणी - शस्त्रकी नोक या पैना भाग ।
 घट - शरीर । धौरंग - (?) । रिण चौरंग - युद्धस्थल, युद्ध-भूमि ।

५१०. कनक - स्वर्ण, सोना । सुरिइंद - इन्द्र । आथांणां - घर, भवन ।

५११. उरड - साहस ।

महाराज अभयसीधजीरो वरणण

कहि^१ जिण वार 'अभैमल' केहौ ।
जळधर बांध^२ लियौ^३ लंक जेहौ ॥ ५११
सुपह जाणि प्रगटचौ^४ तेरह सख ।
जग चख वसि तेरमौ जगाचख^५ ।
जोत^६ वदन उद्योत उजाळा ।
भळहळ नयण तेज मय भाळा^७ ॥ ५१२
सामंद जळाबोळ^८ वप सब्बळ^९ ।
हळाबोळ^{१०} जळ^{११} जोम हिलोहळ ।
वप तप इम दीसै उण वेळा ।
भाण बार^{१२} चक्र सुद्रसण भेळा^{१३} ॥ ५१३
उण^{१४} वाररौ^{१५} कमंध 'अजावत' ।
'अभौ'^{१६} जोम इसडै^{१७} दरसावत ।
जदि^{१८} द्रगपाळ^{१९} रंक करि जाणै ।
पाहडै^{२०} दीसै रती प्रमाणै ॥ ५१४
उरस छिबै रस वीर उछाहां ।
साभण काज दिली पतिसाहां ।

१ ख. ग. कहै । २ ख. बांधि । ग. बांधि । ३ ख. लीये । ग. लियै । ४ ख. ग. प्रगटौ ।
५ ख. जगचष । ग. जगचषि । ६ ख. ग. जोति । ७ ग. भीळां । ८ ख. जळाबोल ।
९ ख. सब्बल । १० ख. हळाबोल । ग. हलोपाळ । ११ ख. जम । ग. जग । १२ ख.
वार । १३ ख. वेला । १४ ख. ऊण । १५ ग. रो । १६ ख. अभौ । १७ ग.
इसडौ । १८ ख. ग. जगि । १९ ख. द्रिगपाल । २० ख. ग. पाहड ।

५११. जळधर - समुद्र । लंक - लंका ।

५१२. सख - शाखा । उद्योत - प्रकाश । भाळा - आग ।

५१३. जळाबोळ - जलपूर्ण । वप - शरीर । सब्बळ - बलवान । हळाबोळ - अपार,
बहुत, जोश । हिलोहळ - समुद्र । तप - तेज, कांति । भाण - भानु, सूर्य । बार -
वारह । चक्र सुद्रसण - सुदर्शन चक्र ।

५१४. द्रगपाळ - दिक्पाल । रती - रक्तिका, बहुत छोटे ।

५१५. साभण - सफल करनेको ।

तपत बाण^१ कीधौ हर^२ ताणिक ।
 वांमी - बंध एरसै वाणिक ॥ ५१५
 गुण कवि^३ इकठा^४ इक लग^५ गावै ।
 'अभौ' तदिन दीठां वणि आवै ।
 घण छक इसाहंत पौरिस^६ घण ।
 तोले खग बोलै^७ 'अजमल'तण ॥ ५१६
 महाराजा अभैसौंघजोरो जोस
 बूतौ^८ किसूं निबाव तणौ^९ बळ^{१०} ।
 दळ सभि मोसूं^{११} करै दमंगळ ।
 जूटै मूभहंत उण दिन जिम ।
 अठ पतिसाह ग्रहै^{१२} जैवैद इम ॥ ५१७
 आसंग^{१३} करै^{१४} खाग ऊछाजै^{१५} ।
 भिड़ियां^{१६} मुगळ भिड़ै^{१७} का^{१८} भाजै ।
 मारे^{१९} दळ सह^{२०} गिरद मिळाऊं ।
 लूटे^{२१} रखत अराबा लाऊं^{२२} ॥ ५१८
 असुर तणौ दळ बळ उखेलूं^{२३} ।
 भिसत काय जमद्वारां^{२४} भेलूं^{२५} ।

१ ख. बाण । २ ख. ग. हरि । ३ ग. कवि । ४ ख. ग. कठा । ५ ख. ग. एकलग ।
 ६ ख. पौरसि । ग. पारस । ७ ख. बोले । ग. बोले । ८ ख. ग. बूतौ । ९ ख. नबाव-
 तणौ । ग. नबावतणौ । १० ख. बल । ११ ग. मोसौ । १२ ख. ग्रहं । १३ ग. आसंग ।
 १४ ख. धरै । ग. धरे । १५ ख. उछाजै । १६ ख. भिड़ीया । १७ ख. ग. मरै ।
 १८ ख. ग. काय । १९ ग. मारे । २० ख. सोहौ । ग. सोहौ । २१ ख. लूटे । ग.
 लूटे । २२ ख. लाऊं । ग. लाउ । २३ ख. अखेलूं । २४ ख. ग. अमद्वारां । २५ ख.
 भेलूं । ग. भेलू ।

५१५. वांमी बंध - राठीड़ । एरसै - ऐसे । वाणिक - शोभा, कान्ति ।

५१६. इकलग - लगातार, निरन्तर । घण छक - समूह ।

५१७. बूतौ - शक्ति, बल, सामर्थ्य । दमंगळ - युद्ध । जूटै - भिड़े, टक्कर लें ।

५१८. आसंग - साहस, बल । ऊछाजै - उठावे । का - या, अथवा । रखत - धन-दौलत,
 द्रव्य । अराबा - तोपादि, युद्ध-उपकरण ।

५१९. उखेलूं - उन्मूलन करदूं । भिसत - भिस्त, स्वर्ग । भेलूं - मिला दूं, भेज दूं ।

औ कहि असुर न दिया^१ अराबां* ।
 औहिज^३ दिये^३ करां^४ तजि आबां ॥ ५१६
 वदै असुर गढ़ न दूँ^५ वरगां ।
 कूची दे आपरा करगां^६ ।
 असुर कहै मिलबा^७ नह^८ आवां ।
 पड़ै आप^९ समहौ निज पावां ॥ ५२०
 इण विध^{१०} त्रहुवै^{११} टेक उतारुं^{१२} ।
 असुर 'विलैद' तदि^{१३} जीव उबारुं ।
 एम असुर धमद्वार चलाऊं^{१४} ।
 जीप^{१५} गुजरधर अमल जमाऊं^{१६} ॥ ५२१
 इण विध^{१०} करुं कहै 'अभपत्ती'^{१७} ।
 सेवग^{१८} तौ^{१९} अंबका^{२०} सगत्ती^{२१} ।
 धणी वयण^{२२} संभळ^{२३} इम धारण ।
 दूणै जोम^{२४} चढै भड़ दारण ॥ ५२२

१ ग. दिउ ।

* यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है ।

२ ग. ओहिज । ३ ख. ग. दिये । ४ ख. ग. सुकरां । ५ ख. छूँ । ग. छो ।
 ६ ग. करगां । ७ ख. ग. मिलबा । ८ ग. नहि । ९ ख. सांमहौ । ग. सांमौ ।
 १० ख. ग. विधि । ११ ख. ग. त्रहुवै । १२ ख. ग. उतारौ । १३ ख. तदि । ग.
 तब । १४ ग. चलाउ । १५ ख. ग. जीपि । १६ ग. जमाउ । १७ ख. ग. विधि ।
 १८ ख. अभपत्ती । ग. अभपत्ति । १९ ग. सेवक । २० ख. तौ । ग. तो । २१ ख.
 अंबिका । ग. अंबका । २२ ख. सकती । ग. सकत्ती । २३ ख. ग. वचन । २४ ख.
 सांभलि । ग. सांभल । २५ ख. जोमि । ग. जोम ।

५१६. आबां - पाती ।

५२०. वरगां - शत्रुओं (?) । करगां - हाथोंसे । समहौ - सम्मुख ।

५२१. त्रहुवै - तीनों । टेक - प्रतिज्ञा । जीप - जीत कर, विजय कर ।

५२२. वयण - वचन ।

महाराजा अर्भलीधजीरो सेनामें भासण तथा सूरवीरो घरम समझाणो

सुभडां^१ पह^२ खत्रवाट सिखावै ।
 सूरों घरम कहै^३ समभावै ।
 ग्रंथ विनोद वीर^४ गुण गायक ।
 विसवामित्र^५ राज - रिख वायक ॥ ५२३
 अलप आव^६ जिणहंत^७ न होई ।
 कळजुग^८ मध^९ असमेध^{१०} न कोई^{११} ।
 वदियौ^{१२} सिख जोड़े^{१३} कर वायक ।
 नासत किम आसत^{१४} रिखनायक ॥ ५२४
 विसवामित्र^{१५} बोलियौ^{१६} मुनिवर ।
 उण^{१७} संदेह मेट^{१८} प्रत - उत्तर^{१९} ।
 सभि दुय^{२०} फौज^{२१} आहुडै^{२२} सूर ।
 पतिचै काम स्यामध्रम^{२३} पूरा ॥ ५२५
 धारे पग सांमा^{२४} सुणि त्रैब^{२५} धुनि ।
 पग पग जिग^{२६} असमेधतणो^{२७} पुनि ।
 सिख^{२८} वळि रिख पूछै बुधि^{२९} साजा ।
 तपसी सिध^{३०} सूरहंत राजा ॥ ५२६

१ ख. सुभडा । ग. सुभटां । २ ख. पोहो । ग. पोह । ३ ख. कहे । ४ ग. वीज ।
 ५ ख. ग. विसवामित्र । ६ ख. आवु । ७ ख. ग. तिणहंत । ८ ख. कलियुग । ग.
 कळिजुग । ९ ख. मभि । ग. मध्ये । १० ख. अस्वमेध । ग. अश्वमेध । ११ ग. कोई ।
 १२ ख. वदियो । ग. वदियो । १३ ख. जोडे । ग. जोडै । १४ ख. ग. आसति ।
 १५ ख. ग. विसवामित्र । १६ ख. बोलियो । ग. बोलियो । १७ ख. ऊण । १८ ख.
 ग. मेटण । १९ ख. ग. प्रतिउत्तरि । २० ख. दोय । ग. दोय । २१ ग. फौज ।
 २२ ग. आहुडै । २३ ग. सांमध्रम । २४ ख. सांमां । २५ ख. त्रैव । ग. त्रैवा । २६ ख.
 जिम । २७ असमेधतणो । २८ ख. सिधि । २९ ख. ग. बुधि । ३० ख. सिद्ध ।

५२३. सुभडां - योद्धाओं । खत्रवाट - क्षत्रियत्व । राज-रिख - राजपि । वायक - वाक्य,
 वचन ।

५२४. अलप आव - अल्पायु । असमेध - अश्वमेध । वदियो - कहा । नासत - नास्ति,
 अभाव । आसत - शक्ति, बल, सत्ता ।

५२५. प्रत-उत्तर - प्रत्युत्तर । आहुडै - भिड़ते हैं, युद्ध करते हैं ।

५२६. त्रैब - तगाड़ा । धुनि - ध्वनि, आवाज । जिग - यज्ञ । रिख - ऋषि ।

इम रिख^१ सिखहूं तांम उचारा ।
 धुर खत्र मारग खंडा धारा ।
 विधि सिख सुणि रिज कहै कलं^३ विध^३ ।
 सूर जोड़ न हुवै तपसी सिध ॥ ५२७
 अंग तपसी सुख कारण आपै ।
 तप पँच अगनि^५ धूमरा तापै ।
 भुजंग घोख साभै^६ तप भारी ।
 धारै मूनि^६ वरध^७ कर^८ धारी ॥ ५२८
 थाटेसरी^६ अकास मुनी^{१०} थट ।
 जळ सभि^{११} करै वधारै नख जट ।
 जोबन^{११} हूं^{१३} तरण^{१४} (णी) तज^{१५} जावै^{१६} ।
 छोडि अवास^{१०} गिरां मभि छावै ॥ ५२९
 सीत घांम दुख ब्रखा सहाये^{१८} ।
 अनि^{१६} तजि^{१०} कंदमूळ^{११} खणि^{१३} खाये^{१३} ।
 दुख अनेक इम तन मभि दाभै ।
 सुख आगिला^{२४} जनम कजि साभै ॥ ५३०

१ ख. रिणि । २ ख. ग. कहूं । ३ ख. ग. विधि । ४ ग. अग्नि । ५ ग. साजै ।
 ६ ख. ग. मुनि । ७ ख. उरध । ग. करध । ८ ग. क । ९ ख. थाटेसरी । ग. थाटेसरी ।
 १० ख. मूनि । ग. मुनि । ११ ग. सजि । १२ ख. जोबन । ग. जोबम । १३ ख. ग.
 हूं । १४ ख. ग. तरणि । १५ ख. ग. तजि । १६ ख. ग. जावै । १७ ग. आवास ।
 १८ ख. सहाए । ग. सहाए । १९ ख. ग. अन्न । २० ग. तज । २१ ग. मूलकंद । २२ ग.
 षनि । २३ ख. चाए । ग. चाए । २४ ग. आगिला ।

५२७. तांम — तब । जोड़ — समान, बराबर ।

५२८. धूमरा — अग्निका । भुजंग घोख — भुजाओं और शरीरको झुका कर (?) । साभै —
 सिद्ध करता है, सफल करता है ।

५२९. थाटेसरी — वैभवशाली । जट — जटा, केस । तरण — युवा स्त्री, तरुणी । छावै —
 निवास करे ।

५३०. सीत — सर्दी । घांम — उष्णता । ब्रखा — वर्षा । अनि — अन्न, अनाज । खणि —
 खोद कर । तन — शरीरमें । आगिला — आने वाला ।

कळहणि^१ सूर सांमरै^२ कारण^३ ।
 ज्वै^४ सुख^५ तजै पलक मभि आरण^६ ।
 सूरों तेज इसौ^७ दरसावै ।
 इण विध^८ तपसी जोड़ न आवै ॥ ५३१
 सिख सिध सूर कही समताई ।
 विध^९ सुणि सुजि सूरमां^{१०} वडाई ।
 भय मन^{११} काळ तजै नर भोगां ।
 जम नेमादि सभै अठजोगां^{१२} ॥ ५३२
 प्रथम करै आसण^{१३} पदमासण^{१४} ।
 प्रगट असट^{१५} त्रण^{१६} अवर प्रगासण^{१७} ।
 पूरक कुंभ करै^{१८} चक्र पूरै ।
 धारण अनिल^{१९} चढै^{२०} मग धूरै ॥ ५३३
 विखम क्रिया^{२१} विखमी साधन वक्र ।
 चौके^{२२} पंचभेदवे खट - चक्र ।

१ ख. कलहण । २. ख. कारण । ३ ख. वे । ग. वि । ४ ग. सुषे । ५ ख. आरणि ।
 ६ ग. यसो । ७ ख. ग. विधि । ८ ख. ग. विधि । ९ ख. ग. सूरिमां । १० ख. ग.
 मनि । ११ ग. अठजोगां । १२ ग. आसण । १३ ग. पदमासन । १४ ख. अस । ग.
 असो । १५ ग. तृण । १६ ख. ग. प्रकासन । १७ ख. करे । १८ ख. अनल ।
 १९ ख. ग. धरे । २० ग. क्रिया । २१ ख. चौके । ग. चौके ।

५३१. कळहणि—युद्धमें । सांमरै—स्वामीके । कारण—लिए । आरण—युद्ध ।
 ५३२. समताई—समानता । सूरमां—वीरों । वडाई—महानता । भोगां—भोग-विलास ।
 जम नेमादि—यमनियमादि । अठजोगां—आठ प्रकारके योग, अष्ट योग ।
 ५३३. पदमासण—योगका एक आसन विशेष, पद्मासन । प्रगासण—प्रकाशन । पूरक—
 प्राणायाम विधिके तीन भागोंमेंसे प्रथम भाग जिसमें स्वासको नाकमें खींच कर अंदर
 ले जाते हैं अथवा योग विधिसे नाकके दाहिने नथुनेको बंद कर के बायें नथुनेसे स्वासको
 भीतरकी ओर खींचना । कुंभ—प्राणायामका एक भाग जिसमें स्वास लेकर वायुको
 शरीरके भीतर रोक रखते हैं, यह क्रिया पूरकके बाद की जाती है; कुंभक । चक्र पूरै—
 (पूरा करें ?) । अनिल—वायु, हवा । मग—मार्ग । धूरै—ध्रुव अटल ।
 ५३४. विखम क्रिया—विषम क्रिया । खट चक्र—शरीरके भीतर कुंडलिनीके ऊपरके छः
 चक्र, यथा : १. आधार, २. स्वाधिष्ठान, ३. मणिपूर, ४. अनाहत, ५. विशुद्धि
 और, ६. प्रज्ञा ।

वंकीनाळि चढ़ावै वाटां^१ ।
 घण अटकै^२ हीरामण^३ घाटां ॥ ५३४
 तिल हिक^४ अमख कपाट सतूटे^५ ।
 छेदे तास गयण मग^६ छूटे ।
 भीणै^७ तैत^८ जिम नाद भणकै ।
 भमर गुंजारउ^९ सबद^{१०} भणकै ॥ ५३५
 असट^{११} पँखी पँख सहँसह^{१२} आवै ।
 दीपत परमहंस दरसावै ।
 सरसति जमना^{१३} गंग त्रवेणी ।
 त्रहुवै^{१४} उलटी^{१५} वद^{१६} त्रिवेणी^{१७} ॥ ५३६
 जगमग जोति उदोत^{१८} जगासै^{१९} ।
 पच्छिम^{२०} दिसा भाण परकासै^{२१} ।
 अंगुस्ट^{२२} जोति भूह^{२३} आथाणै ।
 स्वा^{२४} मूरत^{२५} दिव्य^{२६} नयणां आणै^{२७} ॥ ५३७

१ ख. ग. वाड़ां । २ ख. हटकै । ३ ख. हीरामणि । ४ ख. ग. हेक । ५ ख. सतूटे ।
 ग. सुतूटे । ६ ख. ग. मकि । ७ ख. ग. भीण । ८ ख. ग. तंति । ९ ख. ग. गुंजारव ।
 १० ख. ग. सबद । ११ ख. ग. अष्ट । १२ ख. सहसह । ग. सहस । १३ ख. जमनां ।
 ग. जमनां । १४ ख. ग. त्रिहुवै । १५ ग. उलटि । १६ ख. ग. वहै । १७ ग. त्रिवेणी ।
 १८ ग. उदोति । १९ ख. ग. उजासै । २० ख. ग. पछिम । २१ ख. परगासै । २२ ख.
 ग. अंगुष्ट । २३ ख. ग. भौह । २४ ख. ग. वा । २५ ख. ग. मूरति । २६ ख.
 ग. दिव । २७ ख. आवै ।

३३४. वंकीनाळि - शरीरकी एक नाड़ी, साधुओंकी बोलचालमें सुषुम्ना नाड़ी जो मध्यमें मानी गई है ।

५३५. हिक - एक । अमख - (?) । भीणै - अत्यन्त महीन । तैत - वाद्यका तार । भणकै - ध्वनिमान हो । गुंजारउ - गुंजन ।

५३६. असट पँखी - अष्ट पंखीड्युक्त । वि० वि० - राजस्थानीमें योग और तंत्रमें माने जाने वाले अष्टकमल जिन्हें हिन्दीमें षट्चक्र ही मानते हैं । राजस्थानीके अनुसार अष्टकमल या अष्टचक्र निम्नलिखित हैं—१. अनाहत, २. आज्ञाचक्र, ३. ब्रह्मरंध्र, ४. भंवरगुफा, ५. मणिपुर, ६. मूलाधार, ७. विशुद्ध, ८. स्वाधिष्ठान । सहँसह - सहस्रार । परम-हंस - वह सन्यासी या महात्मा जो ज्ञानकी परमावस्थाको पहुँच गया हो अर्थात् सच्चिदानंद में ही है इसका पूर्ण रूपसे जिसे अनुभव हो गया हो । त्रवेणी - हठ योगके अनुसार इडा, पिंगला और सुषुम्ना इन तीनों नाड़ियोंका संगम-स्थान ।

५३७. जगासै - प्रकाशमान करें । भाण - सुर्य ।

भमर-गुफा मभि रमै तजै भ्रम ।
 जीतै निद्रा त्रिकुटी संजम ।
 मन मोहणी नागणी मारै ।
 स्रवै तांम अम्रत^१ तत^२ सारै ॥ ५३८
 जदि त्रख^३ खुधा दहू^४ मिट^५ जावै^६ ।
 लगै समाधि रहै चित^७ लावै^८ ।
 प्रगा तंस अर अंस प्रगाता ।
 मद विण^९ इम घूमै^{१०} मदमाता ॥ ५३९
 जरा^{११} काळ कोयक^{१२} दिन जीतै* ।
 वय^{१३} औपर^{१४} वीतां दिन वीतै ।
 वरस लखि^{१५} इम जोम^{१६} वधाए ।
 जोगी तरै सुरग पुर^{१७} जाए^{१८} ॥ ५४०
 करै कळाप^{१९} जीववा कारण ।
 धारै कठण जुगत^{२०} इम धारण ।
 माया भपट^{२१} करै विच^{२२} माहै ।
 जुगति सको है^{२३} वीर^{२४} हि जाहै^{२५} ॥ ५४१

१. ख. ग. अमृत । २. ख. ग. तन । ३. ख. विष । ग. त्रिष । ४. ग. दुहू । ५. ख. ग. मिटि । ६. ख. ग. जाये । ७. ख. ग. लव । ८. ख. ग. लाये । ९. ख. विणि । १०. ख. घूमै । ११. ख. ज्वुरा । ग. जुरा । १२. ख. कोइक ।

* ग. प्रतिमें यह पंक्ति निम्न प्रकार है—

‘जुरा काळ कढ़ि कोइ न जीतै ।

१३. ख. वष । ग. वप । १४. ख. आषरि । ग. आपरि । १५. ख. ग. लष्य । १६. ख. जोग । १७. ग. पुरि । १८. ग. जाये । १९. ख. ग. कलाप । २०. ख. ग. जुगति । २१. ख. भप । ग. भपटि । २२. ख. विधि । ग. विचि । २३. ख. वं । ग. वं । २४. ख. ग. ठीर । २५. ख. ग. हिजाए ।

५३८. भमर-गुफा—योगके आठ कमलोंमेंसे एक । त्रिकुटी—दोनों भौंहोंके बीच कुछ ऊपरका स्थान । संजम—संयम । मन...मारै—मनको मोहित करने वाली माया-रूपी नागिनको मार डाले ।

५३९. त्रख—तृषा । खुधा—खुधा, भूल । मद—नशा ।

५४०. जरा—वृद्धावस्था । वय—आयु ।

५४१. कळाप—परिश्रम, यत्न ।

इसी^१ रीत^२ सिध^३ आदि^४ अनादा ।
जोगेसां लालच तन जादा ।
सूर जिकौ^५ पति छळ^६ घमसांणै ।
जीरण वसत्र^७ जिहीं^८ तन^९ जाणै ॥ ५४२
रचतां कठण जुगत^{१०} अंतराभै ।
लख वरसां स्रग^{११} जोगी लाभै ।
ओ^{१२} सुग^{१३} धणी सुछळ^{१४} भड़ आवै ।
पलक मांहि सूरौ स्रग^{१५} पावै ॥ ५४३
इम सूरौ पति घरम इरादा ।
जोगेसरां^{१६} सिधांहूं जादा ।
लड़ै नचिंत^{१७} लोह नह लागै ।
जिकौ^{१८} सूर तपसी सम जागै ॥ ५४४
अणभंग लागां लोहां आवै ।
सूर जिकौ^{१९} सिध पर^{२०} दरसावै^{२१} ।
सूर अनेक लोह बहि^{२२} साहै^{२३} ।
महा^{२४} अचेत पड़ै रिण^{२५} माहै^{२६} ॥ ५४५

१ ग. यसी । २ ख. ग. रीति । ३ ख. ग. सिधि । ४ ग. करे । ५ ख. तिको । ग. जिको । ६ ख. ग. छलि । ७ ख. ग. वस्त्र । ८ ख. जहीं । ग. जिही । ९ ग. तम । १० ख. ग. जुगति । ११ ख. शुग । ग. शुगि । १२ ख. ग. ओ । १३ ख. शुग । ग. शुगि । १४ ख. ग. सुछलि । १५ ख. ग. घग । १६ ख. जोगेस्वरां । ग. जोगेसुरां । १७ ख. निचंत । ग. निचिंत । १८ ख. ग. जिको । १९ ख. जिको । २० ख. ग. सम । २१ क. दसरावै । २२ ख. ग. बहि । २३ ख. ग. साहे । २४ ख. माहा । २५ ख. रण । २६ ख. माहे ।

५४२. अनादा—अनादिकालसे । जोगेसां—योगीशों । जादा—ज्यादा । छळ—लिए, निमित्त । घमसांणै—युद्धमें । जीरण—पुराना, जीर्ण । वसत्र—वस्त्र । जाणै—समझते हैं ।

५४३. धणी—स्वामी । सुछळ—निमित्त, लिए । सूरौ—शूरवीर । स्रग—स्वर्ग ।

५४४. जोगेसरां—योगीश्वरों । जिकौ—वह ।

५४५. अचेत—मूर्च्छित, संज्ञा-शून्य । पड़ै—बीरगतिको प्राप्त होता है । माहै—में ।

इमं रिणहूंत^१ अचेत उठावै ।
 कायम जीवतसिभ^२ कहावै ।
 भिड़ि^३ पति सुछलि पड़ै गज भारां ।
 साचै जीव^४ ऊजळा^५ सारां ॥ ५४६
 नर सुर अहि उण जोड़ न कोई ।
 सिध तपसी उण उरै सकोई ।
 सुरइंदहूंत^६ अधिक सरसावै^७ ।
 दईवतणौ^८ नायब दरसावै ॥ ५४७
 सिखहूँ^९ रिख इम कहै सकाजा ।
 रटै^{१०} भड़ाहूँता तिम राजा ।
 सूरान धरम सीख^{११} सँभळाहे^{१२} ।
 स्त्रीमुख हुकम कियौ खग साहे ॥ ५४८
 चित मो उछब^{१३} अणे^{१४} विधि^{१५} चाहूँ^{१६} ।
 वधि^{१७} वधि खाग स्त्रीहथां वाहूँ^{१८} ।
 देखूँ^{१९} हाथ आज दइवाणां ।
 किसड़ा एक^{२०} तुटौ^{२१} केवाणां ॥ ५४९

१ ख. ग. रणहूता । २ ख. ग. सिभु । ३ ख. ग. भिड़ । ४ ख. जीवि । ५ ग. उजळा ।
 ६ ग. सारं । ७ ख. सुरइंदहूंत । ग. सुरइंद । ८ ख. दरसावै । ९ ग. दईवतणो ।
 १० ग. सिखहूँ । ११ ख. रटे । १२ ग. साष । १३ ख. संभलाहे । १४ ख. ग. उछव ।
 १५ ग. एणि । ग. एण । १६ ख. ग. विधि । १७ ग. चाहौ । १८ ग. विधि विधि ।
 १९ ग. वाहां । २० ग. देखौ । २१ ख. इक । २२ ख. जूटो । ग. जूटो ।

५४६. कायम — अटल, दृढ़ । जीवतसिभ — युद्ध-भूमिमें शस्त्र-प्रहारोंसे घायल हो कर जीवित रहने वाला वीर । भिड़ि — युद्ध कर के । सुछलि — युद्धमें, लिए । गज भारां — हाथी-दल । सारां — तलवारों ।

५४७. उरै — इस ओर । सकोई — सब । सुरइंद — इन्द्रसे, सुरेन्द्रसे । सरसावै — प्रसन्न रहे । दईवतणौ — ईश्वरका ।

५४८. सिखहूँ — शिष्यसे । सँभळाहे — सुना कर । स्त्रीमुख — स्वयं । साहे — धारण कर के ।

५४९. वधि वधि — बढ़-बढ़ कर । वाहूँ — प्रहार करूँ । दइवाणां — वीरों । केवाणां — तलवारों ।

रवि रथ थांभि^१ विलोकै राजा ।
 सो^२ आपरा जोध सिरताजा ।
 दे दे पाव गजां दांतूसळ^३ ।
 बाधां^४ जेम चडां वीजूजळ ॥ ५५०
 ग्रहै^५ जँगी हवदां अवगाढां ।
 जवनां हियै^६ जडां जमदाढां ।
 धड़ मीरजां वंधि इम धांखां^७
 नट किलकिला^८ चौड^९ जिम नांखां ॥ ५५१
 कीरत^{१०} सारौ जगत कहेसी^{११} ।
 रवि^{१२} ससि जेतै नांम रहेसी^{१३} ।
 समर^{१४} सिरै चढ़ियां^{१५} सारीसौ ।
 आच कँकण केहौ आरीसौ ॥ ५५२
 भाळै^{१६} जोम पूर इण भत्ती ।
 पौ तारिया^{१७} भडां 'अभपत्ती' ।
 करि मुजरा बाहुडै करारा ।
 सिलह करण आया भड़ सारा ॥ ५५३

१ ग. थांभि । २ ख. तं । ग. तो । ३ ख. ग. दांतूसळ । ४ ग. बाधां । ५ ख. ग्रहे ।
 ६ ख. हिये । ७ ख. धाधां । ग. धोधां । ८ ग. किलाकिला । ९ ख. ग. चोट । १० ख.
 ग. कीरति । ११ ग. कहैसी । १२ ख. रसि । १३ ग. रहैसी । १४ ग. समरि ।
 १५ ख. ग. चढ़ीयो । १६ ख. ग. भाले । १७ ख. तारीयां । ग. तारीयां ।

५५० थांभि - रोक कर । विलोक - देखे । दांतूसळ - हाथीके बाहरका दांत । वीजूजळ -
 तलवार ।

५५१. हवदां - होदों । अवगाढां - वीरों । हिये - हृदय, वक्ष-स्थल । जडां - प्रहार करें ।
 मीरजां - यवनों । वंधि - संहार कर, वध कर ।

५५२. कीरत - कीर्ति । सारौ - सब । सारीसौ - समान । आच - हाथ । आरीसौ - दर्पण,
 आरसी ।

५५३. भाळै - देखता है । जोम - जोश । इण भत्ती - इस प्रकार । पौ - योद्धा । मुजरा -
 अभिवादन । बाहुडै - वापिस लौटे, मुड़े । सिलह - कवच, अस्त्र-शस्त्र ।

जोधारांरी तयारीरी वरणण

कवित्त^१—इम सलाह करि 'अभै', हुकम दीधा हुजदारां ।
 करौ वेग^२ ताकीद^३, जंग साजति जोधारां ।
 ठाह^४ ठाह ठहरिया^५, काम अति कामागारां^६ ।
 मँडिया^७ भड़ रूप में^८, ससत्र^९ खटतीस समारां ।
 ऊससै कमँध लागै उरसि^{१०}, राजा चढ़ियौ^{११} वीररस ।
 उण वार लोह मुंहगौ^{१२} हुवौ, सोनाही हूँता सरस ॥ ५५४

पमँग गजां पाखरां, जँगी हवदां^{१३} समरीजै ।
 चाठां^{१४} बगतर चढ़ै, कूंत अणियां^{१५} काढीजै ।
 भेरै वाढ़^{१६} भळाळ^{१७}, काळ^{१८} जमदढ़ केवांणां ।
 तूटै दमँग^{१९} अताळ, भाळ छूटै^{२०} खुरसांणां ।
 हमगीर करण जुध^{२१} हैमरां, धोम अराबां धरहरै ।
 चिलतह^{२२} छतीस^{२३} आवध^{२४} चुरस, कुळ छतीस राजस^{२५} करै ॥ ५५५

१ ख. ग. कवित्त छप्पे । २ ख. ग. वेगि । ३ ग. ताकीस । ४ ग. ठाम ठाम । ५ ख. ठहरिया । ६ ख. कामागारां । ग. कामांगारां । ७ ख. मंडीया । ८ ख. ग. में । ९ ख. ग. ससत्र । १० ख. उरस । ११ ख. चढ़ीयो । १२ ख. मुंगो । ग. मूहगो । १३ ख. गोदा । १४ ग. चाढ़ां । १५ ख. अणीयां । १६ ख. वाट । १७ ग. भळाहल । १८ ख. काल । १९ ग. दमंगल । २० ग. छूटै । २१ ख. ग. गज । २२ ख. चिलत । २३ ख. छहतीस । २४ ख. आवधा । २५ ख. ग. साजति ।

५५४. हुजदारां — (?) । वेग — शीघ्र, जल्दी । ठाह ठाह — स्थान-स्थान । कामा-गारां — काम करने वाले । ऊससै — जोशमें आते हैं । मुंहगौ — मंहंगा । सरस — बढ़ कर, श्रेष्ठ ।

५५५. पमँग — घोड़ा । पाखरां — घोड़ा या हाथीका कवच । कूंत — भाला । वाढ़ — तल-वारादि शस्त्रका पैना भाग । भळाळ — चमकयुक्त तेज । दमँग — अग्निकरण । अताळ — तेज । खुरसांणां — शस्त्र पैना करनेका औजार, शान । हैमरां — घोड़ों । धोम — अग्नि, धुआ । अराबां — तोपों । धरहरै — ध्वनि करती हैं । आवध — आयुध । चुरस — श्रेष्ठ ।

गँज सीसा घण गळै^१, भरै सच्चाळ^२ भरारां ।
 गंज पड़ै गोळियां^३, विखम गोळां विसतारां^४ ।
 नसतर धर नायकां, मिळै पायकां समेळा ।
 मेवा जेसळ मिळै, ऊर^५ रूपा^६ सम चेळा ।
 तूजियां^७ जेब^८ कीजै तई, धानंखी^९ चिल्ला^{१०} धरै ।
 इण भांत^{११} थटां 'अभमाल'रा, कुळ छतीस साजत करै ॥ ५५६

वळ काढ़िजै^{१२} गांसियां^{१३}, परां चाढ़िजै^{१४} पँखाळां ।
 वाढ़ अणी करि बलक^{१५}, आब^{१६} कीजै अणियाळा^{१७} ।
 बंध^{१८} बँदूकां^{१९} बंध^{२०}, धुप छौळां^{२१} जळधारां ।
 दियै^{२२} फूल दारुवां, रजिक^{२३} पाढ़िजै^{२४} अपारां ।
 छजि^{२५} फूल वाढ़^{२६} खँजरां छुरां, धारै अणियां^{२७} धजधरै^{२८} ।
 इण भांत^{२९} थटां^{३०} 'अभमाल'रा, कुळ छतीस साजत^{३१} करै ॥ ५५७

१ ख. लगै । २ ख. सवालां । ग. संचाळ । ३ ख. गोलीया । ४ ग. वसतारां ।
 ५ ख. तुरस । ग. चुरस । ६ ग. रूपी । ७ ख. तूजीया । ८ ख. जेब । ग. जेम ।
 ९ ख. धात्रकी । ग. धात्रकी । १० क. चित्ता । ११ ग. भांति । १२ ख. काढ़ै । ग.
 काटे । १३ ख. गांसियां । ग. गांसियां । १४ ख. चाढ़जै । ग. चाढ़जे । १५ ग.
 बळक । १६ ख. ग. ओप । १७ ग. अणियाळां । १८ ख. बंध । १९ ख. बँदूकां ।
 २० ख. बंध । ग. बंधे । २१ ग. छौळ । २२ ख. ग. दीयै । २३ ख. ग. रंजक ।
 २४ ख. पाडेजै । ग. पाडेजै । २५ ख. छलि । ग. छजि । २६ ग. वाट । २७ ख.
 अणियां । २८ ख. धजधरै । ग. भूभरै । २९ ख. भांति । ३० ग. थट । ३१ ख. ग.
 साजति ।

५५६. नसतर = नसतर — चीर-फाड़ करनेका औजार विशेष जिसका अगला भाग नुकीला होता है और प्रायः इसके दोनों ओर धार होती है । नायकां — मरहमपट्टी करने वाले । तूजियां — धनुष । धानंखी — धनुषधारी योद्धा । चिल्ला — धनुषकी प्रत्यंवा । थटां — दलों ।

५५७. वळ — छँठन । गांसियां — तीरका अग्र भाग । पँखाळां — पर वाले, सपंख, तीरों, बाणों । वाढ़ — शस्त्रका पैना भाग । बलक — (?) । आब — चमक । अणियाळां — भालों । फूल — तलवार (?) ।

हुनरबंधा^१ हुनर^२, घणी तिण दिन मुंहगाई^३ ।
 चत्र रुपियां^४ चौबधी^५, जँगम खुरताळ जड़ाई ।
 बगसै^६ मोलकबाण^७, करै तदि चाक कबाणों ।
 मोल^८ सेल^९ लै माप, सेल चाढ़े खुरसाणों* ।
 काढ़ै^{१०} जो वाढ़ पूणी कटै^{११}, भळळ दुअंगल भेरमां ।
 तेगरौ^{१२} मोल दीजै तरै, तेग समारै तेरमां^{१३} ॥ ५५८
 छौळ^{१४} अंब घण छौळ^{१५}, औळ सांमळां उतारै^{१६} ।
 कपड़ बंध गज कठां, रौळ^{१७} चाकां कर^{१८} धारै^{१९} ।
 धरै^{२०} मँभारां धूप, आपतापा^{२१} आतापां^{२२} ।
 थेलां^{२३} दारू^{२४} थँडे^{२५}, गजां^{२६} गोळां अणमापां ।
 कांबियां^{२७} रंग मोहरा^{२८} करै^{२९}, रंग बां^{३०} भैसां^{३१} रगति^{३२} ।
 जदि चाढ़ि मदां ज्वाळामुखी, सभै^{३३} तांम तोपां सगति^{३४} ॥ ५५९

१ ग. हुनरबंधा । २ ख. हुनर । ३ ख. मोहोगाई । ग. मोहौगाई । ४ ख. ग. रुपियां ।
 ५ ख. चौबधी । ग. गोबधी । ६ ख. ग. बोगसै । ७ ख. मोलकबाण । ग. मोलकमाण ।
 ८ ख. ग. मोल । ९ ग. सैल ।

*ग. प्रतिमें यद् पंक्ति निम्न प्रकार है—

‘मोल सैल लागा पमेल चाढ़े खुरसाणों ।’

१० ख. ग. काढ़ । ११ ख. कढ़े । १२ ख. तेगरो । १३ ख. तेगमां । १४ ख. छौलि ।
 ग. छौळि । १५ ख. छौलि । ग. छौळि । १६ ख. उतारे । १७ ख. ग. रोलि । १८ ख.
 ग. करि । १९ धारे । २० ख. धरे । २१ ग. आपतापा । २२ ग. आतापां । २३ ख.
 ग. थेला । २४ ख. ग. दारू । २५ क. थँडे । २६ ख. ग. मजां । २७ ख. कांबीया ।
 ग. कवियां । २८ ख. मोहरां । ग. मोहरां । २९ ख. करे । ३० ख. रंगेवकर । ग.
 रंगेवकर । ३१ ख. ग. भैसां । ३२ ख. रगति । ग. रकति । ३३ ख. ग. सभै ।
 ३४ ख. ग. सगति ।

५५८. जँगम — घोड़ा । करै...कबाणों — धनुषोंको तैयार करते हैं । पूणी — धुनी हुई लुईकी
 बत्ती जो चरखे पर कातनेके लिए तैयार की जाती है । भळळ — चमकदार ।
 दुअंगल — दो उंगलीके मापकी लंबाई या चौड़ाई ।

५५९. औळ सांमळां — श्याम रंगका मेल । कपड़...कठां — कपड़ा लिपेटे हुए काष्ठके बने
 गज । रौळ — घुमा कर । चाकां...धारै — तैयार करते हैं । आपतापा — सूर्य ।
 आतापां — अग्नि । थँडे — डाल कर, ठूस कर । कांबिकां रंग — लाल रंग । मोहरा —
 मुख । रंग...रगति — बकरों और भैसोंके खूनसे (तोपोंके मुख) रंग कर । मदां —
 हाथियों ।

कवित्त बौद्धी^१ : फौजरी कूच

वजै^२ ध्रीह^३ त्रंबाळ^३, पमँग साकति सभि^४ पक्खर^५ ।
 कसि^६ हौदां^६ कुंजरां, तेई^७ पाखरां बगत्तर^८ ।
 सिलह करै^९ कसि ससत्र^{१०}, तांम^{११} भड़ चढे^{१२} तुरंगां ।
 हाजर दरगह^{१३} हुवा, सूर लोयणां सुरंगां ।
 वट्टां हले वहीर, विखम पढटां अविघट^{१४} वट ।
 राजद्वार^{१५} आवियौ^{१६}, थटे 'बगतेस'^{१७} वीर थट ।
 करि वप सनाह आवध कसे, लिये^{१८} सकति जप जय^{१९} लभौ ।
 चक्रवती भपट^{२०} ह्वैतां^{२१} चमर^{२२}, आय गयँद चढियौ^{२३} अभौ^{२४} ॥ ५६०

छप्पे

हुय^{२५} मुजरौ^{२६} रावतां, होय हाका पड़-सदां ।
 हाक जसोलां^{२७} हुई^{२८}, निहस^{२९} त्रंबागळ^{३०} सदां^{३१} ।
 वोम गोम हुय^{३२} विकट, धोम चढि गरद अंधारां ।
 हालै^{३३} समँद हिलोळ, प्रचँड दळ वहल अपारां ।

१ ग. बोद्धी । २ ख. ग. वजै । ३ ख. त्रंबाळ । ग. तांबाळ । ४ ग. साजि । ५ ख. पाखर । ग. पाखरं । ६ ख. हौदां । ७ ग. तेई । ८ ख. ग. विहतर । ९ ख. करे । १० ख. ग. ससत्र । ११ ग. महा । १२ ग. चढे । १३ ख. ग. दरगह । १४ ख. ग. अविघट । १५ ख. राजद्वारि । १६ ख. आवियौ । १७ ख. ग. बगतेस । १८ ख. लिये । ग. लिये । १९ ख. जप । २० ग. भपटां । २१ ग. ह्वैतां । २२ ख. चमर । २३ ख. चढीयौ । २४ ग. अभौ । २५ ख. ग. होय । २६ ख. ग. मुजरा । २७ ख. जसोलां । २८ ख. ग. होय । २९ ख. निहसि । ग. निहंस । ३० ख. त्रंबागल । ग. त्रंबागल । ३१ ख. नदां । ग. नदां । ३२ ख. ग. होय । ३३ ख. ग. हाले ।

५६०. ध्रीह—नगाडेकी ध्वनि, आवाज । त्रंबाळ—नगाड़ा । पमँग—घोड़ा । साकति—जीन । पक्खर—घोड़ेका कवच । कुंजरां—हाथियों । बगत्तर—कवच । सिलह—कवच । तुरंगां—घोड़ों । लोयणां—नेत्र, लोचन । सुरंगां—लाल रक्त । बगतेस—महाराजा बखतसिंह । सनाह—कवच । आवध—आयुध, अस्त्र-शस्त्र । चक्रवती—चक्रवर्ती, राजा । भपट—भौका । अभौ—महाराजा अभयसिंह ।

५६१. मुजरौ—अभिवादन, सलाम । हाका—आवाज, हल्ला-गुल्ला । पड़-सदां—प्रति-ध्वनि । जसोलां—यश-गायकों । निहस—आवाज । त्रंबागळ—नगाड़ा । सदां—शब्द, ध्वनि । वोम—व्योम—आकाश । गोम—गौ, पृथ्वी, भूमि । धोम—धुंआ । गरद—धूलि । हिलोळ—तरंग, लहर ।

धर धुकै^१ सेस कूरम^२ धड़कि, काळीका^३ उछह^४ किया^५ ।
 मगरूर रूप अध्रियामणौ^६, अडालच^७ डेरा दिया^८ ॥ ५६१
 खबरदार खानरा, कहै^९ दळ रूप कराळां ।
 काळ रूप कटकियां^{१०}, चाळ बंधण^{११} कळिचाळां^{१२} ।
 रूप सचाळां भडां, संभळि^{१३} रवदाळां ।
 आसंग^{१४} नह आविया^{१५}, छोह भाला छड़ियालां^{१६} ।
 आवियो^{१७} चोट खग नह असुर, ओट अराबां^{१८} आवियो^{१९} ।
 नवकोट थाट देखे निडर, कोट 'विलँद' साजत^{२०} कियो^{२१} ॥ ५६२

तेरविलँदरी तैयारी

दुय^{२२} दुय सहस^{२३} बँदूक, सहति^{२४} बगसरां^{२५} सकाजां ।
 तै दस दस भरि तोप, डहै^{२६} बारह दरवाजां^{२७} ।
 भुरज भुरज आरबा, दुगम जुथ^{२८} गोळंदाजां ।
 मतिवाळां मेलिया^{२९}, काँगुर^{३०} काँगुरे^{३१} सकाजां ।
 फिरणिया^{३२} चहूँ तरफां फिरै, काळ रूप अरवाचकां^{३३} ।
 काढिया^{३४} खगां किलकां^{३५} करे^{३६}, डका ढोल तबलां डकां ॥ ५६३

१ ख. धुके । २ ख. कुरम । ३ ख. ग. काळिका । ४ ख. ग. उछव । ५ ख. कीया ।
 ६ ख. ग. अध्रियामणौ । ७ क. अडालच । ८ ख. दीया । ९ ख. ग. कहै । १० ख.
 दलकीया । ग. दळकिया । ११ ख. बांधण । १२ ख. कलिचाळां । ग. कळिचाळां ।
 १३ ख. ग. सांभळि । १४ ग. असंग । १५ ख. आवीया । १६ ख. छड़ीयालां । १७ ख.
 आवीयो । ग. आवियो । १८ ग. आराबां । १९ ख. आवीयो । ग. आवियो । २० ख.
 ग. साजति । २१ ख. ग. कीयो । २२ ख. ग. दोप दोप । २३ ख. ग. सहस । २४ ख.
 सांहथि । ग. सहथि । २५ ख. ग. बगसरां । २६ ख. ग. डहै । २७ ग. दरवाजां ।
 २८ ग. जूथ । २९ ख. ग. मेलीया । ३० ग. काँगुर । ३१ ग. काँगुरे । ३२ ख.
 ग. फिरणीयां । ३३ ख. अरवाचकां । ग. अरवाचका । ३४ ख. ग. काढीया । ३५ ख.
 ग. किलकै । ३६ ख. ग. करे ।

५६१. मगरूर - गर्वोन्मत्त । अध्रियामणौ - भयावह, जबरदस्त । (अडालच - एक दूसरेसे
 अड़े हुए, समीप ?) ।

५६२. सचाळां - तेजस्वियों । आसंग - साहस, शक्ति । छड़ियालां - भालों । नवकोट -
 मारवाड़ । थाट - सेता, दल । साजत - तैयार ।

५६३. बगसरां - यवनों । डहै - ठहरे, मुकरँर हुए । भुरज - बुज । आरबा - तोप ।
 जुथ - यूथ, समूह । फिरणिया - फिरने वाले, घूमने वाले, एक प्रकारका शस्त्र (?) ।
 किलकां - कोलाहल । डका - ढोल या नगाड़ेको बजानेका डंका ।

डफ खंजरी दुतार, विखम रोहिला वजावै ।
 पसतौ^१ अरबी^२ पाड़^३, गजल कड़खा बह^४ गावै ।
 किवळा सिजदा करै, किलम उच्चरै कुरांणी^५ ।
 जांणि प्रेत जागिया^६, महारिण^७ काळ मसांणी^८ ।
 जुड़ि मीरखान आया जदिन^९, मुगळ भीड़^{१०} दरगह मिली ।
 कळिचाळ सिरै^{११} दरबार करि, बैठौ^{१२} 'विलंद' महाबली^{१३} ॥ ५६४

दवावैत

जिस बखत सिर-विलंदखां^{१४} बहादुर^{१५} ममरजुलमुलक^{१६} पीरोज-
 जंग^{१७} मीरजादू खानजादूके^{१८} बीच^{१९} कैसा^{२०} दरसावै । लंकाकी छभा
 राकसूके^{२१} बीच^{२२} दसकंध सा निजर^{२३} आवै^{२४} । तिस बखत परवर-
 दिगारकू सिजदा करि महमंद^{२५} मरतुजाअलीकौ^{२६} याद करि दाहिणै^{२७}
 दसत सेती समसेर तोल हुकम फुरमाया । जो^{२८} यारो^{२९} दिल्लीके^{३०}

१ ख. पसतो । ग. पिसतो । २ ख. अरबी । ग. आरबी । ३ ख. ग. पाड़ । ४ ख. बौहो ।
 ग. बौहो । ५ ख. कुसां । ग. कुरांणी । ६ ख. जागीया । ७ ख. ग. महारण ।
 ८ ख. मसांणी । ९ ख. जदिन । १० ख. भीड़ । ११ ख. सरो । ग. सरां । १२ ख.
 बैठौ । ग. बैठो । १३ ख. महाबली । ग. महाबला । १४ ख. सिरिविलंदखां । १५ ख.
 बाहादुर । ग. बाहादर । १६ ख. ममीरजुलमुलक । ग. ममारजुलमुलक । १७ ग. पीरोज-
 जंग । १८ ख. ग. जादूखान । १९ ख. बीच । ग. विचि । २० ग. कैसा । २१ ख.
 राकसूके । २२ ख. बीच । ग. बीच । २३ ख. ग. निजर । २४ ख. आवै । २५ ख.
 महमुद । २६ ख. मुरतजअलीको । ग. मुरतजाअलीकौ । घ. मुरतजाअलीकू । २७ ख.
 दाहिणे । ग. दाहणै । २८ ग. जो । २९ ग. यारो । ३० ख. ग. दिल्लीके ।

५६४. डफ — देशी वाद्य विशेष । खंजरी — वाद्य विशेष । दुतार — दो तारका वाद्य विशेष ।
 रोहिला — एक मुसलमान कौम । पसतौ — पश्तो साठे तीन मात्राका ताल जिसमें
 दो आघात होते हैं, इसके बोल निम्न प्रकार हैं—ति, तक, धि, धा, गे ।
 अरबी — वाद्ययंत्र, तासा । पाड़ — मिला कर ? । कड़खा — राजस्थानी छंद विशेष जो
 प्रायः युद्धके समय ही पढ़ा जाता है । किवळा — (किवला, सम्माननीय ?) ।
 जांणि — मानों । मसांणी — श्मशान भूमिका ।

५६५. ममरजुलमुलक = मुबारिजुलमुलक — सर बुलंदखांका खिताब । पीरोजजंग — (?) ।
 मीरजादू खानजादूके — अमीरों और खानोंके पुत्रोंके बीच । छभा — सभा । दसकंध —
 रावण । परवरदिगारकू = पर्वरदिगारको — पालन-पोषण करने वालेको, ईश्वरका ।
 सिजदा — ईश्वरके लिए सर झुकाना, नमाजमें जमीन पर सर रखना, प्रणाम,
 सिजदः । मरतुजाअलीकौ — हजरतअलीकी एक उपाधि, हज्जतअली । दसत — हाथ ।

पातिसाहके^१ हुकम सेती मुभ^२ पर गुस्सा^३ कर^४ हिदुस्थानका^५ पाति-
साह^६ जंग करणैकू^७ आया सो^८ जंग करणैका^९ मनसुभा^{१०} ठहरावौ ।
जिसी^{११} जिसीकी अकल^{१२} हिम्मतके^{१३} दरम्यांन आवै तिसी वजै
जवांसेती^{१४} कहिकै दिखावौ । इस हुकम पर आदाब वजाय^{१५} खड़े सो
सिपा^{१६} कैसै । उरसके खंभ सेरूके^{१७} भुंड^{१८} जैसे^{१९} । कळूके^{२०}
बाराह दिल्लूके^{२१} उमंदा । गल्ले^{२२} गुलाबूके पियाक पुलाबूके खुरंदा^{२३} ।
सूरतके^{२४} भयाणख जमराणूके जोस । जंगूके जालम तीरमदाजूके
सिरपोस । रूहके सुरख चमरूके^{२५} मंजार । रोसके भाळाहळ^{२६} आतसके
अंगार । खावंदके^{२७} हुकमपर जमसेती जंग करै । निमखकी^{२८}
सरीयत^{२९} पर ज्यांन कुरवांन करै । हूर वर^{३०} वरणैकी उछाह^{३१}
आणै । मरणा^{३२} अरि^{३३} मारणा खेल करि^{३४} जाणै । आपणै^{३५}
खायंदकी^{३६} फौजूके^{३७} लोहैकी^{३८} ढाल । सेरूकी सावजू चित्रूकी^{३९}
मिसाल । जमकेसे फिरसते^{४०} लगे^{४१} असमांण जिनूके^{४२} देखैसे^{४३}

१ ख. ग. पातसाहके । २ ख. ग. मुज । ३ ख. ग. गुसा । ४ ग. करि । ५ ख. हिदु-
स्थानका । ग. हिंदुस्थानका । ६ ख. पातसाह । ७ ख. ग. करणेको । ८ ग. सु ।
९ ख. ग. करणेका । १० ख. मनसुबा । ग. मनसुबा । ११ ग. जिस जिसकी । १२ ग.
अकलि । १३ ख. हिम्मतिके । ग. हीम्मति । १४ ख. ग. जवां । १५ ख. ग. वजाय-
कर । १६ ख. ग. सिपाह । १७ ख. सेरूके । १८ ग. भुंड । १९ ख. जैसे ।
२० ख. कल्लूके । ग. कलूके । २१ ग. दिल्लूके । २२ ग. गल्लू । २३ ख. पियाक ।
२४ ख. सूरतके । ग. सूरनके । २५ ख. चम्मूके । ग. चष्युके । २६ ग. भाळाहळ ।
२७ क. खावंदके । ख. घांइवके । २८ ग. निमकाकि । २९ ख. ग. सरियत । ३० ख.
ग. प्रतियोंमें यह शब्द नहीं है । ३१ ख. होस । ग. हांस । ३२ ग. मरण । ३३ ख.
अर । ग. अरु । ३४ ख. कर । ३५ ख. आपणे । ग. अपनै । ३६ ख. ग. खाइवकी ।
३७ ग. फौज्जोके । ३८ ख. लोहेकी । ग. लोहकी । ३९ ख. ग. चित्तूकी । ४० ग.
फिरसते । ४१ ख. लगे । ग. लगे । ४२ ख. जिनूके । ग. जिहूके । ४३ ख. देखैते ।

५६५. मनसुभा - विचार । कळूके - कलियुगके । दिल्लूके - दिलके, हृदयके । गल्ले
गुलाबूके - गुलाबके फूलोंकी शाराबके । पियाक - पीने वाला । पुलाबूके - व्यंजन
जो मांसको चावलके साथ पकानेसे बनता है । खुरंदा - खाने वाले । भयाणख -
भयावने, भयानक । जमराणूके - यमराजके । सिरपोस - यहाँ श्रेष्ठ अर्थ ठीक
बैठता है । रूहके - कान्ति, रुख । भाळाहळ - तेजस्वी । आतसके - अग्निके, आगके ।
खावंदके - सालिकके । सरीयत - पालन, नियम । सावजू - सिंहके बच्चे । चित्रूकी -
चीतोंकी । जमकेसे फिरसते - यमराजके दूत जैसे ।

सूके^१ मदमसत. फीलूके^२ डाण । फुरकान^३ इजील तौरतें^४ जंबूनके^५ निडाह मान । ऐसे सबूका सिरपोस सईद^६ आबद-अलीखान^७ सो आबद-अलीखान^८ कैसा । दिलावरखानका^९ फरजन दिलावरखान^{१०} जैसा । जिन^{११} दिलावरखाननै कल्हके रोज दक्षनके^{१२} दरम्यांन निजामन^{१३}-मुलकसेती जंग किया^{१४} । च्यार हजार दुसमनकूं^{१५} मार समसेरुंकी^{१६} धारसेती निमककी^{१७} सरियतपर^{१८} सिर दिया । अपनी^{१९} मनीके^{२०} आगे^{२१} आरूंककी^{२२} खातर न आणै । वाहरेकी समसेरकूं सब आलम जाणै । जैसाही^{२३} आप जैसा जमाल अलीखा^{२४} भाई । दोनूं^{२५} सइयदूने^{२६} तिस बखत अरज गुजराई । नबाव^{२७} फील असवार होय नजरूके^{२८} वीच^{२९} धरै । हरवलके^{३०} पेस होय हम-जंग जरै^{३१} । आगैही^{३२} वडे^{३३} महाराज^{३४} 'अजमाल'सैं^{३५} संभरके^{३६} खेत हमारै^{३७} विरादर हसनखां गिरदखां हुसैनखानें जंग कर^{३८} सच्चै^{३९} दिलसैं^{४०} सिर दिया^{४१} । जिन्हुनके^{४२} मरणसैं^{४३} तारोफके सवाल सब आलम

१ ग. सूके । २ ख. कीलूके । ग. फीलूके । ३ ग. फुरकान्ह । ४ ख. तौरल । ग. तौरत । ५ ख. ग. जंबूलके । ६ ख. सईयद । ग. सइय । ७ ख. ग. आबदअलीखा । ८ ख. आबदलीषान । ग. आबदलार्षा । ९ ख. ग. दिलावरषांका । १० ख. ग. दिलावरषा । ११ ख. ग. जिस । १२ ख. दषिणके । ग. दषिणके । १३ ख. निनामन । १४ ख. ग. कीया । १५ ख. दुसमनूको । ग. दुसमनोको । १६ ख. ग. समसेरांकी । १७ ख. ग. नमककी । १८ ख. ग. सरतपर । १९ ख. अपनी । ग. अपणै । २० ग. मनाकै । २१ ख. आगे । ग. अगे । २२ ख. ओरकू । ग. ओरकी । २३ ख. जैसाई । ग. जैसाइ । २४ ख. इलीषां । २५ ख. दोयू । ग. दोयू । २६ ख. सईयूदूजै । ग. सइयूतूदूने । २७ ख. नबाव । २८ ग. निजरूको । २९ ख. विचि । ग. विच । ३० ख. ग. हरवलकै । ३१ ख. ग. करै । ३२ ख. ग. आगेभी । ३३ ग. वडा । ३४ ख. ग. माहाराजा । ३५ ख. अज-मालसैं । ग. अजमलसे । ३६ ख. सांभरकै । ३७ ख. हमारे । ३८ ख. करि । ३९ ग. सच्चै । ४० ख. दिलसैं । ग. दिलसे । ४१ ख. दीया । ४२ ख. जिन्हूके । ग. तिन्हके । ४३ ख. मरणसैं ।

५६५. मदमसत — मदमस्त, मदोन्मत्त । फीलूके — हाथियोंके । डाण — हाथीकी गर्दनका मद । फुरकान — मुसलमानोंका धर्म-ग्रंथ, फुरकान, कुर्आन । इजील — ईसाइयोंकी मुख्य धार्मिक पुस्तक, ईजील । तौरतें — वह आस्मानो-ग्रंथ जो हजरत मूसा पर उतरा था, तौरात । जंबूनके-जबूनके, नीचके । फरजन — संतान । सरियत पर — शरयित पर । आलम — संसार, दुनिया । संभर — सांभर नामक स्थान । विरादर — आतू, भाई, बरादर ।

परि^१ जिया^२ । उसी^३ उजाह^४ जाय असीलूकी^५ चोट खेलै^६ । सिर्रो-
हियांकी^७ चोट^८ भेलै^९ । पुरजां^{१०} पुरजे होय^{११} जावै भिसतकू^{१२}
चलि^{१३} हूरके हाथूसे लेवै नूरके प्याले इस वजेका^{१४} ज्वाब^{१५} आवध-
अलीखां^{१६} जमालअलीखानै दिया^{१७} । तिस पछै तरीयनखां पठाणनै
इल तमास किया^{१८} । राठोड़ू पठाणूके जंग आगूसै लेखा जिसी बखत
मुकालबा^{१९} हुवा तिसी बखत आफताफनै असिपकडि^{२०} तमासा देखा फेर
हमारै माहाराजासै^{२१} वैर आगे यनूके^{२२} वडे^{२३} महाराज^{२४} गजसिंघ
जहंगीरके^{२५} हरवळ होय हमारे तरीयन^{२६} समसेरखां^{२७} बहलोलखां^{२८}
केताई^{२९} मारिकरि^{३०} फतै पाई । वहै^{३१} वैर लेणै यहै सायत
आई जिससेतो जनेबूं मुरगबूकी भाट खासूं^{३२} भंडूंके वीच^{३३} खेलैगे^{३४} ।
सिरोही^{३५} जोधाणकी समसेरूके घाव सिर ऊपर^{३६} भेलैगे^{३७} ।
अंराकूके^{३८} छाकसै छाके जमो पर जावैगे^{३९} हूरूकूं^{४०} व्याहि करि

१ ख. ग. पर । २ ख. ग. जीया । ३ ख. ग. उसही । ४ ख. जहंस । ग. उजह ।
५ ख. अस्टीलूकी । ग. असीलोका । ६ ख. खेलै । ७ ख. सीरोहीयूकी । ग. सीरोहियोका ।
८ ग. चौट । ९ ग. जेलै । १० ख. पुरजै । ग. पुरजां । ११ ख. हुइ । १२ ग.
जिससकूं । १३ ख. चाले । ग. वाके प्याले । १४ ग. वजेका । १५ ख. ज्वाव । १६ ख.
ग. आवधअली । १७ ख. ग. दीया । १८ ख. ग. कीया । १९ ख. मुकाबिला । ग.
मुकालबा । २० ख. असपकसि । ग. असपकसित । २१ ख. माहाराजूसै । ग. माहाराजौसै ।
२२ ख. ग. इहूके । २३ ख. प्रतिमें यह शब्द नहीं है । २४ ख. माराजा । ग. माहाराजा ।
२५ ख. जांहांगिरके । ग. जांहांगीरके । २६ ख. तरीयत । २७ ग. पठाण समसेरखां ।
२८ ख. ग. बहलोल । २९ ग. कैताई । ३० ख. ग. मारीकरि । ३१ ख. ग. वह ।
३२ ख. ग. खासे । ३३ ख. ग. वीचि । ३४ ख. खेलैगे । ग. खेलेंगे । ३५ ख. ग. सीरोही ।
३६ ग. ऊपर । ३७ ख. भेलैगे । ग. भैलैगै । ३८ ख. ग. एराकूकी । ३९ ख. जावैगे ।
ग. जावैगै । ४० ग. हूरूका ।

५६५. उजाह—वजह, कारण । असीलूकी—बढ़िया लोहके अस्त्रकी । सिर्रोहियांकी—
सिरोहीकी बनी तलवारोंकी । भेलै—सहन करते हैं । भिसतकू—बहिश्तको, स्वर्गको,
हूरके—यवनोंको वीर गति प्राप्त होने पर स्वर्गमें मिलने वाली अप्सराके । नूरके—
चहरेकी आबोताबके, मुखछटाके । मुकालबा—मुकाबिला, भिड़ंत । आफताफनै—
सूर्यने । हरवळ—सेनाके आगे रहने वाला, हरावल । तरीयन—सबसे अधिक ।
यहै—यह । सायत—समय, अवसर । जनेबूं—तलवारों । मुरगाबूकी—एक
प्रकारकी तलवार (?) । भाट—टक्कर । समसेरूके—तलवारोंके । अंराकूके—
तेज शराबके । छाकसै—शराब पीनेके प्यालोंसे । छाके—छके हुए, मस्त ।

भिसतमें^१ आवेंगे^२ । तरीयनखां^३ अैसे बोले^४ तिन^५ वार । कायमखां^६
सैद सेख बोले अलीहार^७ । तीन पौहखंका आफताफ^८ राठौड़^९ पर
रौसनाई^{१०} ठहरावें । चौथं पहरकी^{११} रौसनाई^{१२} सब आलमपर^{१३} आवें ।
अैसे^{१४} राठौड़^{१५} के^{१६} पातिसाह^{१७} जिन्हूंसेती^{१८} समसेखंका जंग करें ।
फीलूके^{१९} विचमै^{२०} फीलूकूं धरें । सेलूकूं पहरि समसेखूं^{२१} चलावें ।
निमककी^{२२} सरीयत^{२३} सो^{२४} पाक^{२५} करि दिखलावें । जीवै तौ लेवें
सितरहजार गुजरातका राज । मरै तौ हूर^{२६} भिस्तका समाज^{२७} ।
इस वजसैं बोले^{२८} च्यार हजार^{२९} । सौ^{३०} पालकी-नसोन^{३१} आठ
फीलूके^{३२} असवार । जमराजकासा^{३३} दरबार^{३४} जोम सैंग^{३५} हम
हताहै^{३६} अमराऊं^{३७} उमीखूं^{३८} आस्रीवाद^{३९} कहता है तिस बखत
निबाब^{४०} उमराऊंसे^{४१} कह्या । जैसा^{४२} था भरोसा^{४३} तैसा^{४४} तुमनै^{४५}
ज्वाब दिया^{४६} । जंगका तजबीर^{४७} ऐ भी मनजूर^{४८} किया^{४९} । पै-गढ़का
सामान^{५०} तोपूसै^{५१} भाड़ि । तिस पीछे करेंगे^{५२} चौड़ेकी^{५३}
राड़ि ॥ ५६५

१ ख. ग. भिस्तमै । २ ख. आवेंगे । ग. आवेंगे । ३ ख. बोले । ४ ख. ग. तिस । ५ ख.
अलिहार । ग. अलिआर । ६ ख. आफताप । ७ ख. रौसनाई । ग. हौसनाइ । ८ ख.
पोहोरकी । ग. पोहरकी । ९ ख. रौसनाई । १० ग. आलमपर । ११ ग. अैसे । १२ ग.
राठौड़के । १३ ग. पातिसाह । १४ ख. जिन्हूंसेती । ग. जहू । १५ ग. फीलूके ।
१६ ख. विचमै । ग. विचिमै । १७ ग. समसेखूं । १८ ख. ग. निमककी । १९ ख. ग.
सरीयत । २० ग. सो । २१ ख. प । ग. पकी । २२ ग. हूर । २३ ग. समाजा ।
२४ ग. बोले । २५ ग. हजार । २६ ख. ग. सो । २७ ग. पालकीनसोन । २८ ग.
फीलूके । २९ ख. जमराका । ग. जमराजकासा । ३० ख. ग. दरबार । ३१ ख. ग.
सैंग । ३२ ग. ताहै । ३३ ख. उमरावू । ग. उमराऊं । ३४ ख. उमीखूकी । ३५ ख.
वाद । ग. आश्रीवाद । ३६ ख. ग. नबाब । ३७ ग. उमराऊंसै । ३८ ग. जैसा । ३९ ग.
भरोसै । ४० ग. तिसा । ४१ ख. नमूनै । ग. तमैनि । ४२ ख. ग. दीया । ४३ ख. ग.
तजबीर । ४४ ग. मंजूर । ४५ ख. कीया । ४६ ग. समान । ४७ ख. तोपूसै । ग.
तोपोसै । ४८ ख. करेंगे । ग. करेंगे । ४९ ग. चौड़ीकी ।

३६५. रौसनाई — प्रकाश । भिस्तका — बहिस्तका, स्वर्गका । चौड़ेकी — खुले मैदानकी ।
राड़ि — युद्ध ।

महाराजा अभयसिंघजीरी सरबुलंदरं प्रत सवेस

कवित्त—कुंडलियो

वेळा^१ उण खत 'विलेंदनु', इम मेल्ले 'अभमाल' ।
 हुं^२ आयौ^३ लड़जे हमै, धरि मुहरै^४ गज^५ ढाल ।
 धरि मुहरै^६ गज ढाल, आय चौडै पति-ईरां ।
 कोट^७ ओट^८ मति^९ तके^{१०}, अडर लड़ि रीत^{११} अमीरां ।
 हुं आयौ तोहूंत, घणूं जूटण खग घाए^{१२} ।
 कदम^{१३} अडग^{१४} कीजिये^{१५}, जोम^{१६} छाडे^{१७} मति जाए^{१८} ।
 इम^{१९} वाच^{२०} ज्वाब 'अभमाल'रा, धरि ब्रजागि बळ^{२१} धांखियो^{२२} ।
 घत^{२३} जेम^{२४} आग^{२५} सींची घणूं^{२६}, उरस लाग^{२७} उपडांखिपौ^{२८} ॥ ५६६

सरबुलंदरौ जबाब

नीसांणी

लिख^{२९} भेजे^{३०} खतका जबाब^{३१}, करि रीस अकारी^{३२} ।
 मै दावा 'महमंदसू^{३३}, कीया सकरारी ।
 मै पग छुंडू^{३४} किस वजै, हुय^{३५} हास हमारी ।
 तेग बँधी^{३६} मै तखतसै^{३७}, काची^{३८} नह धारी ॥ ५६७

१ ख. ग. वेला । २ ग. हु । ३ ग. आया । ४ ख. मोहोरे । ग. मोहोरै । ५ ग. गय ।
 ६ ख. ग. मोहोरै । ७ ख. कोटि । ८ ख. ओटि । ९ ख. मत । १० ख. तके । ग. करै ।
 ११ ख. ग. रीति । १२ ग. घाए । १३ ग. कदम । १४ ख. ग. अडग । १५ ख.
 कीजिए । ग. कीजिये । १६ ख. ग. जंग । १७ ग. छाडे । १८ ग. जाए । १९ ख.
 एम । २० ख. ग. वाचि । २१ ख. वल । ग. बलि । २२ ख. धाषीयो । ग. धषीयो ।
 २३ ख. ग. घुत । २४ ख. जाणि । ग. जाणै । २५ ख. ग. आगि । २६ ख. ग. घणे ।
 २७ ख. ग. लागि । २८ ख. उपडाळीयो । ग. उपडाषीयो । २९ ख. ग. लिखि । ३० ख.
 भे । ३१ ख. ग. जबाब । ३२ ख. करी । ३३ ख. महमंदसौ । ग. महमंदसौ । ३४ ख.
 छाडू । ग. छाडू । ३५ ख. ग. होय । ३६ ख. बांधी । ग. बंधी । ३७ ग. तखतसौ ।
 ३८ ग. काची ।

५६६. मेल्ले — भेजे । अभमाल — महाराजा अभयसिंह । हुं — मैं । हमै — अब । मुहरै —
 आगे । पति-ईरां — ईरानियोंका स्वामी । जूटण — भिड़नेको । जोम — जोश,
 उमंग । वाच — वचन । ज्वाब — जवाब । धांखियो — प्रज्वलित हुआ (?) । उप-
 डांखियो — जोशीला, वीर ।

५६७. अकारी — तेज । सकरारी — प्रतिज्ञापूर्ण । वजै — कारण । काची — कच्ची ।

अेती लिखी^१ अजाजती^२, सो भली विचारी ।
 इहां^३ ढील कुछ भी नहीं, यां^४ है सब^५ तयारी^६ ।
 मुभकुं^७ लड़णैका^८ मगज^९, तिस^{१०} परि^{११} इकतारी ।
 सभणै जंग आवौ सताब^{१२}, धर छक छत्रधारी ॥ ५६८
 मैं नांही चीनी^{१३} फरौस^{१४}, मै हफत-हजारी^{१५} ।

..... ॥ ५६९

महाराजा अभैसिधरौ वलांण

छव पद्वरी

सुणि खत जबाब^{१६} इम 'अभैसाह'^{१७} ।
 सूरमां^{१८} मौड़^{१९} पहरै^{२०} सनाह^{२१} ।
 ओपियै^{२२} तेज भळहळ नरिंद^{२३} ।
 सुणि^{२४} जांणि तेज उभळे समंद^{२५} ॥ ५७०
 लालंबर लोयण^{२६} वदन लाल ।
 उद्योत^{२७} भांण बारह^{२८} अपाल ।
 सभि खाग सुजड़ धानंख^{२९} सीस^{३०} ।
 रवदाळतणै सिर^{३१} काळ रीस ॥ ५७१

१ ग. लिषि । २ ख. ग. जाजती । ३ ख. ग. यहां । ४ ख. यहां । ग. इहां । ५ ख. ग. सबै । ६ ख. तयारी । ग. तियारी । ७ ख. मुजकुं । ग. मुजनुं । ८ ख. डलते । ग. लडनें । ९ ख. मुगज । १० ग. तीस । ११ ख. ग. पर । १२ ख. सताब । ग. सिताब । १३ ग. चीन्ही । १४ ख. फरौस । १५ ग. मंहफत हजारी । १६ ख. जबाब । १७ ख. ग. अभयसाह । १८ ख. सूरिमा । ग. सूरिमां । १९ ख. मौड़ । ग. मौडि । २० ख. परे । २१ ख. सताह । २२ ख. ओपीयो । ग. ओपियो । २३ ख. ग. नरिंद । २४ ग. सुजि । २५ ख. समंद्र । २६ ग. लोयन । २७ ख. उद्योत । ग. उद्योत । २८ ख. ग. बारह । २९ ख. ग. धानंष । ३० ग. कसीस । ३१ ख. ग. सिरि ।

५६८. अजाजती - (?) । इहां - यहां । ढील - विलम्ब । यां - यहां । मगज - गर्व । सताब - शीघ्र । छक - जोश, उमंग । छत्रधारी - राजा ।

५६९. चीनी फरौस - चीनी मिट्टीके खिलौने बेचने वाला । हफत - हजारी ।

५७०. सूरमां मौड़ - शूरवीरोंमें श्रेष्ठ । सनाह - कवच । ओपियै - शोभित हुए । भळहळ - सूर्य । नरिंद - नरेंद्र, राजा । उभळे - उमड़ा हो ।

५७१. लालंबर - पूर्ण लाल । लोयण - लोचन, नेत्र । वदन - मुख । अपाल - (?) । सुजड़ - कटार । रवदाळतणै - यवनके ।

उण वार फवे 'अभमाल' एम ।
 जुध करण लंक सीरांम जेम ।
 अड्ढार^१ पदम जिम भड़ अड्ढूड ।
 जरदैत ससत्र^२ कसि कड़ाजूड ॥ ५७२
 'वखतेस' 'लखण' जिम महा वीर ।
 सभि सिलह ससत्र^३ कसियां^४ सधीर ।
 'विजपाळ' हणूं जिम रिण^५ ब्रजागि ।
 लोह में^६ सभे^७ भड़ उरस^८ लागि ॥ ५७३
 एकणी^९ नगारै थाट अेम ।
 हल्ले वहीर^{१०} जिम सलित हेम ।
 पंडवां^{११} करे साकति पमंग ।
 सजि^{१२} पाखर वादळ घड़ सुचंग ॥ ५७४
 हाथियां^{१३} मेघ-डंबर^{१४} हवद्^{१५} ।
 जंगी कसि हवदां विखम जद्^{१६} ।
 पाखरां पूर कीधा अपाल ।
 दुळि^{१७} चमर चाचरां ढलकि^{१८} ढाल ॥ ५७५

१ ख. अड्ढार । २ ख. ग. सस्त्र । ३ ख. ग. सस्त्र । ४ ख. कसीयां । ग. कसाया ।
 ५ ख. ग. रण । ६ ख. ग. में । ७ ग. सभे । ८ ग. उरसि । ९ ग. एकण । १० ख.
 वहीर । ग. बहीर । ११ ख. ग. पांडवां । १२ ख. ग. सभि । १३ ख. ग. हाथियां ।
 १४ ख. डंबर । १५ ख. ग. हवद । १६ ख. द् । १७ ख. ग. ढलि । १८ ख.
 ढलक ।

५७२. अड्ढूड - जवरदस्त । जरदैत - कवचधारी । कड़ाजूड - सुसज्जित ।

५७३. लखण - लक्ष्मण । विजपाळ - भंडारी विजयराजके लिए प्रयोग किया है जिसने
 अहमदाबादके युद्धमें मेड़तिया राठीडोंके तीसरे मोर्चे पर बड़ी बहादुरीका कार्य किया
 था । हणूं - महावीर हनुमान ।

५७४. एकणी - एक ही । थाट - सेना, दल । वहीर - प्रस्थान, कूच । सलित हेम - हिमालय
 पहाड़की नदी (?) । पंडवां - यवनों, मुसलमानों । घड़ - सेना । सुचंग - (?) ।

५७५. हवद् - होदा । हवदां - होदों । जद् - जब । दुळि चमर - चँवर डुला कर ।
 चाचरां - मस्तकों, ललाटों । ढलकि - लुठकती हो । ढाल - हाथीके मस्तक पर
 युद्धके समय धारण कराया जाने वाला उपकरण ।

धरि^१ नववति चढ़ि नीसांण धार ।
 पर तौग^२ मही-मुरतब प्रकार ।
 धर^३ सकति पूज^४ द्वज^५ चढ़े धाम ।
 त्रहुं^६ घड़ा सुभड़ असि चढ़े ताम ॥ ५७६
 धुजि^७ चढ़े^८ गजां हथनाळ^९ धारि^{१०} ।
 दुरदाळ^{११} आणियां^{१२} राजद्वार^{१३} ।
 'बखतेस' 'विजौ' दहुं^{१४} घड़ वणाय ।
 उण वार खड़ा दरगाह आय ॥ ५७७
 अति कड़ाजूड़ पैदल अनंत ।
 धोम मै ससत्र^{१५} तोड़ाधिकंत^{१६} ।
 तदि^{१७} अरज कीध खिजमत्तिदार^{१८} ।
 पह^{१९} हाजर त्रहुंवै^{२०} घड़ अपार ॥ ५७८
 दूसरौ^{२१} डँका वाजे दमाम ।
 धर गिर तर धूजे^{२२} दुसह^{२३} धाम ।
 जिण वार भूप करि सकति जाप^{२४} ।
 पढ़ि जैत मंत्र सोळह प्रताप^{२५} ॥ ५७९

१ ख. ग. धर । २ ख. ग. तोग । ३ ख. धरि । ग. धसि । ४ ग. पूज । ५ ख. द्वज ।
 ग. द्वज । ६ ख. त्रिहुं । ग. चिहुं । ७ ख. ग. धुज । ८ ग. चढ़े । ९ ख. ग. हथनालि ।
 १० ग. धरि । ११ ख. ग. दुरदाल । १२ ख. आणीया । १३ ख. राजद्वारि । १४ ख.
 दुहुं । ग. दुहं । १५ ख. ग. ससत्र । १६ ख. तोडाधिषंत । ग. तोडाधुषंत । १७ ग.
 तद । १८ ख. धिजमतगार । ग. धिजमतिगार । १९ ख. पोहो । ग. पोहो । २० ख.
 त्रहुंवै । ग. त्रिहोवै । २१ ख. दूसरौ । ग. दूसरो । २२ ग. धूजे । २३ ख. सुसह ।
 २४ ग. जार । २५ ग. प्रकार ।

५७६. नववति — नौवत । नीसांण — भंडा ।

५७७. धुजि — ध्वजा, भंडा । हथनाळ — तोप विशेष । दुरदाळ — हाथी । आणियां —
 लाने पर । बखतेस — महाराजा बखतसिंह । विजौ — विजयराज भंडारी (?) ।
 घड़ — सेना । दरगाह — दरबार ।

५७८. कड़ाजूड़ — अस्त्र-शस्त्रोंसे सुसज्जित । धोम मै — अग्निमें, क्रोधाग्नि में । तोड़ाधिकंत —
 प्रज्वलित पलीता लिए हुए । खिजमत्तिदार — सेवक ।

५७९. बमाम — नगाड़ा । दुसह — शत्रु । धाम — स्थान । जाप — जप, पठन-पाठन ।

साबळ भलि^१ हालै^२ पह^३ सधीर ।
 वप रूप जाणि^४ नरसिघ वीर ।
 गहतंत अयौ बाहर^५ गरूर ।
 सिहरहू^६ प्रगटियौ^७ जाणि^८ सूर ॥ ५८०
 सिर नमे हजारां बंध साथ ।
 निज करे कुरब^९ जोधांण नाथ ।
 धरियां^{१०} छक चढियौ^{११} गयँद धाम ।
 तीसरौ^{१२} नगारौ^{१३} हुवौ^{१४} ताम ॥ ५८१
 तदि वड्डि^{१५} अरण धज वजितबल्ल^{१६} ।
 हलि तोप गजां धमळां हमल्ल^{१७} ।
 भरि^{१८} दारू गोळां मजां भार ।
 आरबा^{१९} अवर^{२०} कठठे^{२१} अपार ॥ ५८२

महाराजा अर्भसीघजीरी सेनारौ वरणण

घण छपन^{२२} कोडि^{२३} धुजि^{२४} घाट^{२५} ।
 थरसले अनड^{२६} बह^{२७} हले थाट ।

१. ख. सभि। २. ख. हाले। ग. हलि। ३. ख. ग. पौहो। ४. ग. जाण। ५. ख. बाहरि। ६. ग. सिहरहू। ७. ख. प्रगटियौ। ग. प्रगटियो। ८. ग. जाण। ९. ख. कुवर। १०. ख. धरियां। ११. ख. चढियो। ग. चढियो। १२. ग. तीसरौ। १३. ग. नगारौ। १४. ख. हुवौ। ग. हुवो। १५. ख. ग. उडि। १६. ख. तबल। १७. ख. हमल। ग. हमल। १८. ख. ग. भर। १९. ख. आरबां। २०. ख. अवर। २१. ख. कठटे। २२. ख. छपन। २३. ग. कोडि। २४. ख. धुर। ग. अर। २५. ग. घंटा। २६. ख. अनल। २७. ख. बौहो। ग. बहो।

५८०. नरसिघ—नृसिंहावतार । गहतंत—गर्वपूर्ण । गरूर—गर्व । सिहर—शिखर, बादल ।

५८१. छक—जोश, उत्साह ।

५८२. अरण धज—अरण-ध्वजा, लाल झंडा । धमळां—बैलों । हमल्ल—(?) । दारू—बारूद । मजां भार—(?) । आरबा—तोप । कठठे—ध्वनि करते चले ।

५८३. थरसले—कंपायमान हो गये । अनड—पर्वत ।

काळायण कठे काळ - कीठ^१ ।
 दुति सिखर^२ भमर गजराज दीठ ॥ ५८३
 उडि गरद धोम चढ़ि आसमांण ।
 भमरंग दिसा^३ दीसै^४ न भांण ।

सेनारौ घन-घटासूं रूपक बांधणौ

पखरैतां कांठल^५ भमर पाज ।
 गाजंत^६ गयँद नौबत्ति^७ गाज ॥ ५८४
 हैमरां दादुरां कळळ होय ।
 जगि तोडां दमंग^८ खिदौत^९ जोय ।
 जसवळांतणां^{१०} हाका-स जोर ।
 मिळि^{११} सबद जांणि^{१२} चात्रग^{१३} मोर ॥ ५८५
 वादळां सिलह पोसां वणाव^{१४} ।
 साबळां^{१५} भळक वोजळ सिळाव ।
 नीसांण धनँख फरहर अनंत ।
 दुरदां हरौळ बक^{१६} पंत दंत ॥ ५८६

१ ग. कालकीठ । २ ग. भमर सिखर गजराज । ३ ख. ग. निसा । ४ ग. दीसे ।
 ५ ग. काठल । ६ ग. गाजंति । ७ ख. नौबत्ति । ग. नौवत्ति । ८ ख. दमंगि । ९ ख.
 ग. खिदौत । १० ग. जसवळांतणा । ११ ग. मित्रि । १२ ग. जांण । १३ ख. चात्रग ।
 ग. चात्रक । १४ ख. वणाय । १५ ख. सावलां । १६ ख. ग. बुक ।

५८३. काळायण - श्याम घन-घटा । काळ-कीठ - अत्यन्त श्याम ।

५८४. धोम - धुंम्रा । भमरंग दिसा - दिशाएँ धूलि आच्छादित हो गई है । पखरैतां -
 कवचधारी घोड़ों या योद्धाओं ।

५८५. हैमरां - घोड़ा । दादुरां - मेंढकों । कळळ - ध्वनि । तोडां - पत्तीतों । खिदौत -
 खद्योत, जुगनू । जोय - देख । जसवळांतणा - यशगायकोंके । हाका-स - आवाज ।
 चात्रग - चातक ।

५८६. सिलह पोसां - कवचधारियों । भळक - चमक, झुति । वोजळ - बिजली या तलवार ।
 सिळाव - बिजलीकी चमक । नीसांण - भंडा । धनँख - इन्द्रधनुष । दुरदां - द्विरदों,
 हाथियों । हरौळ - भ्रगाड़ी । बक - बक-पक्षी । पंत - पंक्ति ।

धरहरै^१ सुजळ मद गयंद धार ।
 इळ वीच कीच माचै अपार ।
 दळ रवदतणा भांजण^२ दुकाळ ।
 वरससी^३ अगे गोळां ब्रसाळ ॥ ५८७
 है नास सास धुबि वीर हाक ।
 धूजिया^४ दसै द्विगपाळ धाक ।
 फेर दूसरी रूपक
 भिड़जाळ नाळ^५ धर धसकि^६ भार ।
 हुबि^७ सेस सीस लटिया हजार ॥ ५८८
 डाकां जिम अहि^८ फण चोट दीध ।
 कमठरी पीठ त्रंवाळ^९ कीध ।
 कडकियो^{१०} कमठ घट कळमळेस ।
 घडकियो^{११} त्रकुट^{१२} औदक धनेस ॥ ५८९
 वाजतां त्रंवागळ डाक वाधि ।
 सिध गिरँद गुफा छूटै^{१३} समाधि ।
 भमता खग उडता बह^{१४} भुजंग ।
 कळमळे^{१५} पडै^{१६} मूळै^{१७} कुरंग ॥ ५९०

१ ग. धरहरै । २ ग. भाजत । ३ क. वरसीस । ४ ख. धूजीया । ५ ग. नळ । ६ ख. धसिकि । ७ ख. ग. हुबि । ८ ख. ग. अह । ९ ख. त्रंवाल । ग. तांवाळ । १० ख. कडकीयो । ग. कडकिया । ११ ख. घडकीयो । ग. धरकियो । १२ ख. त्रकुट । ग. त्रिकुट । १३ ख. ग. छूटे । १४ ख. वहौ । ग. बह । १५ ग. कळमळे । १६ ग. पडे । १७ ग. मुळै ।

५८७. धरहरै - ध्वनिमान होते हैं । इळ - इला, पृथ्वी । कीच - पंक, दलदल । दळ - सेना । रवदतणा - यवनके । भांजण - नष्ट करनेका । दुकाळ - दुष्काल, दुर्मिक्ष । ब्रसाळ - वर्षा ।

५८८. है - हय, घोड़ा । नास - नासिका, नाक । धाक - भय, आतंक । भिड़जाळ - घोड़ा । नाळ - घोड़ेके सुमके नीचे लगाया जाने वाला उपकरण । हुबि - दब कर ।

५८९. डाकां - नगाड़ा बजानेके डंके । दीध - दी । कमठरी - कच्छपावतारकी । त्रंवाळ - नगाड़ा । कडकियो - बोझके कारण दबनेसे आवाज हुई । कळमळेस - तड़फड़ाता है । घडकियो - भयभीत हुआ, कंपायमान हुआ । त्रकुट - त्रिकुटाचल पर्वत । औदक - भयभीत हुआ । धनेस - कुबेर ।

५९०. त्रंवागळ - नगाड़ा । सिध - सिद्ध । गिरँद - गिरिन्द्र । समाधि - ध्यानावस्था । कळमळे - बेचैन होते हैं । मूळै - अमूल्य होते हैं । कुरंग - हरिण ।

चौगड़द धोम रज डंमर चाक ।
 वीछटिया^१ मेळा चक्रवाक ।
 दळ इसा पंग जिम किया^२ दूठ ।
 रवदाळ 'विलँद'सिर^३ काळ रूठ ॥ ५६१
 अहमंदपुरहूंत नज्जीक^४ आय ।
 चौकियो^५ दुरंग रसवीर चाय ।
 'सिर विलँद' न आवियो^६ खागि^७ साहि ।
 मुगळेस सँभाहे^८ किला मांहि ॥ ५६२
 उणवारतणौ^९ दळ बळ अपार ।
 पुणतां नह आवै जेण पार ।
 ।
 ॥ ५६३

इति सप्तम प्रकरण ।

इति मध्य भाग ।

१ ख. वीछटीया । ग. वीछटियम । २ ख. कीयां । ३ ख. विलंदसिरि । ग. सिरविलंद ।
 ४ ख. ग. नजीक । ५ क. चौकीयां । ग. चौकीयो । ६ ख. ग. आयो । ७ ख. ग.
 षाग । ८ ख. संवाहे । ग. समाहे । ९ ग. उणवारतणो ।

५६१. चौगड़द - चारों ओर । धोम - धुआ । रज - धूलि । डंमर - समूह । चाक -
 दिशा । वीछटिया - पृथक हो गये । पंग - जयचंद राठौड़ । दूठ - जबरदस्त । काळ -
 यमराज ।

५६२. नज्जीक - निकट । चौकियो - आवेष्ठित किया, घेर लिया । दुरंग - दुर्ग, गढ़ ।
 खागि साहि - तलवार संभाल कर ।

५६३. उणवारतणौ - उस समयका ।

परिशिष्ट १

नामानुक्रमिका

अ

अंब (आमेर), ५, ५३ ५५, ५६, ८३,
६३, १७०, १७७, २०१, २०७
अंब-खास (ग्राम-खास) ११, ५०, ५१,
५५, ७१, ८२, ८३, ६६, ११४, १२५,
१२७, २३६, २४१, २४३, २४४, २४६,
३२०
अंब दिवांरा (ग्राम दीवान) ७१
अंब-दीवाण (ग्राम दीवान) ११, २४२
अकबर ८५
अखमाल (सीसोदिया) ८८, ६१
अखमाल (योद्धा का नाम).....३१०
अखा (संभव एक योद्धा का नाम) २६७
अखावत (अखयसिंह का पुत्र).....३२६
अखाहर ११६
अजजीत (महाराजा अजीतसिंह जोधपुर)
३४, ३७, ३८, ३९, ४६, ५०, ५१, ५७,
५६, ७६, ८१, ८८, ६८, ११२, १२१,
१३४
अगस्त.....२६०
अघरा-मास ४१, १२१
अचल (योद्धा का नाम) ३०
अचलावत (चापावत अचलसिंह का पुत्र)
३१२
अजरा (महाराजा अजीतसिंह जोधपुर)
३८, ५६, ८४, ८५, ८७, ६३, ६७, ६६,
१००, १११, ११६, ११७, ११६, १२४,
१२३, २७६, ३०१
अजण (महाराजा बखतसिंह की सेना का
एक वीर) ३२६
अजण-उत (महाराजा अभयसिंह) १६६

अजन (महाराजा अजीतसिंह जोधपुर) ८३
अजन (पाण्डुपुत्र अर्जुन) १३२
अजस्र (महाराजा अजीतसिंह जोधपुर) ११८
अजबो (अजबसिंह चौहान) २६८
अजमल (महाराजा अजीतसिंह जोधपुर)
३६, ५६, ५७, ६१, ६२, ७०, ७१, ७२,
७४, ७५, ७६, ८६, ६२, ६७, ११०,
१११, १२८, ३०८, ३३६
अजमलराव उत (महाराजा अभयसिंह)
२०२
अजमल- (महाराजा अजीतसिंह) ७३, ७४
अजमाल- (महाराजा अजीतसिंह) ४०, ४७
५५, ६०, ७६, ८४, ८६, ८७, ८८, ६०
६२, ६५, ६६, ६७, १३२, १३३, २०१,
२२१, २५६, ३५३
अजमेर ६५, ६७, ६८, ११२, १२१, २४५
अजम्मल (महाराजा अजीतसिंह) ७४
अजा (महाराजा अजीतसिंह) ३५, ६६,
११८, २६६
अजावत (महाराजा अभयसिंह) ३२०,
३३५
अजीत (महाराजा अजीतसिंह) ६०, ७०,
७३, ७६, ६०, ६२, ६३
अजीतसिंह (महाराजा अजीतसिंह) २४
अजीतसिंह ५६, ६१,
६६, ६७, १११
अजै (महाराजा अजीतसिंह) ३६, ४०,
५३, ५६, ५६, ६०, ६७, ७६, ७७,
८३, ६४, ६६, १११, ११२, १२७
अजै (अंजनीपुत्र हनुमान) २६१

अजी (महाराजा अजीतसिंह) २४, ३३,
५३, ५४, ५५, ५६, ६४, ६६, ७८, ६४,
६५

अजी (अर्जुन-गौड़) १२

अजीधिया (अयोध्या) ४८

अयू (अथर्वेद) १५८

अधिराज (राजाधिराज महाराजा बखत-
सिंह) २५५, ३१८

अनावत (अनोपसिंह का पुत्र शक्तसिंह
चापावत) २८३

अपभ्रंस-भाखा २०३

अबवळ ७३

अबदळ-फता २८०

अबदुल ६४

अबदुल खान ७६

अभपति (महाराजा अभयसिंह) १७०,

अभपती (महाराजा अभयसिंह) ७५, २३७,
२८२, २६६

अभपत्नी ६७, १००, १४६, २४६,
२६२, ३२४, ३३७, ३४५

अभमल (महाराजा अभयसिंह) ५२, ७५,
११०, ११३, १२७, १३२, १५०, २०१,
२०४, २१६, २२०, २३२, २४६, २५१,
२५८, ३०८, ३२४

अभमल (महाराजा अभयसिंह) ४८,
११०, १३५

अभमाल (महाराजा अभयसिंह) ४१, १००,
१०१, १०२, १०३, ११०, ११३, १२२,
१२५, १२६, १२७, १२८, १३२, १३५,
१४०, १४१, १४३, १४५, १४७, १५३,
१७८, १८२, १८४, १८५, १८७, १८८,
१६६, १६६, २००, २२०, २२६, २३०,
२३२, २३४, २४६, २५३, २५८, २६०,
२८१, २८२, २८३, २८८, ३०४, ३५६,
३५८

अभमाल (स्वामीभक्त वीर राठोड़ दुर्गा-
दास का पुत्र अभयसिंह) ३४७

अभयसिंह ६७, १००, १११, १२६, १३४,

१३५, १४०, १४७, १४६, १६२, २४६,
२४७, २४८, २७७, २८२

अभरज (महाराजा अभयसिंह) २७३

अभरामकुळी २३८

अभसाह (महाराजा अभयसिंह) ५१, १०८,
१०६, ११०, १११, १२४, १४३, २३०,
२३५, २५०, २७५

अभा (योद्धा का नाम) ३३३

अभा, २६५, (महाराजा अभयसिंह)
४८, १२३, १६७, २०२, २४७, २६०,
२६३, (महाराजा अभयसिंह) ३१८

अभावत (स्वामीभक्त राठोड़ दुर्गादास
के पुत्र अभयकरण का पुत्र) २६३

अभूमांण (महाराजा अभयसिंह) १६६

अभे (महाराजा अभयसिंह) ४६, ७६,
१११, ११२, १२६, २०१, २२४, २७८,
३३२, ३४६

अभेपति (महाराजा अभयसिंह) ३०५

अभेपती (महाराजा अभयसिंह) १७०

अभेपुर २३७

अभेमल (महाराजा अभयसिंह) ७५, ७६,
१२२, १३४, १५३, ३३२, ३३४, ३३५,

अभेमाल १८६

अभेयसिंह ३३५

अभेसागर १७५

अभेसाह (महाराजा अभयसिंह) १६६,
३५७

अभेसिंघ (महाराजा अभयसिंह) ३५७

अभेसिंघ (महाराजा अभयसिंह) १७७,
२४०, २५३, २५५, २६०, २७५, ३३६,
३३८, ३६०

अभो (महाराजा अभयसिंह) ४७, ४८,
५०, ५१, ७५, ६७, ६८, ६६, १११,
१२२, १२३, १२४, १२५, १२६, १३२,
१३३, १३४, १५४, १६६, २२६, २३५,
२४०, २४१, २४८, २५४, २५६, २५७,
२६०, २७६, २७७, २८१, २६०, ३३५,
३३६, ३४६

अमर (राव अमरसिंह राठोड़ नागौर) १०,
११, १२, १३, १४, ३५

अम-खास ११२, २४२
 अमर (नीमाज ठाकुर अमरसिंह) ११७,
 ११६, १२१
 अमर (महाराज कुमार अमरसिंह उदयपुर)
 ३६
 अमर (महाराणा अमरसिंह) ५७, ५८,
 ५६
 अमर (अम्बर चम्पू) २, ३
 अमरसिंघ ११
 अमरसिंह (महाराणा) ५७
 अमरा..... (बलता खिड़िया का पिता)
 ३००
 अमरावत (राव अमरसिंह का पुत्र राव
 इन्द्रसिंह राठौड़) ३४
 अमरेस (राव अमरसिंह राठौड़) ११
 अमरेस (महाराणा अमरसिंह) ५७
 अमरेस (नीमाज ठाकुर अमरसिंह) ११६,
 १२०
 अमरी (महाराणा अमरसिंह) ५६
 अमानो (कूपावत अमानसिंह) २८६
 अमूनि (अभिमन्यु) २६०
 अम्बर (निमाज ठाकुर अमरसिंह) १२०
 अरजण (अजुन गोड़) १२
 अरजन २८६
 अरबद २७७
 अलियार २८०
 अलिहार २८०
 अली २८०
 अलीहार ३५५
 अली हुसेन ७६
 अल्वर खां २४५
 अवरंग (बादशाह औरंगजेब) १६, १८,
 १६, २१, २२, २५, २६, २८, २६,
 ३६, ३७, ४७, ४८, ४६, ५२, ७३,
 ७६, ७७, ७८, ११६
 अवरंग जेब २२, २८, ३७, ७८

अवरंग-साह ३६
 असपई (बादशाह) २०१
 असपति (बादशाह) २, १३, २२, ३७,
 ५१, ५५, ५६, ६६, ७१, ७२, ७३,
 ७४, ७५, ७६, ७७, ७८, ७६, ८४,
 १०१, १२१, २३८, २४०, २४६, २४७,
 ३२०, ३२३.
 असपति (बादशाह) २, ५५, ६०, ८३,
 १०३, ११३, २८०
 असपती (बादशाह) ११, ७७, ८०,
 १२३, १२६, २४२, २४७
 असपती (बादशाह) ५७, ७०, ७३, ७५,
 १२५, १३३, २४६
 असपति (बादशाह) ६३
 असुर (मुसलमान) १८, २०, २७, ३६,
 ६४, ६६, ६७, ६८, ११७, १२०, १२१,
 १२२, १२४, १२६, २८०, २८१, २८३,
 २८५, ३००, ३२६, ३२७, ३३६
 असुराण ८१, ६४, ११५, २६३, २६५,
 ३००
 असुरायण ६१
 अहमं २४६, २८०
 अहमंद नगर १८४
 अहमंद-पुर ३६३
 अहमद २८०
 अहमद-पुर २३८, २४०
 अहमदाबाद २३६, २४२, २४७, २४८,
 २६०, २७६
 आ
 आबेर ५६, २५३, २३३
 आब खास २३५
 आंम (राव अमरसिंह राठौड़) १३
 आंम-खास २४०
 आगरा १८, ६४
 आगरे..... १४, ८४
 आगा-सेख २८०
 आढा (चारखों का एक गोत्र) १०, २३, २४

आबद-अलीखान ३५३
 आबध अलीखां ३५४
 आबध अलीखान ३५३
 आबू २०७
 आलम ८२ ८६, १६३, २०१, ३५३, ३५५
 आलमीन ६१, ७१
 आलमीन कताब ८०
 आसावत (श्वामीभक्त, वीर दुर्गादास राठीड़) २८
 आसुर (मुसलमान) ७०, ८१
 आसुरां ३६, ६१, ७६, ६४
 आसोप २८४

इ

इंदा (राव अमरसिंह का पुत्र राव इंद्रसिंह राठीड़) ३४
 इंदावत बलसिंह की सेना का वीर
 इंद्रसिंह का पुत्र शत्रुशाल ३२४
 इंदौ (राव अमरसिंह का पुत्र राव इन्द्रसिंह राठीड़) २२५
 इंद्रसिंघ (राव अमरसिंह का पुत्र) ३४, २२०, २२१, २२४, ३२०
 इंद्रसिंघ (सोपुर का राव) ८८, ६१
 इजील ३५३
 इतमांडुं दोले २२४
 इरादतमंद खां २४५
 इरादतमंद १२१
 इरादति मंदखान ११४
 इलाहबाद २८०

ई

ईरां ३५६
 ईरानी २४२

उ

उजबक ११५, ३०२
 उज्जनी १८
 उज्जोण, २३८, ३२८
 उज्जैण २६
 उद-भाण (उदयभाण-भाटी) २६५
 उदावत (राव सूजा के पंचम पुत्र राव ऊदा के वंशजों की राठीड़ों की एक उपशाखा) २६०

उदियापुर ५७, १७०
 उदियापुरां ३६
 उदैगिरि २
 उदै-पुर ५७, ५६
 उदै-भाण (भाटी) ३१
 उदै-भाण (कूपावत) २८४
 उदै-सींघ (खीमसर ठाकुर) २६५
 उम्मेद-राव (सिरोही) २७८
 उर-वसी ३१, १५०
 उरहानळ मुलक २४५

ऊ

ऊंचलवा ६२
 ऊद (ऊदावत) ११६
 ऊद (खीमसर ठाकुर) ३१५
 ऊदल ३२
 ऊदल (खीमसर ठाकुर) ३१४
 ऊदां (ऊदावत) २८८
 उदा ३३२
 ऊदावत २६, ३१, ३४, २८८, ३१४, ३२७
 ऊहड़ २६५, ३१५

ए ऐ

ऐरापति ६२

ओ औ

औरंगसाह ३८

क

कंस २४
 कन्हाराम (आसोप ठाकुर) २८४
 कपिराज १७८, २६५
 कसंध ५, ७, २१, २२, ५६, ६७, ६६, १०२, १०३, १२४, १२५, २२७, २३३, २४१, २६०, २६१, २७४, २८७, ३२७, ३३५, ३४६
 कसंधज ३०६
 कमठ (कच्छपावतार) २२४, २७६
 कमध १३, १६, २३, २५, २४, २५, ३७, ३८, ३९, ५७, ६५, ८३, ६४, ६८, १११, १२६, १५४, १६६, २४०, २४७, २१७, २६५, ३१४

कमधज १३, १४, १६, ३७, ३६, ४७,
५२, ५६, ७०, ७६, १११, २८१, २६४,
कमधज १३, ७८, ८०, १००, १११,
११६, १४०, २४६
कमधेस ८४, २५६,
कमरदो-खान २४४
कमरदो २४१
करक ४२, ४३
करण (दानवीर राजा करण) १७८, २८३
करण (पाली ठाकुर राजसिंह का पुत्र
करणसिंह) २८३
करण (देशभक्त राठोड़ वीर दुर्गादास का
पौत्र करणसिंह) २६३
करण (राठोड़ों की जोधा शाखा का वीर),
३१३
करणावत (राव रिडमल के पुत्र करण के
वंशज, राठोड़ों की एक उपशाखा) २८८
२६२, ३०८
करणी-दान (महाराजा अजीतसिंह की सेवा
में रहने वाले बारहठ केसरीसिंह का
छोटा पुत्र और गोरखदान का भाई)
करणावत ३४
करमसिंहोत (राव जोधा के सातवें पुत्र
करमसो के वंशजों की राठोड़ों की एक
उपशाखा) २६४
करमसोयोत ३१४
करीम (करीम दादखान) २७६
कळजुग ३३८
कलम ६५
कलियारण (महडू जाडा का पुत्र चारण
कवि) ६
कलो (योद्धा का नाम) २६४
कल्याण (मेड़तिया राठोड़ एक योद्धा का
नाम) २८७
कवसल्ल ४८
कविया (चारणों का एक गोत्र) १०

कसमीर १०६
कसमीर २१५
काक रिख १७४
काक रिख भुसंडी १७४
कागा १७४
कायमखान ३५५
काळ जवन २८१
किलम ३०, ३१, ३२, ३३, ३७, ३८,
५२, १२५, २३८, ३०७
किलमाण २, ११३, २८६, ३०३, ३२४,
किलमेस २४१
किलम्म ६५
किसन (किसना आढा-यह दुरसा आढा का
पुत्र था, इसको महाराजा गजसिंह ने
लाख पसाव तथा पंचेटिया गाम प्रदान
किया था) ६, २३
किसन (योद्धा का नाम) ३२८
किसन (श्रीकृष्ण) २४, ४८, ३२६
किसन (श्रीकृष्ण) १५३
किसन (जसवंतसिंह का पुत्र किसनसिंह)
२८३
किसनावत (किसनसिंह मेड़तिया का पुत्र
राजसिंह मेड़तिया) ३३१
कुंम-रासि ४२
कुरम ५६
कुराण ८०, ८१, ६४
कुरान ७२ २४३
कुसळ (नीमाज का ठाकुर कुसळसिंह
उदावत) ११६, १२२
कुसळ (हरनार्यसिंह चांपावत का पुत्र
कुसळसिंह) २८२
कुसळसो (कुसळसिंह मेड़तिया) ३०६
कुसळावत (कुसळसिंह मेड़तिया का पुत्र)
२८७
कूपा (राव रणमल्ल के पुत्र अखेरराज,
अखेरराज के पुत्र मेहराज, मेहराज के पुत्र

कूपा के वंश जो की राठौड़ों की एक
 उपशाखा) ३४, २८४
 कूपावत १३ २८४, ३१२
 कूपी ६७
 कूरम १७, ५७, ६५, ६६, ८२, ८८, २३३,
 केतह ४२
 केसरीसिंह (राजगुरु पुरोहित) २६८
 केसव (केसवदास गाडण, यह महाराजा
 गजसिंह का कृपा पात्र था। महाराजा
 गजसिंह ने इसको लाख पसाव दिया था।
 महाराजा गजसिंह की प्रशंसा में इसने
 एक 'गजगुणरूपक वंश' नामक बड़ा ग्रंथ
 रचा है) ६
 केसवौ (राठौड़ों की मंडला शाखा का घोर)
 २६४
 केहर (जसवंतसिंह का पुत्र केसरीसिंह)
 २८४
 केहर (जालमसिंह का पुत्र केसरीसिंह)
 ३२५
 केहर (भीमसिंह का पुत्र केसरीसिंह) ३२६
 कहर (सुखसिंह का पुत्र चारण कवि) ३२६
 केहर (केसरीसिंह बारहठ) ३१७
 केहरी (राजगुरु पुरोहित केसरीसिंह) २६६
 कैलास ७०
 कोक-कला ४३
 कोक-सार १५८
 कोम (कच्छपावतार) १८, १०, १०१
 कौरवराज १५
 कतका १८२
 कन (वानघोर राजा करण) ८
 कस्तुर (श्रीकृष्ण) १३२
 ख
 खंधारा ३११
 खट चक्र ३३६
 खट वरना १५४
 खट व्रज १७७

खप्पराणी ५५
 खाँ हसम ६
 खान (सर-बुल्लव) २८२
 खान अबदुल ६४
 खान जिहाँ ३२१
 खान दोरा १२६
 खान दोरा १६६, २३५, २४१
 खान नाहर ११२
 खाना खान २४५
 खासा २७५, ३०६
 खासा - चौकी २६०
 खासा-गजा ३३३
 खासा भंडा ३०२, ३०७, ३१४
 खासा भंडे ३२७
 खासा-वाड़े २८२
 खीम ३२
 खीमसी ६३
 खुरंभ २
 खुरम ४, ५, ६, ७, २४७
 खुरमह २८२
 खुरसांग २०, ४८, ८५, १०६, २४१,
 २८८, ३२५
 खुरसांग १६, ४८, ७७
 खूंद ७७, २४०
 खूंदालमा ७४
 खूंदालमि ६४
 खूमांण ६
 खेडेचां २
 खेतल (कवि खतसी लाऊस) ६
 खेतसी ३००
 खेम घघवाड़ ६, २३
 खोजे साहुदी खां २४४
 खोद २६, ५१, ७६, ११३
 खौदालम १२७
 ग
 गंग (गंगानदी) ३०, १६३

गंग जल ३०
 गंगा १८६
 गंगाजल ३२८
 गंगेव १७७
 गंगेव (गंगा+इव) १६६
 गजण (महाराजा गजसिंह) १, २, ३, ४,
 ७, ६, २३, २८४, २६६, ३१६
 गजरा (सवाईसिंह का पुत्र गजसिंह) ३२६
 गज-पति (महाराजा गजसिंह) १०, ७६
 गज-बंध (महाराजा गजसिंह) १, २, ५,
 ७, ८, ३३, ५५, ६४, ७८, २००,
 २२४, २४७, २४७, २७६, २८५,
 गज-साह (महाराजा गजसिंह) ४०, १०,
 ५२
 गज सिंघ ८, ६६, ३५४
 गज (महाराजा गजसिंह) १०
 गजौ (महाराजा गजसिंह) ६४, ७६
 गजौ (लालसिंह का पुत्र गजसिंह) ३२७
 गनीम २४०
 गहलोत २१
 गांगावत (गंगासिंह का पुत्र) २६५
 गाडण (चारणों का एक गोत्र) ९
 गाजी (महाराजा गजसिंह) २२६
 गायत्री १५५
 गिरदखां ३५३
 गिरधर २३८
 गिरनार २०७
 गुजरात २३८, २४१, २६२, २७६, ३५५
 गुणसठ ४१
 गुरजबरदार ६५
 गुलाब () ३२८
 गुजर-धर २३६, ३३७
 गूड (गोड़) २१
 गोकुल १०
 गोपीचंद २८५

गोप्यंद २६
 गोरख १७७
 गोरधन २८५
 गोरे १७३
 गोळकूंडी ३
 गौड़ ८८, ६१
 ग्यांन-ब्रह्म
 ग्रीरवम ६३, ७०, २८४
 घ
 घोड़-बहल २७५
 च
 चंड नयर २२, ११०
 चंड नयरां ५६
 चंडावल २६४
 चंद (चांदावत शाखा का मेड़तिया) ३१०
 चंदण १०३, १३८, १५५, २६८
 चंदन-चौक १०८
 चंद्र भांग २६, ३०
 चंद्र-वंसी २, १७६
 चकत्यां ६४
 चक्र-मुदरसन १८७
 चखडोल १०६
 चगथी ७१
 चतुरदसी ४१
 चमराळ २६
 चरखल १६६
 चरखूं २०७
 चरसुकाल २१६
 चहुवाण (महाराजा अभयसिंह की माता)
 ४०
 चहुवाण २६७
 चाँपूर ३२६
 चांपा ३४, २८२, २८४
 चांपावत (राव रणमल्ल के चतुर्थ पुत्र
 चांपा के वंशजों की राठौड़ों की एक
 उपशाखा) १३, २८२, ३१२

चारण ३२, १६३, २६६, ३०१, ३२६
 चाहवाँण ३१६
 चित्र गढ ६१, १७७
 चित्रोड २००
 चिनुसतर जंग २४४
 चीनी फरोस ३५७
 चूड-राव २१६
 चूडा २१६
 चूडावत २६५
 चैन (सुरजसिंह का पुत्र चैनसिंह उदावत)
 ३१४
 चोपदारु १८५
 चौडावत ३३१
 चौक सिणगारु १४६
 चौहाँण ३१६
 चौहाँन २६७

छ

छइया बंदर ३२१
 छीर समुद्र १७५

ज

जंहगीर ६
 जईन (जैन) १५६
 जगड़ (नीमाज ठाकुर जगरामसिंह) २६१
 जगत (महाराणा जगतसिंह) ६
 जगत-गुरु १६
 जगतावत (जगतसिंह जोधा का पुत्र) ३१३
 जगतेस (जगतसिंह एक योद्धा) ३२६
 जगतौ (करमसिंहोत जगतसिंह) ३१५
 जगमाल (भाटी जगमालसिंह) ३ ६
 जगसाह (नीमाज ठाकुर जगरामसिंह)
 ११६, ११७
 जहवि (महाराजा अजीतसिंह की माता)
 यादव कुल की कन्या) २४
 जनक २४६
 जनमपत्नी ४०
 जमना (यमुना नदी) १०८

जमना (हठ योग के अनुसार पिंगला नाड़ी
 का नाम) ३४१
 जमाल २८०
 जमाल अलीखाँ ३५३, ३५४
 जमुना १६६
 जम्माल २८०
 जय-गढ (जयपुर २५०)
 जयचंद ६२, ६३, २२६
 जयदेव (ब्राह्मण) ३०२
 जय निवास २५०, २५१
 जवन १३, २५, ६०, ६४, २८५, ३०२
 जवनौण ३१, १०६, ११६
 जवनेस ३८, १०८, १०६, २३५
 जवनेस-नगर १०६
 जवन्न ११६
 जसकन २६५
 जसराज (महाराजा जसवंतसिंह) १४, १५,
 १६, ३६ ६३, १२७, १२८, २२०
 जसराज (प्रतापसिंह उदावत का पुत्र) २६१
 जसराजपुरा २३७
 जसवंत (महाराजा जसवंतसिंह) १६, २४,
 २५, ६६
 जसवंत (जसवंतसिंह चाँपावत) २८३
 जसवंतसिध (महाराजा जसवंतसिंह) १४,
 २३
 जसवळ २३३, ३६१
 जसा (महाराजा जसवंतसिंह) २५, २७,
 २६, ३५, ७५, ७७
 जसा (सवाई राजा जयसिंह आमेर) ६६
 जसावत (महाराजा अजीतसिंह) २५
 जसावत (जसवंतसिंह चाँपावत का पुत्र)
 २८४
 जसे (महाराजा जसवंतसिंह) १०, १६,
 २०, २२, २३, २५, २७
 जसे (सवाई जयसिंह आमेर) ५६, ६२,
 ८७, २५४

जसो (महाराजा जसवंतसिंह) १०, १६,
१७, १८, २०, २२
जसो (महाराणा जयसिंह) ३६
जसो (जसवंतसिंह चाँपावत) २८७
जहंगीर ३५४
जाडावत (जाडा महडू का पुत्र) ६
जातक-भरण ४३
जातिका-भरण ४४
जादम्म ७७
जाफर ५२
जाफरखाँ ५२
जाफर खाँन २४५
जाफर जंग २४५
जाळधर (जालोर) ३७, ४०, २७६
जालम (जालमसिंह) ३२५
जाळोर २६६
जुजठळ २८३
जुजठळ २१८
जुजिस्तर १७७
जुभ (यजुर्वेद) १५८
जुलफ गार ७३
जूभा (जूभासिंह भाटी) ३१६
जेजियो ८१, ६३
जेचंद २००, ३३६
जैत (कूपावत शाखा का योद्धा) २८७, २८८
जैतगड २२०
जैतमालाँ (राव संलखा के पुत्र जैतमाल के
वंशज राठोड़ों की एक उपशाखा) २६४
जैतारण ११६
जैती (वीर दुर्गादास के पुत्र महकरण का
पुत्र जैतसिंह) २६३
जै-राज १५
जैसलमेर २२६
जैसाँण (जयसलमेर) २२६
जैसा (सवाई राजा जयसिंह आमेर) ५५,
जैसाह ५, ६, १७, ५५, ५६, ५६, ६६,

८२, ८३, ८५, ८७, ८८, ६३, ११३,
८०, १२१, १२२, १२३, २२६, २५०,
२५१, २५३
जैसिध (सवाई राजा जयसिंह आमेर) ६०,
७६, ११४
जैसिध (महाराणा जयसिंह) ३६
जैसिध (चारण कवि) २६६
जैसिध (एक योद्धा) ३३०
जैसीध (सवाई राजा जयसिंह आमेर) २५३
जोगरी नागर ७५
जोगरीपुर ८४
जोगरी-पुर १२४
जोगावत (जोगसिंह का पुत्र हठीसिंह) २८६
जोतख १३१
जोतग १३०
जोतसि ४०
जोतिली ४३
जोध (जोध शाखा का राठोड़) २६
जोध (जोधसिंह) २८६
जोध (जोधसिंह उदावत) ३२७
जोध-दुरंग ७५
जोधपुर २, ५६, १३४, १४६, १६६,
२२६, २६१
जोधराण ४, ७, १०, ५२, ५५, ५६, ७०,
७७, ८५, ८७, ८८, ८९, १११, ११३,
११८, १२७, १३२, १३४, १७०, १७३,
१७५, १७६, १७७, २०५, २०६,
२२०, २२६, २३०, २२४, २५३,
२५६, २५७, ३३३, ३५४, ३६०
जोधराँ १६, ४६, ५२, ५६, ६३, १५४,
२२६
जोधराँ ३८, १२७
जोधा (राव जोधा के वंशज, राठोड़ों की
एक उपशाखा) ३४, ३३३, ३३२
जोधा (राव जोधा) २८८
जोध-छात (महाराजा अभयसिंह) १५४

जोधा-नाथ २८८

जोधो (राज जोधा) २६

ज्वाळामुखी २२१

झ

भुम्हार राठोडों की राणावत उपशाखा का
योद्धा २६४

भूभावत (भूम्हारसिंह का पुत्र फतेसिंह
कांपावत) २८८

भूभावत (भूम्हारसिंह का पुत्र मुरतार्णसिंह
जोधा) ३१३

ड

डिडवाणो ६५

डीडवाणा ६०, ७०

ढूँडाड़ ६०

त

तनूज भांगि १६३

तरपणं १५५

तरियन खान २८०

तरियल खां २८०

तरीयन खां ३५४, ३५५

तळ (अथः लोक) २३३

तसबीखानं ७१

तांबा-पत्र १२८

तार-खां २४५

तारा-गढ ६४, ११६, ११६

तारा दुरंग ६५, ६६

तिमंगळ ग्राह १७५

तीरथ ८१

तुजक १८५

तुजकघार ११७

तुजक-मीर १२५, १६६, २४५, २४६

तुरक ३२१

तुरकाण ८२, २३६, २६८

तुरकाणं ४७

तुरकाणी ३८

तुरराबाज २४१, २४४

तुळ (राशि) ४२

तूराण ६२

तूरांन २३६

तूरांनी ३२१

तेजावत (तेजसिंह का पुत्र रूपसिंह
चांपावत) २८३

तेजो (तेजसिंह चांपावत) ३१२

तोग २२, ६५, १३६ ३०६,

तोडिचंद ३

तोपखाना २४८, २७६

तोरण ४६, ५३, ६०, १४१, १४५, २२७,
२५७, २८८

तोरा ६७, ११४, १३३, २४८

तोग ३५६ २४६

तोरतें ३५३

तीरा १२५

त्रकुट ३६२

त्रप्पण १५४

त्रिकुटी ३४२

त्रवेणी, त्रिवेणी ३४१

द

दंपति १५३

दइवाण ७७, ६३, १०३,
११७

दईवाण २४६, २६८, ३०२

दखलण ५५

दखलण की भाखा २०२

दखिलण २०३, ३२२

दक्ष (राजा दक्ष) २६०

दक्षन (दक्षिण) ३५३

दखणी ५५

दखिण ३, २६२

दखिणस २३८

दफतर ५१

दरगह ५८, १२४, २६१, २७५, २८२

दरगाह १३, ६६, ११०, १४७, १८१,

२३५, २३६, ३०५
 वल्लभ (महाराजा गजसिंह) ३, ८
 वल्लभभण (महाराजा गजसिंह) ६
 वल्लपत (योद्धा का नाम) ३२
 वल्लपति (पुरोहित) २६६
 दलावत (दला का पुत्र भारमल उदावत)
 २६
 दलेलजंगल २४५
 दलौ (मुकुंदसिंह चाँपावत का पुत्र) २८३
 दलौ (चौहानों की सोनगरा शाखा का वीर)
 २६८
 दसरथि ६७
 दाँमाव खान २८०
 दिलावर खान ३५३
 दिली ३, २४, २६, २८, २९, ३६, ४८,
 ५५, ७०, ७१, ७२, ७७, ८०, ९३,
 ९४, ९६, १०८, १०९, १११, २०२,
 २३४, २४०, २४६, २४७, २५३, ३२१
 दिली-नाथ ६०, १२४
 दिलीपति २८, ७६, ३०६
 दिलीस्वर ३२१
 दिलेस ११, ४४, ८३, ८४, ८५, ९८
 दिलेसराँ १२८
 दिलेसाँ ७०
 दिलेसुर २४५, २४७
 दिलेस्वर ७१, ७४
 दिल्ली ४, ५, १६, ६६, ७२, ७६, ९८,
 १२६, १६६, २३०, २३८, २४३, ३५१
 दिल्लीनाथ १
 दिल्ली-पति २४४
 दिल्ली-वर ७३
 दिल्लीस ८२, २३५
 दिल्लेस ५१, २३५
 दिल्लेसराँ २३०
 दिल्लेसुर ७०, १७५, २०
 दिवाँण ७१, ११२

दीपावत ३०१
 दीवाँण ५८, ११२, १८८, ३१८
 दुजणसिध (चौहान वंश का वीर) २६८
 दुरगावत २६२
 दुरगेस (वीर राठौड़ दुर्गादास) ३७
 दुरस (कवि दुरसा ग्राह्य) ६
 दूदा (राव जोधा के पुत्र दूदा के वंशज
 जो मेड़तिया भी पुकारे जाते हैं) ३४
 देवकी (श्रीकृष्ण की माता) ४८
 देवक्रन् (देवकरण नामक योद्धा) ११६
 देवड़ा (चौहान वंश की एक शाखा) २७८
 देवीसिध (कूपावत शाखा का वीर) ३१२
 दीलावत (दीलतसिंह का बेटा पदमासिंह
 मेड़तिया) ३११
 दीला साह ८४
 दीलौ (योद्धा का नाम) ३२४
 ब्रगपाळ २७६, ३३५
 द्विगपाळ ३६२
 द्रोण १७७
 द्रोणाचारज ३०३
 द्वारा (दाराशिकोह) १७
 द्वारामति ३०२
 द्वारावत २६, ३०
 द्वारौ (द्वारकादास धधवाड़िया चारण
 कवि) ३००
 ध
 धनरूप ३०२
 धधवाड़ (चारणों का धधवाड़िया गोत्र)
 ६, २३, ३००
 धधेचाँ (रावल मल्लिनाथ के पुत्र मंडलीके
 पुत्र धध से धधेचा नामक राठौड़ों की
 एक उपशाखा) २६४
 धावड़ ३०४
 धाँधल (राव आसथान राठौड़ के पुत्र
 धाँधल के वंशजों की राठौड़ों की एक
 उपशाखा) ३०४

घूहड़ा (राव घहड़ के वंशज, राठौड़) २६,
३३

धोकलसींग ११०

न

नंदलाल ३१८

नकीब ६१, ६२

नक्कीब २४६, २७५

नयर जोध (जोधपुर) ५

नरबदा ५७

नरसिंह ११, २८२, ३६०

नरहर (अवतार चरित्र के रचयिता नरहर-
दास बारहठ) २३

नरहरी (जैतमालका शाखा राठौड़ वीर)
२६४

नरै (नाहरसिंह धांधल राठौड़) ३०४

नरां (राव सूजाजी के पुत्र नरा के वंशजों
की नरावत शाखा) २६५

नवकोट १४, ३५०

नवैनिध ४६

नवरोज ७१

नव सईस २४, २९

नाग बुरंग २२१

नाग पिगळ २०३

नागौर ११, ३५, १३३, २२३, २२४
३२६, २५८

नाथ (नाथी सांझू चारण कवि) २४, ३००

नाथ (भाटी योद्धा) ३१६

नाथावत २७

नारद ३१०

नारद रिख २८७

नारनोळ १०८, ११०

नारनौळ ६८, १०३, ११२

नाहर (करणसिंह का वंशज) २८८

नाहर (एक भाटी योद्धा) २६६

नाहर-खान ११२

निजाम ३२१

निजामन मुलक २८०, ३५३

निबाब ३८, ८३, २४६

निवाहर (एक भाटी योद्धा) २६६

निवाहर (कछवाह वंश में सेखावत शाखा
का वीर) ३३३

नुबिलां २४४

प

पंग (राजा जयचंद राठौड़) १४८, ३६३

पंग-नूप (" ") ७६

पंग-राज (" ") १४६

पंग-राव (") २८१

पंच आरण (पंचायणसिंह चांपावत) ३१२

पंच हजारी ७५

पंचोली ३१८

पंजाबी २००

पंडव (पांडव) १५, ३१०

पंडव (सईस) ६६, ३५८

पंडव (यवन) २७५

पग-मंड २२७

पग मंडा २५१

पच्छिम २०३, ३४१

पठाण ३१, १०४, १०६, ११४, २८०,
२६५, ३३३, ३५४

पतसाह ५६

पतावत (प्रतापसिंह बारहठ का पुत्र राजसी
बारहठ) ६

पतावत (प्रतापसिंह उदावत का पुत्र जस-
राज) ०६१

पतावत (प्रतापसिंह उदावत का पुत्र) ३१४

पतिसाह ४, १७, ३७, ५०, ५१, ५६, ७०,
७१, ७६, ७७, ७८, ७९, ८१, ८२, ८५,
८६, ८८, १०८, ११७, १२५, १२६,
२३७, २४०, २४२, २४३, २४६, २७६,
२८१, ३५५

पतिसाहि २७६, ३२०, ३२१

पती (महिराण-समुद्रसिंह का पुत्र प्रताप
सिंह) २६०
पती (स्वामी भक्त बीर राठौड़ दुर्गादास का
पौत्र श्रीर महकरण का पुत्र प्रतापसिंह
करणोत राठौड़) ३०८
पदम (योद्धा का नाम) २८७
पदम (दौलतसिंह का पुत्र पदमसिंह
मेड़तिया) ३११
पदमावत (पदमसिंह का पुत्र दौलतसिंह)
३२४
पदमासण ३४०
पदम (पदमसिंह योद्धा) ३३४
पदमौ (नरावत शाखा की राठौड़ पदमसिंह)
२६५
पदमौ (रतनसिंह का पुत्र पदमसिंह
मेड़तिया) ३११
पदम्म (सामुद्रिक चिह्न) ४५
पद-सर २५५
परवरदीगार २४३
पांच हजारी १२
पांन दांन १८६, २४४
पाटोघर ३३१
पातल (राजसिंह जोधा का पुत्र प्रतापसिंह)
३१३
पात-साह १७५
पात साही २४४
पात साह १७४
पाति साह १०, ५६, १७७ २४३,
पातिसाह २०४, २४३, २४४
पाथ (अर्जुन) १७७
पारसी २०४
पालण-पुर २७८
पिरोहित ३१७
पीथ (फतेसिंह कूपावत का पुत्र पृथ्वीसिंह)
२८६
पीर ७२, ६४

पीरुं २४३
पीरोज जंग ३५१
पीलसोत १५०
पीला-अक्षत २६६
पीला घाखा ३१७
पुर-अंब ५६
पुरनारनोळ ६८
पुरबघर ७
पुरबघरा १७
पुर साहिजां १०६
पुराण २६५
पुरी सातह ३०४
पुरोहित २६६
पूरक ३३६
पूरब २०३
पूरब ३२१
पेमावत (प्रेमसिंह का पुत्र राजजित) ३२६
पैकंबर ७२
पैकंबर १४३
पैस खाना २६२, २६४
पौसाळियो २७७
प्रकत-भाखा १६८, २०३
प्रताप (प्रतापसिंह कूपावत) २८८
प्रोहित २६६, १४६
प्रोहितराज ६२, १४८, १८६, २६८

फ

फतमल (शिवदानसिंह का पुत्र फतेसिंह)
२८६
फतमाल (फतहसिंह कूपावत) २८६
फतमाल (झुंभारसिंह का पुत्र फतहसिंह)
२८८
फतमाल (फतमल नामक व्यास गोत्र का
ब्राह्मण) ३०१
फता (फतह खां) २८०
फतावत (फतहसिंह कूपावत का पुत्र उदै-
भाणसिंह) २८४

फतेखां २८०

फरक सेर (बादशाह फरखसियर) ७३

फररकसाह (,, ,,) ७६

फररकसेर (,, ,,) ८३

फुरकान ३५३

व

वंगस १२१

बंगाल २६८, ३२८

बईस (बंदय) १५६

बखत (महाराजा बखतसिंह) ३०५

बखतसीध २५५

बखता (महाराजा बखतसिंह) ३१२

बखतेस (,, ,,) २५४, ३१८,
३४६, ३५६

बखतसी २३४, २३५, २४१

बलू (गोपालदास का पुत्र बलू चांपावत)
१३, २४

बहलोल खां ३५४

बहावर ८५

बहावर (बहादुरसिंह कूपावत) २८८

बहावर (विजयपालका पुत्र बहादुरसिंह)
३२६

बहावरसाह ५७, ५८, ६६, ७३

बहादुरसाह ६६

बांणावत (बांण का पुत्र हरिदास सिढायच
चारण कवि) ६

बांमो-बध ३३६

बाघ (बिहारीदास का पुत्र बाघसिंह
कूपावत) २८६

बादसाह ६६, १०८, २३६, २४१, २४२,
२४७, २४८

बारट २६६

बारहट २३, ३१७

बाळकिसन ३०२

बाळसमव १७५

बाला (राव रणमल के पुत्र भाखरसी के

पुत्र बाला के बंशजों की राठोड़ों की
एक उपशाखा) २६४

बिलवर २१५

बीकम १७८

बीड़ी २४२

बुध ४२

बुधो (राव बुधसिंह बूंदी) ८८, ६१

बूंदी ८८, ६१

भ

भगवंत (भाऊसिंह का पुत्र) ३२६

भगवान (भगवानसिंह धांधल राठोड़) ३०४

भदो (करमसिंहोत राठोड़) २६४

भमर-गुफा ३४२

भरथरी २८५

भाण (कूपावत शाखा का राठोड़ योद्धा)
२८६

भाण (भाटी वंश का योद्धा) २६६

भाऊ (कूपावत शाखा का राठोड़ योद्धा)
१३, ३३२

भाऊ (योद्धा का नाम)

भाऊ (चांदावत शाखा का मेड़तिया राठोड़)
३१०

भाऊ (योद्धा का नाम, संभव है यह चारण
हो) ३२६

भागवत १३२

भाटां १०

भाटी २६, ३०, ३१, ३६५

भारमल २६

भारमलोत (राव जोधा के पुत्र भारमल के
बंशजों की राठोड़ों की एक उपशाखा)
२६५

भीम (भीमसिंह शीशोबिया) ६, ७, २४७

भीम (पाण्डु पुत्र भीम) २८६, ३१०

भीम (मोहकमसिंह का पुत्र भीमसिंह
कूपावत राठोड़) २८७

भीम (जोधा शाखा का राठोड़ बीर) २८८

भीम (धवेचा शाखा का राठौड़ वीर)
२६४

भीम (एक योद्धा का नाम) ३२६

भीमाण (भीम शीशोदिया) ६

भीमोत (राव चूडा के पुत्र भीम के वंशजों
की राठौड़ों की एक उपशाखा) २६५

भैरव (भैरवसिंह एक राठौड़ योद्धा) ३३०

भैरवदास (चांपावत शाखा का राठौड़ वीर)
२८३

भोज (मेड़तिया शाखा का योद्धा) ३१०

भोज (राव मालदेव के पुत्र भोजराज
के वंशजों की राठौड़ों की एक उपशाखा
जिसे भोजावत भी कहते हैं) २६५

म

मंगल (ग्रह) ४२, १८३

मंडला (राव राममल के पुत्र, मंडला के
वंशजों की राठौड़ों की एक उपशाखा)
२६४

ढोवर १७३, २१७

मकररासि ४२

मगध देस १६७

मगधदेसी १६६, १६७

मद्य (सामुद्रिक चिह्न) ४६

मछरीक २७८

मदफर ५५, ६६, १०५

मदुफरखी २४५

ममरजळमुलक ३५१

मरुधर १२७

मळियागिर १७१

महडू (चारणों का एक गोत्र) ६, २४

महताब १३७

महताबी १७६

महमंद ६०, ८०, ६३, ६७, ६८, ११४,
११७, १२२, १२४, १२५, १३२, २४०,
२४१, २४७, ३२३, ३५६

महमंदखान ११४

महमंदसाह ६७, ६८, ११४, १२२, २४३

महमदसाह ८४

महराबखान ५६

महवेचा (रावळ मल्लिनाथ के वंशज
राठौड़ों की एक उपशाखा) २६४

महापुराण १६३

महाराण ५७

महि मुरतब २२

महियार (चारणों का एक गोत्र) ३०१

महिराण २६०

महीमुरतब ६५, १३६, ३५६

महेस (महेसदास झाड़ा गोत्र का चारण
कवि) ६

मान (भाट) १०

मान सरोवर १७५, १७६

माधव (माधोदास धधवाडिया चारण कवि)
६

माधव (एक चारण कवि) १०

मारव ४, ७, २०, ३५

मारवाड़ २६१

मारू (मारवाड़) ३५

मारू १०, ६६, ६८

माल (महवेचा शाखा का राठौड़) २६४

माल-फत (फतमल नामक शीशोदिया) ६१

मालवी २३८

माहव (चांपावत शाखा का राठौड़) २८२

माहव (चौहान माहवसिंह) ३१६

माहव (राजगुरु पुरोहित) ३१७

मियुन ४२

मिरजा राजा ५७

मिसल १७८

मीन, मीन रासि ४२

मीर खान १६६, ३५१

मीरजादा १०६

मीर जुमलू २४५

मीर तुजक १२६, २४३, २४४, २४६

मीर तुजकेस २३६

मीर ब्रजक ११

मीर सखावत ११
मीर सिकार २०७
मीर सिकारी २०८
मुकंद (मुकंदसिंह कूपावत शाखा का राठौड़) २८३
मुकंद (मुकंदसिंह मंडळा शाखा का राठौड़) २६४
मुकंदावत (मुकंदसिंह कूपावत का पुत्र जसवंतसिंह) २८७
मुकति महलि २५२
मुकन (धधवाड़िया शाखा का चारण कवि) ३००
मुगळ २०, ३१, ३६, ३७, ५६, ७१, ७२, ६३, ६७, १०२, १०४, १०६, २४७, २८०, २८७, २६६, २६७, ३१४, ३३६
मुगळी २०, २३, ३७, २३८, २४६, २८२, २८४, २८७, ३०४
मुगळीण ३६, ५२, ३२५, ३३०, ३३३
मुगळंस ३६३
मुगळळ १०२
मुगळ ६४, २८६, ३२५
मुचकंद २८१
मुरजळ मुलक २३६
मुरतबौ ६७, ६८, २४६
मुरद्वर ३६, ७३
मुरधर २६, २६, ४६, ५३, ५५, ५६, ६०, ८३, १११, ११२, १३४, १८१, १६८, १६६, २४६, २५७, २६५
मुरधर भाखा १६६
मुरधरा ५६, ८८, ११८, ११६
मुरसद कुळी खां २४५
मुराब १६, १६
मुराबि १८, २१
मुळताणियां ६१
मुसलमान २४३, २४४, २४६, २८०
मुहम्मदसाह २४१, २४२, २४७, २४८

मेघडंबर १३६, २५०, २५१, ३५८
मेघाडंबर ६६, १३५, २०८, २२३
मेड़ता २०५, ३२५
मेड़तिया २८६, ३०६, ३३१
मेड़तं २०५, २५५
मेर १७७, २६६
मेर गिर १८६, २४६
मेवाड़ ७, २२६
मेवास ३२३
मोकमल (भारमलोत शाखा का राठौड़ वीर) २६५
मोहकम (नागौर के राव अमरसिंह के पुत्र इंद्रसिंह का पुत्र) ७४
मोहकम (एक घोड़ा का नाम) ११७
मोहण १६
मोहण (उदावत शाखा का राठौड़ वीर) २८८
मौकम (कूपावत शाखा का राठौड़ वीर) २८७
मौकौ (मोहकमसिंह चौहान) ३१६
मौजवीन ७२, ७३, ७६
मोतकदुबोलै २४५
मोहकम (घोड़ा का नाम) ३२७
र
रघु (ऋग्वेद) १५८
रघुनाथ (भंडारी ओसवाल) १००
रघुनाथ (श्री रामचंद्र) ६७, २४६
रघुपति (रामसिंह का पुत्र रघुनाथसिंह कूपावत) ३१२
रघुपती (श्रीरामचंद्र) २४६
रघुराई (,,) ३०६
रघुवंस १३२
रतन (भंडारी रतनसिंह) ३०२
रतन (रतनसिंह बखतसिंह की सेना का घोड़ा) ३२८, ३२६
रतनागर (रतनसिंह अथवा समुद्रसिंह

नामक कूपावत शाखा का योद्धा) २६०
 रतनावत (रतनसिंह का पुत्र पदमसिंह)
 ३११
 रयण (रणछोड़वास जोधा राठोड़) ३०
 रयण (योद्धा विशेष) ३०२
 रवद (मुसलमान) १४, २८, ५१, ६८, ६२
 ११८, २४६, २६४, २६५, ३१५, ३६२
 रवबख्त (मुसलमान) २१, ११५, ३०६,
 ३२६, ३२६, ३३२, ३५०, ३५७, ३६३
 रबिल ६१, ७१
 रब्बारा (जाति विशेष) २६३
 रविदपति ११३
 रविमंडल ३१
 रहमाण ८१
 राणग (राणगदेव सोनगरा चौहान) ८६८
 राण (महाराणा) ६, ३६, ५७, ८८, ६३
 राण (राजा अर्थ) १७७
 राणावत (राव रणमल्ल के पुत्र अखैराज
 के पुत्र राणा के वंशजों की राठोड़ों की
 एक उपशाखा। यह श्रीशोदिया वंश की
 राणावत शाखा से भिन्न है)
 राजेवा २०१
 राणें (महाराणा) २२६
 राम (श्रीरामचंद्र) ४८, ६३, २५५, २६१
 ३२४
 राम (रामसिंह भाटी) २६५
 राम (राठोड़ों में कूपावत शाखा का योद्धा)
 ३१२
 राम (बख्तसिंह की सेना का एक योद्धा)
 ३२८
 राम (राजसिंह का पिता) ३३०
 रामपुर ६१
 रामी (सबलसिंह कूपावत का पुत्र रामसिंह
 राठोड़) २८५
 रामी (कल्याणसिंह कूपावत का पुत्र
 राठोड़ रामसिंह) २८७
 रांवरण ६३, २६१, ३०६

राघव (श्रीराम भगवान) ४८
 राज-खान ३०२
 राजगुरु २६८
 राजड़ (चापावत शाखा का राठोड़ राज-
 सिंह पाली ठाकुर) २८३
 राजड़ (महाराजा गजसिंह का कृपापात्र
 बारहठ अखा का पुत्र राजसी बारहठ)
 २६६
 राजड़ (राजसिंह मेड़तिया शाखा का
 राठोड़) ३३१
 राजतिलक १२६, २५८
 राजप्रोहित १३२
 राजमंदिर १४६, २१६
 राजरिख ३३८
 राजल (राजसिंह महदेवा शाखा का
 राठोड़) २६४
 राजल (जोधा शाखा का राठोड़ राजसिंह)
 ३१३
 राजसिंघ (पेमसिंह का पुत्र) ३२६
 राजसी (बारहठ अखा का पुत्र राजसिंह
 बारहठ) ६
 राजसी (बारहठ पाता का पुत्र) ६
 राजसी (महाराणा राजसिंह उदयपुर) ८८
 रायपाठा (राव जोधा के पुत्र रायपाल
 के वंशजों की राठोड़ों की एक उपशाखा)
 २६५
 राव ११, ३५, ७६, ८८, ६१, ६३, ६६
 १०८, १७७, १८६, १८८, २००, २०६
 २२१, २२४, २२६, २७८, ३२०
 राव अमरसिंघ ११
 रावत १७७
 रावठ १७७, २००
 रिख (नारद ऋषि) ३५, ६६
 रिखल (नारद ऋषि) ६७
 रिणछोड़ २६
 रितराज १७६
 रघ (श्रीरामचंद्र) १०६

रघुनाथ (योद्धा विशेष) २६
 रघुनाथ (भंडारी सोसवाल) १००
 रघुनाथक (श्रीरामचंद्र) १८१
 रघुपति (भंडारी सोसवाल रघुनाथ) ६६
 रघुपती (रघुनाथ नामक रोहड़िया शाखा
 का चारण कवि) ३००
 रघो (रघुनाथसिंह भाटी) २६, ३०
 रघो (योद्धा विशेष) ३२
 रसतममाली २३८
 रसतमजंग २४४
 रूप (तेजसिंह का पुत्र रूपसिंह) २८३
 रूपा (राव रणमल्ल के पुत्र रूपा के वंशज
 की राठोड़ों की एक शाखा) २२६
 रंणायल (जोधा शाखा का रणछोड़दास
 राठोड़) २६
 रोद ६७
 रोसनदोल २४४
 रोहड़ (चारणों का रोहड़िया गोत्र) ३००
 रोहाड़ी २७७
 रोहिलाखान ६२
 रोद ६८

ल

लंक (लंका) १०३, २७६, ३५८
 लंका २६१, ३५१
 लखण (राम भ्राता लक्ष्मण) ३५८
 लक्ष्मण (, ,) ३०६
 लखावत (लक्ष्मणसिंह करमसोल का पुत्र)
 ३१५
 लखौ (लक्ष्मीचंद) ३०२
 लछ्मण (राम भ्राता लक्ष्मण) २५५
 लसकरोखान ३८
 लालपसाव ६
 लाल (शक्तिसिंह का पुत्र लालसिंह चापावत)
 २८३
 लाल (लालचंद पंचोली) ३१८
 लाल-कोट १४, ८२

लाळस (चारणों का एक गोत्र) ६
 लालावंत (लालसिंह का पुत्र जैलसिंह
 कूपावत) २८८
 लालावल (लालसिंह का पुत्र गजसिंह) ३२७

व

वलत (महाराजा वलतसिंह) २५५
 वलतेस ३५८
 वलतो (खिड़िया शाखा का चारण कवि)
 ३००
 वभोखण २७६
 वसंत ३११
 वसिष्ठ ६२
 वाहररपुर ६१
 विजपाळ (ब्राह्मण) ३१७
 विजपाळ (भंडारी विजयराज) ११६, ३५८
 विजपाळोत ३२६
 विजपाळी (भंडारी विजयराज) ३१८
 विजव-पंजर १७७
 विजा (योद्धा का नाम) ३२४
 विज (विजयराज भंडारी) ३१६, ३५६
 विजो (ग्रामेर के राजा सवाई जयसिंह का
 छोटा भाई विजयसिंह) ५५
 विजो (विजयसिंह राठोड़ एक योद्धा)
 विजो (विजयराज भंडारी) ३०५
 वितळ २३३
 विरहानपुर १०६
 विलेंद २३६, २४६, २८०, २८४, २८५,
 २८६, २८७, २६०, २६२, २६३, २६६,
 ३००, ३०४, ३०६, ३२१, ३२२, ३३०,
 ३२७, २५०, ३५१, ३६३
 विसन (ग्रामेर का राजा विष्णुसिंह) ८६,
 ८८
 विसन (ग्रामसिंह का पुत्र विष्णुसिंह) ३३३
 विसवामित्र ३३८
 विसाखा ४१
 विहारी २८६

बीभाजळ २२३
 बीकम. न
 बीकाण २२५
 बीकानेरां २२५
 बीदां (राव गोधा के पुत्र बीदा के वंशजों
 की राठौड़ों की एक उपशाखा) २६४
 बीर ४१
 बीरभद्र २८७, २६०
 बीरम (बीरमदेव सोनगरा शाखा का
 चौहान) २६८
 वेद १६, ५३, १२१, १५५, १५८, २६५
 वेद-व्यास १६०
 व्यास ३०१, ३१८
 व्रंदावन १५३
 व्रतरतनाकर १६१
 व्रश्चक ४२
 व्रश्चक सकांत ४२
 ब्रह्मपुराण ६४
 ब्रह्मसपति ४२, ४५, १८१
 ब्रह्मसपति ४२, ४४, १८३
 स
 संख (सामुद्रिक चिह्न) ४६
 संग-असम २१५
 संगमरमर २१५
 संढायख (चारणों का एक गोत्र) २३
 संभर (सांभर) ६४, ३१६, ३५३
 संभरि (सांभर) ६०, ६५
 संभरी (सांभर) ३१६
 संभरीक (चौहान राजपूत) २६७
 संमत (सांवतसिंह कूपावत शाखा का
 राठौड़) ३१२
 संस्कृत-भाषा १६५
 सइव ३५३
 सईव ३५३
 सकत (अनाईसिंह का पुत्र शक्तिसिंह
 चांपावत) २८३

सकत (लालसिंह का पिता शक्तिसिंह
 चांपावत) २८३
 सकांत ४२
 सठिक ४५
 सत-पुरी ३०३
 सत-लोक १४
 सतहरचंद न
 सतार २४६
 सतारा २४६
 सतारी ३
 सत्रसल ३२४
 सनकादक ३०३
 सनकादि १६
 सनकादिक १६०
 सनीसर ४५
 सपतास २०८
 सफरजंग ३२१
 सफरा २१
 सबळ (सबळसिंह कूपावत) २८५
 सबळावत (सबळसिंह चौहान का पुत्र
 दुर्जणसिंह) २६८
 समदोदले २४४
 सयद १०, ६१, ६३, ६४, ६८, ६९, ७३,
 ८३, ८६, २८०, २६५
 सयद हुसेन ५६
 सयदांण ८३, ८४, ८७, ८८
 सयदां ६०, ६८
 सयदांण ६५, ६७
 सरफदौले २४५
 सरवण २३१
 सर-संभर ७०, ६६
 सरसती २८२, ३४१
 सर-स्वति ३०२
 सर-बुलंद २३८, २३९, २४२, ३५६
 सर-बुलंदखी २७६
 सवाई (बल्लसिंह की सेना का योद्धा
 सवाईसिंह) ३२६

सवाई राजा जयसिंह ५५
 सहस्रमल २८४
 सहस्री २६७
 सहदेव २८७
 सहस्रनव १४
 सहायतखा २४४
 सांडू (चारणों का एक गोत्र) २४, २७,
 ३२, ३००
 सांभर ६०, २६७, ३२३
 सांभर-पुर ६१
 सांभरि ६०, ६५
 सांभरी-खेत ६६
 सांमत (सांवतसिंह) ३२८
 सांमतसिंध ३२३
 सांमळ (श्यामसिंह भाटी) ३१६
 सांमोर (चारणों का एक गोत्र) ६
 सांवत (सांवतसिंह कृपावत राठौड़) २८६
 सा (बादशाह) ८४
 साऊ २६८
 साक ४१
 साडूळी २६८
 सार जसवंत १६
 सारस्वत (व्याकरण) २०३
 साळभगरांम ८१
 सालिम ३२७
 सालोतर ६२
 साह ४, ५, ८, १७, २५, २७, ४८, ५०,
 ५१, ५५, ५७, ६०, ७०, ७१, ७४, ७८,
 ७९, ८०, ८३, ८५, ८२, ८५, १०१,
 ११३, ११४, १२१, १३३, १३६, २३४,
 २३६, २४७, २५२
 साहज्यहां १६
 साहज्यां १७
 साहज्यां-पुर १०६
 साहकरकर ८६
 साहबहावर ५५, ७२

साहमहमंद ११२, २३७
 साहिजपूरां ६८, ११२
 साहिजादां १७, ७२
 साहिजादा १६
 साहिजादे १७
 साहिजादौ २३, २३८, ३१७
 साहिब-खां २८६
 साहिबौ २६५
 साहू २४२, २४६, ३२२
 सिंगार-चौकी ५३
 सिंध-अजीत ६०
 सिंध-राजड़ ३३०
 सिंढायच (चारणों का एक गोत्र) २३
 सिंधी-भाखा २०२
 सिभू ३३०
 सिंभूसिंध (करमसिंहोत शाखा का राठौड़)
 ३१५
 सिंभूसिंध (हठीसिंह का पुत्र) ३२६
 सिंह २८७
 सिखहर (शेखावत) ३३३
 सिजदा ३५१
 सिणगार चौकी १४७
 सिध जोग ४१
 सिधपुर २८२
 सिरदार (फतहसिंह का पुत्र सरदारसिंह
 कृपावत) २८६
 सिरदार (सरदारसिंह मेड़तिया शाखा का
 राठौड़) २८६
 सिरदार (सरदारसिंह, एक योद्धा) ३२७
 सिरदारोत (सरदारसिंह मेड़तिया का पुत्र
 सुजी) ३०६
 सिर बिलंद २४१, २४२, २४७, २६२,
 २८०, २८१, २८६, ३२१, ३५१, ३६३
 सिर बिलंद खान २४४
 सिर बिलंदेस ३०७
 सरिबिलंद २३८

सिर-दीवाण ५८, १८८, ३०१
 सिरहो २७७, ३५४
 सिवदान २८६
 सिव-पुरी २७७
 सिवराज १५
 सिवो (राठोड़ों की बाला शाखा का वीर)
 २६४
 सिवो (हठोसिंह का पुत्र बलतसिंह की
 सेना का योद्धा) ३२६
 सीसोद ८८, ६१
 सीह (राव सिहा राठोड़) ७८
 सुक ४२, ४३
 सुखदेव १६०
 सुखावत (सुखसिंह का पुत्र केसरीसिंह
 चारण कवि) ३२६
 सुजावत (राठोड़ों की उवावत शाखा सुजान-
 सिंह का पुत्र चैनसिंह) ३१४
 सुजाहत २३८
 सुभागवत १५५
 सुभो (जयसिंह चारण का पुत्र) २६६
 सुमेर १६३
 सुर (हिंदू) २०, ६४, ७६, ६४
 सुरताण (बादशाह) ४, ११, १३, ३१,
 ४८, ५५, १०६, ११२, १२६, २४२,
 ३२१
 सुरताण (सांवतसिंह कूपावत का पुत्र
 सुरताणसिंह) २८६
 सुरताणसिंह ३१३
 सुरताणोत (भाटी बंस की एक शाखा) २६
 सुरतेस (अखसिंह का पुत्र सुरताणसिंह)
 ३२६
 सुरतो (राठोड़ों की गागावत शाखा का
 वीर) २६५
 सुरतो (हरिसिंह कूपावत का पुत्र) ३१२
 सुरतो (शेरसिंह मेड़तिया का पुत्र) ३२५
 सुवण (चौहान बंशकी सोनगरा शाखा) ४८

सुजा (शाहजादा सुजा) १७
 सुजावत (सुजानसिंह का पुत्र रघुनाथसिंह)
 ३२
 सुजे (शाहजादा सुजा) १७
 सुजो (सुजानसिंह मेड़तिया राठोड़) ३०६
 सुर (शूरसिंह कूपावत) २८७
 सुरज-कुल १३३
 सुरज-मंडल ३३
 सुरजमल ३३
 सुरजमाल ३१६
 सुरज-वंस ७६
 सुरज-वंसी १७६
 सुरजादो (सूरसिंह का पुत्र एक राठोड़
 योद्धा) २६७
 सुरत (गुजरात का एक नगर) २३८
 सुरलोक १४, ३०३
 सुर-सेमी १६६, १६८
 सुरिजकुल १५४
 सुरिजसिंह २
 सेख ३५५
 सेख अलियार २८०
 सेख-मुजदाह २८०
 सेख मुसाद २८०
 सेखावात ३३२
 सेर (रियां ठाकुर शेरसिंह मेड़तिया) २८६
 सेर अफगांन २४४
 सेरावत (शेरसिंह मेड़तिया का पुत्र) ३२५
 सेर-बिलंब २४६, २६१
 सेर-बिलंब खां ३२१
 सेरो (रियां ठाकुर शेरसिंह मेड़तिया) २८६
 सेद ७६, ७६, ८७, ८८, ६३, ३५५
 सोनगरी (चौहानों की सोनगरा शाखा
 का वीर) २६८
 सोपुर ८८
 सोरठ २०३
 सौधाखानां २३१

सोपुर ६१

स्यामदास ६

स्त्री-भागवत १६१

खूत-बोध १६१

ह

हजारी पांच ५२

हजारी-हकत ६७

हट-मल २६०

हटी ३२६

हठी (सरसिंह का पुत्र) २६६

हठी ३२७

हरणमंत १०३, २०५, ३२३

हर्ण ३५८

हवौ (उदावत शाखा का राठौड़ रिदेरांम)

२६०

हमदखान २३६

हरचंद न. १२८, १७७

हरदास ६

हरनाथ (आजमाका ठाकुर चांपावत हरनाथ सिंह) २८२

हरनाथ (करमसिंहोत शाखा का राठौड़)
३१५

हरनाथोज (हरनाथ जोधा राठौड़ का पुत्र
करण) ३१३

हर-भाण २८२

हरलाल ३१८

हरसुख १०

हरियंद (हरिसिंह चांपावत) २८४

हरियंद (भाऊंसिंह का पुत्र हरिसिंह कूपा-

वत) ३१०

हरियंद (हरिसिंह चांपावत बखतसिंह का
सेना का योद्धा) ३१२

हरो (हरिदास सिंदायच गोत्र का चारण
कवि) २३

हसतो-बध १०३

हसन अली ७३, ७४

हसन खां ६४, ३५३

हसनली ७४, ७५, ६४

हसन्न ७६

हाडा २१, २८

हिंदवां ४६, ५६

हिंदवांण ८१, ६४, २००, २२०, २२८,
२३६

हिंदवांण ५५, १२८, १७०

हिंदवांण ४७

हिंदवथान ३८

हिंदु ८२

हिंदुस्थान ८२, १३२, १७७, १८२, २५१

हिंदुस्थान ३५२

हिंदु २४०, २४३, २४४, २४६

हिंदूसिंह २६४

हिमरित ४१

हुसेन खां ६४

हुसेन खां २५३

हेम (सामोर गोत्र का चारण कवि) ६

हेंदरकुली ११४, १२१

हैमंद २३८, २३९

होळिका १०६

परिशिष्ट २

संगीत एवं नृत्य संबंधी शब्द तथा भिन्न-भिन्न प्रकार के वाद्यों की नामानुक्रमणिका

अरबी ३५१

अलगाजू १८६

अलाप १५१, १८८, १८६

अस्ट ताळ १८६

उघट १५१, १५२

उरप १५२

कलियाण १५३

क्रुक्र थुंग थुंग रत १५२

खंजरी १५२, ३५१

खंभायच २५६

खडज १८६

गंधार १८६

गजर १०१, २३०

गाइण १५०

गायली ६०

गुणीजण

ग्राम १८८

घंट २, १३६

घड़ाळ १६६

घूघर १५०

चंग १५२

जंत्र १५१, १८६

झंझर १८६

झणणण

झालरा ८८

झालरि २

झिमझिम १५२

टिकोर १८६

टांमक २२१

डको ३५६

डका ३५०

डफ ३५१

डाक ३८, २५७, ३६२

डाको ६२

ढोल ३५०

तंबूर १५१, १५२, १८६

तबल ४, ३५, ३७, ६२, १००, १०८,
११०, २५६, २५७, २६७, ३५०

तबल्ल ११६, ३६०

तबल्लू २२१

*तान १५१

*तान—

संगीत शास्त्र में मूर्च्छनाओं के आधार पर चौरासी तानें मानी गई हैं। उनमें उनचास षाडव और पेंतीस ओड़व हैं। (शुद्ध मूर्च्छनाओं की संख्या सात होने के कारण) षड्ज ग्राम में षाडव मूर्च्छनाओं का लक्षण सात प्रकार का है। यथा—षड्ज ग्राम में षड्ज, ऋषभ, पञ्चम और निषाद से रहित चार तानें हैं।^१ [शेष फुट नोट पृ० २४ पर]

^१ मूर्च्छनासंश्रितास्तानाश्चतुरशीतिः । तत्र एकोनपंचाशत् षट्स्वराः पंचत्रिंशत् पंचस्वराः । लक्षणं तु षट् स्वराणां सप्त विधम् । यथा—षड्जर्षभगन्धारहीनाश्चत्वारस्तानाः षड्ज ग्रामे । भरत०, बंबईसंस्करण अध्याय २८, पृ० ४३७ ।

[पृ० २३ का फुट नोट]

इसी प्रकार मध्यम ग्राम में, षड्ज, ऋषभ और गान्धार मे हीन तीन तानें मानी गई हैं। इस प्रकार से सब मूर्च्छनाओं में की जाने वाली ये (षाडव) तानें उनचास होती हैं^२, जो इस प्रकार हैं—

उत्तर मन्द्रा—

१. × रे ग म प ध नि
२. स × ग म प ध नि
३. स रे ग म × ध नि
४. स रे ग म प ध ×

रजनी—

५. नी × रे ग म प ध
६. नी सा × ग म प ध
७. नी सा रे ग म × ध
८. × सा रे ग म प ध

उत्तरायता—

९. ध नी × रे ग म प
१०. ध नी स × ग म प
११. ध नी स रे ग म ×
१२. ध × स रे ग म प

शुद्ध षड्जा—

१३. प ध नी × रे ग म
१४. प ध नी सा × ग म
१५. × ध नी सा रे ग म
१६. प ध × सा रे ग म

मत्सरी कृता—

१७. म प ध नी × रे ग
१८. म प ध नी सा × ग
१९. म × ध नी सा रे ग
२०. म प ध × सा रे ग

अश्वक्रान्ता—

२१. ग म प ध नी × रे
२२. ग म प ध नी स ×

२३. ग म × ध नी स रे
२४. ग म प ध × स रे

अभिरुद्गता—

२५. रे ग म प ध नी ×
२६. × ग म प ध नी स
२७. रे ग म × ध नी स
२८. रे ग म प ध × स

सौवीरी (मध्यम ग्राम)—

२९. म प ध नी × रे ग
३०. म प ध नी स × ग
३१. म प ध नी स रे ×

हारिणास्वा—

३२. ग म प ध नी × रे
३३. ग म प ध नी स ×
३४. × म प ध नी स रे

कलोपनता—

३५. रे ग म प ध नी ×
३६. × ग म प ध नी स
३७. रे × म प ध नी स

शुद्धमध्या—

३८. × रे ग म प ध नि
३९. स ग म प ध नि
४०. स रे × म प ध नि

मार्गी—

४१. नी × रे ग म प ध
४२. नी सा × ग म प ध
४३. नी सा रे × म प ध

[शेष टिप्पणी पृ० २५ पर]

^२ मध्यम ग्रामे तु षड्जर्षभ गान्धार हीनास्वयस्मानाः । एवमेते सर्वासु मूर्च्छनासु क्रियमाणा भवन्त्येकोन पञ्चाशत्तानाः । भरत०, बंबई संस्करण, अध्याय २९, पृ० ४२६

[पृ० २४ का फुट नोट]

पौरवी-

४४. घ नी X रे ग म प
 ४५. घ नी स X ग म प
 ४६. घ नी स रे X म प

हृद्यका-

४७. प घ नी X रे ग म
 ४८. प घ नी स X ग म
 ४९. प घ नी स रे X म

संगीत शास्त्र के अन्तर्गत पाँच स्वर वाली तानों का लक्षण पाँच ही प्रकार का है ।
 उदाहरणार्थ षड्ज ग्राम में 'षड्ज पंचमहीन', 'ऋषभ पंचमहीन' और 'गान्धार निषाद-
 हीन' तीन तानें (एक मूर्च्छना) में होती हैं । मध्यम ग्राम (की एक मूर्च्छना) में गान्धार
 निषादहीन' और 'ऋषभ धैवत हीन' दो तानें होती हैं । इस प्रकार सब मूर्च्छनाओं में बनाई
 जाने वाली श्रौङ्ग व तानें पैंतीस होती हैं; षड्ज ग्राम में इक्कीस और मध्यम ग्राम में चौदह ।^१
 इनके रूप निम्नलिखित हैं ।

उत्तर मन्द्रा-

१. X रे ग म X ध नि
 २. स X ग म X ध नि
 ३. स रे X म प घ X

रजनी-

४. नी X रे ग म X ध
 ५. नी स X ग म X ध
 ६. X स रे X म प घ

उत्तरायता-

७. घ नी X रे ग म X
 ८. घ नी स X ग म X
 ९. घ X स रे X म प

शुद्ध षड्जा-

१०. X घ नी X रे ग म
 ११. X घ नी स X ग म
 १२. प घ X स रे X म

मत्सरी कृता-

१३. म X घ नी X रे ग
 १४. म X घ नी स X ग
 १५. म प घ X स रे X

अश्वक्रान्ता-

१६. ग म X घ नी X रे
 १७. ग म X घ नी स X
 १८. X म प घ X स रे

अभिरुद्गता-

१९. रे ग म X घ नी X
 २०. X ग म X घ नी स
 २१. रे X म प घ X स

सौवीरी (मध्यम ग्राम)-

२२. म प घ X स रे X
 २३. म प X नी स X ग

^१ पंच स्वरानां तु पंच विधमेव लक्षणम् । यथा षड्ज पंचम हीना ऋषभ पंचम हीना
 गान्धार निषाद हीना इति त्रयस्तानाः षड्ज ग्रामे । मध्यम ग्रामे तु गान्धार निषाद वद् घनीना
 वृषभ धैवत हीनाविति द्वौ तानौ । एवं पंचस्वरा सर्वासु मूर्च्छनासु क्रियमाणास्तानाः पंच
 त्रयशब्द भवन्ति । षड्ज ग्राम एक विंशतिर्मध्यम ग्रामे चतुर्दश ।

सार १५२
 तालंग १३६
 ताळ १५१, १५२, १८६
 तुरपंग १५२
 तूर ३७, १०१, ११५, २८१
 त्रंब १०१, ३३८
 त्रंबागळ २२३, ३४६, ३६२
 त्रंबाळ १८, ६३, २३०, २५४, ३४६,
 ३६२
 त्रंबाळा २८१
 त्रेवट १५२
 थाट १८६
 थुंग १५२
 थेइय थेइय तत थेइय ततततत थेइय थेइय
 तत १५२
 वसाम ३५६
 दाट १५२
 बुडुभ १३४
 धईवंत १८६
 धुकट स धुकट धुकटस धुकट १५२

धोलक १८६
 नगारा १२१, २३०, २४०
 नगारो ५७, ३६०
 नग्गारा १२४
 नववती १३१, ३५६
 नाटक १५१
 नाद १३६
 निखाख १८६
 नीसाण १००, १७३
 नोबत ८, ६२, ११०, १४८, २११,
 २२४, २७१, २८१
 नोबति ५०, ५२, ६६, ६६, ११४, १३६,
 २५७, ३६१
 नोवती १६६
 नूत ६०
 पंचम १८६
 परन १८६
 परवेज १८६
 पसतौ ३५१
 पाड ३५१

[पृ० २५ का फुट नोट]

हारिणाश्वा-

२४. X म प घ X स रे
 २५. ग म प X नि स X

कलोप नता-

२६. रे X ग म प घ X स
 २७. X ग म प X नि स

शुद्ध मध्या-

२८. स रे X म प घ X
 २९. स X ग म प X नि

इस प्रकार जनघास षाडव तानों और पंतीस श्रौडव तानों को जोड़ने से तानों की संख्या चौरामी होती है ।^१

मार्गी-

३०. X स रे X म प घ
 ३१. नि स X ग म प X

पोरबी-

३२. घ X स रे X म प
 ३३. X नि स X ग म प

हृष्यका-

३४. प घ X स रे X म
 ३५. प X नि स X ग म

^१ एव मेत एकत्र गम्यमानाश्चतुरशीति भवन्ति ।

भरत०, बंबई संस्करण, पृ० ४३६

पिनाक १५२, १८६	रखव १८६
पैनायक २५७	राग ३५
बंब १००, २३०, २५४, २६७	लाग १५२
बाजत्र ८५, ८६, ६०	वाजत्र १५०
बाजत्र ४७, १४८	बिलावळ १५७
बाजत्र २५१	विहंग १५३
भेर	बीणा १५१
भेरी	बीणाघरि १५१
मधम १८६	संगीत ६०, १५०, १५१, १५२, १५८
मरबंग १५२	संगीत-सार १५१
मुरछन १५१	सहनाय ११५, १३१, १३६
*मुरछना १८६	सवाद १३१
मुरसल १३१, २५७	सुर १५१, १८८
मुरसल १३६	सुरबीण १५२
अबंग १५१, १५२, १८६	सुर-बीणू १८६
रंग १३१	लीमंडळ १८६

तान पर दी गई टिप्पणी इस संबंध में देखें ।

*मुरछना—

संगीत में एक ग्राम से दूसरे ग्राम तक जाने में सातों स्वरों का आरोह अवरोह ग्राम के सातवें भाग का नाम मूर्च्छना है । भरत के मत से गाते समय गले को कंपाने से ही मूर्च्छना होती है और किसी किसी का मत है कि स्वर के सूक्ष्म विराम को ही मूर्च्छना कहते हैं । तीन ग्राम होने के कारण मूर्च्छनाएँ २१ होती हैं जिनका विवरण निम्न प्रकार से है ।

षडज ग्राम	मध्यम ग्राम	गान्धार ग्राम
ललिता	पंचमा	रोद्री
मध्यमा	मत्सरी	ब्राह्मी
चित्रा	मृदुमध्या	वैष्णवी
रोहिणी	शुद्धा	खेदरी
मत्तंगजा	अता	सुरा
सौवीरी	कलावती	नादावती
षडमध्या	तीव्रा	विशाला

मतान्तर से मूर्च्छनाओं के नाम इस प्रकार भी मिलते हैं—

उत्तर-मुद्रा	सौवीरी	मंदा
रजनी	हारिणाववा	विशाला
उत्तरायणी	कपोलनता	सोमपी
शुद्ध षडजा	शुद्ध मध्या	विचित्रा
मत्सरीकृता	मार्गी	रोहिणी
अवक्रांता	पौरवी	सुखा
अभिस्ता	मंदाकिनी	अलापी

परिशिष्ट ३

विशेष प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों की नामानुक्रमणिका

अणियाळा २४७

अराब २६६

अराबा २३६, ३०६, ३३६, ३३७, ३४६

असरा ६, २२४

असमर ७३, ३२५

असि २१

आराब १४, १८, २३०

आराबा ४, ५, ६; १७, १८, १९, ६७,
३५०, ३६०

आवधू २२२

इकहथ १४५

इकहथी ६६

कबाण ६३, ११५

करमाळ २६२

किरमर ७०, ३१८

किरमर २७, ३०७, ३१८

किरमाळ १२, १६८, २६२, ३०६, ३३२

किरम्मर ३०२

किलकिला २२१

कूत २७, २३४, ३४६,

केजम ६२

केबाण ४४, २६५, ३२४, ३२६, ३२६,
३३०, ३४४, ३४६, ३४८

कोहक-बाण ६, १६

खंजर ७, २३, ७५, ११६, १२६, २४८
३३३

खंजरू २१४

खंडा ३३६

खंडा-धार ७७

ग

गज-बाण २४८

गज-बाग

गज्जर ३१०

गदा ३१०

गुरज ६५, २०६

गुराब २६७

गोळ २६१, २६२

च

चव-धार २६

चबधारा २६, २६६

चौधारा ३०६

चिलतह २४६

चिला ६१

चित्ला २४७

छ

छडालां ६५, २४६

छडियाळा ३५०

छुरां २४७

छुरूं २१४

ज

जंबूरां २६७

जनेबू ३५४

जमवाढ ६५, ६८

जमधर १२, १७, ५०

जमदह ७, ८, १२, ६१, ११३, ११८,
१२६, १८४, १६६, २४८, २६६

जमवाढ ७, ६५, ६८, ७५, ३४३

જમવાદુક ૨૬૮

જરવ ૬, ૨૬, ૨૮૬, ૨૯૩, ૩૧૭

જરવાળ ૭, ૬૧

ક્ષિતમ ૧૦૪

ઠઠક ૨૨૧

ત

તબલ ૩

તરગસ ૧૧૫

તિજડા ૩૦૫

તુજિયાં ૩૪૭

તેગ ૪, ૧૦૩, ૨૬૫, ૩૧૦, ૩૪૮, ૩૫૬

તુજડ ૨૬૪

ધ

ધજ ૨૧, ૬૨, ૨૬૪, ૩૪૬

ધજર ૧૪, ૧૬, ૨૬૭, ૩૦૪, ૩૩૨

ધમાકું ૨૨૪

ધૂપ ૧૩૦, ૧૮૪

ન

નરાજ ૧૦૫

નારાજ ૧૨

નાઠ ૧૬, ૮૫, ૬૩, ૧૧૮, ૨૨૧

નાઠકિયાં ૬૫

નાઠિયાં ૨૬૭

નાઠૂ ૨૨૩

નેજાં ૩, ૬૨, ૧૨૪, ૩૧૭

પ

પંચાલાં ૩૪૭

પક્ષર ૨૬, ૩૪૬

પક્ષરાળા ૬૬

પક્ષર ૨૬૩

પાક્ષર ૫, ૩૫, ૧૨૦, ૨૬૧, ૩૫૮, ૩૪૬, ૩૪૬

પેસલાંના ૨૬૨, ૨૬૪

ફ

ફૂલ ૨૬૩, ૩૪૭

ફૂલધાર ૩૨૭

વ

વગતર ૨૬૮, ૩૪૬

વાંક ૧૬૬

વાંળાસ ૨૮૪, ૩૦૭

વૂગ ૨૪૬

મ

માતડા ૨૬૬

મુજલગ ૨૬૦, ૨૬૩, ૩૩૦

મૂતાંણ ૬૧

મ

મુરગાવું ૩૫૪

ર

રહકાળાં ૨૬૭

રૂક ૨૧, ૩૭, ૬૪, ૧૦૩, ૨૬૪, ૩૦૬, ૩૧૩, ૩૨૪

રૂકડાં ૨

વ

વજર ૩૩૨

વડફર ૬૧

વીજ ૨૬૭

વીજળ ૩૩, ૨૬૭, ૩૧૦, ૩૨૮, ૩૩૦, ૩૩૨, ૩૬૧

વીજળાં ૬, ૨૮, ૩૦૦

વીજળા ૩૨૫

વીજૂજળ ૭, ૨૦, ૨૧, ૨૮, ૩૨, ૧૬૪, ૧૬૫ ૨૧૧, ૨૮૬, ૩૧૧, ૩૧૨, ૩૪૫

સ

સફર ૧૮૬

સનાહ ૩૨૮, ૩૫૭

સમસેર ૧૭, ૨૩, ૭૬, ૧૧૭, ૧૭૭, ૧૮૬, ૧૬૬, ૨૬૬, ૩૩૪, ૩૫૧, ૩૫૪

સમસેરું ૧૬૪, ૩૫૫

સાબળ ૭, ૧૬, ૨૦, ૨૮, ૩૦, ૩૧, ૩૫, ૩૭, ૬૬, ૨૧૦, ૨૮૭, ૨૮૮, ૨૬૪, ૨૬૦, ૩૨૬, ૩૨૮, ૩૩૩, ૩૩૪, ૩૬૦, ૩૬૧

साबलू २२३
 सायक ३७
 सिरपोस ५०, २४४, २४५, २८४, ३०३,
 ३०६
 सिरोहियां ६४, ३५४
 सिलह ८, २१, २६, ३५, ६२, ११६,
 २२२, २६६, २६२, ३१४, ३२३, ३२६,

३३१, ३४५, ३४६, ३५८, ३५६, ३६१
 सुजड़ २३, १०५, १२६
 सेल ४, ६, १३, २०, २५, ३१, २३३,
 २८६, २६०, २६२, २६३, २६४, २६६,
 ३००, ३१५, ३२०, ३३०, ३४८, ३५५
 ह
 हायल २१

परिशिष्ट ४

वस्त्र तथा वस्त्रों संबंधी शब्दों की नामानुक्रमणिका

अंजील १७८
 अतलस ५८, १०५
 असलूफ १४६
 आसावरी १०६
 इकतार १०६
 इलाइच १०५
 कल १५५
 कसबीस १०५
 कार-चोभ १८४
 कार-चोभ १०५, १५६
 खास १०५
 खिन-खास १५५
 खिम खाप १०५
 खिरोद १५५
 गिलम १०६, १४६, १५०, २५०, २६५
 गिलमूं १७८
 गोंदवा १४२
 गुलजार १३७
 गुलदार १०६
 चिकल १५६
 चीरा १०५
 चोपस्मी १७८
 जरकस ५८, १३५, १४१, १४४, १८६,

२५१
 जरकसि २८८
 जरकसी १३०, १३५, १७६, १८०, २१६,
 २३१, २३७
 जरकसी १६६
 जरतार ५८, ५६, १३५, १३७, २५७
 जरतारियां २३२
 जरताव १३८
 जरदोज २६५
 जरदोजी १७६
 जरबफत १३७, १८०
 जरिय १४६
 जरियसि १०५
 जरी २२७, २४८, २६५
 जरी स० १४६
 जाजम १४२
 तख-तास १०५
 तहतान १०५, १४१, १४४
 तास ५८, ८६, १४१, १४२, १४६, १५६,
 १६६, २५१
 तिलकारी १८०
 थिरमा १०६

बुसाल १०६
बुल्लीच १०६, १४२
नीलक १०६
पटंबर १५६
पसम १४६, १५०
पसमी ५८
पसमीन १७६
पसमी-र १०६
पसमी-स १४२
पसम्भ १४६
पाघ १८२
पायंदाज १४६, १७६
पितंबर १५५
पोत १०५, १०६
पोस २३७

भिडवच १०३
बाब १४२
बाला १८४
बाला-बंध १८४
बासता १०५
बुलगाह १८४
लाहानूर १७८
वनात २५४, २६४
वादला १४१
विछायत १५०
सफंम १०६
सिकलात १०५, १३७, २७१
सिर-पाव ८, २३, ५५, ११६, १२६,
१४४, २३६, २४७, २५६
सुषाळ १०६
स्त्रीसाप १०५, २१६

परिशिष्ट ५

आभूषणों की सामानुक्रमिका

अणोट १६७
कंकणी १६४
कंठ १४४
कड़ा १४४, २५६
किलंगी १८२
कुलह २४८
गज्जरा १६४
चंद्रवाह १६४
चंद्रहार १६३
छला १६४
छुद्र-घंट १६५
जग्योपवीत १६३
जरकंबर १८३, २४८
भंभर १६६
चटक १६२

बुगबुगी १४४, १८३
नवग्रही १८३
नवजरी १४८
नपर १६६
नोग्रही १६४
पवित्रेस १४४
पौच १६४
बालू-बंध १६४
मुद्रिका १८४
मुद्रिका १६४
रतन-पेच १६२
सिर-पेच १८२
हमेल १६३
हाथसांकळ १८३

* श्री *

परिशिष्ट ६

छंदानुक्रमणिका

छंदनाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
इकतीसौ	साह के कटहरें बिकरी ठाढौ अभंसाह	१६६	७	१८५
कवित्त कुंडलियो	वेळा उण खत 'विलंद' नू इस मेले 'अभमाल'	३५६	७	५६६
कवित्त दोहो	छक बोले रिरणछोड़ सूर जोधो 'गोयंद' सुत	२६	६	५
	महाराज 'अभमाल' धुछ धावड़ सहपत्ती	३०४	७	३६८
	राजभार त्रद रछिक कहै धनरूप एम कथ	३०२	७	३६४
	वर्ज ध्रीह त्रंबाळ पमंग साकति सभि पक्खर	३४६	७	५६०
	सूर सती सुत सूर रटे 'हघपत्ती' रोहड़	३००	७	३६०
गाथा	ताल अदंग तंवूर	१५१	७	१०४
	भुगधा बेस प्रमाण	१५०	७	१०३
	सुत राघव कवसरल	४८	६	५५
	सोलह सभि सिरणगार	१५०	७	१०२
गीत	कहर इरादतमंद 'जंसाह' हंवरकुळी	१२१	६	३५२
छप्पय, छप्पे	अंबखास 'अभमाल' भळळ पौरस भळळहळ	१२५	६	३५८
(कवित्त)	'अजमल' सकति अराधि ओण रक्केब उधारे	६२	६	८६
	'अजो' बाळ अवसता लेख वडवगढ लीधो	३३	६	१६
	अठी एम प्ह उभे दळां पारंभ दरसाया	६३	६	६०
	अठै जठै असि ओरि लोह लीहथां लगाया	६४	६	६२
	अभंग 'पदम' बोलियो अगन पौरस ऊघाड़	२८७	७	३६२
	'अमर' राण करि उछव पोह सांमुहो पधारे	५७	६	७८
	'अमर' लोथि आविया वीर दारण बिकराळा	१२	५	४
	'अवरंग' असपति हुवो विखम चंडनयर विचाळे	२२	५	२५
	'अवरंग' हुं करि आंठि अडर डेरां भड़ आया	२६	६	४
	असपति मेळ 'अजोत' घरा नायक नह धारै	७६	६	१३६
	असि सिरपाव अनेक कड़ा मोतो गज कंकण	८	४	१६
	अस्ट लाळ उण वार लहे 'खेतल' कवि लाळस	६	४	१६
	आंब खास मभि 'अभी' उरसि छिबली प्ह आए	२३५	७	२६३
	आइ दिली ईखिया जोध चोतरा 'जसा'रा	७७	६	१३८
	आगा सेख मुसाद कहै जंग इहां न कीजै	२८०	७	३४५

छंदनाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
छप्पय, छप्पे (कवित्त)	आप हुबै उसवास, रेविदपति सणि इमरीसां	११३	६	३२३
	आया छिबता उरस तेज खडिया तोलारां	१३	५	६
	आयो लालच उतनुं सुंतो पह बंखत सिधारे	२५	६	३
	इंद्र जेम ओपियो 'अजो' नरिंद प्रवतारो	५४	६	७२
	इतं खुरम आवियो साह परि सभि वळ सबळ	४	४	७
	इम चाँपा बोलिया आदि विरदो अजवाळा	२८४	७	३५६
	इम जवाब सुणि असुर खिजै कमधज खेधायक	२८१	७	३४६
	इम डेरां आपरां ओर डेरां उमरावां	२६५	७	३१७
	इम बसकत आविया देखि वाचिया सयदां	६०	६	८४
	इम नौबत बजाई दुभल जीतियो दमंगळ	८	४	१५
	इम लिखिया 'अभमाल' 'विलव' कागज वचवाया	२८०	७	३४४
	इम वासर ऊगतां डाक वागी देस देसां	३८	६	२८
	इम सलाह करि 'अभै' हुकम दीधा हुजदारां	३४६	७	५५४
	'ईदा'रा उग वार असल थाणा उट्टाए	३४	६	२०
	उठै उमेदह वार रिधु दूजो 'रतनागर'	२६०	७	३६६
	उठै 'गजण' आवियो अभंग दळ लियां अथाहां	१	४	१
	उठै दिली उणवार 'अभो' दारुण अतुळीबळ	२४०	७	२७२
	उठै भीम हरवळां हुवो खूमांण हठाळी	६	४	११
	उण अवसर मभि 'अमर' अधक घर दुंद उठायो	२	४	४
	उण मौसर 'अगजीत' तई भुज गयण सु तोलै	६८	६	२४६
	उण वेळां बोलियो अडर 'जसराज' 'पतावत'	२६१	७	३७१
	उण वेळा बोलियो 'दलो' सोनगरो दारण	२६८	७	३८६
	उदैभाण अरिहरां बाहि खग करे बिहारां	३१	६	१४
	उभै तरफ ऊपडी वाग तिण चार विडंगां	६४	६	६१
	उभै मिसल अंबखास पडै घडहुड अणपारां	११	५	२
	ऊगंती मौसरां अडर 'सिध' करण 'अभावत'	२६३	७	३७५
	ऊदां बूझै 'अभो' 'हुदो' बोलियो 'बहादर'	२६०	७	३७०
	एकठ करि नूप उभै हिलै सांमल पतिसाहां	५६	६	७६
	एक सभै 'अभमाल' एम आवियो पुजाए	१२६	६	३६०
	एक साथ आरबा दुगम बिहुवै वळ दग्गं	१६	५	१६
	एका बाळ अमीर बडो करि आटि वणाव	५१	६	६२
	एम भिल 'अभपती' सुणै रंग रंग सकाजा	२३७	७	२६७
	एम देखि 'अभमाल' पांण तप तेज प्रभत्ती	१२५	६	३५६
	एम सुणे 'अजमाल' आप ऊपरि वळ आया	६७	६	२४५
	अंराको आरबी घटी काछी लंधारी	२७३	७	३३३

छन्दनाम

छप्पय, छप्प
(कफित)

प्रथम पंक्ति

ऐरापति आरिखा पब घण गज पटाभर
 कठठ जूट रहकळा जूट नाळिया जबर
 कमधांपति कूरमा उभै मुरडिया अघप्पति
 'करणावत' कळिचाळ तांम पछे 'अभपत्तो'
 करतां इम मचकर अडर 'अवरंग' दळ आया
 करि गुलाब छडिकाव जरी रावटी जगामग
 करे न घडां कुवारि करे चढि तेल कुवारे
 करे पोस जरकसी कडी सोत्रन कोतल कसि
 करे बरंग दळ किलम 'रुघो' सजावत रुकां
 करे राज इम कमध 'जसो' छत्रपति जोधांगे
 कलावत कामरा परटि कटहडा प्रचंडे
 कहि यम हजम करे विलम रूपी विकराळा
 कहै अनावत 'सकत' जुई जिम भूप जुजटुळ
 कहै कुरांग कतेब उरह हुय डम्मां डम्मां
 कुळ बळ सहत करीम निहंग ब्रब सभि निजराणां
 केक दोह सभि कमध, 'अभो' जोगणिपुर आए
 के कूरम कमधरा विहड घायल जिण वारां
 खडकी गड धोखळे गोळकडी गाहट्टे
 खत लिखिया दिस खान डकर धारे वजराई
 खत्रियां गुरु अंबखास अने पह सभै अवालेत
 खबरदार खानरा कहै दळ रूप कराळा
 खळ भागा देखतां चोर छळ जोर निसाचर
 खांडां भट छः खंड दळां विहंडे 'द्वारावत'
 खांप खांपरा खत्री अवर बहु सूर अकारा
 खांप खांपरा खत्री एम बोले भड अडुर
 खौदाळम अंबखास अचड कटहई उबारी
 गंज सोसा घण गळे भरे सच्चाळ भरारां
 गाहट्ट हूरवळ गोळ चोळ चंदवळ करि चख चख
 गिर गिर गज गामणी हुई अण गामणि हल्ले
 गिलम विछायत गरक पसम मोडा तकिया पर
 गोळी तीर बजाणि आगि भड पडे अगारा
 ग्यानी सोखे ग्यान कयी सोखे कबिताई
 घण इसा धारिया भक्कि करि गडां भयकर
 घोड बहल रय घणा धमळ धुर के आस धारी
 चढि प्रताप चौगण पाट पिततण प्रभसो

पु० प्रकरण पद्यांक

६२ ३ २३३
 २६७ ७ ३३०
 ५७ ६ ७७
 २६२ ७ ३७३
 २८ ६ ६
 २६५ ७ ३१६
 २७८ ७ ३४३
 २७४ ७ ३३५
 ३२ ६ १६
 १६ ५ १४
 २७१ ७ ३२८
 २८१ ७ ३५०
 २८३ ७ ३५४
 २७० ७ ३२६
 २७६ ७ ३४४
 १२४ ६ ३५७
 ६६ ६ ११८
 ३ ४ ५
 २७६ ७ ३४५
 ६६ ६ २४२
 ३५० ७ ५६२
 २ ४ ३
 ३० ६ १२
 ३३ ५ १८
 २६८ ७ ३८७
 १२७ ६ ३६२
 ३४७ ७ ५५६
 २१ ५ २४
 २७७ ७ ३४२
 १५० ७ १०१
 ३५ ६ २२
 १६ ५ १३
 २६८ ७ ३२३
 २७५ ७ ३३६
 १३३ ७ १७

छंदनाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
छप्पय, छप्पे (कवित्त)	छगां छगां घरि नगां चढ़े आसणां महावत	२७०	७	३२७
	छच्छ मास छाकिया हुवा डाकियां हठीला	२६८	७	३२२
	छीळ अंब घण छीळ श्रीळ सामळां उतारै	३४८	७	५५६
	जंगम असि जवहार 'अमर' बहु निजर अधारे	५६	६	८१
	'जगड़' हरौ मधि जोध एक हूंतौ उए वारां	२६१	७	३७२
	जदि दळ सजि 'अगजीत' उतन जोधाणै आयौ	५२	६	६६
	जदि न 'अभै' जांरियो इळा थंभण उमरावां	१११	६	३२०
	जदि नजीक जोधाण सभै मुक्काम सकाजा	१३५	७	२०
	जदिन साह 'जैसाह' अंबगड़ हूंत उथपै	५५	६	७४
	जदि मुकंदावत 'जसौ' कहै उच्छाह समर करि	२८७	७	३६३
	जमे अमल जोधाण करे दळ सबळ कराळा	५६	६	८२
	जयचंद जेम 'अजीत' मसत उच्छब घर माणै	६३	६	२३६
	'जसै' दिया जवनरै उवर मभि दाह अकारा	२५	६	२
	जाडां थंडां जियार लोह आडां भड़ लागी	६	४	१२
	जिकौ करुं ऊजळौ जंग करि लूण 'जसा'रौ	२७	६	७
	'जैतौ' अगि वजागि तांम बोले 'महकन' तण	२६३	७	३७४
	जोधानाथ जियार जोध पूछे जोधा हर	२८८	७	३६५
	भूँकावत फतमाल कहै 'नाहर' 'करणावत'	२८८	७	३६५
	ठांम ठांम नक्कीब हाक ताकीद हजारों	२७५	७	३३७
	डफ खंजरी दुतार बिखम रोहिला वजावै	३५१	७	५६४
	डाच लगाणां डहै इसा पंडवां अपारां	२७४	७	२३४
	डेरों बाखिल दुभल होय दरबार कीध हद	१२३	६	३५५
	तइ साज साजि तुरग आंरि पंडवां आधारे	६६	६	२४६
	तखत रवा तइयार रहै नाळकियां हाजिर	६५	६	२४१
	त-दिन 'अभा'रें तिलक साह स्त्री हयां सधारे	१२६	७	१
	तदि बोलियो सतेज 'सुभौ' 'जैसीध' समोभ्रम	२६६	७	३८८
	तन घए घटा तराज धरर धर बाज तिलक धन	२७३	७	३३२
	तपत भळाहळ अतुळ पंड भळाहळ पौरिस	१	४	२
	तांम 'जसौ' तेडियो अधिक दळबळ सभि आयौ	१७	५	१५
	तांम प्रीत भयतणी ववै बहु साह वधारा	२२	५	२६
	तांम साह तजबीज एम चित मभि अधारे	५	४	१०
	तिण दिन 'जसवंत' तणा निडर बहु भड़ नर नाहर	२४	६	१
	तेज पुंज 'अगजीत' जोम भरियो महाराजा	३७	६	२७
	तेज पुंज नूप सुतण हुबौ जस वेस हळाहळ	४६	६	५६
	तेजावत तिण धार 'रूप' बोले मछराळी	२८३	७	३५५

छंदनाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
छप्पय, छप्पे (कवित्त)	तैं खुस बखती अतर रंचे डंबर रिक्तवारां	२३७	७	२६६
	बखिण धरा रस दियो असह नह करै इरादो	३	४	६
	दरगह पूर दुआल कहै 'अभमाल' एम कथ	२८२	७	२५२
	बल पाड़ै बह रबव पड़े भिल लोह अपारां	१४	५	७
	बल सभि 'अजो' दुआल 'अजो' तारागढ़ आयो	६४	६	२३८
	दस हजार रबबाळ पड़े गज भिड़ज अपारां	२१	५	२३
	दीह केक सभि दुआल 'अभो' मुरधर सभि आए	१३४	७	१६
	बुजणसिंध बईवाण सूर बोलैं 'सबळावत'	२६८	७	३८५
	दुआल सिरैं दरबार उठैं कीषो 'अभपत्ती'	२८२	७	३५१
	दुय दुय सहंस बंदूक सहति बकसरां सकाजा	३५०	७	५६३
	धख इम चख (....) धिखे तांण मूछां खग तोलैं	७७	६	१३६
	धुनि चन्नंग धुध कटस धुकट धुधुकटस धुकट धुर	१५२	७	११०
	धोम नयण सिधुरां जंगी होवां पाखर जड़ि	५	४	६
	नट कछनी करि निहंग धरैं अंगरखा बहावर	२६६	७	३२५
	नाभराज इक निमळ प्रफुलि गिरराज वंस पर	१५	५	११
	नाळ घमस वजि निहंग धरा जहराळ कमळ धुकि	१६	५	२०
	'नाहर' सुत नर नाह, कहैं हाजर छक कारण	२६६	७	३८२
	निडर चंडावळ नाथ रूप ग्रीलम रवि रावत	२८४	७	३५७
	निडर भूप नागीर समर भोके बळ सबळ	२२४	७	२०४
	पंगराज प्रमाण प्रगट चढ़ियो 'अभपत्ती'	१४६	६	१००
	पमंग गजां पाखरां जंगी हवदां समरीजे	३४६	७	५५५
	पह 'अजमल' परताप प्रसिद्ध दोलत इण पाई	११२	६	३२२
	पह कुमार पग पांत 'अभो' खांचे मुख अंचळ	४८	६	५६
	पह बाखल पोसाक अनं जवहर धर आए	६६	६	२४३
	पह बारट पूछियो बहसि 'गोरख' जद बोलैं	२६६	७	३८६
	पह वजीर पूछिया धरा थंमण बुधबारी	३०१	७	३६३
	पांच हजारी पांच धड़ां जड़ि हणें जमंधर	१२	५	३
	पूछे व्यास पवित्र तांम महाराज 'अजण' तण	३०१	७	३६२
	पेखि रोस पतिसाह माळ मोतियां समर्प	१२६	६	३६१
	प्रगट खांप खांप रा एम दोड़ बड रावत	३७	६	२६
	प्रजळें उर पतिसाह दाह गोरिस अति बाभे	७०	६	१२०
	पुहव तांम पूछियो करमसीयोत कमधज	२६४	७	३७६
	बयां भरें गळबाह हथां जमदाह भळाहळ	७	४	१४
	बहै घमक साबळां बहै भाटक बीजूजळ	२०	५	२१
	बहसि 'करण' बोजियो सुतण 'राजड' तिण मौसर	२८३	७	३५३

छंदनाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
छप्पय, छप्पे (कवित्त)	बहसि तांम बोलियो बिन्ह चहुवांण बंहावर	२६७	७	३८४
	बहसि 'हठी' बोलियो उरस छिबतो 'जोगावत'	२८६	७	३८७
	बहुत नजीक बुलाय कहै इम साह हेत कर	२३६	७	२६४
	बाज राज नूत बेव करै नटराज तरणी कळ	१५	५	१०
	बारहठ नरहर बगसि एक लख प्रथम उजागर	२३	५	२८
	बिहुं बंधव विरबेत अनडु धांधल अतुळीबळ	३०४	७	३६६
	भड़ जीता भाराथ एण विध 'अजमल' वाळा	३६	६	२३
	भड़ बोले 'हरभाण' भाण पोरस भाळाहळ	२८५	७	३५६
	'भदो' 'दलो' कुळ भाण 'कलो' संग्राम अणंकळ	२६४	७	३७७
	भाटी पूछै भूप छकां उद-भाण वरे छजि	२६५	७	३८०
	भाटी 'रुघो' भुजाळ खाग भाटी कळि खाटी	३०	६	१३
	भाव हाव रंग भेद कांम कट्टाच्छ उघट क्रत	१५२	७	१११
	भोजहरां नाहरौ 'भोकमल' भड़ भारमलोतां	२६५	७	३७८
	मंगळ क्रोध महमंद साह प्रजळे दळ सव्वळ	६७	६	२४४
	मंगळ धमळ उदमाद वजै बाजंत्र जिण वेळा	४७	६	५३
	मंगळीक नंदि महा वजै नीबति जिण वेळा	५२	६	६७
	मतवाळो इम मुणै कमंध दारण 'कुसळावित'	२८७	७	३६४
	मदतळ डांणा मसत भरै भरणा गिर नीकर	२६७	७	३२१
	महमंद रमसा मांहि विली जाहर दरबारां	२४०	७	२७३
	महमांनो सभि 'अमर' जुगति करि सुपह जिमाए	५८	६	८०
	महाराजा 'अजमाल' करै राजस अधकारै	४०	६	३१
	मुगळ निजामिन मुलक दखण सब मुलक दबाया	२८०	७	३४६
	मुहर भूप पित मुहर गुमर धर कुमर 'गुमांनो'	२८६	७	३६८
	मेड़तियां सिर मोड़ 'सेर' बोले बळ सव्वळ	२८६	७	३६१
	मेवाडां सारवां वहै साबळ बीजूजळ	७	४	१३
	'भोकाळियो' 'अभमाल' सभै दळ पूर सकाजा	१२२	६	३५४
	रचि 'अवरंग' मुरादि गजां चढ़िया गह धारे	१८	५	१८
	रटै अवर कथ 'रयण' सूर खंगार संवेखें	३०३	७	३६६
	रसां भीड़ रेसमां भूल घंट बीर भलारी	२६६	७	३२४
	रहौ अठै महाराज आप आणंद उपाए	६८	६	२४७
	राण राज तिण वार जुगति धर वेध लगै जदि	३६	६	२३०
	राज तेज 'जसराज' सहस नवपति सहंसकर	१४	५	६
	रोहाड़ो कर सरद मारि गिरद में मिळाए	२७७	७	३४१
	लळवळता पोगरां पाय खळहळता लंगर	२७२	७	३३०
	लाख प्रथम बनि लहै आदि 'राजसो' 'अखावत'	६	४	१८

छंदनाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्योक्त
छप्पय, छप्पे (कवित्त)	वड वड कुळ वरियांम साख पेंतीस सकाजा	३८	६	२६
	वडे 'रयण' तिणवार सार संसार एह रुति	३०२	७	३६५
	वधे दुजां लूत वाणि वधे कवि वाणि सुजस विव	४६	६	५८
	वधे राज सुख बिहव वधे हित संपत वधायक	४८	६	५७
	वळ काडिजे गांसियां परां चाडिजे पंखाळा	३४७	७	५५७
	वस डेरां पहे वसे थाट जाळघर थांजे	२७६	७	३४०
	वाका सुणि असपती कहर कोपियो भबंकर	२३८	७	२६६
	वाहि सेल खग वाहि करे 'भाऊ' कळिचाळी	३१	६	१५
	विलम तबल बाजतां गयंद गाजतां गहरां	४	४	८
	विलम तबल बाजिया डंका सिधव दहुवें दळ	३५	६	२१
	विलम दळां सभि 'विलंद' एम गूजर धर आए	२३६	७	२७०
	विलम रूप वांकडो कहें ऊहड कळिचाळी	२६५	७	३७६
	विलम विलो जिण वार धोम विलि हुबो मुरदर	३६	६	२४
	'संभरि' लीध तिण समे लूटि डिडवांणी लीधी	६५	६	२३६
	संसकृत है सुरभाख आदि पहिला उच्चारळ	१६६	७	१७२
	सकति पूजि 'अभसाह' तांम विधवत छत्रपती	२७५	७	३३८
	सजि ससलत सुरतांण अनै दीवांण अमीरां	११२	६	३२१
	सभि 'अजरा' हू सलांम तांम मल्हपे 'अभपत्ती'	१००	६	२५०
	सभि दळ आया सयद कहें इण विध हलकारां	६१	६	८७
	सभि दळ भळहळ सकळ गयंद चडियो गह धारे	१३४	७	१८
	सभि बाळक सिरपोस नांम किताब निवाबां	५०	६	६०
	सभि हौदां जंग सजे महारावतां मवगळ	६१	६	८६
	सभे सिलह करि ससत्र महाराजा राजा मिळि	६२	६	८८
	सतियां 'ग्राम' सहेत वाम बेदोगति दीधा	१३	५	५
	समद पूर वळ सबळ हुआ देखें भालाहळ	६५	६	२४०
	सयबां (रा) इम सजिया उडे वाका अणयाहं	६६	६	११६
	समर हुआ संफळा जोध अवरंग 'जसा'रां	२६	६	१०
	सम सरिता घरा सुजळ व्हं घरा पंथ वहीरां	१८	५	१७
	समं तेण सुरतांण अब दीवांण वणांयी	११	५	१
	समं तेण सुरतांण दिली फबि 'साह बहादर'	५५	६	७३
	समं जेण पतिसाह दुगम बुधि काळ दवायो	७६	६	१३७
	समं जेण 'हसनली' चूक करि हणें चकत्यां	६४	६	२३७
	'सहंसो' बोले सूर अडर उरा वार 'अला'रो	२६७	७	३८३
	सांद चारण सूर मोहर रावतां महाबळ	३२	६	१७
	'सावत'रो सुरतांण तांम बहसे खग तोले	६८६	७	३६०

छंदनाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
छप्पय, छप्पे (कवित्त)	साक पाक करि सुजळ मात कहि कहि सहमाई	२६६	७	३१६
	सात हजारों सहित मारि गिरधरा बहादर	२३८	७	२६८
	साथ मंत्री साभिया निडर दिल फिकर न धारे	२३६	७	२७१
	साह तांम समसेर जड़त जंवहरां जमंधर	१७	५	१६
	सिरै इता अघसांण बहल मो बाधि भगत बळ	३०३	७	३६७
	सिरै भड़ा नव सहस जो (ध) 'रैणायल' जूटै	२६	६	११
	सिसु उयापि इकसाह साह सिसु अवर सथप्पे	५१	६	६३
	सीसा भार सतोल भार बाणां गाडा भर	२६६	७	३१८
	सुजि डीडवाणां सभरि सहित बहु मुलक सकाजा	६०	६	८३
	सुजि बाळक पतिसाह माफ करि खून मनावै	५०	६	६१
	सुणि अनि भड कथ सुकवि काम आवण नीमण कर	२८	६	८
	सुणि इम कहियो सुकवि सूर नाथावत 'सूजै'	२७	६	६
	सुणि कथ इम 'जैसाह' अनै उमराव इकीसां	११३	६	३२४
	सुणि 'रामो' सबळ रौ एम बोलियो अझीखंभ	२८५	७	३५८
	सुणे सयद ऊससे अडर बाहर पुर वाळा	६१	६	८५
	सुतण 'नाथ' खेतसो वदै सांदू खग वाहण	३००	७	३६१
	सुत स्याबास सुपह पांन दीधा निजपांणै	६६	६	२४८
	सूंड नाग सांमळा भोक आंमळा भपेटां	२७१	७	३२६
	सूरज हिंदवांण रौ गाढ़ तोल रौ गिरंवह	२००	७	१८७
	'सूर' सुतण तिण सम 'हठी' बोलियो भळाहळ	२६६	७	३८१
	सेल जई स्त्रीहथां 'जसो' पाई जरवंतां	२०	५	२२
	सेव मुगळ साजतां अभी 'महमंद' बंचाए	६३	६	२३५
	सोनिग दुरंग सकाज हणै मुगळांण हजारां	३६	६	२५
	हसत जयारां हले खून करता खंधारां	२७२	७	३३१
	हुतां राग होकबा अहं आए छत्रपत्ती	५८	६	७६
	हूनर बंधां हुनर घणी तिण दिन मुंहगाई	३४८	७	५५८
	हुय मुजरौ रावतां होय हाका पड सदां	३४६	७	५६१
	हुय हूळ कळहळां हले दळ प्रघळ जळाहळ	२७६	७	३३६
बंग	अधिक राजस छक अथा है	२२६	७	२२६
	'अभी' ऊयचंद जेम आजा	२२६	७	२२७
	आज 'अभमल' भूप एहो	२२८	७	२२३
	उछब मिळ त्रिय जूय आए	२२७	७	२१५
	उरस छिबती भूप आए	२२८	७	२२१
	एम गढ़ निज प्रोळ आबै	२२७	७	२१८
	जस बिरद सुणि दुरंग जैरां	२२५	७	२०६

छंदनाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्य
द्वंग	जावसी नह जुगां जातां	२२६	७	२२५
	जीत बळ सभि हले राजा	२२५	७	२०५
	जोवतां हिंदवणां जोपे	२२८	७	२२४
	थटे प्रायो जंत थंडे	२२५	७	२०८
	थाट पति मेवाड थांणे	२२६	७	२११
	दळां गहमह कीध डंबर	२२७	७	२१७
	दावागर करतास दावा	२२५	७	२०६
	द्रव्य रूप भराइ दीधी	२२७	७	२१६
	धरे तारक द्रव्य धारां	२२७	७	२१६
	नवल रंग उछाह नेहा	२२६	७	२२८
	भगा पौरस मांण भागो	२२५	७	२०७
	भडां मंत्रियां जूय भारा	२२८	७	२२२
	लड्डे इम नागोर लीधो	२२६	७	२१३
	विछायत समियांन वरियां	२२८	७	२२०
	विदरा पहल अयाक वागा	२२६	७	२१२
	सभे अचडां बळां सवायो	२२६	७	२१४
	सुणे रूपां दरां सत्यां	२२६	७	२१०
	सुणे वयणे इम सकाजा	२२६	७	२२६
दवावैत	ऐसा गढ जोधांण और सहर का दरसाव	१७० से १६१ तक	७	
	ऐसी विध पंडत राज	१६३ से १६५ तक	७	
	ऐसी भाँति सँ खटि भाखा	२०३ से २१६ तक	७	
	जिस बखत स्त्री महाराज	२१६ से २२४ तक	७	
	जमीन के ऊपर परवरदिगार का	२४३ से २४५ तक	७	
दूहा (बोहा)	जिस बखत सिर बिलंदखाँ	३५१ से ३५५ तक	७	
	अठठ अटोळां भार अति	२३०	७	२३४
	अति प्रकास गति भेद अति	१५१	४	१०८
	अनुज नमे तदि अग्रजे	३०५	७	४०१
	अमर प्रवाड़ा एण विध	१४	५	८
	असि सिरपाव गयांव अथ	१०	४	२४
	अस्ट अंग राजस अडिग	६३	६	२३४
	आतस भळपंदळ अधिक	२३१	७	२४०
	इम खट रित करि उछब	२३०	७	२३१
	इम दत खग बहु करि अचड	२४	५	२६
	इम निस विति आणंदमे	१५४	७	११५
	इम पंच भाखा उच्चरे	१६८	७	१८२

सूचनाम	प्रथम पंक्ति	पृ० प्रकरण	पद्यांक
बुद्धा (बोद्धा)	इम विघ विघ 'अभमाल' रो	१२६	७ २
	उच्छब्द हास विलास अति	१५३	७ ११४
	करि तयार हाजर किया	२३१	७ २३८
	करि पोसाक ससत्र कसि	२३१	७ २३९
	करि बंदण सूरिज कमंध	१५४	७ ११७
	कुरब रीझ पाए करै	२०४	७ १६६
	कूच नगारा वज्जिया	२३०	७ २३३
	खट वरतां ताळा खुलै	१५४	७ ११६
	गज अस ब्रवि नागौर गढ़	११	४ २५
	गांम आठ बारह गयंव	६	४ १७
	चत्रगज सांसण दूण चत्र	२३	५ २७
	चोसर सिर हुंता चमर	२३२	७ २४६
	जग सास्तर कहिया जिता	५२	६ ६४
	जनमे रांम अजौधिया	४८	६ ५४
	जुगति च्यार जुग च्यार जंत्र	१५१	७ १०७
	जे चाकर जोधांण रा	१७०	७ १६५
	झळहळ साजा गज भिड़ज	२३१	७ २३७
	तखि भूलै जरतारियां	२३२	७ २४१
	तदि मसलति सभि तेड़ियो	३०५	७ ४००
	तप बधियो 'अभमाल' तणी	५२	६ ६५
	हाल अष्ट द्वादस तवन	१५१	७ १०६
	बवाबेत मभि दाखियो	२२६	७ २३०
	नमे कदम्मां तदि निजर	३०५	७ ४०३
	पांण तपोबळ बयळपति	१०	४ २३
	पाव घड़ी जोजन परा	२३२	७ २४२
	पुत्र दोय 'गजपति' रे	१०	४ २२
	प्रथम 'अभपति' पूछियो	३०५	६ ४०४
	बह जूटां कठठेस बह	२३०	७ २३५
	बहु राजस सुखदांन बहु	१०	४ २१
	मांन सप्त सुर ग्राम मुर	१५१	७ १०५
	मिळिया वळजोधांण मभि	२३०	७ २३२
	मोहरि डोरी रेसमी	२३२	७ २४२
	लग कलियांण विहंग लग	१५३	७ ११३
	लाल वदन चख लाल	१६६	७ १८६
	वज भाखा मुरघर विमळ	१६८	७ १८३

छंदनाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
बूहा (बोहा)	सर्कात पूजि 'अभमल' सुपह	२३२	७	२४४
	सम्भिबळमहमंद साहारा	१२२	७	३५३
	सुकवि 'मान' 'गोकल' सुकवि	१०	४	२०
	सेनापति दूजौ सगह	३०५	७	४०२
	सो प्रवीण गायण सकळ	१५१	७	१०६
	सोधाखानां वेळ सांभ	२३१	७	२३६
	सब हिंदू राजा सिरें	१७०	७	१६४
	हाका आसीसां हुबं	१५४	७	११८
	हाल कळोहळबह हुतां	२३२	७	२४५
नाराच	अराोट वीछिया उदार पाय पंख पंकजें	१६७	७	१५४
	अनंग बाण लाजि जाइ ईख नैन अंजणं	१६२	७	१४१
	अनट्टु जे अल्ला अवाक्य सूरमंस री नरा	१५६	७	१२३
	अनेक जोध मंत्र आय बंदवै बळावळा	५३	६	६८
	अराध वीर मंत्र एक साधनं सधीतरा	१५८	७	१३१
	इसी समाज राज ऊंच वीपियी नीरदरें	१७०	७	१६३
	उरस रूपमें उदार राजए उरोजयं	१६५	७	१४६
	करंत कनक काम जोति भाण मं जसं	१५६	७	१३३
	करंत कुंकमं तिलक पाणि राजप्रोहितं	५४	६	७१
	करंत केक चित्र काम रूप भूप रंग रा	१५८	७	१२६
	करी तुरी चित्रम कळि द्वार द्वार डंबरं	१५७		१२८
	कळा बतीस पोस काम जोति तास यौ जगें	१६७	७	१५५
	कुचं अलक छूटि केस वेस जे प्रभा वणी	१६५	७	१५०
	खिरोद कन्न खिनखास धारियं धुजंबरं	१५५	७	१२१
	खुले बजार हाट छूटि छज्जयं विछायतं	१५६	७	१२५
	चुनी मुचंग रूप चं कणस नील कामती	१६३	७	१४४
	छजं चित्रं कटी-स छीण छुप्र घटं छाजयं	१६५	७	१५१
	छमासहं मसत्त छाक चाचरें नरं चढें	१६८	७	१५६
	जवाहरं परकळ जोत के जवाहरी करें	१६०	७	१३६
	जिगंन ज्वाळ होम ज्वाप ग्रहुत्तं घृतं अपें	१५५	७	१२०
	डगंस बेडियां डहें जंभीर भार जुवलां	१६६	७	१६०
	उधूत भूत सा अनेक जोम काळ जेहड़ा	१६६	७	१६१
	दिपंत एम राज द्वार राज नग्न राजमें	१६६	७	१६२
	बुजिब वेव मंत्र दाखि आलिवाद उच्चरे	५३	६	६६
	दुबार है सरस्व वास जं वसेख दुज्जयं	१५७	७	१६७
	दुहं विसाळ चंपडाल ओपयं भुजा इसी	१६४	७	१४६

छंदनाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
नाराच	निवांण श्री भरंत नीर रूप कुंभ हेमरा	१६०	७	१३७
	पढ़ंत जोतकी पुराण तारकेस के तवै	१५८	७	१३०
	परी चोगणास रूप इंद्र लोक इंदरां	१६७	७	१५६
	पवसि सांमुहै पवंग आसवार धारबै	१६८	७	१५७
	पाए सुचंग स्याम पाट पै कनक नूपरं	१६६	७	१५३
	प्रवीण कंकिणीस पौच गज्जरा ज नौग्रही	१६४	७	१४७
	रंगे अनेक रंगरेज आबदार अंबरं	१६०	७	१३१
	राजै मुखं सबाधि रूप ज्योति चंद्रहूँ जहीं	१६१	७	१३६
	वछेर केतलं सबागि फेरकं फरावतं	१६८	७	१५८
	बढाल सेल के वणाय, कोध ग्रीपमैकळा	१५६	७	१३४
	वणै भुजंग रूप बेणि मंग सीस मोतियं	१६१	७	१३८
	विनोदवांन वागवांन फूलवांन केवलं	५४	६	७०
	सजंत के चिकन साज सुंदरं ससोभरा	१५६	७	१३२
	सभंत ब्रह्मके सिवांन केक त्रपणं करै	१५४	७	११६
	सनान के खत्री सभंत ते करंत तरपणं	१५५	७	१२२
	सनान वांन के सजंत तै बईस उग्रता	१५६	७	१२४
	समुद्रिका छलास छाप जो जड़ाव संगरा	१६४	७	१४८
	सरीस कंठ सोभयं मुकस माळ नूमळी	१६३	७	१४५
	सरीस मोतियां सधार कोर भाल केसरी	१६१	७	१४०
	सरूप पिंड कस सोभ सुंदरं सुमुभरं	१६६	७	१५२
	ससोभ भूखणं खूतं वणे जड़ाव बांमरा	१६२	७	१४२
	सिधं निधं अठं नवं स सच्चयं घरं घरं	१५७	७	१२६
	सुकीर नासिका सरूप वेम रीत राजियै	१६२	७	१४३
नीसांणी	अतीलिखी अजाजती सो भली विचारी	३५७	७	५६८
	कल्ह तुभंदा पित्र सो 'अजमाल' उपंदा	२००	७	१६०
	तूं दा राबळ व्याहितं रंक राव रचंदा	२००	७	१८६
	तूभ गुणदां पार ना क्यां रेण कणंदा	२०२	७	१६४
	तेंडा उलूंदा तुभक दूण दनसंदा	२०१	७	१६१
	दीपंदा 'अभमल' बुडंदा तूं सख तेरंदा	२००	७	१६२
	में नाही चीनी फरीस में हफत-हजारी	३५७	७	५६८
	रज्जा तं बड्डा सबै सिरपोस रजंदा	२००	७	१८८
	लिख भेजे खतका जबाब करि रीस अकारी	३५६	७	५६७
	होय बंदा सो ऊबरै खळ होय मरंदा	२०२	७	१६३
नीसांणी हंसगति	अंग सनिपात ज्यहीं हुय आळस आठूं पहर रहै			
	घर अंबर	७२	६	१२६

छंदनाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
तीसराणी- हंसगति	'अजमल' तेज दिलेसां ऊपरि बरखें श्रीखम भांण बिहंत	७०	६	१२२
	'अजमल' विदा कियो जिए श्रीसरि धरि दळ पुर 'अभौ' पाटोघर	७५	६	१२२
	अवर अमीर भूपजां आगळि करै सिलांम दहूं जोड़े कर इम पतिसाह नमाय लीध इळ एहा भूप 'अजीत'	७३	३	१२६
	उजगार	७०	६	१२१
	खिलवति करै न खिलवति खाने तसबी खाने अजूं न तंतर	७१	६	१२४
	जिए अवरंग तणा दळ जीता आतम सकति वजाई असमर	७३	६	१३०
	जीता मौजदीन दळ जीता कंद करै तकबीर करदर भळहळ रती भुजां भर भल्ले हल्ले उतन नरेस	७३	६	१२८
	'जसाहर'	७५	६	१३४
	देखि देखि 'अभेमल' तेज जिके दिन आलम राह कथे कथ उच्चर	७६	६	१३५
	मिलिया असपतिहंत 'अभेमल' असपति कुरब किया अ(प)रंपर	७५	६	१३३
	मूछां वळ घालें महाराजा घूघट घालें तांम दिलीधर मोहकम मारि लिया दिल्ली मझि गिणिया नहीं	७१	६	१२३
	दिलेस्वर गुम्बर	७४	६	१३१
	सझि दळ पुर आए साहिजाबा धोखळ धोस वध दिल्लीधर	७२	६	१२७
पद्यरी	अंग तेजवंत सोभा अनंग	१३२	७	१२
	अति कड़ा जूड़ पैदल अनंत	३५६	७	५७८
	अति कोक कला भोगी अपार	४३	६	४१
	अति वधै क्रीत बीरग्य आध	४५	६	४६
	'अमरेस' सघण गोळा अपार	१२०	६	३४६
	अनि घणा कीध जुध सु छळि आप	११७	६	३३७
	जवां मांहि मिळै 'जसाह' आध	११६	६	३३३
	असि खडग सकति तोरण उदार	४६	६	५०
	अहमंब पुरहंत नज्जबीक आय	३६३	७	५६२
	आपरा लूण परताप अस	११६	६	३३६
	ऊजळ कुमार उपजै उदार	४३	६	३६

छंदनाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
पद्दरी	उडंत धमंस नौवति अग्रज	११४	६	३२६
	उडि गरव धोम चडि आसमांण	३६१	७	५८४
	उण वार तणी दळवळ अपार	३६३	७	५६३
	उणे वार फबे 'अभमाल' एम	३५८	७	५७२
	एकणी नगारै थाट अम	३५८	७	५७४
	ओपियो छत्र जगमग उदार	१३०	७	७
	करि करि नौछावरि द्रव्य केक	१३१	७	६
	करि कोध विदा कोषा सकोध	११४	६	३२८
	कहि हस्त चिह्न वांगिक प्रकार	४६	६	४६
	काळरा कुटंबी रूप काळ	११५	६	३३१
	किलमाण मार बहु गरव कीध	११३	६	३२५
	गढ़ चढे नाळ दगऊं गरीठ	११८	६	३४२
	गुरजणाहृत अति विनय ग्यान	४३	६	४०
	घण छपन कोडि धुजि घाट	३६०	७	५८३
	खालंत इसा गोळा अचुक	१२०	६	३५०
	चित सुद्धि रासि ग्रह इम चवेस	४२	६	३७
	चौगडद धाम रज डमर चाक	३६३	७	५६१
	छक बाध मोख जोधांण छात	११८	६	३४१
	जाणंत कळा बहतरि सुजांण	४४	६	४४
	डाकां जिम अहिफण चोट दोध	३६२	७	५८६
	तदि उडि अरण धज बजि तबल्ल	३६०	७	५८२
	तदि निसा च्यार घटिका वितीस	४१	६	३४
	तपवंत भूप निज धाम तत्र	२६	७	३
	तपवंत हुबे 'अजमल' सुतस	४७	६	५२
	तपवधे भांण उद्योत तेम	४२	६	३८
	तुलवाव बरोबर राज तेज	११७	६	३३६
	तेजमें रूप बहु पुत्र ताच	४३	६	४२
	थट नाथ फबे बळ पूर थाट	१३३	७	१६
	बहवांण 'अजरा' तद वचन दीध	११७	६	३३८
	दूसरो डंका वाजें दमांम	३५६	७	५७६
	वे कुरव भाल बहु खान दीध	११६	६	३४६
	दोहूं ग्रहां जोडि फळ कितूं बालि	४४	६	४३
	धज चमर छत्र कर रेल धज	४७	६	५१
	धर थंम बरोबर तुजकधार	११७	६	३४०
	धरहरै सुजळ भव गयंब धार	३६२	७	५८७

छंदनाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
प्रद्वये	धरि नवबति चढ़ि नीसांण धार	३५६	७	५७६
	धारे छक 'मोहरण' हर सुधांम	११६	६	३४५
	धुजि चढ़े गजां हथनाळ धारि	३५६	७	५७७
	नव खंड सिरै जुध करण नांम	११६	६	३४७
	नृप जोग असी चत्र अडिग नेम	४५	६	४८
पद्वरी	पग मंडा जरकसो वणि अपार	१३०	७	६
	पह तिलक कीध कुंकम सु पाणि	१३१	७	८
	पौसाक ऊंच जवहर अपार	१२६	७	४
	प्रम अंस सूर दाता प्रमांण	१३३	७	१५
	'बखतेस' 'लखण' जिम महावीर	३५८	७	५७३
	बलि जुदो जुदो गुण कहि बताय	४४	६	४५
	बाजंतां त्रंबागळ डाक बाधि	३६२	७	५६०
	मिळ उडे अरध घट रंग माट	१२०	६	३५१
	मुरधरा मोहर वळ सभि अमाप	११८	६	३४३
	रचि मोन रासि सनि करत राह	४२	६	३६
	लालंबर लोयण वदन लाल	३५७	७	५७१
	वडवडा खान भूपति बुलाय	११४	६	३२६
	वणिप्यो गढ़ 'अम्मर' सूरवीर	१२०	६	३४८
	वरदाय पढ़त गुण कवि वखांणि	१३१	७	११
	वहतां बळ उजड़ हुबै वाट	११५	६	३३०
	वावळां सिलह पोसां वणाथ	३६१	७	५८६
	वस्चक सकांत दिन खट वितीस	४२	६	३५
	सन्धिप्यो जंतरण जुध सधीर	११६	६	३३५
	सहनांम मुरसलां रंग सवाद	१३१	७	१०
	साबळ भलि हालै पह सधीर	३६०	७	५८०
	सिर नमे हजारों बंध साथ	३६०	७	५८१
	सिरपाव बगसि बह सिलह साज	११६	६	३४४
	सुणि खत जबाब इम 'अभैसाह'	३५७	७	५७०
	सुप्रही अन के इन्द्र सार	४५	६	४७
	सुत 'कुसळ' 'ऊव' हरवळ सकाज	११६	६	३३४
	सोळें सैं साक चववीस तास	४१	६	३३
	सोवन्न जवाहर अति सरूप	१३०	७	५
	सोहियो 'अभो' इण विध सकाज	१३२	७	१३
	स्त्री गणपति सरसति प्रणम साथि	४१	६	३२
	स्त्री भगवत गीता हित सधार	१३२	७	१४

छंदनाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
पदरी	हाथियां मेघ डंबर हवद्	३५८	७	५७५
	हालंत इसा उजबक हरीळ	११५	६	३३२
	हैदर कुळी बळबळ गहीर	११४	६	३२७
	है नास सास धुबि धीर हाक	३६२	७	५८८
	हैमरां दादरां कळळ होय	३६१	७	५८५
बेअखरी (द्वेअक्षी)	अंग भकबौळ रधर हुय आऊं	३१५	७	४३६
	अंग तपसी सुख कारण आपें	३३६	७	५२८
	अइताळीस सहंस असवारां	३२१	७	४६०
	अचिरज किसी पह अधिकाई	३१५	७	४३७
	अणभंग लागां लोहां आवें	३४३	७	५४५
	अणभंग सिरें जोध करणावत	३०८	७	४१५
	अरण नयण चख रीस उपाटी	३१६	७	४४१
	अरि 'करन' तन हंस उडाऊं	३१८	७	४८६
	अरि हति फूल धार भेले अति	३२७	७	४८५
	अलप आव जिण हंत न होई	३३८	७	५२४
	असटपॅखी पॅख सहंसह आवें	३४१	७	५३६
	अस दळ मुगळ और अथागां	३२५	७	४७४
	असुर तणो दळ बळ ऊखेलूं	३३६	७	५१६
	आगम सुण आपरी अबाई	३२०	७	४५६
	आपतणा खग तेज अप्रबळ	३२०	७	४५४
	आपमुहरि हूं लडूं अचूकां	३२४	७	४७०
	आसंग करें खाग ऊछाजें	३३६	७	५१८
	इण विध करूं कहै 'अभपत्ती'	३३७	७	५२२
	इण विध त्रहुंवे टेक उताळूं	३३७	७	५२१
	इण हिज विध कथ कहै उ चारण	३२६	७	५६२
	इम बोले जोधा छक ऊजळ	३३२	७	५०१
	इम भड उरडु देखि छक ऊजळ	३३४	७	५११
	इम रिख सिखहूं तांम उचारा	३३६	७	५२७
	इम रिण हंत अचेत उठावें	३४४	७	५४६
	इम सूरों पति धरम इरादा	३४३	७	५४४
	इम हरवळ दळ जोहि अथागां	३०७	७	४०६
	इसडो तप आपरी 'अजावत'	३२०	७	४५७
	इसडो 'विलंब' मरें काई भाजें	३२२	७	४६३
	इसडो 'विलंब' सँबाहै आजा	३२२	७	४६२
	इसी रीत 'सिध' आवि अनादा	३४३	७	५४२

छंदनाम	प्रथम पंक्ति	प०	प्रकरण	पद्यांक
बेअखरी (द्वेअक्षरी)	उचरै पंचां भड़ां अभांगी	३३२	७	५०२
	उडती भाळां लोपि अरावां	३०६	७	४०८
	उण मोसर पह लूण उजाळी	३१८	७	४४६
	उण चार री कमथ 'अजावत'	३३५	७	४१४
	उभ कंठी पीलू नह आसी	३२२	७	४६५
	उरस छबै रसवीर उछाहां	३३५	७	५१५
	उवरै संकर सकति अरोघा	३१३	७	४३०
	एक निजाम तेवड़े आरण	३२१	७	४५६
	ओपम नयण धिखंतां आरण	३१५	७	४३८
	ओरे तुरंग थाट अविपाटां	३२४	७	४७२
	कमथ 'पतावत' मतै करारै	३१४	७	४३५
	कमथ 'हठी' सुत रूप कराळी	३२७	७	४८४
	करूं भाट भळहळ केवांणी	३२६	७	४८०
	करै कळाप जीवबा कारण	३४२	७	५४१
	कळहणि सूर सांमरै कारण	३४०	७	५३१
	कहै दुहुं ओरे केकांणी	३१६	७	४४२
	कहै पिरोहित राज अणंकळ	३१७	७	४४५
	कहै 'भीम' सुत दारण 'केहर'	३२६	७	५६१
	किलम सिलह बंध खांडू जसकर	३२६	७	५६०
	कीधी अरज 'विजे' जोड़े कर	३१६	७	४५०
	कीरत सारौ जगत कहेसी	३४५	७	५५२
	खग भट 'विलंब' थटां परि खेलूं	३३०	७	४६४
	खग पछट काढूं रट खालां	३२६	७	४८१
	खळ मेवास घडक सह खासी	३२३	२	४६६
	खान अवर वहसत सब खावै	३१६	७	४५३
	गज घड़ तुरंग हाकळूं गहतंत	३२८	७	४८७
	गुण कवि इकठा इक लग गावै	३३६	७	५१६
	ग्रहै जंगी 'हवदां' अगवादां	३४५	७	५५१
	घण ठेलूं मुग्गळ दळ घेरां	३०६	७	४१६
	घण नद धार कहै नदंधी घड़	३१३	७	४३१
	घण नद पूर बारहठ घररो	३१७	७	४४३
	घुमर खळां विहंडि खग घाटां	३३१	७	४६७
	घुमर असि ओके सत्र घाऊं	३२५	७	४७५
	चवै एह कुळ मुजळ चढ़ावां	३१२	७	४२८
	चित मो उछब अण विग चाहूं	३४४	७	५४६
	चौरंग जिण गिळियां चौडावत	३३१	७	५८०

छंदनाम

प्रथम पंक्ति

पृ० प्रकरण पद्यांक

बेअखरी (बेअखरी) छोटा बिना बेस बप छोटी
 जगमग जोति उदोत जगासै
 जड़कू सैल जेत खंभ जेहें
 जदि ब्रल खुधा दहूं मिट जावै
 जरदेतां ओरे असि जाऊं
 जरा काळ कोयक दिन जीतै
 जवन हरील विदरि मधि जायां
 जवन हरील विहंडि मधि जाऊं
 भळहळ खेडि विवांणां भोकां
 भाडूं खळां सिलहबैय भळहळ
 भेलूं लोह अनेक भलाऊं
 भेलूं लोह अनेक भिलाऊं
 तिल हिक अमल कपाट सतूटै
 तोलें लाग गयण भुज तोलें
 तो पोहचूं लग नील पताखां
 थाट दिलेस भार भुज थंभियो
 थाट नाथ होसी दहूं थाटां
 थाटेसरी अकास मुनि थट
 दळ बळ ब्रबव दान खग दावै
 दारण वाघ रूप दरसावत
 दुगम जवन घडि कामणि दोळो
 दुहवै कहै एण विध दारण
 धल कथ एणहीज विध धारूं
 धल करि फूल अणी असि धारूं
 धडचूं (छूं) मुगळ पह चल धोळी
 धज कुळ वाट मेड़ता धरतो
 धर हिंदू दूजां रजधानी
 धसे हरवळां चौडें धाडें
 धारै पग सांमा मुणि ब्रब धुनि
 नर सुर अहि उण जोड न कोई
 नरिद सिलर हर पूयि निवाहर
 नेजा खासा तोग नवबति
 पडि चुल चुल हुय वरां अपबद्धर

३०८ ७ ४१४
 ३४१ ७ ५३७
 ३३० ७ ५६३
 ३४२ ७ ५३६
 ३३२ ७ ५०३
 ३४२ ७ ५४०
 ३२६ ७ ४७८
 ३३३ ७ ५०५
 ३३१ ७ ४६६
 ३३१ ७ ४६८
 ३२४ ७ ४७३
 ३०७ ७ ४११
 ३४१ ७ ५३५
 ३१८ ७ ४४८
 ३१७ ७ ४४६
 ३१६ ७ ४५२
 ३२३ ७ ४६७
 ३३६ ७ ५२६
 ३१६ ७ ४५१
 ३१२ ७ ४२७
 ३११ ७ ४२३
 ३१३ ७ ४३२
 ३२७ ७ ४८३
 ३१४ ७ ४३४
 ३१८ ७ ४४७
 ३२५ ७ ४७७
 ३२१ ७ ४५८
 ३०६ ७ ४१६
 ३३८ ७ ५२६
 ३४४ ७ ५४७
 ३३३ ७ ५०७
 ३०६ ७ ४०६
 ३१४ ७ ४३३

छंदनाम

प्रथम पंक्ति

पृ० प्रकरण पद्यांक

बेअखरी(द्वेअखरी) पड़ि रिण रथ चढ़ि सुरग पधारुं
 पह सांभर लगि सांमंद पाजा
 पाड़ि घड़ा मुगळाण पठाणां
 प्रथम करे आसण पदमासण
 प्रफूलत वदन होय 'अजमल' वह
 बहसैं आप सिध जिम बोलैं
 बूतो किसूं निबाब तराँ बळ
 बोळ करे असभर रत बोहां
 भमर गुफा मझि रमे तजैं भ्रम
 भाळैं जोम पूर इण भत्ती
 महि हम तम खमसी अतिमांमां
 मारु 'भैरव' सुतन महाबळ
 मेड़तिया बोलिया महाबळ
 रंग मट फूट घट करि रवदाळां
 रचतां कठण जुगत अंतरांमैं
 रटूं जेणिहूँ करूं वाधि रिण
 रवि रथ थांभि विलोकैं राजा
 राज मोहरि उपति रघुराई
 'लाल' तांम बोलैं चख लालां
 लाल नयण अंबर सिर लगती
 'लाल' सुतण 'मोकी' अजरायल
 लाहां भड़ श्रीभड़ां लगावां
 लोही ताळ सिलह बंध लोभैं
 बणि होळिका थंभ जुध वेरां
 वदै असुर गढ़ न दूं वरगां
 वदै 'किसन' 'पिय' सुत कुळ वाटां
 वदै गुलाब' नेह अवरीरा
 वधि खळ थटां करूं भळ वेगां
 वरूं अपछर चढ़ि कनक विवांणां
 बळे करूं रिण मंझि विमाहौ
 बाहि बुहाय घणी विजुजळ
 विखम क्रिया विखमो साधन वक्र
 विद्वतां नारद संकर बलांणें
 विसवामित्र बोलियो मुनिवर
 विहेंड खळां बह लोण वहांऊं

३११ ७ ४२५
 ३२३ ७ ४६८
 ३३३ ७ ५०६
 ३४० ७ ५३३
 ३०८ ७ ४१३
 ३२० ७ ४५५
 ३३६ ७ ५१७
 ३२५ ७ ४७६
 ३४२ ७ ५३८
 ३४५ ७ ५५३
 ३२३ ७ ४६६
 ३३० ७ ४६६
 ३०६ ७ ४१७
 ३०६ ७ ४१८
 ३४३ ७ ५४३
 ३०८ ७ ४१२
 ३४५ ७ ५५०
 ३०६ ७ ४०७
 ३३३ ७ ५०४
 ३१५ ७ ४३६
 ३१६ ७ ४४०
 ३२७ ७ ४८२
 ३२६ ७ ४७६
 ३३४ ७ ५०६
 ३३७ ७ ५२०
 ३२८ ७ ४८८
 ३२८ ७ ४८६
 ३१० ७ ४२१
 ३३४ ७ ५१०
 ३११ ७ ४२४
 ३११ ७ ४२६
 ३४० ७ ५३४
 ३१० ७ ४२०
 ३३८ ७ ५२५
 ३३० ७ ४६५

छंदनाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
बेअखरी (द्वेअक्षरी)	बीजळ कळहळ धार बिहारां	३१७	७	४४४
	बीर जकै ताबीन विचारी	३२४	७	४७१
	सांमंद जळाबोळ वप सबळ	३३५	७	५१३
	साहू मंत्री मेळ (सी) सकाजा	३२२	७	४६४
	सिख सिध सूर कही समताई	३४०	७	५३२
	सिख हें रिख इम कहै सकाजा	३४४	७	५४८
	सिर 'बिलंबेस' तणा घैसाहर	३०७	७	४१०
	सीत घांम बुल ब्रखा सहाए	३३६	७	५३०
	सुपह जाणि प्रगट्यौ तेरह सख	३३५	७	५१३
	सुभडां पह खत्रवाट सिखावे	३३८	७	५२३
	सूर बिलंद बढ़ता सुरतांणां	३२१	७	४६१
	स्त्री महाराज आप कुळ सूरिज	३०६	७	४०५
	'हरियंद' 'भाऊ' सुतन हठाळी	३१०	७	४२२
	हरवळ बीच हाकलूं हैमर	३३४	७	५०८
विरखेक विराज	वाणिक एम विनोद 'अभेमल' इन्न इसी	१५३	७	११२
	'अजै' जेण वारां	६८	६	११४
	अपच्छं उमाही	६८	६	११२
	करं पाव केकं	६५	६	६६
	किलवके हकारे	६७	६	१०७
	कूरमं कमंधं	६५	६	६४
	खगां धार खूटे	६७	६	१०५
	जुडै भूप जंगं	६५	६	६३
	तई कुंभ तूटा	६६	६	१०४
	तई सीस तूटे	६७	६	१११
	तुरी वाग तांणं	६७	६	१०८
	वुटे घाव तुंडं	६६	६	१०१
	अबै खाग धारुं	६६	६	१०३
	पडै पक्खाराळा	६७	६	१०६
	परी कंत पावें	६६	६	१००
	भंभारा भभक्कं	६६	६	१०२
	मारु फील मंता	६८	६	११५
	लगां लोह लुटे	६६	६	६६
	वहै लोह वंका	६५	६	६५
	बिना धू बिहंडं	६५	६	६७
	सयदां संघारे	६८	६	११७

छंदनाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पंक्तांक
विराज	सयदांरा सारां	६७	६	१०६
	सुतं सच्छल्लेसं	६७	६	११०
	हुबं जंग होदां	६८	६	११६
	हुबं दिव्य देहा	६८	६	११३
	हुबं लोह हत्थं	६५	६	६८
बंताळ	ग्यान ग्रह जस राज गुण	१६	५	१२
श्लोक	अनुष्टुप अष्ट पद जुक्तं	१६१	७	१६६
	गजगमणि अवाप्तौ	१६८	७	१८०
	जुगे अठ कठाणं	१६७	७	१७८
	नृपतिरभयसिंहश्च तत्र मेवांबभा	१६२	७	१७०
	पंच दस मालनी छंद	१६१	७	१६७
	बोलै चाली पाणं	१६६	७	१७४
	रंगा नो गय धमयं	१६७	७	१७६
	सिधाण च शिरोमणि	१६२	७	१६६
	सीमघरेंद्र जमुना तव खड्ग धारा	१६६	७	१७३
	अरि भुंडनतें रिनसिध अने भुज वंडनि पांनि प्रचंड रचे	१६८	७	१८४
सर्वया	अला मुदफरखान	२०२	६	१६५
सोरठा	इम अचडां अणवाल	१२७	६	१६३
	कवि उमरावां केक	१२८	६	३६७
	कुरी अचे हमार	२०३	७	१६७
	चाचर-चर सुकाळ	२१६	७	२०२
	जस भ्रम काज जगीस	१२८	६	३३६
	जोधाणें जिणवार	१२७	६	३६४
	घरि हिंदवांणां ढाल	१२८	६	३७०
	भूपति बाके भाह	२०२	७	१६६
	वणि हरचंद जिम वार	१२८	६	३६६
	सांसण जूना सोय	१२७	६	३६५
हृण्काळ	सुजि घर असि सिरपाव	१२८	६	३६८
	अजमाल सुणिजे एह	७६	६	१४७
	अजमाल भूप अवास	६०	६	२२१
	अजमाल सजि ऊच्छाह	११०	६	३१४
	अण-भंग तप अण थाह	८४	६	१८२
	अतरेस छंति अवास	१४८	७	६३
	अति किमति हीर उवार	१०७	६	२६४
	अति धरै घक अण भंग	१०२	६	२६६

छंदनाम

प्रथम पंक्ति

पृ० प्रकरण पद्यांक

हर्णूफाल

अति रूप क्रांति उजास
 अनि करे कुण इण भांति
 अनि करे कुण विण आप
 अनि लोक संपति इंव
 अबनोस चंदण अंग
 अरु बेर तीजो गाय
 असलूक रंग उजास
 असुराण सोस उपाडि
 आगरं गढ उण बार
 आगै जु दियो छुडाय
 आ मिटण न दूं अनावि
 आमूळि अग अकुळाइ
 आवंत पह 'अभमाल'
 आवंत लोक अपार
 आवंस धकै अमास
 इक साइयां कै एह
 इक साह तखत उयापि
 इण मांहि एक अदाब
 इण वणे रूप अमंग
 इम आप डेरां ओप
 इम खबर मुदफर आय
 इम चढे कवर अमंग
 इम चोपदार उशर
 इम जळे घण आगार
 इम ठाम ठाम अगनि
 इम भूप सनमुख आय
 इम वणे निज आथाण
 इळ कनक मोर उडाय
 इळ चढ़े पह उण बार
 उडंत खग असमांण
 उडि पड़े पाट विवाळ
 उण नांम भड़ 'अलमाल'
 उण बार बणि नर इंद्र
 उण हीज विध सुत अस्त
 अ सहर को ऊफांण

६० ६ २१८
 ७८ ६ १४१
 ८० ६ ११८
 १०३ ६ २७०
 १३८ ७ ३५
 ७८ ६ १४२
 १४६ ७ ८१
 ८१ ६ १६३
 ८४ ६ १८३
 ८१ ६ १६४
 ८२ ६ १६६
 १०१ ६ २५७
 १४३ ७ ६५
 १४० ७ ४७
 १०३ ६ २६७
 ७६ ६ १५०
 ८४ ६ १७६
 ८३ ६ १७२
 १४६ ७ ८५
 १०८ ६ ३००
 १०२ ६ २६०
 १०० ६ २५१
 १३६ ७ ४५
 १०४ ६ २७८
 १०४ ६ २७७
 १४१ ७ ५५
 १४६ ७ ६६
 १०८ ६ २६६
 १४६ ७ ८०
 १०१ ६ २५६
 १०४ ६ २७५
 ८८ ६ २०६
 १३५ ७ २१
 १४५ ७ ७८
 १०३ ६ २७१

छंदनाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
हणूफाळ	ओ 'बुधौ' बूंदी ईस	६१	६	२२५
	कटहड़ा मंडप कराळ	१०४	६	२७६
	कथ अगै कीध करार	८७	६	१६६
	कथ एम सुणि मचकूर	७८	६	१४०
	कथ कहे एम कुराणि	८०	६	१५३
	कथ खमां खमां कहंत	१४७	७	८७
	करि कड़ा सोवन काज	१४४	७	७२
	करि कनक छड़ियां केक	१३६	७	४४
	करि जाजमां पर कीध	१४२	७	६१
	करि तहस नहसां केक	१०३	६	२६८
	करि रजत कंचन केक	१०५	६	२८१
	कळ रंग घाट कुमाच	१०७	६	२६५
	किलंगी स तुररा केक	१३७	७	३२
	काजिये इण विध कांम	७६	६	१४५
	काजिये फेर सकाज	८६	६	१६५
	कुंभ सुपह वंदण कीध	१४५	७	७६
	कुळ भांण विरद कहाय	११०	६	३१२
	के जड़ित जवहर कांम	१३६	७	२४
	कोतिल बह केकांण	१३६	७	४२
	खट छपर चंदण खाट	१०३	६	२७३
	खित नकौ जोतिस खूच	२३४	७	२५७
	गजगांमणि सोळ सिंगार	१४५	७	७७
	गज बोल चित्रह गात	१३५	७	२२
	गढ़ लीध करि गजगाह	८५	६	१८६
	गाजतां गयंद गंभीर	११०	६	३१३
	गायणी नृत संगीत	६०	६	२१६
	ग्रहि अमीर-स बेगार	१०७	६	२६३
	ग्रहि हणे साह गहेर	८३	६	१७७
	घड़ पड़ै सभ्नि घमसांण	१०४	६	२७४
	घण सोर जोर न घात	१०६	६	३०४
	चढ़ि एण विध चक्रवत्ति	१४७	७	८६
	चळ चळे चवदह चाळ	८६	६	१६०
	चालंत इम चतुरंग	१४०	७	४६
	छक वंस पुर छतीस	६२	६	२३२
	छक विच पुर अवछाडि	८६	६	२१२

छंदनाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्य
हणूफाळ	जंग जीत तखतह जाय	८०	६	१५७
	जगमगत इम वह जोति	१४२	७	६४
	जदि सीख करि 'जैसाह'	८३	६	१७५
	जरतार कस गुलजार	१३७	७	३१
	जर वफत भूल जमाज	१३७	७	३४
	जवनेस दरगह जाय	२३५	७	२६१
	जवनेस नगर सजोस	१०६	६	३०७
	जसवळ हाक सजोर	२३३	७	२४६
	जिग होय दुज जप जाप	८१	६	१६२
	जुंध करे हणे जवनांण	१०६	६	३०८
	जुध सुणे इम जैसाह	८५	६	१८७
	जैसाह हंता जंग	८७	६	२००
	जैसाह हंत जबाब	८३	६	१७४
	जैसाह मिळै जियार	८८	६	२०७
	जैसिघ ध्रोह जणाय	७६	६	१५१
	तदि हुआ हाजर तांम	६०	६	२२२
	तनि जीव असपति त्रास	७६	६	१४६
	तबू अरंज बगसी तांम	२३४	७	२५६
	तवि निजर दोलति ताम	६१	६	२२३
	तुरांण भुलक तवद	६२	६	२२६
	ते लिखौ हित कथ तीख	८७	६	२०१
	ते सुभइ मंत्री तांम	८७	६	१६८
	त्रंब गजर तूर त्रहाक	१०१	६	२५८
	त्रिय जूथ मिळि बह तांम	१४०	७	५०
	दगि नाळ भाळ दुरंत	८५	६	१८६
	दळ दिली कळळ दरोळ	१०६	६	३०५
	दळ साह जीपि दुबाह	१११	६	३१६
	दहूं तंग रेसम दीध	१३८	७	३६
	दिल्लीस मुनसफदार	२३५	७	२५८
	दिल्लीस रखत दरब्ब	८२	६	१७०
	दुति सेल फळ दमकंत	२३३	७	२५०
	दुहुं राह दिस कुळदीप	६२	६	२३१
	द्रब रूप भरि दुभाल	१४१	७	५६
	धन लूट कीघौ धांण	११०	६	३०६
	धनवंत कोडियधऊज	१४२	७	६२

छंदनाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पञ्चांक
हणूफाळ	धनि कमंध कुळ अवधेस	१११	६	३१८
	धर बिली पडियौ धाम	१११	६	३१७
	धर फरस जेम धरीस	१४६	७	८२
	धर साह धोंकळ धोंग	११०	६	३११
	धर साह लूटण धाव	१०२	६	२६५
	धर सिखर थरहर धाम	१०१	६	२५५
	धुग धुगी सोवन्न धार	१४४	७	७३
	धुबि भाल भळहळ धोम	१०३	६	२७२
	धूजंत धर तन धीर	१०८	६	३०२
	नक्केल सुरंग नराट	१३८	७	३७
	नक्ख सिख भूखण नोख	१४२	७	६३
	नग जडित सुजड नराज	१०५	६	२८२
	नग तुरंग घम घम नाळ	२३३	७	२४७
	नर यंद हालत नग्रि	१३६	७	४३
	नरियंद नजर नगाह	६१	६	२२७
	नवछावरेस सनेह	१४७	७	६०
	निज जोगशिपुर नाह	८४	६	१८१
	निज नगर एम निहारि	१४४	७	७०
	नूप गौड निज ताबीन	६१	६	२२६
	पग मंड धान अपार	१४६	७	८३
	पड दिली ताम प्रकार	१०८	६	३०१
	पचरंग मोहरिय पेस	१३८	७	३८
	पतिव्रता नेह अपार	६०	६	२१७
	परि पूर लच्छि प्रताप	१०७	६	२६२
	परि लसे सारंग पीव	१०२	६	२६४
	पह कही बात प्रमाण	७८	६	१४३
	पह सरण सेवत पाव	६१	६	२२४
	पासार हट्ट प्रियोग	१०६	६	२६०
	पौसाक ऊंच अनोप	१३६	७	२५
	पौसाक जवहर पूर	१३७	७	३३
	पौसाक तास अपार	८६	६	२१३
	प्रफूलंत वदन प्रवीत	१४०	७	५१
	बजि स्वास नास ब्रहास	२३४	७	२५२
	बहु चित्र हट्ट बाजार	१४१	७	५७
	बहुता स उरस बिहंग	२३३	७	२५१

छंदमाम
हणूकाळ

प्रथम पंक्ति

बह माल सामंद बीट
बह लंगर घर चख बोळ
बहसती खाग संबाहि
बाजंत कळहुळ बाज
बाजंत्र बजत बमेक
बाजार लूटंत बजाज
बावना चंदन बोह
बासता भिडबच बंध
बिच हट्ट हट्ट बिछात
बिच बाघ जिम वध बाघ
भजि गया विण गज भार
भर मोल नीलक भार
भरि कोम कसकत भार
भळहुळत चित्रत भाळ
भाजिया जिके भुजाळ
भिळे तिमर ठकियो भांण
मंडि जाब ज्वाब मलंग
मंत्री स सकवि समाज
मभि छमा राज मंभारि
महमाय पूजा मान
महाराज बिच रहमाण
महिमाल बह पसमीर
मिळ घाट लुटे घमीर
मिळ मोजदीनह मारि
मिळ लालकोट मंभार
मुख उदत जांणि प्रमाण
मुख बचन कहि सामाज
मुख बचन बह मनुहारि
मो मदत कीध हमेस
यां हंत होत उथाप
रचि 'बुधो' बूंदी राव
रजतेस कनक रखत
रवि जेम मधि सम रूप
राखियो डगतो राज
राखूं सुरहि रन धीर

पू० प्रकरण पद्यांक

१०६ ६ २८८
१३६ ७ २९
१०२ ६ २६३
१३६ ७ ४६
८६ ६ २१५
१०५ ६ २८३
१०६ ६ २९१
१०५ ६ २८५
१४२ ७ ६०
१०२ ६ २६१
१०२ ६ २६२
१०६ ६ २८६
१०१ ६ २५४
१३६ ७ २७
११० ६ ३१०
१०० ६ २५३
१४७ ७ ८६
१४८ ७ ९१
१४९ ७ ९६
१३६ ७ ८६
८१ ६ १६०
१०६ ६ २८७
१०५ ६ २८०
७९ ६ १४९
८२ ६ १६५
२३५ ७ २६२
८७ ६ १९७
८७ ६ १९६
८६ ६ १९२
८६ ६ १९३
८८ ६ २०८
८४ ६ १८०
२३४ ७ २५५
८२ ६ १६८
८२ ६ १६६

छंदनाम
हर्णफाळ

प्रथम पंक्ति

रघुतपत बाण सघार

रेसम्म सांमळ रंग

लख दोय बळ हम लार

लख लोक गहमह लार

लसणिया नील भळवक

लहरीस कोर हुलास

लूटे न ग्रेह अलीण

वड वडा गड बरियांम

वड वडा भड विकरीळ

वणि एम छबि विसतार

वणि मही-मुरतव वाग

वणि रतन हौदा वाधि

वर तिलक कीर्ज वार

वर रजत कुंभ विसाळ

वां पीठि चह असवार

वाजंत्र वजत विसाळ

वाजत्र वजत वसेक

विठ पडे जुध उस वेर

विध इती मांनो वात

विघ सांमुहो वरियांम

वीट सो सोवन वेल्

सजि दसकतां सुरतांण

सज्जंत सोळ सिंगार

सक्ति आभ्रणेस छतीस

सक्ति तीन हाथ सलंब

सक्ति तोप कोट सनाह

सक्ति थाट कुरब सथाल

सक्ति थाट चढिया सुर

सक्ति रजत सोन्न साज

सक्ति रीभ बह सुरतांण

सक्ति वांम सोळ सिंगार

सक्ति सज्जि तीन सलांम

सयदांण कमध सकाज

सर सुखत जळ सरितास

सहचरी चतुर सबोह

पृ० प्रकरणा पद्यांक

१०६ ६ ३०६

१३८ ७ ३६

८० ६ १५६

१४७ ७ ८८

१०७ ६ २६६

१४१ ७ ५८

१०८ ६ २६७

८६ ६ २१०

१०० ६ २५२

१४५ ७ ७५

१३६ ७ २८

१३५ ७ २३

१४६ ७ ६७

१४१ ७ ५३

१३८ ७ ४०

६० ६ २२०

१४८ ७ ६२

७६ ६ १४८

८२ ६ १७१

२३५ ७ २५६

१४४ ७ ७४

८८ ६ २०४

१४८ ६ ६४

१४३ ७ ६७

१३६ ७ ४१

८५ ६ १८४

८६ ६ १६४

८५ ६ १८५

१३७ ७ ३०

८८ ६ २०६

१४३ ७ ६६

६२ ६ २३०

८३ ६ १७६

२३४ ७ २५४

१४८ ७ ६५

छंदनाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पंक्तांक
हृणूफाळ	सिकळात मुखमल खास	१०५	६	२८४
	सिणगार गज श्रिस सोभ	८६	६	२१४
	सिप्पाह बसं कर्मध	१०३	६	२६६
	सिर चमर होत सकाज	६०	६	२१६
	सिरपाव जरकस साज	१४४	७	७१
	सिर मोहरि चौकसिगार	१४६	७	८४
	सीसोद करत सलाम	६१	६	२२८
	सुज तेज देखि सधीर	८४	६	१७८
	सुजि काढि वेंर सकाज	७८	६	१४४
	सुजि तार रेसम सूत	१०६	६	२८६
	सुजि नमै साह समान	२३५	७	२६०
	सुजि बाळ वय समराथ	८२	६	१६७
	सुजि वाम भुज समराथि	१४१	७	५४
	सुण वयण इम सयदांण	८७	६	२०२
	सुणि कहे इम सयदांण	८३	६	१७३
	सुणि या न दीठा सोय	१०८	६	२६८
	सुणि लूट पहल सिपाह	१०४	६	२७६
	सुत तास मिळे सनेह	१११	६	३१५
	सुनहरिय तार सकाज	१४२	७	५३
	सुभ जिहन सोळ सुचंग	१४०	७	५२
	सुभ्र द्रस्ट करि भ्रभसाह	१४३	७	६६
	सो किया यंह 'जैसाह'	८०	६	१५५
	सोभंत रूप सरीर	१४५	७	७६
	सो लीघ पह 'जैसाह'	८८	६	२०५
	सो लोप न सकै 'संद'	८८	६	२०३
	खंगार विध विध साज	१४०	७	४८
	खब लोक नजर सुपेस	१४६	७	६८
	स्त्री हत्य लेखि सकज्ज	८६	६	१६१
	हम रहें नौकर होय	८१	६	१५६
	हरखंत मुख जुत हास	१४३	७	६८
	हरखंत सहर उछाह	८६	६	२११
	हसि मिळे 'भजण' हुलास	१११	६	३१६
	हिंदवांण तीरथ होय	८१	६	१६१
	हुय धाम जळविरहक	१०१	६	२५६
	हंकळां कळहळ हंत	२३४	७	२५३
	हैं करत कूक हजार	१०६	६	३०३

परिशिष्ट ७

७२ कलाओं की नामावलि

१ लिखितम् २ गणितम् ३ गीतम् ४ नृत्यम् ५ पठितम् ६ वाद्यम्
७ व्याकरणम् ८ छन्दः ९ ज्योतिषम् १० शिक्षा ११ निरुक्तम् १२ कात्यायनम्
१३ निघंटुः १४ पत्रच्छेद्यम् १५ नखच्छेद्यम् १६ रत्नपरीक्षा १७ आयुधाभ्यासः
१८ गजारोहणम् १९ तुरगारोहणम् २० तपः शिक्षा २१ मन्त्रवादः २२ यन्त्रवादः
२३ रसवादः २४ स्वन्यवादः २५ रसायनम् २६ विज्ञानम् २७ तर्कवादः २८ सिद्धांत
२९ विषवादः ३० गारुडम् ३१ शाकुनम् ३२ वैद्यकम् ३३ आचार्यविद्या ३४ आगमः
३५ प्रासादलक्षणम् ३६ सामुद्रिकम् ३७ स्मृति ३८ पुराणम् ३९ इतिहास ४० वेद
४१ विधिः ४२ विद्यानुवादः ४३ दर्शन संस्कारः ४४ लेखरीकला ४५ अमरीकला
४६ इन्द्रजालम् ४७ पातालसिद्धिः ४८ धूर्तशम्बलम् ४९ गन्धवादः ५० वृक्ष-
चिकित्सा ५१ कृत्रिममणिकर्म ५२ सर्वकरणौ ५३ वश्यकर्म ५४ पणकर्म ५५ चित्र-
कर्म ५६ काष्ठघटनम् ५७ पावाणकर्म ५८ लेपकर्म ५९ चर्मकर्म ६० यन्त्रक-
रसवती ६१ काव्यम् ६२ अलंकारः ६३ हसितम् ६४ संस्कृतम् ६५ प्राकृतम्
६६ पैशाचिकम् ६७ अप्रभ्रंशम् ६८ कपटम् ६९ देशभाषा ७० धातुकर्म
७१ प्रयोगोपायः ७२ केवलिविधिः । (प्रबंधकोश से)

१ गीतकला २ वाद्यकला ३ नृत्यकला ४ गणितकला ५ पठितकला ६ लिखित-
कला ७ वस्तुत्वकला ८ कवित्वकला ९ कथाकला १० वचनकला ११ नाटक-
कला १२ व्याकरणकला १३ छंदकला १४ अलंकारकला १५ दर्शनकला १६ अभि-
धानकला १७ धातुवादकला १८ धर्मकला १९ अर्थकला २० कामकला २२ वाद्य
कला २२ बुद्धिकला २३ शौचकला २४ विचारकला २५ नेपथ्यकला २६ विलास
कला २७ नीतिकला २८ शकुनकला २९ क्रीतकला ३० वित्तकला ३१ संयोग
कला ३२ हस्तलाघवकला ३३ सूत्रकला ३४ कुसुमकला ३५ इन्द्रजालकला
३६ सूचीकर्मकला ३७ स्नेहकला ३८ पानककला ३९ आहारकला ४० सौभाग्य
कला ४१ प्रयोगकला ४२ मंत्रकला ४३ वास्तुकला ४४ वाणिज्यकला ४५ रत्न
कला ४६ पात्रकला ४७ वैद्यककला ४८ देशकला ४९ देशभाषितकला ५० विजय-
कला ५१ आयुधकला ५२ युद्धकला ५३ समयकला ५४ वर्तनकला ५५ हस्ति-
कला ५६ तुरगकला ५७ नारीकला ५८ पक्षिकला ५९ भूमिकला ६० लेपकला
६१ काष्ठकला ६२ पुरुषकला ६३ सैन्यकला ६४ वृक्षकला ६५ छतकला
६६ हस्तकला ६७ उत्तरकला ६८ प्रत्युत्तरकला ६९ शरीरकला ७० सत्वकला
७१ शास्त्रकला ७२ क्षणकला । (वस्तुरत्नकोश से)

३६ प्रकार के श्रायुधों की नामावलि

१ चक्र २ धनु ३ वज्र ४ खड्ग ५ क्षुरिका ६ तोमर ७ कुंत ८ शूल
 ९ त्रिशूल १० शक्ति ११ पाश १२ अंकुश १३ मुद्गर १४ मक्षिका १५ भल्लभाला
 १६ सिङ्गवाल १७ मुसुठि १८ लुठि १९ गदा २० शंख २१ परशु २२ पट्टिश
 २३ रिष्टि २४ कणय २५ संपन्न २६ हल २७ मुशल २८ पुलिका २९ कर्तारि
 ३० करपत्र ३१ तरवारि ३२ कोदाल ३३ दुस्फोट ३४ गोफण ३५ डह
 ३६ डबस ।

मतान्तर से—(राजस्थानी)

१ सर २ सींगणि ३ क्षुरि ४ कुंत ५ सांग ६ डोडी ७ हल ८ मांगर
 ९ गोफण १० संख ११ गुरज १२ मूसल १३ घण १४ तोमर १५ प्रसी
 १६ चक्र १७ खड्ग १८ गदा १९ चाबक २० फरसी २१ कुहक-बाण २२ बंदूक
 २३ ढाल २४ कटार २५ खपटसी २६ सेल २७ त्रिसूल २८ सोटी २९ धकौ
 ३० बसहड़ि ३१ कडि लगण ३२ भूकत ३३ चट्टलि ३४ सुली ३५ चटक
 ३६ बँडायुध ।



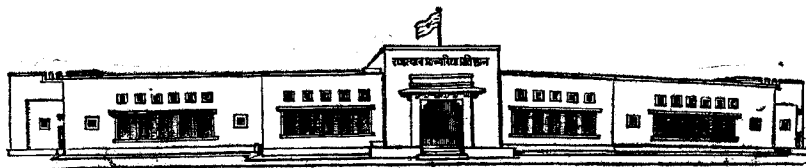
GOVERNMENT OF RAJASTHAN



RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE

JODHPUR (INDIA)

Hon. Director, Padmashree Muni Jinvijaya, Puratattvacharya



PUBLICATIONS

RAJASTHAN PURATANA GRANTHAMALA

General Editor :

PADMASHREE MUNI JINVIJAYA, PURATATTVACHARYA

DECEMBER, 1961

PUBLICATIONS

Up to July, 1961



RAJASTHAN PURATAN GRANTHAMALA

(General Editor—Padmashree MUNI JINVIJAYA, Puratattwacharya)

Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur. November 1961.

A. SANSKRIT

1. **Praman-manjari**—by Sarvadeva, with commentaries by Advayaranya, Balbhadra and Vaman Bhatt, ed. by Pattabhiram Shastri, Ex-Principal, Maharaja's Sanskrit College, Jaipur, *now* Prof. of Darshan, University of Calcutta. —Rs. 6.00
2. **Yantraraja-rachana**—An astrological work written under orders of Maharaja Sawai Jai Singh of Jaipur, ed. by Late Pt. Kedar Nath Jyotirvid, Editor, Kavyamala Series. —Rs. 1.75 nP.
3. **Maharshikul-vaibhavam Pt. I**—by Late Vidyavachaspati Madhusudan Ojha, ed. by Mahamahopadhyaya Pt. Giridhar Sharma Chaturvedi. —Rs. 10.75 nP.
4. **Maharshikul-vaibhavam Pt. II, Text**—by Late Vidyavachaspati Madhusudan Ojha, ed. by Pt. Pradumna Ojha. —Rs. 3.50 nP.
5. **Tarksamgrah**—by Annam Bhatt with commentary of Kshmakalyan Gani, ed. by Dr. Jitendra Jetli, MA., Ph.D., Prof., Ramananda Arts College, Ahmedabad. —Rs. 3.00
6. **Karakasambandhodyota**—by Rabhas Nandi, ed. by H.P. Shastri, M.A., Ph. D., Vice Principal, B. J. Institute Vidya Bhawan, Ahmedabad. —Rs. 1.75 nP.
7. **Vrittidipika**—by Mouni Krishna Bhatt, ed. by Purushottam Sharma Chaturvedi, formerly Prof, Mayo College, Ajmer. —Rs. 2.00
8. **Shabdaratnapradipa**—by an unknown author ed. by H.P. Shastri, M.A., Ph. D., Vice Principal, B. J. Institute Vidya Bhawan, Ahmedabad. —Rs. 2.00

9. **Krishnagiti**—by Somanatha, ed. by Dr. Priyabala Shah, M.A., Ph. D., D. Litt., Prof., Ramanands Arts College, Ahemdabad.
—Rs. 1.75 nP.
10. **Nritt-samgrah**—a treatise on Indian Dance—by an unknown author, ed. by Dr. Priyabala Shah, MA., Ph.D., D. Litt., Prof., Ramananda Arts College, Ahemdabad. —Rs. 1.75 nP.
11. **Shringarharavali**—by Shri Harsha Kavi, ed. by Dr. Priyabala Shah, M.A., Ph. D., D. Litt., Prof., Ramananda Arts College, Ahemdabad.
—Rs. 2.75 nP.
12. **Rajvinod Mahakavyam**—by Udairaj, a medieval Sanskrit poem on the life and achievements of Mahmud Begra, Sultan of Ahemdabad, ed. by G. N. Bahura, M. A., Dy. Director, Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur. —Rs. 2.25 nP.
13. **Chakrapanivijaya Mahakavyam**—by Lakshmi Dhar Bhatt, a romantic Sanskrit poem based on the love story of Usha and Aniruddha, ed. by K.K. Shastri, Curator and Prof., B. J. Institute, Gujrat Vidya Sabha, Ahemdabad. —Rs. 3.50 nP.
14. **Nrityaratna—Kosha Pt. I**—by Maharana Kumbhakarna Deva of Chittore; a long awaited authentic treatise on Indian Dance, ed. by R. C. Parikh, Director, B. J. Institute, Gujrat Vidya Sabha, Ahemdabad.
—Rs. 3.75
15. **Uktiratnakar**—by Sadhu Sunder Gani, ed. by Puratattwacharya Muni Jinvijayaji, Hon. Director, Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur. —Rs. 4.75 nP.
16. **Durgapushpanjali**—by Late Mahamahopadhyaya Pt. Durga Prasad Dwivedi, ed. by G. D. Dwivedi, Lecturar, Maharaja's Sanskrit College, Jaipur. —Rs. 4.25 nP.
17. **Karnakutuhel and Shri Krishnalilamritam**—by Mahakavi Bholanath, a protege of Sawai Pratap Singh of Jaipur, ed. by G. N. Bahura, M.A., Dy. Director, Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur. —Rs. 1.50 nP.

18. **Ishwarvilasa Mahakavyam**—by Kavikalanidhi Shri Krishna Bhatt, a work based on the History of Jaipur, written under orders and in the time of Maharaja Sawai Ishwari Singh, son of Maharaja Sawai Jai Singh of Jaipur. The work bears an eye-witness description of the Ashwamedha yajna performed by Sawai Jai Singh, ed. by Mathuranath Bhatt, Sahityacharya, with a foreword by late Dr. P.K. Gode, M.A., D. Litt., Curator, B. O. R. Institute, Poona. —Rs. 11.50 nP.
19. **Rasadeerghika**—by Vidyaram Kavi, a rare and abridged work on Sanskrit rhetorics, ed. by G.N. Bahura, M. A., Dy. Director, Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur. —Rs. 2.00
20. **Padya-muktawali**—A compilation of Literary and Historical poems of Krishna Bhatt, a contemporary of Sawai Jai Singh of Jaipur, ed. by Mathuranath Bhatt, Sahityacharya. —Rs. 4.00
21. **Kavyaprakash**—of Manmata, with Samketa by Someshwar Bhatt, found in Jaisalmer Grantha Bhandar. Edited by R. C. Parikh, Director B.J. Institute, Gujrat Vidya Sabha, Ahemdabad. Pt. I, Rs. 12.00
22. „ „ „ Pt. II, Rs. 8.25 nP.
23. **Vasturatnakosha**—by an unknown author, Edited by Dr. Priyabala Shah M. A., Ph. D., D. Litt. Prof. Ramanand Arts College, Ahemdabad. —Rs. 4 50 nP.
24. **Dashkantha Vadham**—by late Mahamahopadhyaya Durga Prasadji Dwivedi, a poetical work on Ram-Charitra. Edited by Shri Gangadhar Dwivedi, Prof. Maharaja Sanskrit College, Jaipur. —Rs. 4.00
25. **Bhuwaneshwari Mahastotram**—by Prithwidharacharya, with commentry of Padmanabha, edited by Shri G.N. Bahura, M.A. Dy. Director, Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur. —Rs. 3.75 nP.

B. RAJASTHANI AND HINDI

1. **Kanadhade Prabandha**—by Mahakavi Padmanabha, a famous

- Rajasthani Historic Poem dealing with the chivalry of Kanadhade Chouhan at the time of the attack of Alauddin Khilji on the fort of Jalore, ed. by Prof. K.B. Vyas, M.A., Elphinstone College, Bombay. —Rs. 12.25 nP.
2. **Kyamkhan Rasa**—by Alaf Khan, Nawab of Fatehpur (Shekhawati), a Poetical History of Kayamkhanis, the Muslim Rajpoots of Rajasthan, ed. by Dr. Dashrath Sharma, M. A. D., Litt., Professor, Hindu College, Delhi and Shri Agar Chand Nahata, Bikaner. —Rs. 4.75 nP.
 3. **Lava Rasa**—by Gopaldan Kaviya, a contemporary description of the battle of Madhorajpura between the Chief of Lava and Amceerkhan of Tonk, ed. by Mehtab Chand Khared, Jaipur. —Rs. 3.75 nP.
 4. **Vankidas-ri-Khyat**—a History of Rajasthan, written in Rajasthani prose by Vankidas, the famous Historian of Jodhpur, ed. by Prof. Narottamdas Swami, M.A. Vice Principal, Maharana Bhupal College, Udaipur. —Rs. 5.50 nP.
 5. **Rajasthani Sahitya Sangrah Pt. I**—A collection of old Rajasthani literary prose, ed. by Prof. Narottamdas Swami, M.A. Vice Principal, Maharana Bhupal College, Udaipur. —Rs. 2.25.
 6. **Rajasthani Sahitya Sangrah Pt II**—Three old Rajasthani stories i.e. Bagdawatan Ri Vat, Pratap Singh Mahokam Singh Ri Vat and Veeramde Soneegara Ri Vat, edited by P.L. Menaria M.A., Sahitya Ratna, Offg. Senior Research Asst. Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur. —Rs. 2.75 nP.
 7. **Kavindra Kalpalata**—by Kavindracharya Saraswati, a contemporary of Emperor Shahajahan, ed. by Rani Shrimati Lakshmi Kumari Chundawat, Jaipur. —Rs. 2.00.
 8. **Jugal Vilasa**—a poem by Maharaja Prithvi Singh of Kushalgarh, ed. by Rani Shrimati Lakshmi Kumari Chundawat, Jaipur. —Rs. 1.75 nP.
 9. **Bhagat Mala**—a poetical work in Rajasthani by Charan

Brahma Dasji Dadupanthi, ed. by Udairaj Ujjwal, Jodhpur.

—Rs. 1.75 nP.

10. A Classified List of Manuscripts Pt. I—a list of 4000, manuscripts collected in The Rajasthan Oriental Research Institute upto the year 1955. —Rs. 7.50 nP.
11. A Classified List of Manuscripts Pt. II—a list of 3855 Mss. collected in the Rajasthan Oriental Research Institute from Apr. 1956 to March 1958. Edited by Shri G. N. Bahura, Dy. Director, Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur. —Rs. 12.00.
12. A List of Rajasthani Manuscripts Pt. I—Collected in the Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur upto March 1958. Edited by Padmashri Muni Shri Jinvijaiji. —Rs. 4.50 nP.
13. A List of Rajasthani Manuscripts—Pt. II—Mss collected during the year 1958-59. Edited by Purushottamlal Menaria M.A. Sahitya-Ratna. —Rs. 2.75
14. Munhata Nensiri Khyat Pt. I—by Munhata Nensi of Jodhpur. History of Rajasthan in Rajasthani prose, edited by Shri Badri Prasad Sakaria. —Rs. 8.50 nP.
15. Raghuwar Jas Prakash—by Charan Kishnaji Adha. A work on Rajasthani rhetorics, edited by Shri Sitaram Lalas. —Rs. 8.25
16. Veer Van—by Dhadhi Badar, a Rajasthani poem relating a few heroic events of Vecramji Rathod of Jodhpur. Edited by Smt. Rani Laxmi Kumari Chundawat of Rawatsar. —Rs. 4.50 nP.
17. A Catalogue of Late Purohit Harinarayanji B. A. Vidyabhooshan Manuscripts Collection—edited by Shri G. N. Bahura. Dy. Director Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur and Shri L. N. Goswami, Senior Research Asst. Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur. —Rs. 6.25 nP.
18. Sooraj Prakash Pt. I—by Charan Karnidan Kaviya. History of the Rathods of Jodhpur in Rajasthani Poem, edited by Shri Sita Ram Lalas. —Rs. 8.00
19. Nehatarang—by Raoraja Budha Singhji Hada of Bundi. A work on rhetorics, edited by Shri Ramprasad Dadheech M. A. Lecturer, Hindi Dept. Jaswant College, Jodhpur. —Rs 4.00

**RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE,
JODHPUR**

B. WORKS IN THE PRESS

Editor :

- | | |
|---|---|
| 1. Tripura Bharati Laghustawa
by Laghu Pandit | Muni Shri Jinvijayaji |
| 2. Balshiksha Vyakaran
by Sangram Singh | „ |
| 3. Padarth Ratna Manjusha
by Krishna Mishra | „ |
| 4. Karnamritaprapa by Someshwar | „ |
| 5. Prakritanand by Raghunath Kavi | „ |
| 6. Shakun-pradeep | „ |
| 7. Hameer Mahakavya of Naya
Chandra Soori | „ |
| 8. Ratna paretekshadi of Thakka Pheru | „ |
| 9. Vasant Vilasa Phagu | Shri MC. Modi |
| 10. Chandra Vyakaran by Chandra
Gomi | Shri B.D. Doshi |
| 11. Swayambhoochhanda | Shri H.D. Velankar |
| 12. Nritya Ratna Kosh Pt. II
by Maharana Kumbhakarna | Prof. R.C. Parikh &
Dr. Priyabala Shah |
| 13. Nandopakhyan | Shri B. J. Sandesara |
| 14. Vrittajatisamuchchaya
by Kavi Virahanka | Shri H.D. Velankar |
| 15. Kavi Darpan | „ |
| 16. Kavi Kaustubha
by Kavi Raghunath Manohar | Shri M.N. ori |
| 17. Gora Badal Padmini Chaupai
by Kavi Hemratan | Shri Udai Singh Bhatnagar |
| 18. Indra Prastha Prarbandh | Dr. Dashratha Sharma |
| 19. Vasavdatta of Subandhu | Dr. Jaideva Mohan al Shukla |
| 20. Ghatkharparadi Panchalaghu
Kavyani | Pt. Amrit Lal Mohan Lal |
| 21. Bhuvan deepak of Yavnacharya | Pt. Purshottam Bhatt |
| 22. Rajasthan Men Sanskrit Sahitya
Ki Khoj by Dr. Bhandarkar | Translation in Hindi
by Shri Brahma Dutt Trivedi |
| 23. Munhata Nensi ri Khyat Pt. II | Shri Badri Prasad Sakaria |
| 24. Rathore Vanshri Vigat | Muni Shri Jinvijayaji |
| 25. Puratattva Samshodhan Ka Itihasa | „ |

- | | |
|---|------------------------------------|
| 26. Sooraj Prakash Pt. II | Shri Sitaram Lalas |
| 27. Rathodan Ri Vanshawali | Muni Shri Jinvijayaji |
| 28. Rajasthani Bhasha Sahitya
Grantha Suchi | Muni Shri Jinvijayaji |
| 29. Mira Brihat Padawali, complited
by Late Pt. Hari Narayanji Purohit
Vidya Bhooshan | Padmashri Muni Jinvijayaji |
| 30. Rajasthani Sahitya Samgrah Pt. III | Shri L.N. Goswami |
| 31. Sthulibhadra Kakadi | Dr. A.R. Jajodia |
| 32. Matsya Pradesh Ki Hindi Ko Den, | Dr. Moti Lal Gupta,
M.A. Ph. D. |
| 33. Rukmini Harana by Sayanji Jhoola | P. L. Manariya M.A., |
| 34. Vrittamuktawali
by Shri Krishna Bhatt | Bhatt Shri Mathuranathji |
| 35. Agamrahasya | Shri G. D. Dwivedi |



SOME COMMENTS

- 1—**Kanadhade Prabandha**—by Mahakavi Padmanabha, ed. by Prof. K. B. Vyas M. A., Elphinstone College, Bombay.

We are indeed grateful to the Rajasthan Puratattva Mandir for giving to the interested world this beautiful edition of a very fine work which should be known all over India.

SUNITI KUMAR CHATTERJI

M. A., D. Litt.

Chairman,

Govt. of India Sanskrit Commission.

★

- 2—**Rajavinoda Mahakavyam**—by Udairaj, ed. by Shri Gopalnarayan Bahura, M. A., Dy. Director, Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur.

The series of important rare Sanskrit and Prakrit texts called the Rajasthan Puratan Granthamala started by Muniji under his General-Editorship is doing valuable service to Indology... With his characteristic vision and historical insight Muniji has selected for this series some rare texts of great historical, literary and cultural value... These texts in Sanskrit will facilitate the search for similar texts... The manuscript of the Rajavinoda Kavya in praise of Mahamud Begda was acquired by Dr. Buhler in 1857 for the Govt. of Bombay.

Muni Jinvijayaji was the first to realise the importance of the poem and make arrangements for its editing and publication in the series of the Rajasthan O. R. Institute Accordingly he entrusted the work of editing this poem to Shri Gopalnarayan and I am happy to find that this learned editor has spared no pains in giving us an edition worthy of the series in which it appears... I have to convey my hearty congratulations to Muni Jinvijayaji upon the wise planning of his scheme of Rajasthan Puratana Granthamala and its successful execution by entrusting different works in it to competent scholars like Shri Gopalnarayan, who also deserves the best thanks of all lovers of Indian

History and Sanskrit by making available to them a new text, hitherto unknown and unpublished.

Annals of the Bhandarkar Oriental
Research Institute, Poona
Vol. XXXVII, 1957

P. K. GODE,
M. A., D. Litt.

★

3—Ishwarvilasa Mahakavyam—by Kavikalanidhi Krishna Bhatt, ed. by Shri Mathuranatha Bhatt, Sahityacharya, Jaipur.

The publication of an 18th century poem of Krishna Bhatt, a Jaipur-court bard, brings out interesting fact that the 'Ashvamedha Yajna' was organised by rulers to assert their supremacy over neighbouring princes as late as 200 years ago.

Bhatt in his book 'Ishwarvilasa Kavya' describes the 'Ashvamedha Yajna' performed by his friend and master Raja Ishwari Singh some time after he ascended the Amber gaddi in 1743 on the death of his father Sawai Jai Singh II, who founded Jaipur.

Bhatt himself attended the Yajna. Besides describing the 'Yajna' in detail, he names the persons who witnessed the ceremony.

7th November, 1959.

TIMES OF INDIA

★

4—Classified List of Manuscripts Pt. II—ed by Shri G.N. Bahura M.A. Dy. Director Rajasthan Oriental Research Inst. Jodhpur.

A. All students in Indology will be glad to consult this excellent catalogue, containing many rare and precious Sanskrit works.

Director Indian Institute, Paris
16th. Feb. 1960

LOUIS RENOUE

★

B. It is evident from the list that the Institute possesses a rich collection of Sanskrit Manuscripts on almost all subjects and branches of learning cultivated in ancient India, and also a large number of Prakrit, Rajasthani, Old Gujarati and Hindi manuscripts, and these lists will undoubtedly prove to be important tools of research to scholars doing textual work in Sanskrit and derived languages.

Journal of
The Oriental Institute, Baroda.
December, 1960

B. J. SANDESARA

C. The catalogue adds to our knowledge of the manuscript material still existing in the Indian libraries.

IsMEO
Via Merulana
248 Rome.

Giuseppe Tucci
East and West.
June-September, 1961

★

D. Die Rajasthan Puratna Graathamala, welche im Auftrag der Regierung von Rajasthan Werke in Sanskrit, Prakrit, Alt-Rajasthani, Gujarati und Hindi herausgibt, ist in Europe bisher wenig bekannt. Sie hat jedoch bereits eine grobe Reihe schöner Veröffentlichungen herausgebracht, darunter manche bisher unbekannte Werke. Der vorliegende Band enthält ein Handschriftenverzeichnis. Der erste Teil dieses Verzeichnisses behandelt die bis 1956 erworbenen Handschriften. Der vorliegende zweite Teil verzeichnet die Neuerwerbungen von April 1956 bis März 1958, zusammen mehr als 4000 Nummern. Angegeben sind in hergebrachter Weise Titel, Verfasser, Datum und Blattzahl der Handschrift und, wenn nötig, sind kurze Bemerkungen beigelegt. Im ersten Anhang sind Anfang und Schluss einer Anzahl wichtigerer Handschriften wiedergeben. Der zweite Anhang enthält ein alphabetisches Verzeichnis der Verfasseramen. Ein dritter Anhang bringt ein Verzeichnis der ehemaligen Palastbibliothek von Indragarh, die nunmehr unter die Obhut des Oriental Research Institute in Jodhpur gestellt ist. Druck und Ausstattung des Bandes sind sehr gut. Von einigen besonders wertvollen Handschriften sind einzelne Blätter abgebildet.

Journal of the Institute of Indology,
University of Vienna.

E. FRAUWALLNER

★

"...I appreciate them very much, for their being at such enrichment to any library specialised in the Orientalistic field."

President IsMEO (Oriental Institute)
Rome (Italy)

Prof. TUCCI

★

"...I am very glad to know that the Institute is so actively engaged in editing the unpublished manuscripts of Rajasthan in Sanskrit and other languages. This is a valuable contribution to Sanskrit studies."

Indian Institute University of Oxford
26 July 1961

Prof. T. BURROW

5—Dasakanthvadham, by M. M. Pandit Durgaprasad Dwivedi, edited by Shri Gangadhar Dwivedi.

“The author of the work under review has depicted the life of Rama from the spiritual point of view in his work called Dasakanthvadham on the lines of Yogavasistha, a well-known extensive philosophical treatise on Advaita Vedanta...The author is a gifted poet of a very high order. The treatment of the theme especially in the first chapter is highly elaborate and the descriptions abound in rich poetical imagery of high aesthetic value.”

Journal of the Oriental Institute Baroda
Vol X. No. 3, March 1961

H. C. METHA

*

६—श्रीभुवनेश्वरीमहास्तोत्रम्—पृथ्वीधराचार्यविरचित, कविपद्मनाभकृत भाष्यसहित, सम्पादक श्रीगोपालनारायण बहुरा एम.ए., उपसञ्चालक राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर ।

क. “मूल स्तोत्र की प्रबोधिनी टीका और पाद-टिप्पणियों में जो अनेकानेक पाठान्तर दिये गये हैं, उनसे इस प्रकाशन की उपयोगिता तथा महत्त्व बढ़ गया है ।

२६ जून, १९६१

महाराजकुमार डा० रघुवीरसिंह

एम.ए., एल.एल. बी., डी. लिट्. एम पी.
सीतामऊ

ख. “इस स्तोत्र में भुवनेश्वरी के स्वरूप, ध्यान और मंत्रों का सम्यक् रूप से विवेचन है । साथ ही अन्य १२ स्तोत्रों के द्वारा भुवनेश्वरी के माहात्म्य की पर्याप्त सामग्री एकत्र की गई है । यथासंभव उपासनासम्बन्धी कई ज्ञातव्य विषय दिए गए हैं । प्रारंभ में ‘प्रास्ताविक परिचय’ नाम से श्रीगोपालनारायण बहुरा ने विद्वत्तापूर्ण भूमिका लिखी है । उससे इस स्तोत्र तथा इसके विषय को समझने में बड़ी सहायता मिलती है ।

ता० २० अक्टूबर, १९६१

—दैनिक हिन्दुस्तान, नई दिल्ली

७—राजस्थानी साहित्य संग्रह—

भाग १. सम्पादक श्रीनरोत्तमदास स्वामी, एम.ए.

भाग २. सम्पादक श्रीपुरुषोत्तमलाल मेनारिया, एम.ए., साहित्य-रत्न ।

.....साहित्य और भाषा की दृष्टि से ही नहीं, इतिहास-सम्बन्धी भी बहुत

अधिक सामग्री उक्त वार्ता-साहित्य में प्राप्य है। तत्कालीन आचार-विचार, रहन-सहन, धार्मिक भावनाओं और अंध विश्वासों आदि की ठीक-ठीक जानकारी प्राप्त करने के लिये इस प्रकार के गद्य साहित्य का गहरा अध्ययन सर्वथा अनिवार्य हो जाता है।.....पाद-टिप्पणियों में दिये गये पाठान्तरों और साथ ही आवश्यक शब्दार्थों से इस संस्करण का विशेष महत्व हो गया है। इन दोनों भागों में दी गई भूमिकायें भी उपयोगी और विचार-प्रेरक हैं।

ता० २६ जून, १९६१

८—स्व० पुरोहित हरिनारायणजी विद्याभूषण-ग्रंथसंग्रह-सूची—सम्पादक श्रीगोपालनारायण बहुरा, एम.ए. और श्रीलक्ष्मीनारायण गोस्वामी दीक्षित।

स्वर्गीय पुरोहित हरिनारायणजी स्वयं ही एक सजीव संस्था थे। उन्होंने एकाकी जो काम किया, वह अनेकानेक संस्थाओं के मिल कर काम करने पर भी उतनी पूर्णता और तत्परता से किया जाना कठिन ही होता। अतः उनके निजी पुस्तकालय के राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान को सौंपे जाने से वस्तुतः एक बड़ी सांस्कृतिक निधि की सुरक्षा हो गई है, जिसके लिये राजस्थान ही नहीं भारत का समूचा शिक्षित समाज पुरोहितजी के सुपुत्र श्रीरामगोपालजी का सदैव अनुगृहीत रहेगा। अतः ऐसे महत्व के पुस्तक-संग्रह की यह पुस्तक-सूची अवश्य ही विद्वानों, संशोधकों आदि सब ही के लिये बहुत ही उपयोगी होने वाली है। प्रतिष्ठान का यह प्रकाशन संग्रहणीय है।

ता० २६ जून, १९६१

९—सूरजप्रकाश भाग १—कविया करणीदानजीकृत, सम्पादक श्रीसीताराम लालस।

साहित्य-प्रेमियों के साथ ही इतिहासकारों के लिये कविया करणीदानकृत “सूरजप्रकाश” का विशेष महत्व है। मारवाड़ के इतिहास के प्रमुख आधार-ग्रंथ के रूप में इस ग्रंथ का अध्ययन किया जाता है। अतः उसको प्रकाशित करने का आयोजन कर प्रतिष्ठान ने एक बड़ी कमी को पूरा किया है।

ता० २६ जून, १९६१

महाराजकुमार डॉ० रघुबीरसिंह
एम.ए., एल.एल. बी., डी. लिट्., एम.पी.



प्रकाशित ग्रन्थ

संस्कृत-भाषा-ग्रन्थ— १. प्रमाणमंजरी—तात्त्विकचूडामणि सर्वदेवाचार्य, मूल्य ६.००। २. यन्त्रराज रचना—महाराजा सर्वाई जयसिंह, मूल्य १.७५। ३. महर्षिकुलवैभवम्—स्व० श्री मधुसूदन ओझा, भाग १, मूल्य १०.७५। ४. महर्षिकुल वैभवम्, स्व० श्री मधुसूदन ओझा, भाग २, मूलमात्रम्, मूल्य ४.००। ५. तर्क संग्रह—पं० क्षमाकल्याण, मूल्य ३.००। ६. कारकसम्बन्धोद्योत—पं० रमसनन्दि, मूल्य १.७५। ७. वृत्तिदीपिका—पं० मीनिकृष्ण मूल्य २.००। ८. शब्दरत्नप्रदीप, मूल्य २.००। ९. कृष्णगीति—कवि सोमनाथ, मूल्य १.७५। १०. शृङ्गारहारावली—हर्षकवि, मूल्य २.७५। ११. चक्रपाणिविजयमहाकाव्य—पं० लक्ष्मी-चरभट्ट, मूल्य ३.५०। १२. राजविनोद—कवि उदयराज, मूल्य २.२५। १३. नूतनसंग्रह, मूल्य १.७५। १४. नृत्यरत्नकोश, प्रथम भाग—महाराणा कुम्भकर्ण, मूल्य ३.७५। १५. उत्ति-रत्नाकर—पं० साधुसुन्दरगणि, मूल्य ४.७५। १६. दुर्गापुष्पाञ्जलि—पं० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी, मूल्य ४.२५। १७. कर्णकुतूहल तथा कृष्णलीलामृत—भोलानाथ, मूल्य १.५०। १८. ईश्वर-विलास महाकाव्य—श्रीकृष्ण भट्ट, मूल्य ११.५०। १९. पद्मपुष्पावली—कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्ट, मूल्य ४.००। २०. रसदीपिका—विद्याराम भट्ट, मूल्य २.००। २१. काव्य-प्रकाशसङ्कत-भट्ट सोमेश्वर, भाग १, मूल्य १२.००। २२. भाग २, मूल्य ८.२५। २३. वस्तुस्त-कोश, अज्ञातकर्तृक, मूल्य ४.२०। २४. दशकण्ठवधम्—पं० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी, मूल्य ४.००। २५. श्री भुवनेश्वरीमहास्तोत्रम् सभाष्य, पृथ्वीधराचार्य विरचित, कवि पद्मानभक्त भाष्य सहित, मूल्य ३.७५। २६. रत्नपरीक्षादि सप्त ग्रन्थ-संग्रह, ठक्कुर फेरू, मूल्य ६.२५।

राजस्थानी और हिन्दी भाषा ग्रन्थ— १. कान्हडदे प्रबन्ध—कवि पद्मानभ, मूल्य १२.२५। २. क्यामखोरास—कवि जान, मूल्य ४.७५। ३. लावारास—गोपालदान, मूल्य ३.७५। ४. वांकीदासरी ख्यात—महाकवि वांकीदास, मूल्य ५.५०। ५. राजस्थानी साहित्य संग्रह, भाग १, मूल्य २.२५। ६. राजस्थानी साहित्य संग्रह भाग २, मूल्य २.७५। ७. जुगल-विलास—कवि पीथल, मूल्य १.७५। ८. कवीन्द्र कल्पलता—कवीन्द्राचार्य, मूल्य २.००। ९. भगतमाला—चारण ब्रह्मदासजी, मूल्य १.७५। १०. राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिरके हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सूची, भाग १, मूल्य ७.५०। ११. राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान के हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची, भाग २, मूल्य १२.००। १२. मुंहता नैरासीरी ख्यात, भाग १, मूल्य ८.५०। १३. मुंहता नैरासीरी ख्यात भाग २, मूल्य ६.५०। १४. रघुवरजस-प्रकास, किसनाजी आढ़ा, मूल्य ८.२५ न.पै। १५. राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग १, मूल्य ४.५०। १६. राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची भाग २, मूल्य २.७५। १७. वीरवाण, डाढी बादर कृत, मूल्य ४.५०। १८. विद्याभूषण-ग्रन्थ-संग्रह-सूची, मूल्य ६.२५। १९. सूरजप्रकास, कविया करणीदानजी, भाग १, मूल्य ८.००। २०. सूरजप्रकास कविया करणीदानजी, भाग २, मूल्य ६.५०। २१. नेहतरंग, रावराजा बुधसिंह, मूल्य ४.००।

प्रेसों में छप रहे ग्रन्थ

संस्कृत-भाषा-ग्रन्थ— १. त्रिपुराभारतीलघुस्तव—लघुपण्डित। २. शकुनप्रदीप—लावण्य-शर्मा। ३. करुणामृतप्रपा—ठक्कुर सोमेश्वर। ४. बालशिक्षा व्याकरण—ठक्कुर संग्रामसिंह ५. पदार्थरत्नमञ्जूषा—पं० कृष्णमिश्र। ६. वसन्त-विलास फागु। ७. नृत्यरत्नकोश भाग २। ८. नन्दोपाख्यान। ९. चान्दव्याकरण। १०. स्वयंभूछंद—स्वयंभू कवि। ११. प्राकृतानन्द—कवि रघुनाथ। १२. कविदर्पण। १३. वृत्तजातिसमुच्चय—कवि विरहाङ्क। १४. इन्द्रप्रस्थ-प्रबन्ध। १५. हम्मीरमहाकाव्यम्—नयचन्द्रसूरि। १६. एकाक्षर नाम माला। १७. स्थूलि-भद्रकाकादि। १८. वासवदत्ता-सुबन्धु। १९. घटसर्परावि। २०. भुवनदीपक, याचनाचार्य। २१. वृत्तमुक्तावली, श्रीकृष्णभट्ट।

राजस्थानी और हिन्दी भाषा ग्रन्थ— १. मुंहता नैरासीरी ख्यात, मुंहता नैरासी भाग ३। २. गोरावादल पदमिणी चरुपर्ई—कवि हेमरतन। ३. राजस्थान में संस्कृत साहित्य की खोज—भण्डारकर। ४. राठोडोंरी वंशावली। ५. सचित्र राजस्थानी भाषा-साहित्य ग्रंथ सूची। ६. मीरां बृहद पदावली। ७. राजस्थानी साहित्य-संग्रह, भाग ३। ८. सूरजप्रकास कविया करणीदान कृत, भाग ३। ९. मत्स्य प्रदेश की हिन्दी साहित्य को देन, डॉ० मोतीलाल गुप्त। १०. रुक्मणी हरण—सायोजी झुला।
